© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

5482.

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नं. ६-२८४ क

सहस्रजीतचरितम्

आख्यानिका सम्पूर्ण

३२२ पत्राणि

कर्ता :- पण्डित ...

लिपिकाल :- १८५५ विक्रम

२८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

5482/984

F → I – 1-196

II – 1-189 — #132 + 157 are doubled.

Total – 385

Complete

श्री रणबीर पुस्तकालय
सं. ५५
नं. ९८४
मन्दर श्री रघुनाथ जी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स
१

ॐश्रीगणेशायनमः अथसहस्त्ररजनीचरित्रप्रारंभः मंगलाचरण दोहा विघ
नहरणसुधिबुद्धिकरणनमो२ गणराज सिद्धिकरणसंशयहरण शरवज्ञबहुम।
मकाज घनाक्षरी छंद संहारिणीभक्तजनतारिणी परमसिद्धिधारिणी जगत।
माताखलन विदारिणी महिषासुरमारिणीशुंभदैत्यदारिणीसिद्धिदाता श्रीनपर
मसुंदरीसर्वगुण आधारी अखिललोकेश्वरीदेवज्ञाता दोनजनप्यारेलालकरतेहै
बिनयहालदेहुवरमोहिदृढ़ावज्ञाता सोरठा संतहंसआदुठप्रमणकरनिजोवाता
नेमसंतग्रथयहसूठमाताहोउसहायमम कवित्त परमसुधीरबुद्धिउदधिगंभीरब
रनबलकिशोरवीर अतिहीसुजानहै अति गुणवानशीलबानरूपवानगुणियन
सुखदानदयावानसुमहानहैं परमप्रतापवानकृपावानज्ञानवानअतिहि आचार।
वानसुधर्मवानहैं कहैप्यारेलालबुधजाकेगुणसागरको पावतनोपारपेसक
विनजहानहैं दोहा अतिहितदयाकरिमोहिपरआज्ञादीन्हीमान अलिफलेल
भाषसबोमोमेंकिधोसुजान भूलहुकछोहोयसोतमिधोहिबुधराय उर्दूगुलक
देखिकेभाषकरंगबनाय अथप्रारंभकथाशाहरयारओरशाहजमांकी पूर्वका।
लमेंपारसकादेशहिंदुस्तानओरचीनकेसमानथाओरहजार२ कंदीपइसके आ।

5482

पीनथेयहराजामहाप्रतापी औरअतितेजस्वीथा प्रजाउससेन्यायकेकारणअतिप्रस
न्नथी औरवहरूपमेंइंद्रकेतुल्यथा उसकेदोपुत्रथेबडेकानामशाहरयारऔरछोटेका
नामशाहजमांथादोनोंराजकुंवर अपनेपिताके सदृशगुणवान्शीलवान्थे जबराजा
कालवशहुवा तबउसकापुत्रशाहरयारसिंहासनस्थहुआ औरअपनेभ्राताशाहज
मांकोकिउससे अत्यन्तप्रीतिरखताथादेशतातारकादिया औरकोष औरसेना अ
नेकदेशाहजमांअपनेबडेभ्राताकाकृतज्ञहोकरकेबिदाहुआ औरअपनेदेशकेप्र
बंधकेकारणशाहर समरकंदकोजोउससमयसबसहरोंसे उत्तमऔरबडाथाराज
धानीबनाकर अतिआनंदसे रहनेलगा जबउनकोन्यारेहुएदशवर्षबीतेतबशाह
रयारको अपनेछोटेभ्राताके मिलनेकीअतिलालसाहुई औरइच्छाकीकिउस
कोभेजकरअपनेपासबुलाऊं इसलिये अपनेमंत्रीकोइसकार्यकेनिमित्तनियतकि
या मंत्रीराजाकीआज्ञापायबडेधूमधामसे बिदाहुवाजबवहसमरकंद राजधानी
केनिकटपहुंचाशाहजमांयहसमाचारसुनतेही अगवानीकरनेकोसेनासमेतअप
नीराजधानीसेरवानाहुआ औरदोनोंनगरकीसीमापरपहुंचकरमंत्रीसेभेंटकीऔरउसकेदे
खनेसे अत्यन्तप्रसन्नहुआ औरअपनेभ्राताशाहरयारकीकुशलपूछीमंत्रीने भी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स त्नसाथदशाउवनकर समाचार उसके भ्राताको कहा शाहजमांजो अपने भ्राताका आमंत्रण आ।
२ ज्ञापालक और उसको शीघ्र तैयार रहनाथा मंत्री से कहा कि भाई मेरे बड़े भ्राता ने तुमको मेरे लेने
केहेतुभेजाहै इससे मुझको अत्यन्त हर्ष हुआ उनकी आज्ञा मेरे शीश और नेत्रों पर है परमेश्वर
चाहै तो दशदिवसके अनन्तर सफरकी वस्तु तैयार करके और अपनी जगह पर किसी को नि
यत कर तुम्हारे साथ चलूंगा तेहारा दशदिवसके वास्ते शहर में जाना अवश्य नहीं इसीजग
ह शहर से रहो मैंने प्रबंधक मनुष्यों को तुम्हारे और तुम्हारी सेना के वास्ते नियत किया है
सो उसी समय सब वस्तु खाने पीने आदि की मंत्री और सेना के वास्ते तैयार होगई इस समय।
नरमें राजा ने संपूर्ण वस्तु यात्रा की मंगाई और अपनी जगह पर किसी विश्वासित मंत्री को
नियत किया और दशवें दिन सायंकाल को अपनी रानी से कि जिससे अत्यन्त प्रीति रखता
था उससे बिदा होकर अपने सब कों और मुसाहिबों समेत सभाके देस चला और अपने डेरे।
मैं जो मंत्री के डेरे के निकट था पहुंचकर मंत्री के साथ बातें करने लगा यह होनकार कि आधी।
रात व्यतीत हुई उस समय बहु शोचा कि एकबार अपनी रानी से फिर भेंट कर आऊं उसमा लिय
अकेला वहां महल में छिपके आया रानी को कि राजा के लौट आने का कुछभी संदेह न था एक
नीच और कुरूप अनुचर को बुलवाकर उसके साथ सोरही थी राजा शाहजमां यानी उसमवि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वारेमेंथाकिरानीमेरी अतिसमभेटसेअतिहर्षितहोगीयाहस्सरमनुष्यकोउसकेसाथसी
नेदेखकरअतिविस्मितहोकरएकचदीनकमूर्छितरहा जबसचेतहुआतोरानीनेविचा
रकियाकिकदाचितरोमानहोमुझे भ्रमहोवायाहोफिरअच्छीतरहदेखकरनिश्चय
कृया औरपहचानाकरविचारनेलगाकिक्याआनर्थहैकि अभीशाहरयनाह समर
कंदमेंवाहरनहींनिकलाकिउनदावउआसाहसाकमेंऔरऐसाबडाअपराधकरनेलगी
यहशोचअपनेकोपितकृआकिऐसावडाअपराधइनअभानपैकाहनमाकेयोनय
नहीं विशेषकरमुझपेसेबडेतेजवानराजाकेमांन्हन इननावडाअपराधकेरेफिर
शाहजमांनेउसीकोपानिसेंखोडाहाथमेंलेजिसस्थानपररानीशयनकरतीथीजा
करएकहाथऐसामाराकिदोनोंकेशिरधनमें अलगहोकरशय्याकेनीचेगिरपडे
फिरउनदोनोंकीलोथोंकोपिछवाडेकीखिडकी मगंहमेंफेंकदियाउनदोनोंव्यभि
चारियोंके मारनेकेउपरांतयारसपाकरयाज्ञाके विचारमेंअपनेडेरेकोपधारा और
किसीदूसरेसे यहरात्रिकासमाचारनकहादूसरेदिनभारहोनेहोबहासे आगेजा
नेकाइरादाकिया यह आपस्तुपातेहीसबमनुष्यआगेकोचलेयाउंतरमेंसबसेना
केलोवानेोप्रसन्नथे परंतुशाहजमांरानीकेअनुचितकर्मकीसुधिकरकेअतिदुःखि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स
२
खिन्न होकर अपने हृदय का रुधिर पीता था दिन प्रतिदिन उसका मुह हर समय व्यथा से पीला हो
ता जाता था इसी बरस में संपूर्ण मार्ग उसका महा कष्ट में कटा जब हिंदुस्तान की राजधानी के नि
कट पहुंचा तब शाहरयार उसके पहुंचने का समाचार सुनकर संपूर्ण मंत्रियों और दरबारि
यों को साथ लेकर अगवानी के वास्ते आया जब दोनों की सवारी निकट पहुंची तो दोनों
राजा अपने घोड़ों से उतर कर परस्पर मिले और एक दूसरे को भेंट के प्रसन्न होकर बहुत का
लन कुशल क्षेम पूछने लगे फिर वहां से सवार होकर बड़ी धूमधाम से स्थान पर आए रा
जा शाहरयार ने भ्राता को उस मकान में कि जिसको विशेष कर उसके निमित्त पहिले
से बनवा और सजवा रक्खा था और वहां से पुष्पवाटिका देख पड़ती थी ले जाकर उतारा
और वह मकान ऐसा चारों ओर से सजा हुआ और बना था कि उसमें राजाओं की पहुनई अ
च्छी तरह से हो सकती थी फिर शाहरयार ने अपने भ्राता को स्नान करने और कपड़े बद
लने की आज्ञा दी जब वह स्नान कर चुका तब वह दोनों भ्राता महल के चौबारे में बैठ
कर परस्पर वार्त्ता प्रीति आदि की करते रहे और दरबारी लोग वा दोनों राजाओं के पंक्ति बां
ध यथोचित अपने २ स्थानों पर बैठे थे फिर उन दोनों भ्राताओं ने नाना प्रकार के व्यंजन
भोजन किये उपरान्त वार्त्ता करने लगे जब शाहरयार ने विचारा कि रैन बहुत व्यतीत भई

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तो आप अपने भ्राता को सोने के वास्ते अकेला छोड़ उठकर बिदा हुआ शाहजमां अपने डेरे औ
र शोक में रोता हुआ आप अपनी शय्या पर लेट रहा अपने कष्ट को अपने भ्राता के साम्हने छि
पाये था उसके उठने के उपरान्त वही चिन्ता उस पर सवार हुई और उसके हृदय पर ऐसी
पीड़ा थी कि मानो प्राणान्त होता है किसी समय अनुचित कर्म अपनी रानी का उसके
हृदय से न भूलता था बहुधा हाहा खाता और ठंढी उसासें लिया करता और रातों में नि
द्रा न आती थी इसी शोक और क्रोध में वह दुबला जाता था यहां तक कि थोरे२ दुर्बलता के
चिन्ह उसके देह में देख पड़ने लगे शाहरयार ने यह हाल देख कर विचार किया कि क्या का
रण है कि मैं शाहजमां से इतनी प्रीति और उसका भली भांति सन्मान करता हूं तो भी
हर समय शोक में मग्न देखता हूं कभी उसको प्रसन्न चित्त और हंसमुख नहीं देखता ना
जानिये कि निज देश अथवा अपनी प्रिय रानी के बिछोवा में दुखित रहता है मैंने इस
को बुलाकर रख्खा शोक समुद्र में डाला अब उचित है कि इसको अच्छी२ सौगातें दे
कर और समझा बुझाकर यहां से समरकंद को भेजे कि जिससे इसका दुख मिटे य
ह सोच कर उसने उत्तम२ बहुमूल्य वस्तु हिंदुस्तान की कि पंतयों में लगाकर भेजी
और उसकी प्रसन्नता के हेत नाना प्रकार के नृत्य गीत आदि कराये परंतु वह सब वृ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स
४

मध्यादिकउसकेशोककोअधिकबढ़ानेवालेहुएऔरउसकामननकभीप्रसन्नहुवा इ
सीसमयांतरमेंशहरयारनेदरबारियोंकोआज्ञादीकिमैंनेसुनाहै एकवनयहांसेदोदिन
कीराहपरहै औरवहांसेउसमेंमृगआदिपशुहैंमैंवहां आखेटकोजाऊंगा तुमशीघ्रतै
यारहो औरअपनेभाईकोभीआज्ञादीकितुमभीमेरेसाथचलोतुम्हाराजीशिकार।
मेंलगेगा औरतुम्हें प्रसन्नताप्राप्तहोगी शाहजमांनेनिवेदनकियाकिमहाराजमेरा
चित्तअच्छानहीं इसकारणमैंनजाऊंगा शहरयारनेकहाकियदितुमयहीं रहनेमेंप्र
सन्नहोतो यहींरहो औरआपअपनेसेवकोंसमेत आखेटकोगया शाहजमाने अप
नेमकानकेभीतरकेकिवाड़बंदकरलिये औरखिड़कीमेंकिजहांसेराजाकाबागदर
वपड़ताथाबैठाकिवहपक्षियोंकीप्रियवाणीऔरसुंदरवृक्षोंसेहृदयकाशोकहरक
रे परंतुजबअनुचितकर्म अपनीस्त्रीकास्मरण आतातोअपनेबुरे प्रारब्धपररुदनक।
रताकभीउसमकानकी सजधज औरबनावटकोदेखकर अपनेजीकोबहलाता
औरकदापिनाखुशथीशोकसेहृदयकोचीरता इसीहालमेंथाकिसायंकालकोवो
दरवाजाराजमंदिरका खुलगया औरउसदरवाजेसे २० स्त्रियांकिजिनकेबीचमें २।
वीरानीथीऔरवहदिव्यवस्त्र औरआभूषणआदिसेजानपड़तीथीनिकलकरबाग

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मैंआईउनसबकोनिश्चयथाकिराजातोषिकारखेलनेवायेराजमहलखालीहोगा और
शाहजमां इसयुक्तिसेखिड़कीमेंबैठाथाकिउनसबकोदेखे औरउसेकोईनदेखे उसेअ
ति अभिलाषाहुईकितमाशाउनबीबीयोंस्त्रियों औररानीकादेखेंकाकरतीहैं लौंडियों
नेअपनेबड़े औरलंबेकपड़ेंकोकिजोपहिनतकारमहलसेनिकलीथीं उनारडालाफि
रातोउनकीसूरतऔरशकलसमझमालूमहोनेलगीशाहजमां यहहालदेखकरआश्च
र्यमानहुआकिउनबीबीस्त्रियोंमेंसेकिजिनकोवहस्त्रीजानताथा दसहबशीश्रेहरया।
कनेपहिचान२करएक२स्त्रीकाहाथपकड़लियाकेवलवहरानीबिनापुरुषरहग
ईउसनेमसऊद२ कहकेएककालापकडूहबशी अतिकुरूपमहानरूपथाकि उसकेशाह
केतालकपरथारूखसेउतरकरउसकी औरदौड़ा औररानीकाहाथ पकड़लिया अब।
हमकोउनकाहाल वर्णनकरतेलजामालूमहोतीहै किउन॥हबशियोंने उनदस
स्त्रियों औरवयामहबीरानीकेसाथकाकियाइसनतरहसबअहंकारजिनकउसबागमेंर
हे अनंतरउसीबागकेतालाबमेंस्नानकरअपने२ वस्त्रपहिनउसीचोरदरवाजेसेराजमं
दिरमेंपहुंचीं औरमसऊदथी बागकीदीवारमेंफांदकरजिसओरसे आयाथावलाग।
याशाहजमांकोइसदशाकेदेखनेसेधीरजऊगा औरघोनाकियदिसबफकोअमंनतड

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स ५ 5

खेथा परंतु मेरे भ्राता को मुझसे भी अधिक दुःख है यहां तक कि वह अनंत तेजस्वी और अन्नपा
न है परंतु उससे इस तुरे काम को रहान हो सकी अब मुझे इतना शोक न भावना चाहिये मुझे
अच्छी तरह विदित हुआ कि पेण ऊन्हि तक में संसार में बहुत या होवा है तो अपने को कस्
द्र में हुवाना है था है उसी समय से उसने अपनी चिंता न जदी सर्व में कि उसे भूख और पासा
न लगती थी तु या लगने लगी नाना प्रकार के भोजन मंगवा कर रुचि पूर्वक भोजन किये
और खाना व जाना गवैयों का जो उसके वास्ते नियत थे सुनने लगा और नीरोग हो गया था औ
र राजा के लौट आने के समाचार पाकर उसके अति हर्ष प्राप्त हुआ और भेट की प्रथम तो रा
जा ने शाहजमां के शोक हरने का हाल मालूम न कर के बहुत से मृग आदि के शिकार
किये हुए दिये और कहा भाई पश्चाताप है कि तुम हरिण के शिकार को न चले वहां अनंत
आश्चर्य था शाहजमां हर प्रश्न का उत्तर राजा की हर्ष से देता था शहरयार यह जानता था
कि अब मी शाहजमां को उसी शोक में कि जैसा मैं छोड़ गया था पाऊंगा सो अपने विचा
र के विपरीत उसको हर्षित और प्रसन्न ना मुझ पाया कहा हे भ्राता परमेश्वर का धन्यवाद
है कि मैं ने तुझे थोड़ी अवधि में कि चार दिन से अधिक न थी नीत रूप हो गये नीरोग और प्र
सन्न पाया अब तुम मैं तप कवान सो वां दे देकर संक्षेप ता हूं उसको अब वर्णन करना शाहजमां

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नेकहा किजोबातश्रापमुझसेपूछोगेजरूरबताऊंगा शाहरयारनेकहाकिजबतुमश्र
पनीराजधानीसेयहांश्रायेथेमैंनेतुमकोशोक समुद्रमेंडूबेहुएपायाथा श्रौरश्रबमैंने तु
मारेशोककेनिवारणार्थबहुतउपायकियेश्रौरतमाशेबहुतसेदिखलाये परंतुतुमउदा
सीश्रवस्थामेंरहेकितनाहीमैंनेविचाराकियाकिइसशोककाकारणमालूमकरूं
परंतुकेवलप्रियरानीश्रौर निजदेशकेवियोगकेसिवायकोईकारणमेरेविचारमेंन
श्रायाश्रवस्थाकारणहैकि एकहीदिनकेतुम्हाराहालबदलाशाहजमांयेबातेंसुन
करऐसाचुपहुश्राकिमानोंकोईसोरहाहो जबशाहरयारनेश्रत्यंतहुज्जतकीतबशाह
जमांनेकहा श्रापमेरेबडे श्रौरस्वामीहैं इसकाउत्तरमैंश्रापकोनहींदेसक्ताइसमेंश्रप्रति
ठाईश्रौरनिर्लज्जताहै शाहरयारनेकहाकि यहनहींहोसक्ताकिबिनामालूमकि
ये इसबातकेमेरेमनकोठाठसहोजितनाकि शाहजमांउसकेप्रगटकरनेमेंइन्कारक
रताथा उतनाहीशाहरयारउसके मालूमकरनेकेलियेझगडाकरताथालाचारी से
शाहजमांनेप्रथमही श्रनुचितकर्मश्रपनीरानीकाविस्तारसहितवर्णन कियाकि
यहीहेतुमेरेशोककाथा श्रौरकहाकिश्रापहीन्यायकरेंकिऐसाकर्ममनुष्यकेशोक
काकारणक्योंनहोशाहरयारनेकहाहै भ्रातातुमनेश्राश्चर्यश्रौश्रचंभेकीबातमुझको

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स ८

6

सुनाई अच्छा किया कि तुमने ऐसी अकर्मिणी को उसके पाप समेत मार डाला इस विषय
में तुमको कोई अपमान न कहेगा यदि तुम्हारे जगह मैं होता तो पापकर्मी के मारने से मुझे स
न्तोष न होता जब तक कि सहस्र स्त्रियों को मार न डालता अब मुझको तुम्हारे शोक का
हाल अच्छी तरह विदित हुआ बालक में यह विषय तुरा और शोक का देने वाला था
इस विषय में तुम जितना शोक करते उचित था कोई मनुष्य न होगा कि ऐसा अनुचित अ
पने नेत्रों से देखकर शोकवान न हो अब बतलाओ कि मेरे पश्चात् यह शोक किस प्रका
र निहत हुआ उसने कहा कि यदि मैं उसका कारण वर्णन करूं तो भयभीत होता हूं कि ऐ
सा न हो तुमको मुझसे भी असंतुष्ट हो शाहरयार ने कहा कि हे भ्राता तुमने ऐसी वात
कही कि जिसके श्रवण करने से मैं असन्त विकल और व्याकुल हुआ आप परमेश्वर के वास्ते
यह हाल मुझसे विस्तार पूर्वक वर्णन करो कि मैं असन्त अधीर हूं शाहजमां ने निरुपाय
हो कर इस भेद को छिपा न रख सका विस्तार पूर्वक संपूर्ण समाचार मसऊद और दासी
स्त्रियों का हबशियों और रानी समेत वर्णन किया और कहा इस सब समाचार को मैंने
अपने नेत्रों से देखा और समझा कि संपूर्ण स्त्रियों की प्रकृति बुराइयों से संपन्न है हर म
नुष्य को चाहिये कि उनका भरोसा न रक्खें मुझे केवल इस हाल के देखने से तसल्ली हुई

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

और उस समय से मैं अत्यंत प्रसन्न और नीरोग हूं जैसा कि आप मुझको देखते हैं शाहरया
र को इस समाचार के सुनने से अपने भाई के कहने का विश्वास न आया और क्रोधित
होकर कहा कि क्या हिंदुस्तान की रानी व्यभिचारिणी है मुझको तुम्हारे कहने का नि
श्चय नहीं जब तक कि मैं आप अपने नेत्रों से न देख लूं कदाचित् तुमको भ्रम रानी का
हुआ हो यह बहुत बड़ी बात है कदाचित् ऐसा नहीं हो सकता शाहज़मां ने कहा कि हे
भ्राता यदि तुम चाहते हो तो इस विषय को अपने नेत्रों से देखो तो कठिन नहीं है फि
र मृगया के वास्ते आज्ञा करो और हम तुम इसी इच्छा पर शहर से सेना समेत कूच कर
के बाहर को चलें और दिन भर डेरों में रहें रात्रि के समय चुपके से इस मंदिर में आक
र बैठें विश्वास है कि इस यत्न से आप भी अपने नेत्रों से संपूर्ण वृत्तांत जो मैं ने देखा है
देखेंगे शाहरयार ने यह उपाय पसंद किया अपने दरबारियों को आज्ञा दी कि कल मैं
शिकार को जाऊंगा शहर के बाहर जिस जगह डेरा खड़ा होता है खड़ा हो दूसरे
दिन दोनों बादशाह भोर होते ही बन को सिधारे और वहां पहुंच कर डेरों में ठहरे जब
कि रात्रि हुई शाहरयार ने अपने मंत्री को बुलाकर आज्ञा दी कि मैं किसी कार्य के निमि
त्त जाता हूं मेरी जगह पर बैठ कर मेरे किसी मनुष्य को सेना से बाहर न जाने दीजियो फि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स

खवस्सीनीथोडेसेपरसवारहोकरविरूपाक्ष नगरमें आयेऔरवहांसे शाहजमांकेमंदिरमें
जाकरसोरहे औरप्रभातहोनेकेपहिलेउसीखिडकीमेंजावैठेकिजहांसे शाहजमांने उनह
बशियोंऔरबांदियोंकोरानीसमेतदेखाथा अवतकसूर्यनहींनिकलेथेकिएकबांदी
राजद्वारकाचोरदरवाजहखोलाथाऔदेरणीकेरानी उन्हींअपनेहवशियोंसमेतजोस्त्री
रूपवनेहुयेथेनिकलकरबागमें आयेऔरमसऊदकोपुकाराशाहरयारनेकिवो सबस
माचारकहनेऔरसुननेके योग्यनथादेखकरमनमेंकहनेलगाकिहेलगाकिहे परमे
स्वरयहकाअनर्थहैकिइतनेबडेबादशाहकीस्त्री येसाव्यभिचारकरैफिरशाहजमांसे
कहाउचितमेंहै किइसअनित्यसंसारकोजो एकक्षणमेंप्रसन्नकरताहै औरदूसरेक्षणदुख
मेंडालताहै परित्यागकरेंऔरअपनेदेशऔरसेनासे अलगहोकरदूसरेदेशोंमेंअपना।
जन्मकटैंऔरइसनिर्लज्जताकोकिसीसेनकहैंयदिशाहजमांकोयहबातअंगीकारन
थीपरंतुअपनेभ्राताकोअत्यंतअधीरदेखकरउससेअसमर्थाउत्तरदेना उचितनजानाका
हाभाईमैंतुम्हाराअनुचरहूं आपकीआज्ञाकोमनवचसेमानूंगापरंतुएकशर्तसेतुम्हा
रा साथदेताहूं किजवतमकिसीऔरमनुष्यको अपनेसेअधिकइसव्यथामेंपानातो अ
पनेदेशकोलौटआनाशाहरयारनेकहामुझेयहशर्तअंगीकारहै परंतुसंसारमेंकोई

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मनुष्य हमारे समान इस दुःख में ग्रसित न होगा शाहजमाने कहा कि थोड़े ही सफर करने में
आपको इसका हाल अच्छी तरह विदित होगा फिर वो दोनों बादशाह अप्रसिद्ध रस्ते से छि
पकर एक ओर को गए और दिन भर चले रात को वृक्षों के नीचे सोए रहे दूसरे दिन प्रभात को वहां
से आगे चले चलते २ वह एक शोभायमान फुलवाड़ी में कि अति उत्तम और खारी नदी के तट
पर थी और रहे २ वह उस फुलवाड़ी में बड़े २ और उत्तम २ सघन वृक्ष लगे ऊपर थे एक ऊंचे व
हां एक वृक्ष के नीचे स्नाने को बैठ गये जब से कि रानी को शाहरयार ने उस अनुचित में
देखा था वहीं विश्राम न किया उस समय शाहजमां के साथ वार्ता आरंभ की थोड़ी देर न बी
ती थी कि एक शाह भयानक नदी से सुना बह दोनों अत्यन्त भयभीत और कंपायमान हुए
इतने में नदी का जल फटा और वहां से एक काला खंभा निकलने लगा इतना ऊंचा हुआ।
कि जिसका शिर बादल में पहुंच कर गुम हो गया उसे देखकर दोनों बादशाह बहुत डरे और
वहां से भागकर एक ऊंचे वृक्ष की डाली और पत्तियों में छिप कर बैठे वहां से क्या देखते हैं
कि वह काला खंभा उस स्थान से कि जहां फैल गया था नदी के तल पर आया और उसी स
मय तुरंत एक महा विकट पिशाच जो मनुष्य का पात्र होता है हो गया अनंतर काला दे
त बना और शिर पर एक शीस का सन्दूक अनंत दृढ़ जिसमें चार ताले थे पीतल के लगे हु

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

से ८

8

थे थे हुए उसी वृक्ष के नीचे आया और उस संदूक को अपने शिर से उतार कर चार कुंजियों से
जो उसके कमर में लटकती थीं खोला उसमें से एक स्त्री अति सुंदरी उत्तम आभूषण और वस्त्र
से अलंकृत निकल कर बाहर आई फिर उस पिशाच ने उस स्त्री को अपने पास बैठा कर उसको
प्रीति की दृष्टि से देखा और कहा कि हे प्यारी तू अपनी सुंदरता में एक ही है बहुत समय व्य
तीत हुआ कि मैं तुझ को ब्याह की राति को ले आया था और तेरे रूप छवि अनूप को देख मो
हित हुआ उस दिन से तुझे निष्पाप पाता हूं इस समय मुझ को निद्रा का अति ही बेग है चाह
ता हूं कि तेरे पास सो रहूं यह कह के वह महा कुरूप पिशाच उसके ऊरु पर अपना शिर रख
कर सो रहा पांव उसके इतने बड़े थे कि नदी तक पहुंचे और उसके श्वास का पवन बादल के
शब्द की समान सारी नदी में गूंजि रहा था दैवयोग से उस स्त्री ने जो शिर उठा के ऊपर की ओर
देखा तो दृष्टि उसकी उन्हीं दोनों बादशाहों पर पड़ी कि जो वृक्ष पर छिपे हुए थे उसी समय
उनको हाथ के सैन से बुलाया कि चुपके से नीचे उतर आओ वह उसके अभिप्राय को स
मझ कर भयभीत हुए और सैन से उस स्त्री को कहा कृपा कर हमें यहीं बैठे रहने दे उसने
धीरे से उस पिशाच का शिर अपनी गोद से उतार पृथ्वी पर रख दिया और उठि के उनको
धीरज देने लगी और कहा कि तुम दोनों शीघ्र ही वृक्ष से उतर मेरे समीप आओ यदि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तुमसेराकहनानमानोगेतोमैंपिशाचकोजगाहूंगी वहउसीसमयतुमदोनोंकोमार
डालेगाइसबातकोसुनकरभयमानभये औरडरपकेसेवकतथीरेतुमपरमे उनरक्षाये
वह सुंदरी मुसकयातीहुईदोनोंकाहाथपकड़करथोजेहूरहदलकेनीचेलेगई औ
रउसकार्यकीइच्छाकीकिजिसकोलज्जाकेकारणसेवर्णननहींहोसकता प्रथमही
दोनोंबादशाहोंने उसकेवास्तेइनकारकियाफिरस्त्रीके भयदेनेसे उन्होंनेनिरुपाय
होउसकोइच्छापूर्णकीफिरउसस्त्रीनेमुंदरियां दोनोंबादशाहोंसेकि अपने२ अं
गुलियोंमेंपहनेरूपथेमांगली औरएकछोटासासंदूकअपनेतोशेखानेसेनि
काला औरउसीसंदूकमेंसेएकडोरा किजिसमेंबहुततीन महोनेकेपश्चात्खोली
फा अपनेशत्रुओंकोविजयकरबुगदादमें आयासबसेअधिकउसेफिननाके भे
टकोलालसाथीपहिलेउसीकेमकानमेंगयाजोजेवदाऔरसबछोटेवडेंकोका
लेवस्त्रपहिनसोगमेंदेखविस्मितभयाकि यहकिसकासोगहैजेवदाने खलसे
ठगीसासखीचकहावह विलायफिननहकाहै कितुम्हारेपीछे अकस्मातो मृत्यु
सेकालवशभई खलीफाइस समाचारकेसुननेतेहीशोकसागरमेंअचेतहो गिरनेलगा
तोजाफरवजीरनेजोउसकेसाथथाउसेसंभाललियाजबवहसचेतभयातोपूछनेलगा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स ९

किमेरीपरमप्रियाफितनाकीकहांगाडीहै जेवदानेकहाकिमैंनेआपहीउसकासब।
कामकियाओरउसकीमसजिदवनवाईयदिआपआज्ञादेंतोमैं आपकेसाथवहां च
लूंखलीफानेकहातुमहो ऊछ अवश्यनहीं ओरउसीसमयवस्त्रवदलनेविना खि
लीफामसहूरकोसाथलेकवरिस्तानमेंगयातोक्यादेखताहै किएकचित्रकालेक
पड़ेपहिनेऊयेरक्खाहै ओरउसकेचहुंओरदीपकबरनरहेहैं ओरएकवस्त्रवहां
वड़ीसजावटसेधरीहै अमेंसविस्मितओरआश्चर्यितऊआकिसवनियाउाह होने
परभीजेवदानेइसमठकसेकवरवनवाईहैऐसानहोजोवास्तवमेंकितनानमरीहो
ओरमेरीस्त्रीनेओसरणायमहलसेउसेनिकालदियाहोवा किसीहरजगहभिज
वादियाहोजहांसेकोईहालउसकानसुनपड़ेउसकेउपरांतवहविचारनेलगा।
किमुझेविश्वासनहीं किजेवदानेमेरीप्रियाकीअपेक्षाऐसाकियाहोफिरवहु
कालपर्यन्तचिंतितरहा निदान आज्ञादीकिइसचित्रकोजोकवरपररक्खागयाहै र
तुरंतउतारउसकेवस्त्र उतारोजववहनग्नकियागयातोक्यादेखाकिएककाष्ठ
केपुतलेकोकपड़ेपहिरायेहैं यहदेखउससे अधिकव्याकुलतानऊवाओरआज्ञा
किकवरखुदवाकेफितनहकीलोथदेखेकिवालवेमेंवहमरीहैवानहीं परं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नविद्वानोंनेउसेमनाकियाकिहमारेधर्मशास्त्रमेंकबरखुदवानावर्जितहै यहसुनखली
फानेकबरकोनखुदवाया औरवहुजनसेकुरानपढनेवालोंको उसपरनियतकियाप्रायः
आपभीवहांजाताऔररोतानिदानएकमासपर्यंतफितनाकेध्यानमेंजाफरखलीरऔ
रसभासहितरुदनकरतारहाकोई दिनऐसानथाकिखलीफाउसकोस्मरणनकरता
औरहायहाय करतारोताइसअवधिमेंसिवायरोने पीटनेकेदूसरेकार्यकीओरध्यान
खलीफानेनदिया चालीसदिनतकउसकीयहीदशारहीफिरउसनेकालेवस्त्रउतारे
औरसबकोकपडेबदलनेकीआज्ञादीतिसपीछेबहुतसीरातोंकेजागरणकेकारण
शय्यापरजायसोगयादैवयोगसेदोबांदियां अपनीचौकीकेअनुकूलपकासिरहाने
औरदूसरीपांयतेकीओरबैठीहुईचिकनकाढरहीथीं सिरहानेवालीकानामनूरुल
निहारथाओरदूसरीकानामनगहूतपहिलीनेखलीफाकोसोयाहुआजानकहा मैं
नेआजशुभसमाचारसुनाहै हमारेखावीन्दजवजागेंगेतोउनसेकहेंगेखलीफासुननेहीप्र
सन्नहोंगेफितनानहींमरीवहकुशलपूर्वकहैदूसरीनेकहाहेपरमेश्वरयहकैसीबात
हैकिफितना अबतकजीतीहैउसनेपेसेबडेशाहसेइसवचनकोकहाकिखलीफाजग
उठाओरकहनेलगातुमनेकौनशोरकरकेमुझेजगायाउसनेविनयकी अयहजूरमेरा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स
१
10

अपराधक्षमाकीजियेमैंनेऐसी बातसुनीजिससेमुझकोधीर्यनरहा अभीमैंनेसुनाहैकिफि
तनाजीतीहैखलीफानेआश्चर्यितहोयपूछावहकहांहै उसनेविनतीकीमैंनेआजसं।
ध्याकोफितनाकेहाथकालिखाहुआएकपत्रएकमनुष्यकेहाथपायाहै जिसमेंउसने अप
नासबवृत्तांतलिखदियाहैमैंचाहतीथीकिआपकोदिखाऊंपरजबमैंनेदेखाकि
आपनेएकमहीनेपीछेसबआरामकियाहैइसलिये वहपत्रदेखानाउचितनजाना।
खलीफानेकहाउसपत्रकोशीघ्रमुझेदेइतनाविलंबक्योंकिया उसनेवहपत्रझटखली
फाकोदेदियाखलीफानेबडेहर्षसेउसेखोलपढाउसमेंफितनाने अपनासबवृत्तान्त
औरगानिमकीसेवाकाहाल लिखाथाखलीफानेवहपढगानिमके नामपरलज्जि
तहोयमहाअप्रसन्नहुआ औरजेबदाकीधूर्तताकोसबडे आश्चर्यमेंहोसमझाकिफितना
नासेगानिमनेअवश्यभोगकियाहोगायहविचारमनमेंकहनेलगाहेदुष्टात् चारमा
सतकउसतरुणव्यापारीकेघरमेंरहीऔरमुझेमालूमनहुआमैंनेयहहोयफंच कितना
डरवनेरेमरने मेंउठायानिदानखलीफाकोपितहोयशय्यासेउठसभामेंआयावहां।
सभासदउसकेआगमनकीबाटदेखतेथेवजीरजाफरनरवरकेसन्मुख आयधरनीचू
महाथबांधखडेहुएखलीफाने आज्ञादीमैंएकविषयमेंतेरीपरीक्षालेताहूंतवा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रहेजारसियाहीचौकीपहरेके अपनेसाथलेकेगानिमऔपारीदमिशककेनिवासीको
जोअबूसवकापुत्रहै पकडला औरफितनहनामकमेरीदासीकोजोचारमहीनेसेउसके
घरमेंरहतीहैहाथसेजानेनपावेउसेभीपकड़ अपनेसाथलेने आइयोऔर उसकेमह
लकोखुदवाके धरतीकेबराबरकरडालमैंउनदोनोंकोकठिनदंडदिया चाहताहूं
वजीरनेयह आयसुपायसेनालेसिधारा औरगानिमकामहलखुदा औरसेघेरलिया
औरबेलदारभीघरखोदनेकेलियेहाजिरहुये तिसपीछे वरकंदाजोंकोआज्ञादीकि
चेतन्यरहोकिसी औरसेवहव्योपारीबाहर निकलनेनपावेउससमयगानिमऔरफ़ि
तनादोनोंभोजनकरचुकेथे अकस्मातफितनानेघरकेद्वारमेंजोमार्गमेंथाकादेखा
किजाफरवजीरसेनालियेहुयेद्वारपरखडाहै उसेविश्वासहुआकियहकटकगानि
मकेपकडनेकेहेतुआयाहै समझभागईकिमेरापत्रखलीफाकोपहुंचाउसनेवजीर
कोमेरेलेनेकोभेजाहै महाभयभीतहोकांपनेलगी औरयहभीविश्वासहुवाकिख
लीफामेरी आपत्तियोंकोसुनकदाचित्‌ मुझेकुछनकहेगापरंतुगानिमकोदेखते
हीबधकरडालेगायहशोच उसनेगानिमसेकहाकिबहुतसेनाहमेंपकडनेकोनग्र
खडेलियेवजीरसहितखड़ीहै औरकोतवालभीउसकेसाथहैगानिमयहबचनसु

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स ॥

तेहीभयभीनहुआकिबातकरनेकीभीशक्तिनरहीफितनहनेकहाबैठक्याहैसोसमय ऊछ्वन
होरहायदितुझकेप्यारकरतेहोतोउठो ओरअपनेवस्त्रउतारदासोंकेकपड़ेपहिन अपनेमुख।
ओरहाथोंमेंकालीभस्ममलो ओररसोईकेपात्रोंकाटोकरा अपनेसिरपररखयहांसे
निकलजाओजिसभांतिहोसकेअपनीरक्षाकरोसिनाकेलोगरसोइयेका मजूरस।
मझकरतुझेऊछ्वनकहेंगेयदिएकबेकि मालिकयरकाकहाहैतोउनसेकहियोवरमे
गानिमनेकहासुझकेकेवल तुम्हारेहीलिये भयहै अपनेप्राणकाऊछ्वसेदेहनहीफि
तनानेकहामेरा ऊछ्वभीशोचनकरोमैंअपनेकोवरकीवस्तुसहित बचालूंगी ओ
रजबखलीफासेमेरासामनाहोगातोतेरीओरसेभीसफाई करहूंगीयदिइससमयतूउ
सकेसन्मुखजावेगातोनिसंदेहबहतुझेमारडालेगा गानिमयहसुनबहुतघबरा।
याकिक्याकरूंफितनानेउसचिंतामेंदेखकहाहेप्यारेजोमैंकहूंनीसुकरोगानिम
नेनिरूपाययहोदासोंकेमहामलिनवस्त्रपहिरे ओरसियाहीओररवलेहकीभस्मदेह
परलगाययोलीपात्रोंकाटोकराशीश परररवफितनासेविदाहोबाहरनिकला ओ
रसीढ्याकिसीकूचेकीओरचलासिपाहियोंनेगानिमकोरसोइयेकालड़काससमकरऊ
छ्वनकहाजबवजीरकेसन्मुखसेहोकेचलाउसनेभीनजानाकियहवहीहै जिसकेप

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कपड़ेनेकोयहांआयाहूं औरतिसालदारआदिसिपाहीजो वजीरकेपीछेखड़ेथे उन्हों
नेभीउसेनपहिचानागानिमउसीप्रकारसेनगरकेद्वारतकपहुंचा औरवजीर द्वारखु
लापायभीतरआयातोक्यादेखताहैकिमंदिरमेंबहुतसंदूकें औरथैलियांरक्खीहैं
जिनमेंउत्तमउत्तमवस्त्रऔरबहुतसीद्रव्यभरीहै औरबहुतसबयतनगानिमकाथाजो
उसने अपनेव्योपारकीवस्त्रदेचकरसंचयराष्या फितनावजीरकोदेखउसी औरचरणोंछू
यरथरकांपनेलगीजैमेकोईमारेजानेके समयकांपताहै औरवजीरसेविनती
कीकिजोकुछखलीफाकीआज्ञाहै वहमेरेषीषानेनोपरमुझसेसबवरनिकी
जियेवजीरनेउसकेचरणछूसकहाहैसुंदरीमेंकेवलइसीहेतु आयाहूं कितुमहंय
हांसेषाहीदवरीमेंलेजाऊं औरउसव्योपारीकोजोइसघरमेंरहताहैखलीफाके
निकटपहुंचाऊं फितनानेकहामैंवर्तमानहूंमुझेलेचलो औरवहव्योपारीजि
सनेमेरेप्राणकीरक्षाकीहैवहतोयहांनहींहै अनुमानएकमासकेबीताहोगा
किवहव्योपारकीवस्त्रलेकेदमिश्ककोचलागयाऔरमुझेअपनीवस्त्रकीरक्षा
केलियेजोइनसंदूकोंऔरथैलियोंमेंहैंयहांपरछोड़गयाहै अबमैंविनयकर
तीहूंकिइनसंदूकोंऔरथैलियोंकोयहांसेउठाकेबादशाहकेमहलमेंभेज

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स
१२

वादे। वजीरनेकहाबहुतअच्छा औरमजदूरोंकेशिरपरधनसंदूकों औरथैलियोंकोरखकरमस।
हरकोसौंपदियाकिखलीफाकेनिकटभेजदेफिरवजीरनेकोतवालकेकानमेंकहातुमइस
घरकोखुदवाकेधरतीकेबराबरकरडालोयदिकहीं वहव्योपारीछिपाहोगातोविदितहो
जावेगानिदानइसघरमकानखुदनेलगा औरउधरवजीर औरफितनादोनोंबांदियोंस।
मेतदरबारशाहीकोसिधारेकोतवालनेतुरतउधरमेंउसमकानकोखुदवायमैदानकर
दियाजबकहींभीगानिमकाचिन्हनपायातोवजीरसेआययहहालकहा खलीफानेवजी
रकोहरसेआतेदेखकहाकितूनेमेरीआज्ञापालनकीउसनेबिनयकरकहा अयहजरतमैं
नेआपकीआज्ञानुकूलपहिलेतोगानिमकोढूंढाविदितहुआकिएकमहीनेसेवहदामि।
यककोचलागयाफिरउसकागृहखुदवाडालाऔरजोकुछअसबाबधनादिकहाथलगाउसेमस।
हरकोसौंपदियाऔरफितनाकोलेतेआयाहूंखलीफागानिमकेनपकड़ेजानेपरअधि
ककोपितहुवाऔरफितनाकोअपनेसमीपबुलवायनतोउससेकुछबातकी औरनउ
सकीओरदेखासमझाकियहअवश्यव्योपारीकेसाथरहीहैफिर महाकोपितहोम
सरूरकोआज्ञादीकिइसदुष्टाकोलेजाय अमुककारागृहमेंकैदकरोयहकारागृहशा।
हीमहलकीदीवारकेसमीपथाप्रायः अपराधीबांदियांइसीकारागृहमेंकैदकीजातीं।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मसहूरनेयहआज्ञापायउसेवहींकैदकिया औरखलीफानेउसीकोषमेंमुहम्मदजवेनीऔ
रदमिषककेबादशाहकेनामयहपत्रलिखा हारूँरषीदकापत्रमुहम्मदजबेनीकेनामसपरा
भाईतुमजानोऔरआगाहहोकिगानिमनामीदमिषककासौदागरअसबकाउत्रमेरीफितना
आतिसुंदरीदासीकोबहुकालकेलिभागाहइसइसपत्रकेपठतेहीकोआशीर्वाददीजबगया
थकितहोयखेतसे आयातोउसकाकृतज्ञहुवा औरकहाभाईतुम्हारे उपदिशकेकारण
मैं आज बहुतअच्छीतरहरहागयामांदगीके कारणउनवनदेसकाऔरआनेही अपने
थानपरगिरपडाऔरहृदयमेंशोचकरमनमेंअपनेकोवुराभलाकहनेलगाकिदे अ
भागे तेबहुतसुखसेरहाकरताथा तूनेहथाबेलकोयेसीशिक्षाकरअपनेकोइसकष्टमें
डालामंत्रीने इतनीकथा अपनीवेटी शाहजादसेकहकरकहाकि हेपुत्रीइससबखऔर।
आतामेंहथाचाहतीहोकिअपनेकोगयेकीसमानकष्टमेंडालोशाहजादने अपनेपि
तासे कहाकिइसदृष्टांतपरकि आपनेकहामें अपनीइच्छासेनहटूंगी औरजवतककि
तुममेराविवाहबादशाहसेनकरोगे इसीप्रकारआपसेमैं प्रार्थनाकरतीरहूंगी मंत्रीने
कहाकिदुष्टअसइसवातकापीछानहीछोडनीफिरमैंतुझेवोहीदंडदूंगाकिजोउस।
वैपारीने अपनीभार्याकोदियाथा शाहजादनेप्रश्नकियाकिउसनेकिसकारण अपनी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स प्र १३

13

स्त्रीको दंड दिया था मुझे इस इतिहास के सुनने की अति लालसा है फिर उस ने विचार वाये परा काऊ वा और बैल से का ऊसा मंत्री ने कहा हम रे दिन वह व्यापारी रात्रि को भोजन से निश्चिंत हो अपनी स्त्री समेत उन दोनों पशुओं के पास जा बैठा और सुना कि वाथा असा बैल से कहता है कि कहो भाई कल भोर को जब वह स्वामी तुम्हारे वास्ते दाना घास लावेगा तब तुम कया के रोग बैल ने कहा कि जैसा तुम ने मुझे उपदेश किया है वैसा ही करूंगा वाये ने कहा कभी ऐसा काम न की जियो नहीं तो न रह सी ओ यही जान से सारा जा को कि सुवा सो कि कल संध्या को फिर ने समय मैं ने सुना कि स्वामी हमारा अपने रसोई बनाने वाले से कहता था कि भोर के होते ही कसाई और चर्मकार को बुलाला ना बैल कल से बीमार है उसे मार कर चर्म और मांस उस का उन के हाथ बेच डालना यह बात कल मैं ने सुनी थी और मित्रता की राह से तुझे सावित किया अब मेरे विचार से तेरे वास्ते उत्तम यह है कि भोर भये जिस समय कसाई आया वा तेरे आगे लाकर डाले शीघ्र उठकर उस को खाना और निरोग बन जाना सो स्वामी तुझे नीरोग जान कर तेरे मारने का उपाय न करेगा यह बात सुन ने बैल भय भीत हो बोला कि भाई परमेश्वर तुझे आनंद दे तू ने मेरे प्राण बचाये अब मैं वही करूंगा जो तू ने शिक्षा किया है ओ पारी गये और बैल की वार्ता सुन कर वे व सठ ग मार के हंसा उस की स्त्री उस के हंसने

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

से आश्चर्यवानहुई औरपूछनेलगीविनाप्रयोजनतुम्हारेहंसनेकाक्याकारणहै उ
सनेकहावहबातबतानेकीनहीं इतनातोकहसकताहूंकिमैंवादेभ औरबैलकीबा
तोंसुनकरहंसाओरभेदमैंनहींकहसकतास्त्रीनेकहाकियहभेदबताओतोमैंभी प
सुओंकीवातों समझूंब्योपारीनेनबतायास्त्रीनेकहाकितुझेइसविद्याकेबतानेमेंक्या
शोचहैब्योपारीनेकहाकिइसभेदकेसिखानेसेमैंनजीऊंगावहबोलीकितुमुझेथो
खादेताहै औरउसकेबतानेमेंपश्चातापकरताहैतुझेभी किसीने सिखायाथाक्याब
हगरगयाथाकितूभीकालवशहोगायहमवककहतातेरा असत्यजानपड़ताहै जिसन
रहहैसकेतुझेइसभेदकोसिखायदितुझेनबतायेगातोमैंअपनेकोमारडालूंगी
यहकहकरवहस्त्रीअपनेघरकोगई औरकोठरीकाकिवाड़मूंदकरबैठी औररातभरभूखी
पितहोयबिछुरतीरही औरब्योपारीरातकोसोरहा दूसरेदिवसभीउसे उसीदशामेंदेख
करसमझानेलगाकितूकिसशोचमेंपड़ीहैबहवाननेऐसीखेने योग्यनहींस्त्रीनेक
हाकिजबलगतुझेनबतावेगामैंअन्नपानीन करूंगी इसीविधबिलपाती औररोतीर
हूंगी उसकेपतिने कहाकियदिमैंतेरी हठनापरचलूंतो अपनेप्राणसेहाथधोऊं
पत्नीनेकहामेरीबलासेतूजीयामरतुझकोयहविद्याबताकिजिसमेंपशुओंकीबो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सग्र
१४
14

ली समझके व्योपारी ने उस स्त्री महामूर्खा को उसी हठ में देखकर अपने ना और उसके ना
ते दारों को बुलाया और कहा कि तुम इस मूर्खा को समझावो कि इस बात से हट जावे और
इस विचार में न पड़े कितना ही उन सब ने उसे समझाया परंतु वह अपनी हठ से न हटी
और अपने पति के मरने पर प्रसन्न हुई और अपने माता पिता का भी कहना न माना छोटे
लड़के उसकी विकलता और आकुलता को देखकर रोने और हाहाकार करने लगे व्योपारी
से कोई उपाय बन नहीं पड़ता था कि अपनी स्त्री को समझाये और उसको इस विद्या के
पूछने से हटा रक्खे वे असंस आश्चर्यवान् और व्याकुल हुवा और शोचा कि यदि मैं यह भेद
अपनी स्त्री को बताऊं तो मैं मरता हूं और जो न बताऊं तो वह मरती है इसी शोच विचार
में अपने भवन से निकल कर बाहर जा बैठा और व्योपारी के घर में एक कुक्कुट और प
चास कुक्कुटियां थीं और एक कुत्ता हितैषी था उसी समय व्यापारी ने देखा कि वह स्वा
न कुक्कुट को और देखकर कि कुक्कुटियों से भोग करता है भूंका और क्रोधित होकर
कहने लगा तुझे धिक्कार है कि तू अस्वामिभक्त है आज के दिन विशेष करके ऐसे समय
में तू इस कार्य से अलग नहीं रहता कुक्कुट ने पूछा कि क्या कारण है कि मैं अपनी प्रस
न्नता से हटा रहूं स्वान ने कहा कि तुझे मालूम नहीं कि आज हमारा स्वामी अतिचिं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तावान् और व्याकुल है उसकी स्त्री महामूर्ख विषै से भेद को पूछती है कि जिसके बताने से
वह तत्काल ही मृत्यु पावै यदि वह नहीं बताता तो आप मर जावेगी इस कारण उसके घर के
संसर्ग स्त्री पुरुष रुदन करते हैं और हम सब भी सिवाय तेरे कि आप तो स्त्रियों से अप
ने कार्य में लगा है शोकवान् हैं ऊंट ने उत्तर दिया कि हमारा स्वामी मूर्ख है केवल
एक स्त्री रखता है सो भी उसके आधीन नहीं मैं पचास स्त्रियां रखता हूं और सब मेरे आधीन
हैं मेरी आज्ञा से कोई बाहर नहीं यदि वह यह उपाय करे तो अभी यह शोक उसका दूर हो जा
वे स्वान ने पूछा कि वह कौन सा यत्न करे कि जिससे उसकी स्त्री हठ छोड़े मुर्गे ने कहा कि
हमारा स्वामी उस मकान में कि जहां उसकी स्त्री है जावे उसको ठेका किवाड़ बंद करके एक
कलकटी से अच्छी तरह मारे और ताड़ना दे इस दंड से वह उसी समय यह हठ छोड़ देवेगी
फिर कभी उस बात का नाम न लेगी व्योपारी यह बात मुर्गे की सुन कर उठा और एक लक
ड़ी लेकर जिस स्थान पर कि उसकी स्त्री रुदन करती थी गया और लकड़ी से मारना आरंभ
किया यहां तक कि उस स्त्री को अपने हठ को छोड़ने के सिवाय और कुछ बन न आया घबराके
अपने पति के चरणों पर पड़ी और कहने लगी कि बस अब न मारो मैंने हठ छोड़ा फिर कभी
ऐसी हठ न करूंगी इस दृष्टान्त के अनुसार कि वह स्त्री चुप हो रही और कर जोड़ बिनती कर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नेलगीओपारीनेउसेआपने अनुकूलपाकर किवाड़खोलदियेनातेदारदोनों औरके उ
सेचुपचापदेखकरप्रसन्नहुए औरपरमेश्वरकाधन्यवादकरकेकहाकिप्रभूनेबड़ीकृपा।
कीकिउनदोनोंके प्राणबचाये मंत्रीनेयहकथाकहकरशाहज़ादेसेकहाकियदितुमअप
नाहठनछोड़ोगीतोतुमके वैसाही दुःखहोगाजैसाकिसौदागरने अपनीस्त्रीकोदियाथा
शाहज़ादीनेउत्तरदियाकिजोकुछआपनेकहामैंनेसुनापरंतुमैंइसहालकोसुनकर
अपनीचाहनाकोनछोड़ूंगी मुझकोबहुतसेइतिहास औरदृष्टांतअपनेअभिप्रायकी
सिद्धिकेमालूमहैं उनकाकहनानिष्फलहैयदितुममेरीचाहनासुफलनकरोगेतोमैं
आपबिनाआज्ञातुम्हारेराजाकेशरणमेंजाऊंगी बेचारामंत्रीअपनी बेटीकेनकरार
सेलाचारहुआ उसकीचाहनाको अंगीकारकिया औरअत्यन्तशोकवानहुआ और
बादशाह शाहरयारकेपासजाकरविनयकीकिमेरीपुत्री आजकीरातको आपसे
विवाहकियाचाहतीहै बादशाहकोअपनेमंत्रीकेकहनेसे बड़ा आश्चर्यहुआऔर
कहाकितूनेक्योंअपनीपुत्रीकेवास्तेयहबातजानबूझकरठहराई मंत्रीनेबिनयकि
याकिइसलड़कीने आपही मुझसेइसबातकोचाहाहै औरउसे इसबातमेंअत्यन्तह
र्ष औरप्रसन्नताहैकिएकरातआपकीदुलहनहोकरभोरकोमारीजावे बादशाहनेमं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

त्री से कहा कि तुम जाओ और विचार न करना कि मैं तेरा पतन करके अपने प्राण को छोड़ूं मार
होने ही शाहज़ादा से मारने के तुझे सौंपी जावेगी यदि उसके मारने में अपने पराये से बि।
लंब करेगा तो तू भी उसके साथ मारा जावेगा मंत्री ने विनय किया कि मैं आज्ञापालक आ
पका हूं यद्यपि वह मेरी पुत्री है उसको मारने में मुझे क्लेश होगा तथापि आपकी आज्ञा की
अवश्य पालन करूंगा बादशाह ने मंत्री से यह सुन कर चाहना उसकी अंगीकार की और क
हा कि इस महालन में जाओ रहते न ही आज ही की रात को ला कर मेरे साथ विवाह कर दे मंत्री
बादशाह से विदा हुआ और इस महल्लात को शाहज़ादे से जा कर कहा वह उसे सुन कर अस
न्न हुई और अपने पिता की कृतज्ञता को और थी छोड़ कर चाहने लगी कि तुम मेरा विवाह बा
दशाह से करके पश्चात्ताप न करना परमेश्वर चाहेगा तो यह शुभ कार्य तुम को जीवन पर्यन्त हर्ष
का देने वाला होगा फिर उसने कपड़े पहिने और अपनी छोटी बहन दुनियाज़ाद को बुला क
र एकान्त स्थल में ले गई और कहा कि बहन मैं तुझ से एक बात में सहायता चाहती हूं मुझे
निश्चय है कि तू उस बात से इनकार न करेगी पिता मुझे बादशाह के साथ विवाह करने को
अब लिये जाता है इस काम में शोक वा न न कीजियो और जो मैं कहूं मो तू अवश्य करना जि
स समय कि बादशाह के पास जाऊंगी और उस से कहूंगी कि मुझे बुलवा के मेरे पास बि।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

म३ १८

16

हके मकानमें मेरे पास सुलवाये कि मैं तुझसे बातचीत करके दिखाऊं तू तुरंत आइयो। और रात्र
अच्छी तरह स्मरण रख कि जब भोर होने को एक घटी रह जावे तो मुझे नींद से जगा के कहना
कि बहन तुम जागती हो तो कोई कथा अच्छी जो तुम्हें याद हो सो कहो कि जिस्से मेरा जी ल।
गे मैं उसी समय कथा कहनी प्रारंभ करूंगी मुझे विश्वास है कि इस उपाय से मेरी जान बच जा
वेगी दुनियाजादने यह बात अंगीकार की और कहा बहिन तुम धीरज रक्खो मैं बादशा
ह के बुलाते ही उसी समय आजाऊंगी और तेरी आज्ञानुसार करूंगी फिर मंत्री शाहरजाद
को राजमंदिर में ले गया और रीत्यानुसार बिबाह करके उसे शयनमंदिर में छोड़कर आप विदा हु
आ एकांत में बादशाह ने शाहरजाद को आज्ञा की कि अपने मुख पर से वस्त्र उठाओ ज्यों ही उस
ने मुख पर से परदा उठाया त्यों ही उसके रूप मनहरण को देखकर मोहित हुवा और उस।
के नेत्रों से अश्रु बहते देखकर पूछा कि तू रुदन क्यों करती है शाहरजादने बिनय की कि
एक मेरी छोटी बहन है जिसको मैं बहुत चाहती हूं और वह भी मुझसे प्रीति करती।
है चाहती हूं कि वह भी आज की रात इसी कमरे में आकर रहे कि सूर्योदय पर हम दो
नों परस्पर अंतिम भेंट करें जो आपकी आज्ञा होतो मैं बुलवालूं और उसको प्यार करके
पीछे हूं शाहरयारने उसे अंगीकार किया और उसके बुलाने की आज्ञा दी सो दुनियाजादशा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हके बुलानेके अनुसार राजमंदिरमें आई शाहरयार शाहरजादको लेकर एक बड़े ऊंचे श
य्यापर कि उस समयकी बादशाहोंकी यही रीति थी सो या और दुनियाजादनी चे शय्या
के एक कोने पर कि उसके वास्ते प्रथमसे बिछवा रक्खी थी सोई और दुनियाजाद एक
घड़ी प्रभातके पहिले जागी जिस भांति उसको बहनने उसे प्रथमसे शिक्षा कर रक्खी
थी और कहा हे मेरी प्रियबहीन मुझे इस समय शोकके कारण कि तुम्हारी तरफसे मे
रे चित्तमें है निद्रा नहीं आती मैं बहुत बेचैन हूं जो तुम जागती हो तो जो कोई कथा अ
च्छी याद हो सो कहो तो मैं तुमसे इस पिछले समयमें सुनूं कि यह मेरे शोकके नि
वृत्तिका कारण हो शाहरजादने उसके उत्तर देनेके पूर्व बादशाहसे बिनयकी कि जो
आपकी आज्ञा होतो मैं अपनी बहिनको प्रसन्न करूं और उसकी चाहनाके अनुसार।
कोई कथा कहूं बादशाहने उसे प्रसन्न होकर कहनेकी आज्ञा दी फिर शाहरजाद अपनी बहि
न दुनियाजाद और बादशाहके सन्मुख पिशाच और व्योपारीकी कथा कहने लगी व्योपा
री और पिशाचकी कथा शाहरजादने कहा अगले समयमें एक व्योपारी था अति धनी
और व्योपारकी वस्तु बहुत रखता था यद्यपि बहुधा कारवारी कोठियां और गुमाश्ते
और सेवक जगह जगह पर नियत थे तथापि आप प्रायः व्योपारके वास्ते देश विदेश

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्र
१०
17

जायाकरताएकबेरउसेकिसीबडेकार्यकेनिमित्तकिसीदूरशहरमेंजाना अवश्यपड़ा
अकेला आपहीघोडेपरसवारहोकरचला औरजहांउसकोइच्छाजानेकीथी वहां
किसीभांतिकीखानेकीवस्तुनमिलतीथी इसवास्तेएकखुरजीमेंखानेकोकुल
चेऔरकुछुहारेभरलियेफिरवहांपहुंचकरकामकरचुकनेकेपीछेवहांसेलौटाचौ
थादिनथाकिउसनेभोरकेसमयअपनारस्ताछोडकरइच्छाकीकिसीरूखकीछा
यामेंठहरविश्रामकरेदूरसेदेखाकिएकरमणीय सघनवृक्षोंकेनीचेसुंदरनिर्म
लनीरमयीकुंडहैवहांपरजाकरघोडेसेउतराघोडेको एकवृक्षसेबांधउसीकुंडहै व
हांपरजाकरघोडेसेउतराघोडेको एकवृक्षसेबांधउसीकुंडकेकूलपरजाबैठा औ
रकुलचेऔरछुहारेथैलीसेनिकालकरखानेलगाजबखाचुका औरपेटभरगयातोगु
ठलियां छुहारेकीइधरउधरफेंकदींतदनंतरअपनीनियमानुसारपरमेश्वरकीवंदनाः
करनेलगा जबवंदनाकरचुकातोदोनोंघुटनेटेककरप्रार्थनाकरनेलगाइतनेमेंउस
नेएकबड़ाविकटपिशाचदेखाकिहाथमेंखड्गलेकरउसकीओरझपटकरआया औ
रअप्रसन्नहोयउसेललकारके कहाइधरआकि तुझेमारूंयोंपापीविकरालरूप और
भयमानबातेंसुनकरभयभीतहुआऔरकम्पायमानहोकरउसपिशाचसेकहाहै

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्वामी मैंने आपका कौनसा अपराध किया कि जिससे आप मुझे मारते हो पिशाच ने
कहा कि तूने मेरे पुत्र को मारा है उसके बदले मैं तुझे मारता हूं ब्योपारी ने कहा कि मैंने
तुम्हारे पुत्र को क्यों कर मारा मैंने तो उसे देखा भी नहीं पिशाच ने कहा कि क्या तू अपना
रस्ता छोड़कर नहीं बैठा और अपनी झोले से छुहारे निकालकर भोजन नहीं किये
और उसकी गुठलियां चारों ओर नहीं फेंकी ब्योपारी ने कहा यह सब सच है मैं इन बातों
को झूठ नहीं मानता पिशाच ने कहा कि जब तू छुहारे की गुठलियां चारों ओर फेंक
ता था तब एक गुठली मेरे पुत्र की आंख में उसको ऐसी लगी कि वह उसी समय काल व
श हुआ अब तुझे उसके बदले बध करता हूं ब्योपारी ने कहा कि हे स्वामी प्रथम तो मैं
ने तुम्हारे पुत्र को जान बूझ कर नहीं मारा और जो मुझ से अज्ञानता में अपराध भी हु
आ तो आप कृपा करके क्षमा कीजिये पिशाच ने कहा न तो मैं क्षमा करना चाहता हूं
और न तरस करना क्या तुम्हारे धर्मशास्त्र में बध के बदले बध नहीं लिखा है मैं तुझे
अवश्य मारूंगा जैसा कि तूने मेरे पुत्र को मारा है यह कह के उस पिशाच ने उसकी बांह
पकड़ उसे पृथ्वी पर गिराया और मार डालने पर उद्यत हुआ इतने में ब्योपारी अपने
स्त्री पुत्रों को स्मरण कर रुदन करने लगा और परमेश्वर और देवताओं की सौगन्द।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

न्कदिलानेलगाकिमुझेछोड़दे पिशाचनेउसकाबेनापीटना सुनकरहाथअपनाउठह
रालियाओरचाहाकिजवयहचुपहोतोउसेमारेस्यापारीनेरोनापीटनानछोड़ा ओरक
हाकरकेमहाविलापकरतारहापिशाचनेकहाजोतूमुझकेवदलेरुधिरभीअपने ने
त्रोंमेंवहावेगातोभीतुझेनछोड़ूंगाव्योपारीनेकहाकिअत्यंतपश्चात्तापहै कितुमको
किसीतरहदयानहींआतीकिएकदीननिष्पापमनुष्यको अन्यायसेमारतेहोमेरे रो
नेपरविचारनहींकरतेक्यावास्तवमेंमुझे मारहीडालोगेपिशाचनेकहांहांमेरीयही
इच्छाहै इतनेमेंभोरहोगयाशहरजादइसकथाकोयहींतककहकरकेचुपहोरही
ओरविचारकियाकिअववादशाहकेनिमाजपढ़नेकासमयहै ओरनिमाजपढ़कर द
रवारमेंजावेगा दुनियाजादनेकहाकिवहनेयहका अच्छीकथाथी शाहरजादनेकहा
किक्यातुमकोयहकथापसन्नआईजोआगेसुनोगीतोतुमको अधिकहर्षप्राप्तहोगा।
ओरआश्चर्यकरोगीजोवादशाहने आजमुझेप्राणदाननदियेओरकलभोरकोमुझेक
हनेकीआज्ञादीतोकलकीरात्रिकोशेषकथावर्णनकरूंगी शाहयारकिवहभीइसक।
थाकोसुनकेअतिप्रसन्नहुआथा अपनेचितमेंविचाराकिसंपूर्णकथाकेपूरेहोनेतकश
हरजादकोनमारनाचाहियेसोउसदिनउसेनमाराओरराज्यापरसेभोरकीनिमाजपढ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नेकेवास्तेउठाऔरनिमाजकेउपरांतसभामेंगया औरमंत्रीकिअपनीपुत्रीकेशोकमेंरात्रि
भरसोयानथाऔरलाचारीसे अपनीलड़कीकेमारनेवालाबनाथाओरकोबादशाहकीअ
नीतिकी आज्ञानपाकरअतिआश्चर्यवानहुआबादशाहदिनभर अपनेदेशऔरसेना
के प्रबंधमेंतत्पररहारातकोफिरशाहज़ादकेसाथकमरेमेंजाके सोरहाभोरहोने
एकघडीपहिले फिरदुनियाजादनेजागकरकहाकिहेमेरीप्रियबहनजोतुमजागती
होतोइसकथाकोप्रभाततककहोऔरइसकथाकोसमाप्तकरो इतनेमेंशहरयारने आ
पहीशासनहीकिकथापिशाचऔरव्यापारीकीसमाप्तकरमैंउसकेसुननेकीअतिलाल
सारखताहूं शाहरज़ादनेइसप्रकारकहना आरंभकियाकिहेस्वामीजबव्यापारीनेदे
खाकियहपिशाचमुझे अवश्यमारेगातोकहनेलगाकिहेदयालयदिमैंतुम्हारेहाथ
सेमारनेयोग्यहूंऔरतुममुझेकिसीप्रकारबेमारेनछोड़ोगेतोइच्छाकरताहूंकिइतनी
औसरमुझेदीजियेकिअपनेस्त्रीपुत्रोंसे बिदाहोआऊंऔरधनवस्त्रजोमेराहै अपने
परिवारकेनामलिखवोटिआऊंकिमेरेमरनेकेपीछे परस्परविरोधऔरझगड़ानकरें
औरमैंप्रणकरताहूंकिइनसबकामोंकेकरचुकनेकेपश्चात्इसीस्थानपरफिरआके
मिलूंगाउससमय प्रसन्नहूंजोचाहियेकीजियेपिशाचनेकहाकिजोमैंतुझको इस

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त ना अवकाश है और रत्न ने आ देखा ब्योपारी ने कहा कि जो मेरे कहने पर तुम को विश्वास न होता तो मैं
१९ उस परमेश्वर को जिसने आकाशादि संपूर्ण पृथ्वी मंडल को रचा है सौगंद खा कर कहता हूं
कि अपने संपूर्ण कामों के करने के उपरांत मैं शीघ्र ही आजाऊंगा पिशाच ने कहा कि तुझे
5 कितना समय चाहिये ब्योपारी ने कहा केवल एक वर्ष कि जिस में मैं अपने सर्व कामों को स्व
धार कर आसकूं जिस में कोई वांछा मेरे चित्त में न रहे और आप से मैं यह प्रतिज्ञा करता हूं
कि एक वर्ष के बीतने के उपरांत इसी दिन को अपने को तुम्हारे शरण में अर्पण करूंगा पि
शाच ने कहा कि आप ने इस प्रण पर परमेश्वर को साक्षी दे ब्योपारी ने शपथ खा कर परमे
श्वर को साक्षी किया इस के परस्पर प्रण पर वह पिशाच ब्योपारी को उसी ठौर के निकट छो
ड़ आप अंतर्ध्यान होगया ब्योपारी उस आकस्माती दुःख से छूट घोड़े पर सवार हुआ और
अपने घर को ओर चला रस्ते में कभी वह अपने छूट जाने से प्रसन्न और कदापि उस पिशाच
के कठिन प्रण को स्मरण कर शोकवान् होता इसी विधि ब्योपारी अपने घर को पहुंचा उ
स की स्त्री और संतानें दौड़ उसे देख अति प्रसन्न हुए और उस की भेंट को दौड़े ब्योपारी किसी।
से न मिला और रुदन करने लगा वह समझे कि कुछ ब्योपार की वस्तु में टोटा हुआ अ
थवा किसी प्रकार की हानि हुई कि जिस कारण यह इतना रुदन करता है जब उसका रो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नावेंद हुआ तो उसकी स्त्री ने पूछा कि हम सब तो तुम्हारे आने से प्रसन्न हुए परंतु तुम क्यों रो
ते हो इसका क्या कारण है व्योपारी ने उत्तर दिया क्यों मैं रुदन न करूं केवल एक वर्ष तक मैं जी
ता हूं फिर उसने संपूर्ण वृत्तांत अपना और पिशाच का वर्णन किया वह इस हाल को सुन
कर बहुत रोये विशेष कर उसकी स्त्री शिर पीटने और बाल खसोटने लगी और उसके ल
ड़के बाले बड़े शब्द से रुदन करने लगे वह दिन तो उनको रोने पीटने में कटा दूसरे दिन वह
व्योपारी संसारी कार्यों में लगा सब कामों के प्रथम उसने अपना सब ऋण चुका दिया
और अपने मित्रों को अच्छी २ वस्तुएं दीं और याचक मंगन आदि को बहुत सा धन धर्मार्थ
दिया और दासी दासों को बंधन से छुड़ाया और समस्त धन वस्तु अपने संतान को बांट दिया
और असमर्थ संतान के हेत रक्षक नियत किये और स्त्री को भी बहुत सा धन दिया जब वह
न सब कार्यों से निश्चिंत हुआ इस समय अन्तर में भी वर्ष पूरा हो गया लाचार हो कर चलने को उ
द्यत हुआ और कफन के वास्ते कुछ द्रव्य अपनी खातिर जो में धर लिया और बिदा होने के समय
संपूर्ण परिवार में कहा विलाप मचा सब उसको निपट कर छोड़ते न थे चाहते थे कि वह उस
ब भी उसके साथ जाकर अपना प्राण देवें परंतु उस व्यापारी ने अपने चित्त को स्थिर कर उन्हें
धीर्य देके बिदा किया और यह कहा कि मैं परमेश्वर की इच्छा पर प्रसन्न हूं तुम सब भी धीर्य रक्

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
२१

20

वी और समझो कि एक दिन मरना अवश्य है मृत्यु से उबरने का किसी का उपाय नहीं है व्यापारी अ
पने को उन सब से छुड़ा कर चला और उसी स्थान पर कि जहां पिशाच से भेंट हुई थी निज घोटे
से उतर उसी ऊंट के निकट जा बैठा अनंत शोक युक्त होय पिशाच की राह देखने लगा इत
ने में एक वृद्ध पुरुष एक हरणी समेत आया और उसने व्यापारी से पूछा कि तुम्हारा आना
ऐसे निर्जन वन में कि जहां विकट पिशाच रहते हैं क्योंकर हुआ बहुधा मनुष्य इस स्थल के
तले जाने से थीरवा खाकर जानते हैं कि यह तनिक विश्राम का स्थान है यही समझ कर इ
सकी छाया में आ बैठते हैं और पिशाचों के हाथ से दुःख पाते हैं व्यापारी ने उस वृद्ध मनुष्य
को उत्तर दिया तुम सच कहते हो मैं इसी धोखे में पड़ कर पिशाच के हाथ से दुखित हूं फिर
अपना संपूर्ण वृत्तान्त उससे वर्णन किया वृद्ध ने इस वृत्तान्त को सुन कर बड़ा आश्चर्य किया औ
र कहा संसार में इससे कोई विचित्र वृत्तान्त न हुआ होगा और तू ने जो परमेश्वर की सौगंद खा
ई थी सो तेरी कीर्ति बड़ा सत्यवान है तेरी सत्यता पर धन्य है अब मैं बिना देखे तेरे हाल के कि व
ह पिशाच तेरे क्या करता है यहां से न जाऊंगा यह कह कर वह वृद्ध उस व्यापारी के निकट
बैठ गया फिर दोनों परस्पर बातें करने लगे इस समयान्तर में एक दूसरा वृद्ध मनुष्य कि उ
सके साथ दो काले ऊंट रस्सी में बंधे हुए थे आया और उन दोनों का समाचार पूछने लगा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पहले हूढ़ेने व्योपारीका संपूर्ण समाचार वर्णन किया और कहा कि मैं भी इसके हाल को देखने
के लिये यहां बैठा हूं वह दूसरा हूढ़ भी इस वृत्तान्त को आश्चर्यमान उन दोनों के पास यह
हाल देखने के लिये बैठ गया और बैठ कर बातें करने लगा उसे थोड़ी बेर हुई थी कि ती
सरा हूढ़ा खच्चर लिये हुए आया और उन दोनों हूढ़ों से कहने लगा कि यह व्योपारी को
इतना शोक क्यों है तुम्हारे हिग बैठा है उन दोनों ने उस व्योपारी का संपूर्ण वृत्तान्त वर्णन कि
या वो सरे हूढ़ने भी इच्छा की वहां स्थित होकर देखें कि उस पिशाच और व्योपारी में क्या
होता है सो वह भी बैठ गया अभी उसने दम भी न लिया था कि उसी समय उन्होंने
अपने सन्मुख बन में एक बड़ा धुंआ कार धुंवा उठता हुआ देखा कि मानो मही का खंभ वा आ
से रूप उठा है और उनके निकट एक हूं चक्कर एक बारगी हो छिपे सो छिप गया और आंख के
भिलमिला हूट में एक पिशाच अति उग्र स्वरूप खड्ग हाथ में लिये व्योपारी के निकट आ
या और उससे कहा उठ तुझे मैं बध करूंगा जैसे कि तूने मेरे पुत्र को मारा है यह बात पिशाच के
सुनकर व्योपारी और तीनों हूढ़ कम्पायमान हुए और रुदन करने लगे यहां तक कि उन
के रोने से उस बन में अति शब्द हुआ उस हूढ़ने कि जिसके पास हिरनी थी क्या देखा कि पि
शाच व्योपारी का हाथ पकड़ कर एक ओर को ले गया है और उनको निर्दयता से मारे उा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
२१

तो है वह पिशाच के चरणों पर गिर पड़ा और अति अधीनता से बिनती करने लगा है पिशाच
मैं बहुत विनय करता हूं आप कोप को थाम श्रवण कीजिये मैं इच्छा करता हूं कि अपना और
इस हरनी का समाचार जिससे तुम देख रहे हो कहूं जो यह वृत्तान्त व्योपारी की कथा से अद्भुत हो
तो आशावान हूं कि तृतीय भाग इसके अपराध का क्षमा हो पिशाच ने थोड़ी देर के पीछे
विचार कर कहा मैं ने अंगीकार किया _ वृद्ध मनुष्य और उसकी हरणी की कथा वृद्ध ने कहा
हे पिशाचाधिपति ध्यान दे कर मेरा वृत्तान्त सुनो यह हरणी मेरे चचा की लड़की और मेरी स्त्री
है जब इसके साथ मेरा विवाह हुआ था यह द्वादश वर्ष की थी मेरी अत्यन्त आज्ञापालक और प
तिव्रता थी जब विवाह हुए ३० वर्ष व्यतीत हुए और संतान इससे न हुई मैं संतान की का
मना अत्यन्त रखता था इस कारण मैं ने एक बांदी मोल ली उससे बहुत दिनों के पश्चात् ए
क पुत्र उत्पन्न हुआ तब मेरी स्त्री उस लड़के और उसकी माता से डाह और बैर करने ल॰
गी अति पश्चाताप है कि इसके डाह का हाल मुझे बहुत दिनों के पीछे विदित हुआ संयोग
वश मुझे किसी देश को जाना अवश्य पड़ा तो मैं ने उस दासी और उसके पुत्र को देख अपनी स
स्त्री से सौंप कर कहा कि जब तक मैं लौट न आऊं इन दोनों की रक्षा करना और अच्छी
तरह से रखना परमेश्वर चाहे तो एक वर्ष के पश्चात मैं लौट आऊंगा और तभी से उसने अ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पिकवैरकरनाआरंभकियाजादूभीसौरवनीथीइससमयनकवहजादूकीविद्यामेंअति
निपुणहोगईइसअभागीनेमेरेजानेकेउपरांतलडकेकोजादूकाबछडाबनाडाला औ
रअहीरकोजोमेरानौकरथाबुलाकरकहाकिइसबछडेकोमैंनेमोललियाहैअपने
घरलेजाकरपालऔरइसकोखिलापिलाकरहृष्टपुष्टकरऔरवांहीकोभीगौबनाकर
अहीरकेघरमेंजदियामैंनेआकरअपनीस्त्रीसे अपनेपुत्रऔरउसकीमाताकासमाचार
पूछा किदोनोंकहांहैंउसनेकहाकिवोदीतुम्हारीमरगईऔरतुम्हारेपुत्रकोदोमास
सेमैंनेंनहींदेखानीमालूमनहींकिवहकहांगयामैंयहहालसुनकररोनेलगाऔरनिरास
हुआऔरपुत्रकेदेखनेजानेपरआशाकीकिकभीनकभीवहमेरेहाथलगेगाइसकोआ
ठमासबीतनेनपायाकिमैंनेउसपुत्रकोनपाया यहांतककिईदकादिनआयामैंनेइच्छाकी
किउसकोवहछडामारकरभेंटकरूंअहीरकोबुलाकरकहाकिएकगौहृष्टपुष्टलेआउसयोग
वहबहीमेरीदीहीवांहीकोलेआयामैंनेजोभेंटकेवास्तेहाथपांवउसकेबांधेतोवहअसं
नदीननता औरअधीनीसेबोलनेलगी औरउसकेनेत्रोंसेआंसूकीधाराबहनेलगी यहहा
लउसकादेखकरमुझकेदयाआईऔरछुरीसेउसकेगलेपरछुरीनचलसकीतबमैंने अ
पनेनौकरअहीरसेकहाकिइसलेजाऔरदूसरीकोमेरेवास्तेलाइसबातकोसुनमेरी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अस
२२

स्त्री अतिक्रोधितहुईऔरमुझकोइर्वाअकहनेकहनेलगीकितूइसीगौकोभेंटदेइससेउ
त्तमऔरकोईब्राह्मणऔरभेंटकेयोग्यतेरेअहीरकेनिकटनहीं उसकेकहनेसुननेसे।
फिरमैंछूरीहाथमेंलेकरमारणेकोउद्यतहुआवहगाय औरभीरोनेऔरचिल्लानेलगीउ
ससमयमेंनिरुपायहुआऔरअहीरकोछूरीदेकरकहाकितूहीइसगौकोमारउसके
चिल्लानेऔररोनेसेमेराहाथउसपरनहींचलता वाहीरनिरदोष्यागौकोलेवधकरजं
लाजबउसकीखालउखड़ीनवहहड्डियोंकेसिवायमांसकुछभीनपायावहवोमायाकेका
रणहड्डिमें अनेकसहस्रब्राह्मणविदितहोतीथीमैंउसरावणवालेपरक्रोधितहुआऔरउसमरी
हुई गौकोउसेदेकेकहाकिइसकोनदीलेजाकरअपनेखेतमेंलायाजिससेनराजीवाहे
दोफिरमैंनेउसमरीहुईगौकीखबरनली औरउसअहीरसेकहाकिजोतेरेगामसकोईवछ
डाब्राह्मणहोतोशीघ्रहीइसगौकेबदलेभेंटदेनेकेलियेलेआ वहशीघ्रहीएकवछ
ड़ेकोजोअतिसीधा औरताजाथाऔरदेखनेमेंभी अतिसुंदरथालेआयामुझकोवछड़े
कावृत्तांततोमालूमथा औरमैंनहींजानताथाकिमेराहीपुत्रहैतोभीमेरेचित्तमें उसके
औरदेखनेसेही अतिहीप्रीतिउत्पन्नहुई औरवहभीमुझकेदेखतेहीबड़ीप्रीतिसेरस्सीतोड़
मेरेचरणोंपरआगिराइसहालसेऔरअधिकप्रीतिमेरेहृदयमेंप्राप्तहुईप्रेमकेकारणमें

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पोचाकाइसकोमारूंऔररहननीप्रीतिमेरेहृदयमेंभईजितनीकिअपनेपुत्रकेदेखनेसेहो
तेमैंइसप्रीतिसेअमनहोवनानंत्रथाओरउसबछड़ेकेनेत्रोंसेआंसूबहनेलगेइससेऔर
अधिकमेरीप्रीतिउमंगीफिरमैंनेउस अहीरसेकहाइसबछड़ेकोलेजाओऔररत्नापूर्वक
रखइसकेबदले औरकोईपशुभेंटकेवास्तेलेआइसबातकोमेरीस्त्रीनेसुनकरकहाकि
हेपतिऐसेमोटेबछड़ेकोभेंटकोंनहींदेतामैंनेकहायहबछड़ाशुभऔरअच्छामालूमहो
ताहैमनमेंनहींचाहताहैकिइसकोमारूंतबइसबातमेंकुछनकहऔरबादमतकरउस
केकेसास्त्रीनेइसविषयमेंबहुतनकाराकोऔरहाहमैंनहींचाहतीथीकिमेरापुत्र
जियेऔरवेर२उसकेमारणेकोकहतीमैंफिरनिरुपायहोपनीछुरीहाथमेंलेअपनेपु
त्रकागलाकाटनेचलाफिरउसबछड़ेनेमेरीओरदेखामेंउसकेनेत्रोंसे आंसूबहा
नेदेखकररहयाओरप्रीतिसेविकलहोगयाओरछुरीमेरेहाथसेगिरपड़ीतबस्त्रीसेमैं
नेकहाकिहमइसबछड़ेकोमेरेपासरहनेदेउसमेंमैंनमारूंगावहअभागी अपनीओरउसीकेमा
रनेकेहेतुहठकियेगईसोमैंनेउसकेवचनेपरविचारनकियाउसकेपीछेकेवास्ते
उससेप्रणकियाकिमैंइसबछड़ेकोईदकेदिनभेंटकरूंगाफिरवह अहीरअप
नेस्थानपरउसेलेगयाऔररहसरेदिनभोरहोतेहीगुरुकेसेउसअहीरनेआकरपकोंत

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्र
२३

मैं कहा मैं कुछ कहा चाहता हूं मुझे विश्वास है कि तुम सुन कर प्रसन्न होगे मेरी एक लडकी
है वह मायाविद्या में अति प्रवीण है कल जो मैं उस बछडे को अपरस्वर से लगा कर ले आया था व
ह उसके देखने से हंसी और रोई मैंने दोनों विपरीत बातों का कारण पूछा उसने उत्तर दिया कि
हे पिता वह बछडा जिसको तुम लोटा कर लाये हो हमारे स्वामी का पुत्र है मैं उसको जीता देख
कर प्रसन्न हुई और मुसकाई और कल के दिन जो उसकी माता गौ तुमसे मारी गई उसे स्मर
ण कर रोई और उन दोनों मा बेटों को हमारे स्वामी की स्त्री ने सराप दिया था इसके कारण मा
या से गौ और बछडे के शरीर में बना दिया था मैंने जो यह बात अपनी पुत्री से सुनी थी तो
मसे यथार्थ कहती है हे पिशाच पति मेरी उस समय की दशा को समझो कि इन बातों को
सुन कर कितना शोक और दुःख मेरे चित्त में हुआ होगा इन की कथा वर्णन कर उस बृद्ध
ने पिशाच से कहा कि फिर मैं उस रखवाले के साथ हुआ और उसकी लडकी के निक
ट गया कि आप ही इस बात को उसके मुख से सुनें पहले मैं उसके गृह में जा कर पशु
शाला में कि जहां मेरा पुत्र था आया अभी मैंने उसके निकट जाय कर उससे प्यार भी न
हीं किया था कि उसने मुझसे इनती प्रीति की कि जिससे मैंने जाना कि वह वास्तव में
मेरा ही पुत्र है फिर मैंने उस हाल को जो सुना था उसकी लडकी से सी श्रवण कि।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

या सक्ताकिकिसीप्रकारइसवकलेकोमनुष्यकेस्वरूपमेंवना सक्तीहैउसनेकहानिसंदेह
वनासक्तीहूं मैंनेकहाजोतूऐसाकरेतोमैंतुझे अपनासवधन औरयत्नदेईउसलडकीनेस
सकारायकेउत्तरदियातुमहमारेस्वामीहो और हमतुम्हारेसेवकहैं हो निर्वयसेमेंतुम
हारेपुत्रकोउसकेपहले स्वरूपमेंलासक्तीहूं परंतुयहहैकितुमउसकाविवाह मेरेसाथक
रना औरदूसरे यहकिजिसने इसकावछडेकास्वरूपवनायाहै उसकोघोजमारडदो।
मैंने उत्तरदियाकि पहले निश्चयकोमैंनेअंगीकारकियाकितेराविवाहउसकेसाथक
रूंगा औरतुमदोनोंकोइतनाऊंचाकरूंगाकि फिरकभीतुमकोदुखकीकोदा नरहेगी
औरइसकामसेतेरावडाउपकार मानूंगा औरदूसरेनिर्वयमेंमेरी इच्छाहैजो देउचाहे
सोदेवहइच्छादेउंकेयोग्यअवश्यहै परउसेमारनडालियो उसलडकीनेउत्तरदिया।
किजैसाउसनेतेरेपुत्रकेसाथकियाहैवैसाहीमैं उसको देउंगीयहनिर्वयकरउसने
एकप्यालाजलसेभरउसपरकुछपठ औरउसवछडेकेसन्मुखहो कहाहे परमेश्वरके।
जीवनेतूवास्तवमेंमनुष्यहै औरमायाकेकारणतूवछडावनाहैतूउसपरमेश्वरकेअ
नुग्रहसेफिर अपनेपहलेस्वरूपमेंहोकरजैसाथावैसाहीवनजोइतनाकहउसने उ
समंत्रितजलकोउसपरछिडकाउसनीरकेपडनेसेवहतुरतमनुष्यकास्वरूपवनगया

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सत्र
२५

25

मैंनेउसेप्रीतिपूर्वकहृदयसेलगायाओरअत्यंतप्रसन्नहोयकहाकिपरमेश्वरनेइसलड़केके
की कारणतुझेइसकेहाथसेछुड़ायातूउसकाकृतज्ञहो औरइसकेसाथअपनाबिवाहकरोकि
मैंनेइसकेसाथप्रणकियाहै मेरेपुत्रनेइसबातकोहर्षसेअंगीकारकिया औरलड़कीने
मेरीस्त्रीकोजादूसेहिरनीबनाडालाफिरमेरेपुत्रनेलड़कीकेसाथविवाहकियाथोड़ेदि
नोंकेउपरांतउसकीस्त्रीअर्थात्अहीरकीकालवशहुईतबमेरापुत्रकहींदेशांतरको
चलागयाबहुतदिनव्यतीतहुएकिमुझेउसकासमाचारकुछभीनमिलाइसवास्तेउस।
ढूंढनेकोफिरताहूं औरमुझेकिसीपरभरोसानथाकिअपनीस्त्रीहरिणीरूपकोउसकेप्या
सकोउअपनेपुत्रकोढूंढनेजानाइसलियेमैंउसेअपनेसाथलियेफिरताहूं यहमेरीऔर
इसहिरनीकीकथाहै इसकथाकोविचारकीजियेकियह अद्भुतहैवानहीं पिशाचनेक
हाकियहकथानिःसंदेह विचित्रहै मैंनेइसव्योपारीकातृतीयांशअपराधक्षमाकिया
औरकहो २ इसीपुस्तकके उलथेमेंहिरनीकेबदलेकुतियालिखाहै फिरशहरजादने
बादशाहशहरयारसेविनयकीकिहेस्वामीजवपहिलातो अधिकप्रसन्नहोगयागानिम
नेसंसरणोंहमांनआदिसेअंतपर्यंतकहसुनायाखलीफाउसेसुनप्रसन्नभया औरआज्ञा
दीकिएकभारीखिलअतजैसेकिबड़ेअमीरोंकोमिलाकरतीहैदोयानिमनेखिलअत

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पहिनदेश्ववन्करकहाहेस्वामीमुझेरब्बाहैहैकिजन्मभरआपके चरणोंसेलगारहूंखलीफा
उससेअतिप्रसन्नहुआफिरअपनेघरमेंआयाऔरवजीरसेकहागानिमकोअपनेसाथक
रकेमेरेनिकटलेआजवखलीफापकांतमेंगयातोफितनाकोबुलवाभेजाऔरकहागा
निमकीमावहिनकोभीलेतोआफितनाउनदोनोंगावेटियोंकोखलीफाकेसन्मुखलेआई
उनदोनोंनेभीखलीफाकेचरणछूयेखलीफा अलकनवकोदेखतेहीमोहितहुआ औ
रकहनेलगाजैसाकिमैंनेतुम्हेंनिर्दोष अज्ञानिहाकीवैसेही अवमैंअपनाअलकनवके
साथविवाहकरतुम्हाराडुःखभुजाऊंगाकोंकिजेवदाजोतुम्हारेइसडुःखकाकारण हु
ईउसकोयहदंडदेताहूंकिअलकनवकीउम्रऔरईषीमेंमेरेइसकेअनेतरगानिमकीमा
तासेकहाहेसुंदरीतुमअनीतरूणहोमेरेवजीरजाफरसेअपनाविवाहकरोऔरगानिम
सेकहातूफितनापरमोहितहैऔरतुझेभीइसकेसाथव्याहकरनाउचितहैफिरखलीफा
नेकाजीऔरगवाहोंकोबुलवायाऔरतीनोंनेव्याहकियागानिमयहविचारताथाकि
उसकीबहनलैंउहोगीपरंतुखलीफानेऐसेहीवनायाफिरखलीफानेआज्ञाकीकि य
हवृत्तांतइतिहासकीतौरपरलिखेहमारेखजानेमेंरक्खाजावेऔरनकलेंउसकीदेशांत
रोंमेंभेजोजावेंजबपादशाहजादीशहरजादयहकथाकहचुकीतबडुनियाजादनेकहाबा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्र ह यहकाअद्भुतकथाथीशाहजादेनेकहा यदितूइससीसुनैगीतोमहाप्रसन्नहोगीशाहर।
२५ यारनेकहनेकीआज्ञादीपरंतुभोरहोगयाथा इसहेतुदूसरीरातकोचरित्रकहनेलगी जेनुलअस्
नामशाहजादाऔरजिन्नोंकेबादशाहकीकथा पूर्वकालमेंबसरादेशकाएकबड़ाबाद
शाहप्रजापालकऔरमहाऐश्वर्यवानऔरधनवानथापरंतुसंताननहोनेसेसदैवमहाशो।
कवानरहतानगरनिवासीसर्वदाईश्वरसेप्रार्थनाकरतेकेहमारेबादशाहकेपुत्रहो नि।
दानउससमयविद्वानोंनेईश्वरनेउनकीइच्छापूरणकीअर्थात्मलकासगर्भभईऔरनौमासे।
पीछेउसकेपुत्रउत्पन्नभयाउसकानामजेनुलअस्नामरक्खाबादशाहनेअपनेदेशकेसबज्यो
तिषियोंकोबुलवायआज्ञादीकिइसकाजन्मपत्रबनावो औरइसलड़केकासमाचारकहो स
बने उसकाजन्मपत्रबनायएकमतहोयकहा हस्तइसकीसर्णप्राप्तहोगीऔरबड़ासाहसी
औरप्रतापीहोगापरंतुकईविषयमेंइसेभयप्राप्तहोगाबादशाहनेकहाअभेइसबातकीचिं
तानहोवेंकिमेरापुत्रपुरुषार्थीतोहोगाबादशाहोंकोआपत्तिऔरदुखसेकुछउपायन
हींचलतावरुऐसेविषयबादशाहकोउपदेशहोतेहैंसोबादशाहनेज्योतिषियोंकोपारि।
तोषिक औरइत्यादिकदेविदाकियाजबवहशाहजादापठनयोग्यभया अनेकप्रकारके
गुणीनियतकियेथेउन्होंकालमेंवहएकएकविद्याऔरगुणमेंनिपुणभयादेवयोगसेइसका

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पिताऐसावीमारऱहाश्राकिश्रसाध्यहोगयाश्रंतसमयउसनेजैत्रुसेनम अपनेपुत्रकोबुलायउ
पदेशकियाकितुमकदाचित अपस्वार्थियोंकीवातनमानियोश्रौरअधिकउदारताभीनकी
जियोकितुम्हें श्रौरदानसमरविधियोंकोंकिवादशाहकेश्रायःकुलमेंपरकेउकर्ममेंपड़स्वक
र्मतजदेतेहैं इतनाकहतेहीवादशाहनेदेहत्यागदीजैत्रुसेनमहाशोककेवशपहिरसातदि
ननकविलापकरतारहा आठवेंदिनतखतपरविराजमानहोवादशाहहो एकजानेकोमुह
रतोउपकहोविरथयकरनेलगा उसीश्रानंदमेंमतहनतोप्रबंधसेनिपट अचेतभयानरु
एमनुष्योंकीसंगतसेयहश्रानंदभोगनेलगाथोड़ेहीकालमेंपिताकासंपूर्णकोषविषण
ओंकोलुटायदियाउसकीमाताजोश्रत्यंतबुद्धिमानचतुरथीबहुतश्रासमझाती परंतुउप
देशव्यर्थजातायहांतककिसल्तनतकोप्रबंधनासेनगरमेंचरचाहोनेलगाश्रोरकोला।
हलमचगयाश्रोरहरहरयहखानउठगई थोरेथोरेसंपूर्णकोशखालीहोगयेश्रोरसेनानिर्ध
नतासेस्थानस्थानसेउठजानेलगीउससमयवहकुछसोचताभया अपनेसबनरुणनिर्बुद्धि
मित्रोंकोनिकालबडेबडेचतुरहैंहाकोनियतकियाउन्होंनेभलीवातें उससेसिखाईंया।
हांतककिवहसल्तनतकीप्रबंधनासेज्ञानहोयलज्जितभया श्रौरजानाकिमैंनेइतना
द्रव्यव्यर्थखर्चकियारातदिनइसीचिंतामेंरहनेलगासोएकदिनउसनेस्वप्नदेखाएकहृह

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्र
२८

26

नेउसे सुमंत्र राय कहा है जैनुस्सनम मत जान कि संसार में कोई ऐसा शोक नहीं जिसके पी।
छे हर्ष न हो कोई ऐसी आपदा नहीं कि जिसके पीछे आनंद न मिले यदि तू चाहता है यह दुख
मेरा जावे तो तुरंत कैरो नगर को जो मिसर की दारुलसल्तनत है चला जा वहां पहुंचते ही ते
री संपूर्ण आपदा दूर हो जावेगी और तिसका पता पूछा वह चमक के गया जब वह जगा उसने वह स्वप्न।
अपनी माता से कहा माता ने कहा है पुत्र केवल स्वप्न के विश्वास पर जो मनुष्य हजारों अति
राति में देखता है और वास्तव में कुछ नहीं इतने बड़े दूर की यात्रा करनी न चाहिये जैनुस्स
नम ने कहा है माता न्‌यह क्या कहती है सब स्वप्न केवल विचार ही नहीं होते किंतु बहुधा
सत्य होते हैं इसके सिवाय वह वृद्ध ऐसा न था जिसका वचन असत्य होवे वह कोई सिद्ध पुरु
ष था उसके कहते ही मेरे मन को धीर्य आ मुझे उसके वचन का भली भांति निश्चय है मैं
अवश्य कैरो को जाय अपने प्रारब्ध को परीक्षा लूंगा माता ने बहुत कहा कि उसे न जाने दे
पंरतु उसका समझाना लाभकारी न भया निदान अपना राज्य अपनी माता को सौंप अके।
ला उसने अपने महल से निकल कैरो को सिधारा और बहुत जन से दुख उठाय उसी विशाल औ
र सुंदर नगर में जाय पहुंचा और एक मसजिद में थकित होय सो रहा फिर उसने उसी वृद्ध
को स्वप्न में देखा कि कहता है हे पुत्र मैं तेरे इस पुरुषार्थ से प्रसन्न भया कि तूने मेरा वचन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नेनिश्चयकरअपनेआनंदकोतजइतनीवडीयात्राकीमैंनेकेवलतेरीपरीक्षालीओरतुके
महात्मकशास्त्रथीपायाअवतुमहाद्रव्यपावेगा ओरइस संसारमेंतुबडाबादशाहहोगाअवतु
यहांसेजनजदेशावोंसराकोलोटजाऽत्तवहांइतनाधनपावेगाकिकिसीबादशाहकोनमिला
होगाजेतुस्सनमनेजगके अपनेमनमेंकहाऽस्हदनेमुफेअर्थकेरोंमेंआनेकोकहायदि
वासरांमेंमेरामनोर्थसिद्धथातोक्योंमुफेयहांके आनेकाश्रमदियाअच्छाऽवबजोमैंनेघर
भेदअपनीमाताकेसिवायकिसीसेनकहानहींतोलोगआजमेरीनिर्बुद्धितापरहांसकर
तेइसकेअनंतरवहवांसराकोलौटाजववहांकुशलपूर्वकपहुंचातोमातानेउससेपूछा।
किशीघ्रचलेआनेकाक्याकारणहैउसनेहसेसवमकाहाजांनकहसुनायावहउससेवोलीछेदे
कहनेलगीवेटाअपनेकार्य्यमेंचिंतानकरयदितेरेभाग्यमेंधनहैतोघरवैठेमिलेगापरंतु।
जवईश्वरतुफपरअपनीपरिपूर्णकृपाकरेतोआगकीभांतिलम्पटमेंअयनकरनातुकार्य
औरआवश्यकताकेविशेषपककोड्डीकिसीकोनदेनाउसनेस्वीकारकरप्रतिज्ञाकीकिअ
वतुम्हारीआज्ञापालनकरूंगाइसमेंवालभरभीअंतरनपडेगारात्रिकोफिरउसीहदश्रुक
षनेस्वप्नदियाहैजैनसमयआयपहुंचातुम्हेंबहुतधननमिलेगाकलअपनेपिताकेमका।
नमेंजायफावडेसेउसखोदियोतुम्हेंवहांएककडाकोषमिलेगाजैनतेजागकेअपनी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सग २०

माता से कहा उसकी माता ने मुझ से कहा था कदाचित वह हठ के साथ है कि दो वेर न मान कर धन तासे तीसरे
वेर मुझ से कह गया जिसका कुछ भी मूल नहीं जैसे ने कहा था यद्यपि मुझे भी उसके वचन पर विश्वास नहीं
तथापि चाहता हूं कि मैं अपने पिता का मकान भी खोद कर देखूं वह वक्रता हंसी और कहने ल
गी जाओ और देखो वहां तुम्हें इतना परिश्रम नहीं जितना के रोके जाने में था जैसे तुमने मन में क
हा मुझे कुछ निश्चय है कि तीसरा श्रम सफल होगा चाहता हूं कि उसकी परिक्षा लूं क्योंकि उस
ने मुझसे पहिले कहा था कि केवल को जा वहां तेरा मनोरथ सिद्ध होगा सो मैं वहां गया फिर मुझसे स
वप्न में मैं कहा केवल मैंने तेरे पुरुषार्थ की परीक्षा ली अब तो फिर वों सरा को लोट जा वहां तेरी
इच्छा सिद्ध होगी सो मैं उसकी आज्ञा से यहां आया अब केवल तीसरे श्रम की परीक्षा शेष र।
ही माता ने कहा अब अधिक इस विषय में श्रम न कर उस समय तो वह कुछ पढ़ा रहा और मा
से छुप अपने पिता के मकान में जाय खोदने लगा खोदते खोदते अनुमान एक गज के।
चौकोण गढ़ा खोद डाला जब उसमें से द्रव्य का चिन्ह भी न पाया तो थक के बैठ गया और अप
ने मन में कहने लगा माता मेरी बहुत हंसेगी यह विचार में है कि झूठे लोभ में पिता का
मकान खोद डाला और कुछ भी न पाया निदान सुस्ताय फिर फावड़ा लेके उस ओर खोदने ल
गा तो अकस्मात एक चट्टान सफेद संगमरमर का उसे दीखा उसने इस शिला को वहां से सरका

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

याउसकेनीचेयकद्वारप्रकटभयाजेननेफावड़ेसेनालाडेउद्धारखोलाउसकेसाथसंगमरम
रकीसीढीलगीहुईथीसोयकदीपकजलाकरउसकेउजियालेमेंसीढीकेमार्गसेनीचेउतरा
औरयककविशालदालानकिउसकीदीवारचीनीकीऔरखूनविह्लोरकीवनीहुईथीगयाव
हांक्यादेखताहै किसंदरचारसीपकीतियारयोंबिछीहैंऔरप्रतितियाईयरदशदशसी
माकमन्यरकोड़ेगेंबरावरवरावररक्खीहैंजैतुम्मनमसमफाकिइनपात्रोंमेंस्वछमदिरा।
होगीऔरपुरानीहोनेसेवहजमगईहोगीयहविचारयकपात्रकेनिकटजाटटकना
उठायाउसेअशरफियोंसेभराहुआपायाउससेमहाप्रसन्नहुवापुनःसबपात्रोंकेटकनेउठा
यदेखावहसबअशरफियोंसेभरीहुईथीयकमुट्ठीअशरफियोंकीभरअपनीमाताकोजाय
दिखाईवहदेखतेहीअचंभेमेंहुईऔरपुत्रसेकहनेलगीईश्वरनेतुमपरबड़ीकृपाकीअ
वइसद्रव्यकोसुवैवतनहनकीजियोजेजननेकहातुम निश्चयमानोमैंआपकीआज्ञाकेवि
रुद्धकोईकामनकरूंगा इसकेअनंतरउसकीमाताने कहामुझेभीवहांलेजायथनदिखा।
वहउसकाहाथयकड़नीचेउतारलेगयाउसनेवहांजायअशरफियोंभरीदेखीं अनंतरमल्का
कीदृष्टियकछोटेसेपात्रपरपड़ीकिवहभीसीमाकपत्थरकावनाहुआथा औरउसदालानके
यककोणमेंरकवाहुआथापड़ीजेननेउसेदेखाथामरुखाशामहोमेरखाकरताहंकिमेरी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त स्त्रीकोभीदंडदियाजावे यहसुनउसनेथोडाजल मंत्रितकरएक पात्रमें अपनेपिताकेहाथ बा
२८ हरभिजवादिया औरकहाकिइसजलकोउसपरछिड़कजिसप्रकारउसकारूपकरनेकीतुम्हे
इच्छाहोतोअपनेमुखसेउच्चारणकरनाकितूअपनासुन्दररूपछोड़इससरूपमेंआपरमेश्वरचा
हेतोउसकावैसाहीरूपहोजावेगामैंउसजलकोहर्षसेउठाघरलेआया औरअपनीस्त्रीको।
सोताजआपाकरहर्षितहोउसजलकेकईछींटे उसपरमारेऔरखच्चरके रूपमेंउसेले
आयाहेराजन्जबतीसराबूढ़ाअपनाहृत्तान्तकहचुकापिशाचने आश्चर्यवानहोयाखच्चरसेपू
छाकिक्यायहसत्ययथार्थहै उसनेसिरहिलाकरकहाकिहांयथार्थहैतबपिशाचने अने
मतिहाईभागउसकेअपराधकाभीक्षमाकिया औरबोउनेकेपीछेव्यापारीसेकहाकितुझे
अवश्यहै किइनतीनोंमहर्षोंकाजिनकेकारणतेरे प्राणबचेकृतज्ञताकरकियदिवहतेरी
सहायतानकरतेतोकदाचित्तेरेप्राणनबचतेयहकहवहपिशाचअदृश्यहोगया औरवह
चारोंमनुष्यअतिहर्षितहोव्यापारीउनतीनोंका अत्यंतकृतज्ञताजताकेवृद्धव्यापारीकेप्राण।
बचनेसेआनंदप्रसन्नहोकरअपनेअपने शहरकोसिधारेऔरवहव्यापारी वहांसेचलअपनेघर
मेंआयास्त्रीपुत्रोंसेमिलावपरस्परदोवकरप्रसन्नहुए औरशेषआयुउसव्यापारीनेअतिहर्षसे
अपनेकुटुंबमेंव्यतीतकीशाहरजादेनेयह हृत्तान्तव्यापारी औरपिशाचकाकहकरशहरया

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रसेविनयकीकिजोकथामें कहतुकीवहधीमरकीकथासेउत्तमनहींइतनीकथासुन
डनियाजादनेबादशाहकोउपदेशकरकहाकिहेबादिनअभीउसविशेषहैधीवरकी
कथाआरंभकरमुझेविश्वासहैकिबादशाहउसकथाकेसुननेकेलिये प्रसन्नहोंगे शा
हरयार उसकेसुननेपरराजीहुआ औरशाहरजादनेइसप्रकारधीवरकीकथावर्णनकरनी
आरंभकी धीमरकीकथा हेस्वामीएकसमयमेंएकमुसल्मानधीमरजोअतिधर्मनिष्ठऔर
दरिद्रथाबड़े श्रमसेअपनेस्त्रीपुत्रोंकापालनकरताथाप्रतिदिननियमसेभोरकोउठनदीप
रजाता औरचारबेरजालनदीमेंडालताएकदिनभोरकोकिअभी चंद्रमाकीचांदनीशेषथा
धीवरहारीनदीकेतटपरगया औरजालकोनदीमेंडाला औरनिकालनेसमयउसभारी
पाकरसमझाकिइसमेंकोईबड़ामत्स्यफसआयाहैचित्तमें अतिप्रसन्नभयापरंतुजबउसे
बाहरनिकाला जालमेंमछलीकेबदलेमृतकगर्दभपायाउससेदोवअतिप्रसन्नहुआफि
रउसनेजालकोकिगधेकेलाशेकोबांधाथा पाकरकईजगहपरफटगयाथासंह्मालकर दू
सरीबारनदीमेंफेंकाइसबारउसमेंकीचड़औरमिट्टीफसआई अत्यंतशोचितहोकरअप
नेभाग्यकीनिंदाकरकहनेलगाकिमैंअपनेस्थानसे जीविकाकेवास्तेनिकलाथादोबेर
जालमेंकुछनआया औरमैंइसउद्यमकेसिवायऔरकोईकामनहींकरताकिजिससे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्र
२९

मैंजीविकाश्रमकरूंफिरजालकोकीचड़मेंसेधोतीसरीबेरनदीमेंफेंका इसबेरभीजालमें
कंकरगुठलियां औरमलआदिनिकसाउसेदेखश्रमंतअप्रसंनश्रौरशोकवानहुआइतनेमें
भोरभीहोगयाफिरधीमरनें अपनेरीत्यनुसार परमेश्वरका आराधनकरइसप्रकारप्रार्थ
नाकीकिहेसर्वज्ञश्रौरदीनपालकईश्वरतुमकोविदितहैकिमैंप्रतिदिवसकेवलचारबेर।
नदीमेंजालफेंकाकरताहूंतीनबेरफेंकचुकाहूं अबतकउसमेंकुछभीनश्रायामेरासमग्र
श्रमव्यर्थजाश्रबएकबेरफेंकना औररहगयाहैअबइसनदीकोमुझपरयेसासंतुष्टक
रजैसीकिश्रापनेपहिलेसमयमेंमत्साश्रलेझसलामपरकोथीयहकहफिरबोयाथीवर
जालकोनदीमेंडालाउसेबहुतभारीपायासमझाकिश्रबकीबेरतोश्रवश्यमछलियांश्राई
हैं श्रतिश्रमश्रोरकष्टसेखींचाइसबेरभीपीतलकेलोटेकीसिवायश्रोरकुछभनश्रायालो
टेकोभारीदेखसमझाकिकोईवस्तुइसमेंभरीहुईहै श्रौरमुखउसकासीसेसेश्रतिदृढ
नाईसेबंदहै श्रौरउसपरमोहररहै फिरधीमरनेश्रनिहर्षसेविचाराकियदि इसमेंसेकुछमे
निकलातोइसेवेचकरथोडाबहुतश्रपनेलेकरश्राजकादिनव्यतीतकरूंगा फिरउसनेउस
लोकेकेचारों श्रोरसेउलटपुलटकरश्रच्छेप्रकारदेखाकियहविदितहोकिइसमेंकोन
सीवस्तुहैउसमेंसेतनकभीशब्दनश्रायामुहरकोउसकेस्वभावपरदेखसमझाकिइसमेंकोई

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वस्त्र अवश्य पव झन मस्त है हुवी से उसका मुख को लाशा नीचे को किया जब उसमें से झुक भी न
निकला व झन आश्चर्य किया और उस लोटे को हाथ में से फेंक दिया तो क्या देखा कि एक अ
कारका उसमें से धुंआ का र धुवां निकलता है यह देख भयमान झुआ और तनक पीछे हट
कर खड़ा झुआ फिर वह धुवां आकाश पर्यन्त झुव कर नदी पर फैल गया थीमर अति आश्चर्य वा
न झुआ जब वह धुवां लोटे से निकल चुका तब वह रूप कजग हसि पट गया थोड़ी देर में अति विकट
स्वरूप पिशाच देख पड़ा थीमर ने ऐसा विकराल रूप कभी न देखा था वहां से भागने की इच्छा
की परंतु भय से भाग न सका इतने में यह सुना कि यह पिशाच कहता है कि हे खेलेमान अ
ले झुस्सलाम पवर मे स्वर के वडे पेगाबर मेरा अपराध छमा कर फिर कभी मैं आपकी आज्ञा भंग न
करुंगा और तुम्हारा दास देव आज्ञापालक और भक्त रहूंगा थीमर ने जब यह बात पिशाच से
श्रवण को अपने चित को ठठक कर पिशाच से कहा कि हे पिशाच तू क्या ऽठ वकता है खेलेमा
न को जो मरे झुए १८०० वर्ष से अधिक व्यतीत झुए अब तू अपना हतांत कह कि तू कौन है और
किस कारण तू के इस पीतल के लोटे में बंद कर दिया था पिशाच ने ब्रिण की दृष्टि से थीमर
की ओर देख कहा कि तू ढिठाई से बात करता है सुके पिशाच अनकर इ प्रकार नाहे थीमर ने
कहा जो तू के में बाधा करके प्रकार नातो उ विनय था पिशाच ने कहा यो क सर है कि जब न के में

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सग्र
३.
30

उसके मारने उपरान्त उन बनिक सुत के से सुख से हाल बान बीतन करथी मरने कहा उसके कों मारेगा
उसका इसबात को भूल गया कि अभी उसके मैं ने इस बंधन से छुडाया पिशाच ने उतर दिया किय
ह बात उसके अच्छे प्रकार स्मरण है परंतु उससे उत्त वचन नहीं सकता पक उपकार ने ऐसा य करता
हूं यह कि जिस प्रकार उसमने परश्रम सन्न हाउसी प्रकार उसके मैं मारे थी मर बोला हूआ माथी मे
ने कौन सा ऐसा अपराध उससे किया है जिसके कारण उसके बध करना चाहता है बंधन
छुडाने का बदला यही है पिशाच ने कहा कि तेरे मारने का दूसरा कारण है सो वर्णन करा।
ना हूं उसे ध्यान दे सुन मैं उन पिशाचों में से हूं जो नास्तिक थे प्रथम पिशाच समझते थे कि
सुलेमान परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता है सब उसके आज्ञा में रहते थे परंतु मैं और सखर ना
म पिशाच ने उसकी आज्ञा न मानी और सदैव भागे रहे उस बादशाह ने कोपित होकर अपने
बडे मंत्री आसफ बिन बरखिया को आज्ञा की कि इसे पकड़ मेरे निकट ला मंत्री यह आज्ञा पा।
य मुफे पकड़ अपने स्वामी के सन्मुख ले गया सुलेमान ने चाहा कि मैं मुसलमान होकर उ
को पैगंबर करूं और उसका आज्ञापालन करूं परंतु मैंने अहंकार से इसबात को अंगीकार न
किया उसने मुफे दंड देने के वास्ते इस पीतल के लोटे में बंद कर दिया उसने मुफे दंड देने।
के वास्ते इस पीतल के लोटे में बंद कर दिया और उस लोटे के मुख को सीसे से बंद कर दके

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नेकोमंत्रितकियाफिरकिसीपिशाचकोआज्ञाकीकिइसेनदीमेंडालदोसोवहमुफेनदी
मेंवहाआयाथामैनेप्रणकियाकिजोकोईमुफेयहांलीसोवर्षकीअवधिमेंनदीसेनिकालेगा।
तोमैंउसेइतनाधनदूंगाकिवहजन्मभरआनंदमेंरहेगाऔरउसकेमरनकेपीछेबहुतसाधन
उनकीसंतानकेवास्तेरहजावेगाहेमनुष्यकिसीनेमुफेइसअवधितकननिकालाफिरमैंनेप्र
तिज्ञाकीजोमनुष्यहमसेरीसोवर्षकीअवधिमेंनिकालेगातोमैंउसेसंसारकीपृथ्वीकेकोषदि।
खाऊंगाफिरभीमुफेकिसीनेननिकालाफिरमैंनेप्रणकियाकिजोमुफेतीसरेसोवर्षमें
निकालेगामैंउसेबहुतबडाबादशाहबनादूंगा औरउसकेपासजाकरप्रातदिनउसकी नी
नइच्छापूर्णकरदियाकरूंगाइसअवधिमेंभीकिसीनेमुफेननिकालाफिरमैंनेअतिक्रुद्ध
लायप्रणकियाकिजोमुफेइसचौथीसौवर्षकी अवधिमेंनिकालेगाउसेमैंवडीनिर्दयता
सेवधकरूंगापरंतुइतनाभलाकरूंगाकिजिसप्रकारवह अपनीमृत्युचाहेगाउसीप्र
कारमारूंगाइतनी अवधिकेपीछेतूआजयहांआनिकला औरमुफेतूनेनिकाला आ
अवतूबताकिसप्रकारतुफेवधकरूंधीमरयहबातसुनअतिआश्चर्यमेंडूबा औरसोचने
लगाकिमैं अत्यंतअभागाहूंकिमेंसेउपकारकेवदलेमरनेकेदंडयोग्यहुआपिशाचसेबिन
यपूर्वककहाकितूअपनीप्रतिज्ञाकोछोडऔरमेरेपरिवारपरदयाकरऔरमेराअपराध

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्र ३१

31

जोतेरेविचारमेंहैसोकरपरमेस्वरभीतेराअपराधक्षमाकरेगा यदितूमेरेप्राणनमारेतोपर
मेस्वरतुझेइसकाबदलादेगापिशाचनेकहाकिमैंतुझेजीतानछोडूंगा अबतूयहबताकि
सप्रकारतुझेमारूंथीमरपिशाचकोअपनेमारनेपरउद्यतदेखभयमानहुआ औरअपनेमारे
जाने औरश्रीगुरुओंकोस्मरणकरबहुतव्याकुलहुआकिमेरेपीछेइनकाकोनप्रतिपालनकरे
गाफिरथीमरनेपिशाचकेक्रोधकेशांतिकेअर्थविनयसेऐसेकहाकिहेपिशाचोंकेबादशा
हमुझपरदयाकरइसउपकारकेबदलेकिजोमैंनेतेरेसाथकियाहैपिशाचनेउत्तरदियाकि
यहीउपकारतेरेमारनेकाकारणहुआथीमरनेकहाकियहबडेआश्चर्यकीबातहैकिभ
लाईकेबदलेबुराईकरताहैयहदृष्टांत विख्यातहैकिजोकोईबुरेसेभलाईकरताहैउस
काबदलाबुराईपाताहैमैंअपनेइसदृष्टांतकोतुझपरठीकपाताहूंपिशाचनेकहाकिर
नप्रश्नोत्तरऔरदृष्टांतोंकोछोडमैंतेरेमारनेसेनहटूंगातूमुझसेपूछकहकिकिसप्रका
रसेतुझेवधकरूंथीमरनेएकयत्नअपनेचित्तमेंसोचपिशाचसेकहाकिअबमैंकिसी
प्रकारतेरेहाथसेबचनहींसक्ताऔरपरमेश्वरकीयहीइच्छाहैतोमैंप्रसन्नहूंपरंतुमैंज
बतकअपनेमरनेकाउपायनविचारलूंतुझेउसीइस्मआजमकीसौगंदहैकिजिसको
सुलेमाननेअपनीमुहरमेंखोदाथामेरेइसप्रश्नकाउत्तरदेपिशाचऐसीबडीसौगंदसे।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

निरूपायहो कंपायमानहुआ औरधीमरसेकहातबउसकरकिमैंउसकाउत्तरहूं धीमरनेक
हाशुकेवसआस्थंहै किन्तु इननाबडालवाचौडाडीलरखतांहै इतनेबड़ेडेसेलोटेमें
कैसोकरसमायापिशाचनेउत्तरदियाकिशुककोउसी हूरमआजमकीलोरानंदहै किमैंउ
सीमेंथाधीमरनेकहाशुककोतेरीवातकाविश्वासनहीं आताइसलोटेमेंतोनेरापकया
वभीनहींसमासकतानोकिसप्रकारअपनेसंपूर्णडीलसेइसमेंसमायाहोपिशाचनेकहा
कियेसीसोगंदखावोनेसमीतुमकोविश्वासनहीं आताधीमरनेकहाकिशुककोतोक
भीविश्वासनआवेगाजबतकमैंतुमको इसलोटेकेभीतरअपनी आंखोसेनदेखलुं औरबा
तेकरतेऊपनसेढकनउतारातउसकावडूबवडाहोगयाऔरसंपूर्णनदीमेंउसकेफूलप
रफैलगया फिरधूकरथाजयवरपकहाहोउसलोटेमेंप्रवेशकरनेलगा औरऔर २
सवयवा उसमेंसमरतायाजबथोडासामीशेषनरहगयाउसमेंसेयकशब्दनिकलाकिहे
धीमरअबतकतुमकोविश्वासहुआकिमैंसंपूर्णइसलोटेके अंदरहूंउसनेउत्तरदेनेवदलेउ
सलोटेकाढकनाउठाकरलोटेकेमुखपररखदियाऔर अज्ञानरहकबंदकरबोलाहेपिशा
च अवतेरीपारीहैतुमुकसे अपराधक्षमाकराऔरअपनीरक्षाकाउपायविचारकितु
केकिसप्रकारमारहुंअबअवश्यहैकितुमकोफिरइसीनदीमेंजालूं औरइसनदीकेकूल

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स॰प्र
३२

पर रवनाकर रहा कहूं कि जो धीमर इस स्थान में जाल डालने को आवे उसको बतला दिया क
रूं कि इस स्थान पर एक बिकराल पिशाच है उसने निकालियो उसने यह सौगंद खाई है कि।
जो मुझे निकालेगा मैं उसे बध करूंगा पिशाच इस बात को सुन बहुत व्याकुल हुआ औ
र चाहा कि किसी प्रकार अपने को उस लोटे से फिर निकाले परन्तु उसमें से निकलना अति।
कठिन था कि सवालो कि वह मुहर सुलेमान की उसे निकलने न देती थी इससे अपना नि
कलना कठिन समझकर अपने क्रोध को पी गया और बड़ी आधीनता से कहा हे धीमर
चैतन्य हो ऐसा काम न कीजियो कि मुझे फिर नदी में न फेंसे हे मनता था वह द्वानें न फसे के
वल के उनें और रहा इसके लिये करता था पश्चाताप है कि तूने वह द्वानें सम समझ की धीम
रने कहा ये पिशाच तू इस लोटे के बाहर बहुत बड़ा पिशाचों का सरदार मालूम होता था
और अब तू इसके भीतर अपने को अत्यंत आधीन और तुच्छ बताता है अब तू अब वश पड़ इस ना।
दामें फेंका जायगा और प्रलय तक इस बंधन से तेरा छुटकारा न होगा पिशाच ने कहा
परमेश्वर के वास्ते मेरे प्राण पर दया कर और नदी में फेंकने का इरादा न कर इसी प्रकार पि
शाने अति दीन होय बहुत विनय कर चाहा कि धीमर को अपने पर प्रसन्न करे परन्तु धीम
र प्रसन्न न हुआ फिर कहा कि यदि मुझे इस बंधन से छुड़ायेगा तो इसके बदले ने रे साथ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वड़ासत्यककहै गाथी मरनेउत्तरदिया कित्नबड़ासूर्न है कोंकरनेतेरीबातपरविश्वासकरूं
जोतफउहकोछोडे तो हमसरीबेरफिरतुफे अपनेमारनेपरउद्यतकरूं औरतूमेरेसाथउप
कारकरे जैसा थीकके बादशाहने हूबां वैद्यके साथ कियाथा अबतुउसकथाकोसुन
मैंकहताहूं बादशाहयीकऔरहूबांवैद्यकीकथा पारस देशमेंएककहूमाबड़ानगरथा
वहांकाएकबादशाहयीकऊहरोगसे अतिव्याकुलथावहांकेवैद्योंनेसबप्रकारकी औ
षधि औरउपायकियेपरंतुवह आरोग्यनहुआ संयोगवशएकबड़ाबुद्धिमानवैद्यहूबांना
मीउसनगरमेंआनराउसनेबहुत प्रकारकीवैद्यक आदिकविद्यापढीथी औरहरएकबोली
जैसेकि यीकफारसी अरबी लातिनी आदि अच्छे प्रकारसेजानताथा इसके विशेषजडीबूटी
को अच्छीतरहपहचानताथाउसनगरमेंपहुंचकरउसेविदितहुआ कि इसनगरकेसबवै
द्यबादशाहकी औषधीकरचुकेपरंतुवहकिसीसे अच्छानहुआउसनेअपने आगमनसे
बादशाहकोखबरकी औरवहांसे आज्ञापायबादशाहकेपासजाबिनयकोकिमैंने सु
नाहैकि इसनगरकेसमस्तवैद्य आपकी औषधिकरचुकेपरंतुआपकेरोगके उपयोगिक
नहुये यदिआज्ञाहोतो मैंबिलानेवामर्दनकरनेबिनायत्नसेघरकीकृपासेआपकोअच्छा
करूं बादशाहनेवैद्यसेकहाकिजोतुमऐसेइसीभांतिचंगाकरदेगातोमैंबड़ाउपकारेन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त तेरेसाथकरूंगा हवांहवां वैद्यने विनयकीकिईश्वरकीकृपासेमैं आपकोइसीप्रकारअवश्यनी
३३ रोगकरूंगाकलसेतुम्हारी औषधिकरूंगाफिरवहवैद्यबादशाहसेविदाहोकरनिजस्थान
परआया औरउसीसमयएकगेंदऔरएकलकड़ीथपकी औषधियोंकीबनवाई औरवहसवेरेदि
वसबादशाहकेपासउन्हेंलेगया औररीत्यनुसारदंडवतकरविनयकीकिआप अपनेघो
ड़ेपरसवारहोगेंदखेलनेकोगेंदघरकोचलियेजबवहबादशाहगेंदघरमेंगयावह वैदऔ
रथपकीबादशाहकोदेकहाकिइसगेंद औरथपकीसे आपखेलियेजबआपकाशरीरप
सीनेसेभरजायतबसस्पर्श औषधिकिइनदोनोंमेंभरीहै आपकेसर्वशरीरमेंप्रवेशकरेंगी औ
रजबशरीरमेंप्रत्येकप्रकारपसीनाआजावेगातबउसजलसेस्नानकरनाफिरआपकेशरीरमेंअ
नेकप्रकारदिव्यनानाभांतिकाऔषधिमयीतेलमर्दनकियेजावेंगेउसकेपीछेसोरहनाहै।
सेरदिनआपनीरोगहोजावेंगेफिरवहबादशाहउसगेंदकोहाथमेंलेघोड़ेकोएड़मारअपने
सबकोंसेगेंदखेलनेलगाइधरसेबादशाहगेंदकोथपकीसेमारताउधरवहसबगेंदको बाद
शाहकीउसकेहाथ औरसंस्पर्शशरीरसे पसेबटपकनेलगा औरऔषधियोंकागुणउसके
शरीरभरमेंप्रवेशभयाफिरबादशाहनेगेंदखेलनेकेपीछेगरमजलसेभलीभांतिमलमल
स्नानकिया औरजोउसवैद्यनेकहाथासबकियाइससेरदिवसजबअपनेशरीरकोदेखातो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नीरोग पाया और ऐसा उज्वल देखा कि मानो कभी रोग न था बादशाह इस उपाय और
औषधि से अति आश्चर्यवान हुआ और अमित हर्ष से उठ नम २ वस्त्र पहन अपनी सभा में आ बैठा इत
ने में सभासद लोग आये हैं वो वैद्य भी उस समय बादशाह के सन्मुख आया और राजसिंहासन
को है मा बादशाह ने उसे अपने समीप सिंहासन पर बैठा कर उस सभा में कि जहां नाना प्रकार
के सभासद लोग वर्तमान थे उसको बहुत प्रशंसा की और भोजन के समय केवलहवां
वैद्य को अपने साथ खिलाया जब संध्या को सब सभासद और दरबारी बिदा होकर चले गये
उसने एक बड़ा उत्तम वस्त्र जड़ाऊ कि उस समय में बड़े २ सरदार पहन कर बादशाह के दरबार
में आया करते थे और ९००० हजार रुपया उसे पारितोषिक दिये और प्रति दिन उसकी प्र
तिष्ठा अधिक करने लगा इस स[illegible] कृपा और प्रतिष्ठा पर भी बादशाह यह विचार करता था कि
ऐसे काम की अपेक्षा वैद्य को मैंने कुछ नहीं दिया और उसके गुण के आगे तुच्छ है उसका।
आदर न बन पड़ा इसी प्रकार प्रति दिन बादशाह पारितोषिक आदि से उसका सन्मान किया कर
ता परंतु राज मंत्री इस बात से अप्रसन्न था और बैर रखता था इतनी प्रतिष्ठा वैद्य की देख कर अ
पने मन में बहुत जला और इच्छा की कि किसी प्रकार इस वैद्य को बादशाह की दृष्टि से गि
रा दें और बादशाह का चित उससे अप्रसन्न करें यह ठान एक दिन बादशाह से एकांत में बि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

प्रस नयकी मुझे कुछ आपसे कहना है बादशाह ने कहा कहो मंत्री ने कहा कि ऐसे दूसरे शहर के
३४ मनुष्य को कि जिसका हाल बिदित नहीं उसका विश्वास करना नीति के विपरीत है आप
ने जो इतनी कृपा इस वैद्य पर की है यह सभासदों का सम्मत नहीं है वह महाधूर्त है चाह
ता है कि आपके बैरियों को मार डाले इसी वास्ते उसने आपके मन में जगह की है बादशाह
ने उत्तर दिया कि हे मंत्री तुझे क्या हुआ जो तू ऐसी बातें उसके वास्ते कहता है और उसको
अपराधी बनाता है मंत्री ने बिनय की कि हे स्वामी मैं ने इस बात को अच्छी प्रकार से निश्चय
कर आपसे बिनय की है वह मनुष्य विश्वास योग्य नहीं यदि आप मानें तो अब वेतम
रहिये फिर मैं बिनय करता हूं कि इस वैद्य अपने शीकदेश से यहां नहीं आया परंतु इसी
इच्छा से जो मैंने वर्णन किया बादशाह ने कहा वह ऐसा मनुष्य नहीं जैसा कि तू बताता
है मैंने तो उसको बुद्धिमान और गुणवान गया उसके समान दूसरा मनुष्य नहीं क्या तू
ने नहीं देखा कि मेरे रोग को उसने किस उपाय से नाश किया यदि इस औषधि और उ
पाय को आश्चर्य कर्म कहें तो उचित है जो उसकी इच्छा मेरे मारने की होती तो ऐसे कठि
न रोग को क्यों बिनाश करता उसके वास्ते ऐसा विचार न करना चाहिये अब मैं ने तीन हजार
रुपये उसका मासिक नियत करता हूं जो मैं अपना सम्पूर्ण धन उसे दे डालूं तो वह भी थोड़ा।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

है उसकेइतनेसत्कारऔरपरितोषिकपरकोंउहकरताहै यहविचारमतकरनेरेसानि
ज्ञाकरनेसेमैं उसकेसाथ अपकारनहीं करैगा मुझकोवहकथास्मरणहैकिबादशाह
सिंदवादकोउसकेमंत्रीनेबेटेकेमारनेसेमनाकियाथामंत्रीनेसच्चाकिवहकथाकौ क
रैहबादशाहश्रीकनेकहाकिबादशाहसिंदवादकीसामने उसकेपुत्रपरकिसीशकारे।
का अपराधरावरक्खाकौकिबादशाह अपनेपुत्रकोमरवाजले औरबादशाहमेबसम
केहकेउसकीसर्ननामेंपड़करअपनेपुत्रकेवधकरनेकी आज्ञादीउसकेमंत्रीनेबिन
यकीकिहैबादशाहइसआज्ञाकेदेनेमेंशीघ्रतानकीजिये येसानहोकिशीघ्रताके
कारणआपकोपश्चातापहोजेसाकिउससमुरुषकोडुविद्रमाथाबादशाहसिंदबा।
देनेसच्चाकिउसउत्तमपुरुषकोकौकरारिदरुआथामंत्रीनेउसपुरुषकीकथाइसप्र
कारवर्णनकी सत्पुरुषऔरशुककीकथाएवंसमयमेंएकमनुष्यथाबड़ानेकमर्दऔ
रअपनीस्त्रीसेकिपरमसुंदरीथी प्रीतिकरताथायदिएकघड़ीभीवहस्त्रीउसकीदृष्टिसे
विलगहोतीतोकहव्याकुलहोजाताएकबेरकिसीकार्यकेनिमित्त एकनगरकोगया
उसजगहनानाप्रकारकेपक्षीविकरहेथेउसनेएकसुवाबोलताऊआमीललियाव
हहरएकप्रश्नकाउत्तरदेताथाऔरबातोंकेविशेषएकगुणउसमेंअधिकथाजिमके

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त घरमेंरहताउसकेजानेकेपश्चात्‌जोउसकेघरमेंकोईबातहोतीवहअपनेस्वामीकोबतादेता।
३५ थासंयोगवसथोडेदिनोंके पीछे फिरवहपरदेशजानेकोउठातबउसमनुष्यनेसुक
35 कापिंजड़ा अपनीस्त्रीकोसौंपकरकहाकिजबतकमैंपरदेशसेलौटनआऊँतबतकइसकीर।
क्षाकीजोयहकहकेवहपरदेशचलागया औरजबवहपरदेशसेलौटआयातोएकांतमें
बैठकरसुयेसेपूछाकिमेरेपीछेघरमेंकाहालहुआथाउससुयेनेसम्पूर्णवृत्तान्तजोउसके
पीछेहुआथावर्णनकरदियाउसनेअपनीस्त्रीकोकिसी २ बातमेंमनाउसकीस्त्रीनेसोचा
थाकिमेरेइसभेदकोकिसीवांदीनेपतिसेकहाहै यहसोचकरउसकोताड़नाकरनेलगी उन्हों
ने सौगंदखाकरकहाकिहमने तुम्हाराभेदनहींकहा स्त्रीवांदियोंकोनिर्दोषसमझकजा
नगईकिइससुयेनेमेरीचुगलीकीस्त्रीइसविचारमेंहुईकि किसीप्रकारइससुयेकोझू
ठाकियाचाहियेकिमेराभर्तारआगेकोउसपरविश्वासनकरे औरवहसंदेहाकिजोउसके
मनमेंहै निहतनहारतनेमेंउसकापतिएकदिनकेवास्तेपरदेशकोगयाउसने अपनीवां
दियोंको आज्ञादीकिएकतुममेंसेइससुयेकेनीचेसारीरातचक्कीपीसे औरएकउसके
उपरवर्षाकीभांतिजलडाले औरतीसरीवांदीदर्पणकोहाथमेंलेदीयेके प्रकाशमेंउ
ससुयेकेमुखकेआगेचमकायेबहवांदियांरात्रिभरइनसबकार्योंकोकरतीरहीजब

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वह इसकाम से निर्विघ्न होकर बैठे और दूसरे दिन उसका पति उसके घर आया और सर्ववृत्तउ
सुनके उसे एकांत में लेजाके कहाकि आज की रात क्या हुआ था तब उसने कहाकि हे स्वामी मैं य
न भर अत्यन्त आकुल रही सवेरे न सूर्य परजल वर्षता रहा और बिजली चमकती रही बा
दल गरजता रहा इस मैं मैं अत्यन्त डरती रही उसने विचाराकि रातको न बादल था औ
र न मेंह बरसा यह असम्भव कहता है और मुझ से संदेव पसी झूठी बातें कहा करता है औ
र जो कुछ मेरी स्त्री का हाल कहा सो सब झूठ था फिर सवेरे से अप्रसन्न होकर पींजड़े से
निकाल पृथ्वी पर पटक मार डाला फिर कितने दिन के पश्चात् उस पुरुष ने अपने प
ड़ोसियों से अपनी स्त्री की बड़ी बुरी बातें सुनीं और उनकी बातें सुनके कहने के अ
नुकूल पाकर उसके मार डालने से अति लज्जित हुआ इतना कह हथी मरने पिशाच से कहा
कि बादशाह गीकने इस कथा को कह अपने मंत्री से कहा कि तू अह से या चाहता है कि इ
वो वैद्य जिसने मेरे साथ किसी प्रकार की बुराई न की मेरे हाथ से निरपराध मारा जा
ते सो मैं उस मनुष्य के समान वे समझ नहीं कि सुने को बिना अपराध मारा मंत्री ने बाद
शाह से कहा कि हे स्वामी उस वैद्य का निर्दोष मारा जाना तो कुछ बड़ी बात न थी और य
ह जो मैंने आपसे विनय किया है बड़न बड़ी बात है इसका शोच विचार और उपाय अ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
३९
36

वश्य है यदि आपके जीवन के लिये एक मनुष्य बिना अपराध भी मारा जावे तो कुछ पश्चाताप
की जगह नहीं और काय यह उसका अपराध थोड़ा सा है कि सब यही कहते हैं कि यह भेदि।
या तुम्हारे मारने के निमित्त आया है मुझे कुछ इससे डर है वा वैर नहीं कि जैसा आयके वि
चार में है मैंने तो केवल आपका हित होय यह कहा है मुझको उसके वैर वा भले होने से कुछ
काम नहीं हो आपकी आयु चाहता हूं यदि यह बात असत्य होतो मैं वोही दंड पाऊं जैसे उ
स मंत्री ने दंड पाया था और मारा गया था बादशाह ने पूछा उस मंत्री ने कौनसा कर्म्म।
किया था कि जिस कारण वह मारा गया था मंत्री ने बिनय किया जो आप ध्यान धर सुने
तो इस कथा को वर्णन करूं बादशाह ने कहा कहो मंत्री की कथा कोई समय में किसी
शाहजादे को आखेट का व्यसन था और उसका पिता उससे प्रीति करता और जिस वा।
ते में उसकी प्रसन्नता होती उसको भी न उलंघन करता इसो हेतु मंत्री से ताकीद करके कहा।
कि आखेट में कभी उससे न्यारा न कीजियो एक दिन में आर है निहौ वह शाहजादा शिकार को
गया बहेलियों और शिकार खिलाने वालों ने जो उसके साथ थे एक बारासिंघा उस बन से
निकाला शाहजादे ने उसके पीछे घोड़ा दौड़ाया कर कोशान कः उसका पीछा किया।
फिर थकि न होय ठहर गया और स्वारों को कि वहां से लौट उसी अस्थान पर आ जाये ज

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हां से उसने घोड़ा दौड़ाया था और मंत्री से कि उसे उसे अकेला छोड़ दिया था आन कर मिले परंतु
गहन मुल्क वहां न पहुंचा कि न ना ही उसने चारों तर्फ देखा रस्ता फूठाय रंतु न पाया दैवयोग से उ
सने क्या कि एक स्त्री अति सुंदरी रुदन कर रही है उसने अपने घोड़े को थाम उसने पूछा कि
तू कौन है और क्यों बैठी रो रही है स्त्री ने उत्तर दिया कि मैं हिंदुस्तान के बादशाह की पुत्री हूं।
मैं घोड़े पर सवार हो कर जाती थी कि मुझे नींद पड़ गई और एक स्थान घोड़े पर से गिर पड़ी
और घोड़ा मेरा वन में किसी ओर भाग गया मुझे नहीं मालूम कि वह किस ओर को चला ग
या कुंवर को उसका हाल सुन अति दया उपजी और अपने आगे घोड़े पर बैठा लिया और व
हां से चला जब एक उजाड़ वन के निकट पहुंचा उस स्त्री ने वहां से उतरने की इच्छा की शाह
ज़ादे ने उसे उतार दिया और आप भी उतर उस वन की ओर चला परंतु स्त्री की इस बात को सु
न अति आश्चर्य किया कि वह स्त्री एक मकान की चार दीवारी के बीच में जा पुकार कर कहने
लगी कि हे बच्चो प्रसन्न हो मैं तुम्हारे वास्ते एक बहु तरुण हृष्ट पुष्ट मनुष्य शिकार कर ला।
इस पर भीतर से उत्तर में एक शब्द सुनाई दिया कि हे माता वह कहां है उसे शीघ्र ही हमें खाने
को दे हम बहुत भूखे हैं शाहज़ादा इस वार्ता को सुन अति भयभीत हुआ और समझा कि य
ह स्त्री वनवासियों में से है जो इस उजाड़ में परदेसियों को एक उद्योग से मार कर खा जाती

स॰श॰
३०

37

है भयसे वह केम्लायमान हो शीघ्रही अपने अश्व पर सवार हुआ फिर उस स्त्री ने बाहर आ
देखा तो वह शिकार हाथ से जाता रहा शाहजादे से कहा तू भयमान न हो तू मुझे बता कि
तू कौन है और किस को ढूंढ़ता है शाहजादे ने कहा कि मैं अपनी राह ढूंढ़ता हूं स्त्री ने क
हा कि जो तू राह भूल गया है तो तू परमेश्वर पर भरोसा राख वह तेरी कठिनता हरेगा
शाहजादे को विश्वास न हुआ कि स्त्री प्रीति से यह बात कहती है ऐसा मान हो कि इसमें धोखा
हो फिर उसने अपने दोनों हाथों को उठा परमेश्वर से विनय की कि हे ईश्वर जो तू सब पर ब
लवान है मुझे बचा और कठिन बैरी से छुड़ा इस प्रार्थना के करते ही वह मनुष्यभक्षिणी
उजाड़ बन की ओर चली गई और शाहजादे को मार्ग दिखलाई दिया जिस से वह निज स्थ
थान को शीघ्रही पहुंच गया और अपने पिता से रस्ते का सम्पूर्ण समाचार उस मनुष्यभक्षि
णी आदि का कि मंत्री के अलग होने से हुआ था कह सुनाया बादशाह यह सुन मंत्री से अ
ति अप्रसन्न हुआ उसे प्राण से मरवा डाला शहरजाद ने इतनी बात कह बोली हे स्वामी मंत्री इ
सको कहकर फिर वैद्य दूबां की बातें बादशाह योक से कहने लगा कि मैंने यह अच्छे प्र
कार सुना है कि वह भेदिया है आपके किसी बैरी ने इसे भेजा है यदि आपको इसने उ
पाय से नीरोग किया है परंतु उन औषधि के गुण में ऐसा ढब पहुंचेगा कि आपके प्राण पर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

आवनेगीबादशाहनिर्बुद्धिथामंत्रीकेवैरऔरडाहकाकारणयथार्थप्रतीतनकरसका
औरमंत्रीकेवहकानेपेडस्काचितहवांवैद्यसेफिरगया औरकहनेलगाकिहेमंत्रीतूस
चकहताहैवहवैद्यमेरेमारनेकोआयाहैकिसोसमयमुझेकोईऐसीऔषधिदेवावेगा
किजिससेमेरेप्राणान्तहोजावेगमेरेचितमेंभीयहबातदृढहोगईजबमंत्रीनेयहदे।
खाकिमेरामंत्रचलगयाबादशाहसेकहाकिअपनेबचावकेवास्तेशीघ्रहीहवावैद्य
कोबुलवाकरमारनेकीआज्ञादोबादशाहनेकहाकिअच्छामैंअभीमरवाडालताहूं
यहकहकिसीसरदारकोआज्ञादीकिशीघ्रहीहूंगकोबुलवाभेजोउसनेबुलवाभेजा ज
बहवां आयातबबादशाहनेकहाकितूजानताहै किमैंनेतुझकोबुलवायाहैउसने वि
नयकियामुझेमालूमनहींआपमुझेआज्ञाकीजिये बादशाहनेकहाकिमैंनेतुझेइसवा।
स्तेबुलायाहैकितुझेमारकरनेरमकरसे छूटूंवैद्यइसबातकोसुनअतिआश्चर्यितहुआ।
औरबादशाहसेबिनयकियाकिहेस्वामीमेरेवधकरनेकाक्याकारणहैबादशाहनेक
हाकितूजासूसअर्थात्भेदियाहैऔरमेरेमारनेकेवास्तेआयाहैयदितूमुझेसायंका
लकोमास्मी कीइच्छाकरेमुझेउचितहैकिमैंतुझेभोरहीकोमारूंयहकहबादशा
हनेउसीसरदारकोआज्ञादीकितूइसेअभीमारकिमैंइसकेहाथसेबचूंकिमेरेमारने

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
३८
38

वास्ते यह आया है हवीं बादशाह के चित्त को एक ही दिन में ऐसा फिरा ऊषा दे विशोवा कि बाद
शाह को लोगों ने उगह से बहका कर मेरा बैरी किया अत्यंत पश्चात्ताप करने लगा कि मैंने कों
बादशाह को आरोग्य किया और चिरकाल तक अपनी निर्दोषता को बादशाह से कह
ना रहा बादशाह ने कृतघ्न स्तन कर हसरी बे उसके बध करने की आज्ञा की फिर उस वै
द्यने बादशाह से विनय की कि हे स्वामी यदि निर्दोष मारोगे तो परमेश्वर से बदला पाओ
गे इतने पर भी मरते पिशाच से कहा जो ग्रीक और वैद्य में हुई यही बात तेरे और मेरे में है
जिस समय वधिक अपने स्वामी की आज्ञानुसार नेत्रों में पट्टी बांध मारने लगा सभासदों ने
उसे निरपराध समझ बादशाह से बहुत सी प्रार्थना की बादशाह ने उन सब को भिड़क
ऐसा उत्तर दिया कि फिर उनको इस विषय में कहने की शक्ति न रही वैद्य हूबाने जब देखा
कि मैं बिना अपराध जान से मारा जाता हूं बादशाह से विनय की कि हे स्वामी मुझे इतना
अवकाश दीजिये कि अपने घर पर जाकर अंतिम दिशा कर आऊं और अपनी पुस्तकें।
किसी अधिकारी मनुष्य को दे आऊं और उन पुस्तकों में से एक पुस्तक जो अपूर्व है आपके
पुस्तकालय के वास्ते ले आऊं बादशाह ने कहा कि वह कौन सी पुस्तक है कि जिसको तू
इतनी प्रशंसा करता है वैद्य ने कहा उसमें बहुत भेद की बातें हैं उसमें से एक यह बात है कि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गवमेराशिरकाटाजावेऔरपुस्तककोखोलकरछटे सफहकेबाईसफेकोतीसरापंक्तिकीपढ़
करजोप्रश्न आयकरेगेउसीसमयराशिरमेराउत्तरदेगा बादशाहवहबातसुनअतिआश्चर्य
मेंहुआ औरविचारकियेसीप्रसवेवस्तुकोदेखेबिना अवश्यहैयह विचारआज्ञाकीकि
आजश्रेसरत्नापूर्वकपहरेमेकरकेचरलेजाओजबवेयकोउसकेचरलेगयेउसनेएककही
दिनमेंसबकार्यकरयेकबड़ीपुस्तकवस्त्रमेंवंधीहुईबादशाहकोदेविनयकीजबमेराशिर
काटजावेउसेनपानतरीमेंइसपुस्तककेबंधनेपररखेविना रावनेहीसीधरबंदहोयगा इसके
उपरांतजोतुमउसशीशसेसफेकोतोउत्तरठीकपाओगेफिरउससमभीबादशाहसेकहाकिहे
स्वामीमेंनिर्दोषमाराजाताहूंक्षमाकीजियेबादशाहनेकहा अबमेंतेरीबातनहींसुना
तातेरासिरजानकेपश्चातेतेरेशिरसेसुनलगायहकहबादशाहनेउसकेहाथपसबहरयोथी ले
लीऔरबीपककोउसकेमारनेकीआज्ञादीहिंसकनेहवांवेषकासिरकाटउसीतपानतरीमें
रक्खाऔरशिरकोउसपुस्तककेबंधनेकेवस्त्रपररक्खाउसीसमयहीसिरशिरसेनिक
लनाबंदहोगयाबादशाह औरसभासदोंनेयहदेखबड़ाआश्चर्यकियाफिरउसशिरने
ऐसाबोलबादशाहसेकहाअबइसपुस्तककोखोलबादशाहने छटेसफहकोगिनक
रउलटनाचाहाकिदूसरेसफेकीतीसरीपंक्तिकोबांचेपरंतुवहएकऐसेपकदूसरेसेऐसे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
३९

विषके हो कि बादशाह उनको स्वगमनासे उलटन सका सो वह एक लगा लगाकर पत्रे उल
टने लगा जब वह छटे पृष्ठ पर पहुँचा बादशाह ने उस स्थान पर कि जहां वैद्य ने पढने को कहा था
अंगुलि न पाया तो उसने वैद्य के शिर से कहा कि वहां तो कुछ भी नहीं लिखा है शिर ने उत्तर दि
या कि और पत्रों को उलट कर देखो बादशाह प्रतिक्षण अपनी अंगुली में मुह से पानी लगा
उलटने लगा यहां तक कि विष कि जो पुस्तक के प्रति पृष्ठ पर लगा था सब उसमें प्रवेश कर गया
या इसी वास्ते कि कई बेर मुख में उंगली लगाने को ले गया था और इसी प्रकार क्षण २ में
उसका हाल बदलता गया और दृष्टि भी उसकी जाती रही निदान व्याकुल होय सिंहास
न के नीचे पृथ्वी पर गिर पड़ा जब वैद्य के शिर ने देखा कि बादशाह को विष की ज्वाला अ
च्छे प्रकार व्याप गई और पल मात्र ही जीता रहेगा बेड़शाह से कहा कि हे अन्याई औ
निर्दई निर्दोष के मारने का यह फल तूने देखा इतना सुनते ही बादशाह मर गया और
अपने दंड को पहुँचा इतना कह रानी शहरजाद ने शाहरयार से विनय की कि यह कथा बा
दशाह यूनान और रूबां वैद्य की थी जो तूने सुने अब मैं फिर थमिर और पिशाह शीक औ
रहवां वैद्य की थी जो तूने सुनी अब मैं फिर थगिर और पिशाच की कथा कहती हूं जब ब
हथी मर यह कथा कह चुका तो पिशाच से कहने लगा कि हे पिशाच यदि बादशाह

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ग्रौकहवोंवेयकोनमारनातोपरमेश्वरउसकाभलाकरतापरंतुजवउस्केरीनेपीटनेपरहथि
नकीपरमेश्वरमेउसेवैसाही दंडदियाहैपिशाचनेरामी येसाही हालहैयदित्तुभीमेरेमार
नेकीइछानकरतातोइससबंधनमेंनपडतातुनेतो बंधनसेछूटनेहीमेरेमारनेकीइछाकी
अबमैंतुफेवयोंकरइससंबंधनसेछुडाके औरतुफपरदयाकरूं अबअवश्यहै कितुफेर
सलोट समेतइसनदीमेंडालहैंकिहमअलयपर्यंतइसीबंधनमेंपडारहै पिशाचनेकहाकि
मेरेमित्रफिरमुफसेयेसा अपरायनहोगायहसमफोकिबुराईकेबदलेभलाईकरना
अछीवातहै तूमेरेसाथयेसीभलाईकरकिजेसाकिइस्माने अनीकाकेसाथकीथी
थीमरनेपूछाउसकोकथाकिसप्रकारपरहै पिशाचनेकहाजोतुमइसकथाकोसुना
चाहतेहोतोमुफेछोडदोमैंतुगमतामेइससलोटमेसेबातोनहीकरसक्ता औरयहक
थाकावस्तहैमैंबहुतउत्तममहानंतऔरकथायेंतुमकोसुनाउंगाकिजिससेतुमप्रसन्न
होगेथीमरनेकहायेंनेरीकथाकोनहीसुनाचाहतातुफेनेराविश्वासनहीं यही
उत्तमहैकि फिरतुफेइसनदीमेंडालहूं पिशाचनेकहाहेथीमरतूमुफेछोडदेमैं
तुफेएकवातयेसीबताउंगाजिससेतूअनिधनीहोजायगा थीमरनेकहाकिमुफ
कोतेरेकहनेकाकुछभीविश्वासनहींयदितूइसमआजमकीसौगंदखायेकिमेंसा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

प्रस

४५

40

थ अपने छूटने के पीछे यो बखान करके अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करूंगा तो अच्छा है पि
शाच ने सौगंद खाई थीमर ने लोटे के मुख से ढकने को उठा लिया और उस लोटे में से धु
वां निकला और फैल कर पिशाच का स्वरूप हो गया और लोटे को ठोकर मार नदी में फें
क दिया थीमर इस बात को देख अत्यंत भयभीत हुआ और कहा है पिशाच तूने यह क्या
किया तू अपनी प्रतिज्ञा पर स्थिर नहीं और वह प्रण जो तूने मेरे साथ किया है पूरा नहीं
करेगा मैंने तो तेरे साथ वही भलाई की है कि जो इवां वैद्य ने बादशाह ग्रीक के साथ की।
थी थीमर के डरने से पिशाच हंसा और कहा यो ठीक है कि मैं अपनी उसी प्रतिज्ञा पर हूं अ
वन्त अपना जाल ले मेरे पीछे चला आ फिर दोनों नगर के अंदर से होकर एक पहाड़ की
चोटी पर चढ़ गये और वहां से उतर एक बड़े लंबे चौड़े मैदान में गये जिस में उन को एक
तालाब जिसके चारों ओर चार टीले थे देख पड़ा जब उस तालाब के तट पर पहुंचे पिशा।
च ने थीमर से कहा कि इस तालाब में जाल डाल मछलियां पकड़ वह मछुआ बहुत
से मत्स्य उस में देख प्रसन्न हुआ कि बहुत सी मछलियां पकड़ूंगा और उन मछलियों को
रंगों बरंगी देख आश्चर्यित हुआ और अपना जाल उस में डाल खैंचा तो उस में से केवल चा
र मछलियां चार रंग की सेत लाल पीली और काली आई पिशाच ने कहा कि इन को।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तबबादशाहके पासलेजाव वहउसकेइतनाद्रव्यदेवेगाकिउसकेजन्मभरइतनानमिलाहोगा इ
सउत्लायमेंकेवलएकबेरजालडालनाइसकेविपरीतकरनानहींतो दंडपावेगा इतनीबात
उसपिशाचनेउससेकहाएपृथ्वीमेंठोकरमारीधरतीफटगाई औरआपउसमेंसमागयाफि
रवहपृथ्वीबराबरहोगई धीमरमछलियांबादशाहकेनिकटलेगया इतनाकहशा
हरजादनेशहरयारसेकहाकिमैंऊनकावर्णननहींकरसक्ताकिवहकितनाइनमछलि
योंकोदेखकेप्रसन्नहुआमंत्रीसेकहा इनमछलियोंकोलेजाकरउसरसोइनकोजिसे
अकिबादशाहने मेरेलियेसोगातसमझकरभेजाथाजाकरदेमैंजानताहूंकिवीउनको
अच्छेप्रकारसेवनावेगी मंत्रीनेचारोंमछलियालेजाकरउसचेरीकोदी औरकहाकिइ
नकोअच्छेप्रकारसेतैयारकरबादशाहनेजगकोवास्तेतैयारकरनेकेआज्ञादीहै जब
मंत्रीइनमछलियोंकोदेकरबादशाहके निकटगयातबतोबादशाहनेउससेकहासो ५००
मोहरेंउसधीमरकोपारितोषिकदिलवाईधीमरउनअशरफियोंकोपाकरइतनाप्रसन्न
हुआकिजिसकावर्णननहींहोसक्ताफिरशहरजादनेशहरयारसेकहाअबउसरसोई
दारिनकाहालसुनियेकिउसकाक्याहालहुआकिजिसकेकारणवहमहाव्याकुल
हुईजिससमयउसनेउनमछलियोंकोकाटऔरसाफ़करकेचारगतेलमेंभूननेकेनि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
५८

41

मिलच्छोड़ाओरएकओरसेवहमछलियांएककेलालहोगईतोज्योंहीहमरीओरउलटा
मैंहींएक अद्भुतबातदेखपड़ीतत्कालएकागारकीदीवारफटगईउसमेंसेएकस्त्री
अतिरूपवती औरबड़ेठाटमाटओरतनमकसेनिकलआईऔरवस्त्रआभूषणादिकसे
अतिसजीहुईथीमानोमिश्रदेशहीसेआईथीओरकानमेंबालेओरगलेमेंबड़ेबड़े
मोतियोंकीमालाओरसोनहरेबाजूबंदजिसमेंलालजड़ेहुएथेविशेषइसकेनानाभांति
काबहुमोलबानापहनेहुएएकउनमछड़ीहाथमेंलेकरउसपात्रकेसमीपकिजि
समेंमछलियांतलीजातीथीआयखड़ीहुई ओरएकमछलीकोछड़ीसेमारबोलीहे
मछलियांतलीजातीथीआयखड़ीहुई ओरएकमछलीकोछड़ीसेमारबोलीहेम
छलीहममछलीनअपनेप्राणपरस्थिरहैंवहउछलनबोली उसस्त्रीनेफिरउसबातकोउ
हाकेकहानबवोचारोंमछलियांउठकरएकहीबारबोलीकिसमहै जोतुमहममें
मानोगीतोहमतुम्हेंमानेंगेजोतुमअपनाऋणदोगीहमअपनाऋणदेंगेयहकहते
हीउसस्त्रीनेउसपात्रकोकिजिसमेंमछलियांतलीजातीथीउलटदिया ओरआपउसी
फटीहुईदीवारमेंचलीगईफिरवोदोबारवैसीकीवैसीहोगईरसोईदारिनइसअद्भुत
दशाकोदेखमूर्छितहोगईजबसांझसम्हालीतोअत्यंतआश्चर्यवानहुई ओरउनमछ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लियोंकेउछलनेकोजोगरमयाखेपरहल्देकीगिराथीगईतोउन्हेंजलेऊपकोयत्नकेसमान
कालायायाव्याकुलहोकररुदनकरनेलगी औरसोचनेलगीयदियहबातजोमैंनेअपनेने
त्रोंसेदेखीहैबादशाहसेकहूंतोउसेविश्वासनआवेगा इसीचिंतामेंथीकिमंत्रीने आकर
उससेपूछाकिवहमछलियांपकानेकीरसोईदारिनेउसहालकोमंत्रीसे वर्णनकियामं
त्रीयहसुनकरअतिअचम्भितहुआऔरइससमाचारकोबादशाहसेनकहकरकोईदूसरी
बातबनाकरउससेकहा औरस्त्रीचुपरही उसधीमरकोबुलवायाजबवहआयाउससेकहाकि
ऐसीअथवाइसीभांतिकीचारमछलियांकिजैसीपहिलेलायाथाले आवोधीमरनेवहबा
तकिजोपिशाचसेऊईथीनकहदूसरीबातकहीकिआजवैसीमछलियांनहींला स
काकलअवश्यलाऊंगादूसरेदिनधीमरउसीतालाबपरगया औरजालडालकरवैसी
चाररंगोंकीमछलियांकिजैसीपहिलेदिनजालमेंआईथीपकड़ी औरवैसीअहीमंत्री
केसन्मुखलेआयामंत्रीउनकोपाकागारमेंलेगयाकिवाड़कोभीतरसेबंदकरलिया और
रसोईदारिनकोआज्ञादीकिमेरेसन्मुखइनकोपकाउसनेमछलियोंकोसाफकरकेहे
लेदिवसकेसदृशतेलमें डालाफिरउसीप्रकारउलटनेसमयदीवारखुलीवहांकीतरुके।
गई औरवहस्त्रीछड़ीहाथमेंलियेऊपदीवारसेप्रकटहुई औरउसीमछलीनवेके

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सभ
५२

निकटआकरएकमछलीकोरूपरवहीगानकरी किजोएकदिलेकहीथीफिरउनसवमछ।
लियोंनेअपनेशिरोंकोउठा औरसबकेवलखेठीहोकरवहीउत्तरदिया फिरउसमछलीने उ
सीपात्रकोउलटवहमछलियांफेकदी औरआपउसीफटीहुईदीवारमें गुप्तहोगईमंत्रीइ
ससारेसमाचारकोअपने नेत्रोंसेदेखचित्तमेंविचारायहतो अतिअद्भुतचरित्रहै औरइसे
बादशाहसेअवश्यकहनाचाहिये तदनन्तरबादशाहकेनिकटजायइसबातकोज्योंका
त्योंहीकहसुनाया बादशाहसुनअति आश्चर्यितहुवाउसनेइसविचित्रचरित्रकोनिजनेत्रों
सेदेखनाचाहा औरधीमरकोबुलाकरकहाकिहममित्रवेसीहीचाररंगोंकी मछलियां
फिरभीलासकेहो धीमरनेबिनयकियाकिमैंतीनदिनकेपश्चात लासकताहूं तीनदिन
केपीछेधीमरमछलियांपकडबादशाहकेसन्मुखलेगया बादशाहउनकोदेख अ
तिप्रसन्नहुआ औरचारसो अशरफियांउसीधीमरको अपनेकोषसेदिलवादीं औ
रएककोनस्थानमेंजायसबसामग्रीपकानेकी मंगवायमंत्रीकोआज्ञाकीकितुममेरेसन्मु
खउनमछलियोंकोभूनन मंत्रीनेकिवाडउसमकानकेबंदकरआपहीउनमछलियों
कोडाला औरवहएकओरसेलालहोगईउसनेउनकोदूसरीतरफपलटाउलटनेही दी
वारउसउसएककोनस्थलकीफटगई औरउसमेंसेउसमुद्रकीजगहएकहवशीसव

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कोंके समान ओर हरी भारी झाड़ी से कर उस दीवार से निकला ओर उस पात्र के पास कि जि
स में मछलियां तली जाती थीं उसी झाड़ी से एक बड़े भयमान शब्द से कहा हे मछलियो २
तुम अपने वाक्य पर स्थिर हो उन मछलियों ने अपने शिरों को उठा कर कहा कि हम तो उसी
बात पर हैं इतना कहने से ही उस हबशी ने उस पात्र को उलट मछलियां फेंक दीं ओर वह
करदी ओर आप उसी फटी दीवार में जाय गुम हुवा बादशाह ने यह समाचार देख मंत्री को
कहा कि यह अपूर्व हाल जो मैंने अपने नेत्रों से देखा बिना भेद के नहीं है ओर मछलियां
भी अजब चिन्ह जान पड़ती हैं मैं चाहता हूं कि इस भेद को विदित करूं फिर उस धीमर को
बुलवा कर पूछा कि उन मछलियों का जो मैंने अद्भुत चरित्र देखा मुझे बतला यह मछ
लियां कहां से लाया था उसने उत्तर दिया मैं उनको उस ताला(ब) से जो चारों ओर टेकड़ों से
घिरा है पकड़ लाया था बादशाह ने उस मंत्री से पूछा कि तूने वह ताल्लाब देखा है मंत्री ने
कहा कि मैंने तो सुना भी नहीं यद्यपि मैं पहाड़ के चारों ओर साठ वर्ष से शिकार खेलने।
को जाया करता हूं परंतु मैंने वहां कोई भी ताल्लाब नहीं देखा फिर बादशाह ने धीमर से
पूछा कि वह ताल्लाब यहां से कितनी दूर पर है उसने उत्तर दिया कि यहां से तीन घड़ी के
रस्ते पर है बादशाह ने यह बात सुन उसी समय कि थोड़ा दिन शेष रह गया था अपने

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
५२
43

सभासदों को आज्ञा दी कि शीघ्र तैयार हो तदंतर वह सवार हो थीमर के पीछे हो लिया
और उन्हीं पहाड़ों पर चढ़ गया जब वह सरी और उस पहाड़ के उतरा तो वहां एक बहुत ब
ड़ा वन दृष्टि पड़ा कि कभी उसको किसी ने न देखा था फिर बादशाह अपनी सेना और स
भासदों सहित हरसरी और उस बन के बीच एक तालाब जिसके चारों ओर खार टेके उ
कि जैसा थीमर ने कहा था देखा और जल उसका ऐसा निर्मल था कि जिसमें से चार रंग की
मछलियां उसी प्रकार की कि जैसी थीमर बादशाह के निकट ले गया था बहुत सी देखीं
बादशाह उसी तालाब के तट पर उतरा और उन मछलियों को देख अति विस्मित हुवा
और अपने सभासदों और सरदारों से पूछा कि तुमने और भी कभी यह तालाब देखा था उन
सभों ने विनय किया कि हमने तो कभी भी इस तालाब को नहीं देखा और न सुना बादशा
हने कहा कि जब तक मैं इस तालाब और चार रंग की मछलियों का वृत्तांत न समझूं प्रका
र न जानूंगा यहां से न जाऊंगा यह कह आज्ञा की कि सब मनुष्य इस तालाब के चारों ओ
र उतरें सो डेरा उस तालाब के तट पर खड़ा किया गया जब सायंकाल हुवा बादशाह अ
पने डेरे में आया और मंत्री को आज्ञा की कि मैं इस विषय में अति विस्मित हूं कि एकही
बेर यह तालाब किस प्रकार देख पड़ा और उस हबशी को मेरे एकांत स्थल में आना और

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मछलियोंकाबोलनाकिसवास्तेथाअति आश्चर्यकीबातहै तिनमेंराइसबातसेअतिव्या
कुलहैइसलियेमैनेयहशोचाहैकिअपनीसेनाकोछोड़ अकेलाजाकेओरतउमेरोमेंरह
मैंरजानेकोकिसीसेनकहनानोरहोनेहीजबसबसभासदऔरदरबारीमेरीसभामेंआवैंतउ
नसेकहियोकिबादशाहकुछरोगीहै यहकहउनसबकोबिदाकरदीजियोऔरजबतक
मैंइसस्थानपरलोटनआऊंतत्वयहीउत्तरदेतेरहियोवहांरहमेरेकहनेकोजियोमंत्रीने बाद
शाहकोबहुतसमझाया किइसविषयमें अनंतभयहैक्या आश्चर्यहै किआपकेपश्चात
भीयहभेदआपकोविदितनहोकौंइतनेश्रमओरभयमेंपडनेहोपरंतुबादशाहनेकुछउ
सकीबातनमानी औरवस्त्रराजसीउतारशिकारकेबसनपहनबज्रहाथमेंलेरातकोए
कसमयमेंकि सम्पूर्णसेनाकेमनुष्यबेसुधपसोरहेथेउठकेनिकटएकपहाड़की औरच
लाऔरअनंतस्नगमनतासेउसपरचढ़रहेसवीऔरउतरगया औरएककोओरजिधरएकबड़ा
वनथाकिजिसकावारापारनथाचलाइतनेमेंभोरहुआसूर्यकेप्रकाशमेंउसनेहूरसेएकच
र अतिउत्तमओरबहुतबड़ादेवालाबहुतप्रसन्नहुआकिवहांकेजानेसेइसबातकाभेदआ
वश्यमिलेगाजबउसकेनिकटपहुंचातोउसेवडाभारीराजमंदिरकेसमान अतिविशा
लकालेपत्थरसेबनाहुआपाया औरनीचेऊपरतकउसकेलोहेकेयनरअतिउत्तमओर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
षष
५८

साफ पैसे सिकल किये हुये जैसे थे कि दर्पण के समान चमकते थे उसे देख बादशाह को
खूब खुशी हुआ कि यहां से मेरी अभिलाषा अवश्य सिद्ध होगी फिर बहुत बेर तक देखा
किया फिर उस गठ के पास जाय खड़ा हुआ यद्यपि उसे विदित था कि उस गृह का दरवाजा अं
दर से खुला हुआ है परंतु फिर भी उसने ताली बजाई और बहुत बेर तक राह देखता रहा कि
कोई ताली सुनकर आवेगा जब कोई भी बाहर न आया तो उसने विचार किया कि किसी ने
न सुना होगा फिर उसने किवाड़ को बल से खटखटाया तो भी किसी ने उत्तर न दिया अति
विस्मित और आश्चर्य में हुआ चित में विचारा कि बड़ा पश्चाताप है कि ऐसा उत्तम भवन ब
ना हुआ निर्जन रहे इस में तो एक भी जीवन नहीं जो बाहर आय मुझे उत्तर देवे और उससे
खूब इस स्थान का समाचार विदित हो अब तक बनक ठहरा रहूंगा बिना शोच विचार
चल जो कोई मेरे सन्मुख आवे अपने को बचाना फिर वह उस मंदिर के बीच चला गया औ
र ड्योढी में पहुंच बड़े शब्द से कहा कि इसके भीतर कोई मनुष्य है कि अतिथि को रहने
के वास्ते कोई स्थान देवे कि उत्तर में कोई शब्द न सुन पड़ा अधिक आश्चर्यित हुआ कोठी
के अंदर जा देखा तो बड़ा भारी गृह है परंतु उजाड़ और निर्जन है फिर वह बड़े चौगान को
लांघकर दालान में गया जिस में रेशमी कालीन बिछा हुआ था और चारों ओर से वह म

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कानकालेवस्त्रसेमढाहुआथा औरदरवाजोंकेपरदेजडाऊमखमलकेकिजिसमेंरहना
हरी औररूपहरीहटेकठेहुएथेलटकरहेथे औरउसकीवारहदरीमेंएकअंकेवथा
जिस्केचारीकोणोंमेंचारशोरस्तनहलीवनेहुएथे औरउनकेमुखसे फुहारेछूटते
थेंजवउनकाजलसंगमरमरकेफरशपरगिरताथातोमहसोंडकडेहीरकेसौरीअस
खमणिमाणिकदृष्टिपडतेथे औरउसकुंडकेबीचमेंएकफवारहरतनाऊचाउठता
थाकिवारहदरीकेछजनतकपहुंचताथा औरउसमेंकुछ अरबीअक्षरोंमेंखुदाहुआ
था औरउसवारवछभवनमेंतीनउत्तमवागकिजिसमेंनानाप्रकारकेउत्तमफल औरसुगं
धितपुष्पऔरऔरअनेकउत्तमवस्तुअपनेउचित २ स्थानोंपररक्खेहुएथेकिजिससेवहवा
य औरमनशोभायमानऔरचितकेआनंददेनेवाला विदितहोताथा औरनानाप्रकार
केपक्षीहसेतपरप्रियवाणीबोलरहेथे औरउन्हींमेंरात्रिदिनरहतेथेक्योंकिउनह
सेतापरचारोंऔरजालपड़ेहुएथेकिजिसमेंकोईभीपक्षीवाहरनजासकताथा बादशा
ह एकमकानसेहूसरेमेंजाताऔरसेरकरताऔरहरएकउत्तमवस्तुकोदेखकरप्रसन्नहो
ताइनताउनमकानोंमेंफिराकिथकिनहुआनतदनेनरएकमकानमेंबैठवागकानमा
शादेखनेलगादेवयोगसेएकडाकिनपाहुंरहनपड़ाकरईबेरउसनेध्यानधरस्तनाकिकोई

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्र
४५
45

मनुष्य अति दुःख से अपनी मृत्यु का हाल कह रहा है और अपने बुरे भाग्य पर धिक्कार दे
रहा है बादशाह ने उसके क्लेश का वृत्तांत सुन के उस मकान का परदा उठाया और देखा कि
एक जवान रूपवान बादशाही वस्त्र पहिने रूपए के चौकी चौज पर जो सिंहासन के समान
विदित होता है बैठा हुआ अति विलाप करता है बादशाह ने उसके निकट जाकर प्रणा
मा किया उसने कहा मुझे क्षमा कीजिये कि मैंने उठ के तुम्हारा आगत स्वागत न किया मैं
लाचार हूं तुम मझकु क्षतुरान मानना बादशाह ने कहा कि मैं तुम्हारे रसशील से अनुमानस्त
न हुवा कोई ऐसा कारण होगा कि आप नहीं उठ सके परंतु तुम्हारे क्लेश का हाल सुन
मुझे अति दुःख हुवा मैं केवल तुम्हारी सहायता के वास्ते यहां आया हूं अपने दुःख
से मुझे शीघ्र ही विदित कीजिये कि मैं उसका उपाय करूं मुझे विश्वास है कि तुम अप
ना वृत्तांत अवश्य कहोगे पहिले तुम उस तालाब का हाल जो यहां से समीप है और उसमें
चार रंग की मछलियां हैं वर्णन करो फिर इस मंदिर का वृत्तांत कि किसने बनाया है और तु
इस हाल से अकेले इस स्थान पर क्यों हो वह यह बात सुन रोया और कहने लगा कि मैं अप
ने वृत्तांत को क्या वर्णन करूं अपना वस्त्र ऊपर उठाया बादशाह ने देखा कि वह शिर से नाभि
तक आदमी है और कमर से चरणन तक काले पत्थर का बना हुवा है यह देख अति विस्मित

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हुआ और उस मनुष्य से कहा कि मैं ने तो यहां की बहुत सी वस्तु देख चिंता करता था परंतु तु
मने तुके यह हाल दिखला कर अति विस्मित और विकल किया परमेश्वर कि वास्ते अपने
वृत्तांत भी अभी कहो मालूम होता है वह चौरंगी मछलियां इसी वृत्तांत से संबंधित हैं आ
प मुझ से अवश्य कहिये कि जब कोई दुखित मनुष्य अपने क्लेशों का वर्णन करता है
उस समय उस से थोड़ा शान्त होता है उस ने कहा यद्यपि मुझे अपना वृत्तांत कहने की साम
र्थ्य नहीं परंतु आपकी आज्ञानुसार कहता हूं काले द्वीपों के बादशाह की कथा उ
स पुरुष ने अपने वृत्तांत इस प्रकार कहना आरंभ किया कि पिता मेरा महमूद शाह काले द्वी
पों का बादशाह था जो कि यहां निकट चार पहाड़ हैं और राजधानी उस स्थान पर थी कि जहां
अब वह ताला व है अब जो मैं कहता हूं इस वृत्तांत से तुम को इन सब का हाल ब्योरेवार वि
दित हो जावेगा हे बादशाह जब मेरा पिता ७० वर्ष का होकर मर गये उस की जगह मैं
सिंहासन पर बैठा मैं ने अपने चचा की पुत्री के साथ विवाह किया वह स्त्री मुझ से बहुत
प्रीति करती थी उसी प्रकार मैं भी उस से चाहता था पांच वर्ष तक हम प्रीति पूर्वक रहे इ
स के पश्चात मैं ने प्रीति में कुछ अंतर पाया एक दिन भोर के भोजन के पश्चात वह स्नान क
रने गई मैं जा कर एक कमरे में लेट रहा और दो बांदियां जो उस रानी के पंखा हिलाने वा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सत्र
५८
46

ले नियत थी मेरे पास आकर एक शिर की ओर एक पांव के निकट बैठ गई और मेरे आनं।
द के हेतु पंखा करने लगी और दूसरे सोलाजान परस्पर वार्ता करने लगी और मैं भी कि ज
गता था अपने को सोया ऊवा बनाकर उनकी बातें सुनने लगा एक ने दूसरी से कहा कि
हमारी रानी अति निर्दयी है कि ऐसे रूपवान और कोमल बादशाह को प्यार नहीं करती
दूसरी ने यह सुनकर उत्तर दया कि तुम समझती हो नहीं जान पड़ता कि रानी इस अकेला
छोड़ रानि को कहां जाती है और इसको यह बात मालूम नहीं पहिले चेरी ने कहा हम
गरीब को उसके जाने का हाल किस प्रकार विदित हो रानी तो प्रति रात्रि इसे शर्वत में भांग
मिला कर पिलाती है उसके नशे में वह ऐसा बेसुरत हो जाता है कि उसे कुछ भी सुधि न
ही रहती और वह यह अवकाश पा जहां चाहती है चली जाती है और यार की बादशा
ह को कोई स्वर्गीय तन वस्तु संचय चेतन म करती है हे प्रिय मित्र मुझे यह बात सुन इतना वे
दऊवा जिसका वर्णन नहीं कर सका उस समय तो मैंने अपने क्रोध को थांभा और इस उपा
य से उठा कि मानो सच मुच सोता ही था फिर वह रानी स्नान करके आई और रात्रि को
भोजन कर मैंने शयन करने की इच्छा की वह रानी प्याला कि सदैव ला पिलाती थी मेरे।
पिलाने को लाई मैंने उससे उसके हाथ से ले और उसकी दृष्टि बचा खिड़की से पृथ्वी पर फें

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कहदियाओररखवालीयालाउसकेहाथदियाकिवहजानलेकिमैंनेवहथीलिया तदनंतर
हमदोनोंशाखापरसोगएरानीमुझेसोताजानशाखापरसेउठीउसनेएकमंत्रऐसेचेपढ़ाहैसे म
ठाओरमेरेओररखवालेकरकहाकियेसावेहथियसोकिकभीनजागेफिरवहीपीछेहीवस्त्रपहि
नउसकमरेसेवाहरआईउसकेवाहरनिकलतेहीमैंभीउठाओरतत्कालहीवस्त्रपहिन
खड्गहाथमेंलेपीछेउसकेचलाइतनापासओरमिलजाउसकेजानाथाकिउसकेपैं
रोंकाशब्दमुझेसुनपड़ताथाओरमैंउसकेपैरोंकेचिन्हपरपैररखताजाआवड़ेविचार
सेउसकेपीछेटवेपरोजाताथाकिउसमेंरचलनेकाशब्दनसुनपड़ेवहकईदरवाजोंसे
किजिनमेंतालादियाजाआथाहोकरनिकलीओरवहदरवाजेउसकीजाहसे आपही
आपखुलतेथेजववहसवसेपिछलेदरवाजेपराकिउसओररखवागयाओरउसमेंसेहो
करअंदरकोचलीमैंउसदरवाजेमेंलगकेखड़ाहोरहाकिमुझेवहदेखनले ओरवहां
सेउसीकोदेखनारहावहएकपुष्पवाटिकासेआगेवढीजाने २ एककोटेसेवनमेंकि
जिसकारस्ताचारोंओरसेघिराआआओरसघनहदोंसेवदयाचलीगईमैंभीओररास्ते
सेवहांपहुंचकरएकफारीकेअंदरछिपकरखड़ारहाओरवहांसेउसकोदेखाकिए
कएकहहकेसाथटलहलीजईवातेंकरतीजातीहै मैंनेध्यानधरउनवातोंकोसुना।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त ५१

57

किकहतीथीकिमैंतुमकोप्राणसे अधिकप्यारकरतीहूं औररात्रिदिनतुमपरमोहित
रहतीहूंपरंतुतुममुझेरातदिनबुराभलाऔरधिक्कारदियाकरतेहो इसकाकारणमुझेजा
ननहींपड़तायदितुमकोमेरीपरीक्षालेनीहीहोकितुम्हारीप्रीतिमैंकितनीरखती।
हूंतोअभीउद्यतहूंऔरतुमकोमेरीसामर्थ्यभीअच्छेप्रकारविदितहैकिमैंक्याकामक
रसकतीहूंयदितुम्हारीइच्छाहोतोमैंसूर्योदयकेपहिलेइसबड़े औरसुंदरनगरऔरउ
त्तमउत्तमगृहोंकोमैंदानकरडालूंकिजिसमेंभेड़िये औरउल्लूकररहनेलगे औरपत्थरोंको।
किजिनसेदीवारेंबनीहुईहैं कोहकाफपहाड़केओरफेंकदूं औरविनाशकर
डालूंकेवलतुम्हारीआज्ञाचाहतीहूंजानोयहबातकहतीहुईअपनेप्यारेकेहाथमेंहाथ।
दिएटहलतीथीउसफाटकेनिकटकिजिसमेंमैंछिपाखड़ाथा आई औरबहुतबड़ी
सेनलौटेऔरजबउसकाथामेरेनिकटसेहोयकेनिकलामैंनेखांडामियानसेनिका
लाऔरउसकेगर्दनपरमाराकिवहलगतेहीलड़खड़ायगिरपड़ाऔरमुझकोविश्वासहुआ
किवहकालवशहुआऔररानीजोमेरेचचाकीपुत्रीथीइसीवारनेमैंनेउसकोछोड़दिया
औरतत्कालवहांसेदेवपरीलौटाकिसीकोयहबातनमालूमहुईयदिउसकेप्यारको
बहुतभारीघावलगाथापरंतुइसरानीनेमंत्रविद्याकीसामर्थ्यसेसम्हालाफिरभीवहव

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हूलगनेकेकारणऐसाहोगयाथाकिननतोजीतोंमेंगिनाजाताथा औरनमृतकोंमेंमैंने
लौटनेसमयरानीकोसुनाकिअपनेप्यारेकेघायलहोनेसेरानीऔरपीठनीमैनेउसके
रुदनकरनेपरकुछविचारनकरउसेअकेलावंदीछोड़निजगृहमेंआया औरएकमरेमें
शय्यापरजालेटाउसकेमारनेसेअत्यंतपीड़ितथाहुआ औरमैंसोरहाऔरनिश्चिंतहोभोरहोने
हीराजोकी अपनेसमीपसीनीनीदेखापरंतुअच्छेप्रकारजाननपड़ाकिवहसानीनथी
वहानाकिपड़ताथीमैंउसेइसीदशामेंछोड़केउठखड़ाहुआऔरराजनीवस्त्रपहि
नलियेफिरराजसभामेंगयाजबदरबारसेनिजमंदिरमेंआयारानीकोगमीकेकालेव
स्त्रपहिनेदेखाकिउसनेशिरकेबालनोचखसोटमुझसेकहाकिहेपाते मुझेसोगकी
दशामेंदेखके अप्रसन्ननहोनामैंनेतीनबुरेसमाचारबराबरसुनेहैंइसीकारणमेरी
यहदशाहैमैंनेपूछाहेप्रियावहतीनकौनसेबुरेसमाचारहैंउसनेकहापकतोयहकि
मेरीप्यारीमातामरगईहैदूसरीयहकिमेरापितायुद्धमेंमारागयातीसरीयहकिमेराभाई
ऊवेपरसेगिरकालवशहुआमैंनेयहसबसुनकुछशोकनकिया किसवास्तेकि।
मैंसवभेदउसकाजानताथाउसकेवरानिसेमुझेहर्षचितहुआकिउसे उसकेयारकेमेरे
हाथसेमारेजानेकाहालविदितनहींउसनेकहायहबातकुछअप्रसन्नताकी नहीं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

किंतु जो तुम ऐसे अशुभ समाचार को सुन शोक न करतीं तो जिस्से देह मैं बिलग मानता
तदनंतर वह अपने कमरे में जाकर रोने पीटने लगी और एक वर्ष तक इसी प्रकार रात्रि।
दिन अपने प्यारे के दुःख में रोती पीटती रही इसके पश्चात् उसने मुझसे कहा कि मैं एक मु
कबरा बनवाकर उसमें रहा करूंगी मैंने उसको इस विषय में भी न रोका फिर उसने एक ब
ड़ा भारी मंदिर गुम्मजदार बनवाया जो यहां से दिखाई देता है और उसका नाम शोकागार
रक्खा जब वह सब बन चुका तब वह अपने प्यारे सहित उसमें आकर रहने लगी और कोई
ऐसी औषधि अपने विचार से उसे खिलाती कि इतना घायल होने पर भी वह न मरा और
वह प्रति दिवस एक नियत समय में उस शोकागार में अवश्य औषधि पिलाने जाती
परंतु वह इतने में न और उपाय करने पर भी न अच्छा हो सका था और न उसमें चलने की
सामर्थ्य थी और बातें भी न कर सका केवल देखा करता था रानी को उसके देखने से धै
र्य होता था और उसमें प्यार और प्रीति की बातें कर अपने चित्त को धैर्य दिया करती दि
न में दो बार उसके समीप जाती और बहुत देर तक वहां रहती थी यद्यपि रानी का यह हाल तो
मुझे सब प्रकार विदित था परंतु मैं अनजान बना रहा और प्रति कार्य में जान बूझ
अनजान रहता एक दिन उस शोकागार में जाय ऐसे स्थान पर छिपकर बैठा कि जहां स

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वकुछमैनेसुनाऔररानीनेमुझेनदेखा वहअपनेप्यारेसेकहतीथी किबड़ाअनर्थहैकि
मैंतुझेऐसेदु:खितदशामेंदेखूं औरतुझेदेखेमुझेइतनाक्लेशहोताहैकितेरेसेमेरी
अधिकबुरीदशाहोजातीहैहेमेरेप्राणहेमेरेप्यारेमैंप्रतिदिनतेरेनिकट आकरचाड़ि
योंबातेंकरतीहूंतूनेतोकभीभीमेरीएकबातकाउत्तरनदिया इसीचिंतामेंमरतीहूंकि
कबतकचुपरहोगेयदिमुझसेएकभीबातकरोतोमुझे अत्यंतख्योछेहोजबतकमैंतेरेनि
कटबैठीरहतीहूंमेरेचित्तमेंथोड़ीधैर्यरहताहै औरकेवलतेरेदेखनेहीसेमैंप्रसन्नरहती।
हूं इसीप्रकारअपनेप्यारेसेकहतीऔररुदनकरतीथीमैंइतनीविकलताऔरव्याकुल
ता देखथीछेनरावसकाजबवहहोसे अपनेपहिलेशद्दमेंकिजहांमेरहदु:करताथावह
आईमैनेकहाकिहेस्त्रीतुमनेअतिचिंताऔरशोककियातुमकोउचितहैकिअब
तुमउसेमागदोसदेवइसशोकमेंरहनातुमकोउचितनहींरानीनेकहाकिहेसखीसोतुम
इसविषयमेंकुछनबोलोमुझेइसीदशामेंरहनेदोमेरेचित्तसेअभीतकशोकनहींगयाऔ
रनकुछमनकमझगतामैनेकितनाहीउसेसमझायापरंतुनमानाऔरमेरासमझानाउसको
शोककेअधिककरनेवालाहुआफिरमैंनेउससेकुछनकहाऔरउसकोउसीदशामेंछोड़
दियायहांतककिउसेइसीदशामेंदोवर्षव्यतीतहुएफिरमैंदूसरीबेरउसीशोकागारमें।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
४९

49

गयाऔरद्विपकेऐसेस्थानमेंबैठाकिजहांसेउसकीसबबातेंसुनाईदें रानीअपनेप्यारे
केनिकटबैठीहुईकहतीथीकिअबतोसातवावर्षआरंभहुआतूनेमुझसेएकबातभीन
कीओररुदनकरनेचिल्लानेओरहाहाओरअर्थीयेपरलकेथोड़ाभीविचारनहींहोत अब
ललनावोअसामर्थ्यताकेकारणनामुझेतबकुसमझमुझसेनहींबोलताहैप्यारेबड़ाआश्चा
नाथहैकिमेरीप्रीतितेरेचित्तमेंकिंचितप्रवेशनहींकरतीसदैवअपनेनेत्रोंसेकिमैंजिस
निहालहोतीहूंऔरमेरेजीवनकाकारणहैबंदकियेरहताहै परमेश्वरकेवास्तेइनको
खोलमेरीओरदेखमैंरानीकीयहबातेंसुनअतिअप्रसन्नहुआऔरक्रोधमेंआकरउस
स्थानसेबाहरनिकलआयाऔरपुकारकेभुजंगकीओरकहाकिहेभुजंगतूकिस
वास्तेइसस्त्रीसहितदेवकीजोमनुष्यकेभेषमेंहैनिगलनहींजाताइतनाकहतेहीरा
नीकिउसअपनेहृदयवशीप्यारेकेनिकटबैठीथीवहांसे क्रोधमेंबावरेकेसमानझपट
करमेरेनिकटआईऔरकहनेलगीकिहेदुष्टभाग्यहीननतूहीमेरेइसदुखऔरशोक
काकारणहैऔरतेरेही अन्यायसेमेरेप्यारेकीयहदशाहुईकिजिसेवहम्रवनकया
पलहैमैंनेकहाहांमैंनेइसदेवकोमाराहैऔरवहइसीदंडकेयोगयथा औरतूभीइसी
दंडकेयोग्यहैकिसवास्तेकितूनेहीमेरीप्रतिष्ठाभंगकीयहकहमैंनेविहीनकाल।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वाहा कि उसे बधक हूं पर तू उसको जाइ की सामर्थ्य से मेरा हाथ पैसा बंध हो गया कि मैं।
खेंच न चला सका उसने तत्काल ही ऊछ मंत्र पढना आरंभ किया जिसको मैं कुछ भी न स
मझ सकता था जब वह मंत्र पढ चुका तब उसने यह कहा कि मैं मंत्र के बल से कहती हूं कि तूने
चेके थउसे पत्थर होजा और ऊपर के थउसे मनुष्य बना रहू उसके इतना कहने ही जैसा कि दे
खते हो बन गया जब से न तो मैं जीतों में हूं न मृतकों में फिर उसने मुझे उस शोकागार से उठा
इस गृह में ला रक्खा और मेरे नगर को फील और तालाब बनादिया और निर्जन कर दिया
कि जैसा तुमने देखा सब मेरे दरबारियों और सभासदों और प्रजा को चार रंगों की मछलि
या बना उस तालाब में कैद कर रक्खा है सफेद मछलियां मुसल्मान हैं लाल रंग की अ
ग्निपूजक काली अंगरेज पीली यहूदी और चार बड़े टापू कि मेरे राजधानी से संबंधित थे
उनको चार पहाड़ बना तालाब के चारों और सबको और मेरे आधे थउसे पत्थर का बना र
क्खा है और सब एक देश निर्जन और उजाड़ कर दिया फिर भी उसका क्रोध और अन्याय क
म नहीं हुआ यह प्रतिदिन आकर सौ कोड़े मेरे कंधों और छाती पर मारती है कि हर एक
कोड़े की चोट से मेरे शरीर से रुधिर निकलता है फिर मार पीट कर एक मोटा कम्बल व करी
के बालों की बुनी हुई कमरी मेरे ऊपर डाल और उसके ऊपर बहुत भारी वस्त्र हलाव स्व पह

सप्र

५०

50

हातीहैवहभीमेरीप्रतिष्ठाकेहेतनहींविशेषकरमेरीप्रतिष्ठाकेनिमित्तओरएकहतीहै
कियहहउहकिवहजनवजाकालेहीपोंकावादशाहहैवे अपनेकोइसमाचारपीठ ओरस्त्रा।
नादरसेववानहींसका इतनाकहशाहजादनेकहाफिरवह अपनेनेत्रोंकोऊपरको
ओरकरपरमेश्वरसेइसप्रकारसेप्रार्थनाकरनेलगाकिहे सामर्थ्यवानपरमेश्वरओरहेप्र
वकेउत्पन्नकरनेवालेतेरेहीमायसे आशारखताहूंयदितेरीइच्छाओरप्रसन्नता इसीमेंहै
किमुझपरइसीप्रकारअन्यायओरअनर्थऊआकरेतोमैंभीइसपरराजी ओरधन्यवादकरता
हूंमुझकोनेतोहीएतणहताथापरविश्वासहैकिएकनएकदिन अवश्यहीमुझेइसदुःखसेछु
डावेगाजबइसवादशाहने यहअद्भुतवृतांतसुनातो अत्यंतचिंताकरनेलगा ओर।
वाहाकिइसवादशाहकाकिजिसपरअन्यायऊवाहै रानीसेबदलालेनवधूकाकिव
हनिलजजाहदारनीकहांरहतीहै ओरवहअभागाप्याराउसकाकहांरहताहै किजिस
केपासवहप्रतिदिन जायाकरतीहैवादशाहनेकहाकिमैनेपहिले आपसेनहींक
हाकिवहशोकागारमेंजिसमुझमजकेरूपवनायाहैपड़ारहताहै ओरवहशोकागारइ
सीभवनसेसंबंधरखताहैकिउसकीराहभीइसीमकानमेंआईहै ओरउसजाहदारनीके
रहनेकास्थानमुझेविदितनहींपरंतुवहभोरकेसमयप्रतिदिवसमेरेदंडदेनेकेउपरांत।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अपने प्यारे के समीप जाय कि सो प्रकार का अरक पिलाती है जिस से वह अब तक जीता
रहा बादशाह ने कहा कि कोई मनुष्य तुम से अधिक दया के योग्य न होगा और यह अ
हुन हुनोंत शनि हा स और समाचार की तरह लिखा जावे फिर उस बादशाह ने उस डावित
बादशाह को अपनी इच्छा जनलाकर थी छोड़ दिया और रात्रि होजाने के हेत वहीं सोर
हा वह दीन बादशाह इसी प्रकार बैठा जगा किया कि वह जाह के असर से लेटने और सोने
के योग्य न था फिर दूसरे दिन वह बादशाह छिपकर उस शोकागार में गया कि जहां उन
म सेंकड़ों हजनहरी हा पिक जलते थे और उस शहर शहर को सजा ऊ आदेख कर आति आ
श्चर्यित हुआ फिर जहां वह हवशी पड़ा हुआ था प्या गया और पकड़ा थखोड़े का ऐसा मा
रा कि वह हवशी अधमृतक मर गया और लोथ उसकी खैंच कर कूऐं में डालदी और आ
प उस जगह पर जहां वह हवशी पड़ा रहता था खेड़ले लेट रहा इस विचार से कि समय
पाय उस जादूगरनी को बध कर डाले जब वह जादूगरनी उस मकान में आई पहले वह
वहीं गई जहां काले दीपों का बादशाह था और उस दीन को नानक रमारना आरंभ कि
या यहां तक कि उसके चिल्लाने और रुदन करने से सारा मकान कम्पने लगा वह बेचारा
कितना ही उससे सोगंद दे देकर कहता था कि मुझ पर दया कर परंतु वह डाहा और अभागी वि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त ५१

51

नासो चाबुक मारे न रही फिर उस पर कमल डाल सुनहरी वस्त्र पहनाय फिर शोकागार
में गई और अपनी प्रीति और विरह का हाल वर्णन करना आरंभ किया और उस मकान के।
समीप जिसमें उसका प्यारा पड़ा रहता था जाकर कहने लगी क्या अनर्थ है कि तूने अप।
नी प्रीति से मेरा चैन खो दिया है मेरे प्यारे रतन ने अमाय होने पर भी मुझे बुरा भला कहा क
रता है कि मैं अंत निर्दई हूं जब मैं तुझे इस दशा में देखती हूं मुझे क्रोध उत्पन्न होता है
और चाहती हूं कि इससे अधिक तेरा बदला लूं और तेरे बैरी को इससे अधिक मारा करूं औ
र बादशाह के आगे कि हबशी की जगह में था जाय कहा अब तू इस चुप और न बोलने से।
चाहता है कि मैं तड़प कर मर जाऊं परमेश्वर के वास्ते एक बात तो मुझसे कर कि तुझे थी
यह हो बादशाह ने अपने को ऐसा बनाया कि जैसे कोई निद्रा से जगे फिर हबशियों के पा
हके समान उस रानी को उत्तर दिया कि सिवाय परमेश्वर के जो सर्वोपरि है किसी को।
सामर्थ्य और बल नहीं जाहूवा रनो इस बात को कि जिस्की डर से आशा न थी सुनकर आ
नंद मग्न और हर्ष युक्त हुई और बोली कि हे स्वामी यह तुमने जो उत्तर दिया उससे मुझे
यों बोल पड़ा बादशाह ने कहा कि हे दुष्ट स्त्री का अन्त इससे योग्य है कि तेरे प्रश्न का कोई उत्तर।
दे रानी ने कहा कि हे मेरे प्रिय पीतम मुझसे ऐसा कौन अपराध हुआ जो तुम ऐसा कहते हो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

उसनेकहाकितेरेभर्तारकेविद्वानेसेकिजिसकोतूप्रतिदिनमाराकरतीहैमेराशोनाओरआ
रामकरनाबंदहोगयाहै मैंतोबहुतदिनोंसेअच्छाओरनीरोगहोगयाहोताओरबातोंकरने
कीभीसामर्थ्यअच्छेप्रकारआजातीपरंतुतूनेउसपरजाहूकररक्खाहैओरउसेप्रतिदिनमा
राकरतीहै इसतेरेअन्यायसेमेराजीनहींचाहताकितुझसेबोलूं ओरतेरीबातकाउत्तरदूं
जाहूगरनीनेकहाजोतुम्हारीप्रसन्नताइसीमेंहैकिमैंउसेदंडदेनाछोडूं ओरउसेपहिलेस्व
रूपमेंलाऊंतोमैंअभीऐसाकरसक्तीबादशाहकहाहां मैंयहीचाहताहूं किअभीतूजाकर
उसेउसदुःखसेछुडादेकिमेरेआनंदमेंउसकेरोनेपीटनेसेविघ्नहोरानीतत्कालहीउसीशोका।
गारमेंगईओरएकपात्रमेंजलभरकरकुछपढाजिससेवहपानीउबलनेलगाफिरउसदालानमें
किजहांउसकापतिथागई ओरउसपरवहीजलडालकहायदिपरमेश्वरनेतेरायहरूपये।
साहीबनायाहै ओरवहतुझसेअप्रसन्नहैतोतूइसीदशामेंरहाजोतेरायहस्वरूपनहींतो
तूमेरेजाहूसेजैसाकिपहिलेथावैसाहीहोजाइतनाकहतेहीवहबादशाह अपनेप
हिलेस्वरूपमें आगयाओरअतिप्रसन्नतासेउठखडाहुआ ओरपरमेश्वरकाधन्यवादकि
याजाहूगरनीनेउससेकहाकिइसभवनमेंशीघ्रहीनिकलजाफिरयहांकभीनआइयो
नहींतोमाराजायगावहइसकाउत्तरदियेबिनाचुपकेवहांसेचलदिया ओरकिसीमका

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्र ५२

52

नेमेंजायछिपकरवैठरहा औरइसअद्भुतचरित्रकेदेखनेकोलालसारखपरमेश्वरका
स्मरणकरनेलगाउसेविश्वासथाकिबादशाहसबकार्योंकोकरमेंरूठनेकोअवश्य
आवेगाफिरवहजाहगरनीवहांसेशोकागारमेंआईऔरबादशाहहैसोकिजिसकोह।
बशीजानतीथीकहाकिमैनेतुम्हारी आज्ञानुसारउसकोअच्छाकरदिया अबतुम
उठोजिससेतुझकोभयऐसाहोबादशाहनेफिरहवशिवोंकेसमानकंचेहरेसेकहाकि
यहजोतूनेकियामेरेआनंदऔरनीरोगहोनेकेवास्तेस्थाननहींहै अभीतककोअमात्य
पनहरनहींक्आउसनेकहाहेमेरेप्रियपहवणोआपकाक्याप्रयोजनहैबादशाहनेक
हाकितूसंपूर्णनगरवासियोंसहितकिनिसतूने अपनेजाहूसेउनाइकररखाहै उ
नकोअपनी २ योनिमेंलाशांतिदिनआई रात्रिकोसबमछलियोंशिरनिकालहमदो
नोंकोशापदेतीहैइसीकारणमैंनीरोगनहींहोतापीअजाऔरसबकोउनकेपहिले
स्वरूपमेंलाजबयेकामकरआवेगीतोमैंअपनाहाथतुझकोदूंगाउससमयतूमुझे
सहारादेकेउठाइयोरानीनेअपनेप्यारसेयहबातेंसुन अत्यंतप्रसन्नहोकरकहाबहु
तअच्छाऐसाहीकरूंगीफिरउसनेतत्कालहीतालाबकेतटपरजाकरथोड़ाजलले
मंत्रपढ़तालाबपरछिड़काजलछिड़कतेहीवहसंपूर्णमछलियांअपनेसाखसबर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

यमें आगई और सब उसके जो हसे छूटे थे इहहकाने आदमियों से एवं वस्त्र व सगये उन्हों
ने अपनी वसुजहा को जो इसी थी जो की सो पाई वादशाहकी सभा और सरदार कि जो नगरके।
निकट उतरे थे बहुत हर्षहो गये अपने को वत्नीके बीच देखके अंतःप्रामकित हुए फिर व
ह जाहगरनी सबको अपने २ स्वरूपमें लाकरके पीछे ही पीओ का गारको गई कि इस पवित्र
मके वदले अपने प्यारे से मिलहष्टको प्राप्त हो जाने ही बड़े शाहसे कहने लगी कि हे प्राण
प्यारे मैंने तेरी आरोग्यता और जीवन के निमित्त सबको अपने पहले स्वरूपमें कर दिया अब।
उठो और अपना हाथ मुझको दो वादशाहने उससे ह वाशियोंकी वाणी से कहा आगे आव ह
आगे गई फिर उसने कहा कि और आगे आ रानी और आगे गई फिर उस वादशाहने पकड़ी
वे उपनी छनासे उसकी वांह पकड़ इतना अवका पाउस जाहगरनी को न लेने दिया कि
यह वचे वडे वलसे वोउ मारा कि दो टुकड़े होकर गिर पड़ी फिर उसको लोथ उसी ऊपमें
डालदी और सकालदीयोंके वादशाहके ठूठने में कि वह भी उसकी राह देखता था गया औ
र उसे थीं दे दिया कि अब अपने शत्रु का डर मत करो कालदीयोंके वादशाहने उसका धन्य
वाद किया और सहस्रों आशीर्वाद दिये वादशाहने कहा क्या तुम अपने नगरको जाओगे उसने
कहा हां तुम भी हमारे साथ चलो ऊ थोड़ा सा भोजन करो फिर अपने नगर में चले जा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्र ५२ 53

नाकालेहीपोंकेबादशाहनेकहाकितुमअपनेनगरकोयहांसेनिकटसमझतेहीउस
नेकहानिस्संदेहनिकटसमझताहूंमैंअपनेदेशसेयहांचारपांचघड़ीकेसमयांतरमें
आयाथाहीपोंकेबादशाहनेकहाआपकादेशयहांसेसरेएकवर्षकेमार्गपरहैयहां
इतनीदेरमेंइसकारणआयेहोगेकिउसजादूगरनीनेमेरेदेशकोमंत्रकेबलसेतुम्हारे
देशकेनिकटकरदियाथानिश्चयवहएककहीवर्षकीपदपरहै औरहे आनाहूर औरयमास।
परकुछबातनहींमैंआपकेसाथहूंतुममेरेउपकारीहो औरतुमनेमेरेसाथइतनाबड़ाउप
कारकियाहैकिमैंसंपूर्णवयमेंभीउसकाधन्यवादनकरसकूंगावहबादशाह अपनेदे
शकोइतनीदूरजानअतिअवश्यमिलनेजाओ औरकुछनसमझसकाकिकैसेइतनीदूरवहां
गयाहीपोंकेबादशाहनेकहाइसविषयमेंकुछअचंभानसमझिये बादशाहनेकहा
कियदिइनदोनोंदेशोंमेंइतनीदूरीहैतोआपकोचलनाअवश्यनहींपरंतुमैं अपुत्रहूं
इसवास्तेमैंनेतुमकोअपनापुत्रऔरयुवराजनियतकियाकिपीछेमेरेसिंहासनपरबै
ठियो इतनापरस्परप्रणकरहीपोंकेबादशाहने प्रदेशकीसामग्रीलाइकट्ठीकीतीन
सप्ताहकेपीछेअपनीसेनाकोसाथलेनलबादशाहकेसाथगया औरइनदोनोंबादशा।
होंनेधनआदिसेसौऊंटभर औरबहुमोलवस्तुकिजोकालेहीपकेबादशाहकेको

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

शोंमें थो अपने साथ लिये और ५० सहस्र असनिवीर अपने साथ इस यात्रा के लिये नियत
किये फिर बादशाह ने आगे से हरकारों को अपने देश भेज अपने चलने का समाचार कह
ला भेजा जब वह अपने शहर के निकट पहुंचा संपूर्ण नगर के सरदार और सभासद अ
गवानी के लिये आये और बादशाह से विनय की कि आपके प्रताप और परमेश्वर के
अनुग्रह से अब तक सारे नगर में कुशल क्षेम है और प्रजा भी आनंद से है फिर जब नगर में आ
पहुंचा सब नगर के वासी उसकी अगवानी को आये और बड़े शाह से उसके आने का धन्य
वाद किया दूसरे दिवस सब दरबारियों को एकट्ठा करके कालेहीपों के बादशाह अञ्जुनह
तान विस्तार सहित एक वर्णन किया और कहा इसी कारण मेरे आने में देर हुई फिर का
लेहीपों के बादशाह को अपना पुत्र बनाया और थोड़े दिनों के पीछे उसको अपना युव
राज करके संपूर्ण राज्य अपना उसके सिपुर्द कर दिया और सब सरदारों ने आकर काले
हीपों के बादशाह को भेटें दीं और राज्य के प्रबंध में उद्यत रहने लगे फिर बादशाह ने उ
सथोगर को जो पहले सब के उस कालेहीपों के बादशाह के छुड़ाने का कारण था बुला
भेजा और उसको पारितोषिक आदि से धनी बना दिया ॥ तीन राजकुंवर योगी हुए और
पांच स्त्रियों की कथा राजा हारूंरशीद के राज्याधिकार में एक मजदूर बगदाद का बा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त०
५४
54

सीथा वह बड़ा ढोल और वाचाल एक दिन भोर को वह बाजार में अपने सन्मुख बड़ा टोकड़ा र
क्खे इस आशा पर बैठा था कि कोई उसे भार उठाने के हेतु बुलाये संयोगवश एक स्त्री परमसुं
दरी जाली का वस्त्र अपने मुख पर डाले आई और उसने उसे मुसकराय कहा अपना टोक।
रा उठा और मेरे साथ चल वह मजदूर उस स्त्री की मीठी २ बातें सुन मन में प्रसन्न हुआ और
टोकरे को अपने शिर पर रख उसके पीछे हो लिया और चित में यह कहता हुआ चला आज
का दिन का उत्तम है कि ऐसी अच्छी स्त्री से काम पड़ा उस स्त्री ने आगे बढ़ एक बंद दरवाजे पर।
जाकर ताली बजाई थोड़ी देर पश्चात एक सुहृद लंबी और सफेद डाढ़ीवाले नसरानी ने आकर द
रवाजा खोला उस स्त्री ने एक रुपये उसके हाथ में रख दिये नसरानी ने उसका अभिप्राय स
मझ घर से एक बड़ी शीशी लिया उत्तम मदिरा की ला दी स्त्री ने मजदूर से कहा कि इसे ले अपने
टोकरे में रख उसने रख ली फिर यहां से मजदूर के साथ बाजार में आई और उत्तम फल सेव
नाशपाती आदि और अति सुगंधित पुष्प नाना प्रकार के रंग के और अनार स्वादिष्ट अचार।
और सूखा मांस और खोवा आम मसाला हर एक दुकानदार से इतनी सामग्री मोल लि।
या कि मजदूर के टोकरे में जगह न रही मजदूर ने कहा जो मुझ को विदित होता कि आप इतनी
वस्तु लेंगी तो मैं घोड़ा या टट्टू अपने साथ ले आता निदान वह मजदूर टोकरा उठाकर उ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सके साथ हुआ जाते २ एक बड़े मंदिर के दरवाजे पर कि जिसका सिपपीलया औं से सजा हुआ
या और किवाड़ हाथी दांत से जटित थे वह दोनों वहां वे स्त्री ने ठहरकर ताली बजाई अबतक
कि दरवाजा खुला मजहूर बड़े विचार में रहा कि यह स्त्री सोदा सलफ लेने वाली बांदी है या घ
र की मालिक है परंतु उसकी सज धज देखने से बांदी विदित न होती थी इतने में एक स्त्री ने
आकर द्वार खोला मजहूर उसके रूप अनूप और हावभाव को देख विकल हो गया और उ
स विकलता में उसके सिर पर से भार गिरने लगा वह स्त्री अपने साथ जो लाई थी उसको दे
ख कि कान में आया देखने लगी दूसरी स्त्री ने कहा कि यह बेचारा मजहूर भार से दबा जाता है य
ह शीघ्र ले जाओ अर्थात् बाल न देने न पर मजहूर के घुसने के पीछे पहली स्त्री ने किवाड़ अंदर से बं
द कर लिये फिर वह दोनों स्त्रियां मजहूर सहित एक बड़े मकान में गई जिसके चारों ओर।
बरामदे पौलिया ओं के बने हुए थे और उसके बीच में बड़ा भारी दालान था इसके विशेष
एक ओर बैठने का उत्तम स्थान उत्तम वस्त्र और बरतनों से सजा हुआ था उसमें एक सुंदर।
सिंहासन संदल का हुआ लकड़ी का बिछाया औ ये विछौना अति सुंदर था ऐसे कि जिसके
चारों ओर उत्तम २ मणि माणिक जड़ित थे बिछाया और होज संगमर का जिसमें फव्वारे।
छूट रहे थे यद्यपि मजहूर भार उठाने के कारण थकित हो गया था परंतु उत्तम मकान और सा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मप्र
५५
55

मग्रीवर्नेनजोउचित २ स्थानपररक्खेऊपथेदेखअतिप्रसन्नऊआमुखनेतीसरीस्त्रीकोकिउस
सिंहासनपरबैठेमजथजेसैवेटीऊईथीदेखअपनाअमभूलगयाफिरउसकोविदितऊआकि
इसतीसरीस्त्रीकानामजेवदाहैऔरइसघरकी स्वामिनीयहीहैऔरदूसरीस्त्रीकानामसाफी
औरवहस्त्रीकिसवसामग्रीखरीदकरलाईउसकानामअमीनाहैजेवदानेकहाहैवीवि
योइसदीनमजहरकेशिरसेशीघ्रहीभारउतारोकिवहदमलेकरहलकाहोउसकेकहने
सेसाफीऔरअमीनानेयेटोकरेकोथामभारउसकेशिरसेउतारा औरटोकरावहांओसे
खालीकरनेलगीजेवदानेइमवाकिउसकीमजदूरीसेकुछहीअधिकथामजदूरकीदियाउस
नेवहद्रव्यपायअसंतप्रसन्नहोयजानेकीइच्छाकीपरंतुउनसुंदरस्त्रियोंकेदेखनेसेउस
काचित्तनअघाताथा अवनकवहांसेचलतानथाकिअमीनानेअपनेमनमेंसमझाउनताम
जहरजोकेवलउसकीछबीलीचालऔरकोमलअंगपरमोहितथाअबवहउसकेरूप
छबिअनूपदेखकरवहींखड़ारहगयाऔरआश्चर्यितथाकिइसशहरमेंतीनस्त्रियोंकेसि
वायचोथानथापरंतुखानेपीनेकीसामग्रीइतनीखरीदीकि २१ मनुष्योंकोअलमहोजे
वदाउसकेखड़ेरहनेसेसमझीकिथकगयाहोगाखानेकेवास्तेठहरगयाजबवहवि
रकालतकठहरारहाउसकीओरदेखकरकहाकातूकुछऔरचाहताहैकातूनेमजा।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हरीअपनीइच्छानुसारनहींपाईफिरउसनेअमीनासेकहाकिइसकोकुछऔरदेविदा।
करोमजहरनेकहाहेस्वामिनीमैंनेमजहरीअधिकपाईहै परंतुकुछविनयकियाचाह
ताहूंयदितुम्हारेसन्मुखऐसीविनयकरनीअतिढिठाईऔरअपराधकाकारणहै आ
ज्ञारखताहूंकिउसेक्षमाकीजियेगायहकहकहाकिसीस्त्रीकोतुम्हारेसमानरूपवान
औरसुंदरनहींपायाइससेमैंअत्यंतआश्चर्यितहूंऔरस्त्रियोंकेबीचमेंपुरुषकानहोनाय
हभीआश्चर्यहैजेसामर्दोमेंस्त्रीकानहोना इसविषयमेंमजहरनेउत्तम २ दृष्टांतकहे
औरयहदृष्टांतभीजोबुगदाद नगरमेंव्यानथेकहे अर्थात्जबतकचारमनुष्यइकट्ठे
होकरभोजननकरेंतबतकभोजनबेस्वादहै नतबतकखानेवालेअच्छातेभीनहींपैसेदृष्टांतो
सेउसकाअभिप्राययहथाकिउनतीनस्त्रियोंमेंभोजनकेसमयचौथेपुरुषकाहोना
अवश्यहैजबदामजहरकोयेबातेंसुनबहुतहंसीऔरकहामजहरतूअपनीनिर्बुद्धि
ताकीबातें अपनेपासरखकेवलहमतीनोंनेबहिनेंहैंहमतीनोंअपनेकार्यकोअच्छेप्र
कारसिद्धकरलेतीहैं किकोईदूसरामनुष्यउसेनजानेऔरविचाररखतीहैंकिकोईह
माराभेदनजानेमजहरनेकहाकिहेस्वामिनीतुमबड़ीबुद्धिमानहोमुझेबहुतकुछ
स्मरणऔरमालूमहैपरंतुअपनीदुर्भाग्यतासेलाचारहूंकिमजहरीकरताहूंयदिमे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सच राकार्थ अनितच्छाहैं पंतवेतमहूं औरमैनेबहुतसीपुस्तकें इतिहासआदिकीदेखीहैं य
५९ दिआताहोतोकोईकथासुनाऊंबुद्धिमानअपनेभेदकोचतुरसेउमनारकवेकोंकिवहभे।
56 दउमरावनाभलीभांतिजानताहैगुप्तभेदकहनाइसप्रकारहैकिजैसेकिसीवस्तुकोकि
सीदहमेंबंदकरदिया औरउसकीकुंजीखोगईहैजेवदाकोमालूमहुआकियह मजहर
नोबड़ायोग्य औरसमझदारऔरसत्संगकरनेकेयोग्यहैइसको अपनेसाथभोजनकराना
अवश्यहैहाससेकहाकितूजानताहैकिहमने अपनेहाथोंइसभोजनको अमेतअयओ।
रद्रव्यखर्चकरबनायाहैतनेभीखर्चनहींकियाइसवास्ते हमतुझेअपनेसाथखिलानहींसक्ते
साफीनेभीमजहरसेकहायहहशानतनहीस इच्छाकनमक्खामजहर दहबेवाराउमराउ
मकानदेसकाऔरसेजेवदाऔरसाफी अपनीवहिनोंसेकहाकिइसकोयहांरहनेदोयह।
हमकोअपनीवाचालतासेबहुतप्रसन्नकरेगा औरहंसायेगातुमजानतीहोकियहबड़ा
हसोड़औरप्रसंनचितहैसंपूर्णरातहअपनेहंसमुखव औरमसखरेपनसेसबकेहंसाताआया
हैमजहरअमीनाकेयत्नसेबहुतप्रसन्नहुआ औरनम्रहोकरउनतीनोंस्त्रियोंसेविनयकीकि
मैंऐसामनुष्यनहींकितुमसबकेउपकोभलतुम्हारीइच्छाकेविपरीतकरूंयहकहउसनेव
हद्रव्यजोमजहरीमेंपायाथाउनकोदेदियाजेवदानेमुसकरायवहद्रव्यफेरदिया और।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कहाकिएकशर्तसेतुम्हमारेसाथखेलसक्ताहै जोबातहमतेरेसन्मुखकरेंउसकोनसकियो ज
बनककिजेबटामजहूरसेयहबातेंकहरहीथी अमीनानेचलनेकिरनेकेवस्त्रउतार अ
पनेबस्तकादामनबांधलिया औरमांसकीमाकालियाकोरमाकोर्मा औरभुनाहुआमां
सऔरसबप्रकारकेमांस औरनानाप्रकारकेभोजन औरमदिराकेपीपेलायउचितर२स
थानपरधरदिये औरबहुतस्त्रियांउसभोजनकेचारोंओरआयबैठी औरयजहूरकोभीए
कऔरबैठनेकीआज्ञादी मजहूरइसबातकोआधानरखसकाथा अभिंतवसन्नेहायफूला
नसमायाक्रुक्कथोजसाभोजनकियाथाकिअमीनानेमदिराकीबोतलकोउठायएकगि।
लासभरऔर अपनीदेशाकीरीतअनुसारसबकेपहिलेआपपियाफिरअपनीबहनोंको
दियाफिरबोथागिलास मजहूरकोदियाउसनेउसकेहाथसेलेकरपीनेकेपहिलेइसविष
यकाएकगीतगाया अर्थात्किजिसप्रकारअतरसेवायुसुगंधपरवानीहैउसीविधिउत्त
मशाबेरापिलाने वालेकेहाथसेयहमद्यसुगंधदेतीहै इसरागकेसुननेसेवहसबस्त्रि
यांअत्यन्तप्रसन्नहुईऔरउन्होंनेशराबकेनशेमेंप्यारी२ संगीतऔररागगायेइससेमजहूरअत्यन्तस
मयअपनीतन्हाहवाकाविचारगईखाफीनेअपनीबहनोंसेकहाकिअबमजहूरकाक्रुक्कामन
हीइससेकहोकिअपनेघरजावेमजहूरकोपेशासेगकहाउसनेसे अवसन्नताहुईसबसेविन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्र०
५०
57

यकीवज़ापस्थानापहै कियेसेसमयमेंमुफकोनिकालनेहोइसशराबकेनशेमेंआपने।
चरनककिसप्रकारपहुंचूंगायहींपर किसीकोनेमेंपड़ारहूंगा अमीनानेफिरउसकाप
ल्लकरकहावहदीनसमकहनाहैं अंधेरेमेंकहांठोकरें खाताजायगापहिलेउसकोह
मसबरहनेकोआज्ञादेचुकीहैं अबइसकोनिराशनकरो हमपाकररहनेदोजेबदानेअ
मीनाकेकहनेकेअनुसारमजहूरकोरहनेकीआज्ञादी औरकहातूएकथानेसेयहां
रह सकताहैकिजोकुछहमनेरसम्मुख अच्छावाबुराकैरेसछियोनहीं मजहूरनेका।
हाकिमैंअपनासबविवेदरककहूंगा औरनेत्रोंसेदर्पणकेसमानकिउसकाकामकेवलदे
खताहै देखाकरूंगाजेबदानेकहाकियहबातजोहमतुमसेचाहतेहैं नईनहींदेखो
कालिखाहै मजहूरनेदरवाजेकी औरउसकेभीतरजाकरपढ़ाकिवहसुनहलीमोटी।
कलमसेलिखाथाकिजोमनुष्यभीतरजायगा उसविषयमेंजिसमेंउसको संबंधन।
होमछेगातौवहअनुचितशब्दसुनेगा औरअमनविद्याकोशामहोगाकिजिससेब
हपछितावेगामहूरनेउसकोपढ़करकहाकिमैंतुम्हारी किसीबातमेंनबोलूंगातुमथी
छरकूगेफिरअमीनारातकोभोजनलाई औरउसजगहरखगेथ औरदीपजलायेकि
जिससेसंपूर्णटहलवगेपितहोगयाफिरवहस्त्री अपनीबहनो औरमजहूरसहितभोजन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

परबैठे औरसबनेऊखाखायाथीअपनेभाषाकीकाव्य औरविचित्ररागपढेकिइन्होंनेमेंउनस्त्रियों
नेऐसानाकिकोईमनुष्यदरवाजाहैखटखटाताहै खड़ीहोनाई सौसाफीकिजिसकायहीका
छथा दौडकेसबकेआगेबढगई औरकिवाडखोलकेफिरआई औरजबदासे आयक
हाकितीनयोगीएकहीरूपकेदरवाजपरखडेहैं औरतीनोंदाहिनी आंखसेकाणे
हैंतमउनकोदेखकजानतेहैसोगीउनकेशिरआधी मूछेभवेंसबमुंडीहैं औरइसीसमय
बुगदादनगरमेंउतराचाहतेहैं औरकहतेहैंकिएकरात्रिकेनिमित्तहमकोस्थानदोकि
जहांपडकरसोरहैंभोरकोचलेजावेंगेहेबहिनउनको आनेदोवह हमकोसहएंगेरने
प्रसन्नकरेंगे औरहमकोकिसीप्रकारकाकष्टनदेंगेंजबदःनेसाकीकेकहनेकेअनुसा
रकहाकियदितेरीइच्छायहाहैतोउनकोजालेआपरन्तसबतौने उनकोसमझादीजि।
योकिहमारेकार्यमेंनबोलें औरजोकिवाडकेपाठपरलिखाहैपढलेंसाफीइसबात
कोसुनप्रसन्नहोकरकिवाडखोलनेदौडीगई औरघरोजहोउनतीनोंयोगियोंकोअ
पनेसाथलिवालाईयोगियोंनेजबदः औरअमीनाकोझुककरप्रणामकिया उन्हों
नेप्रणामकाउत्तरदेकुशलक्षेमपूछी औरभोजनकरनेमें अपनेसाथबैठायायोगि
योंनेमजहरकोदेखकेकिएकमनुष्यअविकारहनेवालाजानपडताहै परंतुयह

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
५८
58

केविपरीत मदिरापानकरताहै मजहरनेइसबातमें अमंत अप्रसंन होउनरदियाकितुम
आपहो अधर्मीहोकिदाढी औरमूछमुडवाकर औरोंकोउपदेशकरतेहो इसीप्रकार
जवमजहरऔरयोगियोंकोइसप्रकारकीवातेंस्त्रियोंनेसुनीतोउसपरसवकिभुगदाहुआ।
करनेकोयोगियोंकोवैठामदिरापिलाईजबवहमदिरामेंउन्मत्तहुएतोउन्होंनेकहाकियदि
कोईवाजाहोतातोहमबजातेसाफीनेवाजाऔरबांसुरी आदिलादियेयोगीलोगउनबा
जोंकोप्रसन्नहोकरबजानेलगेऔरउननौनोंस्त्रियोंनेबाजोंसेअपनास्वरमिलाकरमीठेस्व
रोंसेगानाआरंभकियाऔरकभीपरसपरहँसनेऔरकभीवाह २ करनेउसवाजेकेबजनेऔ
रगाने औरठहेकावड़ाशोरहुआसंपूर्णभवनगूंजउठाइसी समययानरमेंउन्होंनेसुनाकि
कोईमनुष्यदरवाजेपरतालीबजातीहैसाफीगानाछोड़दौड़ीगईकिमालूमकरेकिद
रवाजेपरकौनहैरानीशाहरजादने शाहरयारसेकहाकिइसस्थानपरमुझेअवश्यहै
किमैंतुम्हेंयहबातवतलाऊं किसमनुष्यनेदरवाजेपरआकरतालीबजाईखलीफा।
हारूंरशीदकासदैवयहनियमथाकिरात्रिकोअपनाभेषवदलकरसंपूर्णनगरमेंअपनी
प्रजाकाहालमालूमकरनेकेहेतुफिराकरतासोवह अपनेबड़ेमंत्रीजाफरऔरखोजि।
योंकेसरदारमसरूरनामकसहितनगरमेंनिकलाथा वहनौनोंयोगियोंकावेषबनाय

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

देवयोगसेकिजिसस्थानपरवहजोनैंस्त्रियां रहतीथींहोकरनिकलेखिलौफानेरागोंकाश
ब्दऔररहासपठठोलेकासोरसुनजाफरसेकहाकिइसशहरकाकिवाडखुलवामेंइसकेअ
दरजाकरइसशाहकाहुतांतमालूमकरूंमंत्रीनेखिलौफासेकहाकियहांतोस्त्रियोंकाग
नाबजनाइपडताहैकिअन्होंनेभोजनकरमदिरापीउसकेनशेमेंगायबजारहीहैं आपको
उचितनहींकिउनकेहासमेंकछविघ्नकरैंकिऐसानहोकिवहकछबुराभलाकहउठे
खिलौफाने मंत्रीकीयहबात सीकारनकीऔरआज्ञाकीकिदरशौबजायउनकेकिवा
डखुलवायहआज्ञापायजाफरनेउसदरवाजेपरनालीबजाई सोफौने किबाड़खोला
मंत्रीउसकेरूपकोदीपप्रकाशमेंकिवहअपनेहाथमेंलेकरआईथीदेखआश्चर्यितहुआ
औरएकउपाय अपनेचित्तमेंठहराकहाकिहे मृगनयनीहमतीनव्यापारीनगरमवसल
केवासीहैंतीनदिनव्यतीतहुएकिवहमहसवस्त्रव्यापारकोलेइसनगरमेंआयेहैं औरए
कसरायमेंउतरेहैंआजकोरातइसनगरकेएकव्यापारीनेहमकोन्योतादियाथासोहमउ
सकेशहरगएउसेउजनमव्यजनाविलाप औरमदिरापिलाईजबहमसमतवालेहुए तबउसने
हमकेवास्ते आज्ञाकीइसमेंरात्रिबहुतव्यतीतहुई औरसभामेंबाजेओरन्हमआदिसेवडा
शाहहोनेलगामैंयोगावसकोनबाल अपनीरौंदसाथलेकरवहांआउसशहरकाकिवा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सत्र
५९
59

उकलवाया उस समय आं के बहुत से मनुष्यों को कैद कर लिया हम भाग्यवश बच गए कि दीवार
चढ़ बाहर कूद पड़े इतना कह फिर मंत्री ने कहा कि हम इस नगर में अजान कार भय भीत हैं कि
ऐसा न हो कि हम फिर कहीं राह में हमसरी रोदया उसी कोतवाल के हाथ से पकड़े जावें और
उस सराय न का कि जिसमें हम उतरे थे पहुंचने न पावें यदि वहां पहुंचे भी तो सराय के किवाड़
बंद पावेंगे जो बिना भोर हुए न खुलेंगे तो भोर होने तक हम इधर उधर फिरते रहेंगे सो हम
दरी यहां हमने गाने बजाने का शब्द सुनकर जाना कि इस शहर के मनुष्य अभी नहीं सोये सब जाग
ते हैं कि किवाड़ को खटकाया अब हम आशा रखते हैं कि कोई मकान हम को बता दो कि ह
म उसमें पड़ रहें यदि हम को संगत के योग्य जानो तो इस संगति में हमें भी मिला लो और क्योंकि तु
म सब अच्छे प्रकार गाने बजाते हो और हम भी तुम्हारी इस विषय में सहायता कर सकें।
हैं उसने उत्तर दिया कि मैं इस शहर की स्वामिनी नहीं हूं यदि थोड़ी देर ठहरो तो मैं तुम्हारी
बात का उत्तर ला दूं साफ़ी ने यह सम्पूर्ण वृत्तान्त जो मंत्री से सुना था अपनी बहनों के सन्मु
ख जाय वर्णन किया उन्होंने कुछ सोच विचार अतिथियों पाहुणों की राह से साफ़ी को आज्ञा
दी कि तू जा उन तीनों व्योपारियों को भी अंदर ले आ सो खलीफा और मंत्री जाफर और मस
हुर सहित अंदर आ गये और बड़ी अधीनता से उन स्त्रियों और योगियों को प्रणाम किया उ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

न्होंनेउनकोयोपारीसमझउसीप्रकारसे उनकेप्रणामकाउत्तरदियाजैवदानेकिसब
सेबड़ीऔरबुद्धिमानथीउनसेकुशलक्षेमपूछी औरकहाजोहमतुमसेप्रश्नकरेंतु
मबुरानमाननामैत्रीनेकहावहकौनसीबातहैकितुमऐसीहठदीयोंकेकहनेसेबुरा
मानपड़ेजैवदानेकहाजोयहीबातहैतोजोकुछतुमदेखोकिसीबातमेंप्रश्नकर
ना औरऔरजोविषयतुमसेसंबंधितनहीउसकाहमतोतुमपूछनानहींतोतुम्हारी अ
प्रसन्नताकाकारणहोगा मैत्रीनेकहाहेहठदीहमतुम्हारी आज्ञानुसारकरेंगेहमें
किसीअर्थविषयकोपूछना अवश्यनहींयहपरस्परप्रतिज्ञाकरकरप्रतिमनुष्यको
भोजनकरायेऔरमदिरापिलाईजबतकमैत्रीजैवदासेवार्तोकरतारहावेलोफाउन
स्त्रियोंकेरूपछबि अनूपऔरबुद्धिमानीकोदेखअति आश्चर्यितहुआविशेषकर
उनतीनयोगियोंकोकितोनोदाहिनी आवसेकानेथेबजतचाहताथाइस अद्भुत
चरित्रकोउनसेपूछेपरंतुउसकेसाथियोंनेपूछनेनदियाइसकेविशेषरूपयहलो औ
रहनहलोसामग्री औरगृहकीसजधजदेखकितनेमैंकहताथायहसबवस्तुजाहै औ
रमंत्रविद्यासे अवश्यसंबंधहैइतनेमेंएकयोगीनेअपनेदेशकीरीतिपरनृत्यकरना
आरंभकियास्त्रियोंनेउसकानाच अमंतप्रसन्नकियाउनसबयोगियोंसेअधिकप्रसन्न

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सत्र
९

60

ऊई खलीफा और उसके साथियों ने भी अत्यंत प्रशंसा करके धन्यवाद किया जब योगियों का
नृत्य हो चुका जे वह अपने स्थान से उठी और अमीना का हाथ पकड़ कहा कि हे बहिन तु
म जानती हो कि ये सब गुणी सभासद हमारे आधीन हैं इनका होना हमारे कार्य में विघ्न न
हीं कर सकता हम अपने कार्य को न करें अमीना इस बात के सुनने ही उसके अभिप्राय को
समझ गई फिर उसने वे शीघ्रही मदिरा की बोतलें और भोजन के पात्र और गाने बजाने
की सामग्री जिनको योगी बजाते थे उठाये साफी ने भी अपनी अमीना बहिन के साथ हो
उस कमरे को साफ किया और प्रतिवस्तु को संवार के रखवा दियो उलकटि और स्वेदन
और सुगंधित तेल की बत्तियां जलाई और फिर तीनों योगियों और खलीफा आदि को।
एक और दालान में बिठलाया और मजहूर को कहा उठकर काम करतफे पेसबलवा
नको उचित नहीं कि वे कार्य बेगार है मजहूर उंगता था और विवेक के कारण से उसहा
स्पष्ठ देसें उद्यत न था तत्काल उठ खड़ा ऊआ और पहिरने के वस्त्र के कमर में लपेटक
हा मैं न मरहूंका आज्ञा है साफी ने उत्तर दिया कि अस्तों न भी ऊपर बठा लो फिर थोड़ी।
देर के पश्चात् अमीना ने एक चौकी दालान में बिछाई और मजहूर को अपने साथ ले
जाकर एक कोठरी से दो काली कुतियें निकाल लाई इनमें एक कुतिया के गले में पटे बं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

थे क्यों थे फिर मज़्हर उन नदीनों को खींच दालान में ले गया जेबदा कि वहीं बैठी थी उन्हें देख।
बड़ी तपक से उठी और उस मज़्हर के समीप गई और उठी सामर आलीन रूपर को चढ़ा
ई और चाबुक को साफ़ी के हाथ से ले मज़्हर से कहा पकड़ कुतिया मेरी बहिन अमीना को दे
और हसरी मेरे पास ला मज़्हर ने उसकी आज्ञानुसार किया कुतिया लो नेरी चिल्लाने और रु
ह फेर के जबदा की और देखने और उसके चरणों पर सिर रख के मलने लगी जेबदा ने उसके
रुदन करने और चिल्लाने पर विचार न कर चाबुक मारना आरंभ किया और यहां तक के
मारते २ उसका श्वास चढ़ गया और जब थक गई तो मारना छोड़ दिया और जंजीर मज़्ह
र के हाथ से ले उसके अगले पंजे पकड़ खड़ा किया और अति पश्चात्ताप कर पकड़ हसरे को।
देख रोई फिर रूमाल से उस कुतिया के आंसू स्वच्छ प्यार किया और उसे चूमा और मज़्हर।
को देकर कहा इसको ले जा और हसरी को ला मज़्हर ने उस कुतिया को जो मारी गई थी मका
न में ले जा बांधा और हसरी अमीना के हाथ से ले जेबदा के निकट लाया जेबदा ने कहा इसे
रूप कड़े रहा फिर उसको भी उसी प्रकार मारा जैसे पहिली कुतिया को मारा था फिर उसके
आंसू पोंछ स्वच्छ पमजहर को दिया मज़्हर उसको भी मकान में ले जा बांध आया वह तो।
नें यो गये और सब लोग फ़ा और उसके साथी इस महानाग को देख आ निविस्मित हुए और अपने २

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त॰
८१

61

वितमेंकहनेलगेजेबदाकोंइननेकठोरपनसेउनकुतियोंकोमारउनकेसाथरोईयेपशु
मुसल्मानोंकेविचारमेंअपवित्रहैंउनकेओस्तपेपंछि ओरमुहचूमाइसीप्रकारवहसब
परस्परहोले २ इसकीवार्ताकरतेथेविशेषकरखलीफाइसअद्भुतचरित्रकेमालूमकर।
नेकीअतिलालसारखताथा मंत्रीसेसेनकीमंत्रीसुनी अनसुनीवातकरदूसरीओरदेख
नेलगाफिरराजानेसेनसेपूछाउसनेसेनसेविनयकीकियेसमयपूछनेकानहीफिरजेब
दानेउनदोनोंकुतियोंकेमारनेकेपश्चात्थोड़ीदेरठहरनानेकोवैठीजबसुस्ताचुकीसाफ़ीने
उससेकहाहेमेरीप्यारीवहिनतुमअपनेस्थानपरआवैठोतोहमअपनाकार्यकरैंजेबदाने
कहाअच्छाफिरवहसभामेंआयइसप्रकारसेआवैठोकिखलीफा ओरउसकेसाथीदा
हिनीओरओरतीनोयोगीओरमजहरगई ओरवैठएकचड़ीनकवहचुपकीथीकिसा
फीउसचोकीपरजोदालानमेंविछीहुईथी आयवैठगई ओरअमीनासेकहावहिनउ।
ठोतुमहमारेअभिप्रायकोजानतीहो इसवातकोसुनअमीनाउठी ओरदूसरीकोठरीमेंगई
ओरवहांसेएकसंदूकउठालाईजोथैलीसाढिनेसमपाऊआया ओरगिलाफउसकीहरी।
कारचोवीकाथाउसनेउसेखोलएकनलीनिकाल अपनीवहिनकोदीसाफीनेउसकेशब्द
मेंवियोगओरविरहमईरागगानाआरंभकियाजिसकोखलीफाआदिसभासदगनप्रति।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हर्षयुक्त हुए जब उसने देरतक गाय बजाय सबको प्रसन्न किया वा सती अमीना को देकर
कहा है वहिन मैं थक गई अब तुम इसे ले बजाओ और सभा को अपने गाने से प्रसन्न करो अ
मीना ने उस नली को लेकर थोड़ी देरतक उसका स्वर मिलाया फिर एक उत्तम राग बजाया नि
दान उस समय सब राग में मस्त खिन्न होगई और जिबदा ने उसके गाने बजाने की अत्यंत प्रशंसा की
और कहा अब तुम्हारी दशा चिंता से बदली हुई मालूम होती है अमीना विकल वा से उ
सके प्रश्न का उत्तर न दे सकी और उसकी ऐसी दशा होगई कि बेसुध होय गिरपड़ी और उ
सने उसी दशा में अपने पहिरने के वस्त्र को उतार फेंक दिया और उसके बंधे जो दागों से का
ले होगये थे सब लोगों को दृष्टि पड़े जैसा कि सीने उसे मारा है और दाग पड़ गये हैं सब दे
खकर आश्चर्यित हुए पाकि पसी सुंदरी को मल अंग को किसने मारा है उसके बंधे और खा
है दागों से काले होगये हैं और कोई इस दशा को प्राप्त हुई जब अमीना बेसुध होय गिरप
ड़ने पर हुई जेबदा और साफी ने दो उकर थोभा न बएक योगी ने कहा यदि हम बन में पड़े र
हते और रात्रि को हृक्ष के नीचे व्यतीत करते तो इससे बहुत उत्तम था कि हम इस हृतांत
को देखते और उसका कारण पूछ नहीं सकें खलीफा ने इस बात को सुन उसके समीप
आके पूछा कि तुम को इस स्त्री का और कुतियों के मारे जाने का हतांत मालूम है योगी ने उत्त

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त रदिया हमइसमहन्तोंनकोनहींजानतेऔरपहिलेकभीइसशहरमेंनहीं आयेकेवलआजही
८२ कौनतकोतुम्हारेआनेकेदोचारघड़ीपहिलेआयेहैं इसबातकेसुनतेही खलीफाऔरभी
अधिकआश्चर्यितहुआऔरउसयोगीसेकहाकियहजोमनुष्यतुम्हारेसाथहैंउनकोइससेहा
62 लमालूमहुआहोगाउसयोगीनेमजहरकोसैनसेअपनेनिकटबुलायसबवृत्तान्तकहजना
ताहैकिसवास्तेवेदोनोंकुतियांमारीगई औरअमीनाकेकंधोंपरक्योंदागहैं मजहरनेसो
गंदखायकहाकिमैंइसमहन्तोंनकोनहींजानता आजकेदिनकेसिवायकभीइसशहरमेंना
हीआयाऔरमैंइसशहरकेरहनेवालोंसेजैसाकितुमसमझतेहोनहीं इसशहरमेंकेवल
तीनस्त्रियांहैंवहसबजानतेथेकि मजहरइनस्त्रियोंकासेवकहोगाजबविदितहु
आकिमजहरभीहमारेसमानबेगानाहै तबखलीफानेकहाहमसातपुरुषहैंऔरवे
केवलतीनस्त्रीहैंसबमिलकेउनसे इसभेदकोपूछेयदिउन्होंने प्रसन्नहोकरबताया।
तोउत्तमहैनहींतोहमजोरसेपूछेंगेजाफरमंत्रीनेजोइससलाहमेंनथासुनखलीफा।
केकानमेंकहाकिहमसबकोइससभासेअतिप्रसन्नताहुईऔरअबतकबड़ेमेंआनंद
हैं औरआपकोअच्छीतरहमालूमहै किइनस्त्रियोंनेकिसप्रतिज्ञासेहमकोअपनाआ
तिथ्यबनायाहै औरहमनेउसप्रतिज्ञाकोस्वीकारकियाहै इसपूछनेसेवेक्याकहेंगी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जोपरमेश्वरनचाहेइसप्राणकेतोउनसेकिसीप्रकारकीव्यथाव्यापैनेतोअग्निनलजाप्रामहे
गीओरइस्कोमीविचारियाकिउन्होंनेजोहमसबसेऐसाहठप्राणकियाहैक्याहमकोप्र
तिज्ञाकेतोउससेदंडनदेसकैंगीउन्होंनेभीतोहमसेऐसासमझाहोगाजोहमसेऐसाप्र
णकियाफिरजाफरमंत्रीनेयहहालतकखलीफासेकहाकिरातवक्तनथोड़ीहैजोआप
इससमयचुपरहैंतोभारकोमैंइननौनोंस्त्रियांकोआपकेसन्मुखले आऊंगाउसवेलाजो
आपकोसमझनाहैउनसेसमझलीजियेगाययपियहमनबहुतअच्छीथीपरंतुबादशा
हनेउसेनमानाऔरमंत्रीमेकहाकिचुपरहैमैंप्रभातपश्चिमउदयनहींसक्ताइसीसमय
इसवातकोसत्यचिंतकियाचाहताहूंपहिलेउसनेयोगियोंसेकहाकितुमजाकरउनसे
समझोउन्होंनेनमानाफिरसबनेमजहरकीसमझनेकेलियेनेभ्यारकियाजेवदानेइनसे
संगमनुष्योंकोबातचीतकरतेसुननसमझातुमपरसरकाबातोंकरतेहहोमजहरनेक
हाकिहेसुंदरीसबयहीचाहतेहैंकिआपकृपाकरकेइसबातकोबतलाइयेकिआ
पकुत्तियोंकोनिर्दयतासेमारकररक्खोगेई औरजिसस्त्रीनेमुझ्कोखिलाईउसकेकंधोंपर
कालेदागकैसेहैंजेवदाअग्निनकोधिनहोकरखलीफाआदिकसेकहनेलगीकाय
हबातसमझहैकितुमनेइसबातकेसमझनेकोइसमनुष्यसेकहाथासबनेएकमतहो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
९३
63

करकहाकिसत्यहैकेवलजोफरमंत्रीनंदीपछताचाहताजेवदानेअनंतकोपितहोकरक
हाकितुमनेअपनीप्रतिज्ञाअच्छीनिवाहीहैमैंनेदयासेतुमकोअपनेघरमेंरहनेकोजगह
दीओरतुम्हारायथाविधिसन्मानकिया ओरपहिलेप्रतिज्ञाकरलीथीकितुमकिसीह
मारीबातकोनपूछनापरंतुतुमनेप्रणअपनाभंगकिया ओरइसमेंतनकभयनकियाअ
बतुम्हारीप्रतिज्ञाहैमारीद्रष्टिमेंनंदीइतनाकहकेजेवदानेपांवथरतोपरमारेओरतीनवेरता
लीबजाकरकहातेरनआओइतनाकहतेहीएककिवाड़खुलगयाउसमेंसेसातहबशी
अतिबलवानघोररूपएकहनंगेखड्गलियेअयनिकसेओरहरएककनेएकएककोपृथ्वी
परपछाड़ाओरउसीदालानकेभीतरमारडालनाचाहा अवसमझनाचाहियेकिखली
फाकोकितनीलजाओरव्याकुलतामंत्रीकेउपदेशनसुननेसेहुईहोगीइतनेमेंएककह
बशीनेजेवदाआदिकसेपूछाहैसर्दारयोतुम्हारीआज्ञाहैकिहमइनकोमारडालेंजेवदा
नेउत्तरदियातनकठहरजाओपहिलेइनसेइतनाहालपूछलेंफिरहरएकसेहालपूछ
नेलगीसबकेपहिलेमजहूरनेकहाईश्वरकेवास्तेमुझेनिर्दोषीकोनमारोमैंनिपटनिर्दोष
हूंयहसबअपराधीहैंओररोकरकहनेलगाकिबड़ापछतावाहैकिमैंकिसवचनमेंथाइन
योगियोंकेकारणइसदुखमेंपड़ाइनकेऊपरओरऊशाऊनचरणोंसेबकनेसनगरनिर्जे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

होगयेहैंगेगुरुपरदयाकीजियेजेबदाउसकारोनापीटनासुनतेहैंसयदीऔरकहाकिह
मकमनुष्यअपनाशोक२ हालकरतेहैंअर्थातकौनहैऔरकहांसे आयाहैऔरक्या२गुण
रखताहै औरयहांआनेकाक्याकारणहैयदितनकभीफूटबोलेगातोनिःसंदेहउसकीग
र्दनमारीजावेगीबादशाहऔरमैंमेंअधिकव्याकुलहुआकिउसकुपितस्त्रीसेवचनाकठि
नहैइसीव्याकुलतामेंसोचा यदियहमेरीपदवीमालमकरेगातोनिश्चयमुफकोछोड़
देवेगीनटनेतरउसनेमंत्रीसेजोउसकेसमीपथाउससेसब्बापरंतुउसबुद्धिमानमंत्रीने
कहाकिआपनेस्वामीकीप्रतिष्ठानखोवेकोईऔरबहानाकरेंइतनेमेंजेबदानेउनती
नोंयोगियोंकोज्ञापकआंखसेकारणथासब्बाकानमतीनोंभाई२होउनमेंसेएकनेक
हानहींएकभेदअवश्यहै औरइसीविधिअपनाजन्मकाटतेहैं फिरउसनेयोगियोंसेपू
छाकिक्याअपनीमाताकेउदरसेकारणउत्पन्नहुएथेएकनेकहानहींएकदुःखकेकार।
णहमारेनेत्रजातेरहेहैकिवहतिखनेकेयोग्यहै औरउससमयहमनुष्यकोउपदेशहोउस।
आपत्तिकेउपरांतहमनेअपनीआंखोंमेंखोंऔरअबवेसुरखाउलीऔरयोगीबनगयेजेबा।
दानेहससेयोगीसेभीपूछाउसनेभीयहीउत्तरदियाऔरतीसरेनेभीयहीकहाकितउसने
अधिककहाकिवर्णनकियायदिआपतनकहमपरदयाकरेंतोहमअपने२ वृत्तांतकोव।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्र
८४

64

र्णनकरेंहमतीनोंशाहजादेहैंआजसंध्यासेहमकोपरस्परभेंटहुईथीहमपरदेशीहैं और
विश्वासकरजानियेकिवोवादशाहजिनकेहमतीनोंपुत्रहैंबड़ेनामवर इससंसारमेंहैंऔ
रहममेंसेप्रतिमनुष्यअपने२ दुःखकाहत्तांतजोहमपरपड़ाहैविस्तारसर्वकवर्णनकरें।
गेजेवदाकाक्रोधइनवातोंकोसुनकरकुछशान्तहुआऔरउनहवशीगुलामोंकोआज्ञादी
किइनकेहाथपैरखोलदोवहअपनी२ जगहपरवैठकरअपना२ हत्तांतऔरइसशहरमें
आनेकाकारणवर्णनकरैंजबअपनाहत्तांतकहिचुकेंतबइनकोछोड़दोजिधरकोचाहें
उधरचलेजायेंऔरजो अपनाहत्तांतनकहेउसकोवधकरडालोफिरतीनोंयोगीऔरखली
फाअपनेसाथियोंऔरमजहरोंसहितदालानमेंकालीनपरआवैठेऔरप्रतिमनुष्यके
शिरपरएक२ हवशीतलवारनंगीलियेखड़ाहुआथाकिजेवदाकाहुकमपायउनकोवध
करैंसवकेपहिलेमजहरनेअपनाइसप्रकारसेहत्तांतकहनाआरंभकिया ॥ मजहर।
कीकथाजोउसनेसंक्षेपमेंवर्णनकी । मजहरनेकहाहैसुंदरीतुम्हारेशहरमेंआनेका
कारणयहहुआकिआजभोरकोमैंबाजारमेंअपनाटोकरालियेहुयेइसपरखड़ाथाकि
मुझेकोईमजदूरीकेनिमितबुलायेकिमैंउसकाकार्यकरूंअपनेनिमितजोविकाश्रम।
कैं इतनेमेंतुम्हारीबहिननेमुझेबुलायाऔरअपनेसाथलियेहुएकलवारकीदुकान

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

होगयेहैंइसमेमुझपरदयाकीजियेजेबदाउसकारीगनापीटनासुनकेसपउसेग्रोरकहाकिह
सपकमतुणग्रपनाटीक२ हालकहेंअर्थात्कौनहेग्रोरकहांसे आयाहेग्रोरकार२गु
ससबनाहेग्रोरयहांग्रानेकाक्याकारणहेयदितनकभीझूठबोलेगातोनिसंदेहउसकी
गर्दनमारीजावेगीबादशाहग्रौपैसेग्रधिक) परगईग्रोरवहांसेउज्जयनीकीडकानसेनरा
कारीमोललेफिरवहांसेफलवेचनेवालेकनिकटगईग्रोरवहांसेउनम२ वस्तुखरीद
ग्रोरटोकड़ेमेंभरकेशिरपररखचरमेंलाईग्रोरतुमनेकृपाकरमुझकोग्रवतकयहां
हिनेदियाइसतुम्हारेउपकारकोविस्मरणनकरूंगामेरायहवृत्तांतहे जिसकोमैनेबिन
यकियाजवमजहरनेग्रपनीकथाकोशीघ्रबटजानेकेहेतएसाकियाजेबदानेउससे
कहा अपनेघरचलाजाफिरमेरेसन्मुखकभीमतग्राइयो मजहरनेबिनयकीयदिमुझे
ग्राज्ञाहोतोमेंठहरकेइनलोगोंकोभीकथासुनूंजेसाकिउन्होंनेमेराबृतांतसुनाहे फि
रवहजेबदाकीग्राज्ञानुसारदालानकेएककोनेमेंजाखड़ाहोरहाफिरजेबदानेउना
नीनोंयोगियोंसेकहाकिग्रवतुमभीग्रपना२ वृतांतवर्णनकरोसोएकनेग्रपनीक
थाकोइसप्रकारकहिनाग्रारंभकिया पहिलेयोगीकीकथापहिलेयोगीनेचुटनेके
बलखड़ेहोजेबदासेकहाकिहेसुंदरीमेंयहवर्णनकरताहूंकिमेरीदाहनीग्रांखको

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मत्र गईकौंमैने अपनेकोयोगियोंकेसमान वनायामैंएकवड़ेवादशाहकापुत्रथाऔरउसका
६५ एकवड़ाभाईभीउसीवादशाहकेसमानऐश्वर्यवानउसकेनगरकेसमीपरहताथाउसके।
दोसंतानथेएकपुत्रमेरेसमअवस्थाथाऔरदूसरीपुत्रीथीमैंप्रतिवर्षमेंएकवेरअपनेपिता
कीआज्ञानुसारअपनेचचाकीभेंटकोजातावहांएकदोमासरहिफिरअपनेदेशमेंलौ
टआताइसआनेजानेसेमुझऔरचचाकेलड़केमेंअत्यन्तप्रीतिहोगईएकदिवसभेंटमेंमैने
उसे अधिकप्रसन्नपायाऔरउसनेपहिलेसेअधिकप्रीतिकीऔरभीअत्यन्तप्रतिष्ठाकरमुझेभो
जनकराया औरअद्भुततमाशेदिखलाये औरवहुतदेरतककेवलतमासेदेखाकियेफिरमै
नेऔरउसनेमिलकरभोजनकियाउसकेपश्चातउसनेमुझसेकहामैनेकितनाअच्छा
औरकितनेजलदीतुम्हारेजानेकेपीछेवहुतसेकारीगरवुलवाकरएकमकानबना।
वायासोवहगृहवनचुकाहै अवमेरीइच्छारात्रिकोसैनकरनेकीहैजोउसगृहकोदेखो
गेतोवहुतप्रसन्नहोगेपरंतुप्रथमतुमकोकसमखाना अवश्यहैकिइसभेदकोकि
सीसेवर्णननकरनायहकेवलदोवातेंतुमसेमित्रताऔरपुरातनप्रीतिकेकारणकहू
नाहूंमेंउससेइन्कारनकरसकातदंतरमैनेउनसेसौंगदखाईफिरउसनेमुझसेकहाकि
तुमठहरोमैंअभीआताहूंफिरथोड़ीदेरकेपीछेएकस्त्रीपरमसुंदरी अपनेसाथले

65

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

करआयानतोउसनेमुफसेवतायाकिवोस्त्रीकौनहै औरनमैंनेउसस्त्रीकाहतांतपूछना
उचितसमफातदनेनरहमदोनोंभ्राता औरस्त्रीवैठेकरइधरउदरकीवार्ताकरणेलगे औ
रगिलासभरभर मधिरापीतेरहेयहांतककिशाहजादेनेकहा अवयहांअधिकनठहरना
चाहियेपथहकहिउठा औरमुफसेकहाकितमइससुंदरीको अपनेसाथलेइसमारगसे
उसस्मशानमेंजाव औरजहांकहींनवीनफवरउम्बदकेसमानदेखनातोजाननाकिवही
दरवाजाउसशहरकाहैजिसकोकिमैने अभीतुमसेवर्णनकियाथातुमदोनोंउसशहरके
भीतरजायमेरेआनेकीराहदेखनामैंतुरंतवहांआऊंगाफिरमुफसेकहाहेभाईपरमेश्व
रकेवास्तेइसभेदकोकिसीसेवर्णननकरनाफिरमैने अपनाहाथउसस्त्रीकेहाथमेदेउ
सीविन्हऔरपतेपरकिजिसमेरेचचेरेभाईनेवतायाथाचला औरमारगकेभूलनेबिनाचं
द्रमाकेचांदनीमेंबहुतआनंदसेउसीसुंदरीकोलेके पहुंचाकादेखाकिवहशाहजादा
भीपानीकालोटाभराहुआ औरहनेकाटोकड़ीलियेहुयेवहांपहिलेपहुंचा औरफड
हेसेमिटीभरीहुईनिकाली औरपत्थरोंकोवहांसेउठायपक औरलगायाजवसबपत्थर
उससेनिकालचुकापृथ्वीमेंछिद्रकियाकिवहांहमेंपकदरवाजादृष्टिपड़ाउसनेउसे।
खोलाकिउसमेंपकसीढ़ीलकड़ीकीथीउससमयमेरेचचेरेभ्रानानेउससुंदरीसेकहा।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त॰
९९
66

कियहीमारगउसद्वारकाहैजिसकाकिमैनेतुमसेवर्णनकियाथावहसुंदरीइसबातकेसुनते
हीवहांआईऔरसीटीकेमार्गसेनीचेउतरगईऔरशाहजादाभीउसीकेपीछेचलागया औरउ
समकानमेंउतरनेकेपहिलेमुझसेकहाकिमैंइसबडेश्रमसेजोमेरेकारणतुमनेउठायेहैं
तुम्हाराधन्यवादकरताहूं अबमैंतुमसेबिदाहोताहूं तुम्हेंपरमेश्वरकोसौंपाकितनाही
मैनेउससेपूछाकितुमकहांजातेहो औरयहसबकार्यक्याहैउसनेकुछनबताया परंतुइ
तनाकहाकिदरवाजेपरमट्टीडालबराबरकरदेनाऔरजिसमार्गसेआयेथेउसीमार्गसेचले
जावमैंलाचारहोकरदरवाजेपरमट्टीडालऔरवहांसेविदाहोकरअपनेचचाकेमंदिरपर।
आयाऔरफिरकीपीडाकेकारणकिमदिराकेनसेसेहोतीथी अपनेमकानपरजायसोयर
हाजबभोरकोउठारात्रिकीबातकोस्मरणकरचिंतायुक्तहुआफिरमैनेउनसबबातोंकोवि
चाराकिस्वप्नथायासचसचफिरमैने अपनेसेवककोकहाकितुमजाओमेरेभ्राताशाह।
जादेकासमाचारलाकिउसनेजगकरवस्त्रबदलेहैंयासयनकरतेहैंउसनेवहांसेलौटकर
कहाकिरात्रिमेंवो अपनेस्थानपरनथाऔरयहभीकोईनहींजाननाकिवहकहांहैं और
किधरगयेइसकारणसबउनकेसेवकचाकरऔरघरकेमनुष्यअतिविस्मितऔरचिंतामें
हैंमैंनेविचारकियाअवश्यउसीटहमेंहोगामुझकोउसकेनहोनेऔरनदेखनेसेअतिचिं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नाऊईफिरछिपकरउसीस्मसाननेमैंगयाओरसंपूर्णदिवसउसगृहकेढूंढनेमेंव्यतीतकि।
यापरंतुउसगृहकाकुछभीचिन्हनपायाइसीप्रकारचारदिवसतकउसकोढूंढतेमेंभटकता
रहापरंतुकहींठिकानाओरपताउसकानलगाहेसुंदरियोमुझेठचिंतहेकिइसबातको
तुम्हेंजनाहूंनहींदिनोंमेंमेराचचाआविटकोकईदिनसेबाहरगयाऊआथाओरमैंउसके
आगमनकीदेरीमेंअतिदुःखितऊआनिदानअपनेपिताकेपासजानेकीइच्छाकीओरमं
त्रीसेयहकहाकिमेंअबकीवेरआगेसेअधिकरहामेरापितामेरीओरसेचिंतायुक्तहोगाज
बचचाजीआविटसेलोटआवेगमेरीओरसेप्रणामकहनेकेपश्चात्उक्तबातकहिदेनापरं
तुमैंनेमंत्रीकोशाहजादेकेखोजानेसेअमितव्याकुलओरचिंतायुक्तपायाओरमैंशाहजा
देकाहत्तांतउसीसेकोटकेकारणनकहिसकताथाफिरमैंवहांसेअपनेपिताकीराजधा
नीमेंआयाओरवहांतोमैंनेगृहकेदरवाजेपरबऊतसीसेनाकापहरादेखाउन्होंनेमुझे
देखतेहीकैदकरलियामैंनेकारणपूछातोएकसेनापतिनेउत्तरदियाकिहेशाहजादे
यहसेनाबडेमंत्रीकीहैउसनेतुम्हारेपिताकेस्वर्गवासकेपश्चात्उसमंत्रीकोबादशाहकि
याहे अबउसनवीनबादशाहनेतुम्हारेपकडनेकेनिमित्तहमें आज्ञादीथीकिजहांक
हींपाओशाहजादेकोपकडलाओसोतुम्हारेढूंढनेकोसेनाचारोंओरगईहे आजतुमह

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सअ
८०
67

मोरेभाग्यसेआपहीयहां आगमेइसवास्तेतमकोपकड़लियायहकहितेहीएकसेनापति।
मुझेउसअमात्यकेनिकटलेगयाहेसंतदीउससमयकेमेरेकष्टओरदुःखकोसमफनाचाहिये
वहउहपहिलेसेअपनेचितमेंवेरखताथाउसकेबेरकायहकारणथाअफकोवालकप
नेमेंगुलेलखेलनेकामहाव्यसनथासोएकदिनमेंगुलेललियेहुयेआपनेगृहकीछत
परखडाथाकियकचिड़ियाउड़तीहुईमेरेसन्मुखआईमैनेएकगुलेलउसकीओरचला
ईसेयोगबसवहउसमंत्रीकेनेत्रपरकिअपनेगृहकेकोटेपरटहलताथालगीउससेउस
कीआंखफूटगईमेंइसहालकोजानकरआपउसकेनिकटगयाओरबिनतीकीफिरभीउ
सकेचितमेंमेरीओरसेबैररहाओरचाहताथाकिसमयपायउसका बदलामुफसेलेको
किअवउसनेमुफेदीनओरअसहायपायामेरेउसविषयकोकिम्हलसेहुआथास्मरणक
रमुफेदेखतेही दौसओरअमंगलकोपसेअपनीअंगुलीडालमेरीदाहिनीआंखनिका।
लडालीयहीमेरीदाहिनीआंखफूटनेकाकारणहुआओरउसअमात्यनेएकपिंजडेमें।
मुफेकैदकियाओरवधिककोआज्ञादीकिइसकोनगरकेबाहरलेजाकेबधकरओरउस
कामांसकव्यपशुपतियोंकोखिलादेबधिकचौड़ेपरचढ़ओरबहुतसेमनुष्यअपनेसाथ
लेमुफेनगरकेबाहरलेगया जबमेरेबधकरनेकीइच्छाकीमैनेबहुतरोदनकरबधिकके

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

विनतीकीनबउसकोमुझपरदयाआई औरमुझकोछोड़दियाऔरकहाकिइसदेशसेनिक
लजाऔरचैनमरहफिरकभीइधरमुखनकरनाऔरजोआवेगातोहमऔरचैनमरहफिरक।
भीइधरमुखनकरनाऔरजोआवेगातोहमऔरतूदोनोंमारेजायगे यहसुनमैंने अनंतय
मवादकियाऔर प्राणकेबचनेसेआपकाजानाअच्छामालूमहुआ किआपरहोकेजानेसे
परमेश्वरनेभलाईकीभलाप्राणतोबचे आपगईतोगईउसदिनतोमैंनेचलनेकीसाम।
र्थ्यथीऔरभीनपाईदिवसभरछिपारहारात्रिकोअधियानरालोंसे अपनेबलकेअनुसारथो
ड़ा२ चलचचाकेनगरमेंपहुंचाऔरउसकेनिकटजाय सुसर्णीहर्गानअपनेदुःखऔरतुरंत
लौटआनेकावर्णनकियाचचानेहाहाखाकहाबड़ापछतायेहैंकिबुरेसमयनेमेरेपुत्रके
खोयजानेपरभीमुझेअपनेभ्राताकेमरनेकासमाचारसुनायाकिजिसकोमैं अपनेप्राण
सेभी अधिकप्रियरखताथाऔरमुझकोइसदुःखमेंपायाकिननाहीउसनेअपनेपुत्रकोछं
डापरंतुउसकाकहींचिन्हनपायानिदानअपनेपुत्रकोयादकररोयाकरताथामैंअपनेचचा
कोऐसीबुरीदशामेंनदेखसकाऔरउसकेरोनेपीटनेपरऔरभीअधिकदुःखितहुआ।
धीरजनकरसका औरउसवाक्यकेप्रतिपालनकीमुझमेंशक्तिनरहीनिदानमैंनेबहुत
सर्णीहर्गानजोमेरेनेत्रोंकेसन्मुखहुआथा अपनेचचासेकहाइसहालकोसुनेउसेधीर्य

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सश
५८
68

येहुआऔरमुझसेकहाभतीजेतूनेसचकहातेरेकहनेसेमुझेउसकेमिलनेकीआसाहै मु
झेआगेसेविदितहैकिउसनेएककबरयहांसेसमीपबनाईहैउसमें अवश्यहोगाफिरमैं
औरचचादोनोंभेषबदलकिकोईअन्यमनुष्यउसशाहजादेकाभेदनजानेबागकेदरवाजे
सेकिबनकीओरस्थाननिकलकरचलेथोड़ीदूरगयेथेकिवहकबरमिलगई मैंनेतुरंत
उसेपहिचानलियाजबहमउसश्मशानकेअंदरगयेतोउसलोहेकेकिवाड़कोजिसकेसा
थसोठीलगीहुईथीबड़ीकठिनतासेखोलाक्योंकिशाहजादेनेउसकोभीतरकीओरसेग
चऔरहलनालगाबंदकियाथाजबहमनेउसकिवाड़कोखोलातोप्रथमचचाउसगृहमेंउत
रउनकेपीछेमैंगयादेखातोउसगृहकोडेबठीधुयेंकीबुरीसुगंधसेभरीहैवहांफिरबैठने
कीजगहमेंगयेजहांअतिस्वच्छदीपकजलतेथेवहांएकछोटातालाबदीखपड़ाकिजो
सकेचारोंओरखानेपीनेकीसामग्री बहुतरक्खीथीहमकिसीमनुष्यकोवहांनदेख अ
मनविस्मितहुयेफिरअपनेसमुखएकऊंचेचबूतरेपरबैठनेकास्थानऔरदेखाकिजिसकेकि
वाड़ोंमेंपर्देपड़ेहुयेथेचचासीढ़ीकेद्वाराउसबैठनेकीजगहपरचढ़गयेऔरपर्दाउठाअय
नेपुत्रऔरएकस्त्रीकोएकशय्यापरइकठेदेखापरंतुवहदोनोंपरमेश्वरकेकोपरूपी अ
ग्निसेदग्धहोकोयलेकेसमानकालेहोगयेथेकिजेसाकोईउनकोज्वलितअग्निमेंडाले

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

औरराखहोनेकेपहिलेनिकालेइससन्तानकोदेखेमैंअनंतभयभीतहुआऔरपश्चातापकि।
यापरंतुमेरावचाहुआभीविस्मितनहुआऔरनइसविषयकोदेखकेपश्चातापकियाउस
नेउसजलेहुयेशाहजादेकेमुखपरमुथादियाऔरक्रोधितहोकहादेखइसलोकमेंतूनेकि
तनादुखपायाऔरपरलोकमेंइससेभीअधिकपावेगाइसक्लेकनेऔरकहनेसेभीउसकाबो
धनहुआफिरउसनेपांवसेजूतीउतारउसकेमुखपरकईमारीइसवातसेमैंअनंतशोकवान
औरविस्मितहुआकिउसनेकैसाअपनेमृतकपुत्रसेऐसाअनुचितकियामैंनेरिसकरउनसे
कहाआपकतोमुझेशाहजादेकोयहदशादेखनेसेशोकहुआउससेअधिकआपकेइसकर्म
परपश्चातापहैआपमुझसेयहकहियेकिइसमृतकशाहजादेसेऐसाबड़ाकौनमाअप
राधहुआकिजोआपकेऐसेक्रोधकाकारणहुआवचानेउत्तरदियाकिहेमतीजेनइसह
तांतकोनहींजानताहैअधिकयिकारऔरदेउकेयोग्यहैंक्योंकियहशाहजादाबालअव
स्थासेअपनेवाहिनकोप्यारकियाकरताथामैंनेबाल्यावस्थाकेकारणउसकाअनुचितक
र्मकाविचारनकियाजबवहदोनोंबड़ेहुयेऔरखुल्लमखुल्लासमझनेलगेऔरदोनोंमेंप्रीतिभी
अधिकबढीतबमैंनेइनकोबड़ानरदाकीऔरगृहमेंआज्ञादीकियेदोनोंबहिनभाईसन्मु।
खनहोवेंपरंतुबहुअभागीलड़कीभीउससेबड़ीप्रीतिरखतीथीयदिमैंरमनाकरनेकेकार

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्र
९४
69

णपरस्परभेटनकरसकेओरसन्मुखनहोनेथेपरंतुहृदयमेंएकदूसरेपरमोहितरहतेयहां।
तककिमेरेपुत्रनेउसकोअपनीओरपायहरूहमुझसेछिपासबरसआकासेवनपायाकिस।
मयउसकेसमनरइसगृहमेंरहेनिदानजबमेंआखेटकोगयातवशाहजादेनेउसकोकिसीप्र
कारराजभवनसेनिकालइसगृहमेंलायाओरआपभी उसकेसाथरहइसमहलकोबंदर।
क्वाओरपहिलेसेउसनेनानाप्रकारकेखानेपीने आदिकीवस्तुयहांलायरक्खीथीएक
अवधितकउसकेसाथआनंदपूर्वकयहांरहा परंतुपरमेश्वरनेशीघ्रहीउनदोनोंकोऐसेबड़े
णपकादंडदियाजबबादशाहइसहत्तोंनकोकहचुकातववहांहाहाकरबजनवायाओरमैंभी
उसकेसाथरोयाफिरउसनेरोरोकरमेरीओरमुझेहृदयसेलगायाकहाकिपरमेश्वरकीइ
च्छायोंहीथीजोउहमरगयातोकुछपरवाहनहीपरमेश्वरतुझेजीतारक्खे अवतूहीउ
सकेबदलेमेरापुत्रओरयुवराजहैफिरउसकेपश्चात्मैंओरवहशाहजादाओरउसको।
वहिनकेवास्तेबहुतरोयेओरवहांउसीसीढ़ीसेऊपरकोचढआये ओरवहकिवाड़बंद
करऊपरउसकेमट्टीआदिडालछिपादियाफिरहमदोनोंवहांसेराजमहलकोओरचा।
लेवहांकेपहुंचनेकेपहिलेपुरुषकेढोलआदिसनाईदियेओरभरआकाशकीओरचढ़ी
ऊईदेखोकिवहीमंत्रीजिसनेमेरेपिताकाराज्यछीनसिंहासनपरवैठाथाअवमेरेचचा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

के राज्य के लेने के हेत बड़ी सेना को साथ ले आया है मेरा चचा कि थोड़ी दोनार खता था उस
का सामना न कर सका निदान उसने शहर को ले लिया और रनेना उसकी सुरंग मार्ग से राज
भवन पर चलो आई मेरे चचा ने कुछ देर तक उनका सामना किया फिर अपने बैरी के हाथ से
मारा गया उसके पश्चात् एक दो घड़ी मैंने भी उनका सामना किया और बैरी सलउनतार रहा
जब चारों और से घिर गया और बाला लेने की सामर्थ्य न पाकर वहां से भागा तब उस मंत्री
के एक सरदार ने मुझ पर दया करके उस नगर से जीता जागता निकाल दिया मैं अपने प्राण के
रक्षा के हेत कि मुझे कोई न पहिचाने भौं डाढ़ी मूंछ मुंडवा योगियों के स्वरूप बन गया और
बड़ी कठिनता से अगम मार्गों से हो कर अपने चचा के देश से निकला और बहुत से नगरों में भ
टकता आ फिरा अब अति प्रतापवान धीमान अति दयालु कृपालु दीनपोषक खलीफा
हारूं रशीद के राज्य में पहुंच बगदाद में पहुंचा और इच्छा की कि उसी उदार बादशाह के
चरण शरण में पडूं वह मेरी आपत्ति को सुन अवश्य कृपा करेगा सो कई मास के पश्चात्
इस नगर के पश्चात् इस दरवाजे पर पहुंचा था कि सन्ध्य अस्त होगये चाहा कि किसी स्था
न पर जाय रात्रि व्यतीत करूं कि जिसमें कुछ सावधानता प्राप्त हो यह इच्छा कर थोड़ी दूर
चला या कि इतने में हम सरा भोगी जो मेरे निकट बैठा है आया और मुझे प्रणाम किया मैं ने

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त ८.

70

उसे प्रणाम करके उत्तर दे कहा तुम भी मेरे समान अन्य देश के वासी जान पड़ते हो उसने उत्तर दि
या कि तुम सत्य कहते हो मैं इस नगर में अभी पहुंचा हूं यह वार्ता पूर्ण न हो चुकी थी कि इतने
में तीसरा योगी आय पहुंचा और प्रणाम करके कहा मैं भी अन्य देश का वासी हूं फिर हम ती।
नों एकत्र हुए और इस प्रकार के कारण भाइयों के समान परस्पर मिल अगल होने की इच्छा।
न को हम सब इसी बिचार में थे कि रात न को कहां रहेंगे क्योंकि पहिले कभी इस नगर में न आ
ये थे और न किसी स्थान और न नगर के वासी को जानते थे कि जहां जाय रात्रि व्यतीत करें
निदान अपने अच्छे भाग्य से हम तुम्हारे दरवाजे पर आये तुमने आतिथ्य के भांति पालन क
र हमको अपने स्थान पर रख अति आनंद दिया कि हम उसका धन्यवाद मंही कर सके।
हे सुंदरी यह मेरा अहोभाग्य है जो मैं आपकी आज्ञानुसार वर्णन कर चुका जेवदा ने कहा ते
रा अपराध क्षमा किया यह सुन उस योगी ने विनती की कि यदि मुझे आज्ञा हो तो यहां ठ।
हर दोनों अपने साथियों और तीन उन मनुष्यों का वृत्तांत जो वर्तमान है सुनूं फिर मैं चला
जाऊंगा जेवदा ने उसको आज्ञा दी वह एक ओर जा बैठा यह पहिले योगी की कथा सब
की अद्भुत अपूर्व जान पड़ी फिर दूसरे योगी ने जेवदा से अपने वृत्तांत को इस प्रकार कहना।
आरंभा किया मुझे वकी नियत किया घर है दोष मेरे वास्ते अमन न नित्य है मैं ने तान भाइयों

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दूसरेयोगीकीकथा । दूसरेयोगीनेपहिलेयोगीकेसमानजेवदाकेसन्मुख अपनेवृत्तांतको
इसप्रकारपरकहना आरंभकियाकिहेसुंदरीआपकीआज्ञानुसारअपनी आंखकाफूटा
नाऔरउसकथामेंअपनासंपूर्णवृत्तांतआपकेसन्मुखवर्णनकरताहूंसुनियेबाल्यावस्थासे
मेरेपितानेमुझकोविद्यामेंआरूढपायबहुतहर २ केदेशोंसेविद्यावानऔरसिलकर्मके
जाननेवालेमेरेपढानेकेवास्तेइकट्ठाकियेऔरथोडेसमयमेंमैंनेलिखनापढनासीखकलाअलाया
दकरलियाऔरविशेषउसकेस्मृतिशास्त्रादिक अपनेगुरुओंसेपढलियेऔरइसमेंकाशि
ल्पविद्याऔरइतिहासपहेली औरकाव्यऔरसरसवारनिका अच्छेप्रकारसीखलियाऔररा
काव्यादिकविद्या औरगणितविद्याआदिपरअद्वितीयहोगयाऔरसिपाहगरीकिजोशा
हजादेकोअवश्यचाहियेप्राप्तकिये औरसातप्रकारकालिखनासीखाकिमेरेसमानउस
समयमेंदूसराकोईनलिखताथाइसविद्या औरगुणकेहोनेपरभी अल्लानेमेरेआरम्भको
चित्तोपसीधुरोलिखीकिमेरीविद्याऊबकामनआईऔरइसदशाकोपहुंचायाकिजोवर्त
मानहैहेसुंदरीमेंअपनेपिताकेसंपूर्णराज्यमेंबहुतविद्याहोनेकेकारणविख्याततथा इ
समेंहिंदुस्तानकाबादशाहनेरेदेखनेकापेच्छुकहुआऔरएकहनकोबहुमोल्यउत्तमउ
त्तमवस्त्रसहितमेजमुझकोबुलगयामेरेपिताइसबातसेअत्यंतप्रसन्नहुये औरसमझेकिशा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स ४ ७१ 71 शाहजादे को देशों की सैर करना और देखना और बड़े बड़े बादशाहों की सभा में जाना भी अव
श्य है और इसका जाना हिंदुस्तान और हमारे में अधिक प्रीति और मित्रता का कारण होगा।
सो मैं अपने पिता की आज्ञानुसार कुछ सेवक और वस्तु साथ ले इनके साथ चला क्योंकि इ
तने दूर सफर में अधिक वस्तु और आदमियों का ले जाना कठिनता का कारण था चलते २ ५॰
सवार शस्त्र सहित राह लूटने वाले दिखलाई दिये और हम सब को घेर लिया मेरे साथ दस
घोड़े कि जिन पर उत्तम उत्तम वस्तु और सामग्री लदी थी जो अपने पिता के नाम से हिंदुस्तान
के बादशाह के निमित्त लिये जाता था यद्यपि मेरे सेवकों ने प्रथम उनका सामना किया परंतु प
राजित हुये तब हमने उन ठगों से कहा कि हम बादशाह हिंद के हूतने हैं हमें विश्वास था कि
ऐसे बड़े भारी बादशाह का नाम सुन तुम हम से कुछ छेड़ न करोगे और इसी कारण से हमारे प्रा
ण और धन की हानि न होगी यह सुन मार्ग लूटने वालों ने बड़ी ढिठाई से उत्तर दिया कि
हम हिंद के बादशाह को क्या समझते हैं न तो हम उसके नौकर और न उसके देश में रहने
हैं इतना कह उन्होंने हमको चारों ओर से घेर लिया यद्यपि मैंने अपनी सामर्थ्य भर अपनी रक्षा
की निदान घायल हुआ और देखा कि यह हत और सब मेरे संगी मारे गये तब मैं अपने घोड़े
समेत कि वह भी घायल हो चुका था वहां से अपने प्राण की रक्षा के हेतु भागा और घोड़ा दौ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ड़ाकर लुटेरों से ब्राह्मन बाहर निकल गया चोर जो कि वह भी घायल था और दौड़ने के कारण थक
गया था गिर कर मर गया उस समय मैंने ब्राह्मन को ढारस किया और समझा कि ठगों ने इसका द्र
व्य लूट करणया है उसको छोड़ मेरा पीछा न करेंगे है सुंदरी उस समय मेरे रास्ते के लेपन औ
र दो न ताप न पर ध्यान की जिये कि एक नौ में कई दिनों का थका था इससे ढाय लगी सो रस्ते के।
ला और उस ग्राम में सुने को ई नहीं जानता था कि मेरी सहायता करे इसके विशेष यह भय
था कि फिर मुझे ठग देख पड़े वा न न लें और मार डालें सो मैं आपना था व वाय एक ओर को च
ला शायंकाल को एक पहाड़ के नीचे पहुंची और उस की कंदरा में घोर ह्वा भी र को उस गढ़े
से बाहर निकला और रस्ते या से डावन हो यवन के फल जो टूटे पड़े तो ढूकर खाये जब मेरे
शरीर में सामर्थ्य आई न बच हो से आगे चला इसी प्रकार भटकने २ कई मंजिलें इस आशा पर
मेरी की कि कहीं कस्ती देख पाई दे कि वहां जा श्रम हर कहूं निदान कई एक मास के पश्चात्
एक बहुत बड़े नगर में पहुंचा कि ब्राह्मन बसाऊ आया था और उस का जल और वायु अति उत्त
म था और रवि नौ बाड़ी भी अच्छी थी और उस के चारों ओर ब्राह्मन सी नदी थी इस कारण वह स
देव हरा और उत्तम रहता था उस का उत्तम वायु और जल देख मैं अत्यंत प्रसन्न हुवा और रसं
मरीणःख और स्थे पा कि मुझ पर पड़े थे भूल गया न वहे सुंदरी उस समय घर में रोष हद शा थी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्र ७२

72

किवस्त्रफटेनंगेपांवऔरधूपसेजलकरकालाहोगयाथाइसीदशामेंमैंउसनगरकेवीचमेंगया
किमालूमकरूंउसनगरमेंकौनसीभाषाहै औरमेरादेशइसस्थानसेकितनीदूरहैयहवि।
चारएकस्तवीकारकेनिकटगया उसनेमुझेदेखअपनेसमीपवैठायाऔरपूछाकितुम।
कौनहो औरकहांसेआयेमैनेउससेअपनासंपूर्णहृत्तान्तनवतायास्तवीकारने मेरेहृत्तान्त
कोचितदेसुना औरजवमैंसवअपनाहृत्तान्तकहचुकातवउसनेधीरजदेनेकेविपरीत
औरमुझे अधिकडराकरकहाकियहअपनीकथायहांकेकिसीवासीसेनकहना और
उसपरभलाईकाविश्वासनरखनाक्योंकियहांकाबादशाह तेरेपिताकावैरीहैजोवहतेरे
आनेकाहृत्तान्तसुनेगातोतेरेसाथअवश्यअनुचितकरेगास्तवीकारसेमैनेयहहृत्तान्त सुन
जानाकिइसनेमेरेसाथबड़ाउपकारकियाहै धन्यवादकिया औरकहाकितुमनेमुझको
इसवातसेचैतन्यकियामैंकिसीसे अपनाहृत्तान्त वर्णननकरूंगाहेसुंदरीकिमैनेवहां
केवासियोंसे अपनाहृत्तान्त औरअपनाऔरअपनेपिताकानामनकहाफिरवहस्तवी।
कारमुझेअपरवाजानमेरेहेतखोनेकोलाया औरअपनेघरमेंलेजायरहनेकेवास्तेस्थान।
दियामैंउसमेंरहनेलगाजवस्तवीकारनेदेखाकिइसको थकावटदूरहोगईपूछाकि तु
म्हें कोईविद्याऐसीआतीहैकिजिससेतुम अपनीजीविकाप्राप्तकरोमैंनेकहामें अप

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नेविद्याऔरव्याकर्ण औरलेखकीऔरकाव्यआदिमेंअद्वितीयहूं इसचीकारनेकहाइनस
वसेकिजिनकातुमनेनामलिया इसनगरमेंएककथासभीनआमकरसकोगेइसनगरमें
विद्याकीकुछकदरनहींजोमेराकहनामानोतोतुमबलवानऔरसामर्थ्यवानविदितहो
तेहोएकजांघियाबनवाकरपहिनलोऔरवनसेजलानेकेवालेकाइलाकेइसशहरके
बाजारमेंबेचाकरोतुम्हें इतनाहोगाकिदूसरेमनुष्यकीसहायताविनाअपनीजीविकाश्रा
मकरोगेथोड़ेदिनइसीश्रमसेअपनाकालक्षेपकरो परमेश्वरतुमपरदयाकरेगा और
येडरखोजोतुमपरछायारहाहैनिहतहोगातुमकोमैंएककुल्हाड़ी औरएकरस्सीमंगा
वादूंगाइसदरिद्रीमनेजीविकाकेहेतुइसनीचकर्मकोअंगीकारकियाइसचीकारनेदू
सरेदिनमेरेवास्तेकुल्हाड़ी औररस्सीऔरचूटन्नामोललेदियाऔरमुझेउनमनुष्योंको
सौंपाजिनकीजीविकालकड़ीबेचनेपरथी औरउनसेकहाकिइसमनुष्यकोअपनेसा
थलकड़ीकाटनेकोवनमेंले जायाकरोमैंउनलकड़हारोंकेसाथबनमेंजाताऔरबा
ड़ागट्ठाकाष्ठकाकाटलाताऔरउसे बाजारमेंलेजाकरएकसोनेकेटुकड़ेकोकिचलना
उसशहरकायहीथावेचताथादिकाएककावनउसनगरमेंबहुतहूतनथा परंतुलकड़ी
वहांबहुतमहंगीबिकतीथीक्योंकिवहांकेवासी आलस्यसेइसकार्यकोनकरतेथे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

७४ ७३ 73

किजंगलमेंजावें औरलकड़ियोंकोकाटेंऔरअपनेशिरपरलावेंथोड़ेदिनोंमेंमैंनेबहुतसासं
ग्रहकरलियाऔरउसमेंसेथोड़ासाउसस्त्रीकोउसकेउपकारकेबदलेमेंजोमेरेसाथकि
याथाउसकोदियाइसीप्रकारमुझेएकवर्षव्यतीतहुआएकदिनउसबनसेमैंऔरआ
गेबढ़गयाऔरवहस्थानमुझेबहुतअच्छामालूमहुआमैंकाष्ठकाटनेमेंलगाजबएकवृ
क्षऊपरसेकाटचुकाऔरजड़उसकीकाटनेलगातोदैवयोगसेउसजड़केनीचेमुझेएक
कड़ाजोलोहेकेदरवाजेमेंलगाथादृष्टिपड़ामैंनेतुरंतवहांकीमिट्टीहटाकुल्हाड़ीऔर
रस्सीसहितनीचेउतरगयातोअपनेकोएकबड़ेभारीगृहमेंपाया औरउसमेंपृथ्वीकेसदृ
शप्रकाशथाफिरमैं आगेगया वहांएकबड़ालंबादालानपाया जिसकेपायेसफेदपत्
थरकेऔरखंभेऊपरसेनीचेतकसुवर्णकेबनेहुएथेउसमेंएकसुंदरीपरमरूपवती मे
रीदृष्टिपड़ीकिजिसकेदेखनेहीमैंनेहर्षकिया औरउनदोनोंमेंउसकेसन्मुखगयाऔरप्रणा
मकियाउससुंदरीनेमुझसेपूछाकितूकौनहैमनुष्यहैवापिशाचहै मैंनेअपनाशिरउ
ठाकेकहाहेसुंदरीमैंमनुष्यहूंपिशाचनहींउसस्त्रीनेठंडीस्वासलेकरकहातूयहांक्योंक
रआयामुझेपचीसवर्षसे अधिकव्यतीतहुएकियहांरहतीहूंपरंतुसिवायतेरेअन्यमनु
ष्यकोनहींदेखाउसस्त्रीकेतपश्चर्यऔरनम्रताऔरउसकीकृतिऔरकोमलवचनपर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मैंऐसामोहितहुआकिमुझकेबोलनेकीसामर्थ्यनरही निदानउसकीप्रियवानीसेथोड़ी दे
रकेपश्चात्मुझकेवातकहनेकीसामर्थ्यहुईतबमैंनेविनतीकीकिहत्तांतमालूमहोजाने
केपहिलेकेवलतुम्हारेदेखनेहीसेमैंप्रसन्नऔरहर्षयुक्तहुआऔरअपनेसबदुःखव
औरक्लेशाकोभूलगया औरचाहताहूंकितुम्हें इसतुरीदशासेछुड़ाऊंफिरमैंनेअपना
सम्पूर्णहत्तांतवर्णनकियाऔरकहामैंतुमकोइसदशामेंदेखनेहीसेसमझाउसस्त्रीनेसुना।
सभरकहाहेशाहजादेतूसत्यकहताहैइसयतनऔरवस्त्रकेहोनेपरभीमुझकेइसजाहू।
केस्थानमेंभीरहनाअच्छानहींलगतातुमनेसुनाहोगाकिअहूतेमरसनामबड़ा बाद
शाहआवोनीहोयोंकाहैजहांआवनूसकीलकड़ीपैदाहोतीहैमैंउसीवादशाहकी
पुत्रीहूंमेरेपितानेमुझकोअपनेभतीजेके साथकिवहभीशाहजादाथाविवाहकर।
दियाजबकिअपनेपतिकेघरजानेलगीतबयहपिशाचमुझकोलेकरवहांसेउ
ड़ामैंउसीसमयमेंवेसुधहोगई तीनपहरकेपहरकेपश्चात् जबमैंनेसुधिसंभालीतो
अपनेको इसगृहमेंपायातभीसेमैंइसगृहमेंरहतीहूंऔरइसपिशाचकेनिकटमेंवाउठ
नांवटनाहैइसयतनऔरवस्त्रसेजोयहांवर्तमानहै मुझकेकुछहर्षनहींकेवलसामग्री
औरसजधजसेधीर्यनहीहोतादसवेंदिनवह पिशाचयहांआताऔरकेवलपकरातमे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
७४
74

मेरे पास रहता है उसका बिवाह किसी और स्त्री के साथ ज़वा है इसलिये अपनी स्त्री के भय
से सदैव नहीं रह सकता और यदि दस दिन के मध्य में कभी मुझे उस पिशाच का बुलाना स्वीका
र हो तो केवल जादू की वस्तु के छूने से कि वह मेरे सेन स्थान के समीप वना ज़वा है उसके स्पर्श
से वह आजाता है उसको यहां से गये चार दिन व्यतीत ज़ये हैं छ: दिन के पश्चात् वह फिर य
हां आवेगा जो तुम्हें मेरा संग और यहां का रहना अंगीकार हो तो पांच दिवस तक यहां रहो।
मैं तुम्हारी भली भांति प्रतिष्ठा करूंगी यह वचन सुनने मैं अत्यन्त प्रसन्न ज़वा और इच्छा रखता
था किसी को प्रेर उस शहर में ऐसी रूपवान स्त्री के निकट रहूं मुझे अंगीकार करने ही वह
मुझे एक सहेली स्नानागार में ले गई जब मैं स्नान कर बाहर आया तो उत्तम उत्तम सोनह
रीयां हरने के वस्त्र दिये उसको मैंने पहिना कि जिनके पहिनने से और भी उसको हमें अ
च्छा विदित होने लगा तदनन्तर हम दोनों एक बड़े सुन्दर दालान में मसनद पर जो कि सुन
हली कमखाब से सजा ज़आ था बैठे उसने मेरे आगे नाना प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन लायथ
दे और मेरे साथ बैठ भोजन किया जब रात्रि ज़ई मुझे अपने शयनस्थान पर ले जाय सुलाया
दूसरे दिन भोर को उत्तम उत्तम पाक बनाये और भोजन के विशेष मेरी प्रसन्नता के अर्थ।
उसने मदिरा की बोतल लाई और कई गिलास मुझ को पिलाये जिसके पीने ही में मस्त ज़

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वा उसी दशा में मैंने उससे कहा है प्यारी तुम बहुत नव वर्षों से इस पृथ्वी में बंद हो मानों जीते ही
कबर में हो अब तुम मेरे साथ चलो और संसार की हवा खाओ कि जिससे तुम को प्रसन्नता
हो और इस थोड़े उजियाले को जो केवल जादू से ही है परित्याग करो यह सुन उस स्त्री ने
कहा ऐसी अनुचित बातें मत करो मुझे इस थंभ का उखाड़ना जो तुम कहते हो न चाहिये
मुझ को यहीं रहने दो नौ दिन तुम यहां रहा करो दसवें दिन उस पिशाच को छोड़ दो मैं ने
कहा तुम पिशाच से बहुत डरती हो मैं अपने प्राण के वास्ते कुछ भी नहीं डरता उसकी
जादू की वस्तु को तोड़ और जादू जो कि उस पर ऊपर लिखी है बिनाश करूंगा उसको
आने दो देखूं वह कैसा बलवान और विकराल स्वरूप है उसके लिये पकड़ा थ मे राव
ऊन है मैंने प्रण किया है कि सब पिशाचों को संसार से नष्ट करूं और सब के प्रथम
इस पिशाच को वह स्त्री इस अनुचित कर्म के फल को अच्छी तरह जानती थी मुझ
को सौगंध देकर कहने लगी कि चेत करो इसको हाथ न लगाना नहीं तो हम तुम दो
नों मारे जांयगे मैं पिशाचों के हाल और उस मर्म को अच्छी तरह जानती हूं मैं ने मदि
रा के नशे में उसका उपदेश कुछ न सुना और उस जादू की वस्तु को तोड़ डाला इतने
में बड़े जोर से वह महल हिलने लगा और उसके साथ एक भयानक शब्द बादल के ग

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
७५

75

जैनेके समान हुवा ओर चारों ओर अंधेरा होगया विजलीके समान प्रकाश होने लगा इसप्र
हुन ओर भयानक दशा को देखन शा मेरा जाना रहा ओर हृदय संभाल शोचा तूने वड़ा अन
र्थ किया फिर मैंने उस स्त्री से पूछा अब का किया चाहिये उसने अपने प्राण का डर न कर
मेरा वास्ते बहुत ऊ ही ओर पश्चात्ताप करके उत्तर दिया कि तुम इस आफत को आपही अपने
शिर पर लाये अब यहां से भागो ओर अपने को बचाओ यह सुनने मैं वहां से ऐसा घबड़ा कर
भागा कि अपनी ऊल्ला रड़ी ओर उस स्त्री को वहीं छोड़ दिया ओर पीछे ही उठने बैठने उसी
सोटी न कहि जिससे उस मकान में उनराथा पहुंचा इतने में वह भी कोपित हो वहां आ
न पहुंचा ओर उस सुंदरी को अति क्रोधित हो पूछा तूने मुझको कों बुलाया उसने भय
मुक ओर कम्पायमान होकर कहा मैंने इस बात से थोड़ी सी मदिरा पी थी जिसको
न देखना है सो नशे में मेरा भाव इस पर ध्यन जाने से लगा सो यह टूट गया इसमें तुमको
खबर हुई मैंने तुमको नहीं बुलाया यह सुनने ही पिशाचने ओग बहूला हो उस सुंद
रीसे कहा तू कुकर्मिणी ओर उह है इस ऊल्हाउ ओर उस स्त्री को यहां को न लाया स्त्री
ने कहा मैंने अब तक इसे नहीं नहीं देखा जल्दी से तुम आप हो तुम्हारे हाथ से लगी ऊ
ईन नहीं आई होगी तुमने मार्ग में इसे न देखा होगा पिशाचने उस स्त्री को उठा लाकर ब

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हुतमारानिस्सेवहनहुइपनेऔररोनेलगीवहउसके रोनेकेशब्दनसुनेजातेथे औरवहऋमा
इथाइकिजोउसपरपड़तीथी औरचिल्लानाउसकासुनकरवहमेरीदशाऐसीहुईकिजिसका
वर्णननहींहोसक्तानिदानमैंनेवहवस्त्रजोकलकेदिनस्नानकरपहिनेथेउतारे और
निजवस्त्रपहिनउसमीठीसेजपरवहआयाऔरअपनेकोबराभलाकहिनेलगाबड़ा प
श्चातापहैकिमेरेअज्ञानतापनऔरनिर्बुद्धितासे यहदुखउसस्त्रीपरहोरहाहैयदिवो २५
वर्षसेउसगृहमेंबंदहै परंतुकभीऐसादुखइसपिशाचकेहाथसेनहुआहोगाफिरमै
नेउसलोहेकेकिवाड़कोमिट्टीसेबंदकरछिपादियाऔरवोफालकड़ियोंकाकिआ
गेसेएककहाकरएकवायाथापिरपररावेउसनगरमेंआया औरयहविचारनायाकिदेखि
ये इसकर्मसेमुझेकाडुखपहुंचताहै अमंगलकेशिनथाजबमैं अपनेस्थानपरआयाव
हस्त्रीकारमुझेफेदेखि अनंतप्रसन्नहुआ औरकहनेलगाकितुम्हारेकलकेनआनेसे
मुझेअनंतचिंताथीकिऐसानहोतुम्हारापुरानाहमनौतसुनयहांकेअधिपतिनेकेदन
कियाहोपरमेस्वरकाधन्यवादहैकितुमजीने जागतेफिरआधेमैंनेउसकीप्रीतिपरध
न्यवादकियापरंतुकहकमकिजोमुझसेहुआथाउसेनकहाऔरअपनेमकानमेंजा
करअपनीअज्ञानतापरधिक्कारदेतारहाकिजोमैंउसजगहकीवस्तुकोनतोड़तानोवह

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सश्र
७९
76

राजपुत्रीइसढबमेंनपढ़नीऔरमैंनौदिनतकअच्छेप्रकाररहनाइससोचिंतामेंथाकिइसस्त्रीके
कारनेमेरेनिकटआयकहाकिएकहैजिसेमैंनहींजानतातुम्हारीकुल्हाड़ी औररस्सी
हाथमेंलेकरआयाहैऔरकहताहैकिमैंनेइनदोनोंवस्तुओंकोमार्गमेंपायाहैकोईतुम्ह
रेसाथियोंसेकिजिनकेसाथतुमलकड़ीकाटनेजायाकरतेहोउनकीजानपड़तीहै ब
लकेअपनीवस्तुकोपहिचानकरलेआओवहबिनातुम्हारेनदेगाइसबातकेसुननेसेही।
मेरामुखबदलगयाऔरसिरसेपैरतककांपनेलगाहवोकारमुझसेभयकाकारणएक
नेलगाअभीमैंनेउसेउत्तरनदियाथाकिएकहीबेरमेरेकोटकीधरतीफटगईऔरवहपि।
शाचमेरेआगेनतककोराहनदेखकरकुल्हाड़ी औररस्सीलियेऊपरप्रकटहुआऔरसन्
मुखवहहैपिशाचथाफिरउसनेकहामैंपिशाचहूंनवासाइबलीसकाजोपिशाचोंके
बादशाहहै औरउसकुल्हाड़ीऔररस्सीकोदिखलाकरकहायहतेरीहैयानहीं उ
सनेमुझेउत्तरदेनेकाअवकाशनदियायदिमुझमेंउसविकरालरूपदेखनेसेउतर
देनेकीसामर्थ्यनहींथी औरबेसुधहोगयाथाकमरसेमुझेपकड़बाहरखींचलाया
औरएकहीबेरआकाशकीओरएकपलमेंइतनेऊंचेलेउड़ाकिजिसकेचलनेमेंकईमा
सवमांतोनहोनेफिरउसनेधरतीपरउतरएकठोकरमारीजिसमेंवहधरतीफटगईयहमुझ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कोलियेसमागयाएकचड़ीकेपीछेमैंनेअपनेकोउसजाइकेशहमेंउसी राजपुत्रीकेसन्मु
खपायापरंतुवहउपस्थानापड़ाहैकिउसकोनअलोकान्तहानअथमरीतड़पतीजईएकछोपस्लोट
तीदेखाफिरउसपिशाचनेमुझकोउसराजपुत्रीकाहालदिखलाकरकहाकिनिर्लज्ज य
होतुझपरमोहितहैउसनेठीलीहटिदिखकहामैं इसकोनहींजानतीइससमयकेसिवाय
औरकभीमैंनेइसकोनहींदेखापिशाचनेकहाक्यातूसमझतीहैकिइसकोकभीनहींदेखा
यहीमनुष्यतेरेबंधनकरनेकाकारणहुआराजपुत्रीनेकहातूचाहताहैकिमैंअसत्यकहूंके
मैंनेदेखाहैकितुउसेमारडालेफिरपिशाचनेवज्रराजपुत्रीकोदेकहाजोतूनेइसकोआगे
नहींदेखाहैतोइसवज्रसेइसकाशिरकाटराजपुत्रीनेकहामुझमेंइतनीसामर्थ्यकहांहै
किवज्रकोउठासकूंऔरइसकेसिवायमैंएकनिर्दोषिमनुष्यकोक्योंमारूंपिशाचनेकहा
तेरेइन्कारसेपापसहितजानपड़ताहैफिरपिशाचनेमुझसेकहातूइसकोजानताहैऔरइस
कोआगेदेखाहैमैंनेविचाराजबइसराजपुत्रीनेकिवहस्त्रीहोकरइतनाओरपापसमेराकि
यायदिमैंउसबातकोप्रगटकरूंतोअनंतअधीलताहैमैंनेभीइन्कारकियाकिकेवल मै
नेइसीसमयदेखाहैउसनेकहाजोतूसत्यकहताहैतोवज्रसेइसकाशिरकाटडालमैंनेतु
झकोछोड़दूंगाऔरजानेदूंगातूसच्चाहैमैंनेवज्रकोपिशाचकेहाथसेलेकरअपनेमनमें

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

८३

विचाराकिबड़ाशोचहैकिइसनिर्दोषसुंदरीकोजोमेरेही अपराधसेअपराधीहुईऔरइस
दुखमेंपड़ीहैउससेमैंमारूंऔरअपनेप्राणबचाऊं यहमुझसेकभीनहोगाऔरइसस्त्रीनेमेरी
ओरदेखऔरमेरीचेष्टासेमेरेमनकीबातमालूमकरकेसनेसेकहाकिमैंतोमरनेकेनिकटहूं
अपनेप्राणबचानेवालेमुझकोमारडालमैंइसमेंप्रसन्नहूंतदनंतरमैंपीछेकोहटऔर
खड्गकोहाथसेफेंकेपिशाचसेकहामैंनपुंसकनहींकिउसकोजिसनेनहींजानतामारेहै
इसकेसिवायऐसीसुंदरीकिचढ़तीफलकीहारहीहै अबजोतेरामनचाहेवहकरमैंनेतेरेआ
धीनहूंपरंतुयहकाममुझसेकदाचितनहोगापिशाचनेकहातुमदोनोंनेमेरेक्रोधकोब
ढ़ायाऔरतूजानताहैकिमुझमेंकितनीसामर्थ्यहैइतनाकहउसदुष्टनेदोनोंहाथउस
स्त्रीकेकाटडालेसोउसनेउसीसमयदेहत्यागदीक्योंकिपहिलेचोवोंससप्राणसीपरउस
केशरीरसेनिकलगयाथाइसदशाकोदेखमुझेमूर्छा आगईजबचेतनमुझआतोमहा
व्याकुलहुआऔरपिशाचसेकहाअबतूरंतमुझेभीबधकरयहसुनउसनेकहाहमारी
यहरीतहैकिजबकिसीस्त्रीपरव्यभिचारकासंदेहहोताहैतोउसेप्राणसेमारडालतेहैं
तुझकोकिकेवलसंदेहहै औरतूपरदेशीहैइसलियेमारनहींसकतातुकेयहीदंडहै
किऊंटवागधावाखच्चरअथवाकोईपशुपक्षीबनाकरछोड़तेहैंअबजिसकीयोनिचा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हैउसीशरीरमेंतुफेवनाहै मैंनेइनबातोंसेननकउसकोंठापाकरकहाहैवलवान् पि
शाचजैसेतूनेमुफेप्राणदाननदियेहैं आशावानहूंकितुफकोइसीयोनिमेंरहनेदेयादित
मेराअपराधक्षमाकरेगातोमैंतेराकृतज्ञहूंगाजैसाकिएकसत्पुरुषने अपनेपडेसोका।
किउसनेउसकेसाथबुराईकीथीअपराधक्षमाकरकेउसकेसाथबड़ाउपकारकियाथा
पिशाचनेपूछाउनदोनोंपडेसियोंकीथी औरसत्पुरुषकीकथा ॥ एकबडेनगरमेंदोमनु
ष्यरहतेथे औरदरवाजाएककेघरसेदूसरेसेदरवाजासमीपथा उनमेंसेएकमनुष्यअप
नेपडेसीसेइर्षारखताथादूसरेसत्पुरुषकोउसकेवैरकरनेसेइच्छाहुईकिइसघरको
छोड़ अनंतजायरहेंकिवहवैरनिकटरहनेकेकारणरखताहै इससेदूसरेहोजावें य
दियहइर्षीकेसाथसदैवउपकारकरतापरंतुवहअपनेवैरकोनछोड़तायहांतककि
उससत्पुरुषनेसंपूर्णनिजवस्तुऔरघरबेचदूसरेनगरमेंजोवहांसेदेढकोसदूरथाए।
कउत्तमगृहजिसमेंएकउत्तमबागऔरएककुआंबाथामोललियाऔररहनेलगाफि
रवहसंयोगोपांगयोगियोंकेवस्त्रपहिनसंतबनगयाकिअवस्थाहरिभजनसे आनंदमें
व्यतीतहो औरकईमकानअपनेगृहमेंबनवायेजिनमेंसंतोंकोरखसदैवभोजनकिया
करतायहसमाचारनगरमेंख्यातहोगयाऔरबहुधामनुष्यउसकीभेटकोआनेऔरउस

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
७८
78

रमहैस समय अपने अभिप्रायको कहना और उससे वरको आपणा रखनी आरंभकी यहां।
नकाकि उसको बड़ाई और सिद्धनाका समाचार उसनगरमें जिसे छोड़कर यहां आयाथा
पहुंचा इससे उसके ध्यानका समाचार सुन ईश्वरीको बड़ी दाह उत्पन्न हुई और उसके बधक
रनेको सर्ण निजकाम छोड़ वहां गया और मंदिरमें जाय उससे मिला तो वह सत्पुरुष
अपने प्रथमके पड़ोसीको पहिचान प्रतिहासपूर्वक मिला ईश्वरीने मकर और थोड़ासा अप।
ने चितमें बिचार उससे कहा तुम्हें एक कठिन कार्य आय पहुंचा है जिसकारण इसनग
रमें आया हूं जो तुम कहो तो उसको तुमसे एकांत स्थलमें प्रगट करूं कि और कोई उसे
न सुने और उस समय अपने संतोंसे कहदेना कि कोई अपने शहरसे बाहर न निकले उस।
सिद्धने उसके अभिप्रायके अनुसार किया जब उस ईश्वरीने उस उत्तम मनुष्यको एकांत
में पायाथा तो अपने अनेक कारण भूठ मूठ चिन्हसे बनाय उससे कहना आरंभ किया औ
र वार्तामें लगाय वह ललनाऊ आश्चर्य जाय उसके ऊंघके समीप ले गया और वहां पहुंचते।
हो सिद्धको ऊंघमें पकड़के लदिया उस समय वहांको ईन ब्याकि इस समाचारको देखता
निदान ईश्वरी अपना कार्य कर और मंदिरका दरवाजा बंद कर स्वरूपके सभाग गया और इ
स कार्यके पूर्ण होनेसे अत्यंत प्रसन्न हुआ और कहाकि अब इस मनुष्यकी ओरसे जिस।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कोबहुतीऔरभलाईकोमैंनदेखसकाथामुझेधीर्यजवावहईर्षीइसविचारसेथोविमं
पड़ावहसिद्धतोभाग्यमानथापरियाजोउसकुयेमेंरहतीथीहाथोंहाथउसकोलिया
जिस्सेउसकोकिसीप्रकारकादुःखनपहुंचाऔरखुमेंकेअंदरबैठादियावहसिद्धईश्व
रकाधन्यबादकरताथाकिइसकुयेकेगिरनेमेंभीमेरवास्तेकुछभलाईहोगीफिरउसने
चारोंओरदृष्टिकीतोकोईवहांदिखाईनदियाथोड़ीदेरकेपश्चातउसनेएकशब्दसुनाकि।
कोईमनुष्यकहताहैकितुमइसकोजानतेहोकियेकौनहैदूसराशब्दसुनाईदियाकि
हमइसकोनहींजानतेफिरपहिलेकहनेवालेनेकहाकेंतुमकोइसकाहृतांतजनाता
हूंयेमनुष्यशांतिशीलवानऔरसिद्धहैअपनानगरछोड़ यहांरहनाअंगीकारकिया
किअपनेपड़ोसीकेबैरसेअलगरहोइसनगरमेंईश्वरनेउसकीसिद्धतावढ़ादीइसकारण
उसकोसबप्रतिष्ठाकरतेहैं ईर्षीनेयहसमाचारसुनअधिकबैरकियाऔरउसकेमार
डालनेकाबिचारकरइसनगरमेंआया औरयहांआयकेउसकोइसकुयेमेंडालदियाय
दिहमउसकोसहायतानकरतेतोमरजाताकलइसनगरकाबादशाहइसकेनिक
टआयअपनीपुत्रीकेअच्छेहोनेकेआशीर्वादकीचाहनाकरेगाहूसरेनेपूछाकिउसशा
हजादीकोकौनसारोगहैपहिलेशब्दकेकहनेवालेनेउत्तरदियाकिशहजादीपर।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्र
७५

79

मैंनेंपिशाचकाउच्चाटिमदिमसमोहितहुवाहै किजिससेवहसदैवरोगी श्रोरवेस्थरहाक
रतीहै श्रोरमुझेइसपिशाचकेहटानेकाउपायविदितहै वहअतिसुगमहै मैंउसेबता।
ताहूं इसयोगीकेशहरमेंएककालीविल्लीहै किजिसकेसन्मुखकेसिरपरश्वेतचिन्हहै उसी
श्वेतचिन्हकेस्थानसेयहसिद्धसातबालउखाड अपनेपासरक्खे श्रोरसमयपरउनवालों
को अग्निमेंजलाउसकीधूनीशाहजादीकोनाकमेंदे इससेनासिकामेंपहुंचतेहीवह
निरोगहोजायगी श्रोरवहपिशाचउसकेनिकटकभीनआवेगा सत्गुरुखनेयहसबवा
र्तीजोपरियों श्रोरजिन्नोंनेकहीथी अच्छेप्रकारस्मरणरक्खी जबभोरहुवा श्रोरउस ऊथमें
सूर्यकेप्रकाशसेदेखातोविदानेवृक्षसेउतरपायेउनमेंपांवरखताहुवा सुगमतासेउप
रआयासमर्णसेनजोकिवृठनेफिरनेथेसिद्धकोदावश्रमेंनप्रसन्नहुवे सम्मुखछनेसब
हालअपनेवलोंसेप्रगटकरअपनेशहरमेंगयाथोड़ीदेरनहुईथी किकालीविल्लीजिस
कापरियोंश्रोरजिन्नोंनेवर्णनकियाथा आईउससिद्धनेउसकोपकड़सातबालश्वेतउता
रे श्रोरअपनेपासरक्खेछोड़ेसूर्यउदयहुयेथे किइसनगरकाबादशाहउससिद्धके
शहरपरआया श्रोरमंदिरकेदरवाजेपरनिजसेनाछोड़कुछसरदारोंसहित अंदरगया
वहसिद्धउसकीअगवानीकरउसेअपनेशहरमेंलेगयाबादशाहनेउससेकहाकि हेअनयो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मी तफकोमेरेआगमनकाहालविदितहुआहोगायोगीनेकहाकितुमशाहजादीके
रोगयुक्तहोनेकेकारणआयेहोगेओरमुझसेयोग्यको अपनेचरणोंसेकृतार्थकिया।
बादशाहनेकहासत्यहै मैंइसीवास्ते आयाहूंजोतुम्हारे आशीर्वादसेमेरीबेटीअच्छी
होजायतोमेराजीवनसुफलहोइससिद्धने उत्तरदियाजोआपशाहजादीकोयहांपरबु
लगभेजे तोमैं परमेश्वरकेअनुग्रहओर अत्रकेपासेअच्छाकरदूंबादशाहयहसुनकरअ
ति प्रसन्नहुआओरअपनीबेटीकोतखतरवांलौंडियोंसहितबुलवायाबांदियोंनेउसकामु
खइसतरहछिपायाथाकिकिसीकीदृष्टिउसपरनपड़ेयोगीनेएकचादरसेशाहजादी
कोशिरइसतरहसेघेराकिजिससेधुआंबाहरनिकलसकेफिरबेगालतखतअग्निपररख
उसकोधूनी शाहजादीकोदीइसगाकरनेहीमेंमहापिशाचकापुत्रडिमडिमचिल्लायाओर
बड़ाशाहूकरउसनेशाहजादीकोछोड़दियाशाहजादीअच्छीहुईओरसुधिसंभालीओ
रसोचही अपनेहाथसेवस्त्रडालमुखअपनाछिपालियाओरपूछनेलगीकिमैंकहांओ
रमुझेइसस्थानपरकौनलायाबादशाहनेअत्यन्तहर्षयुक्तहो शाहजादीकोअपनेकंठ।
सेलगालियाओरनेत्रहूमेफिरयोगीकोहाथकोचूमेओरअपनेसरदारोंसेसलाहकिइस
योगीकेसाथकौनसाउपकारकरेंसरदारोंनेएकमतहोकहाहमारेविचारसेयहउचित

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
८०

80

है कि इस शाहजादी का विवाह इस योगी के साथ कर दो बादशाह ने कहा कि मेरा भी यही
विचार था फिर उसनि उसका विवाह उस योगी के साथ कर दिया थोड़े दिनों के पश्चात वहां
का वडा मन्त्री मर गया बादशाह ने उस योगी को बड़ा मन्त्री नियत किया फिर वह बादशा
ह भी मर गया और वह शाहजादी के सिवाय कोई युवराज न रखता था सो वह योगी से
ना और सरदारों के सम्मत से अपने ससुर के स्थान पर बादशाह हो गया एक दिवस वह अ
पने सरदारों सहित सवार होके जाता था संयोग बस उसने अपने वैरी को बहुत से मनुष्यों
के मध्य में देखा उस योगी ने कि अब बादशाह हुवा था अपने मन्त्री के कान में कहा कि उसम
नुष्यो अयोगी ने कि अब बादशाह हुवा था अपने मन्त्री के कान में कहा कि इस मनुष्य
को अति हास एवं क सखो छे जिसमें वह किसी प्रकार का भय न करें मेरे निकट ले आ मन्त्री
तत्काल उस मनुष्य को बादशाह के सन्मुख ले आया बादशाह ने उस अपने दुखी में कहा।
हे मित्र मैं तक को देख अति प्रसन्न हुवा फिर उसने एक हजार अशर्फी और बीस वाठरी
वस्त्र मगा के उस दुखी को दिये और एक पहरा सिपाहियों का उसके साथ किया कि वह उ
सकी रक्षा एवं क उसके चरण छू चादे है संदरीज बमें इस कथा को मराकर खु कातो अपने
छूटने के वास्ते पिशाच से कहा है पिशाच देख तो उस पोलवान बादशाह ने के सासत्ता।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

क अपनेवैरीकेसाथकियाथा ओरकितनाहीमैंनेउससे विनतीकीकिअपनीइच्छासेबटजा
वे ओरमुझेदेडनेदेपरंतुउसविकरालरूपपिशाचनेमुझपरध्यानकरकहाकितुझेप्रा
णसेनमारूंगा परंतुदंडदियेविनानछोडूंगा अबदेखजाहूमैंतेरेसाथक्याकरताहूंयह
कहउसनेमुझेपकडा ओरउसशहरसेजोपृथ्वीके अंदरउसके आनेसेखुलगयाथालेका
ऊपरकोइतने ऊंचेउडाकिजहांसेधरतीबादलकेटुकडेकेसमानदीखतीथीफिरउस
ऊंचेसेशीघ्रहीबिजलीकेसमानएकपहाडकीचोटीपरलेउतरा ओरवहांसेएकमुट्ठी
मट्टीकीलेकुछउसपरमंत्रपढेकिजिसका अर्थमैंनेकुछभीनसमझाफिर उसकोमेरे
ऊपरजलकहाकिमनुष्यकाचोलाछोडबंदरकास्वरूपबनजायहजाहमुझपरकरव
हपिशाचगुमहोगयाओरमैं अपनेचोलेकोबंदरकेचोलेमेंदेखअचंभमेंतडपन ओरवि
लापकरता ओरकुछनहींजानताकिमैंकिसजगहहूं ओरवहांसेमेरेपिताकादेशके
सओरओरकितनीदूरीपरहै ओरउसजगहसेअनजानहूंकहांजाऊं ओरक्याकरूंनिदा
नउसपहाडसेउतरएकदेशमेंकिजिसकीपृथ्वीधरातलथीबराबरएकमासतकउसमे
चलतारहानिदानएकसमुद्रकेतटपरकिजिसकाजलकुछभीनहिलताथागया ओर
उसकेकूलपरएकजहाजदेखाचाहाकिकिसीप्रकारवहांतकपहुंचेइसवास्तेएकहट्टसे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
८।

8/

टहनियां तोड़ उसकी टला हुवा समुद्र के तट पर ले गया और उसको समुद्र में डाल उस पर चढ़
बैठा और दोनों हाथों से दो टहनियां पकड़ के तैरने लगा और इसी प्रकार जहाज की ओर चला ज
ब उसके समीप पहुंचा तो जहाज के मनुष्य मुझको देख अति विस्मित हुए थे मैं जहाज की रस्से
कह न सका और आश्चर्य से सब की ओर देखता था और यह आपत्ति उस डाल से कि जिस
के फंदे में पड़ा था मैं न जानता था उसे जहाज के संपूर्ण ब्योपारी नाना प्रकार के विचार करते और
मेरा जहाज पर रहना कुलक्षण समझते इस हेतु मेरे निकाल देने का विचार करने लगे एक
ने कहा अभी एक लठ मार मारे डालता हूं दूसरे ने कहा ठहर जा इसे मैं तीर से मारे डालता हूं ती
सरा बोला मैं इसे समुद्र में डाले देता हूं इसी प्रकार वो सब मेरे मारने को उद्यत थे इतने में मैं
दौड़ कर जहाज के कप्तान के निकट गया और उसके चरणों पर गिर उसका वस्त्र पकड़ लि
या और उससे सैन से कहा मैं तुम्हारी शरण हूं मुझे बचावो और मेरे नेत्रों से आंसू चले कप्ता
ने मुझ पर दया कर मेरी ओर हो सब को मेरे डाल देने से हटा दिया और कहा इस वानर से
कोई न बोले और इसे कुछ दुःख न पहुंचावे फिर उसने मेरी ऐसी रक्षा की कि मुझको कुछ
भी दुःख न पहुंचा यदि मैं बात न कर सका था परंतु सैन से उससे बात करता था और वह मे
री सैन समझ अत्यंत प्रसन्न और हर्षयुक्त रहता और उस समय से अममत उसकी मुझ पर ब

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सन्न होगये इसीप्रकार ५० दिनतक चलाकिये यहांतक कि वोजहाज बहुत बड़े व्योपार
स्थानमें पहुंचा जिसमें बहुतसी वस्ती थी और उसमें गृहभी उत्तम उत्तम थे जहाजी लोगों
ने जहाजको नगरके निकट ठहराया और वो नगर बड़े ऐश्वर्यवान् बादशाहकी राजधा
नीथी जहाजमें लंकर करतेही बहुतसे मनुष्य जो उन व्योपारियोंके मित्र थे नावोंपर स
वार हो धन्यवाद देनेको आये और जहाजको चारोंदिशासे घेरलिया प्रत्येक मनुष्य अ
पने अपने मित्रसे मिल सफर और समुद्रका वृत्तांत पूछता थाकि वह जहाज दूरदू
र के देशों और नगरोंमें गया था उस नगरके वासियोंमें कोई बादशाहके सरदार भी थे
उन व्योपारियोंको बादशाहकी ओरसे कहते थे कि हमारा बादशाह तुम्हारे आनेसे
अत्यंत प्रसन्न है और कहता है कि जो तुममेंसे कोई मनुष्य लिखने पढ़नेमें ऐसा योग्य
है कि इस कागज पर कि मिसर किया है और हमारे पास है लिखे कि उसको देखकर औ
र लिखनेकी परीक्षा करें और कारण इसका यह है कि यहांका मंत्री मरगया है और
वह मंत्री अपने गुणोंके विशेष करके अच्छी लिखना था और लिखनेमें अद्वितीय
था और यहांका बादशाह गुणग्राहक है उसके मरजानेसे अत्यंत शोकयुक्त रहता
है और सौगंद खाई है कि जो मनुष्य पहिले मंत्रीके समान अच्छा लिखनेवाला मिले

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सश
८२
82

गा उसीको मंत्री बनाऊंगा वज़ीरने फिर भी अबतक अपने संपूर्ण देशमें ऐसा कोई मंत्र
खोज न पाया कि जिसे वह अपना मंत्री बनावे सो इसका फ़ैसला करने तुम्हारे निकट भेजा है कि
जो कोई तुम में से इस योग्य हो और उसे मंत्री का स्थान लेने की इच्छा हो इसकागज़ पर अप
क्ति हाल लिखे जब सरदार इतना कह चुका तो मैंने आगे बढ़ उस कागज़ को उसके हाथ से ले
लिया इससे सब जहाज़ के मनुष्य विशेष वह सौदागर जो लिखे पढ़े थे चिल्लाने और बड़ा
शोर करने लगे कि अभी यह बंदर इस कागज़ को चीर फाड़ डालेगा वा समुद्र में फेंक देगा
परंतु जब उन्होंने देखा कि मैंने कागज़ को अच्छे प्रकार पकड़ा और मैंने संकेत से पूछा कि मैं इ
स पर लिखूं सबने चिल्लाना बंद किया क्योंकि उन्होंने संपूर्ण आयु में कभी किसी बं
दर को लिखते न देखा था और मेरी योग्यता को नहीं जानते थे वा चाहा कि इसका
गज़ को मेरे हाथ से छीन लें परंतु कप्तान ने मेरी ओर हो कहा कि ठहरो इसको
परीक्षा लेने दो यदि उसने कागज़ को खराब किया तो मैं तुम से प्रण करता हूं कि उ
सको उचित दंड दूंगा और जो उसने मेरे विचार के अनुसार अच्छा लिखा तो उनमहे मैं
उसे अपने पुत्र के समान पालन करूंगा मुझको विदित है कि वह कागज़ को खराब न
करेगा मैं और बंदरों की अपेक्षा उसे अधिक समझदार और बुद्धिमान पाता हूं जब।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मैंनेदेखाकिमुल्ककोअबकोईनहीं मनाकरतालेखिनीलेचारप्रकारकेचारकाम ऐसे
लिखोकिनकोईब्योपारी औरनकोई उसनगरकाबासीलिखसकाथा जबमैंलिखचु-
का तो सरदारजायउसकागजकोबादशाहकेसन्मुखलेगयाबादशाहने मेरेलिखने औ-
रकामको प्रसन्नकिया अपने सरदारोंकोकहाकिएकबड़ाभारीलिखनेले जायउसम-
नुष्यकोदेख जिसनेयहकागजकोलिखाहैपहिनाके औरएकअश्वहमारे अश्वशाला
मेलेजावो औरउसे सवारकरायले आवोयह आज्ञापातेही वहसरदारउसकराया
जिसकोकिबादशाह अमनकोपितऊआ औरदंडदेनेकी आज्ञाकीउसने बिनतीकिकी
हेस्वामी हमारा अपराधक्षमाकरो लिखनेवालाइसकामनुष्यनहीं किंतुबानरहै बा-
दशाहनेकहाकाथ यकिमनुष्यकीलिखीनहीं एकनेउन सरदारों सेबिनयकीकिहे
स्वामीहमने अपनी आंखोंसेदेखाकिइसकोबंदरनेलिखाहै बादशाह इसबातसेआ-
श्चर्यिन औरविस्मितऊआ औरमेरे देखनेकी अभिलाषाकी औरउनसरदारोंसे
कहाकिमोलचहीयेसे अपूर्वबंदरकोसवारकरमेरेसन्मुखले आवो सरदारजहाजपर
फिरगये औरबादशाहकी आज्ञाकापतानसकहीउसनेकहा बहुतअच्छामेंइसेभेजता
हंफिरमुझेकारचोबीवस्त्रपहिनासमुद्रकेतटपरलेआये औरघोडे परमुझेसवारकि-

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

म१ या इधरबादशाह अपनेसभासदोंसहितमेरे आगमनकीराह देखतेरहे ओरमेरी अगवा
८६ नीकोसबप्रकारकेमनुष्यइकट्ठाकिये ओरनगरकेछोटेबड़े मनुष्यओरस्त्रियोंमेरेदेखनेको
कोटों ओरमार्गोंमें इकट्ठाहुयेक्योंकियहवृत्तांत अर्थातबादशाहनेएकबंदरको अपना म
83 त्रीबनायाहै संपूर्णनगरमेंव्याख्यानहोगयाथालोगमुझे देखहंसते ओरबिहसते जबमैं बा
दशाहीमकानमेंपहुंचा बादशाहकोराजसिंहासनपरबैठे देखाओरउसके सिंहासनकेबा
ऐंओरमंत्री ओरइसबादशाहकेसंपूर्ण भूपइकट्ठाथे मैंतीनबारप्रणामकरहाथजोरख
ड़ाहुआ ओरवहां जितने वर्तमानथेइसअसंभवहस्मांनकोदेखआश्चर्यितहुयेकिहमने
आजनकऐसाबंदरनहींदेखाइसी प्रकारबादशाहभी इसबातसे अमनविस्मितहुवाफ़ि
रबादशाहने संपूर्णसभासदोंकोविदाकिया केवलमैंओरदारोगाजो अमनहहथा बा
दशाहकेपासरहगये फिरबादशाहनेसभासेउठमेंजायनानाप्रकारकेव्यंजनमंगाये
ओरमुझे सेनसेखानेकोबुलायामैंप्रणामकरबैठगया ओरबड़ीनमीजसेखानाआरंभ
कियाजबभोजनकरचुके ओरबरतनवहांसेउठगयेमैनेएककलमदानदेख उससेनसे
मंगायाजबवहकलमदानमेरेसन्मुखआया मैने उसमेंसेएकबड़ाकागजले बादशाह
केथमबादकाकामबनाय बादशाहकेसन्मुखकिया बादशाहउसेपढ़ अमनआश्चा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ष्थित हुआ और पहिले से अधिक प्रसन्न हुआ और इसके पश्चात् बादशाह ने सबकों को से
न्दी कि इसे भी मदिरा पिलावो सो उन्होंने एक गिलास मुझे भी दिया मैंने उसे पी एक नये प्र
कार का काव्य इस विषय का अपने स्मरण आपनि और उस बादशाह को गुणग्राहकता
से जो आनंद और चैन प्राप्त हुआ लिखा बादशाह ने उसे पढ़ चित में कहा कि इस बंदर के
समान कोई भी संसार में नहीं फिर उसने सतरंज मंगाई और मुझे सैन से समझा यह खेल
जानते हो इस समय खेलने का जो चाहता है उसके उत्तर में मैंने धरनी को हम अपना हा
थ सिर पर रक्खा अर्थात् मैं खेलने को नमस्कार पहिली बाजी बादशाह जीता और दूसरे
तीसरी में जीता बादशाह को दो बाजी के हारने से म्लानता हुई इसके धीरज को
चालने मैंने काव्य इस विषय का लिख कर दिया अर्थात् दो पोथा जोने पर सारे दिन भर युद्ध
कर सायङ्काल को मेल किया और रात्रि को उसी युद्धस्थान में आनंद से सो रहे बादशाह इ
सकी बुद्धिमानता को देख अति आश्चर्य ष्थित हुआ और सभासदों से कहा कि मैंने किसी बंद
र को ऐसा योग्य और हाजिर जबाब न देखा और न सुना फिर चाहा कि ऐसा अपूर्व औ
र अद्वितीय बंदर अपनी प्रजा में लेके हसन को दिखावे उसने खोजसराओं के दारोगा
को आज्ञा की तू अपनी बीबी को यहां पर बुला ला कि वह भी इस चरित्र को देखे दारोगा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्र ८४

84

राजद्वारसेराजपुत्रीकोबुलालायाशाहजादी वहांसेबादशाहकेसन्मुखमुखबोले
गई औरवहांसुफेदेखिनहीउससेनेतुरंत अपने मुखकोढांपलिया औरबादशाहसे।
बिनयकीकिआपकोक्याहोगयाकिआपमुफकोबेगानेमनुष्यकेसन्मुखबुलातेहैंबाद
शाहनेउत्तरदियामुफकोज्ञानपड़ताहैकितुमवेहोसोसेवानेकरतीहोइसस्थानपरतुम
हारेखाजेसरायकेसिवाय औरमेरेकोईनहींहैतुमतोसदैवमुखउघाड़ेमेरेसन्मुख आया
करतीहोइससमयको अपनेमुहपरवस्त्रलेआईहो औरइसकेविपरीततुमने मेरेसु
लकाविचारहैशाहजादीनेबादशाहसेविनयकीकिआपअच्छेप्रकारजानलेकिमेरी
ऊबकोभीभूलनहींमैंसचकहतीहूंकियहवेयरसब मुखमनुष्य औरबड़ेबादशाह
कापुत्रहैजाइसकेकारणबंदरहोगयाइबलीसकेपुत्रने बादशाह असेनेवरस अवेतो।
नीद्वीपकेशाहजादीकेमारनेकेपश्चातइसशाहजादेकोजाइसेबंदरबनायडालाहै
बादशाह यहबातसुनअत्यंतविस्मितहुआ औरमुफसेपूछाकियहबातसचहै मैंने
अपनाहाथशिरपररखकेसनेसेकहाजोइसशाहजादीनेकहासोठीकहै फिर बा
दशाहने अपनीशाहजादीसे एकांतमेंकोंकरविदितहै कियहशाहजादाबंदर।
होगया शाहजादीनेउत्तरदिया आपकोस्मर्णहोगाकिजबप्रथमेराकुआउगयागयाथा।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मेरापालनऔरउपदेशके अर्थहहावहजाइकेविद्यामें अतिनिपुणथी उसनेउफको म
नरयवंमंत्रविद्याकेसिखलाये जिससेउफमें इतनीशक्तिहै कितुम्हारे समग्रदेशको य
हांसेउठा समुद्रमेंजलहेउफकोउनमनुष्योंकाहालजो जाइकेकारणअनयोनिमें आम
हो अच्छेप्रकारविदितहै देखतेहो जानलेनीऊंकिइसमनुष्यपरकिसीने जाइकिया
है औरइसकारणउसपरजाइहुवा औरजिसमनुष्यनेइसपरजाइकियामेनेपकडीबे
रकेदेखनेमेंपहिचानलिया जिसकोआपवेदरजानतेहैं बादशाहनेकहाहे शाहजा
दीमेंतुझकोऐसीगुणवतीनजानताथा शाहजादीनेकहाहेपितायहभेदहे इसएक म
नुष्यको सीखनाउचितनहीं मेंकछ इसमें कहनहीकहतीबादशाहने अपनी शा
हजादीसेकहातुम्हें इतनीसामर्थ्यहै इसशाहजादेकीजाइदूरकरफिरउसको अप
ने स्वरूपमेंबनादो शाहजादीनेकहानिस्संदेहमेंबनासकतीहूं बादशाहने कहाकितुम
इसकोपहिलीसूरतमेंलावोतोमैं तुम्हाराबडाउपकारमानूंगा औरइसको अपनाजमेंजी
करनेकेसाथ विवाहकरहुंगा शाहजादीनेकहाबहुतअच्छाइतनाकहिमलकाइस
ने अपनेशहरसेएककछडीलाईजिसमें इबरानी अक्षरलिखेथेऔरकहाकि आपरबा
नेसरा औरवेदरसहितएकटहमेंरक्खाएकछिपकरवैठेफिरहमतीनोंबरामदेमें

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मत्र
८५
85

कि चारों ओर उस मकान के बनाया बैठे उसने उस बरामदे में एक बड़ा चेरा पृथ्वी में खेंचा
ओर कछ इसरी ओर कलपतरी शाह पढ़ने का आरंभ किया जब पढ़ चुकी ओर विचा
रानुसार चेरा भी बना लिया तब उस घेरे के अंदर जाय कर गान पढ़ना आरंभ किया इतने में
चारों ओर रात्रि के समान अंधेरा छा गया ओर प्रलय के चिन्ह दिखाई देने लगे यह दशा
देख हम सब भयभीत हुए ओर घड़ी घड़ी पर हम को डर अधिक होता जाता था हमने का
देखा उबेन रइस लोम का पुत्र बड़े उग्र ओर भयंकर शरीर के स्वरूप में प्रगट हुआ शाहजादी
उसके सन्मुख कहने लगी अब तक करना तुझे चाहिये था कि तू मेरी विनती करता विपरीत
इसके मेरे डराने को ऐसा भयमान रूप धर आया तूने बड़ी ढिठाई की शेर ने उत्तर दिया तू
ने उस शपथ को जो पिशाचों ओर मनुष्यों में हुआ था तोड़ दिया ओर उस पर कठिन कठिन
सौगंदें दी गई थी कि कोई एक दूसरे को दुःख न दे शाहजादी ने कहा अब सलीमान तूने श
पथ भंग की है मुझे चाहिये कि इस विषय में तुझे बुरा भला कहूं शेर ने कहा तूने बड़ी ढि
ठाई की मुझे यहां आने का श्रम दिया यह कह उसने अपने मुख को फैलाया ओर इ
च्छा की कि शाहजादी को निगल जाय परंतु वह अनंत बुद्धिमान ओर चैतन्य थी पीछे
की ओर कूद कर हट गई ओर अपने शिर का एक बाल उखाड़ के उस पर दो बार अदृश्य

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

फेंकी वो बाल हट गई और अपने शिर का एक बाल उखाड़ के उसपर दो चार अक्षर पढ़ के वो बा
ल वृक्ष के समान बन गये शाहजादी ने उस वृक्ष से उस सिंह को दो फांक कर उस दालान
में डाल दिया और वो टुकड़े शेर के भस्म होगये जो शिर उसका रह गया था बिल्लू बन गया
शाहजादी उस समय सर्प बन के उसको डस करने लगी वो बिल्लू सामना करने की सामर्थ्य
न रख कर उकाब बन के उड़ गया फिर वह सर्प भी काला उकाब बन पहिले उकाब का पी
छा किया यहां तक की वे दोनों उकाब हमारी दृष्टि से छिप गये थोड़ी देर के पश्चात् हमारे स
न्मुख पृथ्वी फट गई और उसमें से दो बिल्लियां श्वेत और काली निकलीं और उसके बाल ख
ड़े कर परस्पर बिल्लाने लगीं फिर वह काली बिल्ली काला भेड़िया बन हसरी बिल्ली की ओर
दौड़ी वो बिल्ली अवकाश न पाय निरुपाय हो कीड़ा बन गई और उसकी डेन एक अनार के
बीच में उसी समय हौज़ नहर के किनारे गिर पड़ा था अपने को छिपाया यह अनार बढ़ने ल
गा यहां तक कि बढ़ने २ बड़े मटके समान होगया और वायु पर उड़ा और बामदे की उचाई
तक जाय कभी आगे की ओर कभी पीछे को हिलता था इसी प्रकार इधर उधर जाय पृथ्वी प
र गिर फट गया और बहुत टुकड़े उसके होगये वह भेड़िया तत्काल मुर्ग़ा बन अनार के दाने
चुनने लगा और शीघ्र हो एक एक दाना निगलना आरंभ किया जब सब दाने अनार के दाने चुने

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स३ लगा और शीघ्रही एकएक दानानिगलनाआरंभकियाजबसदाने अनारकेखोचुका त
८८ बवहपंखफैलाहमारे निकटआया और बड़ाशब्दकिया अर्थात वहएकछुनाहै कि
कोईदानाशेषनोनहीरहगया और चारो ओर ढूंढनाफिरनाथाकि संयोगबसउसने
86 एकदानानहरकेतटपरपड़ाहुआपाया देखदेदौड़करचाहाकिउसकोभीखालेंइतनेने
मेंवहदानालुढ़कताहुआनहरमेंचलागया औरवछोटीमछलीबनगया औरवह
मुर्गाभीमछलीकेखानेको नहरमेंगयावहमछली औरमुर्गादोघड़ीतकउसनह
केभीतररहेहमेंउनकाहालतनकुछभीविदितनहुआकिवेदोनोंक्याहोगयेफिर।
थोड़ीदेरकेपश्चात्हमनेएकभयानकशब्दचिल्लानेकासुनाकिजिसकेसुननेसेहम
डरेफिरउसपिशाच औरशाहजादीकोदेखाकिवेदोनों अग्निहोगये औरअनेक
अपनेमुखसेलपटेंनिकालदूसरेको औरफेंकना औरनिकटहोहो एकदूसरेपर
चढ़ाईकरनाहैयहांतककि आग्निने सबकोघेरलियातोयह आश्चर्यदेखहमशं
कितहुएकिइस अग्निसे संसारआजअभीजलजायगाइस समयान्तरमेंहमारेभयकाएक
औरकारणहुआकिवहपिशाच शाहजादीकेसन्मुखसेहटहमारीओर आयाजहां
हमसबबैठेथे औरअपनेमुखसेलपटेंनिकाल हमारी औरफेंकनेलगाचाहताथाकि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

यह जल कर भस्म हो जावे इतने में शाहज़ादी दौड़ कर आई और इसमें उसके हाथ से बचा कर उसको
वहां से हर भगाया शाहज़ादी रक्षा करने पर भी बादशाह का मुख विकुल सा गया और ख्वाजह
सराय का दरोगा जल भुन कर भस्म का ढेर हो गया और एक चिनगारी उड़ कर मेरे दहिने नेत्र
में लगी कि जिससे मैं काना हो गया और हम दोनों अर्थात् बादशाह और मैं इससे अति दुःखित
थे इतने में जेका शाह हमने सुना और वह मलका हसन ने निज योनि में बन हमारे निकट आई
और वह पिशाच जल के भस्म का ढेर हो गया फिर शाहज़ादी ने एक छोटे नौकर से जल मं
गवाया और उस पर कुछ मंत्र पढ़ थोड़ा उसमें से मुझ पर छिड़का और कहा जो तू शाह से बंदर
बन गया तो निज योनि को प्राप्त कर और मनुष्य के स्वरूप में जैसा पहिले था वैसा बन जा इत
ना कहते ही मैं मनुष्य बन गया दाहिने नेत्र के सिवाय जो प्रथम से जाता रहा था और किसी जो
इमें हानि न पहुंची मैंने चाहा कि उस शाहज़ादी का धन्यवाद करूं परंतु उसने मुझको अवका
श न दिया बादशाह से कहा यदि मैंने पिशाच को पराजय किया परंतु इसके साथ मेरा भी का
म तमाम हो गया अर्थात् इस पावक पुंज ने भी मेरे शरीर को जला दिया को ईक्षण में मुझे
भस्म कर डालेगी यदि एक दाना दाड़िम का भी जिस समय कि मैं पक्षी बनी थी न छूटता और
उसको भी खा जाती तो फिर मुझको कुछ भी डर न पहुंचता और यह पिशाच उसी समय।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्र
८७

87

माराजाता परंतुउसदानेकेवचनेसेफिरउसमेरेसाथयुद्धकोसामर्थ्यनहुईतबमैनेलावारहो
करअग्निसेग्रामकरनेलगीउससमयधरतीसे आकाशपर्य्यंतअग्निहोगईतबउसपिशाच
कोमालूमहुवाकिमैंजाहूकीविद्यामेंअतिनिपुणहूं औरमेरीविद्याकहींउससेअधिक
है निदानमैनेउसकोजलाकरभस्मकरडालापरंतुमैंभीउस आगसेसेबचनहींसक्तीबा
दशाहनेशोचित होयउत्तरदियाकितुम अपनेपिताकाभीहालदेखो यदिमैंजीताऊं
परंतुमुखमेराझुलसगयाहै औरतुम्हारा ख्वाजहसरायजलकरभस्महोगया औरयह
शाहजादाजिसकातुमनेजाहूहरकियाहै दाहिनेनेत्रसेकानाहोगयाहै यहकहकरबा
दशाह औरमैं इसहालमेंरोनेपीटने औरहाहाकरनेथेकिइतनेमेंशाहजादी पुकार
नेलगीकिजली जली फिरवहतत्कालहीउस अग्निमेंजलकरउसपिशाचकेसमानभ
स्मकाढेरहोगईहैपाहरयारउसस्थानमेंउसदूसरेयोगीने हाहाखायजेवदासेकहा।
किउससमयकादुखजोमुझपरहुआ उसकावर्ननिनहींकरसक्तामैनेउसमलकाह
सनकोइसदशामेंदेख अपनेचित्तमेंकहाकियदिमैं बंदरकिंतुस्वानसंहारण आयुभर
बनारहतातोउत्तमथा इससेकिशाहजादीजिसनेकिमुझसे इतनाउपकारकियाथाइ
सप्रकारवधहोजायऔरइधरबादशाह अपनीशाहजादीकेमरजानेसेशोकवानहोरो।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नेपीटनेलगायहांतककिवोमूर्छितहोगया औरमुझेबादशाहकीओरसे अत्यंतभय
औरडरहुआकिऐसानहोवह अपनीशाहजादीकेदुःखसे कहींमरनजायउससमय रोने
पीटनेसे प्रलयहोगया बादशाहीमकानमेंबादशाहकीयहदशादेखनसंपूर्णसरदार औ
रनौकरदौड़े औरबहुतउपायसेउसेफिरहोशमेंलाये मैंनेसंपूर्णवृत्तांतउनसेवर्णनकिया
फिरवहलोगबादशाहकोउठायउसकेनिजकोटमेंलेगयेयहवृत्तांत संपूर्णनगरमेंख्यात
होगया औरचारोंओरसेशाहजादीके नामपररोनेपीटनेकाशब्दसुनाईदेताथा सातदिन
तकउन्होंनेशाहजादीकाशोकऔररोनापीटनाकिया औरअपनीरीतानुसारसंपूर्णशोक
कीरीतेंभीकींफिरपीछेचिताकेभस्मकोइकट्ठाकरउन्होंनेवायुपरउड़ादिया औरशाहजादीकीभ
स्मकोएकबहुमूल्यवस्त्रकीथैलीमेंभरवहींगाड़दी औरउसपरएकबड़ाभारी मकबरा
बनवायाबादशाह अपनीशाहजादीके शोकमेंएकमासतकरोगग्रस्तरहा अभीवह अ
च्छाहुआथाकिउसनेमुझेबुलाकरकहाहे शाहजादेतेरे आगमनसेनानाप्रकारकेदुःख
औरशोकमुझपरपड़े औरमेरीशाहजादीनेतेरेही कारणभस्महुई औरदारोगाभीजलक
रगया औरमैं मरतेमरते बचायहसबतेरी अभाग्यताहै तूअशगुनहै अबमैं तुझेदेख
नहींसकताइससेतूयहांनरहतुरंतयहांसेचलाजायदितूयहीं रहेगातोतेरेवास्ते अच्छा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मप्र
८८

88

नहीगा और मैं तके दंडरंगा इसी प्रकार बादशाह ने क्रोध में यह सब बातैं कहीं कि जिनका मैं
उनरनदेसका और तत्काल बादशाह के सन्मुख से चला गया और जिधर को जाता था उधर
को मनुष्य मेरे मारने का इरादा करते थे निदान मैंने निरुपाय हो उस नगर से निकलने से पा
हिले मैंने और मूछैं और डाढ़ी मुड़ाय और योगियों के वस्त्र पहिन वहां से चला और अ
पने जन्म भर बुरा भला करता कहता था कि बड़ा पश्चाताप है कि मेरे कारण से ऐसी स्वरूपवती
दो शाहजादियां मारी गईं फिर बहुत दिनों तक नगर नगर और देश देश फिरा किया नि
दान यों चाहा कि बुगदाद नगर में जाय अपने दुःख और शोक को बादशाह हारून रसीद से वि
नय करते हुए महाशय मेरे हाल को सुन मुझ पर अवश्य दया करेंगे और इस महादुःख से छु
ड़ादेंगे आज सायंकाल के समय में वहां पहुंचा और पहिले पहिल योगी से कि जिसने
अभी अपना वृत्तान्त वर्णन किया है भेंट हुई और मेरे यहां आने का कारण आपके सन्मु
ख पहिला योगी जो कह चुका उसका प्रगट करना अवश्य नहीं इस प्रकार जब हम सरायो
गी भी अपना वृत्तान्त कह चुका तो जेवदा ने ऊसे कहा कि मेरा अपराध क्षमा किया जिधर को
ने राजी चाहै चला जा तब वह भी जेवदा से आज्ञा ले पहिले योगि के निकट बैठ गया फिर ती
सरा योगी अपना वृत्तान्त कहने पर उद्यत हुआ और जेवदा के सन्मुख जाय इस प्रकार अपना।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वृत्तांतकहना आरंभकिया ॥ तीसरेयोगीकीकथाहै दयावानसुंदरीमेराहालतोन अतिविचि
त्रहै इनदोनोंशाहजादोंकी आंखेंतोववसीकेकारणसेगई औरमेरीआंखअपनेही अपराध
राध औरनिर्बुद्धितासेफूटीसोआपकोमेरेवर्णनमेंविदितहोगामेरानाम अजबहै औरमैं म
हाऐश्वर्यवान बादशाहकिसबकाबेटाहूं जबमेरापितास्वर्गवासीहुवामैंतख्तपरबैठा औ
रउसीनगरमेंजिसे मेरेपितानेराजधानीबनायाथारहावहनगरनदीके तटपरबसाथा और
उसकीरक्षाकेनिमित्तएकसौजहाज़ तैयाररहतेथे औरपचासजहाजसुखव्यौपारकेहेत रह
तेथे औरअनेकजहाज़सैर औरतमाशेके अर्थप्रतिसमयसमुद्रकेतटपरलंगरकियेरहाकरते
औरइसराजधानीसेबहुत अच्छेअच्छे नगरऔरबसेहुयेद्वीपसंबंधितथेसबकामोंसेप्रथम
मैंनेयहइच्छाकीकिसबगांननगरों औरद्वीपोंकोजोइसराजधानीसेसंबंधरखतेहैंजायकर
देखूं औरवहांकेवासियोंकोकिजोमेरेपिताके मरनेकेकारणशोकयुक्तहैं धीर्ज औरभरो
सादूं आऊंकिवो अपनेदेशकेसंबंधितकार्यों औरव्योपारमेंसावधानतासेलगरहें इसी स
मयांतरमेंमुझेजहाजचलानेकीविद्याकेसीखनेकाव्यसनमेरेहृदयमेंउत्पन्नहुआसोमैं
एकजहाजपरसवारहुआ औरदसजहाजअपनेसाथलेकरचला चालीसदिवसतकवायु
अनुकूलरहीइकतालीसवेंदिनएकबड़ेवेगसेचलनेलगीऔरसबजहाजतूफानमेंपसे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त पड़े कि हम अपने जीवन से निरास हो गये परंतु दूसरे दिन भोर को हवा कम भई बादल खुला
८९ और सूर्य निकला आकाश निर्मल हो गया हम सावधान होय एक द्वीप में उतरे दो दिन तक
अन्नादि लेने के हेत ठहरे फिर हम जहाज पर सवार भये और विचारते थे कि दस दिन के
अंतर में बसरे में पहुंच जायेंगे क्योंकि हम तूफान के कारण मार्ग भूल गये थे और न जा-
नते थे कि तूफान और अंधेरे के कारण हमारे जहाज किस ओर को जाते हैं कप्तान ने ए-
क मनुष्य को मस्तूल पर चढ़ाया कि दिशा को मालूम करे उसको दाहिने और बांये पानी
और आकाश के सिवाय और कुछ न देख पड़ता था परंतु दाहिनी ओर जब ध्यान से देखा
तो कुछ कालापन देख पड़ा यह समाचार सुनते ही उस कप्तान का मुख बदल गया
पगड़ी उतार कर फेंक दी और शिर पीटने लगा और मुझसे कहा हे स्वामी हम सब मरणे वा-
ले हैं इस बला से कोई नहीं बचेगा अब हमारे बचने का कोई उपाय नहीं यह कह कर वह क-
प्तान इस प्रकार फूट फूट रोने लगा कि जैसे कोई किसी को प्राण से मारता हो यह दशा उ-
सकी देख जहाज के मनुष्य अत्यन्त डावित और रोना चिल्लाना भये मैंने उससे इसका कारण पू-
छा तो उसने उत्तर दिया कि तूफान हमारे जहाज को मुख्य मार्ग से हटा कर ऐसे स्थान पर
लाया कि कल के दिन दो पहर को हमारा जहाज उस काली वस्तु तक पहुंचेगा और वह का

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लीवस्तु चुंबक पहाड़ है वह तत्काल हमारे को लोहेकी कीलें और लोहेके वस्तुओं के का
रण जो जहाज में लगी हैं अपनी ओर खींचेगा और जहाज जब उसके निकट जायगा तो
उसके खींचने से यह सब लोहे की कीलें और पत्तर जहाजों के पाटों से अलग होके उस पहाड़
से जाय चिपटैंगे और जहाज टूट कर सब वस्तु और मनुष्यों सहित डूब जावेंगे चुंबक पत्थ
र में यह गुण है कि लोहे को चिपकाता है और जितना लोहा उसके निकट जाता है उसमें आ
कर्षण शक्ति अधिक होती जाती है और इस पहाड़ की ओर कि जो समुद्र की ओर है सहस्रों
जहाजों की कीलें निकल निकल के नीचे और ऊपर तक जा चिपकी हैं इसी कारण वह पहा
ड़ काला ही दिखाई पड़ता है फिर उसने कहा वह पहाड़ बहुत ऊंचा और ढालवा है और उनकी चो
टी पर एक पीतल का छत पीतल के पीलपायों पर खड़ा है और उस छत पर पीतल का घोड़ा औ
र मनुष्य की मूरति कि वह उसी अश्व पर सवार है बनी हुई है और एक सीसे की तावीजी कि उ
स पर कुछ अक्षर जादू के खुदे हैं उसकी छाती से लगी हुई है लोग कहते हैं कि वही मृ
ति जहाजों और मनुष्यों के हानि होने का कारण है इतना कहि फिर वह रुदन करने लगा
उसके रोने से सम्पूर्ण जहाज के मनुष्य भी रोने लगे और मुझे भी विश्वास हुआ कि मेरी आ
यु इतनी ही थी और मृत्यु यहां ले आई है और प्रत्येक मनुष्य अपने अपने बचाव के विचार

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स३ मेंपड़ेकिकिसीप्रकारअपनेप्राणोंकोउबारेंपरस्परकहतेथेकिहममेंसेजोकोईसबकेप्रा
सं० णबचावेवहसबकास्वामीहै निदानदूसरेदिनभोरकोहमाराजहाज उसकालेपहाड़
केसन्मुखपहुंचापरन्तुजोउपायकिहमनेविचारेथे भूलगये औररोनेपीटनेलगेदायहा
90 कोजैसाकिउसबुद्धिमानकप्ताननेकहाथा ऐसाहीहुआवहअर्थात्पहाड़नेजहाजकोइसवेग
सेखींचाकिसबकीलें औरलोहेकीवस्तुजोजहाजमेंथीउसकेपहाड़सेचिपटगईंतख्तों
केछूटनेसेबड़ाशब्दऔरहुआ तत्कालहीविस्तारहैजहाजटुकड़ेटुकड़े होयऐसेबिखरेजल
मेंडूबगयेकिकिसीवस्तु औरमनुष्योंकापतानलगापरन्तुपरमेश्वरनेमुझपरदयाकी
किकेवलउनसबमेंएकमैंजीतारहासंयोग बसमेरेहाथएकलकड़ा जहाजकालगग
याकिउसकेसहारेसेपहाड़केनीचेधरतीमेंऐसेस्थानपरजीताजागतापहुंचाकिजहां
चरणोंकेचिन्हसीढ़ीकेसमानबनेहुयेथेवहमार्गपहाड़परजानेकाथामैंउनपांवोंके
चिन्होंकोदेखअनुमानप्रसन्नहुआउनचिन्होंकेसिवाय औरकहीं औरजगहदहिने वा
येऐसीनथीकिजहांपांवठहरसकेऔरगिरनेसेबचेमैंनेपरमेश्वरकाधन्यवादकर और
उसकानामलेयपहाड़परचढ़ना आरम्भकियामार्गबहुतसकेतथा औरवायुऐसीप्रचंडथी
किमुझेनदीकीओरउड़ायेलियेजातीथीनिदानमैंकुशलपूर्वकउसपहाड़परचढ़ा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

या श्रौरउसमहनकेभीतरजायश्रौरपृथ्वीपरपहुंच परमेश्वरकाधनवादकियाकिउस
नेअपनीदयालुकृपासेमुझेकुशलपूर्वकयहांतक पहुंचायारातकोवहींसोरहाश्रौरय
हसमदेखाकिएकहमनुष्यमुझसेकहताहैकि अजबजबतूजागजावेतोश्रमकर अ
पनेचरणोंकेनीचेकीधरतीखोदियो श्रौरउसमेंसेएकपीतलकायन्त्र श्रौरपोथीसेके
तीनसरकिउसयन्त्रमेंउसमनुष्यकेउखपहुंचानेकेहेतबनायेगयेहैंपावेगा श्रौरउनतीन
शतोंसेमनुष्यकोमुक्तिकोजोचौड़े परसवारहैमातियोतोवहमुक्तिसमुद्रमें श्रौरश्रस
नेरचरणोंकेनिकटगिरपड़ेगाफिरतूउसचौड़ेकोउसस्थानपरजहांसेकितूशार श्रौरय
न्त्रपायेगा गोड़दीजियोजबयहकार्यकरचुकेगा तोसमुद्रमेंऐसा तूफानश्रावेगा
किइसमहनकेनिकटश्रायपहुंचेगा जबवहसमुद्रतनताबढेगा तोएकछोटीनावस
मुद्रकेतटपरतेरेनिकट श्रायलगेगी श्रौरउसनावमेंएकपीतलकाकेवटवैठाहुश्राना
वकोतेरेनिकटलावेगातूशीघ्रही उसनावपरवैठजाइयोवहतुझेदसदिनके सम
यान्तरमेंइससमुद्रसेदूसरे समुद्रमेंपहुंचावेगावहांसेतूमेंह अपनेदेशकापहुंचनाबहु
तहीसुगमहोगा परंतुचैनसरहमार्गमेंपरमेश्वरकानामनलेनाजबवहयहमनुष्यये
वातकहचुकातोमेरीआंखखुलगई श्रौरमैंइससमहोनेसेश्रमनप्रसन्नहुश्रा श्रौरउ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सत्र
९१

91

सहदके कहने के अनुसार उस धरनी को खोदा तो वहां से तीन शर और एक धनुष पाया उन शरों
से उस मूर्त्ति को मारनी से शर के लगने से वह सवार और मूर्त्ति समुद्र में गिरि और घोड़ा मेरे
चरणों के निकट आय पड़ा उस को मैंने कमोष्ठान पर किया जहां से शर और धनुष पाया था
गाड़ दिया फिर वह समुद्र बढ़ने लगा यहां तक कि उस महल के निकट आय लगा और एक
नाव वहां से मेरी ओर चली आई और उस पर पीतल का एक मनुष्य बैठा देखा मैंने परमेश्वर का
धन्यवाद किया कि मेरा श्रम सफल और ठीक हुआ जब वह नाव तट पर आय पहुंची तो मैं उस ना
व पर सवार हुआ और उस सहद मनुष्य के कहने के अनुसार परमेश्वर का नाम न लिया किन्तु को
ई भी बात अपने मुख से न निकालता था फिर वह पीतल का मनुष्य नौ दिन के समयान्तर में
शीघ्र ही उस नाव को बहुत दूर ले गया और मैं बहुत से द्वीप अपने दाहिने बायें देखत अ
ति प्रसन्न हुआ और समझा कि अवश्य ही इस आपदा से छूट जाऊंगा ऐसी प्रसन्नता में ई
श्वर का धन्यवाद किया नाम लेते ही वह नाव मनुष्य समेत डूब गई और मैं जल पर पैरने
लगा विशेष दिन तक एक द्वीप की ओर जो निकट मालूम होता था शीघ्रता किये गया रा
त्रि को भी पैरे मैं जान न पड़ता था कि किधर जाता हूं वहताने रता उसी ओर चला जाता।
था निदान थक गया और मुझ में किंचित हाथ पांव हिलाने की भी सामर्थ्य न रही और अ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पनेप्राणसे निराशहुआ संयोगवशउसीदशामेंप्रचंडवायुचली औरसमुद्रभीलहर मार
नेलगासोएकलहरजोपहाड़केसमानबड़ीहुईथीमुझेउठायनऊपरडालदियामैंतुरंतनि
कल आयाकिफिरकोईलहरउससमुद्रमेंमुझेनफेंकदेफिरमैंने समुद्रसेनिकलतेही
वस्त्रनिचोड़सुखाये औरउनकोपहिनकरथरथरचलनाआरंभकिया उसमेंबहुतसेसफ
लहरेहरेपेड़उससमुझकोविदितहुआकियहांकोईद्वीपनिर्जनहै फिरबालूहरनके
देखोऔरमैंनेजानाकि प्रथमयहद्वीपसमुद्रथा अबस्थलहोगयाहै यहविचारमेंवहहर्ष
जोसमुद्रसेनिकलने औरसफलहोनेकेदेखनेसेहुआथाभूलगया औरअपनेकोपर
मेश्वरकीइच्छापरछोड़ाकिजोवहचाहेगाकरेगा थोड़ीदेरनहुईथीकोएकछोटासा
जहाजदेखाकिसबपालोंकोउठायेहुयेइसद्वीपकीओरचलाआताहै मुझेविश्वासहुआ
आकिवहइसोटापूमेंलंगरकरेगापरंतुनजानिये उसमेंकैसे मनुष्यहैंमित्रहैंवावैरीइस
हेतोछिपरहनाउचितहै इसनिमित्तमैं अतिसघन औरलंबेवृक्षपरचढ़गया औरइच्छा
कीकिवहांसेछिपकरउनजहाजियोंकोदेखूंकिउनकाकैसास्वरूपहै इसीविचारमें
थाकिजहाजनेकूलपरआकरलंगरकियाउसमेंसेदशअनुचरफावड़ेआदिधरतीखो
दनेकेपास्वलेकरनिकलेनदेनेतरवह द्वीपकेमध्यजाकरठहरे औरएकस्थानपरद

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त पृथ्वी खोदने लगे यहां तक कि उन्होंने एक दरवाज़ा पाया फिर खोजा के उस जहाज़ में से नाना प्र
९२ कार के खाने की वस्तु और बिछौने आदि का वस्त्र बोझ बांध कर अपने शिर पर उठा लाये औ
र उस स्थान से कि जहां खोदा था नीचे चले गये जिसमें मैंने समझा कि इसके नीचे कोई बड़ा मंदि
92 रहै फिर जहाज़ में वे संपूर्ण अनुचर जाकर एक वृद्ध मनुष्य और बालक को जो अति सुंदर
और चौदह या पंद्रह वर्ष की अवस्था का जान पड़ता था अपने साथ ले आये और उस भवन
में गये सबके सब उतर गये और वहां से लौट किवाड़ बंद किया और उस पर मिट्टी डाल पृथ्वी
के बराबर कर दिया और वे संपूर्ण मनुष्य अपने जहाज़ पर गये परंतु मैंने देखा कि वह बा।
लक नहीं फिरा तो मैं इस हेतु तान से अमन आश्चर्यित हुआ फिर वह मनुष्य उसी द्वीप को छो
ड़ जिधर से आये थे उधर ही चले गये जब मैंने देखा कि वह जहाज़ बहुत दूर चला गया औ
र वहां कोई मनुष्य नहीं दृष्टि पड़ा तो मैं तुरंत उस वृक्ष से नीचे उतरा और वहां गया कि ज
हां उन्होंने पृथ्वी खोदी थी मैंने उस स्थान की मट्टी सब काई तो उसके आव पर दो हाथ का।
एक चौकोण पत्थर एक किवाड़ वा देख पड़ा जब मैंने उसको उठाया तो वहां एक सीढ़ी दिखाई
दी मैं उस सीढ़ी से नीचे उतरा और देखा कि वह बहुत बड़ा गृह है उसमें कालीन का फर्श बि
छा हुआ और उसके दालाने में उत्तम उत्तम उपधान कि जिनमें सोनहरी गिलाफें चढ़ी हुई

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रक्खे हैं और उसमें वह बालक बैठा हुवा पलंग पर खेल रहा है और दो मोम के दीपक बल रहे हैं और अग्न
लित हैं और नाना प्रकार के बाजे ने को वस्त्र बने मान हैं और रंग रंग पिन गुलदस्ते उसके निक
ट रक्खे हुए हैं वह बालक मुझे देख डर गया तो मैंने उसको धीर्य देने के वास्ते कहा कि हे
प्यारे तुम मुझ से मत डरो मैं पुरुष हूं कि जो बादशाह और शाहजादा है न डरो मैं ऊधम न करूंगा और सभी
ड़ा न दूंगा और तुम बड़े भाग्यवान हो कि इस कबर में जीते हो जीते तुम को वे लोग गाड़ ग
ये हैं कहु उनने आया है परंतु पहिले अब पथ है कि इस पृथ्वी में अपने गाड़े जाने का कार
ण कहो मुझ से कोई भेद न छुपाना रखना क्योंकि मैं सब ऊधम देख चुका हूं परंतु मुझे इतना
विदित नहीं कि तुम अपनी इच्छा से कोई इस स्थान पर गाड़े गये उस बालक को इस बात से
ऊधम थोड़ा हुवा और मुझे बैठने को कहा जब मैं उसके समीप बैठ गया तो उसने इस प्रकार
पर कहना आरंभ किया है बादशाह मेरा वृत्तांत अत्यंत अपूर्व और अद्भुत है उसको सुनकर
आप अति विस्मित होंगे मेरा पिता जो जौहरी है उसने अपने श्रम और गुणों से बहुत सा धन इकट्ठा
किया उसके सैकड़ों गुलाम और कोठियां हैं वह अपने जहाजों पर सवार होकर हर एक के नगरों
और देशों में फिरता है और स्थान २ पर गुमाश्ते हैं कि उसकी ओर से रत्न माल लेने और बे
चते हैं इतना धन और रत्न राखने पर भी उसके संतान न थी एक रात्रि उसने स्वप्न में देखा कि मेरे

सप्र
९३

यरपुत्रहोगापरंतुउसकीअवस्थाअल्पहोगी सोवहसुनकरअत्यंतशोचितऔरशोकयुक्तहुवा
फिरकईदिनकेपश्चात् मेरीमातानेउससेकहाकिमुझेगर्भहैतुम्हारा स्वप्नसत्यहुवाफिरनौ
मासकेपश्चात्मैंउत्पन्नहुवा संपूर्णनातेदारोंकोमेरेउत्पन्नहोनेसेवड़ीप्रसन्नताहुईमेरेपि।
ताकेविशेषकिवहउसस्वप्नसेशोचितथानिदानउसनेज्योतिषियोंसेपूछाउन्होंनेकहाइ
सबालककेचौदहवेंवर्षमेंप्राणकाडरहैयदिइसवर्षमेंबचगयातोफिरआयुइसकीब
डीहै औरबहुतवर्षतकजियेगाफिरउन्होंनेकहाकिहमकोयहहीसेविदितहोताहै औ
किसबकेपुत्र अजबनामबादशाहकेएकपीतलकासवारजोजबलकपस्थरपरखड़ाहै स
मुद्रमेंगिरेगाऔरपचासदिवसकेपीछेअजबबादशाहकेहाथसेमाराजायगाएकतोमे
रापिताउसस्वप्नसेचिंतायुक्तथा दूसरेज्योतिषियोंकी इसबातसेऔरअधिकशोकयुक्तहु
वा औरमेरीरक्षाकेनिमित्तरात्रिदिनयत्नकरताथाजबचौदहवांवर्षमुझको आरंभहु
वातोदूसरेदिवसज्योतिषियोंने आकेविनयकीकिदसदिवसव्यतीतहुयेबादशाहश्र
जबनेउसपीतलकेसवारकोजिसकापहिलेहमनेवर्णनकियाथा उसपहाड़कीचोटीसे
समुद्रमेंडालदियाइसवृत्तांतकोसुनकेमेरापिताअत्यंतशोचितऔरशोकयुक्तहुवा औ
रयाहताथाकिकिसीभांतिमेरेअरिष्टग्रहकाफलदूरकरे औरमुझकेमृत्युसेबचावे फिर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

उसनेआगेसेशोचमेरीरक्षाकेहेतइसद्वीपमेंकिजहांमनुष्यकानाममात्रभीनहींपृथ्वीकेनी
चे इसगृहकोबनवारक्खाथाकिउसमूर्तिकेगिरनेकेपीछेपचासदिवसतकमुफेइसगृ
हमेंछिपा रक्खाजबसत्तावनदिवसव्यतीतहुये औरवहद्वानभागढहगईइसवास्तेउ
सनेचालीसदिवसकेलियेयहांलायकेमुफेरक्खाहैचालीसदिवसकेपश्चात्वहफिर
मुफेलेजायगाऔरउसकोविश्वासहैकिकोईमनुष्यसाबिबादशाह अजबऐसेस्थानपर।
नजायगा औरकोईमनुष्यमुफेइसचालीसदिवसकेअन्तरमेंनदेखे औरनमेंउसेदेखूंमेरे
आनेऔररहनेकाइसगृहमेंयहकारणहैजोमैंनेप्रगटकियाजबवहबालक अपनाहालतोनव
र्णनकरचुकातोमेंउनज्योतिषियोंकेशुभहालदेनेपरहंसाऔरकहाकिमेंइसनिर्दोषबाल
ककोक्योंमारनेलगाऔरउसकेथोथेऔरदिलासकेलिये मैंनेउसकहाकितुमजराभीभ।
यअपनेचितमेंनरक्खोऔरपरमेश्वरपरभरोसा रक्खोतोतुम्हें किसिप्रकारकाउःखनहो
गासंयोगसेपरमेश्वरकेतुम्हारीरक्षाकेहेतयहांलायाहै अबकिसीप्रकारकाभयऔर
शोचनहींइसीवास्तेमेराजहाजरुका औरमैंइसवतामरनायहांपहुंचामैंतुमकोउस अवधि
तक अकेलानछोड़ूंगातुम्हेंज्योतिषियोंने फूठकहाउसरक्खाहैरक्षाऔरसेवातुम्हारीमें
करूंगाऔरजबयहअवधिपरमेश्वरकीसंपूर्णकृपासेतेमसर्वककटजायगी औरजबतुम्हा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त तोपितातुमकोलेने आवेगातोमैंभीसवारहोउसकेसाथतुम्हारेनगरमेंजाऊंगा औरवहां
१४ से अपनेदेशमेंजाऊंगा औरमैंयहतुम्हारीभलाईकोभीनभूलूंगाऐसी ऐसीबातींकरमैंने
उसकेभयकोदूरकिया औरउसे अपनेपिताकानामनबतायाकि ऐसीनहोकिनामसुनने
94 सेउसे अधिकभयहोकिमैंहीउसकामारनेवालाहूं औरअनेकअनेकभांतिकीबातीं
औरकथाकरउसकाजीबहलातारहा औरमुझेवहबालकअतिबुद्धिमानऔरसमझ
दारजानपड़ाजबरात्रिहुईतोउसने औरमैंनेमिलकेभोजनकिया औरनानाप्रकारकेव्यंज
नवहांइतनेएकठेथेकिमेरेसिवाय औरभीवहांकोई अतिथिहोतातोतोएकचालीसदिवस
तकउनकोबहुतहोताभोजनकरबहुतकालतकहमवार्ताकरतेरहेफिरसोरहेजबव
हसवेरेदिनभोरकोजगातोमैंजलउसकेनिकटलेगया औरउसने अपनेहाथमुखधो
याफिरनानाप्रकारकेव्यंजनइकठेबैठखायेफिरसतरंजऔरचौपड़खेलउसकाजीबह
लाया औरसात्रिकोफिरभोजनकिया औरखापीकेसोरहे इसीभांतिदिनरात्रिहमदोनों
उसीगृहमेंरहतेथे इससेहमदोनोंमें अंमनप्रीतिउपजहुईयहांतककिमैंउसको अपने
प्राणसे अधिकप्याराखनेलगातबमैंनेविचाराकिजोकछज्योतिषियोंनेउसकेपिता
सेकहाथाकियहबालकअजबकेहाथसेमाराजायगाझूठहैमैंतोइसकोप्याराजानता।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हूं विना कारण मैं इस कौ माहेगा उनतालीस दिन तक अमन हर्ष और आनंद से हम दोनों
उस शहर में रहे चालीसवें दिन वह बालक भोर को जागते ही बड़ी खुशी और हर्ष से कहने ल
गा कि देखो हे बादशाह आज चालीसवां दिन है परमेश्वर की पूर्ण कृपा और तुम्हारे अ
नुग्रह से मैं जीता हूं मेरा पिता तुम्हारे उपकार और सेवा जो तुम ने इस अवधि में मेरे साथ
किया है सुन कर अमन्न हुन न होगा और तुम को तुम्हारी नगर में कुशल पूर्वक पहुंचा देगा
फिर उस बालक ने मुझ से कहा कि थोड़ा जल गरम कर दो तो मैं स्नान करूं और वस्त्र बदल
ने तैयार रहूं आज मेरा पिता मुझ को लेने आवेगा मैं ने जल गरम कर उसे स्नानागार में ले जाय
अच्छे प्रकार मल धुल न्हला दिया फिर वह बिछौने पर जा लेटा मैं ने उस पर लेहाफ ओढ़ा दि
या जब वह दो पहर को निद्रा कर उठा तो मुझ से उसने कहा है बादशाह मेरा जी इस समय
खरबूजा खाने को चाहता है तुम एक खरबूजा और मिसरी लाओ तो मैं खाऊं मैं ने जा कर
एक खरबूजा बहुतन से खास जो में से चुना और चीनी के पात्र में रख उसके निकट ले गया औ
र खरबूजा काटने के लिये छूरी को ढूंढा कि कहा है उसने कहा मेरे सिरहाने की ओर
ताख पर है मैं ताख को ढूंढ चाहता उसके लेने को उचका और छूरी को लेकर चाहता था
कि सहगामता से नीचे को आऊं परंतु दैवयोग से मेरा पांव कालीन पर फैला और मैं उसरन्नया

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
९५
95

रानीकेपुत्र परवेवसहोइसभांतिगिराकीछूरीउसकेहृदयमेंलगी किवहतुरंतमरगया इस
दशाकोदेखिमैनेरुदनकरऔरमुखऔरहृदयपीटि औरवस्त्रफाटअपनेकोपृथ्वीपरदे
देमारनाआरंभकिया औरकहाकियअग्यानतापरहै किकोईघड़ीशेषरहगईथीवहदिनउसप
रसेटरजाताकेवल इतनेहीकोइसदीनबालकनेयहां आयअपनाबचावकियाथा औरमैं
अभागासबसुखहीइसकामारनेवालाहुआ औरउनज्योतिषियोंकाकहनाठीकथा फिरमैं
निमुख आकाशकी औरकरदोनोंहाथउठायकहाहे परमेश्वरसर्वत्रतूसबकुछदेखताहै
मैंने ऐसइच्छासेनहींमारायदिकुछभीजानकरमेराअपराधहोतो इसीसमयमेराप्राण
ले इसीभांतिचिरकालतकरतनयारानीकेपुत्रकीलोथपररोतारहाजबदिनथोड़ासारहग
यामैनेविचाराकिअबइसकापितालेनेको आताहोगाक्योंकिआजचालीसदिवसबीतने
नहोगयेकिसम्मुखसेइसकेपितासेइतनीअवधकीभेंटकहूंयअग्यानतापरहैकिवहमेरीसेवा
औरअमवर्षहुईकिनइसकेविपरीतउपकारकेबदलेअपराधीहुआ अबमेरारहनाय
होउचितनहींयहविचारउसकीलोथकोवहींछोड़उसगृहसेनिकलआया औरदरवा
जेकोबंदकरउसकेऊपरसेभारीपत्थररखमट्टीसेनीचीपृथ्वीबराबरकरदी ज्योंहीमैंनेव
हांसेनिकलनदीकी ओरदृष्टिकरीतोक्यादेखताहूंकिवहीजहाजउसबालककेलेनेको

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पालेउठायेऊयेचलाआताहै मैंनेशोचाजोतुयहांठहरारहताहै तोहहमनुष्यजब अप
नेपुत्रकोमुवाऊवादेखेगातोमुझकोअवश्य अपनेभूमोंसेमरवाडालेगा औरमैंउसकेसेव
कोंसे ऊठनबोल्तूगाइस्सेउनमयहहैकितुइनसे अलगरहाफिरउसगृहकेऊपरएकब
ड़ाबड़ासबन हतनथाउसकेऊपरचढकेमैंने अपनेकोपत्ताछिपायाकिमैंउनसबको
भलीभांतिदेखूं औरइनकीवार्तासुनूंपरंतुवेमुझकोनदेखैंफिरउसजहाजनेउसीकू
लमें आयलंगरकिया औरवहहहमनुष्य अपनेभूमोंसहितजहाजसेउतरउसगृहके
समीपहर्षपूर्वकआया परंतुजबउन्होंनेऊपरकीमट्टीपोलीपाईतोउनकेमुखकारंग
भयसेबदलगयाविशेषकरउसहहमनुष्यकाफिरजबउन्होंनेपत्थरकोसरकाकेसीढी
कोनिकटजायउसबालककोबुलाया औरवहसबउत्तरकेनपानेसे अधिकउदासऔर
शोचयुक्तहुयेफिरउन्होंनेउसगृहकेभीतरजायचारों औरउसगृहकेढूंढातोपायाप्रउ
सबालककोमुवाहुआपायाऔरदेखाकिछुरीउसकेहृदयमेंखुबीहुईहै औरमुझे
उसकेहृदयसेछुरीनिकालनेकाध्याननरहाथानिदानउसबालककोमुवाहुवापाय
सबरोनेऔरचिल्लानेलगेऔरउसकायशगानबादकरपीटनेलगेउनसबकेरोनेकाशहदसु
ननेसेमैंभीरोनेलगाऔरवहहहमनुष्यअपनेपुत्रकीलोथदेखनेसेबेसुधहोगयाथातो।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्र
९९
96

वाह्रएकउड़करहवाथावानेकोउसगृहसेवाहरनिकाला। औरउसवृक्षकेनीचे जिसपरमेंछि
पावैठाथाविगाथाघहअभागापिताइतनीरक्ताहोनेपरभीफिरअपनेपुत्रकेशोकमेंमग्नहो
गयाजबवहुधिसंभालीतोसबकोंनेबालककीलोथकोउसगृहसेवाहरनिकालनहला
या औरनयेश्वेतवस्त्रोंसेढककगाडदिया औरउसबालककेपिताकोजोकिवहुतरोता
थाकबरपरलायेउसनेपहिलेतीनवेरकबरपरमिट्टीदीफिरउनसबकोंनेउसकबरको
मट्टीसेतोपबराबरकरदियाजबवेयहकरचुकेतोउसगृहसे सबवस्त्रऔरभोजनको
सामग्रीजोशेषरहीथीजहाजपरलेगये औरउसपरसवारहो अपनेदेशकोचलेजब
वहजहाज़मेरीदृष्टिसेलुप्तहुआतोमैंउसवृक्षसेनीचेउतरा औरअकेलेहोनेकेकारण
उसीगृहमेंकिउसकाकिवाड़खुलारहताजायकरसोरहता औरप्रातःकालकोउसद्वीप
मेंमार्गढूंढनेकेनिमित्तइधरउधरफिराकरताऔरफलआदिखायकालक्षेपकरतोनि
दानएकमासतककेमैंइसीभांतिशोकयुक्तउसीद्वीपमेंरहाकिउससमुद्रकाजलचढ
ते चढते गांवकेबराबरहोगया औरवहद्वीपबड़ाविदितहोनेलगा इसीप्रकारहोले
होले उससमुद्रकाजलघटगयाकिएकनालेकेसमानकेवलमेरीपिंडलियोंत
कजलरहगयाफिरमैंउसबालूकोकिउससमुद्रकेजलकेहटजानेसेनिकल आया

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

था बड़ी कठिनता और श्रम से लांघ कर उस पार पहुंचा और वहां से बहुत दूर तक आगे को चला
गया यहां तक कि दूर से एक वस्तु ऐसी दृष्टि पड़ी कि जैसे बहुत सी अग्नि प्रज्वलित हो
तो है उसको देख मैं अत्यन्त प्रसन्न हुआ और सोचा कि वहां मनुष्य अवश्य होंगे क्योंकि अग्नि
आप से नहीं जलती फिर जब मैं उसके समीप गया तब मुझको विदित हुआ कि अग्नि नहीं
किन्तु लाल नगीने का शहर है सूर्य की किरण पड़ने से वह शहर प्रज्वलित अग्नि के समान दृष्टि प
ड़ता है मैं उस शहर के निकट जाय सुस्ताने को बैठ गया और विचारा कि इस बड़े भारी शहर
का हाल मालूम करना चाहिये इतने में दस जवान उस मकान से निकले परंतु मैं उन्हें देख
आश्चर्यित और अचम्भित हुआ क्योंकि वो दसों जवान दाहिने नेत्र से काने थे और उनके सा
थ एक वृद्ध मनुष्य बहुत लम्बा जिसका स्वरूप भी बहुत उत्तम था देखा मैं अभी इसी आश्चर्य में
था कि इतने मनुष्यों को दाहिनी आंख से काने और एक ही स्थान पर क्यों इकट्ठे हैं इतने में वह
जवान मेरी ओर अति प्रसन्नता से प्रणाम करके बोला कि तुम्हारा आना इस स्थान पर क्यों कर हु
आ मैंने उनको उत्तर दिया कि मेरा वृत्तान्त बहुत बड़ा है यदि तुम दया कर बैठ जाओ तो मैं तुम्हा
री आज्ञानुसार अपने वृत्तान्त को प्रगट करूं तो सब बैठ गये फिर मैंने आपना सम्पूर्ण वृत्ता
न्त जैसे कि अपने देश को छोड़ा था और वहां के पहुंचने तक उनसे प्रगट किया वह सुनकर मे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
८०
97

त विस्मित हुये तदनंतर वह सब जवान मुझे उस गृह में ले गये उसके भीतर मैं ने दालान दर दाला
न बहुत लंबे चौड़े देखे उनके विशेष प्रकार स्थल को बारहदरी आदि अति उत्तम उत्तम सामा
ग्री और वस्त्र से बड़ी सजधज की थी और उस मकान के एक ओर एक गृह बहुत बड़ा और उत्त
म और गोल देखा जिसके चारों में दस नीले गृह कोठों के समान अलग अगल रात्रि के रहने औ
र उनके बैठने को ऐसे बने हुये थे कि प्रत्येक कोठे में एक मनुष्य अच्छी तरह रहे और उस गोला
के बीच में एक और काला दालान उन दस कोठों के अपेक्षा बहुत बड़ा था उस में वह दस मनुष्य
जिसका कि मैंने पहिले वर्णन किया है और उन दस कोठों में जो उस गोल के चारों ओर थे व
ह दस जवान अलग अलग जाय बैठे उन में से एक जवान ने मुझ से कहा कि हे मित्र तू भी इस
कालीन पर जो इस गृह के बीच बिछा हुआ है जाय कर बैठ परंतु किसी बात को जो हम क
रें न सखियो और यह भी न पूछियो कि तुम सदा हिनी आर्त्तस्वरों का ने हो प्रत्येक के विषय को
दाव चुप रहियो फिर वह हम हुऊ बहु काल के पश्चात वहां से उठा और उन दसों एकान्त म
नुष्यों के हेतु भोजन लाया और प्रत्येक मनुष्य को अलग अलग भाग दिया और एक भाग मु
के भी दिया मैं ने उसे उसके साथ खाया जब हम भोजन कर चुके तो उसे रहने एक एक मदिरा का
गिलास हम सब को दिया फिर उन सब ने मेरे हृत नान को अद्भुत और असवें जान दो हराने।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कोकहामैंने अपनेहृतांतकोफिरकहिसुनायाफिरचिरकालनकरस्थरउरवकोवानोक
रतेरहे जबरात्रिबहुतगयीनहुईतोएकजवानने हमसेकहाकि अबहमारेशयनकरने
कासमय आपहुंचा अबतकतुमहमारेनियमकीरक्षानहींलाये इसबातकोसुनकरवह
उठा औरएककोठेसेदसथालनीलेकरठौरसेठकेरुपलाया औरएकएक थालदीपस
हितप्रत्येकमनुष्यकेसन्मुखरक्खा उन्होंनेउनथालियोंकोखोलातोप्रत्येकथालीमेंए
खओरकोयलेकीस्याही औरकालादियाथाउन्होंनेउसराख औरस्याहीकोमिलाकर
अपनेमुखपरमलातोउसकालककेमलनेसे अनोखेऔरभयानकविदितहोनेलगेफि
रसबचिल्लायचिल्लाय रोयऔरमुखवोसिदय पीटपीट कहनेलगेकिदेखोहमारीनि
र्बुद्धिता औरअज्ञानताकाफलफिरइसीभांतिचिरकालनकरोनेपीटनेरहेजबधुपके
रुपतोवहीहमप्रत्येककेनिकटलोटियाचिलमचीलेगयाहरएकने अपनाहाथमुख
धोया औरवस्त्रजोफारडालेथेबदलकरअपने मकानोंमेंजायसोरहेयहउन मनुष्यों
कोदशादेखमैंअत्यन्त अचंभाहुआ औरकईबारबराकरचाहाकि अपनेप्राणकोतोडडु
न्काहतांतपूछूं औरउसकाकारणजानूंपरंतमैंनेअपनेकोबहुतठहराया औरभोरतक
उसीसोचविचारमेंमुझेनिद्रानआईहमसेरदिनभोरकोजबहमउसस्थानसेहवाखानेकोनि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
९८

98

कहलेतो मैंने उनसे कहा है मित्रो तुम मुझे ज्ञानी और बुद्धिमान विदित होते हो परंतु रात्रि को।
जो मैं तुम्हारी दशा देखी तो बड़ा अचंभा किया कि ऐसा काम विदितों के सिवाय बुद्धिमा
नों का न होगा और मैं बड़ा शोचित हूं यदि तुमसे इसका कारण पूछता हूं तो प्रण भंग हो
ता है जो नहीं पूछता तो मुझसे नहीं रहा जाता अब मुझ में ठहरने की शक्ति नहीं इसवास
ते सब पूछता हूं तुमने अपना मुख क्यों काला किया और दाढ़ी नीआवसे क्यों काने हो उस।
ने उत्तर दिया कि हम इसका कारण नहीं कह सके अगर तुमके हमारे साथ रहना स्वीकार।
हो तो इन बातों के पीछे न पड़ो फिर वह दिन जब व्यतीत भया तो हमने रात्रि को अलग भो।
जन किया और उस वृद्ध ने उसी भांति थालियों को उनके सन्मुख रख दिया और वे जवान नि।
यम अनुसार मुख अपना काला कर बही कि यों मैं इस दशा को हम सरीवर दाख महा अथी
ऐजूआ और उसने कहा है मित्रो तुम इस विषय को मुझे बतलादो और मुझे को ऐसा
उपाय बतादो कि जिससे मैं अपने देश में पहुंचूं क्योंकि मुझे रमना थोड़ा नहीं कि मैं तुम्हारे
साथ रह तुम्हें इस दशा में देखा करूं और उसके कारण को न जानूं यह सुन उनमें से एक म
तुष्पने मुझे उत्तर दिया कि हमारी इस दशा को देख इतना न घबरा हमने तेरी मित्रता और भ।
लाई के कारण इस विषय को नहीं प्रगट कर सके ऐसा न हो कि जो तुम्हारी भी हमारी सी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दशाहोजायजोतुमचाहतेहोकिहमारीइसअभाग्यताकोजानलेतोहमसेकहहमइसकाउपा
यकरेंमैंनेकहानिश्चयहैमैंतुमनेकीलालसारखताहूंमैंनेइसकहनेसेउसजवाननेकहाफिर
हमतुमकोसमझातेहैंकिइसबातकेपीछेनपड़ोऔरहमारेउपदेशकोमाननहींतोहमारेसा
मानतुमभीदाहिनोऔरवेसेकानाहोजायगामैंनेउत्तरदियाकिइसविषयमेंमुझेकोईडरवे
पर्जचेतोमुझेअंगीकारहैउसमेंतुम्हाराकुछदोषनहींमैंउसेअपनीअभाग्यतासेसमझूंगा
फिरउसजवाननेकहाजोकिसीकारणतुम्हारादाहिनानेत्रकानाहोजायगा औरहमारेनि
कटआवोगेतोहमतुमकोअपनेसाथयहांनरहनेदेंगेक्योंकियहांकेवलदसमनुष्योंकेरह
नेकास्थानहै सोवहांदशोवर्तमानहैंग्यारहवेंकीयहांसमाईनहींमैंनेकहायहमोमुझेस्वी
कारहैजोकुछहोसोहोमुझेइसभेदकोजनादोजबउनदशोंजवानोंनेदेखाकिमैंअपनीप्रतिज्ञा
मेंदृढ़हूंतबउन्होंनेएकभेड़कोमारा औरउसकीखालनिकाली औरएकछुरीकोजिससेभेड़
कीखालनिकालीथीमुझेदेकरकहाकिइसकोरक्षापूर्वकअपनेनिकटरखोयहतेरेकाम
आवेगीअबहमतुमकोइसभेड़कीखालमेंबंदकरबनमेंरखकरचले जावेंगेऔरएकबहुत
बड़ापक्षीजिसकोरुखकहतेहैंवहआकरतुमकोअपनाभक्षसमझकरयहांसेउठाकरऊपर
कीओरलेउड़ेगाफिरतुमकोएकपहाड़कीचोटीपररखकेखानेकीचाहनाकरेगा इसवास

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
९९
99

नेपहिलेसे तुझेचैतनमकरतेहैं किजिससमयअपनेकोपृथ्वीपरपाइयोतोतुरंतहमकुरोसे
भेड़कीखालकोचीरतीचबातेहुएनिकलआइयोवहपक्षीतुझेदाबबैठेगा औरवहांसेउड़
जायगाफिरवहांनवहहरकोनिर्भयहोयभागजाइयोफिरथोड़ीदूरपरतुझेएक अत्यंतसुंद
रऔरसत्रसर्वमंदिरमिलेगाउसमकानकेनीचेसेऊपरतकसुवर्णकेपत्रलगेहैं औरउसपर
उचित उचित स्थानोंपररत्नहीरे औरबज्रमल्लमणिजटितहैं फिरतूउसकेदरवाजेसे किव
ड़सदैवखुलारहताहै होकरउसमकानकेभीतरनिर्भयचलेजाइयोहमसबउसमकानमें
पारीपारी सेरहेहैंपरंतुजोकुछहमनेउसमेंदेखाहै उसकाहालतोनहम तुमसेसबनहींकहेंगे औ
रजोदशाहमपरहुईवहभीवर्णनकेयोग्यनहींक्योंकिवहांकाहालतोतुझेआपसे आप
विदितहोनायगापरन्तुइतनीबातकहतेहैंकिहमारेसमानतूभी दाहिनी आंखसे काना
होजायगाऔरहमारेसमानपश्चात्तापहोगाएकदिनएमककेहमलोगोंनेकोजो अमंत अपूर्वहै
स्नेऔरपल्लखेतोबड़ीभारीएकपुस्तकहै परंतुहमउससेप्रगटनहींकरसकतेजबवहज
वानइतनीबातकहचुकातोमैंनेकुछरीलेभेड़कीखालको अपनेऊपरलपेटाउन्होंनेउसे
चारोंओरसेइसभांतिसिसियाकिमेरेस्वासलेनेकाबाधकनहो औरबनमेंराखअपनेगुरु
कोचलेगयेथोड़ीदेरनहुईथीकिएकपक्षीआया औरमुझकोभेटसमकहदा औरअ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पनेपंजोमेंएकउसपहाड़कीचोटीपरलेगयाजबमैंनेदेषाकिउसनेमुझेफेंकखोहपररकवा
ननकालकुभीसेउसषालकोकाटकेबाहरनिकलआयातोवहपक्षीमुझेदेषतेही उड़
गयामैंउसगरुडकेदेषनेकीचाहनारखताथाइसलिएउसपहाड़परठहरनसका औरखलके
दोपहरकेपीछेउसमकानमेंपहुंचा औरउसमंदिरकोउनएकानजवानोंकेकहनेसे
भीअधिकसुंदरऔर अच्छापायादरवाजाउसकाखुलादेषोमैंवहांसेभीतरगया उसमें
एकसहनचौकोनाऔरबहुतबड़ादेषाजिसमेंकिएकदर्वाजासुवर्णकाऔरकितनेक
दर्वाजेचंदनऔरआबनूसकेथे औरबहुतसीसीढ़ियांजिनमेंसेचढ़करउनराहोंमेंजा
तेथे औरवहसोदर्वाजेकोशऔरबागोंकेथेउनमें असबाबभराहुवाथाफिरमेरेसन्
मुखएकदरवाजाबारहदरीकादृष्टिपड़ाउसकेभीतरजाकरदेषाकिचालीसनोयां।
वनसुंदरीस्त्रियांउत्तमउत्तम आभूषणऔरवस्त्रसेसजीहुईउसबारहदरीमेंबैठीथीमुझे
देषतेहीउठषड़ीहुई औरमेरेप्रणामकरनेकेपहिलेही अमितहर्षसेप्रसन्नतासे
बोलीकिआइयेतुमकुशलसेहो औरएकनेउनमेंसेकहाहमसबबड़ीदेरसेतुम्हारेआ
नेकीराहदेषतीथीपरमेश्वरकाधन्यवादहै किउसमेंसबगुणजैसाकिहमचाहतीथी
पाया औरविश्वासहैकिहमारासंगभीतुमप्रसन्नकरोगे औरकिसीभांति अप्रसन्ननहो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्र गेफिरउन्होंनेमुझेशनिष्ठापूर्वक एकउत्तमस्थानमेंकिउनकी अपेक्षाकुछह्रस्वथाबैठायाकि
१०० ननाहींमैंनेवहांबैठनेकाबहानाकियाकियहस्थानमेरेइसदशाऔरबैठनेकेयोग्यन
हींपरंतुउनसबनेकहातुमइससमयसेहमारेपतिऔरस्वामीहो औरहमब्रह्मचारीबांदीऔर।
100 आज्ञापालकहैंउसकालकीप्रसन्नता औरआनंदजोउनकेदेखने औरआज्ञापालकतासे
मुझकोप्राप्तहुआथावर्णननहींकरसकता संसारमेंइससे अधिकपदवीप्राप्तनहोगीजोमुझके
उससमयप्राप्तथीफिरएकगरमजलमेरेपांवधोनेकोलाई औरसुगंधितजलमेरेहाथप
रडालनेलगी औरकिसीनेवस्त्रलाकरपहिनाये औरकिसीनेनानाप्रकारकेव्यंजनमेरेसन
मुखलायधरे औरकोईसुराहीऔरउत्तममदिराकागिलासमेरेपिलानेकोलेकेखड़ीहुई
निदानयहसबसेवाहर्षपूर्वककरतीथीउनकोदेखमैं अपनेमनमोहितहुआकिअपने स
र्वसोचऔरआपनिकोभूलगया औरअपनेकोसर्वसंसारकाबादशाहसमझनेलगा
फिरमैंनेउनस्त्रियोंसहितभोजनकियाऔरमदिरापीजबभोजनकरचुकेतोउनसबने
मेरेचारोंओरबैठमुझसेसारेकावृत्तांतपूछामैंनेउनसे अपनासर्ववृत्तांतकहनाआरंभ
किया यहांतककिरात्रिहोगईजबमैंअपनेवृत्तांतकाहालउनसेकहचुकातोकईस्त्रि।
योंनेमुझसेबातेंकरनीआरंभकीऔरकइयोंनेउसगृहमेंरोसनीऐसीकीकिदिनविदित

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

होने लगा और रूपसी अच्छी भांति और बुद्धिमान तो सदा पिय अज्वालिनी किये थे कि जिनको मैं दे।
ख अत्यन्त प्रसन्न हुवा फिर उन्होंने भोजन की थालियां उठाय फल और मिठाई आदि लाय मेज
पर रक्खी और नाना प्रकार की उत्तम उत्तम मदिरा और फालसे आदि का सरबत शीशों और।
अमृपात्रों में लाय धर दिये जब संपूर्ण वस्तु आ चुकी तो उन्होंने अथमस्तक को उस पर बैठाया
और कई सुंदरियों में रानि कठ बैठी और कई गीत बजाने लगीं फिर चिरकाल तक मदिरा पी
ने रहे कोई तो बाजों से स्वर मिलाय गाने लगी और कोई नाचने लगी यहां तक कि अर्धरात्रि
व्यतीत न व्यतीत हुई अभी गाना बजाना बंद न हुआ था कि एक स्त्री ने उठके से कहा आज बहुत
दूर से आये और थके हो अब शयन करो आपके वास्ते शयन स्थान में घ्यार है परंतु जब आप
सोने को जाय तो हममें से एक को प्रसन्न करो तो वह रात्रि को आपके कोठे में जाय सो रहे मैं
ने कहा यह अनुचित है कि मैं एक को तुममें से कि रूप अनूप समान और चितचोर हो चुन लेये
विषय मेरी ढिठाई और परस्पर के डाह का कारण होगा उस सुंदरी ने उत्तर दिया कि हम
अपने चित से तुम्हारी प्रसन्नता में प्रसन्न हैं हम में डाह नहीं कि परस्पर की प्रसन्नता का कारण
हो तुम आनंद से एक को हम चालीस स्त्रियों में से हाथ पकड़ अपने साथ ले जाव कोई बुरा न
मानेगी क्योंकि हम एक पीरी पारी से तुम्हारे भोग से आनंद को प्राप्त होंगी कोई स्त्री आज औ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मञ रकोईकलहसमेंउत्पन्नहोगीलऔरशोचविचारनकरोपरंतुएककोपसंदकरोमैंनेलाचारहो
१०१ अपनाहाथउससुंदरीकेऔरबढ़ायाजोमुझसेउससमयवार्ताकरतीथीउसनेतत्कालअ
पनाहाथमुझेदियाफिरवेसबएकउत्तमशयनागारमेंलेजायउसस्त्रीसहितजिसकाहा
थमैंपकड़ेथाछोड़कर अपनेअपने स्थानमेंसोईदूसरेदिनभोरकोमैंनेनिद्रासेजगपहि
लेइसकेकिवासबस्त्रियांमेरेस्थानमेंआवेंतबरेन औरप्रकारकेवस्त्रऔररत्नकिपहिलेसे
उसस्थानमेंलोगरक्तवेषपहिनेफिरउनतालीसस्त्रियांआयमुझेप्रणामकियाऔरऋशा
लदेमएथी औरमुझेस्नानागारमेंलेजायनहलाया औरनानाप्रकारकीसेवाकोजबमें
स्नानागारसेबाहरआयातोवस्त्रउससेभीउत्तमपहिनाये औररुचिरकालतकभोजनकरता
रहाफिरसुंदरनमासे अर्धरात्रितकपहिलीरात्रिकेसमानदिखलायेजबशयनकरने
कासमयआयाफिरउन्होंनेमुझसेकहाकिजिसे आपहममेंसेपसंदकरेंवहआपकेसा
थजायसोरहेमैंनेएककाहाथउनमेंसे पकड़लिया औरशयनागारमेंजायसोरहाफिर
भोरकोस्नानकरऔरवस्त्रपहिनकेभोजनकिया औरअद्भुतचरित्रोंऔरतमाशोंकेदेख
नेमेंलगारहातिथानउसयोगीनेजोबदासेकहाहैसुंदरीमैंअबतकतुमकोकहूंइसीभा
तिप्रेमेकनिशाकोउनचालीसोंस्त्रियोंमेंसेएककोलेजायसोतानिदानप्रेमनआनंद औ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रहूंषसे यकबरसावर्षऽसगहूंमेंरहाजबयकदिनऽसवर्षकाशेषरहायायानोवोसंसर्गएंस्त्रियो अनेक
भोरकोआयसुकेप्रणामकरतीऔरहर्षसहितऊपालहूमसच्चनीऽसदिनवोसबरोनोऽफईआ
ईऔरसुकेहृदयसेलगायकहनेलगीहै पाहजादे अबहमतुमसेविदाहोतीहैं तुम्हारा
परमेश्वरकारक्षकहेऽनकेरोनेसेमें अनतशोचितऊवाऔरसच्चातुम्हारेरोनेकाका का
रणहैऔरसुकेसकोंबिदाहोतीहोपरमेश्वरकेवास्तेयहभेदमुझसेकहोकिमेंइसविषयमें
तुम्हारीऊच्छसहायताकरसकोंहूंवानहींऽन्होनेकहापरमेश्वरकीइच्छायोंहीहैकिहम।
तुमकोकभीनदेखेंऔरनतुमहमकोदेखोकोंकिबऊतसेमनुष्यतुम्हारेसमानयहांआवे
औररहेफिरअगलहोगयेअबहमकोऽनकाहालऊच्छभीविदितनहींकिवोकहांऊये जो
नेहैंयानहींयहकहवोफिररोनेलगी मैनेयबराकरकहातुमअपनेशोककाकारणकोंन
हींअगटकरतीहोऽन्होनेकहाहमतुमसेसकाकेहैंयहसमयतुम्हारे औरहमारेअलगहो
नेकाहैऔरफिरआशाहैनेनंहीं कितुमकोदेखेंपरंतुजोतुमचाहो औरअपनीबातपरदृढ
होतोफिरहमकोआशाहैकितुमकोदेखेंइसीप्रकारसंगहमारे औरतुम्हारेबीचमेंरहैमें
नेकहाइसबातसेतोऊच्छनहींचिनऊआकिइसकहनेसेतुम्हाराअभिप्रायकाहैतुमकोपर
मेश्वरकीसौगंधहैइसविषयकोस्पष्टवर्णनकरोतबएकनेकहासबकेपहिलेहमतुम्हेंज

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्र
१०२
102

जाती हैं कि हम चालीस साथ जाती हैं वर्ष भर हम इस द्वारे में जीव हलाने को रहती हैं फिर हम।
अवश्य करके हम चालीस दिवस के लिये यहां से जाती हैं और चालीस दिवस के पश्चात् फि
र इस मंदिर में आ जाती हैं कल के दिन यह वर्ष पूरा हुआ इस कारण आज के दिन हम सब तुम से
विदा होती हैं यही हमारे रोने का कारण है अपने जाने के पहिले संपूर्ण वस्तु और कोठा की
कुंजियां तुम्हारे सामने दरवाजे की तरफ़ रख जायेंगी कि हमारे जाने पीछे प्रेम करके हमें फिर करा
लना यदि तुम उस से खोलोगे तो फिर हम तुम को कभी न देख सके गी परन्तु हम से तो यह छोड़ न हो स
केगा तुम उस किवाड़ को अवश्य खोलोगे यही हमारे तुम्हारे वियोग का कारण है इसी से
हम रुदन करती हैं यदि परमेश्वर तुम को यह बुद्धि दे कि हमारे पश्चात् उसे न खोलो तो के
वल इस छब्बीसवें किवाड़ को कभी न खोलना यदि तुम हमारे कहने के विपरीत करो
गे तो तुम को अवश्य दुःख प्राप्त होगा और हमें भी शोक और क्लेश होगा फिर तुम्हें हम सरीखे
गे दे देकर कहती हैं कि ऐसा काम न करना और हमें थोड़े दिन हमारे इस छब्बीसवें किवाड़ को कभी न खोलना और हम से यों ही कहा कि चालीस दिवस के पश्चात्
फिर तुम्हें आय यहां देखेंगी हम आपस में सब वस्तु के दरवाजे की कुंजी को अपने निकट रखावनी।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri.

परंतु यह उचित नहीं कि तुम ऐसे शाहजादे को देने को इन्कार करो कि तुम्हारे अविश्वास
का कारण होउं न कोई ये बातें सुन तुझे अनंत शोच हुआ और कहा तुम्हारे अलग होने में मु
के बहुत दुख होगा और तुम्हारे इस उपदेश से मैं कान न रहूं तुम्हारे आज्ञानुसार अवश्य करूं
गा और तुम्हारे पीछे सोने के दरवाजे को न खोलूंगा यह तो बहुत ही सुगम है जो इससे अधि
क कोई बात कठिन होती तो मैं उसे भी अंगीकार करता इसमें तो मेरा ही अर्थ है इसके वि
शेष जो बात कि तुम्हारे हमारे अलग होने का कारण है तो मैं जान लूं फकीर को कहूंगा नि
दान मैं एक एक को हृदय लगाउं न सब को बिदा किया फिर वो सब उस मकान में से चले ग
ई और मैं अकेला रह गया उनके जाने से मुझ को बहुत दुख हुआ यद्यपि केवल चालीस दि
वस को वियोग था परंतु एक एक घड़ी मुझे वर्ष के समान थी निदान मैंने अपने चित्त में
सोचा कि उनके उपदेश अनुसार केवल सुवर्ण का दरवाजा न खोलूं अन्य दरवाजे जिनकी
कि मुझे आज्ञा है खोल कर उनकी सैर कर और अपने चित्त को प्रसन्न करूं फिर मैं उनकी कुं
जियों को जो रत्नों से बंद कर रक्खी थी ले पहिले दरवाजा खोला जब उसके भीतर गया तो उ
समें एक फलों का बाग देखा कि जिसके सरिस संसार में न होगा जिसमें हजारों सघन और सो
भायमान हरे उचित उचित स्थान पर लगे हुए थे उसमें बहुत से नाना प्रकार के उत्तम उत्तम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्र १०२ 103

अच्छे वृक्षों के स्वादिष्ट फल लगे हुये थे जिनको कि मैं बखान नहीं जानता था लटक रहे थे ओ
र उन हदों में जल इस भांति पहुंचता था कि पक्की छोटी छोटी नहरें चारों ओर यक बड़ी
नहर से काट इस कारीगरी से लाये थे कि बिना महाघता अनेक हद की जड़ में जल पहुंचता
कि जिस्से नवीन पत्ते ओर फूल उत्पन्न होने ओर कोई कोई हद अधिक फल लगने से झुक
गये थे अमों में केवल उनके पकने को पानी पहुंचता बुद्धिवानों ने इस भांति की नहरें स्था
न स्थान पर बनाई थीं कि अनेक समय जल पहुंचने से उस बाग में सदैव हरियाली रहती थी ओ
र हद कभी न मुरझाने चिरकाल तक मैं उस बाग में फिरता रहा ओ अनेक हद्द को जो अ
द्वितीय ओर अद्भुत थी ध्यान से देख आश्चर्यित होता फिर मैं उस दरवाजे को बंद कर दू
सरा दरवाजा खोला उसमें केवल वृक्ष वाटिका थी ओर फूलों के हदों में जल बड़ी कारी
गरी से पहुंचता ओर ऐसा कोई वृक्ष संसार भर में न होगा जो उस वाटिका में न हो गुलाव
चंबेली बिनफसा नरगिस मोसन बेला आदि नाना प्रकार के रंगों के फूल फूले हुये थे कि
जिनके सुवासे वसंत की वायु सुगंधित हो रही थी उनकी लपटों से मैं मगज भर गया फिर।
मैं वह भी दरवाजा बंद कर तीसरा दरवाजा खोला उसमें एक पक्षिशाला था जिसमें संगमर।
मर का फरश था ओर पिंजड़े संदल ओर आबनूस के लटकते थे बुलबुल तोता आदि पक्षी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अपनीमिहरवाणी औरबलवहानेसेचित्तकोप्रसन्नऔरउभारतेथे औरउनपक्षियोंकेदाना
पानीकीउत्कंठियांबड़ामहलपत्थरकाथा औरबड़ापक्षीचरइतनाबड़ाथाकिसौमनुष्यों।
सेउनकीरक्षानहोसकेपरंतुउनबागोंमेंएकभीमनुष्यदृष्टिनपड़तााथाऔरविशेषइसके
एकांतताकाभीवहांअधिक औरअर्थकाथनदेखपड़ताकिजिसकेदेखनेसेजोहृठजाय
फिरजबसंध्यासमयआनबेबपक्षीबसेरालेनेकोअपनेअपनेस्थानपरजाबैठेऔरमैंअप
नेमंदिरमेंआयसोरहाहमसेदिवसभीरकोजायएकऔरदरबाजाखोलाउसमेंबड़ाभा
रीमहलपायाकिजिसकेचारोंओरबड़ेबड़े गृहबनेहुयेथे औरउसमेंचालीसदरबाजे
बनेदेखपरंतुबादरवाजाखुलेहुयेथेऔरएकदरबाजेसेकोठेमेंजानेकामार्गथाउस
मेंउत्तमएककोठाकेवलमोतियोंसेभराथाउसकेएक औरफेरमेंकहनरकेअंडेसमानमो
तीथे औरदूसरेफेरमेंउज्ज्वलउसकेछोटेथे औरइसीप्रकारएकईदरमेंअनेकभांतिकेमोती
अलगअलगथे औरदूसरेकोठेमेंहीरे औरमणिऔरवोमणिभीथेजोरात्रिकोदियेकेस
मानचमकतेथे औरतीसरेमेंनीलमणिचौथेमेंसोनेकीईंटेंऔरपांचवेंमेंअसर्फियांछठे
मेंचांदीकीईंटेंसातवेंमेंरुपयेऔरशेषोंमेंबिल्लौरहसनियांऔरनानाप्रकारकेरत्नऔर
रबानिकेपत्थरजैसामूंगाआदिइनबड़ेमहलवस्तुसेसंपूर्णगृहभरेहुयेथेइसअथाहद

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
१०४

104

यकोदेखैमैंआश्चर्यितहुआ औरसोचाकियदिसम्पूर्णसंसारकाद्रव्यऔररत्नइकट्ठाकिया
जायतोभीइसद्रव्यकेसमाननहोगामैंकितनाभाग्यवान औरआश्चर्यीहूंकिइतनारत्नऔ
रऐसीसुंदरचालीसशाहजादियांभोगकरताहूंउसयोगीनेकहाहैसुंदरीउन अद्भुतवस्तु
ओंकाकहांतककवर्णनकरूंकिजिसकेप्रगटकरनेमेंजिह्वाअचलहैजबइसीभांति दे
खतेदेखते उन्तालीसदिनव्यतीतहुयेइससमयांतरमेंमैंनेनिदानवेदरवाजेखोले
औरहरएकवस्तुकोदेखकेमैनेअचंभाकियाफिरवहांकेवलएकदरवाजारहगयाजि
सकेखोलनेकोमुझेनिषेधकियाथाचालीसवेंदिनकिउसकेभोरवेसबशाहजादि
यांउसमकानमेंआतीं औरमुझकोउनसेभेंटहोतीभोरकोउठतेहीशैतानेनेमुझेबहकाला
या तोमैनेउसदरवाजेकोखोलाउसकिवाड़केखोलतेहीउसमेंसेऐसी अच्छीसुगंध
आईजिससेमैंबेसुधहोगयाफिरजबसुधिसंभालीतोविचाराकिइसकेभीतरजाय
देखभालबंदकरहूंगानिदानउसकेभीतरगया औरथोड़ीदेरतकठहराकियह
सुगंधकीलपटवायुमेंफैलकमहोजावे इतनेमेंउसकिवाड़केभीतरजायएकगृहब
हुतबड़ादेखाकिउसकीपृथ्वीपरकेसरबिछाहुआथा औरउसकेभीतरसुवर्णके
तिपाइयोंपरअगरआदिकेतेलसेदीपप्रज्वलितथेइसीकारणबड़ीतीव्रसुगंधकी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लपेटें वहांसे आतीथी इसकेसिवाय वज़नसे हुयेके दीपकस्वर्णकेथे जिनमें तेलसेजलेहुयेदेखे
इसकेसिवायएक और अद्भुत चरित्र देखाकि वहांएक बड़न रुद्रस्पृशाको घोड़ाबंधाहुआ
थामैं उसकेनिकट जाय उसे अच्छीभांति देखनेलगा उसकी लगाममें सोनेके पत्र लगेहुयेथे
और उसघोड़ेके सन्मुख एकपात्रमें तिल और जो बड़नसार रक्खाथा और एक पात्रमें जल
उसके पीनेके वास्ते धराथा मैंने उसघोड़ेको पकड़ बाहर चांदनीमें निकाला कि उसे औ
र भली भांति देखूं फिर उसपर सवार होके मैंने चाहा कि वह चले परंतु वह अपने स्थान
से न हिला तब मैंने उसको चाबुक मारा ज्योंही चाबुक लगा वह घोड़ा बड़े भयानक शब्द से
हिनहिनाया तदनन्तर अपने परोंको कि जिनको मैंने नहीं देखाथा फैलाया और आका
श को और इतना ऊंचा उड़ाकि पृथ्वी न दिखाई देतीथी मैंने गिरनेके भयसे उसघोड़ेके गर्द
न के बाल पकड़े उसकी गर्दनसे लिपट गया फिर उसघोड़ेने पृथ्वीकी ओर उतरना आरंभा
किया निदान उसी तांबेके मकानकी छतके ऊपर उतरा और मुझे उतरना अवकाश न दिया
कि मैं उसके ऊपरसे उतरने पातासे उसने तुरत अपनी पीठको इस वेगसे हिलायाकि मैं चित गिरा औ
र अपनी पूंछ मेरी दाहिनी आंखमें मारी कि वह फूट गई यही मेरे काने होनेका कारण है उ
स समय मुझे कहना उन जवानोंका स्मरण आया फिर वह घोड़ा अपने परोंको फैलाय उड़ा और

सप्त
१०५
105

रमेरादृष्टिसेगुप्तहोगयामैंउसीआपत्तिकीदशामेंउठाओर आंखपरहाथरखकेवेज्येउसमकानकी
छतपरधीरेधीरेचलाओरनेत्रजानेकीपीडासेअतिउद्विग्नथाफिरमैंछतकेनीचेउतरा ओर
वारहदरीमेंजायउनदसकोठोंकोकिजोउसशहरकेचारों ओरथे ओरउसकेबीचवालेकोजो
उनदसोंसेअलगथापहिचानाकियहवहीगफाहैजिससेएकपक्षीमुझेपहाडपरउठालेगा।
याथापरंतुउससमयदसोंजवानउसवारहदरीमेंनथेमैंवहांउनकेआनेकामार्गदेखताथा।
इतनेमेंवहभीउसशहरमनुष्यसहितआये ओरमेरी तरफउनकाध्यानभीनकियाओरनेमेरी ओरए
छूटनेकाउनकेपश्चात्तापकिया ओरकहाहमइसमेरी आपत्तिकेकारणनंहीहोजयेमैंनेकहातुम
समकहतेहोजोउनकोकिमुझपरउनआकेवलअपनेहीहाथोंकेकारणजोआपरंतुइसके अ
छकेहोनेकाउपायभीहैउन्होंनेकहाकियदिहमइसदुःखकाउपायविदितहोतातोहमअ
बधपकरते ओरइसीआपत्तिमेंकिजिसमेंतुमपडेहोहमभीफसेज्येहैं एकएक वर्षतकरह
मसबबडेआनंदओरचैनसेउसमकानमेंरहेयदिसुवर्णकादरवाजाउनथाहजारदिनोंकेपश्चा
तूनखोलनेकेहमारीयेदशानहोती ओरसदैवउसी आनंदओरचैनमेंरहतेयदितुमहमसब।
से अधिकबुद्धिमानओरचैनमध्येपरंतुउससुवर्णकेदरवाजेकेखोलनेकिनानहसकेओर आ
पनेकोइसदुःखमेंडाला ओरइसदंडकोप्राप्तज्येहमतोहैंभी अपनेहालमेंसामिलकरनेप

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रंतु हम अगे तुम से कह चुके हैं कि इस स्थान पर और मनुष्य की सम्वाई नहीं है इससे तुम्हारे वास्ले
यही उत्तम है कि यहां से तुम बुगदाद नगर में जावो वहां पर ऐसे मनुष्य से मिलाप होगा जो तुम्हा
रे दुख को हरकेगा में उनके कहने के अनुसार बुगदाद को चला मार्ग में अपनी भौं और दाढ़ी मुंड़
वायें के वस्त्र पहिन बहुत दिनों के पश्चात् चलते चलते आज सायंकाल को इस नगर में पहुंचा
और सहर दिवाली पर इन दोनों योगियों से कि वो भी मेरे समान अभी आये थे भेट हुई फिर हम ती
नों रात्रि के रहने के लिये सहर ढूंढने लगे संयोगवस अपने सुभाग्य से तुम्हारे द्वार पर आये तुम
ने अतिथ्य पोलन को राह से अपने घर में जगह दी और भली भांति आदर किया कि जिससे कृतज्ञ
हैं जब तीसरा योगी भी अपना वृत्तान्त कह चुका जेबदा ने उससे और उसके साथियों से कहा कि तुम
तीनों का अपराध में ने क्षमा किया अब तुम यहां से चले जावो तब उन में से एक ने कहा कि हम आ
शा रखते हैं कि हमें इतनी आज्ञा हो कि यहां ठहर कर इन तीन मनुष्यों का वृत्तान्त भी जो हमारी सा
था में हैं सुन लें जेबदा ने खलीफा जाफर और मसरूर की ओर देखा कि उनकी पदवी को न जान
ती थी ध्यान देकर कहा अब तुम तीनों भी अपना अपना वृत्तान्त कहो जाफर मंत्री ने विनय को है
तु देर हम अपना वृत्तान्त इस महल में पहुंच विस्तार पूर्वक कह चुके हैं और अब भी आपके सा
म्हने कहते हैं हम तीनों मनुष्य मोसल के व्योपारी हैं अपने व्योपार की वस्तु बेचने को इस नग

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त रेमेंआयेथे औरसरायमेंउतरेहैं इसरात्रिकोयहांकेएकव्योपारीनेहमकोन्योतादियाथा इसलिये
१०९ उसनेहमसबकोअपनेगृहमेंलेजायनानाप्रकारके उत्तमउत्तम औरस्वादिष्टअन्नखिलाये
औरमदिरापिलाईफिरदेरतकउससभामेंगीतनृत्यआदिहुआयहांतककिगानकाशब्दसुनरां
106 दकेलोगदौड़े आयेऔरउससभाकेबहुतमनुष्योंकोपकड़लियाहम अपनेसुभाग्यसेभाग
करनिकलआयेपरंतुरात्रिव्यतीतहोनेसेसरायकादरवाजाबंदहोगयाथा हमविचारतेथे
किकहांजावेंइतनेमेंहमइसगलीमेंपहुंचे औरगानेबजानेऔरहंसनेबोलनेकाशब्दतुम्हारेघ
रसेसुनहमनेदरवाजाखुलवाया औरतुम्हारी आज्ञानुसारभीतरचलेआयेजबदासनेइननीकी
थासुनजानाकियहसबसवसुवसलकेव्योपारीहोंगेजैसाकिवेप्रगटकरतेहैंसमझाहोगाफिरउ
नसबसेकहातुम्हारा अपराधक्षमाकियाअबतुमयहांसेचलेजाओ औरइसभांतिललकारके
आज्ञाकीकिजिसकेसन्मुखसेखलीफाजाफरऔरमसरूर औरतीनोंभागे औरवोमजहूआ
सातोंमनुष्यकहतेसुनेबिनातुरंतउसमहलसेनिकलगये क्योंकिसातोंदरवेशोंनेगोखझोल
लेयज्ञयेजबदासकीआज्ञाकेपालनेकोखड़ेथेउनकेनिकलतेहीउसमयइसकाकिवाड़बंदहो
गयाऔरखलीफानेअपनेवृत्तांतकेप्रगटकरनेविनाउनयोगियोंसेकहातुमपरदेशी अभी
आयेहोइसनगरकेमार्गोंकोनहींजानतेनिशाकेअंधियारेमेंकहांजाओगेउन्होंनेउत्तरदिया

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कि हम इसी विचार और शोच में हैं। खलीफा ने कहा हमारे पीछे चले आवो हम तुम्हारी सहायता
करेंगे और मंत्री के कान में कहा कि तू इन तीनों योगियों को अपने घर ले जा और कल मेरी सभा में मे
रे सन्मुख लाइयो मंत्री जाफर अपने स्वामी की आज्ञानुसार उन तीनों योगियों को अपने घर ले गया
और मजहर अपने शहर गया। खलीफा मसरूर सहित अपने महल को गया और अपनी शय्या प
र जा लेट गया परंतु भोर तक उसे निद्रा न आई और उन्ही बातों को कि उसने देखी थी और सुनी थी स्मरण क
र अचंभित होता और चाहता था कि इस वृत्तांत को जान ले कि जेबदा कौन है और उन कुतियों
को इतना क्यों मारा और अमीना के बदन पर कोड़ों के काले चिन्ह हैं इसी विचार और शोच से उठ भोर
को सभा में गया और सिंहासन पर जा बैठा इतने में जाफर मंत्री भी आय दंडवत कर खलीफा ने मं
त्री को आज्ञा दी कि जब तक मैं उन तीनों स्त्रियों और उन दोनों कालि कुतियों का वृत्तांत न जान न
लेगा न तब तक सुख से चैन न पड़ेगा है जाफर तू जा और तुरत उन तीनों स्त्रियों और तीनों योगियों
को मेरे सन्मुख ला इतनी आज्ञा मंत्री पाय उन तीनों स्त्रियों के घर गया और रात्रि के वृत्तांत को कु
छ भी न प्रगट कर खलीफा की आज्ञा प्रगट की यह आज्ञा पाते ही वह तीनों स्त्रियां अपने अपने
सुख पर वस्त्र डाल मंत्री के साथ चलीं और मार्ग में मंत्री ने उन तीनों योगियों को भी उठवा कहके
ने विना अपने साथ ले खलीफा के सन्मुख लाया खलीफा उनके आने ही अत्यंत हर्षित हुआ और

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्र
१०७
107

उनतीनोंस्त्रियोंकोआडमेंपीछेअपनेखड़ेहोनेकोकहाकिउनकीप्रतिष्ठाखलीफामहलकेसब
कोंपरस्तचितरहोओरतीनोंयोगियोंकोउनकीप्रतिष्ठाओरपदवीके अनुसारअपनेसमीपबैठाया
फिरजबवोतीनोंस्त्रियांखलीफाकीआज्ञानुसारउसस्थानपरबैठगईतबखलीफानेउनकी
ओरफिरकेकहाकलकीरात्रिमेंनेव्योपारीकेभेषसेतुमसेमिलापकियाथाओरहमसेतुम
हैंजोकुछदुःखजआयाथासोउसीकारणतुमतुफसेमकोपितनहईथीअबजोतुमकोमैंनेबुलाया
हैतोयहनसमझनाकिउसीविषयकेस्तवनकेलियेतुम्हेंबुलायाहैयोंछोरकवोमैंनेउस
विषयकोअपनेचितसेविस्मरणकरदियाओरतुम्हारे अनेसअनिहोषिनञआयदियहैबुं
जोयरमेंरखनेतुम्हेंदीहैसबगुणबुगदादकीस्त्रियोंमेंहोतीतोबहुतअच्छाहोतायदिहमसे
तुमकोबड़ाडरखेआमझआओरहमनेतुम्हाराबड़ाअपराधकिया परंतुतुमअपनीकृपासेहम
सबकोछोड़दियाकलरात्रिकोमेंमवसलकाव्योपारीथा ओरइससमयमेंहारूनरशीदसा।
तवांखलीफा अबवासकेथरनिकाओरअपनेबड़ेनवीकाअवराजहूंतुम्हारेबुलानेकाकारण
यहहैकिबतलाओतुमकौनहो ओरतुममेंसेएकस्त्रीनेकिसलियेउनदोकालीकुतियोंको
मारअपनेगलेलगाया ओरकोंएकस्त्रीकेकेधोंपरकालेचिन्हहैं खलीफानेइसवृत्तांतकोभ
लीभांतिउनसेकहाओरउन्होंनेभीसमझापरंतुमंत्रीनेफिरउसभ्रमकोदूरहटायसमझादियाय

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हरुनजेबजेबदाकावृत्तांत ॥ दोनेपहिलेअपनावृत्तांतइसप्रकारपरआरंभकिया ॥ जेब
दाकावृत्तांत जेबदानेखलीफाकेसन्मुख अपनीकथाकोइसभांतिवर्णनकियाकिहे बाद
शाहोंकेबादशाहमेरीकथाअद्भुतऔरअपूर्वहैकिउसकेसमानकभी अपनेनसुनीहोगीये
दोनोंकालीकुतियां औरमैंतीनसगीबहिनेंहैं अबइसवृत्तांतकोआपसुनियेकिक्योंयेदो
नोंकुतियांबनीऔरयेदोनोंस्त्रियांजोकिमेरेसाथहैंमेरीसौतेलीबहिनेंहैं औरवहस्त्रीकी
जिसकेकंधेमेंकालेचिन्हहैं अमीनाहै और दूसरीकानामसाफ़ी औरमेरानामजेबदाहै
अपनेपिताकेमरनेकेपश्चात् हमपांचोंबहिनोंने पिताकेसम्पूर्णधनकोपरस्परबांटलिया
येदोनोंसौतेलीबहिनें अपनेअपने भागकोलेअपनीमाताकेनिकटजायरहीं औरहम
तीनोंबहिनेंअपनी माताकेसमीपरहींकिमाताउससमयतकजीतीथीजबवोमरगईतो
तीन तीन हज़ारमुद्राहमतीनोंबहिनोंकोउनकेधनसेमिलेउनदोनोंबहिनोंनेकिहमसेब
ड़ीथीं अपनेभागोंकोपायविवाहकियाऔरअपनेपतिकेघरजायरहीं औरउनकेपश्चात्मैं
अकेलीरहनेलगीथोड़ेदिनकेपश्चात्मेरीबड़ीबहिनकेपतिने अपनासम्पूर्णमालऔरअ
सबाबबेचऔरवहभीजोमेरीभगिनीकेपासथासबकोइकट्ठाकरदोनोंस्त्रीपुरुषअफ़री
काकी औरवहांमेरेबहनोईनेअपना औरमेरीबहिनकासम्पूर्णधनऔरआभूषणादिखोदी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त उड़ाडालाजबवहनिर्धनहोगयातोउसनेकिसीवहानेसेमेरीवहिनकोतलाकदे अपनेगृहसेनि
१८ कालदियावहफटेहालोंऔरकठिनताओंऔरबड़े बड़े दुःखोंकोझेलते २ इतनीदूरसेमुरा
दादमेंपहुंची औरइसनगरमेंकहीं आसरानपायमेरेघरआई मैंनेउसेप्रतिष्ठापूर्वक अप
108 नेघरमेंरक्खा औरसबबपूछाकिकौनसाऐसादुःखहुवाकिजिससेतुम्हारीयहदशाहुईउस।
नेरुदनकरअपनासंपूर्णवृत्तांतप्रगटकियावहसुनमुझेबड़ाशोचहुवा औरमैंभीबहुत
रोईफिरउसकोस्नानकराय औरअपनेवस्त्रागारसेबहुतउत्तम उत्तम वसनपहिरायेफि
रमैंनेउससेकहाहै बीबीतुममेरीबड़ीवहिनहोमैंतुमकोमातासमानसमझतीहूं औरतु
म्हारेजानेकेपश्चातपरमेश्वरनेमुझपरबड़ीदयाकीकिरेशमकेवस्त्रोंमेंसेमुझेबहुतसा
लाभहुवासबजोकुछमेरेपाससेहैवहसबतुम्हाराहैतुमभीइसीकाव्योपारकरोजोमैं कर
तीहूंउससमयसेमैंऔरवहदोनोंएकहीगृहमें बहुतआनंदऔरचैनसेरहनेलगीं औ
रबहुधाहमदोनों अपनीदूसरीवहिनकोस्मरणकियाकरतींकिचिरकालसेउसका समा
चारनपायाकिवोकहांहै औरउसकीक्यादशाहुईथोड़ेदिनोंकेपश्चातमेरी मंझलीब
हिनभीअपनीबड़ीवहिनकेसमानउसीबुरीदशासेमेरेघरआईउसकेपतिनेभीउसकासं
पूर्णवस्त्रऔरधनादिलेकर अपनेघरसेनिकालदियाथानिदानउसकोभीमैंनेअपनेसाथर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कवा औरबहुतसाधीर्य्यदियाऊख्वकालमेंउनदोनोंवहिनोंनेमुझसे इसबातकाबहानाकि।
याकितुम्हारे पासहमारेरहनेसेतुमकोकष्ट औरहानिपहुंचती होगी सोहमफिरविवाह
करेंगी मैनेउनसेकहाजोमेरीजेरवारीसेतुम्हारायहविचारहैतोव्यर्थहै क्योंकि परमेश्वरके
सर्णिअनुग्रहऔरअनुकम्पासेइसव्योपारमेंमुझेइतनालाभहोनाहैकिहमतीनोंभलीभां
ति आनंदकरतीहैं औरसंसारी आयुभरइसीभांति आमहोगा औरतुम्हेंकिसीप्रकारकाक
ष्टनपहुंचेगायदितुम्हारी इच्छाविवाहकरनेकीहैतोमैं अंमतआश्चर्य्यवानहूंकि अपने
पतियोंसेइतनाडाहवओरकष्टपानेपरभी अभीतुमकोयहीइच्छावनीहै इससमयमेंअच्छे
पतिकामिलना अत्यंतकठिनहै इसकारणइसविचारकोछोड़दो औरपतिबिनारहक
रअपनेगृहमेंप्रतिष्ठापूर्वककालव्यतीतकरोइसीभांतिसेमैंनेबहुतकहा औरसमझाया
परंतुउन्होंनेकुछभीनसुना औरनेमेरेकहनेकोकिया औरविवाहकरनेपरउद्यतहोय
मुझसेकहातुमहमारीछोटीवहिनहै औरहमसे अधिकबुद्धिमानहै परंतुहमइससेअ
धिकतेरेगृहमेंनहींरहसक्तीक्योंकितुमहमकोवादियोंकेसमान अपनेचित्तमेंसमझती।
होगी यहसुनमैंनेकहाहेवहिनोयहकाकहतीहोमैंतुमकोईसाहो अपनीवड़ीजान।
तीहूं जेसाकिपूर्वसमझतीथीवरवारयनवस्त्रआदिजोकुछहै वहसबतुम्हाराहै फि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्र
९९

109

रउनकोअपनेकंठसेलगायथोछंदिया औरउसीप्रकारपरस्परमिलरहनेलगीफिरएकवर्षकेप
श्चात् परमेश्वरनेमेरेब्योपारकोऐसाबढ़ायाकिमैनेप्रदेशमेंब्योपारकेहेतजानेकीइच्छाकीकि
ऊंचवस्तुकोजहाजपरलादकिसीनगरमेंब्योपारकेनिमित्तजानाचाहियेइसबातकोविचा
रअपनीदोनोंबहनोंसमेतबुगदादसेबुशाहरकोआई औरवहांसेछोटासाजहाजमोललेअ
पनीसंपूर्णब्योपारकीवस्तुकोकिबुगदादसेअपनेसाथलाईथीउसपरलाददियावायुअनुकूल
थीइसकारणतुरंतवहांसेनदीफारसमेंपहुंची औरवहांसेहिंदुस्तानकोचली बीसदिवा
सकेपश्चात्हमएकद्वीपमेंजोबुलंदपहाड़केनीचेथापहुंचीउसद्वीपमेंएकनगरबहुतबड़ा
और अतिसुंदरथाउसकेतटपरहमारे जहाजनेलंगरकियामैंनेतटपरउतरनेकी अतिलाल
सारखनीथीइसकारणअपनीबहनोंकेपहिलेउतरअकेली छोटीसीपनसोईपरसवारहो
करपृथ्वीपरउतरी औरनगरकेदरवाजेपरजायकादेखाकिबहुतसेसिपाहीरक्षाकेनिमि
त्तदर्वाजेपरबैठेहैं औरथोड़ेसिपाहीखड़ेहैं औरसबकेहाथोंमेंमोटे२लाठीहैं औरउ
नकेऐसेविकराल औरडरावनेस्वरूपथेकिजिनकेदेखनेसेमैंभयभीतहुईपरंतुउनकाअं
गकुछभीनहिलताथा औरनउनकीपलकेंझपकतीथीं इससेमुझे आगेजानेकासाहस
हुआ जबमैंउससेनाकेनिकटपहुंचीतोउनसबकोशिरसेपांवतकपत्थरकापाया फि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रैमैंनगरकेभीतरगई औरउसकीगलियोंमेंचारोंओरजायफिरीतोसबपत्थरकाबनाहुआ
देखाचौककीदूकानेंबददेखींघुरहोंमेंसे कुछभीधुआंननिकलताथा इसलियेमैंनेस
मझाकिचोरोंकेलोगभीबाहरकेमनुष्योंकेसमानपत्थरकेहोगयेहोंगेफिरनगरकेउसी
ओरएकबड़ामैदानदेखाउसमेंएकबड़ाफाटकथाकिजिसमेंसुवर्णकेपत्तरलगेथे
औरदर्वाजेकेबाहरखुलाथाउसमेंएकपरदारेशमकापड़ाथा औरएकहांडीप्रकाशके
निमित्तलगीहैउसबड़े औरसुंदरदर्वाजेकेदेखनेसेविदितहुआकियह अवश्यराजद्वार
है मैंनेकिसी मनुष्यकोवहांनदेख अचंभाकिया औरउसपरदेखे समीपइसइच्छासेग
ईकि किसीसे भेटहोगी परंतुजबपरदेको उठाय अपनापांवआगेरक्खातो औरभी आ
थिक आश्चर्यहुआकिउसद्वारकीकोठीमें बहुतसेचोपदारोंकोदेखाकिकुछतो खड़े
औरकुछबैठेपत्थरकेबनेहुयेथे फिरसबजगाहजाकरयही हालदेखाकिसबछोटे
बड़ेवहांपत्थरकेबनेहैं फिरवहांसेमैंतीसरेद्वारमें गईउसमेंभीनिर्जनपाया फिरजबचौ
थेमकानमेंगईकिवह मकानबहुतबड़ासुंदरदेखाउसकेकिबाड़ औरजंजीरसुवर्ण
कीथींमैंने समझाकियहमहल अवश्यरानीकेरहनेकाहै उसकेभीतरजायदेखाकि
एकबड़े दालानमेंबहुतसेहबशी हहंनलपत्थरकेबनेहुयेहैं औरआगेउसदालानकेप

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कमकानबहुतसत्सवस्त्रसेसजा हुवाथाउसमेंएकस्त्रीपत्थरकीबनीहुईबैठीहै औरउसकेशि
रपरमणिजटितमुकुटथाहै मैंनसमझाकिरानीयहीहै औरउसकेगलेमें नीलमणिकोमा
लाथीकिजिसकाप्रत्येकदानाभुपारीकेसमानथामैंने समीपजाय उनरत्नोंकोदेखाकि इ
तने बड़ेहोनेसेभीबहुतसाफ औरगोल औरअतिस्वच्छथेऐसे उत्तम उत्तम रत्न औरऐसेब
ड़ेहारकीसंपूर्णसमानदेखमुझे अचंभाहुवाउसमेंगलीचोंकाफरसथा औरमसनदउपधा
नआदिमखमलस औरकमखाबकेबनेहुयेथे फिरवहांसे अमबहुतसेसुंदर सुंदर गृहोंमेंग
ईउनसबमेंसेएकबड़ाभारीमकानथाकिजिसमेंस्वर्णकासिंहासनपृथ्वीसेबहुतऊंचे बि
छाहुवाथा औरउसकेफरसके चारों औरमोतियोंकीझालरें लटकतीथी उनसबमेंसेएक
औरवस्तु अद्भुत औरअपूर्व यहथीकिउसफरससेचमक औरलाटेंनिकलतीथी मैंनेउस
सिंहासनपरचढ़केदेखाकिएकछोटीसीतिपाई परएकबड़ाहीरा शुतरमुर्गके अंडेकेसा
मानरक्खाहै उसीसेवहचमक निकलतीहै किजिससे आंखेंचौंध्यातीथी औरबड़ीकठिन
तासेउसपरदृष्टिठहरतीथी औरउसफरसकेचारों औरतकियेरक्खेथे औरवहां एकदीप
क प्रज्वलितथाजिससेमुझेविदितहुवाकियहांकोईमनुष्यजोताभीहैक्योंकिदीपविनाज
लायेनहीं जलता औरबहुतसीवस्तुओंकोदेखमुझेआश्चर्यहुवापरंतुविशेषकरकेव

110

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वहद्वारा अन्नुतथा उस राजद्वारके कोठे कुछतो बंदथे और कुछ खुलेथे कोई ढकेलनेसे ही
खुल जातेथे मैं हरएक मकानमें जाती और उसके अमूल्यवस्तुको देखती निदानमें क्रमसे २
वस्त्रागार और दफ़्तरखानोंमें गई जिसमें असंख्यद्रव्य और बहुमूल्यवस्त्र रक्खेथे उन स
बको देखमें अपनेको भूलगई न तो कुछ जहाज़का और न अपनी दोनो बहिनोंका शोच
रहा केवल इसी बातके पीछे रहीकि किसीप्रकार यहांका वृत्तांत विदित होकि यह निर्जन
कैसा है और सम्पूर्ण मनुष्य पत्थरके कैसे बनगये हैं इतनेमें रात्रि हुई मैं घबराकर चाहतीथी
कि जिस मार्गसे आई हूं उसी मार्गसे चली जाऊं परंतु रात्रिके कारण न जासकी फिर उसी
राहमें कि जिसमें वहां सिंहासन ओर होराथा और दीपक भी जलतेथे आई और बिचारके
याकि रात्रिको इसी राहमें रहूं भोरको उठ अपने जहाजपर चली जाऊंगी यह बिचार
कर निर्भय होलेटरही परंतु अकेले होनेसे निद्रा न आई यहांतककि अर्धरात्रि बीतनेहो
गई उसी समय एक शब्द सुनाई दियाकि कोई अति सुंदर और मिष्ट वाणीसे कुरान पढ
तीहै जिसके सुननेसे मुझे अतिहर्ष हुआ और वहांसे उठ एक दीपक अपने हाथमें लिये
हुये उसके प्रकाशमें चली कई एक कोठोंके लांघनेके पश्चात् वहां पहुंची कि जहांसे व
ह शब्द सुनाई देताथा वहां जाय मैंने एक छोटीसी मसजिद देखी उसके देखनेसे मु

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

८४ के परमेश्वरके धन्यवादकी नमाज़ पढ़नी अवश्य हुई वहां दो बड़े २ मोमके दीपक प्रज्वलि
।।। त थे उनके समीप निमाज़के स्थान पर कालीन पर एक जवान अति रूपवान बैठा हुआ आसका
अचित और ध्यानपूर्वक पढ़ रहा था उसको देखके मैं अति हर्षित हुई और आश्चर्य किया कि
लाखों मनुष्योंमें से केवल यही मनुष्य बचा है पत्थर नहीं होगया और समझी कि इसमें
कुछ भेद अवश्य है मैंने उस मसजिदमें जाय बड़े शाहसे नमाज़ पढ़ी और परमेश्वरका ध
न्यवादकिया कि यह सफर हमारा अच्छा हुआ और कुशल पूर्वक यहांतक पहुंची और
उसकी पूर्णकृपासे मुझे परिपूर्ण आसा है कि कुशल पूर्वक यहांतक पहुंची औरउसकी
पूर्णकृपासे मुझे परिपूर्ण आसा है कि कुशल पूर्वक अपने नगरमें पहुंचे उस मनुष्यने
यह शाहसुन मेरी ओरदेखा और कहाकि हे सुंदरी मुझे बतावो कि तुम कौनहो और
कों ऐसे उजाड़ नगरमें आई फिर मैं तुमको अपना वृत्तान्त सुनाऊंगा कि कौनहूं औरइ
स नगर के वासी कों पत्थरके बनगये और किस कारणमें केवल परमेश्वरके इस दंड
और क्रोधसे बच रहा यह सुन मैंने उससे अपना वृत्तान्त इसप्रकार संक्षेपसे वर्णनकिया
कि बीसदिनके समयान्तरमें मेरा जहाज़ मेरे नगरसे यहांतक पहुंचा और यहांके आ
नेका वृत्तान्त विस्तार पूर्वक प्रगटकर उससे कहा आशा रखती हूं कि अपने प्रणानुसार

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अपना वृत्तांत मुझे जताओ कि उन सब मनुष्योंको पत्थरका बना हुआ देखमैं अत्यंत भयभी
तहूं यह सुन उस मनुष्यने कहा कि थोडी देर ठहर जा फिर उसने पढ़ना बंदकर औरकुरा
नको स्वर्णकेवस्त्रमें लपेट ताखपर रखा इस समयांतर में मैंने अवकाश पा उसजवा
नको भली भांति देखा देखतेही उसके रूप अनूप छवि पर मोहित होगई फिर उसने मु
झे अपने निकट बैठाया और कहा हे सुंदरी तुम्हारी नमाज और स्तुतिसे विदित हुआ कि
परमेश्वरको सच्चा जानती हो और उसीको पूजती हो यह कहकहा कि इस नगरका।
बादशाह मेरा पिताथा और उसका दूर २ तक राज्यथा परंतु वह बादशाह औरसंपूर्ण
राज्यके वासी औरसेना और सेवक आदि अग्नि उपासकथे और नासदीनकोजो सर्वका
लमें देवोंका बादशाह था पूजा किया करते यद्यपि मेरे मातापिता अग्नि उपासकथे परंतु
मैं मुसल्मान हूं क्योंकि बाल्यावस्थासे मेरी दाईने कि वह मुसल्मान थी मुझे मुखाग्रकु
रान उपदेश किया औरसमझाया कि परमेश्वरही उपासनाके अभ्यहेतु किसीको न पू
जियो और मुझको अरबी विद्या पढ़ाई और तफसीलकी विद्याजो कुरानसे संबंध रख
तीथी पढ़ाई सो थोड़ेही कालमें मुझे कुरानके अर्थ समझनेकी सामर्थ्य आगई नि।
दान उस दाईने मुझे सबसे छिपाकर अपने सब ऊंचनीच धर्मको बतादिया उसके म

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रने पश्चात मुझे मुसल्मानों का धर्म्म जैसा कि उसने मुझे उपदेश किया था दृढ़ रहा और
मैं सदैव अग्नि उपासक आदि से अप्रसन्न रहता कई मास के आगे तीन वर्ष तक बराबर इस
नगर में यह शब्द सुनाई देता था कि हे इस नगर के वासियो नारदोन और अग्नि की पूजा छोड़ो
परमेश्वर को जो सर्वोपरि और उपासना योग्य है पूजो इन तीन वर्ष के समयान्तर में प्रतिदिव
स यह शब्द यहां के बासियों को सुनाई देता रहा परन्तु किसी ने उस शब्द को न माना और न उ
स अधर्म को छोड़ा तीन वर्ष के पश्चात् यहां के संपूर्ण मनुष्यों पर परमेश्वर का कोप हुआ
और जो जिस स्थान और जिस प्रकार से था वहीं पत्थर का बन गया और मेरा पिता भी काला
पत्थर का बन गया कि जैसे तुमने महल में देखा होगा और यही मेरी माता की भी दशा हु
ई उन सब में केवल मैं परमेश्वर की पूर्ण कृपा से इस कठिन दुःख से बचा हूं उस समय से मैं
पहिले की अपेक्षा उसकी उपासना और पूजा अधिक चित लगाय करता हूं और हे भाग्य
वान सुंदरी मैं जानता हूं कि परमेश्वर ने तुझे मेरे धीरज देने को भेजा है इस से तेरी इस कृ
पा का मैं कृतज्ञ हूं क्योंकि अकेले रहने से मैं अत्यन्त शोकयुक्त रहता था उसका यह कह
ना विशेष कर अंतःकरण का वचन सुन मुझको अधिक प्रीति हुई और बेधड़क उस से कहा
कि हे परमेश्वर ने मुझे इसी लिये तुम्हारे नगर में लाया कि तुम को इस भयप्रद स्थान से नि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कालले जाऊं मेराजहाज यहां वर्तमानहै और मैं बुगदादकी रहने वालीहूं तिनकाधन औ
रवस्तु जहाज परलाईहूं उनकाही अपने घरमें छोड़आईहूं वहांतुम कोभलीभांति रावदूं
गी बुगदादके पहुंचनेही उसबादशाहको तुम्हारी खबर होगी और वह तुम्हारी पदवी
अनुसार आतिथ्य सेवा और प्रतिष्ठाभलीभांति करेगा मेरा जहाज आपकी सेवामें वर्तमा
नहै उसपरचढ़चलिये उसमनुष्यने इसबातको हर्षसे अंगीकारकिया फिरमैं रात्रि भरवहीं
रहू उसपुरुषसे अपने सफरका वृत्तांतकहतीरही दूसरेदिनभोरको उसजवानसहितउ
स महलसे समुद्रके तटपर पहुंची और उनदोनो बहनोंको अपने पहुंचनेसे शोकयुक्तपा
या मैंने उनसे अपनेन आनेकाकारण प्रगट किया और उस पुरुषकी कथाभी वर्णनकी
फिरमेरी आज्ञानुसार जहाजके श्रमीने उस असबाब वस्तुसे जोमैं अपने नगरीसे लाई
थी जहाजकोखाली किया औरजोद्रव्य औररत्न और बहुमूल्य वस्तु मैंने राजमहल
में पाईथी उस जहाज़परलाददी और उस शाहजादेको अपने साथले जाय जहाजपर
बैठाया और संपूर्ण वस्तुकेले जानेका श्रादानकिया क्योंकि उनने असबाब के वास्तेब
हुत से जहाज चाहियेथे निदान जब आवश्यक वस्तु जहाजपरलाद और अन्नजल आ
दिभीलादलिया तबजहाजका लंगरउठाय वहांसे अपने नगरकीराहली मार्गमें मेरी बहिनें

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स१.
११३
113

उस जवानको अति सुंदर और रूपवान देखकिनेमें चाह रखने लगी औरमेरी उसकी परस्पर
प्रीति उनके वैरको अधिक करने वाली हुई निदान एकदिन उन्होंने छलसे मुझसे कहाकि
हे बहिन अपने नगरमें पहुंचकर इस जवानको कहां रखोगी और उसके साथ क्याउपका
र करोगी मैंने हास्यसे उत्तरदियाकि वहां पहुंच करमें उससे विवाह करूंगी फिरमैंने
शाहजादेसे कहाकि मेरी यहइच्छा है किमें तुम्हारी वांदियोंमें होऊं और अपनेचित्तानुसा
र तुम्हारी सेवा करूं उस शाहजादेनेभी हास्यसे उत्तरदिया कि जो तुम्हारा जी चाहे सो क
होमें तुम्हारी वहनोंके सन्मुख यहप्रतिज्ञाकरताहूं किमें इस विषयसे प्रसन्नहूं औरतुम्हें
अपनी स्त्रीके समान समझूंगा वांदीपनेकी बातोंका वर्णन नहैंमें आपही तुम्हारा कृतज्ञहूं
और रहूंगा इस बातोंको सुन मेरी वहिनोंके मुखका रंगबदलगया और उसी समय
से मुझे वैरभावसे देखने लगी यहांतक किजहाज हमारानदी पारसके मोहाने पर प
हुंचा और बुशाहर हमसे इतना पासरहगया कियदि वायुठीकरहेतो दूसरे दिनवहां
पर पहुंच जाते निदान एकदिन रात्रिकोमें निद्रा बशथी मेरी वहिनोंने मुझे उठाय समुद्र
में डाल दिया और शाहजादेकी भी यही दशाकी बड़ा पश्चाताप है कि वह शाहजादा
गिरतेही डूबगया औरमें नदीमें गिरतेही ऊपरको उछली और रात्रिके अंधेरेमें परनेल

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गी आशुशेषथी इसकारणतट परजायऊंची और पृथ्वीबराबर पाके जलसे बाहरनिकल
आई इतनेमें भोरहुआ मैंने अपनेको एक उजाड़द्वीपमें पाया जहांसे बुशहरका बंदर दश
कोशकी दूरपरथा मैंने तुरंत अपनेकपड़े खोलाय पहिनलिये और इधर उधर फिरनेसेफ
लदेखहि पड़े वह मैंनेखाये औरएक सोतासे कि जिसमें अति निर्मल औरमिष्ट जलथा।
पानी पिया उससमय मुझे ख्याल हुआ किमेरी आयु बहुतबड़ीहै जोसमुद्रसे उद्धरित बची
और उत्तम २ फलखानेकोमिले निदानफिरमैं छायामें जायलेटरही कुछकाल व्यतीत
हुआथाकि बहुतबड़ालंबा सर्प सपक्ष दृष्टिपड़ा औरपहिले मेरीदाहिनी ओर आया
फिरगई और आय अपने मुखसेजिह्वा निकाल मेरी ओर देखनेलगा जिससे मुझे वि
दितहुआकि इसको किसीप्रकारकादुःखपहुंचाहै मैं उठचारों ओर देखने लगीफिर दू
सरा एकसर्पदेखा कि उससे बड़ाहै और पहिले सर्पके पीछे आताहै औरचाहताहै
कि एछु पकड़ उसको निगल जाय मुझे पहिले सर्पपर दया उपजी औरनिर्भयहो ए
कबड़ा पत्थर उठाय इसवेगसे दूसरे सर्पके शिर परमारा किशिरउसकाटुकड़े २ होगा।
या पहिला सर्प अपने बैरीसे छुटकारा पाय तुरंत ऊपरका परखोल उड़ा मैं उसे देखके आ
श्चर्यितहुई फिर दूसरेस्थान परजायसोयरही जबजगीतो एकहरी रंगकी सुंदरस्त्रीको

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त ११४

देखाकिदो काली कुतियों को पकड़े हुये मेरे सिरहानेपर बैठी है उसको देखतेही मैं खड़ी
होगई और उसस्त्रीसे पूछा कितू कौन है उसने कहा मैं वही सर्प हूं जिसको तुमने बैरीसे
बचाया अबमैं चाहती हूं कि उस उपकारसे किजो तुमने मेरे साथ कियाहै उऋण होजा
ऊं और उसके बदले तुम्हारी सेवा करूं इसवास्ते मैंने अपनी जातिकी अप्सरों को इक
ट्ठा कर तुम्हारे जहाजकी मछली और तुम्हारी उनदोनों बहनोंको कि उन्होंने भलाईके
बदले बुराईकीहै कालीकुतिया बनाडाला और जितना कि तुम्हारे जहाजमें द्रव्य आ
दि वस्तु लदी हुईथी तुम्हारे कोषमें कि वह बुगदाद नगरमें है रख आई हूं और वह ज
हाज समुद्रमें डुबादिया यह कह उस अप्सराने एक हाथसे मुझे और दूसरे से उनदोनों
कुतियों को उठाय ठीक बुगदाद नगरमें मेरे गृहपर पहुंचा दिया मैं अपने महलमें जा
य संपूर्ण द्रव्य और रत्न आदिजो उसजहाज पर लादलाईथी पाया और वहां पहुंच उ
स अप्सराने मुझसे कहाकि मैं तुझे उसकी आज्ञानुसार जोनदियों का बहना बदल
र सक्ताहै कहतीहूं कि अभी यहदंड इनतेरी बहनोंको समाप्तनहीं किंतु प्रति रात्रि उन
कोसौ २ चाबुक मारा करनाकि उनके अपराधका यही दंडहै चैतन्य रहू इस आ
ज्ञामें विपरीततानहो और हम सब अप्सरा तुम्हारे आधीन हैं जब स्मरण करोगी हम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तुम्हारी सहायता करेगी हे स्वामी उसीदिनसे मैं उस अप्सराकी आज्ञानुसार प्रतिनिशा
उनदोनों कुतियों को कि मेरी सगी बहनें हैं मारतीहूं परंतु रुधिरके जोशमे मुझको
क्लेश होताहै इसकारण अपने कंठसे लगाय रोतीहूं और प्यारकर आंसूपोछतीहूं
यही कारण मेरे प्यारकरनेकाहै अवशेष वृत्तांतको मेरी भग्नी अमीना आपके सन्
मुख विनयकरेगी खलीफाने इस अपूर्व और अद्भुत वृत्तांतको सुन अपने मंत्रीसे
कहाकि अमीनासे पूछो कि तेरी छाती परकाले चिन्ह क्याहैं यह सुन अमीनाने अप
ना वृत्तांत इसभांति कहना आरंभकिया अमीना का वृत्तांत अमीनाने खलीफाके स
न्मुख कहाकि जितनी कथा जेबदाने वर्णनकीहै उसका दोहराना कुछ अवश्यक न
ही केवल मैं अपनाही वृत्तांत प्रगट करतीहूं मेरी माता मुझे एक घरमें लेकर आई
कि अपना रंडापा काटे और मेरा विवाह एक बड़े आदमीके पुत्रके साथ कि वह इ
सी नगरका बासी थाकर दिया एक वर्षव्यतीतनहुआ था होगाकि मेरापति मरगया
और मैं रंड होगई परंतु संपूर्ण द्रव्य उसका जोनब्बे सहस्त्र रियालोंके लगभगथा मे
रेहाथ लगा उसकेनफेमेंमैं आनंदपूर्वक कालक्षेप करतीथी और उतना द्रव्यमेरी सं
पूर्ण आयुको बहुतथा जबमेरे पतिको मरेषट मासव्यतीतहुएतबमैंने दस जोड़े वस्त्र

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
११५
115

बहुत उत्तम ओर बहुमूल्य अपने लिये सिलवाये सो वह एक २ जोड़ा सहस्र २ रियालमें बना
फिर जब अपने पतिका शोक करते एक वर्ष व्यतीत हुवा तब मैंने उन वस्त्रोंको पहिनना आ
रंभ किया एक दिनमें अकेली अपने गृहमें बैठी थी कि एक मेरे सेवकने आय मुझ से कहा
कि एक वृद्धा कुब्जे कहनेको आई है जो आज्ञा होतो हम उसे भीतर ले आवें मैंने कहा आ
नेदो फिर वह वृद्धा आय मुझे प्रणाम किया ओर धरती चूम खड़ी होय कहने लगी कि मैंने
आपकी दयालुता ओर दीनपालकता गरीब नवाजी ओर प्रशंसा बहुत सुनी है इसवास्ते
आपके सन्मुख कुछ विनय किया चाहती हूं मेरे पास एक कन्या बिना माता पिता की है
आजकी रात्रिको उसका विवाह होगा ओर मैं वह दोनों इस देशमें अनजान हूं न तो को
ई हमको जानता पहिचानता है ओर न हम किसीको ओर जिसके साथ उसका विवाह
होगा वह धनवान मनुष्यका पुत्र है उसके कुटुंबके लोगभी बहुत से हैं ओर मैंने सु
ना है कि दुल्हेके साथ बहुतसी स्त्रियां बहुमूल्य भूषण ओर वस्त्र पहिनकर आवेंगी
जो आप उस विवाहमें चलें तो मेरी प्रतिष्ठा समधियाने में हो ओर कोई हमको निर्धन
ओर परदेशी न समझे तुम्हारे प्रतापके सामने किसी का भी उच्च पद नहीं ओर सब यही वि
चारेंगे कि जिसकी ओर ऐसी धनवान स्त्री है वह प्रतिष्ठित क्यों न होगी ओर परमेश्वर चाहे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जो तुम मेरी निर्धनता और दीनता पर दृष्टि कर अपने चलने से नाहीं करोगी तो मेरी अप्रति
ष्ठा होगी और मेरा इस नगर में कोई भी मुरबी नहीं और न कोई ऐसी शीलवान और दया
वान स्त्री है जैसी कि तुम इस नगर में हो कि जिसके में जाय अपना दुःख कहूं और वह सुने
और मेरी सहायता करे यह कह वह वृद्धा रोने लगी मुझे उसके रोने और दीनता पर द
या उपजी तो मैंने कहा कि हे माता रुदन कर मुझे न कुछ मैं तेरी पुत्री के विवाह में अवश्य
चलूंगी पता मकान का कि जिसमें बरात आवेगी बता कि मैं सायंकाल को वहां जाऊं औ
र तुझ से उसी स्थान पर मिलाय द्यो फिर तू यहां आने का श्रम न कीजियो वह वृद्धा इस बा
त का उत्तर सुन हर्षित हुई और आशीर्वाद दे कहने लगी कि हे सुंदरी जैसा कि तूने इस स
मय मेरे चित्त को प्रसन्न किया है परमेश्वर तुम्हारे चित्त को सदैव हर्ष युक्त रक्खे परंतु तु
झे आवागमन में कुछ श्रम होगा मैं आज सायंकाल को फिर आऊंगी मेरे ही साथ च
लना यह कह वह वृद्धा विदा होय चली गई फिर मैंने अच्छा जोड़ा पहिना और ब
ड़े २ मोतियों की माला बाजूबंद कर्णफूल और पहुंचियां और चमकते हुये हीरे और ब
हुमूल्य रत्न पहिने इतने में सूर्य अस्त हुये वह वृद्धा मेरे लेने को आई और मेरे हाथ
को चूम कहा कि दूल्हे के माता पिता और नातेदार तो मेरे गृह आये हैं और बहुधा यहां

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
११९

116

के सरदारों और धनवानों और उत्तम कुलकी स्त्रियां भी उनके साथ आई हैं अबमें तुम्हा
रे लेनेको आई हूं इतना वचन सुनतेमें उसके साथ हुई और मेरे पीछे बहुतसी दासियां
उत्तम २ आभूषण और वस्त्रसे सजधजचली चलते २ एक खुली और साफ और छिड़को
हुई गलीमें पहुंची फिर उससुंदरीने हमको बड़े दरवाजे परलेजाय खड़ा किया उस दरवा
जेके ऊपरएकफाटकपर लकड़ीकी लाखनीसे यहलिखाथाकि यह गृह सदैव प्रसन्न
ताकाहै उसको मैंने दीपके प्रकाशमें पढ़ा फिर उस सुंदरीके ताली बजाने सेवह किवाड़
तत्काल खुलगया और वह मुझे एकबड़े भारी दालानके भीतरले गईवहां मैंने एकअ
ति रूपवती स्त्रीको उससुंदरीने मेरी अगवानीकी औरमुझे कंठसेलगाया औरप्रतिष्ठा पू
र्वक एककोठेमें लेजाय बैठगया वहां मैंने एक जड़ित सिंहासन औरउस पर उत्तम २ र
त्नसे जटितछत्र देखा फिर उससुंदरीने मुझसेसत्कारपूर्वक कहा तुम वहां नाके संबंधके निमि
त आईहोमें जानतीहूंकि यह विवाह तुमसे होगा फिर उसने मेरी अत्यंत प्रतिष्ठाकी औ
रमुझसे मिष्टवचन और शीलता पूर्वक उत्तम २ बातें करके यह कहाकि बीबी इसव्याह
का वृत्तांत जिसमें तुमको परिश्रमदिया गयाहै इसप्रकार परहै किमेरा एकभाई अतिसुं
दर औरयुवाहै वहतुम्हारी सुंदरता औररूप अनूपकी प्रशंसा सुनमोहितहुवा औरत

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

म्हारे साथ विवाह करनेकी अत्यंत लालसा रखताहै जोतुम इसमें नाही करोगी तो उ
सके अत्यंत दुःखऔर दिल टूटनेका कारणहोगा औरमैं सौगंधखाय कहतीहूं कि
वह सुंदरजवान तुम्हारे संसर्गके योग्यहै हर तरह भरोसा रखो वह पुरुष अत्यंत
प्रसन्न चितहै फिर उस सुंदरीने अपने भ्राताकी बड़ी प्रशंसा की और इस विषयमें
बहुतसा बाद विवाद किया और कहा जो तुम अबभी इसारा करो तोमैं इसहंताम
को उस पुरुषसे कहूं यद्यपि तुम्हारे पतिके मरनेके पीछे विवाह करनेको मेरी इ
च्छा नथी परंतु ऐसे युवा पुरुष से मैंने नांही करना उचित नजाना यह सुनमैं मुस
कराय चुप होरही वह सुंदरी मेरे चुपरहने और मुसकराने सेजान गई किमेरी भी इ
च्छाहै फिरउसने तुरंत ताली बजाई तालीका शब्द सुननेही एकपुरुष अति रूपवान
बड़ी सजधज औरभड़कसे एक कोठेसे बाहर निकल आया उसके देखने सेमैं हर्षित
हुई और चितमें कहनेलगी बड़ी भाग्यवानहूं जोविवाह ऐसे उत्तम मनुष्यसे होगाफि
र वह जवान मेरे निकट आय बैठा और मुझसे और उससे वार्ताहोने लगी मैंने उसे अ
मतबुद्धिमान और शीलवान उसके बहिनके कहने सेभी अधिक पाया फिर उस सुंद
रीने हम दोनों को प्रसन्न और राजीपाय दूसरी बेरताली बजाई उसके सुननेही का।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
११७

जैसे रीत्यानुसार हमदोनोंका विवाह किया ओर अपनी रीत्यनुसार विवाह पत्र लिखवा र
मनुष्योंकोकि अपने साथलायाथा साक्षीकिया फिर मेरे नवीन भर्तारने मुझसे यह प्र
तिज्ञाकराई किन्तु किसी अन्य मनुष्यको ओरन देखना ओरन किसीसे वार्ता करनासदैव
अपनेपतिव्रत ओर आज्ञापालनसे प्रसन्नरहना ओर कभीभी आज्ञाभंगन करना ओ
र उसनेभी यह प्रणकिया किमैं कभी तुझे मागन कहूंगा निदान जब यह परस्परप्रति
ज्ञा होचुकी फिरमैंधनवानों के समान किन्तु रानियोंकी तरह अपने पतिगृहमें रहने
गी एकमासके पश्चात् मैने अपने पतिसे चौक जानेकी आज्ञा लीकि कुछ थान रेशमी
मोल लेने जाऊंगीकि सब अमीरोंकी स्त्रियां उस समयआप बाजारमे जाय वस्त्र मो
ल लेती ओरबेचा करती ओर इसमें कुछदोषनथा उसने तुरंत आज्ञादीमैं दोबांदि
यां ओर उसी बुढ़ाको किजोमुझे वहांसे उस गृहमें लेगई थी ओर मेरेही समीपर
हती थी अपनेसाथलेकर बुगदादनगरके चौकमें गई जबमैं उस बाजारमें जहां बै
व्यापारियों की दुकानें थी पहुंचीतो उस बुढ़ाने मुझसेकहा हे सुंदरी यहां एक जवा
नव्योपारीकी दुकानहै किजिस मैं जानतीहूं उसकी दुकानमें सब प्रकारके उत्तम र
बहुमूल्यथानहैं रेशमी वस्त्र जैसा तुम चाहोगी वहां मिलेगा तुम उसी की दुकानप

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

परचलो दुकान २ फिरना कुछ अवश्य नहीं मैंने कहा इससिका उत्तमहै फिरमैं उसके
साथ चली और उसी ब्योपारीकी दुकान परजो अति रूपवानथा गई बुढ्ढीने कहाहै सु
न्दरीतुम इस ब्योपारीसे जोनसा वस्त्र चाहो मांगोकि वह तुमको लाकर दिखाये मैंने उ
त्तरदियाकि पतिसे विवाहके समययह प्रणकियाहै कि किसी अन्य मनुष्यसे बातन
करूंगी इसलियेमैं इससेन बोलूंगी कि जिसमें मेरा प्रणभंग नहो नियान उस ब्योपारीने
मेरी चाहनाको बुढ्ढासेसमझा औरनानाभांतिके थानदिखाये मैंने उनमेंसे एकको प
संद किया औरउस बुढ्ढाके द्वारा उसब्योपारीसे मोलसमझा उसने उत्तर दियाकि अशरफि
यों परदराथान कोनबेचूंगा किंतु इसथानके बदले इस सुंदरीसे एकचूमा चाहताहूं
यह सुन मैंने उसबुढ्ढासे अत्यंत अप्रसन्न होय कहाकियह ब्योपारी बड़ाढीठहै कि ऐ
सी बुरीबातकी चाहना करताहै बुढ्ढाने उत्तर दियाहै सुंदरी इस ब्योपारीने जोतुम से
चाहना कीहै कुछ बड़ीबात नहीं तुमसे तुम्हारे पतिने अन्य पुरुषसे बातो करनेको म
नाकियाहै यहतो केवल यही चाहताहै किजरा अपने गालका चूमादोयह बड़ानहीं सु
गमहै सुनके कि उसथानकेलेनेकी अत्यंत लालसा औरइच्छाथी अबुद्धितासे उसबुढ्ढाकी
बातकोमाना फिरवह हठ और वह दोनो बांदियां बराबरसे मेरे सन्मुख खड़ी होगईकि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्र
११८
118

कोई चलने वाला इसविषयकोन देखे तब मैंने अपने गालसे वस्त्रहटा उसव्योपारीकी ओर
किया उसनेहमाके बदले ऐसा काटाकिलहूलुहानहोगया ओर मैं तलमला गई ओर पी
ड़ासेवे स्वुधहोय देरतक वहांऐसी दशामे पड़ी रही ओर वह व्योपारी अवकाश पाय अप
नी दुकानबंदकर वहांसे चलदिया बहुत देरके पीछे जब मुझे सुधिहुई मैंने अपने गा
लकोलहूलुहान पाया परंतु बुद्धिया ओरमेरी बांदियोंने मेरेगालकोवस्त्रसेढांक दि
याकि बहुतसे मनुष्यजो उसव्योपारीकी दुकानपर इकट्ठे होगयेथे उस दशाकोन देखें
उन्होंने जानाकिवल अचेतनासे यहबेसुधि होगईहै मेरे साथकी स्त्रियों यह दशा दे
ख घबराई ओरमुझे धीर्यदेनेलगी मुख्य करके उसबुढ़ियाने कहाकिहे सुंदरी मेरा अ
पराध क्षमाकरोक्योंकि इस तुम्हारे दुखका कारण मैंही अभागीहुई ओर इस उस व्यो
पारीकी दुकानपरतुम मेरेही कहनेसे आईं तुमअपने चित्तमें कुछ शोचनकरो अबत
रंत अपनेगृह चलो तुम्हारे घाव परएक ऐसी ओषधि लगाऊंगी किवह तीन दिवस में
अच्छा होजायगा ओर कुछभी चिन्ह न रहेगा मैं बेसुधहोनेके कारण ऐसीदुर्बल ओरा
निर्बलहोगईथी किबड़ी कठिनतासे अपने गृहतकपहुंची ओरअपने कोठेमें जाय उ
स पीड़ासे फिरबेसुधिगई परंतु उसबुढ़ियाने ऐसा उपाय किया किजिससे फिरमें सुधिमेंआ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ई और तुरंत जाय अपनी शय्या पर जा लेटी रात्रिको जब मेरा पति आया और मुझे शिर ल
पेटे देख कारण पूछा मैंने उसके भुलावेके लिये कहा कि मेरे शिरमें बड़ी पीड़ा है और य
ह समझ ऐसा कहा था कि यह स्वन वह चुप हो रहेगा परंतु उसने मेरे विचारके विपरीत दि
या हाथमें ले उस गालके घावको देख मुझसे न्याय पूछा कि यह घाव क्यों कर लगा यद्यपि
मैंने कुछ बुरा कर्म न किया था परंतु सम विषय न कह सकी इसवास्ते मैंने बहाना करके
हा कि आपकी आज्ञानुसार बाजारमें गई थी देव योगसे एक मजहूर काष्ठ का गट्ठा लि
ये हुये मेरे पास से हो कर गया क्योंकि वह गली बहुत सकरी थी इसकारण एक खोंचा मे
रे गालपर लगा यह सुन मेरे पतिने क्रोधित होय कहा कि यदि यह बात सत्य है तो मैं क
ल भोरको आज्ञा दूंगा कि सम्पूर्ण लकड़ी बेचने वालोंको पकड़ फांसी दी जावे यह स्वनक
र मैं भयमान हुई और पश्चात्ताप किया कि इतने मजहूर निर्दोष मेरी झूठी बातसे व्यर्थ मा
रे जावें यह विचार मैंने अपने पतिसे कहा कि ऐसा अन्याय कभी न करना मुझे अत्यंत प
श्चात्ताप है कि तुम ऐसी आज्ञा दो यदि मैंने कुछ बुरा काम किया होता उसका मुझे दंड दो
फिर मेरे भर्तारने कहा सच कह तेरे गालमें क्यों घाव है मैंने कहा एक कुम्हार अपने वासनों
का गधे पर लादे हुये चला जाता था देव योगसे गधे मका धका ऐसा लगा कि मैं पृथ्वी पर गि

सप्त र पड़ी और एक टुकड़ा शीशेका मेरे गालमें चुभ गया यह सुन फिर मेरे पतिने कहा यदि
११९ यह वचन सत्य है तो सूर्योदयके पहिले जाफर मंत्रीसे इस बातको प्रगट करेगा कि वह
119 जितने इस नगरमें कुम्हार रहते हैं उनको निकाल दूंगा मैंने इस वचन को सुन कहा परमे
श्वरके वास्ते ऐसा काम न कीजिये वह सब निर्दोष हैं फिर उसने कहा तू सत्य कह तेरे गा
लमें घाव लगने का क्या कारण है मैंने कहा मार्गमें मुझे हथनी आई कि मैं पृथ्वी पर गि
र पड़ी और मेरा गाल छिल गया इसमें किसी दूसरे पर दोष नहीं यह सुन वह अमंत क्रो
धित होय कहा तू बड़ी झूठी है कहां तक मैं तेरी असम बातें सुनूं यह कह उसने ताली ब
जाई इतनेमें तीन गुलाम कोठेके भीतरसे चले आये उसने उनको आज्ञाकी कि एक मे
रा शिर और एक पांव पकड़े और तीसरा खड्ग ले खड़ा रहे जब उन तीनों ने आज्ञा उसकी पा
लनकी फिर मेरे पतिने उस गुलामसे जो खड्ग लिये खड़ा था कहा कि इसको मारके दो टु
कड़े कर डाल और लोथ उसकी नदीमें बहा आ कि मछलियां खावें यह दंड उस मनुष्य
का है जो मेरा प्यारा होय और अनुचित कर्म करे यह कह फिर उसे दृढ़ आज्ञा की कि
तू देर क्यों करता है इसे शीघ्र वध कर यह सुन उस गुलामने मुझसे कहा कि हे सुंदरी य
ह तुम्हारा अंतसमय आया अपने इष्टको स्मरण करो और जो कुछ तुम्हें कहना हो ता

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नारी कह सकती मैने उसे कहा कि मैं कुछ कहा चाहती हूं जो मुझे एक पल का अवका
श मिले फिर मैं अपना शिर उठा चाहती थी कि कुछ कहूं परन्तु शैने और हिचकियों के का
रण शाह मुख से न निकल सका था मेरे पति ने मुझ पर कुछ न दया की किन्तु इस भांति बुरा भ
ला कहना आरंभ किया कि जिस का मैं कुछ भी उत्तर न दे सकी फिर मैंने चाहा कि परमेश्व
र की वंदना कर अपने संपूर्ण आंसुके पापों को क्षमा कराऊं परन्तु उसने मुझे इतना अव
काश न दिया और गुलाम को आज्ञा दी कि तूणी चहीं इसे वध कर गुलाम चाहता था
कि हमारे इतने में वही दाई जिसने मेरे पतिको दुग्ध पिलाया था भीतर आई और उसके
चरणों पर गिर पड़ी और चाहा कि उसका क्रोध शांत करे फिर बहुत दीनता सेवक प्रार्थ
ना करके मेरे पति से कहा कि मेरे दूध पिलाने और पालन के बदले इसका अपराध क्ष
मा कर तू इसे वध्य मारता है परमेश्वर के यहां का उत्तर देगा और अपनी प्रतिष्ठा को खो
ता है और न्याय करने वाले तुझे क्या कहेंगे निदान उस दाई ने बेर तक उसे ऐसा ऊंचनी
च समझाया और मेरा अपराध क्षमा कराने को बहुत सा वाद विवाद किया और बहुत
रुदन किया यहां तक कि उसका क्रोध कुछ कम हुआ तब उसने कहा कि केवल तेरे कह
ने से मैंने इसके प्राण छोड़े परन्तु इसको कुछ दंड देना अवश्य है कि इसे आयुभर स्मर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
१२०
120

ए रहे यहकह उसनेगुलाम को आज्ञादी उसने मेरी छाती औरबाज़ू परइतना मारा कि मैंबे
सुधहो गई औरवहांका चर्म औरमांस उड़गया फिर वह गुलाम मेरेपतिकी आज्ञानुसा
रमुझको एक महलमेंले जायछोड़ आयावहां चारमासतकमैं उसी भांति घायल पड़ी
रही और उसवृद्धाने मेरी मल्हम पट्टी आदि औषधिकी और उसदशा में मेरीखबरले ती
रही फिरमैं अच्छी होगई परंतु चिन्ह जैसे आपने कल रात्रिको देखिथे रहगये फिरजबा
मुझमे चलने फिरने की सामर्थ्य होगई तोमैंने चाहाकिमैं अपने पहिले भर्तारके गृहमें कि
वह मेरे आधीनमेंथा जायरहूं परंतु वहां जाय गृहकाचिन्ह भीनपायाक्योंकि मेरे दू
सरे पतिने क्रोधसे उसकिंत गलीको जिसमें वहगृहथा खुदवाकर पृथ्वी बराबर
करदीमैं फरयाद इस अन्यायकोजो मेरे दूसरे पतिने कियाथा किसीसेन करसकी कि
ऐसानहो कहींफिरवह वैसाहीनकरे इसलिये अपने चितकोदृढकर और परमेश्वर
कायमबाटकरमैं अपनी प्यारी वहिन जेबदाके निकट गई और उससे अपने संसा
आपति औरदुःखको प्रगटकिया उसने मुझे धीरजदिया और अपने निकट रक्खा औ
रसमझाया किहमारासमय अच्छा नहीं किसीसे हमको वफ़ा नहींमनो उनमेंसेजो हमारे
मित्र हैं औरन उसनेजोहम पर आसक्तहैं मेरे समीप वैठ रहे औरफिर विवाह नकर न

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

बसे मैं अपनी भग्नी जेबदाके निकट रहतीहूं फिर मेरी बहिन जेबदाने उसशाहजादेका

हतांत जो उनदोनों बहिनों की महसे समुद्रमें डूबगयाथा मुझसे प्रगट किया और उन

दोनोंके ऊतिथा होने का कारण भी कहा और मेरी माताके मरने उपरांत मेरी छोटीभ

ग्नी कोभी जिसका नाम साफीहै अपने साथ रक्खा फिर कभी हम अपनी बहिनजे

बदासे अलगहोनेकी इच्छा नकी और अबतकहम दोनों आनंदपूर्वक उसकी संगमेंर

हतीहैं और परमेश्वरकाधन्यवाद करतीहैं और सब बहने अपनेगृहका कार्य मिलकु

ल करलेतीहैं कभीमैं बाजारमें जाकर सौदा सल्फ करतीहूं और कभी मेरी छोटी बहि

न साफीजातीहै सोमैं कलके दिन बाजारसे बहुतसी बस्तुमोललेके एकमजदूर केशि

र परकि बह इसमहल और हाजिर जबाबथा रखकरले आईथी और उसको रात्रि भर

रहने दिया कि अपने हंसमुख और मिष्ट बचनसे हमें प्रसन्नकरे फिर रात्रिकोइन तीनों

योगियोंने हमारे दरवाजे पर आय हमसे गृहको चाहना कीकि उसमें रैनभर रहैं

हमने उनपरदयाकर उन्हें भीतरबुलाया और अपने साथ भोजन और मदिरा पिलाईफि

र उनके सन्मुख हमनेगाया बजाया औरवेभी हमारे सन्मुख अपनीरीति परगाते रहे इतने

में तीन ब्योपारी मवस्सलकेजो अति प्रतिष्ठित जानपड़ते थे हमारेदरवाजे पर आये और

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त हमसे योगियोंके समानरात्रिको गृहमें रहनेकी इच्छाकीवह भी हमने अंगीकार किया
१२१ और उनको अपनेगृहमें रहने कोस्थानदिया और अपनी सभामें मिलाया परंतु कोईभी
अपने प्रणपर स्थिरनरहा औरहमें शोकयुक्तकिया यदिहमें सामर्थ्यथी किजिस प्रका
121 र हमचाहते दंडदेते परंतु हमने कुछभीन किया औरप्रेमकमतुम्हसे कहा कि अप
ना२ वृत्तांत हमसे कहे फिरहमने उसने उनकी कथासुन सबको छोड़ दिया और उ
नका अपराधक्षमाकर दिया खलीफा हारूनरशीद इस अपूर्व वृत्तांतसे अत्यंत आश्चर्यि
न औरहर्षितहुवा जब इसओरसे उसे भरोसाहुवातो उसनेचाहा किउन योगियोंसे किस
वस्तुवह शाहजादाहे कुछनकुछउपकार करे फिर उसने विचाराकि इनतीनोंके
साथजोबिना पतिंथी योगियोंके साथविवाह करेजेबदासे पूछाकिहे हेदरोजके
उस अप्सराकावृत्तांतभी विदितनहै किजोतमने प्रथम पदादार सर्प दृष्टि पड़ा औरवह य
हमीकुछ कहतीथी कि कबतक यहतुम्हारी वहिनें कुतियोंके शरीरमें रहेंगी जेबा
दाने उत्तर दिया किमें प्रथम आपके सन्मुख यहकहना भूलगई उस अप्सराने विदा हो
ने समयथोड़ेसे वालदेकरकहाथा किजब तुम मुझेबुलाया चाहोतो पकवालको आ
ग्निमें जलानाजोमें काफपहाड़के उस ओरभी रहूंगी तोतुम्हारेनिकटपहुंचजाऊंगी खि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लीफाने कहा यह बालक हो है जबदाने उत्तर दिया कि उन बालों को मैं सदैव अपने समी
प रत्ना पूर्वक रखती हूं फिर उसने अपने संदूकचे को खोल कर उन बालों को बुढ़ियानि
काली और खलीफा के सन्मुख लाई बादशाह ने कहा मैं चाहता हूं कि उस अप्सरा को भी
देखूं उसको तुम बुलाओ जबदाने कहा बहुत अच्छा फिर उसने उस बुढ़िया का एक ही
बार अग्नि में डाल दिया ज्योंही उसमें से धुवां निकला त्योंही वह राजद्वार हिलने लगा औ
र साथ ही वह अप्सरा बहुत उत्तम २ वस्त्र पहिने खलीफा के सन्मुख आई और खलीफा
से कहा मैं आपके सन्मुख आई हूं जो आज्ञा हो सो पालन करूं और इस स्त्री अर्थात
जबदाने मुझसे बड़ी भलाई की मैं इसकी कृतज्ञ हूं और मैने इसकी बहनों को कि इस
के साथ बुराइयां की थी कुतिया बना डाला यदि आपकी इच्छा होतो मैं फिर इनको उसी
शरीर में लाऊं खलीफा ने कहा यदि तू इनको फिर अपने शरीर में लावेगी मैं तेरा बड़ा कृ
तज्ञ हूंगा अब वे अपने अपराध का यथोचित दंड पा चुकी हैं इसके विशेष एक और
तुझसे इच्छा रखता हूं वह यह है कि एक मनुष्य ने अपनी स्त्री को बड़ा अन्याय कर इतना
मारा है कि उसकी छाती मारके चिन्हों से काली होगई है और इसका हाल कि उसने प
हिले पतिसेया नीणाईथी खुदवाय धरनी के बराबर करा दिया और उसके पति को से

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
१२२
122

सुणियातीलेली यह हाल सुनसुके बड़ा पश्चात्ताप हुवा कि मेरे अधिकार और राज्यमें कोई
न ऐसा अन्यायी है कि इस अन्याय करने का कारण है नमतो उस मनुष्यको अवश्य जा
नतीहोगी अप्सराने उत्तरदिया कि मैं अभी इन दोनो कलियों को उनकी मुख्य योनि में बना
ये देती हूं और इस स्त्रीको इस तरह अच्छी उनमक रहूंगी कि फिर कछभी यावोंका चि
न्ह न विदित होगा और इस मनुष्यका नामभी जिसने उसे मारा है बताऊंगी फिर खलीफा
ने तुरंत उन दोनो कलियों को जवदाके घरसे मंगवाया और परीके सन्मुख किया परीने य
क जलका पात्र मंगवाय उस पर कुछ शब्द पढ़े कि जो कछभी समझाई न देतेथे फिर उ
स जलको अमीना और इन दोनो कलियों पर छिड़का कि वे दोनो कलियां तुरंत निज।
ए चिन्ह चलेगये और इसकी छाती दर्पणके समान साफ होगई और अमीनाके शरीरसे सब।
हा कि है शाहजहा सब इसके पतिका नाम कि जिसने मारा है वह अप्सराने क
के बढ़न करीबे है अर्थात् वह आपका छोटा पुत्र है इस स्त्रीको सुंदरताकी प्रशंसासु
नु मोहित हुवाथा और इसके वहाने से अपने गृहमें बुला और काहकर उसके साथ वि
वाह किया फिर कईबेर बातके उलटानेमें इसे मारा और यह सबसुच निर्दोषथी कि।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सी भांतिका पाप इसनेनकियाथा केवल उसने एकबातकई बेर कही यही उसके पति
के शोकका कारण हुवा यही बातथी जो मैंने आपसे प्रगट की यह कह वह अप्सरा गुप्त
हो गई खलीफा यह वृत्तांत सुन अत्यंत आश्चर्यित हुवा और अपने पुत्र अमीनको क
हला भेजा कि मुझे अमीनाके साथ तेरे शुभ विवाहका और उसके कपोल पर घावका
हाल विदित हुवा शाहजादा इस हालको सुन लज्जा और भयसे खलीफाके सन्मुख
हो सका फिर खलीफाने उसे कहला भेजा कि इस सुंदरीको जो बड़ी पतिव्रता और सु
कर्म्मिणी है लेजाय अपने महलमें प्रतिष्ठा पूर्वक रखो वह शाहजादा अमीनाको ब
ड़ी प्रतिष्ठासे अपने गृहमें लेगया और दोनों सदैव प्रीति पूर्वक रहनेलगे और खली
फा जुबेदासे कि उसपर मोहितथा विवाह किया और शेष उन तीनों स्त्रियों अर्थात्
साफी और जुबेदाकी सगोदी बहनोंका ब्याह उन तीनों योगियोंके साथ करदिया
उन्होंने हर्षपूर्वक अंगीकार किया फिर खलीफाने हर एकके लिये निज नगरमें बड़े
और उत्तम २ गृह बनवादिये और उनको अपने राज्यमें बड़े २ अधिकार दिये निदा
न वह तीनों योगी उस दयावान खलीफाके साथ अपनी संपूर्ण वय आनंद पूर्वक व्य
तीतकी ॥ सिंदबाद जहाजीकी कथा जब मलका शहरजाद बादशाह शहरयार

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्र
१२६
123

सेतीन योगियों कीकथा कहचुकीतो बादशाहने उसे बहुतप्रसन्न किया फिरउसनेक
हाकि वर्णित हारूनरशीदके राज्यमें एक निर्धनहिंदबाद नामी मजदूर बुगदाद नगर
रेमें रहताथा एकदिन ग्रीष्मऋतुमें जिससमयकि बहुत गरमीथी भारी बोझाशिरपर
उठाये नगरके एक ओरसे दूसरे ओरकोलिये जाताथा यदि बहुदूर जाताथा मार्गमें थ
कितहुवा और श्रमसे थक एकहौदेमें अपने भारको कि वहां गुलाबकेछिड़कावहुवाथा
और मंद२ ठंढी२ वायुचलतीथी उतारा और एक बडेभारी महल के समीप कि उस।
में सेनानाभांतिके बोधेकी सुगंध आतीथी बैठगया औरउसद्वारके एकओरसे अच्छे
राग और उत्तम२ बाजोंका शब्दसुनाई देताथा और दूसरी ओरसेबुलबुल और अन्य
पक्षियों काजो वहांकी पैदायशथी मिष्ट वाणीसुनाई देतीथी और नानाप्रकारके
सुगंधित औरखिदिहुए अंजनोंकी सुगंध पहुंचीकि जिससे इसे विदितहुवा कि इस स्था।
नपर भोजनका सामानहो रहाहै चाहाकि यहांका संपूर्णवृत्तान्त जाने कि यह द्वार।
किसकाहै औरइसमें कौनधनवान् रहताहै उसदिवसके सिवाय वहमजदूर कभी व
हांनगयाथा कि उस द्वारका हाल जाने निदान उसनेसेवकोंसे कि उत्तम२ वस्त्र पहि
नेहुए दरवाजेपर खड़ेहुएथे पूछा कि इसघरका स्वामी कौनहै उन्होंने उत्तरदिया।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

आश्चर्य है कि तू बगदाद नगर का बासी होकर इतना नहीं जानता कि यह हाल सिंदबाद का है उसने सातों नदियों का सफर किया है इससे वह जहाजी ख्यात है उसको परमेश्वर ने लाखों करोड़ों का द्रव्य दिया मजदूर ने यह सुन बड़ा आश्चर्य किया और आकाश की ओर देख बड़े ऊंचे शब्द से कहा है सामर्थ्य वान संसार के उत्पन्न करने वाले ईश्वर सिंदबाद और मुझ में का अंतर है कि मैं हिंदबाद हूं और सातों दिवस बड़े श्रम से अपने और अपनी स्त्री पुत्रों के निमित्त जो की रोटी पैदा करता हूं और सिंद बाद यह आनंद करता है उसने कौन ऐसा कार्य्य किया कि जिससे वह ऐसा भाग्यवान है और मैंने कौन ऐसा पाप कि या कि जो मेरी ऐसी अभाग्यता का कारण हुवा फिर उसने मुंह फैलाय एक ठोकर पृथ्वी पर मारी और निराश होय सिर हिलाय अपनी अभाग्यता पर पश्चाताप करने लगा इतने में उस महल का एक सेवक उसके समीप आया और उसकी बांह पकड़ कहा मेरे साथ चल हमारे स्वामी सिंद बाद ने तुझे बुलाया है हिंदबाद डराया कि ऐसा न हो जो सिंद बाद मेरी इस बात को सुन क्रोधित हुवा हो और मुझे दंड देने को बुलाता हो उपरान्त करना हो (?) करने लगा और कहने लगा कि मेरा बोझा यहां गली में पड़ा है को कर उसे छोड़के जाऊं उस सेवक ने उसे धीर्य दिया कि तुम भयभीत न हो अपने बोझ से भरोसा राखहम उसको रक्षा

सिंद्र
१२४

124

करेंगे निदान बादा बिवादसे निरुपाय होय उसके साथ हुवा सेवक उसबड़े भारी दालान में
लेगयाकि जहां बहुतसे मनुष्य भोजन करनेको बैठेथे वहां नाना प्रकारके उत्तम २ भोजनबु
नेथे और सबमनुष्योंके बीचमें एक अमीर हद्दिव्य रूप जिसकी श्वेत डाढ़ीजो छातीत
क लटकती थी बैठाथा औरउसके पीछे बहुतसे सेवकों कासमूह हाथ बांधे खड़ाथा
मजदूर इतनी बड़ीसभा और सेवकों और नाना प्रकारके व्यंजनोंके देखने से डर गया
और झुक कर सिंदबादको प्रणाम किया सिंदबादने उसके फटे और मलिन वस्त्रकाकु
छभी शोचनकर प्रणामका उत्तर दिया और अपने निकट बुलाय अपनी दाहिनी ओर
बैठाया और उत्तम २ भोजन अपने हाथसे उठाय उसके आगे रक्खे और बहुत अच्छी
मदिराजो वहां बहुतसी रक्खीथी उसे पिलाई सिंदबादने जबदेखाकि उसके सब स
भावाले भोजनकर चुके हिंदबादसे अरबके रीतानुसार कि मित्रतामें अरबी कहै उप
नाम करतेहैं कहा अरबी तुम्हारा क्या नामहै उसने कहा साहिब मेरा नाम हिंदबादहै
सिंदबादने कहाकि मैं और यह संसर्गसभा तुमको देख प्रसन्नहुई अबमैं चाहताहूं
कितुम्हारे मुखसे उसबातको जोतुमने गलीमें बैठकर कहीथी सुनूं और सिंदबाद
को इस चाहनासे यह इच्छाथी उसने दरवाजेसे उनबातोंको हिंदबादसे सुना और इसी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लिये उसे बुलवा भेजा था हिंदबाद लज्जित होय उत्तर दिया कि उस समयमें थकने और श्रमित हो-
नेके कारण अपने आपेमें न था मेरे मुखसे कोई अनुचित वचन निकल गया होगा अब सडका
डहराना सभामें फिराई है आशा रखता हूं कि वह ढिठाई और अनुचित मेरी क्षमा करेगा सिंदबा-
दने कहा कि मैं ऐसा असाधीन नहीं हूं कि उन बातों से किसी प्रकार की हानि पहुंचाऊं किंतु मु-
झको विसमय रदया आई है और तेरा रूप और सिकायत सुन मुझे कुछ दया आई है परंतु हे
भाई तैने अशुद्ध समझ सिकायत की है क्योंकि तू जानता होगा कि बिना श्रम यह आनंद औ-
र द्रव्य प्राप्त हुवा सो नहीं मैंने बहुतसी आपत्ति और दुःख सह पृथ्वीके भोगनको परमेश्वर
ने मुझे यह पदवी दी फिर सिंदबादने उस सभा वालोंसे कहा कि मुझपर बरसों अद्भुत २ हा-
ल उपार्जनको सुन तुम विस्मित होगे सात सफरमैंने धनप्राप्त होनेके कारण किये और प्र-
त्येक सफरमें बड़े २ दुःख और आपत्तिमें ग्रसित हुवा कहो तो तुम्हारे सन्मुख प्रगट करूं।
कि तुमको भी मेरी आपत्तियोंका वृत्तांत विदित हो फिर उसने अपने सेवकों से कहा कि।
हिंदबादके भारको जो कहेमें पड़ा है जहां कहीं कि वह कहे पहुंचा दो यह आज्ञा पाने है
उन्होंने हिंदबादके घर वह भार पहुंचा दिया सिंदबादने अपने पहिले सफरका वृत्तांत इ-
स भांति वरात वर्णन करना आरंभ किया ॥ सिंदबाद जहाज़ीके पहिले सफरका वृत्तांत ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सिंदबादने कहा मैंने अपने पिताकी थाती की यौवन अवस्थामें भोग बिलास आदिमें खर्च करा
डाला जब अपनी निर्बुद्धितासे चैतन्य हुवातो अत्यंत लज्जित हुवा और बहुतसी द्रव्यके खराब
करनेसे अत्यंत पश्चात्ताप किया बुद्धिमानों का यह वचन सत्यहै कि दरिद्रतासे कवरमें जाना
उत्तम है स्मरणकरता और अपनी दशा पर उसे ठीकहै और मेरा पिताभी कहा करता निदान शे
ष द्रव्यजोमेरे पास बचरहाथा इकट्ठाकर सबकोबेचा और दरियाई व्योपारियोंके निकट
जाय अपने हालके विषयमें वार्ताकी उन्होंने मुझे अच्छी सलाहदी मैंने तुरंत व्योपारकी
वस्तुमोलली और वहांसे उनसब व्योपारियोंके समान जहाज किराया कर चढा और ज
हाज़ वहांसे लंगरउठा पारस नदीकोदाहिनी और अरबके गई और फारस देशकेहै हिं
दके पूर्व औरचले उसनदीका अनुमान सत्तर मील चौड़ान औरदो सहस्र पांचसौ मील ल
म्बावथा और पूर्व और खारी नदीसे और दूसरी ओर अवासीन सेमिलाहुआथा मार्गमें मैं
कितने दिनों तक नदीके रोगों में ग्रसित रहा फिर नीरोगहो भली भांति अच्छाहोगया मा
र्गमें कईद्वीप मिले हमने अपनी वस्तुकोस्थान २ परबेचा और अदल बदल किया एक
दिन हमारा जहाज़ पालों परजाताथा अकस्मात् एकद्वीप जलपरहराभरा और बहुत सु
दर दृष्टि पड़ा कप्तानने उसे देखतेही खलासियोंको आज्ञा दीकि सब पालें जहाजकी उतारदो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तो और सबको आज्ञा दी कि जिसके जीमें आवे उस द्वीपमें जावे सो कई व्योपारी और में जो ज
हाजमें बैठे २ उकतागयेथे उस द्वीपके देखने को इच्छाकी और अपना खानाले कर जहा
ज़ से उतरे वह द्वीप कई बेर हिला यह देख जहाज़ी मनुष्योंने हमें बुलाया कि तुम तुरंत
पर चढ़ आओ यदि कुछभी देरको तो तुम सब डूब जाओगे क्योंकि जिसे तुमने द्वीप स
मझाहै वह बड़ी मछलीकी पीठहै हम इस वृत्तांतसे शोचितहुए और जो हममें से चत
र और शीघ्रगामीथे वह तुरंत पंचुर्योपर कूद चढ़ गए और कितने पैरकर चढ़गये प
रंतु मैं अकेला उस मछलीकी पीठपर रहगया यहां तक कि वह मछली डूबकी मार
नदीके भीतर चली गई मैं उसमें उस लकड़ी को कि जिसे जलानेको लायाथा हाथमें पक
ड़े हुए गया थोड़ी देरके पीछे कप्तान वायु अनुकूल पाय उन मनुष्यों सहित जो जहा
ज़ पर पहुंच गयेथे वहांसे जहाज़ का लंगर उठा चलामें संपूर्ण दिवस और रात्रिको उस।
अथाह जलमें वाहा कियादूसरे दिन भोरको थकगया और हाथ पावोंसे निर्बलहोगया
चाहताथाकि डूब जाऊंकि अकस्मात् एक लहरने मुझे उठाय तटपरडाल दिया परंतु
करारा वहां का ढलवां और ऊंचाथा वृक्षों की जड़ पकड़ बड़ी कठिनता और श्रमसे ख
शकीमें पहुंचा और शालहो मृतकके समान गिरा तब तक सूर्य उदय हुवा कि मैं ज्ञा।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सष्ट
१२९ थासे पीड़ित होफल और सागपानकी ढूंढमेंछुटनों चला और सभाग्य से एक सोतपर पहुं
चा हलांसे मिष्ठ फलतोडे पेटभरखाये और उसीसोते सेजल पियाकई हाएमें मुझमें च
लनेकी सामर्थ्य आगई मैं उस द्वीपमें इधर उधर फिरने लगा निदान मैने चलते फिरते
एक घोड़ा चरते देखामें उधरहीचला परंतु यह नजानताथा कि यह मेरे वास्ते अच्छा
होगा वानहीं वहां पहुंचकर उस अश्वकोरहुंटेसे बंधा देखामें उसकी सुंदरता देख
रहाथा पहले मनुष्यका शब्दपृथ्वीके भीतरसे सुनाई दिया फिरएक मनुष्य तुरंत नि
कल मेरे निकट आया और सब्बात कौनहै मैनेसम्पूर्ण अपनी आपत्ति औरदुःखका वृ
त्तांत प्रगट किया यहसुन वहमुझको खींच करतह खानेमें जिसमें सें वह मनुष्य नि
कलाथा लेगया वहां सब मुझे देख विस्मित हुये औरमें भीउनको देख आश्चर्यित हु
वा फिर मैने वहभोजन जो उन्होंने मुझे दियाथा खाया और उनसे पूछा कि तुम इस
उजाडमें क्यों आये और बैठक्या करतेहो उन्होंने उत्तर दियाकि हम अश्वपालकहैं बा
दशाह जोयहांके अधिपति हैं वह प्रत्येक वर्ष इन्हीं दिनों घोड़ियां लेकरदरियाई घो
डोंके बीछे लेने को इस स्थानपरभेजतेहैं और घोड़ियों को नदीके तट पर जब दरिया
ई घोड़ा भोग कर चाहताहै कियोड़ीको मारडाले तब हम यहां निकल शोरकरतेहैं व

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

है अब हमारा शाह स्त्रनडर कर फिरनदीमें चले जाते हैं और उसके बच्चे दरयाई बच्छे
ड़े कहाते हैं और वह बच्छोड़ा केवल बादशाह की सवारी के वास्ते रहताहैं कल हम
सब वस्तीको जावेंगे मैंने कहा मैंभी तुम्हारे साथ चलूंगा क्योंकि वह मनुष्य दूर रहते
थे मेरा वहां तक पहुंचना मार्ग बनाए बिना कठिनथा वह मनुष्य मुझसे यही बातेंकर
रहेथे कि इतने में घोड़ा नदीसे निकला और घोड़ीसे भोगकर चाहताथाकि उसे मारडाले
उन्होंने बड़ा शब्द किया फिर वह भाग करनदीमें जारहा दूसरे दिवस वह सब घोड़ियों
को लेकर नगरमें आये मैं भी उनके साथ नगरको गया वह मुझको बादशाह के सन्मुख
लेगये उसने मेरा वृत्तान्त पूछा कहाकि तू कौनहै और यहां क्योंकर आया मैंने अपना
सब हाल कहा उसने बहुत पश्चात्ताप किया और अपने दरबारके नौकरोंको आ
ज्ञादीकि इसमनुष्यको अच्छी तरह रक्खो और इसे किसी भांति का दुःख न पहुंचे सो
उन्होंने उसकी आज्ञानुसार मुझे बहुत आनंद से रक्खा मैं कि व्योपारीथा बहुत व्यो
पारियों से संगत रखताथा और प्रत्येक मनुष्यसे जो इस नगरमें आता बुगदाद नगरका
हाल इस इच्छासे पूछताकि किसी ऐसे मनुष्यसे मिलाप हो कि जिसके द्वारा अपने न
गरमें पहुंचूं हजूरको नगर बहुत बड़ा और सुंदरथा और प्रति दिवस देश २ के जहा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मश्र ज़ वहांपर आनेबऊया हिंद लोगोंसे मिलकरखुश होना इसी समयांतरमें अन्यदेशोंके
१२० बऊधा सवदागरहज्जूरको करदेने वाले मुझसे मिले वह सब हमारे देशकी रीति मुझसे
पूछते और मैं भी उनसे वहांकी अद्भुत २ बातें पूछता सोहज्जूरके राज्यमें एक सील ना
म द्वीपथा मैंनेसुनाकि वहांसे रात्रिदिवस ढोलका शब्द सुनाई देताहै जहाज़ वाले मनु
[127] ष्योंसे विदितऊवाकि उसद्वीपमें मुसल्मानों में एक मनुष्य नास्तिक दज्जाल अंतसमयमें उ
त्पन्नहोगाकि जब प्रलयको कुछ समयरह जावेगा तो कहेगा किमैंही परमेश्वरहूं औ
र उसकी आंख कानी होगी और गर्दभ परसवार होगामैं उसद्वीप कोभी देखने गया था
गमें मैंने सोहाथ किंतु दो २ सोहाथकी मछली देखीकि जिनके देखने सेभयमान हो
ताथा परंतु वह ऐसी उरपोक थी कि केवल नगाड़े का शब्द सुनते ही भागजाती एकप्र
कारकी मछली और देखीकि उसका मुख उल्लूकासा और लंबाईमें एक हाथसे अ
धिक नथी एकदिनमें उस नगरके किसी बंदरमें खड़ाथा किएक जहाज़का वहांलंग
रऊआ और सम्पूर्ण व्योपारी अपनी २ असबाबकी गठरियां जहाज़से उतार कर नगर
मेंबेचनेकोले जाने लगे अकस्मात् एकगठरी परमेरी दृष्टि पड़ी कि उसपर मेरानामलि
खाथा मैंने उसेपहिचानाकि यहवही गठरीहै जिसको मैंने वांसराके जहाज़ परलादा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

था फिरमैं कप्तानके निकटगयाकि वह उसकेदेखा जानताथा और पूछा कियह गठरियांकि
सकीहैं उसने उत्तर दियाकि हमारे साथ बुगदाद नगरका बासी सिंदबाद नाम बेपारीथा ज
ब हम एक द्वीपके समीप पहुंचे बहुत से बेपारी उस द्वीप समझ उसपर गए परंतु वह
असलमें टापू न था वह समुद्रका बड़ा मत्स जलपर सोताथा जब उन्होंने रसोई बनाने
के निमित्त उसकी पीठपर आग जलाई वह पहिले अग्निकी गर्मीसे हिली फिर समुद्र
में चलीगई बहुतसे मनुष्य उसकी पीठपरथे डूबे तो पन्सोइयों पर और डूबे पैरा
के जहाज़ पर पहुंचे परंतु एक बेपारीकि जिसका नाम सिंदबाद था जहाज पर पहुं
चन सका और समुद्रमें डूबगया यह गठरीयां उसी कीहैं अब इनको इस द्वीपमें बेचूं
गा और असल नफ़ा जो हुआकि धाम होगा बुगदादमें पहुंचकर उसके परिवारको दूं
गा मैंने कप्तानसे कहा सिंदबाद जिसको तुम मुवा जानते हो मैंहीहूं और यह गठ
रियां मेरीहैं इस वचनको सुन कप्तानने कहा बाहमें किस भांतितेरा बिश्वास करूं
कि तू सिंदबादहै क्योंकि मनुष्योंने झूटबोलना और छल करना बहुत सीखलिया
है मैंने अपने नेत्रोंसे देख लियाथाकि वह समुद्र मेंडूब गया और बहुतसे मनुष्य इ
स जहाजके साक्षीहैं अबतूने अपनेको सिंदबाद बनायाहै तूतोबहुत अच्छा औ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
१२८
128

रनिश्छल ज्ञान प्रगटता है परंतु तुझे यह क्या हुआ कि छल से दूसरे का धन अपना बनाता
है मैने कहा कुछ शोच विचार के मेरी बात सुनो उसने कहा कि तू क्या कहता है फिर मै
ने अपना संपूर्ण वृत्तांत जिस भांति कि मैं जीता बचकर निकला था और जिस प्रकार इस
द्वीप में आकर बादशाह से मिला था वर्णन किया यह सुन पहिले तो आश्चर्यित हुआ फि
र बड़े ध्यान और विचार से मुझे देख पहिचाना और सब व्यापारियों ने भी मुझे पहिचान सा
क्षी दी कि सिंदबाद यही है फिर मुझे जीता देख सब धन्यबाद देने लगे और कप्तान ने
कंठ से लगाय कहा परमेश्वर का धन्यबाद है कि ऐसे बड़े दुख से तुम छूटे और तुम को कु
शल पूर्वक देख मैं अत्यंत प्रसन्न हुआ यह तेरा माल है अपनी गठरियों को पहिचान ले तुझे
उनके बदलने और बेचने का अधिकार है मैने उस कप्तान के सत्यता की बड़ी प्रशंसा क
र कहा कि इस धन में से तुम भी थोड़ा सा लो परंतु उसने न लिया सब का सब मुझे दे दि
या फिर मैने उन गठरियों में से कुछ वस्तु बहुमूल्य और अच्छी २ चुनकर बादशा
ह को दी बादशाह ने सब्बा तने इस असबाब को कहां से पाया मैने उससे अपनी गठ
रियों के पाने का हाल विस्तार पूर्वक प्रगट किया यह सुनकर वह अत्यंत हर्षित हुआ और
मेरी वस्तु को कि भेंट की थी पर उसी स्वीकार किया उसके बदले मुझे उन वस्तु ओं से

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अधिक द्रव्यादिया फिरमैं उससे बिदाहोय अपने जहाज़ परचढ़ा औरशेषवस्तुको उसदेश
की वस्तु अर्थात् संदल आबनूस कापूर जायफल लौंग कालीमिरच आदिसेबदला व
हांसेचल और २ द्वीपों मेंगया निदान बंदर बोसरोमें पहुँचमें जहाजसे उतरा फिरवहां
से खुश्कीके मार्गसे वहां आया उस यात्रामें नफे लक्ष्य मुद्रा लाभहुई अपने नातेदारों
दोरों औरपरिवार सेमिल अत्यन्त प्रसन्नहुआ बहुतसी बांटदियां औरसेवक औरबड़ा मह
ल मोललेनबड़े आनंद औरप्रसन्नतासे रहने लगा यहां तककि प्रदेशके दुःखोंको भूल
गयासिंदबादने यहांतक अपना वृत्तान्त प्रगटकरगाने बजाने वालों कोगाने की आज्ञादी
क्योंकि इसकथामें गाना बजाना होताथाफिरवह सब भोजन करनेलगे इतनेमें रात्रिहो
गई सिंदबादने एकथैली ४००० रु०की मंगवाय हिंदबाद मजदूरको दी और कहा इ
स समयमेंतुम अपने गृहपधारो कल फिरउसी समय मेरे वृत्तान्त सुननेको यहां आना
हिंदबाद जोइस प्रीति और द्रव्यके पानेसे जोकभी आंखसे भीनदेखिया अत्यन्त प्रसन्नहुआ
औरउसकी कृतज्ञताकर अपने गृहमें आया और यह वृत्तान्त अपनेस्त्री पुत्रोंसे प्रकटकिया
वह भीपरमेश्वरका धन्यवाद करने लगे किईश्वरने सिंदबादके द्वारा हमारी निर्धनता परकृपा
दृष्टिकी दूसरे दिवस हिंदबाद अच्छे २ वस्त्र पहिनफिर सिंदबादके गृहमें आया वह दि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त. देवादको देखहर्षित हुआ और मुसकरा कर दोमकशाल पृथ्वी फिर जब संपूर्ण मित्र और
१२९ अतिथि सिंदबादके इकट्ठे हुए तब नियमानुसार नानाप्रकारके भोजन चुने गये वह सब
खाने लगे जब सब भोजन कर चुके सिंदबादने कहा हे मित्रो चित्तलगाय द्वितीय यात्राका
129 वृत्तांत सुनो यह भी पहिलेके समान श्रवणके योग्य है वह सब चुप हुये और उसको ध्या
न दिया सिंदबादने अपनी दूसरी यात्रा का हाल इस भांति वर्णन करना आरंभ किया
सिंदबाद जहाजीके द्वितीय यात्राका वृत्तांत हे मित्रो उन दुःखों और आपत्तियोंके कारण
जो सफरपर प्रथम यात्रापर पड़ीथी अपने चित्तमें प्रण किया था कि फिर कभी सफरका
नामभी न लूं और अपने नगरमें आनंद पूर्वक चैनसे रहूं परंतु अकार्य बैठे रहने से मैं
उदास रहने लगा निदान घबड़ा कर चाहा कि फिर कर नवीन नगरों और देशों को देखूं
और इस समयके नदियोंको उत्तम आश्चर्य २ वस्तु देखूं यह दृढ इच्छा चित्तमें ठहरा
य मैने बहुतसी नाना प्रकारकी लाभकारी व्यौपारकी वस्तु मोल ली और उन व्यापारियोंके
साथकि जिनका मुझे विश्वासथा साथही लिया और एक अच्छे जहाजपर सवार हुआ औ
र हम सबने अपने को सामर्थ्यवान परमेश्वरको सौंप जहाजका लंगर उठाया मार्गमें हम
सब द्वीपों को देखते २ और व्यौपारकी वस्तु को बेचते बदलतेथे एक दिवस हम एक द्वीपमें

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कि बहुत उत्तम और सुंदर और फलयुक्त वृक्षों से भरा हुआ था जहाज से उतर कर गए परंतु
वह स्थान उजाड़ और निर्जन था मनुष्य नौका किंवा पक्षी का भी चिन्ह दृष्टि न पड़ता था मे
रे साथ के संसर्गी लोग फल तोड़ २ इकट्ठे करते थे और मैं एक छोटे से सोते पर कि जहां ब
हुत से सघन वृक्ष लगे हुए थे छाया में बैठ गया और भोजन जो अपने साथ ले गया था खा
ने लगा और कुछ मदिरा पी उस सोते पर अचेत सो गया इतनी देर तक वहां सोया रहा कि
जिसकी संख्या मैं नहीं कर सकता जब जगा जहाज वहां से खुल बहुत दूर निकल गया था
अपने साथियों में से किसी को वहां न पाया वह सब जहाज पर चढ़ गए थे जहाज की सब
पालें खुली हुई थीं क्षण भर में मेरी दृष्टि से गुप्त हो गया मैं उस समय के दुःख का वृत्तांत न
हीं कह सकता कि उस उजाड़ खंड में मेरी क्या दशा हुई निकट था कि इस शोक में मेरे घ
ट से प्राण निकल जावें हा २ कर रुदन करने लगा और सिर पीट २ पृथ्वी पर गिरा बहुत
देर तक शोक रूपी समुद्र में डूबा हुआ अपने को सहस्रों धिक्कार और बुरा भला कहने ल
गा कि पहिली यात्रा की आपत्ति थोड़ी क्या कम थी कि दूसरा सफर तूने किया फिर नये सि
र से आपत्ति में पड़ा परंतु वह सब व्यर्थ था निदान परमेश्वर को स्मरण करता २ वहां से उ
ठा और अचेत आश्चर्यित था कि क्या करूं और कहां जाऊं फिर एक ऊंचे वृक्ष पर चढ़ चारों

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स१ और देखा कि कहीं रात्रिको रहनेका स्थान मिले परंतु जलही जल और आकाश दृष्टि पड़ा
१३· थोड़ी देरके पश्चात् खुश्कीमें एक बहुत बड़ी और श्वेत वस्तु दूरसे मुझे दृष्टि पड़ी मैं उस
वृक्षसे उतर शेष भोजन जो मेरे पास बच रहाथा लेकर उस श्वेत वस्तुकी ओर जो बहुत दूर
था और विचार में न आती थी चला उसके समीप पहुंच देखा कि वह गुम्बदकी तरह गो
ल और बड़ी है और छूने से बहुत चिकना फिसलनी ज्ञात पड़ती है फिर मैं उसके चा
रों ओर फिरा कि कोई दरवाजा देख पड़े परंतु वह चारों ओरसे बंद था और उसका घेरा अ
नुमान पचास कदमके देख पड़ा इतने में सूर्यास्तका समय हुवा और तत्काल चारों ओ
र अंधियारा सा बदलीके समान घिर आया मैं उस अंधियारेको देख अत्यंत विस्मित हुवा
और एक बड़ी भारी चिड़ियाको देख अधिक त्रसित हुवा कि वह मेरी ओर उड़ी चली आ
ती है मुझे जहाजियोंका वचन स्मर्ण हुवा कि एक रुख नाम पक्षी बहुत बड़ा होता है
मुझे जहाजियोंका वचनसे जिसे हिंदीमें गरुड़ कहते हैं मैने समझा यह गोल श्वेत
वस्तु उसका अंडा है सो यही विचार मेरा ठीक हुवा वह पक्षी अंडा सेनेको वहां आताथी।
वह गोला उसका अंडाथा एक पंजा आकर मेरे समीप पड़ा प्रत्येक नाखून उसका एक ब
ड़े वृक्षकी जड़के समान था अपने को उसके नाखूनमें पगड़ीसे अच्छी भांति दृढ़ बांधा

130

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

और यह शोचा कि कल भोरको जब यह पक्षी यहांसे उड़ैगा मुझे इस उजाड़ द्वीपसे निका-
ल किसि दूसरी ओर ले जायगा निदान दूसरे दिन भोरको वह पक्षी वहांसे उड़ा और इतना
ऊंचे गया कि जहांसे पृथ्वी किंचित् न दृष्टि पड़ती थी फिर क्षणभरमें किसी बनमें जाय
उतरा मैं तुरंत अपनेको उसके पांवसे खोल अलग हुआ मेरे अलग होतेही वह एक अ-
जदहे पर कि बहुत बड़ा था जायगिरा और उसको अपने चोंचमें पकड़ ले उड़ा और वह स्था-
न जहां कि उस पक्षीने मुझे छोड़ा था बहुत गहरी और ढलवी एक पहाड़ की खोह थी
और चारों ओर उसके बड़े २ पहाड़ थे ऊंचे नीचे होनेके कारण किसी मनुष्य की शक्ति न थी
कि उसपर चढ़ सके यह स्थान प्रथमसे भी अधिक भयानक और बुरा था फिर मैंने उसखो-
पाट बनमें चारों ओर हीरेके टुकड़े फैले हुए देखे और कोई २ इतने बड़े थे कि जिनको दे-
खमें अचंभित हुआ थोड़ेसे बड़े २ टुकड़े इकट्टे कर कपड़ेमें बांध लिये परन्तु बड़े अ-
जदहों के देखने से वह प्रसन्नता जो मुझे हीरों के मिलने से हुई थी विस्मरण हो गई वह
सर्प इतने बड़े थे कि उनमें से छोटासा भी हाथीको सुगमतासे निगल लेवे दिन भर वह रु-
ख पक्षीके भयसे कि वह उनके प्राणका बैरी है पहाड़ों की खोहमें छिपे रहते केवल रात्रि
को निकल कर फिरते मैं दिनभर उस उजाड़ खंडमें फिरा करता और जहां उत्तम स्थान पा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ता वहीं बैठ रहजाता जब सूर्य अस्त हुए तब मैं एक छोटी सी खोहमें जाय छिपा और उसके मुखको पत्थरोंसे बंद किया कि कोई सर्प न जासके केवल प्रकाश जानेको एक छोटासा छिद्र रहने दिया और भोजन निकाल खानेलगा इतनेमें सर्पोंने निकलना और शब्द करना प्रारम्भ किया तो उनके भयानक शब्द सुननेमें तुरके कंपित हुवा निदान मुझको इस भयसे निद्रा न आई जागकर यथावस्थित अपनी रक्षा करता रहा यहांतक कि भोर हुवा और वह सर्प कंदरोंमें घुसगए मैं उस स्थानसे कि जहां छिपा था निकल आया उन सर्पोंसे मैं इतना भयभीत था कि हीरोंको देख प्रसन्न न होता और रात्रिको कि मैं डरके मारे सोया न था थोड़ासा भोजनकर शयनके विचारसे लेट रहा ज्योंही मेरी आंख लगी त्योंही एक वस्तु कूदकर मेरे निकट आय गिरी कि जिसके शब्दसे मैं जागपड़ा जब उसको ध्यानकर देखा तो एक बड़ासा नवीन मांसका लोथड़ा दृष्टि पड़ा क्षणभरमें चारों ओर पहाड़ोंके मांससे बड़े बड़े खंड उस स्थानपर गिरने लगे उन्हें देखमैं विस्मित हुवा थोड़ी देरके पश्चात् मुझे जहाजियोंका बचन स्मरण हो आया कि एक स्थान पर हीरोंकी खानहै और व्योपारी पर्वतों पर जाय इस उपायसे हीरे लातेहैं मुझे इस वचनका विश्वास हुवा वह उपाय यह है कि व्योपारी उन पहाड़ों पर जो उस पर्वतके चारों ओरहैं उस ऋतुमें जातेहैं जिन दिनोंमें गिद्ध अंडे बच्चे देतेहैं और बड़े २ मांसके उ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कड़े नीचेको फेंकतेहैं और उन टुकड़ोंसे लसहोनेके कारण हीरेके टुकड़े लगजातेहैं बड़े ब
ड़े वहां गिद्ध वह टुकड़े मांसके अपने घोसलोंमें कि पहाड़ोंकी चोटियों परहोतेहैं लेजाय अ
पने बच्चोंको खिलातेहैं और व्योपारी उन गिद्धोंके लौटतेही उनके घोसलोंसे डराकर वह खंड
मांसके ले लिया करतेहैं इस उपायसे उस पहाड़ के दर्रेसे वह हीरे हाथ लगतेहैं और वह प
हाड़का दर्रा ऐसा गहरा और बेढब था कि कितनाही मैंने विचारा किसी भांति दूसरी ओर नि
कलने परंतु निकलनेका मार्ग न मिला मैं उसपहाड़की कंदरा को कबर समझे भयेथा परं
तु वह मांसका लोथड़ा देखकर मुझे कुछ धैर्य हुवा और समझा कि इसी उपायसे यहांसे
निकलूंगा फिरमैंने अपने चर्मके तोशेदानमें कि जिसमें रोटी और अन्न भोजन रक्खा क
रताथा उसमें बड़े बड़े टुकड़े हीरेके चुनकर भरलिये फिरमैंने एक बड़े मांसके खंड
को अपने संपूर्ण शरीरसे लपेट पगड़ीसे उसे भली भांति बांधलिया और उस तोशेदानको
जिसमें हीरे बंधेथे रक्षापूर्वक कमरमें लपेटलिया और अपनेको पृथ्वीपर डालदिया एक
क्षण व्यतीत न हुवाथा कि गिद्धोंने पहाड़से उसस्थानपर उतरना आरंभकिया और एक बड़ा
गिद्ध उस मांसके खंडको जिसे मैंने अपने शरीरसे लपेटाथा अपने पंजोंमें पकड़ले उड़ा औ
र पहाड़की चोटीपर लेजाय अपने घोसलेमें रक्खा व्योपारी बहुत चिल्लाये वह गिद्ध वहां

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

से डरके उड़गया उनब्योपारियोंमें से एकवहांआया औरमुझेदेखके कुछकहे सुनेबिना कित्तकौ
नहे औरकौं यहां आयाहै क्रोधकरनेलगा मैंने उससेकहाकि जबयह जानोगे किमैं यहांकैसे
आया औरकौनहूं तब मुझ परदया करोगे तुमनिश्चय मानो जितनेकि मेरेपास हीरेहैं वह
सबतुमको दूंगा उनके मोलके तुम्हारे हीरे कब पहुंचेंगे मैं उनको पर्वतकी कंदरा सेबु
नकरलायाहूं वह सब इसचर्मकी थैलीमें वर्तमानहैं देखलो यह कह वह थैलीमैंनेउसे
दिखाई इतनेमें समस्त ब्योपारी आयमिले चारों ओर रुकेहैं ज्यउनसे भी मैंनेउसी भांति अपनावृ
तांतउस यत्नसे किमैं वहां पहुंचाथा वर्णनकिया यह सुन उन्होंने अचंभो किया फिरमुझके अ।
पने साथलेकर वहांगये जहांवह सब रहतेथे और मेरेहीरेदेख आश्चर्यित हुए और कह
नेलगेकि इतने बड़े हीरे आजतक हमनेन देखेथे निदान मैंनेउसब्योपारीसे कि जिसके डे
रेमेंमें आयाथा कहा इसमेंसे जितने चाहो हीरे पसंदकरके लेलो मुझको किंचित् पश्चा।
तापन होगा उसने कहा मुझे कुछदरकार नहीं मैंनलूंगा परंतु जबमैंनेबहुत कुछकहा।
तो उसने उनमेंसे एकबड़ा हीरा और कई छोटे२ लेलिये और कहाकि यह मेरी संपूर्ण आ
युको बहुतहै फिरमुझके दूसरी बेरयात्राकी आवश्यकता नहोगी यह नियमथा कि प्रत्येक
ब्योपारी एक२ बार२ गिद्धोंकेघोसले हीरेलेनेको नियतकरलेता दूसरे घोसलेमें नजाता।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

और उससे कुछ प्रयोजन न रखकर फिर रात्रिकोमें उन ब्योपारियों के साथ सो रहा और अपने दु
खोंनको दूसरीबेर उनसे कह सुनाया और भयमान स्थानसे बचकर ऐसा हर्षित हुआ कि जिसका व
र्णन नहीं हो सक्ता और विचारता था कि यह धन तो है वास्ते दूसरे दिवस उन्हीं सब ब्योपारियों स
हित जहां वे बड़े २ सर्प थे दूसरा द्वीपमें आया यदि भाग्य अच्छे थे मार्गमें सर्पोंसे हमें कुछ भी
दुःख न पहुंचा दूसरा द्वीपमें एक वृक्षसे काफ़ूर निकलता है उसको एक टहनी छुरीसे काट
तेहैं उसमें से कुछ रस सा बहकर एक पात्रमें इकट्ठा हो जम जाता है वही जमा हुआ काफ़ूर क
हलाता है फिर वह टहनी सूख कर सूख जाती है और वह वृक्ष इतना बड़ा है कि सौ मनु
ष्य उसकी छायामें भली भांति बैठ सक्तेहैं और उस द्वीपमें एक पशु गैंडा हाथीसे छोटा
और भैंस से बड़ा उत्पन्न होता है उसको नाम पर एक सींग एक हाथके बराबर भीतरसे ठोस
होता है और उस सींगके ऊपर श्वेत चित्र मनुष्यका दिखाई देता है वह गैंडा बड़या हाथी के
पेटमें सींग चुभाकर उसको अपने शिरपर उठा लेता है परन्तु रुधिर और मज्जाके कारणके
हाथीके पेटमें बहकर उसकी आंखोंपर पड़ता है तो अंधा होजाता है उसी दशामें रुख आ
कर उस गैंडेको हाथी समेत पंजोंमें पकड़ले जाता है और अपने बच्चोंको उसका मांस खि
लाता है फिर मैं वहांसे और बहुतसे द्वीपोंमें गया और उन द्वीपोंमें अपने हीरोंसे उत्तम उत्तम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

133

बहु मूल्य वस्तु जो वहां पैदा होती थी बदली इसी भांति बहुत से नगर और बंदरों में होता हुआ
बांसरा में और वहां से बुगदाद को पहुंचा और बहुत से अभ्यागत और याचकों को अपना धन
कि बड़े २ परिश्रम से पैदा किया था दे अयाचक किया जब सिंदबाद अपनी दूसरी यात्रा का वृ
त्तांत भी प्रगट कर चुका उसने ४०० रु० हिंदबाद को देकर विदा किया और कहा कल फिर इसी स
मय आय मेरी तृतीय यात्रा का हाल सुनना सो हिंदबाद और सब अतिथि और सभासिंदबा
द से बिदा हुये और तृतीय दिवस फिर उसी नियत समय पर सब आये सभों ने सिंदबाद के साथ
दुपहर का भोजन किया जब खा चुके सिंदबाद ने कहा मित्रो चित्त लगाय मेरी तृतीय यात्रा का हा
ल सुनो फिर उसने इस भांति वर्णन किया ॥ सिंदबाद जहाजी की तीसरी यात्रा का वृत्तांत मैं उ
न आपत्ति और दुःखों को जो मैंने दो यात्राओं में भोग की थी आनंद और मंगल के कारण भू
ल गया यहां तक कि फिर तयारी सफर की कर बुगदाद से चला और व्यापार की वस्तु वहां से
मोल ले बांसरा को ले चला और अनेक व्यापारियों के सम्मत से जहाज पर सवार हुआ और एक बड़ा
सफर किया और कई द्वीपों में असबाब बेच बहुत लाभ उठाया एक दिन परमेश्वर की इच्छा
से हमारा जहाज तूफान में पड़ा जिससे ठीक रस्ता छूट गया कई दिवस के पश्चात् हम एक द्वी
प में पहुंचे वहां हमने किसी आवश्यकता पर जहाज को लंगर किया और पाल उतार डाली

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कप्तान चारोंओर उसद्वीपकेदेखने लगा और आंखभर सबजहाजियोंसे कहनेलगा इस
द्वीपके निकट वनवासियोंके द्वीपहैं जिनके शरीर परलालबालहैं औरवह मनुष्य जहाजि
योंकेदुख देनेवालेहैं यद्यपिवह हमसे छोटेहैं परंतु हमउनका सामना नहीं करसके क्यों
कि वह बहुतसेहैं जोहम उनमें से एकको मार डालेंतोवह चींटियोंकी तरह चारों ओरसे एक
हे होकर हम सबको मारडालेंगे हम सब जहाजीकप्तानके मुखसे इसबातकोसुन बहुत
डेर औरघबराये थोड़ी देरके पीछेहमने वहीदेखाजो कप्तानने कहाथा अर्थात् एकवन
वासियोंका समूह जिनका शरीरबालोंसे छिपाहुआथा और सवागज लंबेथे हमारे ओर
दौड़े और समुद्रमें पैर२ के जहाजको चारों ओरसे घेरलिया औरकुछ हमसे बोले परंतु
हम कुछन समझतेथे फिरवह जहाजके किनारों और रस्सियों परइसचतुरतासेचढ़
आयेकि उनके पांवरस्सियों परलगतेन देखपड़तेथे उससमयके हमारेदुखको विचारना।
चाहिये कि किसीभांतिसे उनवनवासियोंसे हम अपनीरक्षानकर सके औरन उनके हटा
ने को हममें शक्ति थी निदान उन्होंने पालोंकोबांधदिया औरलंगरकी रस्सी काटजहाज
को तटपरखेंचलाये और हम सबको जहाजसे उतारा औरउस द्वीपमें जहांसेकि वह आ।
येथे घेरकेलेगये सबजहाजी उसद्वीपसे बहुतडरतेहैं उसकेनिकट नहीं आते परंतु ह

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्र म अभाग्यतासे उनके हाथ पकड़े गयेथे हमने उस द्वीपसे फल बहुतसे पाये उन्होंको हम
१३५ खाकर जीतेथे और जानतेथे कि हम सब मारे जावेंगे फिर वह बनवासी हम कोचेर एक व
ड़े भारी गृहमें कि जिसका किवाड़ भिड़ा हुआ आयालगये वहां हमने मनुष्योंकी अस्थियों
का बड़ा भारी ढेर और कई बड़े २ लोहके सीखचे मांस भूननेके रक्खे झपटदेख ज्योंही ह
139 मने वह सीखें देखी मूर्छित होकर पृथ्वी पर पड़े बहुतकाल पर्य्यंत भयसे वहां पड़े र
हे इतने में रात्रिभई और हम रोने लगे अकस्मात् वह दरवाजा खुला जिससे बड़ा शब्द हुवा
हम सब डरगये और उठ बैठे एक क्षणमें भीतरसे एक आदमी काला और विकराल ह
पहुए खजुर के वृक्ष ताड़के वृक्षके समान बहुत लंबा मनुष्य बाहर निकला जिसके ललाट
पर केवल एक नेत्र था जो अंगारेके समान लाल दहकता था और आगेके दांत उसके
कटीले और मुखसे बाहर निकलेथे और नीचका होंट उसका छातीतक लटकता था
कर्ण उसके हाथीके कानके बराबर चौड़े उसके कंधोंको ढाके हुयेथे और नख उ
सके ऐसे गोल और टेढ़ेथे जैसे शिकारी पक्षियोंके होते हैं हम सब उस राक्षसको
देख फिर मूर्छा वश हुये और चिरकाल एक मृतकोंके समान पड़े रहे जब होशमें आ
येतो उस राक्षसको देखा कि ड्योढ़ीमें आकर खड़ा हुवा हमें विचारता है फिर अच्छी।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तरह देख आगे आया और हर एकको हममेंसे उठा और घुमाके देखने लगा जैसे कसाई
बकरी और भेड़ियों का शिर पकड़ उनकी मोटाई को देखता है सबके प्रथम उसने मुझे
पकड़के देखा परंतु मुझमें दुर्बलतासे केवल अस्थि और चर्म पाया इसवास्ते मुझे छो
ड़ दिया और इसीभांति प्रत्येकको देखता और टटोलता रहा फिर कप्तान तक पहुंचा व
ह औरोंकी अपेक्षा अधिक स्थूल पुष्ट था एक हाथसे पकड़ और दूसरे हाथसे लोहकी
सीखको उठा उसके शरीरमें ऐसी चुभाई कि दूसरी ओरसे निकल आई फिर उसने बहु
तसी आग जलाई तो उसे भूनखाया और उठबैठीमें जायसो रहा इसवेगसे वह खर्राटे भरता
था कि जैसे बादल गरजता है भोरतक वह वहींसोता रहा हम सब रात्रिभर भयसे कांप
ते रहे फिर वह दिनचढ़े जगा और वहांसे उठ बाहर गया और हमें वहीं छोड़गया जब हम
ने जाना कि वह बहुत दूर वहांसे निकलगया तो हम फिर उसी भांति रुदन करने लगे जि
ससे वह गृह हमारे रोनेके शब्दसे भरगया यद्यपि हम बहुतसे मनुष्य थे और वह अकेला
राक्षस हमारा बैरी था परंतु कोई उपाय न सफलता था कि उसे वधें निदान हम सबने अपने
को परमेश्वरको सौंपा और उसकी इच्छा पर प्रसन्न रहे दिनभर उस द्वीपमें चल फिर व्यतीत
किया और फल फलारी घास पत्तो उस द्वीपसे तोड़ कर खाई जब रात्रि हुई हमने चाहा कि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स॰ग्र सोहसरे स्थानपर कि जहां सरदी का बचाव होरहे परंतु उस गृहके सिवाय और कोई स्था
१२५ न न मिला निदान उसी गृहमें आय बैठरहे रात्रिको वही राक्षस उस गृहमें आया और हमा
रे साथियोंमें से एक मनुष्यको कि सबसे मोटाथा भूनके खागया और डेवढ़ीमें सोरहा दूसरे
135 दिन भोरको जब वह जगकर बाहर गया मेरे साथियोंने चाहा कि समुद्रमें डूबमरें कि इस प्र
कारकी मृत्युसे डूबना उत्तम है परंतु एकने उस समूहमेंसे कहा मुसल्मानों को न चाहिये।
कि अपने हाथसे अपनेको मारें कोई ऐसा उपाय करो जिससे उस राक्षससे बचें उसके कहने
पर वह सब अपनी उस इच्छासे कि समुद्रमें डूब मरें हट गये और कुछ अपने चित्तमें उपाय
विचारने लगे यहांतक कि मैंने अपने चित्तमें एक वस्तु ठहराके उनसे कहा कि भाइयो तुम
देखते हो कि इस खारी समुद्रके तटपर बहुतसी लकड़ियां और तख्ते और रस्सियां पड़ी हैं
हम सब पांच चार नाव छोटी २ बनाकर किसी उत्तम स्थानमें रक्खें अवकाश पाकर उनपर
चढ़के इस स्थानसे किसी दूसरी ओर चलें जो परमेश्वर चाहे तो इस दुःखसे छूटें यदि हम स
मुद्रमें डूब जावें तो उत्तम है कि हम इस राक्षसके भक्ष हों निदान मेरे इस उपायको सबने प
संद किया और हम सबने मिलकर तुरंत थोड़ी सी नावें इतनी बड़ी बनाईं कि जिसमें ती
न मनुष्य सुगमतासे समासकें फिर संध्याको हम सब उस भवनमें गये और उस राक्षसने दू

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

म सबमें से ओर एक को पकड़ सर्ववत् भोजन किया ओर सो रहा जब हमने उसके खर्राटों का
शब्द सुना तो मनुष्य जो हममें से अंमत प्रवीण ओर चतुर थे ओर दस थे मैंने एक २ सीखचों है
की उठाकर अग्निपर रक्खी जब वह सीखें लाल होगईं तो हमने उनको उठाकर एक २ कर उ
स राक्षसकी आंखपर रखना आरंभ किया यहांतक कि उसे अंधा कर डाला वह राक्षस पीड़ा
से बहुत चिल्लाया ओर बड़ा शब्दकर दाहने गये अपने हाथों को फैलाया कि जो हममें से कि
सीको पावे तो उस क्रोधमें उसे कच्चाही खाजावे परंतु हमसब उससे दूर भागते फिरते थे
ओर ऐसे स्थानपर जाकर ठहरते कि जहां वह न पहुंच सकता विदान जब उसने हमको न पा
या तब दरवाजेसे निकलकर पीड़ासे बैलकी भांति चिल्लाने लगा हमसब उसे वहीं छोड़ स
मुद्रके कूल परभाग आये ओ उन नावों पर जिनको हमने पहिलेसे बना रक्खा था चढ़ ओ
र चाहते थे कि दिन होतेही वहांसे उन नावोंको समुद्रमें ले जाय खिवेंगे भोर होतेही उस रा
क्षस को दो राक्षस हाथ पकड़े समुद्रके तटपर लाये ओर उन दो राक्षसोंके सिवाय ओर कई रा
क्षस उसके आगे २ दौड़े २ चले आते थे उन्हें देखतेही हम सब उन नावों को समुद्रमें जलब
ड़े बेग से खिने ओर अंडे मारने लगे वह राक्षस हमको अपने से बाहर पाकर बड़ी २ शिला ना
वोंके ओर फेंकने लगे यहांतक कि शिला मार के सब नावें डबोदी केवल एक नाव जिसप

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स७ रकिमें और दो मेरे साथी सवार थे बच रहे हम उसको बड़े वेगसे खेकर इतनी दूर निकाल लेग
१३८ ये कि जहां उनको शिलान पहुंच सक्ती थी जब हमारी नाव खुलोगई समुद्रमें पहुंचगई वा
युके वेग और लहरोंके कारण ऊपर नीचे होने लगी इसी दशामें एक रात्रि दिवस रहे निदान दू
136 सरे दिन प्रभातको एक द्वीपमें पहुंचे फिर हम तीनों मनुष्य प्रसन्नता से उस द्वीपमें गये और व
हांके कुछ फल खाये तो कुछ हममें शक्ति और सामर्थ्य हुई और रात्रिको उस खारी समु
द्रके तटपर सो रहे अकस्मात् सर्पकी खरखराहट सुनी जो वह नारियल वृक्षके समान
लंबाथा मेरी आंख खुल गई वह आनेही एकको हमारे साथियोंमें से पकड़ इसतरह खाने
लगा कि पहिले उसने उसको तोड़ा और मरोड़ा फिर उसको पृथ्वीपर गिराया फिर तोड़ क
र खोगयामें यह देख बहुत डरा और दूसरे साथी समेत वहांसे भाग बहुत दूर जाकर ठहरा
उसपरभी उस मनुष्यको अस्थिका शब्द जिसको वह समूचा खा गयाथा और फिर उगलता
था सुनाई पड़ताथा निदान वह रात बड़े भय और दुःखमें कटी दिनको मैंने कहा है परमेश्वर
कल हम राक्षसके हाथसे छूटे और आज हम इस सर्पके चंगुलमें पड़े इसीभांति उस दिवस
को बड़े शोच विचारमें व्यतीत किया और संध्याको थोड़ेसे बनके फल खा एक ऊंचे वृक्षपर
जिसको हमने दिनमें देख रक्खाथा चढ़गये एक क्षणके पश्चात् हमको उसी सर्पका शब्द

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

उसी दरख्तके नीचे रहना पड़ा फिर देखा कि उसकी जड़पर पहुंच मेरे साथीको कि वह बहुत ऊंचे
न चढ़ सकाथा पकड़के निगल गया और वहांसे चलदिया मैं उसदरख्त परसे उसको देखकर रहा फि
र दिनचढ़े वहांसे अधमरा होके उतरा और मुझे विश्वास हुवा कि आजकी रात अचढ़े वहांसे
अधमरा होके उतरा और मुझे विश्वास हुवा कि आजकी रात अवश्य सर्पका भक्ष हूंगा मैंभी
उसकी दशापर चढ़ चुकाहूं वह मुझे अवश्य खाजावेगा फिर अपने जीवनसे निराश हो समुद्र
की ओर जानेकी इच्छा की कि वहां जाकर डूब मरूंगा परंतु इस दशामें प्राणप्यारे होते हैं न डू
बा और अपनेको परमेश्वरको सौंप उस सर्पसे बचनेका उपाय शोच बहुतसे काष्ठ और कांटेइ
कट्ठे किये और बोझ बांध २ कर उसदरख्तके चारों ओर रक्खे और कुछ टट्टीके समान बना
या उसदरख्तके चारों ओर बांधे कि मैं टट्टियोंकी आड़में न दीख पड़ूं जब रात्रि भई तो मैं उसदरख्त
पर जाय छिप रहा और वह सर्प आय चारों ओर उसदरख्तके फिरा परंतु किसी ओर कांटोंके
कारण जो मैंने भटकी चारदीवारी की तरह बनाईथी भीतर आनेका मार्ग न पाया सम्पूर्ण नि
शा वह मेरी घातमें लगा रहा जैसे बिल्ली चूहेकी घातमें लगी रहती है निदान दिन होतेही व
हांसे चलागया और मैं सम्पूर्ण रात्रिके जगने और सर्पकी गर्म फुंकारोंसे मैं उस समय कुछ
बेकल और घबरा गयाथा इस जीनेसे मरना अच्छा समझताथा निदान इस जीवनसे तंग होक

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

र समुद्रमेंडूब मरनेकोगया पर्यंत परमेश्वरकीपूर्ण कृपासे समुद्रतकपहुँचनेसे एकजहाज
दिखाई दिया किचला आताहै मैंनेबड़े शब्दसे पुकारा और अपनी पगड़ी कोशिरपरसे उ
तारकेघुमाया किमुझे जहाजके मनुष्यदेखें यहांतक किकप्तानने मुझे देखा और मेरा शब्द
सुनानावको भेजातो मैंउस परचढ़ जहाजपरगया कप्तान और जहाजी मुझे देख आश्चर्यि
तहुए औरसबकहनेलगे किकोंकर इस उजाड़ द्वीपमें आया एकवृद्धने जो सबसेबड़ाथा मुझसे
कहा किलोग कहतेहैं इस द्वीपमें मनुष्यभक्षी राक्षस रहतेहैं कि वह मनुष्यका मांस कच्चा
भूनकरखालेतेहैं औरउन राक्षसोंकेविशेष बड़े सर्प इसके आगे पीछेहैं कि दिनको कंद
राओंमें छिपेरहकर रात्रिको निकलतेहैं और मनुष्योंको भोजन करतेहैं निदान उन्होंने मेरे
उनद्वीपोंमें रहनेसेबड़ा अचंभा किया औरमुझे क्षुधासे अति पीड़ित और व्याकुल पाभोज
नकराया और कप्तानने वस्त्र फटेदेख एकजोड़ा अपने पहिननेके कपड़ोंका मुझे दिया मैं
ने ऊबकर अपना सम्पूर्णदुःख और आपत्तिका वृत्तान्त जैसा किउन राक्षसों और सर्पोंसे
बचाथा विस्तारपूर्वक प्रगट किया फिरहम वहांसे कई द्वीपोंमें गए निदान सिलहटमें प
हुंचे जहां चंदन उत्पन्नहोताहै जो बहुतसी औषधियोंमें पड़के बड़ाथा रोग खोताहै कप्तान
ने उस नगरमें जहाजको लंगरकिया और समस्त ब्योपारियोंको अपना २ असबाब बेचने और

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

बदलनेकोजहाजसे नीचेउतारा एकदिन कप्तानने मुझसे कहा भाईएकब्योपारीका असबा
ब बहुतकालसे मेरे जहाज पररक्खाहुआहै औरबहुतकालव्यतीत हुआकि वह मरगया अब
तकमैं उसके असबाबको स्थान २ परबेचता औरबदलता आयाहूं और चाहताहूंकि उसके
नगरमें एकहुत असल औरनफा उसके स्त्री पुत्रोंकोदूं अबउसकेधनकीगठरियांतुझे सौंप
ताहूं उसव्यापारीके परिवारसे तेरा मिहनतानादिला दूंगा मैंने उसकोधन्यवादकरकेकहा तुम
ने मुझपरबड़ी दयाकीकि मेरे वास्ते एककार्य्य नियत कियाफिरउसने अपने आज्ञालेखक
को आज्ञादीकि वह असबाब इसमनुष्यको सौंपदे उसने कप्तानसे पूछाउस ब्योपारीकाजि
सका कि यह मालहै क्यानामथा कि उसके नामसे यहमाल लिखकर इस मनुष्यको सौंपूं
कप्ताननेकहाकि यहमाल सिंदबादजहाजी ब्योपारीकाहै मैं अपना नाम सुनतेही प्रसन्नता
से स्नान समाया औरकप्तानकामुखदेखनेलगा और मैंनेउसेपहिचानाकि यह दूसरी
यात्रामें मेरा कप्तानथा उसने मुझे उस द्वीपमें हुंउघरसोताहुआ छोड़ जहाज वहांसे खोलदिया
था मेरे आनेकाध्यान नदेखा औरउस समयसे मुझेमराहुआ समझताहै यद्यपिबहुतका
लव्यतीतनहुआथा परंतुमेरे मुखकारंगबहुतसेदुःखऔर आपत्तियोंके भोगनेसे बदलगया
था अब आश्चर्यनहींजो उसने मुझेनपहिचाना मैंने कप्तानसे कहाक्यायह असबाब उ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
१३८

सोकाहै किजिसकानाम सिंदवाद जहाजीथा उसनेकहाहां उसीकाहै वयतुगदाद नगर।
काबासीथा औरबांसरासेहमारे जहाज परब्योपारका असबाबले चढ़ाथा एकदिन ह
मनेएक द्वीपकेतटपरनवीन औरमिष्ट जल लेनेके निमित्त अपने जहाजको लंगर किया
वह ब्योपारी औरोंकेसाथ उसद्वीपमें गया सबब्योपारीतो जहाजपरसवारहोगये परंतुन
जानपड़ाकिक्या बातहुई किवह ब्योपारी जहाज परनपहुंच सकामैं चार घड़ी उसकी राह
देखा किया जब वहन आया औरपवन अनुकूल चलीतोमैं निरुपाय होय जहाजकालंग
रउठा आगेकोचला मैंने उसकप्तानसे कहाकि तुम्हें इसका विश्वासहै किवह ब्योपारी मरा।
गया कप्तानने कहानिस्संदेह मैं उसेखूब जानताहूं तबमैंने कप्तानसेकहाकि आंखखो
लध्यान धरमेरी औरतो देखो किमैं वही सिंदबादजहाजीहूंकि नहींजो एकजलकेऊं
चेकेतटपरसो गयाथा मुझे किसीने नजगाया जब आपही जगातो देखाकि जहाज वहां
सेचलागया इसबातको कप्तानने सुन शोचविचारमेरी औरदेखा और मुझेभलीभांति
पहिचान परमेश्वर काधन्यवाद किया औरमुझे कंठसे लगाकरकहाभाई कि तुम अव
श्य सिंदबादजहाजीहो और यह सब वस्तु तुम्हारी हैं जिसकीरक्षा मैंने आजतककी औ
रएकमेक स्थानपर मैंने इसेबेचा अबमैं तुझेनफे समेत सौंपताहूं मैंने वह सब पाया कि

138

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

फिर सिलहट द्वीपसे अन्य द्वीपों में गये जहांसे हमने लौंग दालचीनी आदिवस्तु मोल
ली और वहांसे हमने दूर दूर तक यात्राकी एक स्थान पर हमने इतने बड़े कछुवे देखे कि
लंबाई चौड़ाई पचास हाथकी थी और अद्भुत २ मत्स्य देखे कि गौके समान दुग्ध देते हैं
कछुओं का चर्म ऐसा कठोर था कि जिनकी ढाल बनाते हैं और एक मत्स्यको ऊंटके स्वरूप।
और रंगका देखा फिर हम बासरामें पहुंचे और वहांसे बुगदादमें आये इसयात्रामें इतना द्र
व्य मुझे लाभ हुआ कि जिसको संख्या नहीं और निज नगरमें जीता जागता और लाभयुक्त प
हुंच परमेश्वरका धन्यवाद किया और उसको धन्यतामें बहुत साधन याचक और मंगन को।
दिया और बहुतसे सुंदर मंदिर और आनंददायक वस्तु मोल ली सिंदबादने अपने तीसरे।
सफरका हत्तांत कहि हिंदबादको ४०० रु० दिये और दूसरे दिन अपने नियमानुसार उ
से निमन्त्रण किया कि चौथे सफरका हत्तांत सुनेसो हिंदबाद और शेष सभा उस दिनमें
सिंदबादसे बिदा हो दूसरे दिन भोजनके समय आये जब खा चुके तो सिंदबादने अपनी चौ
थीयात्राका वृत्तांत इस प्रकार वर्णन करना आरंभ किया ॥ सिंदबाद जहाजीकी चतुर्थ या
त्राका वृत्तांत है भाइयो आनंद और मंगलमें वहतीनों सफरके सब भय और आपत्ति वि
स्मरण होगई और सांसारिक अद्भुत वस्तुओंके देखने और धन इकट्ठा करनेकी लालसा हुई

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सत्र
१२९

और चतुर्थ यात्राकी तय्यारी करउनवस्तुओंको किजिनकी बाहनाहर इरके देशों औरनगरों
मेंथी एकहाकरपासके औरचला मार्गमें बहुतसेनगरलोचताहुवा एकबंदरमें पहुंचाजहां
से फिरजहाज परचढा औरवहांसे जहाज हमारानेए फरद्वीप आदि पूर्वके बंदरोंकी ओर
जा निकला एकदिन अकस्मात् एकफौंकाजहाज कोलगा कमानेन लाचार हो जहाजके
वरउआननीचे करदिये और खलासियोंसे कहा कि यहतूफानहै चेतमरहना किनना
हो उन्होंने रक्षाकी परंतुसब व्यर्थहुवा जहाजकी पालें तूफानमें फटके टुकडे २ होग
ई कप्तानके सामर्थ्यसेबहु जहाज जाना रहा यहांतक किवालू परचढ करभारसे टुकडे २
होगयाजहाके मनुष्यसमस्त धनऔरवस्तु सहित समुद्रमेंडूब गयेपरंतुमैं औरकुछ
वोपारी तरनेकेसहारोंसे बहते २ एकद्वीपमेंजो समीपथा जालगे जलसे निकल उस
द्वीपमें गए औरबनके फलोंके खानेसे हममें कुछशक्तिहुई रात्रिको फिरवहीं आ
करकिजहां हमलोगोंनेहमें आनदियाथा पड़करसोरहे और अपनी अभाग्यता परवो य
दूसरे दिनभोरको वहांसे उठके उसद्वीपमेंगए और इधर उधर अति विस्मितहोय फिरने
लगेकि अकस्मात् बहुतसेहबशियोंने आकर हमसबको घेरलिया और परस्परहमें
भेजें औरबकरियोंके समानबांटकर अपनेघरों मेंहांकले गए सबके औरमेरे पांचसाथी

139

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

योंकोएकबिलगाएहमें रक्खा ओरहमारेसन्मुख कुछनरकारी खवकरसेनमसे कहतेथे
किहम उसे खावें मेरे साथियों नेसमझके बूझे बिना उसेभलीभांति खाया उनके खातेही
वह नशेमें मतवाले ओरवेसुधि होगए फिरवह हबशी नारियलके तेलमेंचावल पका
करहमें खिलानेलगे किहम मोटेहो जावें ओरहमें मारखावें इसकोभी मेरेसाथीनसम
के ओरबड़े स्वादसे पेटभर खातेथे ओरमें उसे बहुतथोड़ाखाता किजिससे नमस्त ओर न
मोटा होऊं पहिले वह हबशी उन मनुष्योंको किजिनको वह पकड़ते ऐसी वस्तु खि
लाते किजिसमें वहउन्मत्त ओर मतवालेहोजावें ओर अपने भलेबुरेका परिज्ञाननरहे
ओर फिरपुष्ट करनेको नारियलकेतेलमें चावल मिलाकर खिलाते फिरपरस्परजेवना
रकरउन्ही मनुष्यों कोखातेसो मेरे साथियों कोकिऐसे भोजन खानेसे हृष्टपुष्ट ओर
उन्मत्त होगएथेसोउन्हें अपने बुरेभले काकुछभी विचारनरहा ओरमें इसबातकाफ
लकि यहहबशी तेलसहित चावलखिलातेहैं भली भांति जानताथा कुछ अपनीआ
पत्तिके शोचसे ओरकुछ अल्पभोजनसे अत्यंत क्षीण ओर सूख गयाकेवलचर्म ओर
अस्थि शेषरहगईथी इसवास्ते उन्होंने मुझेछोड़ दियाकिमें भीपुष्टहोजाऊं यहांतककि
उसद्वीपमें स्वाधीन फिराकरताथा एकदिन अवकाशपाए उसद्वीपसे चलदिया एकरहने।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
१५

मुझे जानेदिये मुझे बहुतबुलाया परंतुमैंनगया औरअपने प्राणलेवहांसे भागाकेवलव
ह हबशी वहांपरथा औरसब हबशी बाहर गएहुएथे संध्याकोवहां आएक्योंकि उन
कोमेरी ढूंढमें बड़ीदेर हुई जब तककिवह अपने २ वासमें आवें तबतकमें बहुत दूर
निकल गयाथा क्षणमात्र निमित्तमें खाने वो सुस्ताने को बैठजाना और फिर भागता इसी
प्रकारएक सप्ताहतकभागा जब तृषायुक्त होताता नारीयल तोड़कर उसकाजल पीजा
ता उसके पीनेसे मुझे तृषा औरक्षुधा न लगतीथी निदान आठवें दिनमें खारी समुद्रके तटपर
पहुंचावहां मैंने श्वेतवर्णके मनुष्योंको अपने स्वरूपके समानदेखा कि काली मिरचें जो
वहां बहुतसी उगतीहैं चुनरहेहैं उनको देखमें हर्षितहुआ अति प्रसन्नतासेमें उनकी
ओरबेडर चलागया वहभी मेरेनिकट पहुंचे और अरबी भाषामें मुझसे पूछाकितू क
हांसे आताहै मैं अपनी देशकी भाषा सुनकर अधिक हर्षितहुआ फिर उनसे अपना वृ
त्तांत जहाज टूटने औरहबशियोंके द्वीपमें पकड़े जानेका प्रगटकिया उन्होंने कहा
वहतो मनुष्यभक्षीहैं तूकिस भांति बचा मैंने उनसे अपने भागने औरसावे रहनेकाहा
ल जैसा कितुमने सुनाहै कह सुनाया उन्होंने मेरे जीताबच आनेसे अत्यंत आश्चर्य
किया औरजब तक कि वह उसद्वीपसे मिरचचुनाकिये तब तकमैं उनके साथरहाफि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

खवह सबमुझे अपने साथलेकर जहाजपर सवारहुए औरतबतन वह जहाज उसद्वीपमें जहां
से वह आयेथे पहुंचावह मनुष्य मुझे वहांके बादशाहके सन्मुखकि वह प्रसन्न चित्त और
दयावानथाले गए उसने मेरे दुःखोंका हत्तांत सुन अत्यन्त अचंभा किया औरमुझे उत्तम उत
म वस्त्रदिये औरमेरी खबरलेतारहा वह द्वीपबहुत बड़ा औरबसाहुवाथा उसमें बहुतसी
वस्तुब्योपारके योग्य उत्पन्न होतीथी वहांसे ब्योपारी उन वस्तुओंको ब्योपारके निमित्तले जा
ते और और अन्यदेशोंमे बेचते औरबदलने कोलातेमें व्यापारियोंके गतागतसेबहुत प्र
सन्नहुवा और अपने देशमें पहुंचनेकी फिरमुझे आशाहुई वहांके बादशाहने धीरे २ मु
झे अपना सभासद नियत किया औरमुझेबहुत आनंद औरकृपापूर्वक रखताथा यहां त
क कि मैं उनमें ऐसा मिलगया कि वह मुझे अपनेदेशहीका समझने लगेमें वहांके बादशा
ह औरप्रजाको घोड़ेपरलगाम औरजीनबिनासवारहोते देख अत्यन्त आश्चर्यितहुवा एक
दिन मैंनेबादशाहसे पूछाकि यहांके मनुष्य घोड़ेपर जीनलगाम बांधकर सवारक्योंनहीं
होते उसने उत्तर दियाकि उनवस्तुओंको हमनहीं जानते औरन जानतेहैं किजीनलगाम
कैसी होतीहैं फिरमैंने एककारीगरकोकाठकानमूनादिखा कहाकितुइसीभांति कि
काठीबनादेसोवह मेरी आज्ञानुसारबनालाया फिरमैंने उसचर्मसेमढ़करउसपरबहुत

स०
१४१

लाकमरवाव और अतलसलगाया फिरलुहारको रिकावें बनानेकोकहा जब वह सबमे
री इच्छानुसारबन चुकातोउसे एक अश्वपरलगा करबादशाहके सन्मुखलेगया वह उ
सपर सवारहोकर अत्यंत प्रसन्नऔर मगनहुवा औरमुझे उस सेवाके बदले पारितोषिक
औरउत्तम उत्तम वस्त्रऔर असंख्यद्रव्य दिया और प्रथमसेभी अधिकमुझसे प्रीतिकरने
लगाफिर मैंनेबहुतसेजीन औररलगामें उसके परिवार औरमंत्रियों औरसभासदोंको बन
वांटी उन्होंनेलेकर उसके बदले हजारों रुपये और बहुमूल्यवस्त्र देकर मेरीकृतज्ञता
की और इसनगरके मनुष्यभी मेरीबड़ी प्रतिष्ठाकरने लगे एकदिन बादशाहने मुझेएकां
तमें कहा मैंतुझसे बड़ी प्रीति औरमित्रता रखताहूं औरमेरी प्रजा औरसभा तेरीबुद्धिसे
अत्यंत प्रसन्नहै औरसबको तुझसे प्रीतिहै एक बाततुझसे चाहताहूं उससेतू इनकार
न कीजियो मैंने विनयकी जो कुछ आपमेरे वास्ते विचारोगे वह अत्यंतलाभकारी और उ
त्तमहै मैं कों आपकी आज्ञाभंगकरूं बादशाहने कहा मैं चाहताहूं कितेरा बिवाह
करूं कि जिससेतू आनंदमेंरहे औरइसनगरसे जानेकी इच्छानकरे मैंने अतिहर्षसे बाद
शाहके कहनेको स्वीकारकिया उसने अपने घरानेकी एकस्त्रीके साथजो अति सुंदरी
और रूपवती औरकोमलांगीथी विवाहकरदिया मैं उसविवाहकी रीतोंके पश्चात् उससे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रीके प्यार और प्रीतिमें ऐसा आसक्त रहा कि अपने प्रथम परिवारको भूल गया थोड़े दिनोंके
पश्चात् मेरे पड़ोसीकी स्त्री कि उसके साथ मुझे बड़ी प्रीति थी रोग युक्त हुई कई दिनोंके उ
परान्त वह काल वश हुई मैं मातमपुरसीको उस मित्रके निकट गया उसे अत्यन्त शोकयुक्त
पा अपने देश की रीतिके अनुसार उसे धीर्य और भरोसा देने लगा कि परमेश्वर तुम्हें जी
ता रक्खे तुम बहुत वर्ष पर्यन्त जीते रहो उसने उत्तर दिया कि जो तुम मुझे आशीर्बाद दे
ते हो वह मेरी दशाके विरीत है कि मैं केवल एक घड़ी या आधी घड़ीका अतिथि हूं मैंने
उत्तर दिया क्या कहते हो ऐसा असगुन शब्द अपने मुखसे न निकालो परमेश्वर तुमको चि
रंजीव रक्खे मैं तुम्हारी मित्रतासे सदा लाभयुक्त रहा हूं उसने कहा कि मेरी आयुर्बल हो
चुकी अब तुम्हें परमेश्वर जीता रक्खे आज मैं अपनी स्त्रीके साथ जीता गाड़ा जाऊंगा हमा
रे बड़ोंने ऐसी रीति इस द्वीपमें नियत की है यदि स्त्री मरे तो उसके साथ उसके पतिको भी
जीता गाड़ दो तथा यदि पहिले पति मरे तो उसके साथ उसकी स्त्रीको गाड़ दे अब मुझे कोई ब
चा नहीं सकता यहांके वासी इस रीतिपर दृढ़ और प्रसन्न हैं कोई इस रीतिके विपरीत न
हीं कर सकता इस अनुचित रीतिको सुन मेरी सुधि जाती रही और नाना प्रकारके सोच वि
चारमें पड़ा अभी मैं उस स्थानसे हिला न था उस पड़ोसीके सम्बन्धी मित्र और नातेदार और प

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सश
१४२ 142

ड्सा कफन डालनेको आये उन्होंने उसलोथको बहुत उत्तम वस्त्र और आभूषणादि पहि
राये जैसे कि दुलहनको सजाते हैं औरउस खुलीहुई अर्थीपर रक्खा और आगे उसके।
आपभी चले और उसके पीछे उसकापति भी सोगके वस्त्र पहिन चला उसके पीछे सबम
नुष्य चले एकबड़े पहाड़की राहली उसपर्वतके निकट पहुंच करउन्होंने एक कंदरासे
एक शिला उठाई औरउस लोथको उसवस्त्रसहित उसमेंडालदिया फिरवह पतिभी स
बसे विदाहोकर एकबड़ा पानीका और सात रोटियां लेकर अर्थीपरबैठा और उसेभीउस
कीस्त्रीके समान उसीखोहमें अर्थी समेतडालदिया वह पहाड़ बहुत चौड़ाथा और ह
समी औरखारी समुद्रसे मिलाहुवाथा औरवह खोह बहुत गहरी औरलंबीथी निदान
जबरीपीट औरकफनाचुके तबउस पत्थरको फिर उसखोहके मुखपररखसब मनुष्य
वहांसे चले आये हे मित्रो मैं इसबुरी रीतिको देख बहुत घबराया औरडरा परन्तु वहांके
वासी इसरीतिको बहुत अच्छी जानतेथे एकदिनमैंने वहांके बादशाहसे कहा किहे
स्वामी मैंने यहांकी इसरीतिसे बड़ा अचंभा किया औरघबड़ाया कि सजीवको मृतकके
साथ गाड़तेहैं मैं बहुतसेदेशोंफिरा परन्तु किसीदेशमें ऐसी अन्यायकी रीतिनदेखी औ
रनसुनी बादशाहने उत्तर दिया किहे सिंदबाद यहांकी यही संप्रदाय है हमकिसीको

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ति इससे बरज नहीं सकते मैंभी स्वतः इसी रीति पर स्थिर हूं परमेश्वर न चाहे जो यह स्त्री को शाह
जादी मर जावे तो मैंभी सजीव उसके साथ गाड़ा जाऊंगा मैंने कहा हे स्वामी का यह आज्ञा
परदेशियों पर भी प्रचलित है बादशाह ने मुसकराय कहा निस्संदेह उनपरभी है यह मनु
ष्य इस रीतिसे पृथक नहीं होसकते इस बचन को हे सुन अत्यंत घबड़ाया तब से इसी भय।
और शोच में रहता था कि ऐसा न होकि मेरी स्त्रीभी मरजावे तो उसके साथमें भी सजीव गा
ड़ा जाऊं निदान यही हुआ अर्थात् अपने को परमेश्वर को सौंपा अकस्मात् थोड़े दिनोंके पश्चात् मे
री स्त्री बहुत रोगी हुई और कुछ काल में यमलोक को पधारी उस समय जो मुझ पर शोक
हुआ सो अवाच्य है अपने मन में कहता था इस सजीव गाड़े जाने से उससे अच्छा कि मुझे हब
शी मनुष्य खा जाते इतने में बादशाह अपने दूतों और जनों सहित मेरे गृह पर आया
और नगर के प्रतिष्ठित मनुष्य भी इकट्ठे हुए और मेरी स्त्री को वस्त्र आभूषण पहिनाकर
अर्थी पर रक्खा और गाड़ने चले और उस लोथ के पीछे मैंभी वहां की रीति के अनुसार रो
ता हुआ चला जब उस पहाड़ पर जहां यह कि लाशें गाड़ी जाती थीं पहुंचे और अपने छूट
ने के लिये बिनय पूर्वक बादशाह से कहा कि हे स्वामी मैं परदेशी अन्य देश का रहने वा
ला हूं मुझ पर दया करो मैं इस कठिन दंड के योग्य नहीं इसके विशेष मैं अपने नगर में ।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप स्त्री पुत्र रखता हूं हे मित्रो उसने कुछ भी मुझ पर दया न की और तदनंतर उस लोथ को उस कं-
१५६ दरा में डाल दिया और मुझ को भी दूसरी अर्थी पर रख एक जल का घड़ा और सात रोटियों
सहित उस खोह में उतार दिया फिर शिला खोह के मुख पर रख दी मैंने प्रकाश में कि
143 इस कंदरा के ऊपर से उसमें पहुंचता था देखा कि गहराव उसका अनुमान पचास हाथ
के था उस खोह में जाते ही मृतकों की गंध और सड़ाहट इतनी मेरे ब्रह्मांड में पहुंची कि
मैं व्याकुल हो वहां न ठहर सका अपनी अर्थी से उठ और नाक बंद कर वहां से दूर भागा और
पृथ्वी पर गिर बहुत देर तक अपनी अभाग्यता पर पश्चात्ताप करता और रोता रहा और मैंने
कहा परमेश्वर मनुष्य के निमित्त जो करता है उत्तम जान के करता है मेरे वास्ते यही अच्छा
हुआ और अपने को बहुत धिक्कार देता था कि तुझे तीन सफर के दुःख और आपत्ति उठा-
ने पर भी चैन न हुआ तुझे चाहिये था कि अपने स्त्री पुत्रों में रहता और फिर सफर का ना-
म न लेता इस दशा में कभी तो उठ के रोता और कभी अपना हृद और शिर पीटता फिर
जब मुझे क्षुधा लगी तब मैं नाक और मुख बंद कर अपने अर्थी पर से जल का घड़ा और रोटि-
यां उठा लाया और कई दिवस तक उसे खाया जब वह रोटियां और पानी हो चुका तब मर-
ने पर तय्यार हुआ इतने में मैंने पत्थर उठाने का शब्द सुना उन्होंने एक मृतक पुरुष को एक

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सजीवस्त्री सहितउसमेंडालदिया औरवही पत्थरफिर उसखोहके मुख परधर दिया मैंने आ
करएकमृतकके पांवकीहड्डी उठाके इसवेगसे उसस्त्रीके शिरपरमारी किवहचकराकरगि
रपड़ी केवल उसकीरोटियां औरजललेनेको यत्नकियाफिरकई दिनतक मैंनेउनरोटियों।
को खाया जब वहभीहोचुकी परमेश्वरकीमायासे कोई मनुष्यएकमृतकस्त्रीको अपनेसजी
वपति सहित फिरउस खोहमेंडाल गया उसपुरुषकोभी मैंने उसी भांतिपर उसकाभोजन।
औरजल उठालेगया फिरतो मेरेभाग्य से उसनगरमें ऐसी मरी पड़ी किशतं दिवस लोथें।
और उनके साथ सजीव मनुष्यउस खोहमेंआलेजाते और मैं उन जीतों को मार उनकीरो
टियां औरजललेता अकस्मात एकशब्दकि जैसे कोई श्वासलेताहै सुनामें उसीओर अंधि-
यारे मेंकिदिन औररात्रि समान जानपड़ताथा चला औरवह वस्तुदमलेतीभई औरथब
थबकरतीभई एक औरको दौड़ी उसके शब्दपरमैंभी दौड़ताचलागया यहांतककि मैंनेथो
ड़ा सा प्रकाशतारेकासाचमकताहुआ देखाकिकभीतोवह मेरी दृष्टिसेगुमहो जाताहै औ
रकदापि दीखताहै निदान मैंने उसखोह कीदूसरी औरसे एक छिद्र इतना पायाकि जिस
सुगमतासेबाहर निकल गया और अपने को समुद्रके तटपरदेखाउस समय अत्यंतहर्ष।
प्राप्तहुवा जबमैं अच्छे प्रकारहोशमें आयातो मैंनेबिचारा वह वस्तुजोखोहमें सांसलेतीथी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सत्र
१४४

155

ओर उसके पीछे लगाऊंगा मैं यहांतक पहुंचा कोईजलजंतु अवश्यहोगा कि उसीछिद्रसे
होकर मृतकोंके खानेको उसकेंदरामें जाया करताहै फिरमैंने अच्छेप्रकारदेखा तो उसप
हाड़को नगर औरनदीके बीचमें पायापरंतु वहछिद्र किसीको विदित नथा क्योंकि उस
पहाड़काकिनारा इतनाऊंचाथाकि कोईभी उसपर चढ़नहीं सक्ताथा निदानउसकेंदरा
से निकलकरउस समुद्रके तटपर पहुंच परमेश्वरकीबंदनाकीकि उसनेमुझपरकृपाऔर
अनुग्रह किया फिरमैं उस खोहकेभीतर जिसमें मुझेडरथे और निराशामें भूखेनलगती
थी औरथोडासाकि जिसेमैंनमरहूं खोलिया करताथा गयाहीरे आदिरत्न औरबहुवस्त्र
जोउस अंधियारेमें मुझेहाथलगाउठाकर समुद्रके कूल परलाया औरउनको गठड़ि
योंमें रख रस्सियों औरसनीवोंकी अर्थियोंसे जिसेंउस खोहमें उतारनेथे अच्छी तर
ह बांधा औरउस समुद्रके तटपर अभय रहनेलगा क्योंकि वहवर्षा बरसतथीतीनदिन
के पीछे ईश्वरकी प्रेरणाकृपा और अनुकम्पासे एकजहाज देखाकि उस समुद्रमें
पास सेहोकर जाताहै मैंने अपनी पगड़ीकोफराया औरबड़े वेगसेपुकाराकप्ताननेमे
राशब्दसुन नावको मेरेलेनेकोभेजा खलासी मुझे अपनीनावपरचढ़ाके लेगये और
कहानेवालोंका सामान आईथीकिन्तुउस स्थानपर आया मैंनेउनको उत्तरदियाकिदादिव

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स व्यतीत हुए कि मैं जिस जहाज़ पर चढ़ा था वह यहां पहुंच डूब गया केवल मैं ही वच रहा
वह मेरी बातको समझ जान मुझे मेरी गठड़ियों सहित जहाज पर ले गये जब मैं जहाज में
पहुंचा मैंने कप्तान से भी वही कहा ओर कुछ बहुमूल्य रत्न देने लगा परंतु उसने न लिये
फिर हम उस द्वीप से आगे चलके ओर कई द्वीपों में गए यहां तक कि नीलद्वीप में जो सर
दीप से दस दिनकी राह पर है पहुंचे ओर वहां से कलो द्वीप में जाकर जहाज से उतरे जिसमें
सीसे की खान है उसमें कापूर ओर हिंदुस्तान की बहुतसी वस्तु ईख आदि उत्पन्न होती हैं क
लो द्वीपका अधिपति बड़ा बादशाह था जिसका अधिकार नीलद्वीप पर्य्यंत था उस द्वी
पका चौड़ान अनुमान दो दिनकी यात्राका था ओर वहां के वासी सुंदर मनुष्यका मांस खा
ते थे उस द्वीप में अपनी वस्तुओं को बेच ओर वहां की चीजें मोल ले चले ओर कई द्वीपों
ओर बंदरों में होते हुए कुशल सेवक बुगदाद में पहुंचे इतना धन ओर रत्न मुझे लाभ
हुआ जिसका वर्णन नहीं कर सक्ता फिर मैंने परमेश्वर का धन्यवाद करके कि ऐसे मारक
स्थानों से बचाया था बहुतसा द्रव्य ओर असरफी याचकों को दिया ओर कई गरीब खाने ओ
र मसजिदें अभ्यागतों के निमित्त बनगई ओर अपने स्त्रीपुत्रों ओर मित्रों में आनंद पूर्व
क रहने लगा दिनरात नृत्यगीत ओर आनंद मंगल में कमी न होती थी फिर सिंदबादने अप

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सत्र म सुननाहतोत कहू ४००) रु॰ हिंदबादको देविदा किया और हिंदबाद इससफरका हा
१४५ लसुन औरसफरोंको अपेक्षा अधिक आश्चर्यमेंहुवा औरउसके सभासद्भी अचंभितहु
ए फिरवह सबभी उस दिन बिदाहो दूसरे दिवस सिंदबादकेघरमें आए उसके साथ भोज
नकिया फिर पांचवें सफरका वृत्तांतसुननेलगे सिंदबाद जहाजीकी पंचम यात्राका वृ
त्तांत सिंदबादने कहा कि उस आनंद औरमंगलमें अपनी संपूर्ण आपत्ति औरदुःख वि
स्मर्णहोगयेकुछ दिनपीछे फिरमैंने सफरकी तैय्यारीकी औरव्योपारकी वस्तुलेगाड़ियों
परलाद उसबंदरकी ओर जोमेरे नगरके समीपथाचला परंतुकोई कप्तानमेरी इच्छानु
सारनमिला इस निमित्त मैंने एकजहाज बनवाया जबवहबनचुकामैं अपनेवस्तु कोउस
परलाद सवारहुवायदि मेरा असबाब इतनानथा किजहाजको भराहोतासो मैंने और
व्योपारियोंकोकि सबसज्जन और मिलनसारथे उनको असबाबसमेत चढ़ालिया।
और वहांसे चलावायुके अनुकूल होनेसे हमतरंगोंवाड़ेसे निकल करखारी समुद्रमें
पहुंचे कितने एकदिनोंमें हमाराजहाज पहिले पहिल एकउजाड़द्वीपमें पहुंचा संपूर्ण
व्योपारी उसटापूपरगए औरवहां हमने रुखपक्षीका अंडाकि जिसका पहिले वर्णन क
रचुकाहूं देखाउस अंडेसेबच्चा निकलनेकोथासो चोंचके और अंडेके खटकनेकीध्वनि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कलानाथा उनव्योपारियोंनेजो मेरे साथथेइस अंडेको कुल्हाडियोंसे तोड़ा मैंने उनको कि
तनाही वर्जाकि तुम इस अंडेकोनछुओ परंतु उन्होंने मेराकहना नमाना रुखके वच्चेको
काटभूनकरखा गये उनकेखानेही दोबडे टुकडे वादलके समानवायुमें हमको दूरसे दि
खाई दिये कप्तान जिसमैंने अपने जहाजपरनियत कियाथा उसदशाकोदेख घबराया
औरहमसबको पुकारके कहातुरन्त जहाज परचढ़ो उसवच्चे के माता पिता जिसे तुमने।
खायाहै आपहुंचे हमनेतुरंत सवारहो जहाजको वहांसेखोल दिया वहजोड़ा ऐसाशा
हू औरचिल्लातेहुए आयाकि जिससे हमभयभीतहुए फिरवह अपने अंडेको टूटादेख
औरवच्चेको उसमेंनपाय भयंकरशोचितहुए औरउड़के जिधर से आयेथे चलेगएथोड़ीदे
रतकवह गुमरहे इस समयांतरमें हमने जहाजको वहांसे खोलसब पालें उसकी खोल
दी किबहुतदूरनिकल जावें औररुखके डाबके देनेसे बचें परंतु उन्होंने हमेंपकड़लि
या बड़े२ पहाड़केटुकड़े अपने पंजोंमें पकड़वायुमें धरानेलगेसो एकने पत्थरहमारे ज
हाजके औरफेंका कप्तानने जहाजकोठहराया फिरवह पत्थरउस समुद्रमें इसवेगसे
गिरा किसमस्त समुद्रकाजलऊपरनीचेहोगया औरउसके नीचेकीपृथ्वीदिखाई देनेल
गी परंतु दूसरे नेऐसाताकके पत्थरमाराकि जहाज परलगा उस पत्थरके गिरतेही जहाज

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त टुकड़े २ होगया संपूर्णव्यौपारी ओरवस्तु ओरसेवक समुद्रमें डूब गये परंतुमैं थोड़ी देरतक
१४८ समुद्रके भीतर रहा फिर जलपरउठा संयोग बसएक तख्ताजोवहां जाताथा मैंने पकड़ली
या ओरएकहाथसे पैरनेलगा जबवहहाथ थक जाताथातोमैं दूसरे हाथसे पैरता यहांतक
146 किथकितभया ओरधारामें बहता २ तटपरजालगा यद्यपिवह किनारा बहुतऊंचा ओर
फिसलताथा परंतुमैं बड़ी कठिनता सेउस परचढ़कथकतो पर पहुंचा ओर घासपरसुस्ताने
कोबैठगया जबमुझेकुछ सामर्थ्य ओरशक्तिहुईतो उठकरउसद्वीपमें फिरनेलगा वहांस्था
न २ परबहुतसेबागथे जिनमेंबहुतसे फलदारवृक्षलगे हुएथे कुछफलतोहरे ओरकच्चे थे
ओरकुछपके ओररंगीन ओरस्थान २ परअतिनिर्मल ओरमिष्टजलकेकुंडथे जिनमेंउन
वृक्षोंकी जड़ोंमें जलपहुंचताथा मैंने उत्तम २ ओरपकफलखाये ओरकुंडसेजलपियाय
हांतककिरात्रिहुईमें एकस्थान परसोगया परंतुभयसे रातभरनिद्रानआई चिरकालप
र्यंत अपनेद्रव्य ओरआपत्तिकोस्मरणकररुदनकरताथा ओर अपनेकोधिक्कारदेताथाकि
को अपने घरसे निकल फिरपरदेश किया परमेश्वरनेमुझे बहुतकुछदियाथा जिस्सेसंपू
र्ण आयु आनंद ओरमंगलमेंव्यतीत होतीकभी उसउजाड़ टापूमें अपने छुटकारेकाउपा
यसोचता इतनेमेंभोरहुवा ओरदिननिकल आया तबमैं उनउपायोंको वहीछोड़उठ ख

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हुआ औरउनसफल वृक्षोंकी सैरकरनेलगाथोड़ी दूरगयाथाकि एकवृद्धको जिसकेनी
चेकायमरूफोलामारेहुएथा देखाकिएकछोटे सेझरनेके तटपरबैठाहुआहै पहिलेमैनेबि
चारकिइसकाभी मेरेसमानजहाजडूब गयाहोगा उसके समीपजाय मैनेउससे प्रणामकि
या उसनेउत्तरनदियाकेवल शिर हिलाया फिरमैंने उससे पूछातुम यहां बैठेक्या करतेहो
उसने सैनसेबताया मुझे अपनेकंधेपरबैठाकर इस झरनेसे उस पार उतारदे मैंने जानाकि वहचा
हताहै किमुझको बवारको फलतोड़ेगाउसकोयह स्वीकारहै किमैं उसे अपनेकांधेपरचढ़ा
कर उसपार उतारदूं निदान मैंनेकुछ येसासोच उसे अपनी गर्दन परचढ़ालिया और झर
नेकेदूसरी ओरले जायठहरा औरउसे अपने ऊपरसे उतारनाचाहा जबमुझे यहबात स्मरणआ
तीहै तोमैं बहुत हंसताहूं क्योंकि उसवृद्धने जिसमें शिथिल समझताथावड़ी चतुरतासे
अपने पांवको मेरे गर्दन पर रख इसवेगसे मेरागला घोटा निकटथा कि प्राण निकलजावे
और पांवउसका चर्मकी तरह लटकताथा निदान इस दुखसे बेसुधहोगिरपड़ा तबउसने
अपने पांवोंको कुछढीला कियाजिससे मुझमें श्वास आनेलगा औरमैं सुधिमें आया फिरउस
ने एकचरण अपना मेरे पेटमें गड़ाकरदूसरेसे मुझे लातमारी और मुझेबलसे उठाया औ
र वृक्षोंके नीचे मुझे लिये फिरनेलगा और सैन करताथा किमैं उनफलोंको इकट्ठाकरूं ।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सत्र
१४७

और खोऊं निदान वह समस्त दिवस मुझपर चढ़ारहा जब रात्रिहुई मैंने चाहा किसोऊं व
ह पृथ्वी पर अपने कोखव अपनेचरणों को मेरी गरदनसे मारान करताथा रातभर इसी
प्रकारसे एकबाजब भोरहुवा मुझे जगाकर फिर मुझपरचढ़ा और अनेक समय मुझे दौड़ा मा
र उस द्वीपमें लिये फिरताथा हे मित्रो मेरे इसदुःखको बिचारनाचाहियेकि उसहहसे मुझे
एक क्षणभी छुट्टी नमिलतीथी अकस्मात् एक दिनमैंने बहुतसे सूखे कद्दूभीतरसे खो
ले धरतीपरपड़ेहुए देखेमैंने एककोकि बहुत अच्छा औरबड़ाथा उठालिया औरभीतरसे अ
च्छे प्रकारसाफकर कई अंगूरके गुच्छे उसमें निचोड़े जबवह भरगया मैंनेउसे एकस्थानपर
दियाकई दिनके पश्चात जबमैं उसहृद्ध सहित उसस्थान परगया उसेपियातो बहुत उत्तम मदि
रा बनीहुईथी उसको प्रतिदिन थोड़ीसी पीता और उसके नशेमें उस मेहनत और श्रमको
जो बुड्ढा मुझसे लिया करताथा भूल जाता औरमनभी प्रसन्नरहता और कभी २ आनंदित
होय गाता औरनाचता जब उस बूढ़ेने देखाकि उसके पीने सेमुझे प्रसन्नता औरहर्ष प्राप्त
होता हैतोसेनसे उस मदिरा कोमुझसे मांगाकिमैं उसेपिलाऊं सोमैंने वहकद्दूउसे दिया उ
सने पहिले थोड़ीसी पी फिरजब उसे अच्छी प्रसन्नता प्राप्तहुई तबउसकद्दूको अपने मुखसेल
गा सबकीसब पीगया इतनी मदिरा उसकेवे स्वपिहोनेको बहुतथी फिरतोवह उन्मत्तहोय

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गाने और मेरी गर्दन परउवासमगाने औरझूमनेलगा यहांतककि मतवाला होगया औरगर्दन
उसकी झुक गई औरपांवभी ढीले पड़गए औरबेसुधि होगया तबमैंने अपनी गर्दनसे उसेपृ
थ्वी पर पटकदिया औरएक बड़ा पत्थरउठा इसबेगसे मारा कि वह मरगया मैं उससे छूटकर
अतिहर्ष पूर्वक समुद्रके तटपरगया अकस्मात् कुछ मनुष्यभी जलके लेनेके हेतु अपनेज
हाजसे उतरेथे औरजहाजको समुद्रकेतट परलंगरकियाथा उन्होंने मुझेदेख और मेरा वृत्तां
तसुन अचंभा किया औरकहाकितूउसबुड्ढेके हाथमें पड़ाथा उसने बहुतसे मनुष्योंको मा।
ला घोंटकरमारडाला है कोई उसके हाथसेनहीं बचातूबड़ा भाग्यीहै औरयहस्थान
है कोई इसमेंनहीं जाता फिर उन्होंने मुझे अपने जहाजमें चढ़ालिया उस जहाजके कप्ता
नने भीमुझपरबड़ी दया की इससमयानंतरमैंएकव्योपारीसे अत्यन्त मित्रता और प्रीतिहोगई
वह मुझे अपने साथलेकर एकटापूमें उतरा फिरउसने मुझे एकटोकड़ा देकर एकसमूह
के साथ कर दिया औरकहा चेतन्यरह इनमनुष्योंसे अलगनहोना नहींतो जीतानबचेगा औ
रजोकुछ कियह सबलोग करेंतुमभी करना औरसब आदमियोंने एक २ टोकड़ा उठालिया
वह मुझे अपने साथलेकरनारियल लानेकोबनमें गए वहां बहुतसे वृक्षनारियलके इतनेल
बे औरचिकनेथे किचढ़नाउनपर कठिनताथा हम सबचाहतेथे कि नारियलटोकड़ोंमें भ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
१५८

ये इतनेमें अनेकवानर देखे वह सब हमारे डरसे दृक्षोंपरबड़ी फुरतीसे चढ़गए फिर मेरेसा
थीशिला इकट्ठीकर बड़े वेगसे वानरोंको मारनेलगे मैंभी उनके समान उनदृक्षोंपर पत्थरफें
केनेलगा यहांतक किवह सबबंदर कोधित होय नारियलतोड़ २ करहमको मारनेलगेथो
ड़ी देरमेंवहस्थाननारियल सेभरगया हमने उनकोटोकड़ों में भरलिया मैंनेजो देखातोव
नमें बंदरों केबहुत होनेसे इससे कोई उत्तम उपाय नथाजोवह व्योपारी करतेथे फिरमें उन
सबकेसाथ नगरमें आया उसव्योपारीकेनिकट जिसने मुझेबनमें भेजाथा गया औरसबना
रियल उसेदिये उसने उनकामोलदेकहा तुमप्रतिदिन नारियल लायाकरो और उसके मो
लको इकट्ठा करते रहोजकाकालमें तुम्हें इतनाधनप्राप्त होगाकि निज नगरकोपहुंच जा
वोगे मैंने उसकी कृतज्ञताकीऔर थोड़े दिनोंमें नारियलबेंच करेबहुतसाधन इकट्ठा कियाऔ
रजहाज जिसपरमैं और दूसरे इसनगरके व्योपारि नारियलमोललेनेके वास्ते आयेथेवह
लगया इसवास्तेमैं दूसरेजहाजकीबाट देखताथा इतनेमें औरजहाज वहां परपहुंचा मै
नेकिरायाकर अपने नारियलोंकोकिवहां परनहीं बेचेथे उसपरलादेमें उसी व्यापारीसे
किमेरा उपकारीथाविदाहोय सवारहुवा वहांसे हम उसटापूमें आयेजहांकाली मिरच उ
गतीहै फिरवहांसे कमरीटापूमें गये जहां आवनूस औरचंदन उगताहै वहांके मनुष्य

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दिया पीना अशुद्ध समझतेथे और संपूर्ण कुकर्मोंसे अलगरहते उनदोनों द्वीपोंमें मैनेअ
पने नारियलसे काली मिरच औरचंदनबदला औरवहां पर अन्य व्योपारियोंके सम्मत से।
समुद्रसे मोती निकलवानेमें तत्परहुवा औरबहुत से गोते खोरोंको नियत कर मोती निक
लगये ईस्वरकी पूर्ण कृपा औरमेरे भाग्यसे अन्य व्यापारियोंकी अपेक्षामेरी पारीमें बहुत।
बड़े औरमोल मोतीनिकले फिर वहांसे बंदर बांसराकी औरवहांसे बुगदादमें आये वहांमे
ने काली मिरच औरचंदन औरमोतियोंकोबड़ा महंगा बेचा औरबहुतसा लाभ हुवा औरद
शांश उसका दानकिया फिरनानाप्रकारके आनंदभोगनेलगा सिंदबादने इस कथाकोस
माकर १०० रुपये हिन्दबादकोदिये उसे औरसंपूर्णसभाकोबिदा किया दूसरेदिनबहुत स
बसिंदबादकेघर आये औरभोजनकरबैठे यात्राका वृतांतसुननेलगे ॥ सिंदबादजहा।
जीकी छठी यात्राकावृतांत सिंदबादने अपनीसभा औरहिंदबादसे कहाकितुम बिचा।
रोकि कितनाधन परमेस्वरने मुझेदिया औरकैसी आपत्ति निवारण की कई बेर अगलेस
फरों में मैं मरनेको पहुंचा परंतु अपने भाग्यसे रक्षा पूर्वक रहाजब मुझेवह दशा स्मर्णहो
तीहै बहुत अचंभाकर परमेस्वरका धन्यबाद करताहूं एकवर्षके पश्चात फिरमैंने परदेश।
गमनकी इच्छाकी यद्यपि नातेदार औरमित्रमेरेबांधकथे परंतुमेंने उनकाकहनान माना

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सत्र ओर खुश्की का सफर किया फिर में कई शहरके नवाबोंमें गया ओर वहांसे एक बंदरमें पहुं
१५९ चकर एक अच्छे जहाज पर सवार हुवा जिसके कप्तान की इच्छा बहुत दूर जानेकी थी जब
149 बहुत दूर तक गए अकस्मात कप्तान पथ भूल गया वह नहीं जानता था कि जहाज किस ओ
रको जाता है एकदिन कप्तान एकहीबेर अपनी पुस्तक फेंक कर रोने लगा ओर पगड़ी शि
रसे उतार एकदी ओर कभी दाढ़ी नोचता ओर शिर पीटता हम सबने भयमान हो उससे पूछा
कि तेरे रोनेका क्या कारण है उसने कहा क्या कहते हो हम बड़ी आपत्तिमें पड़े क्योंकि नदके
धारा हमको विवश खींचे लिये जाती है पाव घड़ीके समयांतरमें हम सब मर जावेंगे फिर
उसने आज्ञा दी कि जहाजकी पालें उतार दी जावें उनके उतारते २ तूफानके बेगसे जहा
जकी पसियां टूट गईं ओर जहाजने पहाड़से लग ऐसी ठोकर खाई कि शीशेके समान
चकनाचूर होगया हमने केवल इतना अवकाश पाया कि खानेकी वस्तुको धरती पर उ
तारा ओर असबाब वहीं छोड़ा कप्तानने कहा जो होना था सो हुवा अब एक दूसरेसे बिदा
होय अपनी २ कबर खोदो ओर मरने पर तत्पर रहो क्योंकि कोई इस मारक स्थानसे जीता न
ही बचा इस बचनको कप्तानसे सुन एक दूसरेके कंठसे लग अपनी २ अभाग्यता पर बहु
त रोने लगे उस पहाड़के नीचे चारों ओर बहुतसे जहाज टूटे हुए पड़े हुए थे ओर स्थान २

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पर मनुष्योंकी अस्थिकेढेरजहांतक किदृष्टि पहुंचतीथी दिखाईदेतेथे उनके देखनेसेवि
दितहुवा किहजारों जहाजी इस स्थान परफंसरहगए औरमरगए और उस पहाड़के ऊपरना
नाप्रकारके बीपारकीवस्तुपड़ी हुईथी उनके देखनेसे हम अधिक अपने प्राणसे निरास हु
ए उसस्थानपर कईबड़ी नदियां मिलकरएक खोहमें किबहुत तंग और अंधेरीथी बहती
औरउसपहाड़ परबिल्लौर औरलाल और बहुमूल्य रत्नोंकी खानथी औरउस पहाड़से रा
लटपककर समुद्रमें पड़तीथी मछलियां उसे निगलकरथोड़ी देरके पीछे उसरालकोउ
गलती फिरवह रालवह करतटपर आलगती वही ठीक अंबरकहै इसके विशेष बहुत
से ऊदके वृक्षजैसे किमेकेरी द्वीपमें देखेथेदिखाईदिये औरउस नदीमें उसी पहाड़के
समीप ऐसाबड़ाभंवरथा किदूरसे जहाजोंको वहांखींचलाता सिवाय इसके उस नदीके
धाराकाऐसाबेगथाकि जहाजको बचना वहांसे अत्यन्त कठिनथा औरसामनेकी ओरऊंचा
सु पहाड़की ऊंचाईके कारण जहाजकोनलगती किउसधारासे उसेबचाकरलेजाती नि
दान जहाज बेबश पहाड़के समीप पहुंच खंड २ होजाताऊंचाई पहाड़की इतनीथी किमनु
ष्य और पशु उस परनचढ़सक्ता किदूसरी ओर निकल जावे हमसबउस पहाड़के नीचे अ
पने प्राणसे निराश पड़ेथे औरसब भोजनकी वस्तुजो हमजहाजसे उतारलाएथे परस्पर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स॰ बराबर भागकर लिये और जो कोई हम में से मरता हम सब वहां उसको गाड़ते विशेषकर गा
१५० ड़ने की सेवा मैं किया करता जो कुछ कि भोजन उसका बचता वह सब मुझको मिलता इस
180 कारण मेरे निकट खाने को वस्तु बहुत रहती निदान मेरे सब साथी कालवश भये और
मैंने सबको गाड़ा और पहिले अपने लिये कबर को खोद रक्खा कि मृत्यु के समय में भी उ
स में पड़ रहूंगा और अकेले रह जाने से मैं ऐसा दुखित हुआ कि जिसका वर्णन नहीं हो सके
और अपने को सहस्रों धिक्कार देता था कि इतने डाव उठाने पर भी तुझे बोध न हुआ लोभ वा
श फिर तूने सफर किया और अब ऐसी बला में पड़ा कि छुटकारा कठिन है अब तू यहां मरके
रह जावेगा और वह द्रव्य जो तूने अपने पांच सफर में कमाया है कौन खावेगा और तेरे कि
स काम आवेगा निदान रात्रि दिवस इसी सोच विचार में रहता था ईश्वर के अनुग्रह से
एक दिन मैंने ध्यानपूर्वक और बड़े विचार से देखा और सोचा कि सब नदी मिलकर इस
खोह में जाती हैं विश्वास होता है कि यह जल कहीं न कहीं वहकर निकलता है और वहां
से होकर अन्य देशों में वहता है निदान इन सब बातों को भली भांति विचार अपने मन में कह
ने लगा कि अब तो किसी भांति अपने को इस जल में डाल दिये यदि कुशल पूर्वक किसी औ
र को निकल गया तो बहुत उत्तम है नहीं तो यहां हो पड़ा रह जाऊंगा अब भी मरना फिर भी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मरना इसबातकी हद अपने चित्तमें ठहरा जहाजके पाट और पक्षियों कि असंख्यवहां प
ड़ी थीं उनाकर एक छोटीसी डोंगी बनाई और बड़ी २ मणि बिल्लौर रत्न और धन आदि वस्तु
स्तनहली रुपहली उस समुद्रके तटपर लाय गठरियोंमें बांधी और उस नावके दोनों ओ
र बराबर भारकर गठरियों को रकवा और दो डांडे लेउसपर बैठा और परमेश्वर पर भरोसा र
ख उसनावको खोहके बहावमें छोड़ा और वहांसे उसे खेने लगा अंधियारेमें धारा बेबशाव
हाये लिये जातीथी कभीमें उसे खेता और कभी थकित होय स्वस्तीन लगता कहीं वह
कंदरा बहुतऊंचीथी और कहीं ऐसी नीचीथी कि बहुत उसकी मेरे शिरको लगती और
शेषभोजन जो मैने रखलियाथा क्योंकि यह नजानताथा किक्या होगा और कहां जाऊं
गा बहुत थोड़ा २ खाता अर्थात् इतना खाता कि जिसमें जीतारहूं निदान मुझे निद्राने ऐ
सा बेबश किया कि उसनाव परसो गया और इतनी देरतक सोयाकि जिसका प्रमाण न
हीं फिरजबमें जगातो अपनी नावको निर्मल नदीके तटपर एक नगरके नीचे बंदीहुई
पाई और अपने चारों ओर वहांबासियोंका समूह देखातो मैने उनसे प्रणामकिया और स ब
भांति काहाल पूछा उन्होंने उत्तरदिया परंतुमें उनकी भाषा कुछन समझा में वहां पा
हुंचने से अति प्रसन्नहुआ और मनमें कहने लगाकिहे परमेश्वर कामें स्वप्नदेखताहूंग सा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दात् इसस्थान परपहुंचा यह सबचिन्ह जागनेके देखकर मुझे हतचित हुआ किमैं स्वप्न
नहीं देखता तब बड़े शाहसे अरबी विद्यामें परमेश्वरका धन्यबाद कर कहने लगाकि परमे
श्वर प्रत्येक क्षण मनुष्यको सहायता करताहै मनुष्यको उचित नहीं कि कुछभी शोच
करे तू अपने नेत्रबंदकर और अपनेको उस परमात्मा परछोड़ दे तब वह तेरे सब कष्टोंको नि
वारण करेगा उन हबशियोंमें कि एक मनुष्य अरबी भाषा समझताथा मेरे समीप आ
य कहने लगा भाई हमको देख आश्चर्यमत कर हम यहांके वासीहैं आज हम खेती सीं
चने को इस नदीपर आयेथे पर जब हमने देखाकि नदी का जल किसी वस्तुसे रुकगया और
एकनाव उसके मुखपर आड़ी खड़ी है सो हममेंसे एक मनुष्यपैरकरगया और नावको व
हांसे निकाल यहां बांधदिया और तेरे जागने की बाटदेखरहे थे अब तू अपना वृत्तान्त
कह कि क्योंकर इस नदीमें आया और कहांसे आताहै तो पहिलेमैंने उनसे खाने को मांगा
और कहाकि उचितहै कुछ खालूं तो अपना वृत्तान्त वर्णन करूं उन्होंने कई भांतिका भो
जन मुझेदिया मैंने उसेखा कर अपना आदिसे अंत पर्यंत वृत्तान्त कह सुनाया वह सुन आ
सन आश्चर्यित हुये और उनके उल्थाकने मुझसे कहा हमसबको तुम्हारा हाल सुन अ
चंभा हुआ अब हम तुझे अपने बादशाहके सन्मुख ले जावेंगे तब अपनी कथा उसके सन्मु

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ख प्रगट करना मैंने उनसे कहा मैं नम्र हूं जो तुम कहोगे सो करूंगा फिर उन्होंने मुझे एक
अश्व पर चढ़ाया और उस नावको मणि आदिकी गठरियों समेत उठा मेरे पीछे हो लिये
फिर मुझे संरदीप में कि इसी नाम से ख्यात था ले गये और वहांके बादशाहके सन्मुख किया
मैंने हिंदके बादशाहको सिंहासन पर बैठे देख हिंदुओं की तरह प्रणाम किया फिर सिं
हासन हुमा बादशाहने मुझे अपने निकट बैठाय मेरा नाम पूछा मैंने कहा मेरा नाम सिं
दबाद जहाजी है मैं बोपारी बुगदाद नगरका वासी हूं फिर उसने कहा तुम मेरे देशमें क्यों
आया और कहांसे आता है मैंने अपने वृत्तांतको उसके सन्मुख विस्तार पूर्वक प्रगट कि
या वह सुन अचंभित हर्षित हुवा और आज्ञा दी कि इस सब कथाको स्वर्णके जलसे जो
पुस्तकें और इतिहास आदि हमारे देश में हैं उनमें लिखो फिर वह गठड़ियांभी उसके स
न्मुख खोली गई वह चंदन मणि माणिक और रत्न आदि देख अचंभित आश्चर्यित हुवा
और कहा ऐसे रत्न मेरे कोष में भी नहीं हैं फिर उसने उन रत्नों को एक कर देखा मैंने उससे
विनय की कि हे स्वामी मैं और यह वस्तु सब तुम्हारी हैं जितना चाहो लेलो उसने मुस
कराय कहा यह सब रत्न परमेश्वरने तुमको दिये हैं उचित नहीं कि मैं तुमसे लूं किंतु उ
सने और बहुतसे रत्न दिये फिर बादशाहने मुझे अपने एक बड़े अधिकारीको सौंपकर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त हा कि इसमनुष्यको बड़ी रक्षा और आनंदमें रखियो किसीभांति का दुःख इसेन पहुंचे और एक
१५२ ई मनुष्य मेरीसेवाके निमित्त नियत किये जितना कि यत्न वह चाहे हमारे कोषसे मिले उ
152 स सरदारने गरहड़ियों सहित मुझेलेजाय एक उत्तम गृहमें उतारा परंतुमें प्रतिदिवस बाद
शाहकी सभामें जाता और सावकाश पाय उसनगरको और महल और वस्तुओं कोनो २
देखने योग्यथी जाय देखता सरंदीप टापूकि मध्यरेखा केनीचे वर्तमानहै इसहेतुपतादिन
वहांसदैव समानहैं लंबाई उसकी ८० मील अर्थात चालीसकोशकीहै और इतनाही चोड़ा
नहीहि पड़ा उसनगरके चारों ओर बड़े २ पहाड़हैं वहनगर देखके समानहै वही संसारके सब
सेबड़े पहाड़हैं समुद्रवहांसे तीनदिनकी राह परदेखा माणिक आदि रत्नोंकी वही खानहै
औरकोरंड कि हीरे और कुरंड रत्नोंको काटना और छीलनाहै उसद्वीपमें बहुत सा देखा
और खोपड़े आदि फलोंके वृक्ष सेबहुतदृष्टि पड़े और मोती वहांके समुद्रमें बहुतहैं
और वह पहाड़कि जहां आदम अर्थात मुसल्मान और अंग्रेजोंका आदि मनुष्य जोस्व
र्गसे निकाले जानेके पश्चात रहतेथे जाकरमैंने देखा और वहां परचढ़ यात्राकी जब
उसद्वीपको भलीभांति देख चुकातो बादशाहसे विनयकी अबमुझे विदाकरो उसनेमुझे
अनेक प्रकारकी उत्तम २ वस्तुओर द्रव्यदे विदाकिया जबमैं वहांसे चलनेलगा तो उसनेएक

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

क पत्र और बहुत सी वहांकी बहुमूल्य वस्त्र और सौगात देकर कहा कि इनको मेरी ओर से
अपने खलीफ़ा हारूं रशीद को देना मैंने आनंद पूर्वक उस पत्र और वस्त्र को लेकर उससे
यह प्रतिज्ञा की कि मैं यह सब खलीफ़ा के सन्मुख लेजाय आपकी कृपा जो आपने मुझ प
र की है वर्णन करूंगा मेरे जहाज पर चढ़ने के पहिले बादशाह ने कप्तान और व्यापारियों
से जो उस जहाज पर थे मेरे वास्ते बहुत कुछ कहा इस मनुष्य को आनंद और रक्षा पूर्वक
इसके नगर में पहुंचाना सरन्दीप के बादशाह का पत्र खलीफ़ा हारूं रशीद के नाम कि
सी पशु के चर्म पर लिखा हुआ था क्योंकि उस देश में वह बहुमूल्य बिकता था इस वास्ते ब
हुत अच्छा और सुलभ्य था उस चर्म का पीत रंग था और उस पर लाजवर्द से लिखा हु
आ था उसका विषय हिंदी भाषा में इस भांति लिखा गया ॥ यह पत्र हिंद के बादशाह
की ओर से जिसकी सवारी के आगे सहस्र मतंग का समूह होता है उसने अपना वा
सस्थान ऐसा बनाया जिसकी छत में एक लक्ष दिव्य मणि जड़ित प्रकाशित हैं और अ
पने कोष में बीस सहस्र हीरों से जड़ित मुकुट रखता है खलीफ़ा हारूं रशीद के नाम
तुमको यह सौगात इस प्रकार से भेजाते हैं जैसे भाई भाई वा मित्र मित्रों की सौगात की
तौर पर भेजते हैं हम चाहते हैं कि तुम हम पर प्रसन्न रहो और अपना परमित्र समझो व

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सम मको प्रणाम भेजतेहैं ओरयहप्यारी कुशलपूछतेहैं अधिकशुभ ॥ उन सोगातों मेंसे एक
१५६ यहथी कि एक प्यालायोन गिरहके दलकाथा ओरमणि सेबनाहुवाथा ओरउसके चा
153 रों ओर बहुतसी मोतियों कीफालरथी ओर प्रत्येक मोती उसका १ मासकाथा दूसरा
यहथा किएक सर्पकी खालकिसिकुना उसका रुपये सेचौड़ाथा उसमें यहगुणथाजो
कोई उसपर सोवेवा लोटकभी रोगीनहोवे तीसरी सोगात महासुंदर ओर दिव्य ऊदकी
लकड़ीलक्ष मुद्राके मोलकीथी चौथी सोगात तीसहदाने काफूरके पिस्तेके बराबरथे पां
चवीं सोगात एक बांदी अतिरूपवानछवि धाम जिसकेदिव्यबस्त्रोंमें बहुमूल्य रत्नजड़ि
तथेतदनंतरमेरी भाग्यसेवह जहाज कुशल सवेक तेरन बंदर बासराको पहुंचा ओर ब
हांसे बुगदादमें आया सब कार्योंके प्रथम वहपत्र ओर सोगात बादशाह सरंदीपकी
लेकर खलीफा हारूंरशीदकीड्योढ़ी परपहुंचा ओरउस लौंडीकोभी निजपरिवारसे
रादिन लेगया अपनेपहुंचेन का बादशाहको कहला भेजाबादशाहने मुझे बुलगया
डेवढ़ी दारमुझे हाथों हाथबादशाहके सन्मुखलेगये मैंने पृथ्वी चूम बादशाह सरंदी
पकी सोगात ओरपत्र दिया जबउसने उस पत्रको पढ़ा मुझसे पूछा कावह शाहनशाह
इतनाही बड़ाहै जैसाकि वह अपने पत्रमेंलिखताहै मैने विनयकी कि हे शाहनशाह

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

उसने कुछ अस्तुहनहीं लिखीमें उसकी बड़ाई और प्रताप अपने नेत्रोंसे देख आयाहूं स
बसे असर्व और अद्भुत उसका मंदिर हैजब वह सवार होताहै मंत्री और सरदार हाथि
यों परसवारहो पंक्तिबांधकर चलते हैं और उसके सिंहासनके आगे प्रधान स्नहले ब
रछे हाथोंमें लिये हुए और एक मनुष्य पीछे स्वर्णका मोरछल लिये हुयेहवा करता
है और उस मोरछलकी चोटीमें एक आधी गिरह कालंबा और पौनगिरहका चौड़ा नी
लमणिचमकताहुआ दृष्टि आताहै औरएक सहस्र मनुष्यरेशमी औरस्नहले आ
दिवस्त्र पहिनेहुएहाथियोंमें सवार रहतेहैं औरहाथियोंकी सामग्री और हौदेऐसेब
हुमूलहैं किजिनकामैं वर्णननहीं करसका जब उसका हाथी चलताहैतो एक सरदा
रहाथीके आगेबड़े ऊंचे शब्दसे बेर २ यहकहा करताहै कियहबड़ा ऐश्वर्य्यवान हिंदुस्ता
नका बादशाहहै जिसके अति विचित्र और दिव्यमंदिरमें लक्षमणि जड़ितेहैं औ
रइसके निकट बीस सहस्र मुकुटहैं सबमुसल्मान औरहिन्दूराजा इसी पदवीमें नू
तेहैं जबअगला सरदार यह कह चुकताहै तो दूसरा सरदारजो सिंहासनके पीछे हो
ताहै यह प्रकारके कहताहै कि इतना बड़ा बादशाह होने परभीयह अवश्यमरेगा फि
रअगलाकहता है इसे आशीर्बाददोकि यह सदाजीतारहै यह बादशाह ऐसाप्रतापीहै।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्र
१५५
159

कि जिसके नगरमें कोईभी मायाधीशनहीं और कोतवाल नहीं उसकी प्रजामें ऐसा स
मझतेहैं कि कोई किसी पर अन्याय और डवनहीं पहुंचा सका प्रीति और मित्रतापूर्वकनि
र्वाह करतेहैं इसनिमित्त मायाधीश आदिकी कुछ आवश्यकता नहीं बादशाहने य
ह यहसुनकर कहा तेरे कहने और पत्रोंसे जाने पड़ताहै कि वह बादशाह बड़ा बुद्धिमा
न और चतुरहै और बुद्धिमानी यहीहै कि वह ऐसा मायी कहलाताहै फिर खलीफाने
सुके खिलअतदे विदा किया सिंदबादने अपनी इतनी कथा कहकर ४०० रु० हिन्दबा
दको दिये दूसरे दिवस उसके सभासद और हिंदबाद भोजनके समय आये जब सब खा
चुके सिंदबादने अपने सातवें सफरका वृत्तांत कि वह अंतका सफरथा कहना आरंभ
किया ॥ सिंदबादजहाजीको सप्तमयात्राका वृत्तांत मित्रो मैंने यह प्रतिज्ञाकीथी कि फि
रकभी जलकी यात्रा न करूं और आयुभी मेरी इतनी बड़ी होगईथी कि जिससे मैं चाह
ताथा कि कहीं न जाऊं और आनंद पूर्वक अपने घरबैठा रहूं निदान आनंद और सुखपू
र्वक अपने घररहनेलगा एक दिन अपने मित्रोंसहित भोजन करताथा कि अकस्मात
एक सेवकने आयकहाकि खलीफ़ाका सरदार तुमसे कुछ कहनेको आयाहै मैं व
हांसे उठ सरदारके निकट गया उसने कहा खलीफ़ाने तुझे बुलायाहै मैं तुरंत खली

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

फाके सन्मुख गया और प्रणामकर धरती चूमी खलीफाने कहा सिंदबाद मैं चाहता हूं कि
सरंदीपके बादशाहकी उनसोगातोंके बदले मैं भी कुछ भेजूं और उसके पत्रका उत्तर भेजूं
सो यह सोगातें मेरी ओरसे उसे जाकर दे यह बादशाहकी आज्ञा मुझे अत्यंत दुःखदाई हुई
मैंने विनयकी कि हे स्वामी जो मुझे आज्ञा होगी उसका उल्लंघन कभी न करूंगा परंतु यात्रा
की आपत्तियोंसे ऐसा दुःखित हुवा कि इससे अधिक मुझे यात्रा करनेकी शक्ति नहीं और मैं
ने प्रण किया है कि फिर यात्राकी इच्छासे बुगदादसे न निकलूं और सब यात्राकी आपत्ति
कह सुनाई खलीफाने उनको सुनकर अत्यंत आश्चर्य किया और कहा वास्तवमें यह वृ
त्तान्त जो तूने वर्णन किये अत्यंत अद्भुत और असंभव हैं परंतु एक बेर मेरे वास्ते सरंदीप टापू
तक जाना अवश्य है फिर तू यात्रा न कीजियो जब मैंने देखा कि खलीफा इसमें बहुत बा
दानुबाद करता है मैंने निरुपाय होय सरन्दीपमें जाना स्वीकार किया उसने मुझे १०००)
राह खर्च देकर कहा कि तुरंत अपने यात्राकी तय्यारी करो मैंने कई दिनके समयांतरमें ते
य्यारीकी और खलीफाके सन्मुख विदा होनेको गया उसने उत्तरपत्र अपने हाथसे लिख
कर सोगात सहित मुझे दिया मैं लेकर बंदर बासराको गया वहां जहाजपर चढ़ कुछ काल
मे उन बस्तुओं सहित कुशल पूर्वक सरंदीपमें पहुंचा वहांके सरदारोंसे मिल उनके द्वारा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स७
१५५
155

बादशाहको अपने आनेकी खबर कहला भेजो फिर वह सब बादशाहको आज्ञानुसार मु
के बादशाहके सन्मुख लेगये मैने प्रणामकर गरदनके आगेकी धरती चूमा उस बादशा
हने मुझे देखतेही पहिचाना और अमित प्रसन्न हुआ और पूछा कि सिंदबाद तू कुशल
से है मैने बिनयकी कि मैं आपको सदैव स्मरण करताथा आजका दिन बहुत उत्तम है कि
मैने आपके दर्शन किये फिर मैने उसकी बहुतसी स्तुति और प्रशंसा कर खलीफाको सौ
गात और पत्रको दिया उसने उसको बड़े हर्षसे लिया खलीफाने ५००० रुपयेकी लागा
तीका फरश किरमिज़ी रंगका जिसपर अच्छा काम किया हुआ था और एक प्याला मा
णिक का कि एक उंगलीके बराबर मोटा और उसके किनारे पर एक मनुष्य का चित्र
सभी निखुदा था कि अपने छत्रपर धनुष और शर चलाकर सिंहको मारता है भेजाथा औ
र इसके विशेष एक बहुमूल्य हज़रत सुलेमानका तख्त था और उस पत्रमें यह विषय
लिखाथा ॥ खलीफाके पत्रका विषय अबदुल्लाहारूं रशीदकी ओरसे जो परमेश्वर की
सरण कृपासे अपने गुरुजनों का युवराज है प्रणाम पहुंचे तुम्हारा पत्र सौगातों सहित पहुं
चा अब हम प्रसन्नतासे उसका उत्तर सौगातों सहित भेजतेहैं निश्चय है कि वह पत्र तुम्हा
रे शरण पहुंचेगा जिसके आशयसे प्रीतिका हाल जो हमको तुमसे है बिदित होगा सर्दी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ने कौवादशाह यह पढ़ अत्यंत हर्षित भया फिर मैंने बिदा मांगी वह कृपाके कारण शीघ्र
बिदा न करताथा निदान बड़े विनयके पश्चात् उसने मुझे खिलअत आदि पारितोषिक देके बि
दा किया मैं जहाज परचढ़ सीधा बुगदादको चला परन्तु औरकहूं मेरे भाग्यमें लिखाथा कों
कि बुगदादमें जैसाकि शीघ्रमें परमेश्वरसे पहुंचना चाहताथा नपहुंच सका बहांसे चले तो
न वा चार दिवस व्यतीत भये होंगे कि एकाएक हमें लुटेरोंने आयघेरलिया हम उनसे सा
मना न करसके निदान उन्होंने हमारा जहाज़ लूटलिया और हम सबको पकड़के अप
ना गुलाम किया और जिन मनुष्योंने उनका सामना किया बहुसब उनके हाथसे मारे ग
ये फिर उन्होंने हमारे वस्त्र उतारके हमें नग्नकर एक जोड़ा गजीका जैसाकि गुलामों को प
हिनाते हैं दिया और बड़े हरकेटापूमें लेजाय हमसबको बेचडाला मुझे एकबड़े धना
ढ्य ब्योपारी ने मोल लिया और अपने घरले जायसबको के समान वस्त्र पहिनाये औ
र खानेको दिया वह धनाढ्य मेरे हालको का जानताथा एक दिन पूछने लगा कि तुझे कु
छ कार्य आताहै मैंने उत्तरदिया मैं ब्योपारियों का काम करताथा लुटेरोंने मुझे और
मेरे साथियोंको वस्त्रसहित लूट लिया और सबको गुलाम बनाकर बेचडाला फिर उसब्यो
पारीने कहा तू फेनी रचलाना आताहै मैंने कहा बाल्यावस्थामें मुझे निस्संदेह तीरचलाने

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त. का अभ्यासथा औरवह अबनकनहीं भलाब्योपारीने यह वचन सुनमुके शरयन्तुषदे ई
१५८ पनेसाथ हाथी परसवार किया और एकबड़े बनमें कि नगरसे कईदिन की राहपरथाले
156 गया औरबहुत हरउस बनमें जाय एकस्थान परउतारा औरएक बड़ा वृक्षदिखाय का
हाकितू इसपरचढ़केबैठ औरजो हाथी इधरसे जावे उसको तूशरसे मारियो इसबन
मेंबहुतसे हाथीहैं यदिकोई मनगजफसे माराजावेतो मुझे आय कहियो यह कहउ
सने मुझे खाने कोदिया औरनगरके औरचला गयामें उस वृक्षपर चढ़ रातभरदेखता
रहा परन्तु कोई हाथी मेरी दृष्टिन पड़ा दूसरेदिवसभोरको सूर्य्य उदयहोनेके समयएब
हुत सेहाथी वहां आये मैंने बहुततीर उनको मारे निदान एकहाथी घायल होकरगि
रा और शेषभाग गयेमें उसबनको खाली पाकर नगरमेंगया औरउस ब्योपारिसे कहा
कि एक हाथी मेरेहाथसे घायलहो गिराहै यहसुन वह मुझसे अत्यंत प्रसन्नहुआ मु
झको नाना प्रकारके भोजन प्रीति सहितखिलाय औरमैंभी बहुतप्रशंसा की द्वितीयदि
वस फिरहमदोनों उसी वनमें गये मैंने उसहाथी को खोदकर गाड़ दिया उसब्योपारीने
कहा जब यह मृतक हाथी पृथ्वीमें सड़जावेतो दांत उसके निकाल करले आइयो उ
सेबहुतलाभहोगा फिरदोमासतकमैं यही काम करता रहा एकहाथीको तीरसेमा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

देता और उसके दांत निकालकर व्योपारीको देता कभी उसवृक्षसे उतरता और कभी कि
सी आवश्यकता से उसपर चढ़ता एकदिन भोर कोमैं वृक्षपर चढ़ाहुआथा कि अकस्मात्
एकहाथियोंका समूह उसबनमें आया और उस वृक्षको चारों ओरसे घेरबड़े भयानक
शब्दसे चिल्लानेलगे उनकी आधिकतासे वहांकी धरती छिपगई औरउनके पांवकी धम
कसे धरती हिलनेलगी वहमुझेदेख अपनी सूंडउस वृक्षकी जड़मेंलपेटखींचनेलगे
औरउखाड़ने की इच्छा करतेथे यहहाल देखमैं भयभीतहुआ और ऐसाडराकि धार
यनुषवहाथसे धरतीपरगिर पड़ामैं अपनेजीवनसे निरासहो उसवृक्षकी टहनियोंमें लि
पट रहा यहांतककि बड़ेहाथीने आकर अपनीसूंडको उसवृक्षमें लपेटऐसा बल कि
याकि उस वृक्षको जड़से उखाड़ पृथ्वी परडाल दिया जबमैं उसवृक्षके साथ धरती पर
आगिरातब उसबड़े हाथीने मुझे उठाय अपनी पीठ परबैठा लियामैंभय से मृतकको।
के समान उसकी पीठ पर पड़गया फिरवह बड़ा हाथी सबके आगेहुआ और सब हा
थी उसके पीछे पंक्ति बांधकेचले चलते २ मुझे एक ठहरमें लेगए और अपनी पीठसे
उतार बैठाया औरवहांसे सब हाथियोंसहित वहचलागयामैं बड़ी देरतक वहांबैठा
रहा जबमैंने देखाकि वहांकोईभी हाथी नहींहै तबमैं धीर्यधरकरउठा इतनेमें एका

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
१५०
157

बड़ा चौड़ा चारों हाथीकी अस्थि औरदांतों सेभराऊ आटाष्टि पड़ा मैंने अपने मनमें शोचा
और अचंभा किया कि यह हाथी बड़े बुद्धिमानहैं जब उन्हें यह सूचितहुआ कि केवल मैं
दांतों के हेत उनको मारताहूं इसलिये उन्होंने मुझको एकगढ़े परलाय दिखलाया कियह
बहुतसेदांतहैं जितने चाहैले और हमारे मारने को इच्छा न कर पंरन्तमें वहां अधिक नवह
रा और नगरके ओर चला एक एनदिनमें अपने स्वामीके निकटजाय पहुंचा मार्गमें कहीं।
हाथी दृष्टिन पड़े इससे सूचितहुवा कि वह मुझे उस गढ़ेपरछोड़ कर और किसी बनमें
चले गये कि दांतभी मैं लेलूं और आगेको उन्हें दुःखनपहुंचाऊं निदान जब मेरेस्वामीने मु
फे हरसे देखा प्रसन्नहोकरबड़े शाहसे कहनेलगा कि हे दीन सिंदबाद तू कहांथा मैं तेरे।
लिये बहुत शोच करताहूं तेरे फलनाहुआ उसबनमें गया वहां जाय उस हक्षपर जहां
तरहो करताथा देखा कि मूलसे उखड़ा पड़ाहै और तेरा शर धनुष पृथ्वी परपड़ा देखा
तेरे बहुत ढूंढ़ाकहीं नपाया तबसे निराशहोकरबैठ रहा अबतू अपना हत्तान्तकह
कि तुझपर क्या हुवा औरक्योंकर अबतक जीताबचा मैंने सबहाल अपनावर्णन किया यह
बोपारी उसगढ़ेकाहाल सुन प्रसन्नहुवा औरमेरे साथ वहां जाकरहाथी दांत जितने कि
उठासका अपने हाथी परलादलाया और मुझसे कहाभाई आजसेतू मेरा गुलाम नहीं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तूने मेराबड़ा उपकारकिया अबमैंबहुत धनाढ्यहोजाऊंगा परमेश्वर तुझे खुशरक्खे मैंने अबतक तुझसे इसविषयकी ख़बरक्खाथा वह यहहै कि हाथियोंने इसबनमें मेरेब हुतगुलामजोहाथी दांतके प्राप्त करनेके हेतजातेथे मारेकोईतोतुरंत औरकोई दोतीन दिवसकेपश्चात् उनहाथियोंसे मारेगये परंतु परमेश्वरने तेरीरक्षाकी औरतुझेयश दिया औरदयाकी इससेविदितहुवा कितेरी आयुबड़ी होगी और आनंद पूर्वकतू इससंसारमें रहेगा इससे पहिले मैं बहुतसे मनुष्योंके मरने परभीलाभवान नहीं होताथा औरमेरे बहुतसे आदमी उसकी ढूंढमें कालवश हुये अबतेरे द्वारामें औरइसनगरके संपूर्ण मनुष्य हाथी दांतकीखानके पानेके कारणधनाढ्य औरद्रव्य युक्त हो जावेंगे तू इतनाहीन विचारियो कितेरा छुटकारा करूंगा किंतु तेरे साथ बड़ा उपकार करूंगा औरइस नगरके वासियों सभी तुझे ऊंचेपदला हूंगा मैंने यहसुन उससे कहा ईश्वर तुम्हें जीतारक्खे और तुम्हारा जीवन सफल करे कि तुमने मुझे छुड़ादियामैं इसविषय में तुम्हारा कृतज्ञहूंमैं वास्तवमें यहां रहनेसे प्रसन्नथा कि इस नगरमें तुमने मुझे मोल लिया अबमैं तुम्हारी औरपुरवासियोंकी कृपासे आशा रखताहूं कि मुझे बिदाकरो यह सुन उसब्योपारीने कहातूथीरधरावे जहाजोंके आनेकी ऋतुमें किवह हाथीदां

सप्त
१५८
158

त लादनेको आवेंगे हम तुझे बहुतसा खर्चदे उनपर चढ़ाके तेरे नगरकी ओर बिदा करेंगे मैं
उसका अधिक कृतज्ञ हुआ और आशीर्वाददेने लगा फिर मैं उस नगरमें जहाज आनेकी
बाट देखता रहा और उसके घरमें रहने लगा इस समयान्तरमें मैंने कोई वेर बनमें जायक
र गढ़ेसे हाथी दांत लाय उसका घर भर दिया जब उस व्योपारीको हाथी दांतोंसे अंसनन्दं
भ हुआ उसने और व्योपारियोंको भी उसकी खबर दी वह भी जाय अपनी इच्छानुसार हाथी
दांत उठालाये यहांतक कि जहाजके आनेकी ऋतु आ पहुंची और बहुत ओरके जहाज उ
स नगरमें आये मेरे स्वामीने जहाज पर मुझे चढ़ा जितने कि हाथी दांत उसके घर थे आ
धे भाग मुझे दिये और मेरे नामसे उसे जहाज पर लादे और खाने पीनेकी बहुतसी वस्तु मे
रे साथ करदी और उस देशकी बहुतसी सौगात और उत्तम २ वस्तु दे बिदा किया सो मैं
इस कृपासे अधिक उसका कृतज्ञ हुआ और जहाज पर उस नगरसे चला और अपने मन
मैं उस व्यापारीके उपकारको न भूला मार्गमें कई द्वीपोंसे होते हुये नेराफर द्वीपमें पहुं
चा वहांसे खुशकीके रास्ते बासरा बंदरको पहुंचा और मार्गमें हाथी दांत बेचकर दे
शों २ की वस्तु मोल ली और व्योपारियोंके समूहके साथ बहुत दिवसके पश्चात् ब
गदाद नगरमें पहुंचा यद्यपि मैंने खुशकीकी यात्रामें बहुतसे दुःख और आपत्ति उठाई

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

परंतु तूफान और लुटेरों और सर्प आदि से रक्षा पूर्वक रहा और नगर बुगदाद में पहुंचते ही
पहिले खलीफा के सन्मुख गया और संपूर्ण वृत्तांत पत्र और सौगातों के पहुंचाने का बा
दशाह सरन्दीप को प्रगट किया खलीफा ने सुन कहा मुझे सदैव तेरे ओर ध्यान रहता था
और तेरे वास्ते परमेश्वर से प्रार्थना करता था कि तू कुशल पूर्वक यहां पहुंचावे जब मैं
ने उन हाथियों का हाल कहा उसने अनंत आश्चर्य्य किया और इस यात्रा को भी अद्भुत स
मझ एक लेखक को आज्ञा दी कि मेरे वृत्तांत को स्वर्ण के वर्णों में लिख मेरे कोश में रक्
खे फिर उसने पारितोषिक खिलत आदि दे बिदा किया है मित्रों में सब से अपने परिवार में रा
हने लगा सिंदबाद ने अपनी अन्तिम यात्रा का वृत्तांत कह हिंदबाद से कहा कि मित्र तू
ने ऐसा किसी को सुना है जैसी आपत्ति और दुःख मैंने उठाई हैं और संकट काल आनन्द
उठाया हो हिन्दबाद ने यह वचन सुन उसके हाथ चूमा और कहा सच तो यह है जित
ना कि तुमने इन सात यात्राओं में परिश्रम कर अपने प्राण पर खेला है किसी मनुष्य में श
क्ति नहीं कि कर सके तुम्हारे इन कष्टों से जो तुमने उठाए हैं मुझे भली भांति पीछा छुआ
अब मैं इस निर्धनता को उत्तम जानता हूं यद्यपि मुझे इतने परिश्रम से केवल स्वालो पेटे
श्राम होती है परंतु अपने स्त्री पुत्रों में रह कर उन कष्टों और विपत्तियों से जो तुमने वर्णन की

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
१५९
159

बचकर जन्मकाटनाहूं वह आनंद कि तुम भोगनेहो उस परिश्रमकी अपेक्षा कहुनहीं
किंतु तुम इससे अधिक आनंद करने के योग्य हो परमेश्वर तुम्हें इसी भांति सदैव खुशी
और आनंदमें रक्खे मेरी समझ अशुद्ध थी जो मैंने संसार की दशाका वर्णन किया वह भी
झूट है फिर सिंदबादने ४०००) रु: हिन्दबादको देकर कहा अब तुम मजूरी करना त्या
गदो और मेरे सभासद रहोमें तुम्हारे स्त्री पुत्रों की पालन अपनी आयु पर्यंत करूंगा सो हिं
दबादने शेष आयु सिंदबादकी सभामें रह आनंद पूर्वक व्यतीतकी सिंदबाद जहाजी की
यात्रा संपूर्ण ॥ एक स्त्री और तीन सेवकोंकी कथा शहरजाद पनीने बादशाह शहरयारसे
विनय की कि उक्त खलीफा हारूं रशीद बहुधा रात्रिको अकेला भेष बदलकर बुग़दा
द नगरमें फिरा करता सो उसने एकदिन जाफर मंत्रीको आज्ञा दी कि आजकी रैनमें इ
स नगरीमें फिरूंगा जिससे विदित होकि मेरी प्रजाका का हाल है और थानेदार किस
प्रकार नगरकी रक्षा करते हैं यदि उनको अचेत पाऊंगा तो उन्हें छुड़ाकर दूसरों को नियत
करूंगा और यदि अपने आधीनो कार्य्यपर तत्पर पाऊंगा तो उन्हें पारितोषिक दूंगा जाफ़रमं
त्री अपने स्वामीकी आज्ञानुसार नियत समयपर आया खलीफा मंत्री और खोजियोंका
दारोगा मसरूरको अपने साथ ले नगरकी ओर गया तीनोंने अपना ऐसा भेष किया कि जा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नेन जीतेथे फिर कई बाजारों और गलियों से होते हुये एक सूक्ष्म गलीमें पहुंचे वहां उ
न्होंने चंद्रमाके प्रकाशमें एक बड़े डील और स्थिन दाढ़ीके पुरुष को देखा कि जाल शिर
पर और नारियलके पत्तोंका टोकरा कांधे पर धरे लाठी टेकता २ चला जाता है खलीफा ने
कहा यह मनुष्य बहुत निर्धन जान पड़ता है इससे उसका वृत्तांत चलके पूछिये मंत्री
ने आगे बढ़के पूछा तू कौन है उसने उत्तर दिया स्वामी मैं धीमर हूं इस समयमें अत्यंत पी
ड़ित हूं आज मध्यान्ह समयमें मछलियां पकड़ने गया तबसे इस समय पर्यंत एक म
त्स्य भी मेरे हाथ न लगा खालीमें अपने गृहको फिरा जाता हूं एक स्त्री और कई छोटे २ ब
च्चे हैं मैं अत्यंत विस्मित हूं कि आज कहां से उन्हें भोजन दूंगा खलीफाको उस पर दया उ
पजी और उससे कहा नदीपर फिर चल एक बेर जाल डाल जो कुछ निकले वा न निकले ४००
रु० तुझे मिलेंगे वह धीमर इस बचनको सुन अपने दिनभरका दुःख भूलगया खलीफा
के वचन पर विश्वास करके उन तीनों सहित टकरास नदीके कूल पर जाकर जाल खोला और
अपने मनमें शोचने लगा कि यह तीनों मनुष्य अनंत बुद्धिवंत और भले मनुष्य जान पड़
ते हैं मुझसे असत्य न कहेंगे विश्वास है अपने प्रणको पूरा करें और मुझे एक रुपया भी
बहुत है उन्होंने ४०० रु० के देने का प्रण किया है यह विचार उसने अपना जाल समुद्रमें

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त १८:

160

डाला ऊछ कालके पश्चात् उसको खींचा अकस्मात् उसजालमें एक संदूक बंद बऊत
भारी निकला खलीफाने धीमरको मंत्रीसे ४०० रु॰ दिलवा तुरंत बिदा किया और मस
रूर अपनेस्वामीकी आज्ञानुसार उस संदूकको अपने कंधेपररखलेचला खलीफा को अ
सनतालस्या ऊई कि उसे खोलकर देखें कि उसमें कौनसी वस्तु है तुरंत उसे निज भवनमें
लेगया वहांपऊंच उससंदूकको खोला उसमें कोई वस्तु नारियलकी चटाईमें लालडोरे
से सीऊईदेखी खलीफाकी शीघ्रताके कारण उन्हें टांके खोलनेका अवकाश नमिला छु
रीसे उनटांकोंको खोला उसचटाईके भीतरसेएक कोईवस्तु पुरानेवस्त्रमें लपेटीऊईथी
औरउसपर एकरस्सी बंधीऊईथी जब उसको खोला तो देखकर अत्यंत आश्चर्यचित ऊ
वा उसवस्त्रमेंएकस्त्रीकी लोथ जोबरफसेभी अधिक श्वेतथी टुकड़े २ ऊई देखी ख
लीफा उसेदेख अत्यंतक्रोधित ऊवा और मंत्रीसे कहने लगा तू ऐसेही मेरी प्रजाकी र
क्षा करताहै तेरे अधिकारमें ऐसे अन्याई औरदुष्ट मनुष्य हैं जो मेरी प्रजाकोइसनिर्दया
तासे मारकर नदीमें डालतेहैं बड़ा आश्चर्यहै प्रलयमें मैं इसका क्या उत्तर दूंगा यदि
तू इसकेबधकरने वालेकोन लावेगा तोमैं सौगंधखाकर कहताहूं इसहत्याकेबदले
तुझे औरतेरेघरानेके चालीस मनुष्योंको फांसीदेकर मरवाडालूंगा मंत्रीने विनय की

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हे स्वामी इस सेवक को जब्ब सावकाश मिलै तो इस स्त्री के मारने वाले को ढूंढ लावे खली
फा ने आज्ञा की तीन दिन का सावकाश दिया जाता है इस समयांतर में उसे ढूंढ लो जा
कर मंत्री शोकयुक्त अपने गृह में आया और मन में कहने लगा कि इतने बड़े और बसे हुए
नगर में मारग का मिलना अति कठिन है और जो उसे मैं ने पाया भी तो साक्षियों को कहां से
पाऊंगा और विश्वास है कि इसका हिंसक कब का कब इस नगर से चला गया होगा और।
जो अपने छुटकारे को किसी अन्य हिंसक अपराधी को जो बंदी खाने में कैद है खली।
फा के सन्मुख लाके उसे उस स्त्री का हिंसक प्रकट करूं तो हो सक्ता है परंतु मेरा मन नहीं
चाहता कि ऐसा बुरा काम करूं और दूसरे मनुष्य का अपराध दूसरे पर रक्खूं फिर उसने
थानेदारों और सिपाहियों को आज्ञा दी कि उस स्त्री के हिंसक को तीन दिन के समयांत
र में ढूंढ के लावें जो न लायेंगे तो मेरे प्राण जावेंगे वह सब और मंत्री अपने प्राण
के डर से नगर के चारों ओर गये और घर २ उस हिंसक को ढूंढने लगे बहुत ढूंढने
पर भी कहीं उसका पता न लगा यहां तक कि तीन दिवस व्यतीत हुए और बधिक मंत्री।
को खलीफा के निकट पकड़ के ले गए खलीफा ने उससे पूछा कि तू हिंसक पकड़ लाया
मंत्री ने रुदन करके कहा हे स्वामी बहुत ढूंढने पर भी अब तक उसका ठिकाना नहीं मि।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सघ
१८१
(6)

ला खलीफाने क्रोधितहोय आज्ञाकी किराजमंत्री औरउसके घरानेके चालीस मनुष्योंको
ले जायमेरे दरवाजे परगर्दन मारो यह खलीफा का हुक्म पातेही तुरंत एकचालीस लक
ड़ियां फांसियों की खड़ी होगईं और चालीस मनुष्य उसके कुटुंबके पकड़ आए औरसा
रे नगरमें ढंढोरा पिटने लगाकि खलीफाकी आज्ञानुसार जाफरमंत्री और उसके चाली
सनातेदार फांसी दिये जातेहैं जिसे देखना स्वीकारहो आकरदेखे एकहीक्षणमें यह बातसम्पू
र्ण नगरमें विख्यातहोगई किइस कारण मंत्री मारा जाताहै फिरमंत्रीको चालीसों नातेदारोंस
मेत फांसीके नीचे बैठाया औरउनकी गरदनोंमें रस्सियां डाली इतनेमें बहुत मनुष्य वहां इ
कट्ठेहोगये और बुगदादके बासीजो मंत्रीके शीर्नेलके कारण बहुत प्रीतिरखतेथे इसद
शामें उसे देख रुदनकरनेलगे किंतु समस्त राज्यके मनुष्य उसमंत्रीके मायसे असंतहोत
ते और प्रसन्नथे परंतु कोई खलीफाको इस आज्ञाके देनेसे बर्जनसका निदान बधिक
चाहते थे कि उनचालीसों मनुष्योंको फांसी दें इतनेमें एक तरुण रूपवान पुरुषभीड़को
फाड़ चीरतुरंत जाफर मंत्रीके निकट पहुंचा औरउसके हाथको थामकहा कि उसस्त्रीका
हिंसकमैंहूं मैंनेहीउसे माराहै यद्यपि मंत्री उस मनुष्य कावचन सुन हर्ष प्रसन्नहुआ प
रंतु उसकी तरुणावस्था परबहुतकुढ़ा औरपश्चातापकिया औरउससे पूछरहाथा कि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

एकबड़ी डीलका हढ मनुष्यने आके मंत्रीसे कहा जोऊबकि यह मनुष्यकहताहै सब
असमहै किंत मैनेइस स्त्रीको जोइस संदूकमेंहै माराहै मेही दंडके योग्यहूं यह मनुष्य
निर्दोषिहै यह कह उसहढने तरुणके सन्मुखहोकहा किहे युवनको घबराकरऊंहुंबे
योके मारनेका इकरार करताहै औरकौ इस बथागारेमें आयामैंतो वजत इस संसारमें रहा
हूं मुझे अपने पलटे मारा जाने देउसतरुण मनुष्यने मंत्रीसेकहायह हढझूठ कहताहै उ
सका मारनेवालामैहीहूं वह मंत्री उनदोनोंके वादानुबादको सुन अत्यंत विस्मितऊ आ
और खलीफाके सन्मुखले गया औरविनयकी किहे स्वामीयेदोनो उसस्त्रीके मारनेकाइ
करार करतेहैं उनदोनोंने खलीफाके सन्मुखभी यही कहा खलीफाने यह सुन आज्ञा
दीकि मंत्री आदिकोछोड़दो और इनदोनो को मारो मंत्रीने छूटेंकेरखलीफासे बिन
यकीकिहे स्वामीदो कामारना एकहिंसाके बदले पापके विरुद्धहै इतनेमें तरुणने सौगं
धखाः कर कहाकि इसस्त्रीको मैनेमाराहै चारदिन व्यतीतऊये कि मैंनेइसे बधकर औ
र संदूकमें बंदकर नदीमेंडाल दियाथा जोमैं इस बातको असत्य कहताहूं तोप्रलयमें
अथा औरकाला मुख होके उठूं खलीफाको इस बचनके कहनेसे विस्वासऊआकि स्त्री
कामारने वालायहीहै और हढ मनुष्यभीचुपहोरहा औरऊछन बोला खलीफाने जवा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सश
१६२
162

नसे इच्छाकि तूनेकों इस निर्दयतासे उस स्त्री को मारा और अबकों आयहो उसके बदले
मरनेको आया और तूनेऊकभी परमेश्वरका औरमेराभयन किया तरुण मनुष्यने कहाहे
स्वामी जो ऊक्ह मुझे औरउस स्त्रीमें ऊआ वह सबालिखाजावे किजिस्से संसारिक मनुष्यों
को उपदेश औरबोधहो यदि आज्ञाहोतोमें उसहवीतनको प्रगटकरूं खलीफाने कहाअ
च्छाकहो फिरउसतरुण मनुष्यने अपने औरउसस्त्रीके व्रतांतको इसभांति वर्णनकरना
आरंभ किया उसमनुष्य औरमरी ऊईस्त्रीकी कथा मनुष्यनेकहा किहे स्वामीयह मृतक
स्त्री मेरीस्त्री और इसवृद्धमनुष्य कीपुत्रीथी यह वृद्धमेरा चचाहै अभी यहद्वादशवर्षकी
नऊईथी किइस वृद्धने इसका मेरे साथविवाह करदिया ११ वर्ष विवाहको व्यतीत ऊये
हैं कितीनपुत्रइस्से उत्पन्नऊयेसो वहतीनोंपुत्र अबतक जीतेहैं यह स्त्री अत्यंतपतिव्र
ता औरमेरी आज्ञापालक औरसदैवमेरी प्रसन्नता परदृष्टित रहतीथी औरमेंभी उससे
अत्यंत प्रीतिरखताथा औरप्रत्येक समय मनोरथ उसका सदा करताथा एकमास व्यतीत
ऊआकिवहरोगयुक्त ऊई मैंने यथोचित उसको औषधिकी फिरवह अच्छीहो गईस्ना
नके निमित्त स्नानागारमें जानेकी इच्छाकी अपनेजानेके पहिले उसनेमुझसे कहा मे
राजीसेव खानेको चाहताहै कहींसे ढूंढके उसलायदि सेवन मिलातोफिरमें रोगीहो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जाऊंगी मैंने कहाकिहे सुंदरी धीर्य्यरखजिस भांति होसकेगा तेरे वास्ते ढूंढलाऊंगा य
हवचन इसी कहमें तुरंतबाजारको गया औरसंपूर्ण फल बेचने वालोंकी दूकानपरढूंढ
नेलगा और एकसेवकेबदले ५० रु॰ नकदेने लगातोभी मुझे एक सेवहाथनलगा निदान
मैंघर आया जब यह सुंदरी स्नानकर घर आई औरउसनेसेवकोन पाया अत्यंत शोचितहु
ई और रातभर उसे निद्रा न आई उसके शोचयुक्त होनेसेमुझे शोकहुआ भोरकोउठके इसी द
शामें देखनगरके बागोंमें जाय ढूंढावहांभी कहींनपाया एकवृद्ध मालीने कहा इनदिनों
बादशाही बागोंके सिवाय जोबासरा नगरमेंहै कहीं सेवतुमकोन मिलेगा मैंनेबासराको
जानेकी इच्छाकी औरइसनी हदकी यात्रास्वीकारकी वहां पहुंचा और ढूंढते २ तीन
सेव चार २ रुपयेदेकरमोललिये औरदो समाहके समयांतरमें अपने घर आया औरवह
तीनों सेव अपनी पत्नीकोदिये वहदेख प्रसन्नहुई औरउनको सूंघने लगी और अपनीश
य्याके नीचे अपने समीपरखदिये औरनिर्बलताके कारण उसीभांतिलेटी रही मैं अपनी
दूकान परकि चौकके बजाज मैंथी जायबैठाथोड़ी देरमें मैंने एक गुलाम हबशीकोकि ब
ड़े डौलकाथा कादेखा कि वह दूकानके आगेसे एकसेवहाथमें लिये हुये उछालताजा
ताहै मैंने उस सेवको पहिचानाकि यह तोउन्हीं सेवों मेंसेहै जिनकोमैंबंदर बासरासे ला।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सञ्र
१६२
163

याथा नहीतो इनदिनों अकस्तमें इसहबशीने कहांपाया सबकेभली भांति विदितथा कि उ
गदाद नगरमें कहीं सेवका नामभी नहींतो उससेव कोहबशीके हाथ में देख ऐसोजाह
पजी कि अधीरहोगया निदान उस हबशी सेबुलाकर पूछाकितूने इससेवको कहांसेपा
या उसने मुस्कराय उत्तरदिया कियह सोगातमेरी प्यारीकीहै आजमें उसेदेखनेकोगया
था उसके निकटतीन सेवथे मैंने उससे पूछाकि यहसेव कहांसे आये उसने कहा मेरा भ
र्तारदो समाह की यात्राकर इन्हें मेरेवास्तेलायाहै फिरमैंने और उस सुंदरीने मिलके भो
जनकिया औरबिदा होते मैंनेएकसेव वहांसे उठा लिया इस वार्त्ताको हबशीसे सुनमैंने
य देखा केवल दोही सेवउसके निकटरक्खे हुयेथे मैंने उससे पूछाकीतीसरा सेवका हु
वाउसस्त्रीने अपनेमुखकोफेरउसे औरकोदृष्टिकी जहां वहतीनों सेव रक्खेथेदोहीसे
वको देखके परवाई सेउत्तरदियामैं नहीं जानती कितीसरा सेव यहांसेकाहुवा इसभां
तिके उत्तर देनेसमुझे निश्चयहुवा कि हबशीने सत्यकहाहै इसविषयके समझनेही
में लज्जा और क्रोधमें ऐसाविवशहुवाकि छुरी निकाल उसके कंठमें फेर उसकाशिरको
काटलिया और उसके शरीरकि चार टुकड़ेकर वस्त्रमेंबांधके गठाई मेंलपेट ऊपरलालडो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ऐसे आधरात्रिके समयउसे संदूकमें रखकरके नदी परलेगया और गहरे जलमें डुबोदिया
घरमें आय देखा कि दो छोटे पुत्रमेरे सोतेहैं और बड़ा लड़का घरसे बाहरदरवाजे परबै
ठारो रहाहै मैनेउससे पूछा तूक्यों पताहै उसने उत्तरदिया मैंनेभोरके समय एकसेवको
कि उनतीनो सेवोंसे जिनको तुममेरी माताके वास्ते लायथे बेसबके उठालाया और चिरका
ल पर्यन्त अपने छोटे भाइयों के साथखेलता रहा एकगुलाम हबशीकि उधरको जाता
था सेवकोमेरे हाथसे छीनकेले भागामें उसके पीछे दौड़ा कितनाही सेवको मांगा औ
र रुदनकरकहाकि मेरा पितादो समाहकीयात्राकर मेरी रोगीमाताके वास्ते लायाहै परंतु
उसने सुनकेन दिया तब दौड़कर उसके पीछेगया उसगुलामने मुझे फिरकरमारा औरतु
रंत हमसे मागहोभाग गया और मेरी दृष्टिसे गुमहोगया तबसे इससमय पर्यन्त उसके ढू
ढनेमें फिरताथा अभी थकित होय दरवाजे परबैठाथा कि तुमको उधरसे आतेदेखा
और तुम्हारे भयसे रोनेलगाहै पितासेवके खोये जानेके कारण मेरी माताको कष्टहोगाकह
ताफिर मेरा पुत्रफूट २ कर रोनेलगा उसका बचन सुन मेरी ऐसी दशाहुई जिसकावर्ण
न नहींहो सक्ता बड़कालपर्यन्त मूर्छावशरहा जब चैतन्यहुवा अपनेकोबुराभला औरधि
क्कारें देनेलगाकि हेभाग्यहीन तूने ऐसी अपनी प्यारी और पतिव्रता स्त्रीको निर्दोष मारा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पत्र
१६४
164

और उस हबशी गुलामके झूठ वचन सुनजो मुझसे छलसे कहाथा सच्चजानकर इतनाक्रोध
किया इसी रंज और शोकमें बैठा पश्चात्ताप करताथा किमेराचचा अपनी पुत्रीके देखनेको
आया मैंने उससे इसवृत्तांतको प्रगटकिया वहभी मुझे कुछ कहने सुननेवा उसके मरनेके
बादानुबाद बिना मेरेसाथ रोने पीटने लगा तीन दिवस पर्य्यन्त मैंने और उसने सोगकिया
फिर यह वृद्ध अपनीप्रिय पुत्रीके मारे जानेसे शोकमें मग्नहुवा और इसीभांतिमें अभागा
भी उस हबशी गुलामकेबचनको स्मर्णकर अपने घरके नष्ट होने और अपने अपराधसे नाना
प्रकारके शोकको प्राप्तहूं इसीसे मैंने आपके सन्मुख यह कहा और आशा रखताहूं किमे
रे मारे जानेकी आज्ञाहोकि उसके बदलेमें दंड पाऊं अब मेराजीना व्यर्थ है ऐसे जीनेसेम
रने को उत्तमजानताहूं खलीफा इसवृत्तांतको उस मनुष्यके मुखसे सुन अत्यन्त आश्च
र्य्यमें हुवा और उसकी दीनता परदयाकी औरकहाजिस मनुष्यनेकि अनजाने अपरा
धकिया वह परमेश्वर औरमनुष्योंके बिचारमें क्षमा योग्यहै औरमारनेके योग्य वहगुला
म है जो इसस्त्रीके मारे जानेका कारणहुवा फिरखलीफाने मंत्रीसेकहा तीन दिनकाअ
वकाश देताहूं इस समयान्तरमें उस गुलाम हबशीकोला नहींतोतूही माराजावेगा मं
त्रीजो छूटाथा फिर दूसरीबेरफंसा खलीफासे बिदाहोकर रुदनकरताहुवा अपने घर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

आया और समझा कि केवल तीन ही दिन तक मैं जीऊंगा चतुर्थ दिवस अवश्य मारा जाऊंगा
क्योंकि बुगदाद में हजारों और लाखों गुलाम हैं क्योंकर उसका ठिकाना मिलेगा परन्तु परमे
श्वर कि दया से निरास न होना चाहिये जिस भांति उसने स्त्री के मारक को प्रकट किया क्या
आश्चर्य है कि उस गुलाम को भी मिला दे दो दिन उसको ढूंढने में भी व्यतीत हुये तृतीय दिव
स सब मनुष्य मंत्री के बचाने के उसके चारों ओर इकट्ठे होय रोने पीटने लगे जाफर अपने मारे जा
ने पर तत्पर हो अपनी स्त्री और मित्रों से बिदा होने लगा और वह भी उसके कंठ से लग २ बिदा
होते थे इतने में खलीफा ने एक प्रधान को आज्ञा दी कि तीन दिन व्यतीत हुये यदि मंत्री ने उस
गुलाम हबशी को प्रगट किया तो ले आवे नहीं तो उसको मेरे सन्मुख लाओ मंत्री खलीफा
की आज्ञानुकूल घर से बाहर उस पहिरे के साथ जो उसे लेने को आया था हुआ जब वहां
से चलने को इच्छा की एक उसको बालक खिलाने वाली उसकी पुत्री पांच छः वर्ष की थी
जिसको मंत्री बहुत प्यार करता था लेकर सन्मुख आई मंत्री ने पहिरे के मनुष्यों से कहा
कि यदि मुझे आज्ञा हो तो इस पुत्री को प्यार कर लूं यह कह उस लड़की को प्यार करने लगा
अकस्मात् उसकी छाती में एक वस्तु गोल सी उसके वस्त्र से बंधी हुई देखी पूछा है पुत्री तु
म्हारे पास यह क्या वस्तु है उसने कहा बाबा यह सेव है जिस पर हमारे बादशाह का नाम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्र
१६५
165

लिखायेहै मैंने अपने गुलाम हवशीको जिसकानाम रेहानहै ४) कोमोललिया जाफ
रमंत्री उससेव औरगुलामकानामसुन अचंभितहुवा औरतुरंत अपनाहाथ उसकेव
स्त्रमें डालवहसेव निकाललिया और उस गुलाम हवशीको कि उसीके मंदिरमेंवर्त
मानथा बुलाकर पूछा सचकह लेनेयह सेवकहांसे पाया उसने कहामें आपकी सौ
गंद खाकर विनय करताहूं नतोमैंने आपके घरसे चुराया औरन बादशाहके घरसेकि
ंतु दिन हुये मैंने एक गलीमें तीनचारछोटे २ बालकोंको खेलतेदेखा एकबालकके हा
थमें जोसेव सेवड़ाथा औरसेवहाथमें लियेथा छीन करलेभागावहबालक रोताहुवा
मेरे पीछे दौड़ा औरकहनेलगा यहसेवमेरा नंहीं मेरी माताकाहै मेरापिता बहुतदूर
की यात्राकरतीनसेवलाया मैं उनमें सेएकसेव अपनी माताके पूछेविना खेलने को
ले आयाहूंवह बालकबहुत रोया परंतु उसे मैंने नदिया अपने घरमें लाकर उसे
अपनी छोटी लड़कीके हाथबेचा मंत्री जाफरने उसकी कहनायपरबहुतअचंभाकि
या औरउसे बादशाहके सन्मुखलाया उसगुलामने वही वार्ता बादशाहके सन्मुखभी
प्रगटकी बादशाहको उसीकायह अपराधसुविदितहुवा और उसके वचनसुन वेव
पा होय इस पड़ाफिर संभल मंत्रीसे कहाकिमेरे गुलामके कारण यह उपद्रव हु

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वा यही दंडयोग्यहै जिससे प्रजाको उपदेशहो मंत्रीने विनयकी आप सत्य कहतेहैं मेरे
बिचारमें यही दंडयोग्यहै और इसका अपराध क्षमा योग्यनहीं परन्तु मुझे नूरुद्दीन औरब
द्रुद्दीन हसन की कथाजो मिसरके बादशाहके मंत्रीथे स्मर्णहै यदि आपकी इच्छा हो
तो मैंउसे वर्णन करूं वह कथा अद्भुत औरविचित्रहै उसके सुननेसे आप प्रसन्नहोंगे आ
शा रखताहूं कि मेरे गुलामका अपराधक्षमाहो राजाने आज्ञाकी तूउस चरित्रको कहमैं
ंततमें जानताहूं नेरीवह कथा सेवोंके हत्तान से अद्भुतन होगी औरतू अपने गुलामको
दंड पानेसेबचान सकेगा फिर मंत्रीवह कथाइस भांति कहनेलगा ॥ नूरुद्दीन अली औ
र बद्रुद्दीन हसनका चरित्र जाफरमंत्री ने अपने स्वामीके सन्मुख कहा पूर्वकाल मेंमि
सरका एकबादशाह अत्यंत सामर्थ्यवान् दयावान् औरदानीथा जिसकेभयसे चारों ओर
के बड़े २ बादशाह डरते और वह नानाप्रकारकी विद्या औरगुणका ग्राहकथा उसबा
दशाहका बड़ाप्रवीण औरबुद्धिमान एकमंत्रीथा वहकाव्य आदिक शास्त्रोंमें निपुणाउ
स मंत्रीके दोपुत्रथे अत्यंत सुंदर और अपने पिताके समानगुणवान् बड़े पुत्रका नामश
मसुद्दीन मुहम्मदथा और छोटे का नाम नूरुद्दीन अली यह अत्यंत बुद्धिमान्था जब
वह मंत्रीकाल बशहुआ बादशाहने उसके दोनों पुत्रोंको बुलवाय मंत्रीकी पदवीदी औ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रक ह्वा तुम्हारे पिताके मरनेसे मुझे अतिशोक भया अब चाहिये कि तुम दोनों भ्राता अपने
पिताकी जगह उसके कार्य्यको करो वह दोनों विदा होय अपने घर आये एक मास पर्य्यं
त अपने पिताके शोकमें रहे फिर बादशाहके सन्मुख जाय राजसभाके माय आदिकार्य्यो
में जो मंत्रीके अधिकारमें होते हैं प्रवृत्त रहे जब बादशाह बाहरको इच्छा करता यारी
से एक भाईको अपने साथ ले जाता और दूसरेको राजकाजके देखभालमें छोड़ जाता ए
क दिन सायंकालको किसी समये बादशाह बड़े भाईको आखेटको ले जानेवाले थे व
ह दोनों भ्राता भोजन कर रात्रिको परस्पर बात चीत और हास्य कर रहे थे बातों तरमें बड़े
भाईने छोटेसे कहा मैं चाहता हूं जिस भांति कि हम और तुम एक सम्मतसे एक स्थान
पर रहते हैं एकही दिन एक २ सुंदर कन्यासे विवाह करें कि जिनके माता पिता प्रतिष्ठा
में समान हों इस विषयमें तुम्हारा क्या सम्मत है और क्या कहते हो नूरुद्दीनने उत्तर दि
या भाईमें आपका सेवक हूं जो आपने आज्ञा की मुझे स्वीकार है और मेरे वास्ते उनमें है
बड़े भाईने कहा इसके विशेष मेरी एक और भी इच्छा है वह यह है कि बिवाह करनेके
पश्चात् हम दोनोंकी स्त्रियां एकही रात्रिको सगर्भ हों नौ मासके पश्चात् एकही दिन व
हु जनें और तुम्हारे घर पुत्र हो और मेरे घर पुत्री फिर जब वह तरुण हों हम दोनों भाई उ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नका परस्पर विवाह करें उसने कहा यहभी जो आपने विचारा बहुतउत्तम है मैं इसपर प्रसन्न
हूं जो परमेश्वर इसे सफल करे और विश्वास है कि मेरा पुत्रभी तुम्हारी कुंवरीसे प्रीति करेगा
दूसरेने कहा निःसंदेह परंतु एक बात है तू अपने पुत्रके ओरसे यह वचन दे कि नियमित द
हेजके विशेष ५०००) रु. और तीन उत्तम और बसे हुये ग्राम जागीर और तीन बांदियां दुल
हिनकी सेवाके अर्थ दे छोटे भाईने कहा मुझे यह अंगीकार नहीं क्योंकि हम तुम दोनों भाई
पदवीमें तुल्य हैं तुम जानते हो कि पुरुष की पदवी स्त्रीसे अधिक होती है तुमको चाहिये
कि तुम अपनी पुत्रीको बहुतसा दहेज दो न कि तुम हमसे लो जो कुछ कि तुम्हें कहना उ
चित है दूसरे के फिरअसलनहो यद्यपि नूरुद्दीनने हास्यसे यह कहा था परंतु बड़ा भाई उ
सका क्रूरप्रकृतिथा उसका वचन बहुत कडुआ लगा अति रिससे उत्तर दिया कि तू अपने पुत्र
को मेरी पुत्रीपर बड़ाई देता है मैं तो जानता था तू मेरी पुत्री की प्रतिष्ठा करेगा इसके वि
रुद्ध तूने उसको अपने पुत्रकी अपनेसे थोड़ी पदवीका समझा और तूने जो अपने को
मेरे समान पदवीके बराबर समझा यह अनुचित है मैं अपनी पुत्रीका विवाह तेरे पुत्रके
साथ कभी न करूंगा यह झगड़ा उन दोनों का अपने विवाह करने और उनकी स्त्रियोंके ग
र्भ रहने और संतान उत्पन्न होनेके पहिले था इसीं बहुत बादानुबाद हुआ यहांतक कि बड़े भा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सष
१८०

167

ईने छोटेको उठाकरकहा भोरहोनेदेमें बादशाहके सन्मुखजाकरतेरे इस ढिठाईको
दंड दिलाऊंगा जिससब लोगोंको बोधहो औरकोई छोटाभाई अपने बड़े भ्राताको इ
सभांतिसे ढिठाई जैसेकि तूनेकीहै नकरे यहकहके अपने मकानमें चलागया औरछो
टाभाई अपनेशयनालयमें जायसोरहा शमसुद्दीन मुहम्मद दूसरेदिनके भोरकोउठ
बादशाहके निकट गया औरवहांसे बादशाहकेसाथ अहेरखेलने गया औरछोटाभा
ता अपने बड़ेभाईके धिक्कार औरबुराभला कहनेसे रात्रिको नसोयाक्रोधमें तड़पता औ
रतलमलाता रहा औरइच्छाकीकि अबभाईकेसाथ नरहूंगा उसनेउसके बहुतचुप कहा त
ब उसनेएकसुह खच्चर पर असबाबरत्न इम्य औरखाने पीनेकीवस्तु साथलाद चलनेस
मय अपनेसेवकोंसे बहानाकरकहा किदो तीनदिनकेवास्ते कहीं जाताहूं फिरवहांसे
चला जब उस नगरके सीमाओंसे बाहरनिकला उसने अरबमें जानेकी इच्छाकी मार्ग
मे खच्चर उसका रागीजवा वहउसे छोड़ पैदलचला अकस्मात् हसनानगरसे एकसवार
बासरा को जाताथा उसने नूरुद्दीनकोपैदल देख अपनेपीछे चढ़ालिया औरजब वह
बासरा मेंपहुंचा तो नूरुद्दीनने उतरउसको कृतज्ञताकी औरउससे बिदाहो रहनेकेस्था
न ढूंढता आगे बढ़ामार्गमें बड़े अमीर औरखूबसूरत मनुष्यकोदेखाकि बड़ीसजधजसे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

धूम धामसे उसकी सवारी जातीहै और नगरके लोगोंने झुककर उसे प्रणाम किया औ
रपंक्ति बांध खडे रहे यहां तककि बाजारसे उसकी सवारी चली गई नूरुद्दीनने भी उसको
देख सबके साथ प्रणाम किया वह बासराके राजमंत्री की सवारी थी प्रजाके भले बुरे को
देखने आयाथा नूरुद्दीनके हसरे रूप और मलमनसानको देख विस्मित हुवा और जब स
वारी उसके समीप पहुंची उसने मुसाफिरोंकी भांति उसे पाया उसके पास ठहरके पूछा।
कि तू कौनहै और किधरसे आताहै नूरुद्दीन अलीने कहा स्वामी मैं मिसरीहूं और के
ई देश मेंमेरा निवासहै किसी बिषय में अपने संबंधीसे अप्रसन्नहो मैने परदेश अंगीका
र किया अबयह इच्छा रखताहूं कि निज नगरमें कभी न जाऊं और शेष आयुगेने र देश र
में फिर बतीत करूं उस मंत्रीने जो वृद्ध और बुद्धिमानथा नूरुद्दीनके इसबचन को सुन
कहाहै पुत्र इस इच्छाको अपने मनसे हरकर यात्रामें दुःख और हानिके विशेषक
दापि लाभ नहीं तुम मेरे साथ चलो तुम्हारे साथ ऐसा उपकार करूंगा कि उसशोकको नि
पट विस्मरण करोगे नूरुद्दीन अलीमंत्रीके साथ गया और उसके निकट रहनेलगा व
ह राजमंत्री उसकी बुद्धि और चतुरताको देख उसका बहुसत्कार करताथा यहांतक
कि एकदिन उसने एकांतमें कहाहै पुत्र अबमैं बहुतशिथिल हो गयाहूं और राजाने कोऊ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सभ
१६८

168

छे आशानहीं परमेश्वरनेमुझे केवल एकपुत्री अतिरूपवति दीहै अबयह विवाहने यो
ग्यहै बहुतसे भलेमानस धनाढ्य औरश्रयान उसकी चाहना करतेहैं परंतु मैंने स्वीका
र नहींकिया अबतुझे अपने प्राणसेभी अधिक प्रिय जानताहूं वहतेरे योग्यहै यदितू
इस बातको स्वीकार करेतोमैं तुझेहूं और बादशाहकी आज्ञानुसार उसकोतुझे विवाह
दूं औरअपने बदले इस देशका मंत्रीकरूं और अपनी सब वस्तुतुझे दूं नूरुद्दीनने उस
की कृतज्ञताकर कहा आपमेरे बड़ेहैं आपकी आज्ञामुझे स्वीकारहै मंत्रीने उसको खु
शीपाकर विवाहकी तय्यारीकी और नगरकेवासियों को इस विवाहके निमित्त जोताज
बसबलोग आयेनूरुद्दीनने मंत्रीसे कहा अबतक मैंने अपनी जातिपांतिको छिपायाअ
बमैं उसेप्रगटकरताहूं मेरापितामिसरके बादशाहका राजमंत्रीथा मैं उसकाछोटा पु
त्रहूं एक और मेरा बड़ा भाईहै मेरेपिताके मरनेके पश्चात् बादशाहने हमदोनोंभाइ
यो को हमारे पिताके अधिकार परनियत किया सोहम यथोचित उसकार्य्यको करते
रहे एकदिन हमदोनों भाइयोंमें कुछवादानुबादहुआमैं अप्रसन्नहो इधरकोचला आ
या बासराका राजमंत्री इस बचनकोसुन अत्यंत हर्षितहुआ क्योंकि यहभीमंत्री होवना
हे फिरउसने सभासदोंसे कहा एकबातमें मैंसम्मत रखताहूं वह यहहै किएकभाई

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मेरा मिसरके बादशाह का मंत्रीहै उसने अपने पुत्रको यहांभेजाहै और मिसरमें विवाहउ
सकान किया सिवाय उसके कोई संतान नहीं और उसकी इच्छाहै कि मैं उसकेपुत्रकाविवा
ह कर अपने निकट रक्खूं मुझेतो यह बात परस्पर अधिक प्रीति का कारणजान पड़तीहै
तुमसब इसमें क्या कहतेहो उनसबनेएकमन होय कहा यह बहुत उचितहै परमेश्वरउ
नदोनोंको आयु दीर्घ करे निदान जब वह सब इस बातमें प्रसन्न भये मंत्रीने सबको नानाप्र
कारके उत्तम २ व्यंजन खिलाये और उसका यथोचित सन्मानकिया फिर प्रत्येक मनुष्यके
सन्मुख मिठाई रक्खी कि यही वहांकी रीतिथी और काजीने वहां आनकर बिवाहकिया
फिर सम्पूर्ण मनुष्य उस राजमंत्री से विदा भये उक्त मंत्रीने अपने सेवकों को आज्ञा दी कि नू
रुद्दीनको स्नानागारमें लेजाय नहलाओ और उसने नानाप्रकारके वस्त्र और रत्न कि क्षि
यों में लगाकर जैसे कि विवाह के दिन दूल्हेको पहिनाते हैं वहीं भेजे नूरुद्दीनने स्नानक
रनेके पश्चात् चाहा कि अपने वस्त्र पहिने परंतु मंत्रीके सेवकोंने वही वस्त्र पहिना कर।
नानाप्रकारकी सुगंधें लगाईं नूरुद्दीन वस्त्रादिसे अलंकृत होकर मंत्रीके निकट जो उसका
श्वसुर था गया उसने हर्षसे समीप बैठाय पूछा कि तुमने सब हालको मुझसे कहा कि मि
सरके मंत्रीके पुत्रहो और आपभी बादशाहके मंत्रीथे परंतु एक बात तुमने अबतक नहीं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
१९९
169

प्रगटकी किक्योंतुम निजदेश औरकुटंबको छोड़कर यहां आये अबहमारा तुम्हारा प
क वास्ताहै औरकिसीभांतिका परस्परमें अंतरनहीं नूरुद्दीनने अपनाहृत्तांत विस्तार सर्वा
क जैसाकि उनदोनों भाईयोंने तकरार कईथी मंत्रीसे कहामंत्री यह सुनबड़ाहंसा औरा
कहा केवल इतनीही बातकेवास्तेतुम दोनों भाइयों में बादहुआ यह निपटविचारदीर्घ
कहा तुम्हारा पुत्र और कहांतुम्हारेज्येष्ठभ्राताकीबेटी जिनका बिवाह उनप्रतिज्ञाओं
परहोता तुमने निजदेशको छोड़ा परंतु तुमने केवल हास्य मेंकहाथा इसविषयमें तु
म्हारे ज्येष्ठभ्राताकी अधिकता जानपड़तीहै इसविषयमें तुम्हें परदेश जानाउचितनथा
परंतु मेरेप्रारब्धमेंथाकि तुमऐसाकुलीन और उच्च जातिका मनुष्यमेरादामादहो इसी
कारणतुम्हारे मनमें यह उपजी औरइस नगरमें आये अबदेरनकरो अपनी दुलहिना
के समीपजाओवह तुम्हारी राहदेखती होगी कालमैं तुमको बादशाह केसमीपलेजा
ऊंगा मुझेविश्वासहै कितुम्हारी भेंट होनेही वह तुमपर प्रसन्नहोगा जिससे हमदोनों
कोहर्षहो नूरुद्दीन अपने ससुरसे बिदाहोकर अपनीदुलहिनकी शय्या परगया अबश
मसुद्दीन नूरुद्दीनके ज्येष्ठभ्राताकाभीवर्णनकिया जाताहै जोशिकारको गयाथा यका
मास पर्यंत वह बादशाहके साथ अहेरखेलता रहा जबवह आया औरनूरुद्दीनके भवन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

में गयातोउरोउसके सेवकोंसे विदितहुआकि वह उसीदिनदोदिनके बालिकहो गयाशम
सुद्दीनको बड़ाशोकहुआ और जानलियाकि मेरेकठोरबचनसे वह अवश्य प्रसन्न होकरके
सो औरको निकल गया उसने चारों ओर उसके ढूंढनेकेलिये मनुष्यदोड़ाये वहदमिपक
औरहलब पर्य्यन्तहो आपकहो उसकाठिकानानलगा क्योंकि वहबासरास मेंथा फिर ह
२२ के देशोंमेंभी ढूंढहुई वहांपरभीन मिला निदान हारमान शमसुद्दीनने विवाहका विचा
रकिया संयोगवश उसीदिन औरउस मुहूर्तमें किजिसमें नूरुद्दीनका बिबाहहुआथा उ
सने अपनाबिबाह एकप्रतिष्ठित मनुष्यकी कन्याकेसाथ किया औरअद्भुत यहकिनौमास
व्यतीतहोनेके पश्चात शमसुद्दीनके घरमें कन्या औरनूरुद्दीनके घरमेंपुत्रहुआजिस का
नाम उसने बदरुद्दीन हसनरक्खाबासराका मंत्री नवासेके होने से अत्यंतहर्षितहुआ छ
ठीके दिनबड़ीधूमधामकी और अपने सेवकों आदिको पारितोषिक दियाउसकाल
के पश्चात् इच्छाकीकि अपने दामाद नूरुद्दीनको बादशाहके सन्मुखलेजायउसे अप
ना अधिकारदिलाये जबवह उसेपहिलेबादशाहके सन्मुखलेगयाथा बादशाहने उसे
योग्य औरबुद्धिवंत औरगुणवान् पाके और बहुतसे मनुष्योंसे उसकी प्रशंसासुनबहुतला
भकिया राजमंत्रीका अधिकारनूरुद्दीनको दिया
शहुआथा सोनिज पुराने मंत्रीके चाहनानुसार

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सत्र
१७॰
170

दूसरेदिन मंत्रीने अपने दामादको देखाकि उसने निजसंबंधित मायके कार्य्यको भलीभां-
ति किया अनंतर हर्षितहुआ और नूरुद्दीन अलीराजसभामें सदैव प्रसन्न रहनेलगा और
प्रत्येक मनुष्यको अपनी शीलता औरमिलनसारीसे ऐसा प्रसन्न रखता किसब छोटे बड़े
उसको आशीर्वाद देतेथे जबइसीभांतिउसे चारवर्षव्यतीतहुआ दूसरा नूरुद्दीन शिथिल-
ता औरवृद्धताके कारणकाल वशहुआ नूरुद्दीन अलीने रोनापीटना औरसोग औरव-
ड्डोंकीरीति अनुसार भलीभांति किया जबबदरुद्दीन हसनसात वर्षकाहुआ नूरुद्दीन
नेउसके पढ़ाने औरउपदेशार्थ बड़े २ गुणवानोंको नियत किया जोबदरुद्दीन अतिकुशा-
ल बुद्धिथा कुछसमयमें उसनेकलाम अल्लाह सावधानकरली औरद्वादश वर्षकी अ-
वस्थामें संपूर्ण विद्या पढ़ली औरवह ऐसा सुंदरथा किउसे सबलोग देखप्रसन्न हो-
ने और आशीर्वाद देते फिर जबवह राजदरबारतथा मंत्री कार्य्यमें निपुणहुआ नूरु-
द्दीनउसेबादशाहके सन्मुखले गया उसने ऐसी सुबुद्धिसे प्रणाम कियाकिबादशाह
प्रसन्नहुआ और उसपरपरम अनुग्रह की पिता उसकीनिपुणता औरगुणवानता सेअंत-
म प्रसन्न रहता और सदैव उसे उपदेश किया करता जबवह समय आया कि उसके
कार्य्यसे कुछलाभहो अकस्मात नूरुद्दीन अली रोगी हुआ और धीरे २ मरनेके निकट

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गैया अन्तसमय अपनेपुत्र बदरुद्दीन हसनको बुलवा कर उपदेश किया कि यह संसार असार मागने योग्य है मेरे मरने पर रुदन न करना और संतोष रखना जैसा कि तुम्हारी जाति में है और तुमने पर रुदन न करना और संतोष रखना जैसा कि तुम्हारी जाति में है और तुमने अपने गुरुओं से भी पढ़ा है और इन सबको भली भांति जानते हो अब मैं थोड़ी सी बातें तुमको बताता हूं और कुछ उपदेश करता हूं विश्वास है तुम मेरे उपदेशानुसार मेरे पीछे करोगे प्रथम यह कि मैं मिसर का बासी हूं मेरा पिता वहां के बादशाह का राज मंत्री था मैं और मेरा भाई शमसुद्दीन मुहम्मद नामी जो अब तक जीता है हम दोनों मंत्री उसी बादशाह के थे कोई ऐसा कारण हुआ कि मैं स्वतः अपने भाई से अलग होकर यहां आया और यहां मंत्री की पदवी पाई फिर उसने जेब की कलमदान खोल एक कागज को जिसको वह सदैव अपने समीप रखता था निकाल कर बदरुद्दीन हसनको दिया और कहा अवकाश पा इसको पढ़ना तुमको इसका वृत्तान्त भली भांति विदित होगा सब बातों के विशेष तुम मेरे विवाह और अपने उत्पन्न होने की तिथि पावोगे तुम इस पत्र को रक्षा पूर्वक रखना बदरुद्दीन हसन अपने पिता को मृत्यु के निकट देख अत्यंत शोकवान हुआ और उस पत्र को लेप्रणाम किया कि इसे कभी अपने पास से अलग न करेंगा फिर नूरुद्दीन अलीये

सप्त
१८

सावे सथहोगया जिससे विदितहुवा कि वह मरगयथाेड़ी देरके पश्चात फिरउसने सुपि
म्हाल्लो और अपने पुत्र बदरुद्दीनको यहउपदेश किया प्रथम· यह कि तुम किसीसे
बतानकरना औरनकिसीसे अपनाभेद कहनाद्वितीय· किसी मनुष्य पर अन्यायन क
रनाकि वह तुमसे वैर औरउाह रकखे तुमसमको कि यह संसार देनेलेनेकी जगह
है जैसाकि तुम किसीके साथबुराई वाभलाई करोगे तुमकोभी उसकाबदलाभोगना
पड़ेगा तृतीय· यहकि तुम ऐसा वचननकहना जिससेलजा उगानी पड़े औरबहुत वा
तान करनाकि बहुवाची सदैवलजा उठाताहै औरगंभीर बहुधा अनेक डोंगोसेबचा रहता
है इनबातोंको सदाकरनाबुद्धिमानोंकावचनहै किगंभीरता प्रतिष्ठाकेबचाने वाली
औरप्राणोंके रक्षाकरने वाली होतीहैजो मनुष्यथोड़ाबोलताहै लजाकदापि नहीं उ
ठाता औरजोबहुत बकताहै वह पीछेसेकष्ट पाताहै चतुर्थ· यहकिमद्यन पीना
किबुद्धिकोनष्टहोनाका कारणहै पंचम· यहकि सर्वदाकिफायत करनाक्योंकि जो
तुम बहुत खर्चकरोगे तोअवश्य निर्धनहो जाओगे मेरा प्रयोजन यहहै नतो इतना
खर्च करनाकिनिर्धनहो जावोनइतनाकृपनकि तोभी लजा शामहो सर्वदा समरहना
चाहिये क्योंकि जबतुम्हारेनिकट द्रव्यरहेगा सबमित्रतुमको घेरे रहैंगे औरजो ख

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लो होगे तो तुम्हें कोई बात भी न पूछेगा न कोई तुम्हारे समीप आवेगा निदान स्वास निक
लने पर्य्यन्त नूरुद्दीन अपने पुत्र बदरुद्दीन को उपदेश करता रहा जब वह मरगया बद
रुद्दीन ने बड़ी शोक किया मसे उसका सोग की रीति की इतनी कथा कह रानी शहरजाद ने बा
दशाह शहरयार से उसका सोग की रीति की इतनी कथा कह रानी शहरजाद ने बादशा
ह शहरयार से कहा कि खलीफा हारूरशीद यहां तक इस कथा को सुन अति प्रसन्न हुवा
पुनः जाफर मंत्री कहने लगा कि नूरुद्दीन के मरने के पश्चात् सब लोग बदरुद्दीन को
बासराई कहने लगे क्योंकि वह उसी नगर में उत्पन्न हुआ था बदरुद्दीन हसन उस देश की
रीत्यनुसार एक मास पर्य्यन्त अपने पिता के सोग में ऐसा बैठा कि किसी से न मिलता था इसी
कारण राज सभा में न गया किन्तु द्वितीय मास भी उसी दशा में व्यतीत किया इस पर।
वाहीसे बादशाह अप्रसन्न हुवा और उसके स्थान पर किसी अन्य मनुष्य को अपना मंत्री
कर काम लिया करता एक दिन अपने नवीन मंत्री को बुलाकर आज्ञा दी कि प्रथम मंत्री।
का मंदिर स्थान आदि छीनले और बदरुद्दीन हसन को केद कर मेरे सन्मुख ले आ ओ नि
वीन मंत्री बादशाह की आज्ञानुसार सेना साथ ले चला एक बदरुद्दीन का सेवक मार्ग में
यह दशा देख दौड़ा आया और बदरुद्दीन हसन के निकट घबराया हुआ पहुंचकर उसके

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सभ
१०२
172

चरणोंपरगिरपड़ा औरउसकेवस्त्रको चूमकहा स्वामी शीघ्रयहांसे भागजाओ बदरुद्दीन ह
सनने उसके शिरको अपने चरणों से उठाकर पूछा कुशलतोहै उसने उत्तरदिया अबकहने
सुननेका अवकाशनहीं बादशाहने कोपित होय तुमको पकड़ने औरसंपूर्ण तुम्हारा द्र
व्यहरनेकोसेनाभेजीहै बदरुद्दीनउस अपने हितैषी सेवककी बातसुन घबरागया औ
रकहनेलगा इतना अवकाशहै किजबधनवारत्न अपने साथलूं उसने कहाइससमय
किसी वस्तुका विचारन कीजिये केवलयहांसे सबेगभगजाइये मंत्री आपके गृहके स
मीप पहुंच चुकाक्षणमात्रमें यहां आया चाहताहै बदरुद्दीन इसबातको सुन वहांसे उ
ठा औरजूती पावोंमेंपहिनकर अपनेवस्त्रसे अपनामुख छिपायाकि कोईउसेनपहि
चाने औरघरमेंसेसुवर्ण परभरेसाथले एक औरको चला परंतु इतनी आतुरताकी किभवन
केदूसरे दरवाजेसेहोकरनगरके कबरिस्तानको चलाजाते २ सूर्यास्तहोजानेसे अंधिया
राहो गयाथा वह अपने पिताकी कबरमेंकि बहुतबड़ीथी औरउसे नूरुद्दीनने ब
नवाय गयाथा पहुंचा अकस्मात् वहां एक यहूदी व्यापारीसे भेंटभई वह यहूदी बदरु
द्दीनको पहिचानकर ठहरगया औरबड़ी प्रतिष्ठासे उस नम्रतापूर्वक प्रणामकिया
औरहाथ चूमाफिर आश्चर्यकर कहनेलगाकि रात्रिको अकेले कहां जातेहो वह।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कौनसा ऐसा कार्य है कि तुमने इतना श्रम किया बदरुद्दीन हसनने उत्तर दिया मैंने अपने।
पिताको स्वप्नमें देखा कि मेरी ओर अप्रसन्नतासे दृष्टि करता है उसको मुझसे अबतक क्रोध है
यहांतक कि मैं जागकर उठ वहांसे अकेला दौड़कर यहां आया उस यहूदीने उसके वच
नका विश्वास न कर कहा तुम्हारा पिता बड़ा प्रतापवान शीलवान और मेरा स्वामी था कई
जहाज असबाबके लदे हुए स्थान २ पर गये हैं और अभी कोई यहां नहीं पहुंचा अब तुम उ
स असबाबके स्वामी हो यदि जहाजका असबाब जो प्रथम ही इस नगरमें पहुंचे मेरे हाथ
बेचो तो मैं इसी समय आपको ८०००) रु॰ देता हूं और एक तोड़ा उसके सन्मुख राख दिया ब
दरुद्दीनने उस दशामें कि केवल एक नाक और दोकानके सिवाय कुछ न रखता था इतने
रुपये की परमेश्वरकी देनसे समझा हर्षपूर्वक इसको अंगीकार किया फिर यहूदीने
कहा आपने अपना माल प्रथम जहाजका जो इस नगरमें पहुंचे ८०००) को बेचा बदरुद्दी
न हसनने कहा उसको मैंने अपनी खुशीसे तेरे हाथ बेचा यहूदीने तोड़ा उसके हाथमें दे
कर कहा हे स्वामी यद्यपि मुझे आपके कहनेपर विश्वास है परंतु लिखत मलिख दीजि
ये कि औरोंको निकट सनद हो बदरुद्दीन हसनने कहा बहुत अच्छा फिर उस यहूदी
ने अपनी कमरसे मसि और लेखनी और कागज़ निकाल सामने रख दी बदरुद्दीन हसनने

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्र उसे लिखा बदरुद्दीन हसन वांसराईने अपने प्रथम जहाजकी वस्तुको ८०००) रु. पर स
१०३ हाक यहूदीके हाथबेचा और नीचे अपने दस्तखत कर यहूदीको दिया यहूदी वहांसे
चला गया और बदरुद्दीन हसन सीधा अपने पिताकी कबर पर गया और रोकर कहने लगा
123 अभी मेरे प्रिय पिताके मरनेका शोक मेरे हृदयसे न गया था कि इस अमाई बादशाहने मे
रे घरबारको छीन लिया और मेरे पकड़ने की आज्ञा की अबमैं भागकर यहां आयाहूं कि
मैं उसके हाथसे छूटूं इसी भांति देरतकरोता और बातें करता रहा निदान उसी दशामें वहां
सोगया एक क्षण न हुआ था एक पिशाच कि वहांपर रहताथा और रात्रिको सैरके निमित्त
वहां फिरा करता बदरुद्दीन हसनको वहां पड़े देख उसके रूप अनूप पर मोहित हुआ
और कहने लगा यह देवता जान पड़ता है कि अभी परमेश्वरने इसे स्वर्गसे संसारका प्र
काशके लिये भेजा है क्योंकि मैने अबतक और किसी मनुष्यको ऐसा सुंदर नहीं देखा
फिर जब उसे मनभरके देखचुका वहांसे उड़कर वायुमें एक अप्सरासे मिला और प
रस्पर प्रणाम किया फिर उस पिशाचने उस अप्सरासे कहा मेरेसाथ पृथ्वीपर उतर मैं त
के एक सुंदर मनुष्यको कि उसकबर पर सोता है दिखाऊं उसके देखनेसे तू प्रसन्न हो
गी वह अप्सरा चलनेको तय्यार हुई फिर वह दोनों क्षणमात्रमें वहां आपहुंचे पिशाचने

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

उसे बदरुद्दीन हसनको दिखाकर कहा समझकर तुमने कहीं ऐसा रूपवान मनुष्यदेखाहै अ
फ़्रीतने ध्यानपूर्वदेखकहा बालकमें यह मनुष्य महा सुरूपवान् है परंतुमैं केहूंस एक अ
द्भुत चरित्रदेख आईहूं यदितुमसुनाचाहतेतो वर्णनकरूं पिशाचोंने उत्तर दियाजो तुमसक
होकहो सुनावेगीसो मुझे अनंतहर्षहोगा अफ़्रीतने उसनेहालोंनकोइसभांति वर्णनकिया
थाको सुनावेगीसो मुझे अनंतहर्षहोगा
मिसरके बादशाहका एकमंत्रीहै जिसकानाम शम्सुद्दीन मुहम्मदहै उसकोएकलड़की
बीसवर्षकी अति सुंदरीहै बादशाहने उसके रूप अनूपकी प्रशंसासुनमंत्रीकोकहा
कि अपनी पुत्रीकाविवाह मेरेसाथकरमंत्रीने अंगीकारनकिया औरअनंतशोचकरबा
दशाहकोउत्तरदिया आपकी इच्छामुझेस्वीकार नहींक्योंकि आपकोभीविदित होगा
कि मेराएकभाई नूरुद्दीन अली नामहै प्रथमवहभी मेरे समान आपकामंत्रीथाबहु
त दिनसेवहकहीं चलागयाहै अबतक उसका समाचार विदित नहीं परंतु पांच चारदि
वस व्यतीतहोतेहैं मैंनेसुनाकि वह बसराकामंत्रीहोगयाथा अबवह पुत्रछोड़मरगया
औरप्रथमसे हम दोनों भाइयोंमे प्रणहोचुकाहै कि हमदोनोंके संतानमें परस्परविवा
ह होगा मुझे विश्वासहै कि उसने अंतसमय इसविषयमें अपने पुत्रको उपदेशकिया
होगा अब अवश्यहै किउसके अंतकाल केउपदेशकोकरें परमेश्वरकेवास्ते आपमुझे इ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्र
१८४
174

सबातसे क्षमा कीजिये इसनगरमें बऊतसे मेरेसमान प्रतिष्ठित सौदागरलड़कियां रखतेहैं उ
नसे आप विवाह कीजिये बादशाह इसबातकोसुन अत्यंत अप्रसन्नऊआ औरक्रोधितहो
यकहा तूने मुझेबऊत तुच्छसमझा इसतेरी ढिठाईसे देखनेके कैसा दंडदेताहूं औरमैंने
प्रतिज्ञाकीहै कितेरी कन्यामहाकुरूपसेवकको व्याहदूंगा यहकह मंत्रीको बिदा किये
यह अत्यंत शोचितहोय अपने गृह आया उसीदिन बादशाहने एक अश्वपालकोंमेंसे
एकगुलामकोजो अत्यंत बदसूरत औरकुबड़ा औरउदर उसकाबऊत बड़ा और पाव टे
ढे मिरगी वालेरोगीके समानथे विवाहके निमित नियतकिया और मंत्रीको कहलाभेजा
अपनी पुत्रीकेविवाहकी सामग्रीतय्यारकर औरकाज़ीको साक्षियों सहित विवाह का
रनेको बुलामंत्रीने अति ग्लानिसबादशाहकीआज्ञा पालनकी रात्रिकोमिसर नगरके
गुलाम इकट्ठेऊय औरमशालें हाथोंमें लेस्नानागारके किवाड़ पर उसकुबड़ेके आनेकी
बाटदेखते रहेकि उसे स्नानागारमें लेजाय नहलाधुला दूल्हबनाकर मंत्रीके घरब्याह
नेकोले जावें इतनाकह उसे अप्सराने कहा अबवह उसेदूल्हबनारहे हैं मैंनेजाकरदेखा
कि उसकुबड़ेकोमैंनेनहलाधुला उसकुबड़ेकोवालसे उज्वलहिन बनायाहै परंतपश्चाता
पहे कि वह मंत्रीकीकन्या ऐसी रूपवान ऐसे अयोग्य भयानकरूपकेसाथविवाहीजा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वे जबवह अप्सरा इसवृत्तांतको कहचुकी पिशाचने कहा क्या अच्छीबातहै कि मंत्री उ
वारे ऐसी सुंदरी इसस्वरूपवान नोकिशोरके साथ विवाही जावे अप्सराने कहा मैंभी यही
चाहतीहूं किबादशाहके अन्यायसेबचाय औरउसबड़े को धोखादे उसी जगह इसमंत्री
षकोविवाहूं और बादशाहकेव्यर्थ क्रोधकाबदलालूंकि उस दुलहिन और उसके पि
ताकोलज्जा प्राप्तनहो और उसकुबड़ेके विवाहसे उसको जातिपांतिमें अप्रतिष्ठानहोपिशाच
ने अप्सरासे कहायदितुमभी इसकार्यमें मेरी सहायता करतेहो सभीहै मैंइसके जागने
के पहिलेइसे यहांसे उठायके तुमेंलेजाताहूं तबपिशाच और अप्सरादोनोइस कार्यमें
उद्यतहुये सोपिशाच बदरुद्दीन हसन जगायअपने को एकसन्देहमें पायकरभयमानहो २
ब्हाकी किचिल्लाने परन्तु पिशाचने कंधेपरउसके हाथरखे समझाया कि तुमबोलियानचु
पकाहोरहु औरएक मशालको हाथमेंले इससमन्त्रलके साथ होले औरमंत्रीके भवनेंमें
जाय यहसब विवाह करनेजातेहैं तभीवेथंज्ञक चलाचल औरउस कुबड़ेके दाहिनी ओ
रजिसका वृत्तांततुमके अभीविदित होगयाहोकर अभयसभामें जा और मुट्ठी २ रुपये अ
पनीथैलीसे निकाल गाने बजाने वालोंके साथजो दुलहेके साथजावेंगे दीजियो औरस
माजमें पहुंचकरउनबांदियोंकोजोदुलहिनकेचारों ओररहेंगी बहुतद्रव्य दीजियो।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्र.
१८५

चैतन्य वह अपनी थैलीमें ऊछल रखियो और जो मैं कहता जाऊं वही कीजियो और कि
सीसे भयभीत न हूजियो बदरुद्दीन उस पिशाचसे यह बातें सुन और भले प्रकार स्मर
ण रख स्नानागारके दरवाजे पर गया और पहिले उसने गुलामोंके समान अपने हाथ
में मशाल ले लिया और उस समूहमें ऐसा मिला कि कैरोके वासियोंमें जान पड़ने ल
गा और उन सबके साथ कुंवड़के पीछे स्नानागारसे नहाकर बाहर निकला और बाद
शाहके घोड़ेपर सवार होके चला जब गाने बजाने वालोंके निकट पहुंचा तो एक मुट्ठी २
भर रुपये उनको देने लगा जिससे वह सब प्रसन्न हुये और उसके रूप अनूपको देख अत्यं
त आश्चर्यमें हुये निदान इसी भांति देता लेता मंत्री शमसुद्दीन अपने चचाके द्वारपर प
हुंचा तब चोबदारोंने सबको भीतर जाने न दिया तथा बदरुद्दीनको भी वर्जा परन्तु गा
ने बजाने वालोंने जिनको कोई न रोक सका था धनके लोभसे बदरुद्दीन हसनकी ओर से
नकर कहा इस मनुष्यको क्यों रोकते हो यह गुलाम नहीं किन्तु अन्य देशका वासी है इ
स नगरमें बरात देखने आया है यह कह उन सभोंने बदरुद्दीन हसनका हाथ पकड़
अपनी ओर खींच लिया और अपने साथ महलमें ले गये और मशाल उसके हाथसे ले
और सभामें ले जाय दूल्हेके दाहिनी ओर जो तख्त पर दुलहिनके बराबर बैठाया और

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वैठाया यद्यपि वह डुलहिन अति सुंदरी अपसरा तुल्यथी परंतु शोकके कारण मुरझाई हु
ई दिखाई देती थी उस समय मिसरकी स्त्रियां और बांदियां मोमी मशालें हाथोंमें लिये हु
ई आईं और उसकुबड़े का कुरूप देखक मतहोय कहने लगीं कि हम इस डुलहिन
को इस मनुष्य अर्थात् बदरुद्दीन हसनको देंगे इस कुरूपकुबड़े को नहीं और बादशा
ह इस विचारको जिसने चाहा था कि रूपवानके साथ कुरूप विवाह हो जावे उसका खण्डन
मय किया इसीबातोंमें ऐसा शाह किया कि गाना बजाना बन्द हो गया क्षणमात्रमें डोम
नियां और गाने बजाने वालियां डुलहिनको वस्त्र पहिनाने लगीं अब यह उत्यक लिखे
ना है बुद्धिमानों को प्रगट हो कि मूल अरबी भाषाकी पुस्तकमें इस स्थान पर एक सौ दो
रात्रि व्यतीत हुई और अंतिम सौ रात्रि इसी राग रंगकी सामग्रीके वर्णनमें वीती सो अंग
रेजी भाषाके उल्थकने उनको छोड़ दिया इस वास्ते इस पुस्तकमें कि अंगरेजी भा
षासे सलिलउर्दमें उल्था होकर भाषांतर हुई है छोड़ दियागया निदान डोमनियों।
ने सातजोड़े सात प्रकारके शमसुद्दीन मंत्रीकी पुत्रीको प्रत्येक रागपर प
हिनाये जब उस देशकी रीत्यानुसार डुलहिन जोड़े बदल चुकी तब औरस्त्रियों के
सहित अपने स्थान अर्थात् कुबड़े दूल्हेके निकटसे उठ औरग्लानि पूर्वक हंसीसे उ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

176

से देखबदरुद्दीन हसनके निकट जा बैठी बदरुद्दीन हसन उस पिशाचके उपदेशानु
सार उन बांदियों और गानेवालियोंको अपनी थैलीसे निकाल मुट्ठी भर २ रुपये देता थ
ा वह प्रसन्न होय एक दूसरी को फिर इक २ कर चुननेमें लगी और आशीर्बाद देती थी
और परस्पर वह सैनसे बतलाती थी कि यह हल्हा मंत्री को पुत्रीके योग्य है और यह
कुबड़ा कुरूप मंत्री कुंवरिके योग्य नहीं और महलके सेवकोंमें भी यही वार्ता होती
थी वह कुबड़ा कुछ तो उनकी बातें सुनता और कुछ नहीं क्योंकि हजारों नकला
करउसे विफा रक्कवा था फिर जब यह रीति वस्त्र बदलने की हो चुकी और गाना ब
जाना बंद हुआ तब उन्होंने बदरुद्दीन हसनको सैनकी कि खड़ाहो उसके खड़े होने
से सम्पूर्ण भवनस्थ मनुष्य उस स्थानसे चले गये और डुलहिन अपने मकानमें गई
तब बांदियोंने रात्रिके बस्त्र डुलहिनको पहिराये उस स्थानपर केवल बदरुद्दीन
हसन और कुबड़ा और बांदियां रह गई कुबड़ेने क्रोधकी दृष्टिसे बदरुद्दीन को
और देखकर कहा तूने क्यों यहां ठहरा है और यहांसे चला नहीं जाता बदरुद्दीन हस
न उसके क्रोधित बचन सुन घबड़ाया और वहांसे चले जानेकी इच्छाकी पिशाच औ
र अप्सराने उससे कहा तू कहां जाता है ठहर कुबड़ेको हम यहांसे निकाल देते हैं तू

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दुलहिनकेनिकटजा ओरउससे कह तेरा पतिमैंहूं बादशाहने हमसे कुबड़े कोदूल्हा
बना यहां भेजाथा उसके बोले कुबड़ भोजन अस्यागारमें भेजो ओर दुलहिनको अपने
साथ मिलालो दुलहिनतुझे देखकर प्रसन्नहोगी तमकुबड़ कुबड़ेका भयनकरो
उसको अभीहरकरतेहैं निदान जब अपसराने बदरुद्दीनको इसभांति को शिक्षासेट
ठकियातो वह उसी स्थान परठहरा ओर वहकुबड़ामोलन वहांसे भागाक्योंकि पिशा
च बिल्लीबन ऐसीतोदूना होहिसे देखने ओरघुरीने लगा जैसे सिंह अपने भक्षको दे
खनादकरताहै कुबड़ा उसेयमकाकरदोनों हाथोंकोबड़े बेगसेमारनेलगा किवह
डरकर भागजावे परंतु वह विल्ली उसको ओरघूरने लगी ओरनेत्र अंगारों के समा
नहोगई तबवह कुबड़ा देखडरा ओरभाग जानेकी इच्छाकी इतनेमें वहपिशाच ब
नन बड़ा भैंसाबनडकारने लगा ओरबड़ा शब्दकरकहाहे कुबड़ेकहां भागजावेगा
खड़ा रह कुबड़ा भयसे पृथ्वीपरगिरपड़ा ओर अपना मुख वस्त्रमें छिपा लियाकिउ
स विकराल भैंसेका स्वरूप दृष्टिनपड़े ओर अतिनम्रहोय गिड़गिड़के कहने लगाहे
महिष राज मुझेका आज्ञाहै भैंसेने उत्तरदियातुझे इतनी शक्तिथी किमेरी स्त्रीके सा
थ विवाह करनेको आयाकुबड़ेने उत्तरदिया स्वामी मेरा अपराध क्षमाकीजिये मुझेये

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
१८

दिननथा कि यह सुंदरी तुम्हारी प्यारी है महिषने कहा तयहांसे सूर्योदय पर्यंत
नजाइयो चुपकायहां पड़ा रहा दिन होने हो इसस्थानसे चला जाइयो और फिरके इस
औरनदेखियो नहींतो अपने दोनों सींगतेरे उदरमें चुभोकर मारडालूंगा तदनंतरमहि
षवह शरीरत्यागमनुष्य बन गया और उसकबड़ेकी टांगें उठा शिरनीचे करदीवार
के साथखड़ाकरदिया औरकहा जोतूभोर पर्यंतहिला औरइसी भांतिखड़ानरहा
तोतुझे इसदीवारके साथरगड़डालूंगा फिरवह पिशाच और अप्सरा दोनोंचले गये औ
रबदरुद्दीन अतिहर्षसे दुलहिनके मकानमें गया उस समयएक हब्शी उसे कहीं ए
कांतमेंले आई औरहल्केसे कहा भैया इसदुलहिनके साथमेरारी व्यवहारबनेना इ
तनाकह उसमकानका द्वारबंदकर उसमेंताला लगा चली गई वह दुलहिन बदरु
द्दीनको पाकर अनंत प्रसन्नहुई औरपूछा तुममेरे पतिके साथियोंमेंसेहो बदरु
द्दीन हसनने उत्तरदिया मैं कबड़ेका साथी नहीं किंतु तेरापति हूं प्रथम बादशाहने
चाहाथाकि अपना विवाह तुम्हारे साथकरे परंतु तेरे पिताने उसे स्वीकारनकिया बा
दशाहने कोपितहोय प्रगटमें हास्यसे कबड़ेको नियत कियाकि उसके साथ विवाह
हो परंतु वास्तवमें मुझको कि मैं तुम्हारा सजाती हूं विवाहके निमित्त भेजा है तुमने दे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

त्था कि संपूर्ण मनुष्य उससे हास्यकरतेथे अब मैंने उसेफिर अश्वागारमें भेजदियाहै तुम
थीर्थ्य रक्खोवह नमें है दिखाईन देगामंत्री कुंवरिजो चिंतामेंथी इस बचनको सुन और अप
ने भर्तारको सुंदर देख अत्यन्त प्रसन्न औरहर्षितहुई औरकहने लगीकिमैं अत्यन्तशोचबि
चारमेंथी कि संपूर्ण आयुमेरीदुःखमें उस कुबड़ेके साथ कटेगी परंतु परमेश्वरका धन्यबा
दहै कि उससे मुझेबचाकरतुम्हारे साथविवाह कियायहकह वह वदरुद्दीनभी उसकेरू
प अनूपकोदेख हर्षितहुआ और अपने वस्त्र औरथैली सहितजिसे असहाक यहूदीसे
पाईथी एकचौकीपर उतारर खदी इतनी दोनवपरभीवहथैली उसीभांतिद्रव्यसेभरी र
हीयहकेवल पिशाचकीमंत्रविद्याथी फिरपगड़ी भीशिरसे उतार रात्रिका मुकटपहिना
लिया और केवल एकतंग पाजामा औरमिरजई पहिनकर अपनी दुलहिनके साथसो
रहा जबकुछ रात्रिशेषरही तबवह पिशाच फिरउस अप्सरासे मिलापिशाचने कहा
भोरहोनेके पहिले उसमनुष्यको सोतहुए वहांसे उठाकरकिसी अन्यदेशमें पहुंचादेसो
अप्सराने धीरेसे दुल्हेकोदुलहिनके समीपसे उठाय दमिश्क नगरकोजामामसजिद प
रलेजा लिटादिया और आपपिशाच सहित वहांसे चलीगई जबवहांके वासी भोरके नहा
केकी अजां सुनकर निमाज पढ़ने आये इसकोरात्रिकेवस्त्र पहिनेदेख अत्यन्तविस्मितहुए

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्र
१२८
किसीने कहाकियह अपनी स्त्रीसे रूठके आयाहै इतना अवकाश न पायाकि बसनपहिना
ना दूसरेने कहाकि यह पुरुष सम्पूर्ण रात्रि अपने मित्रोंके साथ मदिरा पीतारहा अब म
दमत्तहो यहां आपड़ाहै और निद्रावश हो अचेत पड़ाहै तीसरा और कुछ कहतापर ब
किसीको ठीकांवदित नहुवा वह कौतुककर वहां आया वह कुछ मनुष्योंको बिलाहट औ
रकुछ ठंडीहवा चलनेसे जगा और मनुष्योंको अपने चारों ओर देख आश्चर्य्यमें हुवा
और अपनेकोएक मसजिदके निकट जिसे कभी न देखाथा पाया अत्यन्त विस्मित होनेत्र
खोल उनसे पूछाकि मुझे बताओ मैं कौनहूं और तुमको मेरे चारोंओर इकट्ठेहो कर
क्यावार्ता करतेहो एक मनुष्यने उस समूहमेंसे कहाहै मित्र हमने तो अभी तुझे देखा
है और क्या तूनहीं जानता यह दमिश्ककी मसजिदका द्वारहै बदरुद्दीन हसननेकहा
वाह परमेश्वरकी माया कलमैं कैरोमें सोयाथा भोरको कौतुककर दमिश्कमें पहुंचा इसब
चनको सुन बहुतसे मनुष्योंने कहा यह मनुष्य दयाकरनेयोग्यहै कि ऐसा सुंदर पुरुषसो
दाईहो और ऐसीवहकी बातेंकरे उनमेंसे एक वृद्धने कहाहै पुत्र तुमक्या कहतेहो ए
मानहीं हो सक्ता कि रात्रिको तुम कैरोमें हो और भोरको दमिश्कमें बदरुद्दीन हसना
ने कहामें सच कहताहूंकल भोरकोमैं बांसरमें थाइस वचनके सुनतेही सम्पूर्ण मनु

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ष ठठा मार हसने ओर बड़ा शाहुकार कहने लगे बात विदित भवा निश्चय है वा इसमें कु
छ शुभ भेद है बड़ा पश्चाताप इसको न हुए अवस्था पर है ऐसा उत्तम मनुष्य विदित हो
जावे फिर एक ने कहा यह बात को कारहो समझो है कि तुम कहते हो एक मनुष्य उसी रात्रि
को कैह्र में ओर उसके भार को उमिश्क में जान पड़ता है अभी तक तुम सोते हो यह स्वप्न
अवस्था की तुम्हारी वार्ता है बदरुद्दीन हसन ने उत्तर दिया यह बात सत्य है कल रात्रि को मे
रा विवाह कैह्र में हुवा यह सुन मनुष्य अधिक हसने लगे फिर उसी मनुष्य ने कहा तुने अ
वश्य स्वप्न देखा है अभी तक तेरा वही विचार है बदरुद्दीन हसन ने कहा मैंने स्वप्न नहीं दे
खा कल रात्रि को मेरी दुलहिन को सात प्रकार के वस्त्र पहिनाये ओर उस स्थान पर एक कु
रूप कुबड़ा भी था उन्होंने चाहा कि उसका विवाह उसी दुलहिन से करें मैं अनंत विस्मि
त हूं कि मेरे वस्त्र पगड़ी ओर रत्न की थैली कैह्र में मेरे साथ थी का हुई यद्यपि वह इन
बातों को ऐसा कहता था कि विश्वास हो परंतु किसी को विश्वास नहीं आता था ओर हंसते
थे निदान जब बदरुद्दीन अपना वृत्तान्त कह चुका तब वहां से उठ नगर को ओर गया उ
सके पीछे मनुष्य कहते जाते थे कि यह मनुष्य विक्षिप्त है इस शहर को सहु ओर बहुत से
मनुष्य चारों ओर द्वारों पर खड़े होके उसको देखते ओर हसते थे ओर कोई २ चिल्लाने वालों

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स१
८५

के साथहोकर ठट्ठाकरते औरकहतेथे कियह सौदाई है परंतु उसकी बुद्धिमत्ता कावृ
त्तांत किसी कोविदित नथायहांतककि वह बेचारा घबराकर एक हलवाईकी दूका
नपर गया और दूकानके भीतरजाकर अपना पीछा उनसे छुड़ाया विदितहो कि यह ह
लवाई प्रथम पश्चिमकेधाड़ियोंका प्रधानथा जो परदेशियों कोलूटा करते अबवहउ
सनिंद्य कर्मकोछोड़ दमिश्कमें वास करताथा यद्यपि उसकी मिलनसारी औरशीलसे
उसनगरके वासी उससेप्रसन्नथे परंतु अबभी बहुतसे मनुष्य उससे डरते इसलिये उसके
भयसेसबभागगए तब उसने बदरुद्दीन हसन सेएकान्तकोलेके औरयहां क्योंकर आया
उसने अपनासम्पूर्ण वृत्तांत आजन्मसे विवाह पर्यंत विस्तार पूर्वक वर्णनकिया औरा
कहा इसओरको मैंने अपनेको इसनगरकी मसजिदके द्वारे पृथ्वीपर पड़ा पाया यह अ
द्भुत चरित्रजो कभीविदित नहो किक्योंकरमें इसथोड़े समयान्तरमें उननगरोंको लां
घताहुआ यहां पहुंचा उसहलवाईने उसका वृत्तांत सुनकहातेरी कथा अद्भुत है इस
वृत्तांतकोकिसीसेनकहियो मुझे संतान नहीं मैंतुझे अपनापुत्र बनाया चाहताहूं जो
तूभी प्रसन्नहोवे और इसविषयमें मनुष्योंके सन्मुख प्रतिज्ञाकरे फिरतू हर्ष पूर्वककर
सनगरमें फिरियो मेरापुत्र जान तुझेकोईन टोकेगा यद्यपि हलवाईको गोदमें बैठनाउ

129

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

उको अनुचित और ज्ञानहीनताका कारणथा परंतु उस आपत्ति को दशामें उसने इसेउ
त्तम ज्ञान स्वीकार किया फिर हलवाईने उसे उत्तम २ वस्त्र पहिनाये और बहुतसे मनुष्यों
को एकट्ठा किया और बदरुद्दीन हसनने अपनेको उनके साम्हने भी उसका पुत्र ठहराया फि
र वह हलवाई साक्षियों सहित मायाथी शाके निकट ले गया बदरुद्दीनने भी यही उसके स
न्मुख भी कहा कि मैं इसका गोद बैठलाहुआ पुत्रहूं फिर वह उसके घरमें आनंद सर्वकर
हने लगा और दमिश्क में हसन नामसे ख्यात होकर हलवाईका कार्य सीखा अब उस
दुलहिन अर्थात् मंत्रीकुंवरिका भी हाल सुनना चाहिये और जब शमसुद्दीन मुहम्मद
की पुत्री जगी तो उसने बदरुद्दीनको छप्पर खाटमें न पाया जाना कि वह लघुशंका आदि
को उठ बाहर गया शीघ्र फिर आवेगा वह दुलहिन उसके आनेकी बाट देखती थी इ
तनेमें मंत्री शमसुद्दीन मुहम्मद अत्यंत चिंता और लज्जा पूर्वक वहां आया और पुत्रका
कर अपनी पुत्रीका नाम लेकर पुकारा दुलहिन ने तुरंत उठ किवाड़ खोला और हर्षपू
र्वक अपने पिताके हाथको चूमा मंत्रीने उसे प्रसन्न पा आश्चर्य किया वह जानता था यह
भी इस लज्जासे डूबकेमर गई होगी मंत्रीने कहा अभागी तेरे सन्मुख अपनी प्रसन्न
ता प्रगट करती है दुलहिनने उत्तर दिया यहां पर वहांपर वह कुरूप कुबड़ा नहीं और मैं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
१८०

उसके साथ विवाही नहीं गई वह यहांसे कभीका भागा है और मेरा विवाह किसी रूपवा
न मनुष्यसे हुवा है और सुन्दर वही मेरा पति है शमसुद्दीन मंत्रीने कहा तू क्या कह रही
है क्यों तेरे साथ वह ऊबड़ा नहीं सोया दुलहिनने कहा नहीं वह मनुष्य है जिसकी
भवें काली और बड़े २ नेत्र हैं मंत्री उसके वचनका विश्वास न कर क्रोधित हुवा और क
हा तूने ढिठाईसे यह विरुद्ध वचन कहे तेरा पति वही ऊबड़ा है उसने कहा मैं ऊबड़ेको
धिक्कार देती हूं मैं उसके साथ नहीं सोई मेरा पति मलमूत्र त्यागने बाहर गया है अभी
आता होगा उसे तुम देखलेना कि वह कैसा है शमसुद्दीन बाहर निकल उसे ढूंढने ल
गा कहीं न पाया परंतु एक ओर देखा वह ऊबड़ा दीवारके साथ लगा उलटा खड़ा है
पांव ऊपर शिर नीचे जैसा वह पिशाच उसे खड़ा कर गया था उसके भयसे वह अटल
खड़ा था मंत्रीने उसने इस दशामें देख पूछा तुझे इस भांति किसने खड़ा किया ऊबड़ेने
मंत्रीका शब्द पहिचान उत्तर दिया आपने मुझसे अच्छी हंसीकी कि मनुष्य की स्त्री
के साथ मेरा विवाह ठहराया था वह सुंदरी तो एक ऊदप पिशाचकी प्यारी है मंत्री समझा
कि यह बड़बड़ा रहा है उसकी बातोंको सुनी अनसुनी कर कहा सीधा होकर खड़ा हो
ह उस ऊबड़ेने उत्तर दिया सूर्य उदय पर्यंत मैं हिल भी नहीं सकता क्योंकि मैं रात्रिको

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

बैठाथेमें पत्र प्रथमतो एकश्याम वर्णविल्ली मेरे सन्मुखआई और क्षणमात्रमें एकब
ड़ा महिषबनगई औरजो ऊबड़खाबड़ मने मुझसे कहामैं नहीं भूला तुम मुझे इसीदशामें छो
ड़ अपना कार्य करो मंत्रीने उस ऊबड़ेको एकड़ सीधा करदिया सीधा होतेही वह ऊ
बड़ायेसा भाया कितनकभीन ठहरा औरनपीछे फिरके देखा दौड़ताहुवा बादशाह के
सन्मुख गया औरअपने संपूर्ण वृत्तांत को प्रगट किया बादशाह इसकथाको सुनबहुत
हंसा और मंत्री अपमी पुत्रीके निकट आय कहने लगाकान्त यह बातें सब कहतीहैकुं
वरिने कहा इनसबके विशेष अपनी सत्यताको एक और साक्षी देतीहूं वह यहहैकि
इसऊरसीपरमेरे पतिके वस्त्ररक्खेहैं उनको तुमभली भांति देखो उनमें मेरी कोईय
सी वस्तु प्रगटहो जिसमे तुम्हारे हृदय कासंदेह मिट जावेफिर उसने बदरुद्दीन हसन
की पगड़ी उठाय मंत्रीकोदी मंत्रीने जबउसे चारों ओरघुमाकर देखासो विदितहुआकि
यह मुवस्सलके वासियों के मंत्रीकी पगड़ीहै उस मेंसे एकवस्तु वस्त्रमें लपेटीहुईपाई
उसने उसेखोलातो उसमें एकपत्रजो नूरुद्दीनमंत्रीने अंत समय बदरुद्दीनहसनको लि
खदियाथा पाया बदरुद्दीन अपने पिताकी निसानीको अपनी पगड़ी में रखताथा मंत्री
ने वहपत्र देखतेही अपने भ्राताकालेख पहिचान औरएक द्रव्यसे भरीहुई थैलीपाई औ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
१८९

रउस थैलीके बीच ऐसे इसहाक यहूदीके हाथका लिखाहुआ पत्रहाथपड़ा उसमें यह
लिखाथा किमैने ८००) रुपय परबद्रुद्दीन के हाथ जहाज़ मोल लिया मंत्री बद्रु
द्दीन इस विषयको पढ़ मूर्छित होगया और पत्र उसके हाथसे गिरपड़ा जबसुधि संभा
ली लड़की सेकहा तुम्हारी प्रसन्नता बहुतठीकहै पति तुम्हारा चचेरा भाईहै फिर उसने
अपने भ्राताके पत्रकोउठाकरके बेरहमा और रोया उसका लेखयहथामें अमुकतिथिको
कैरसे बसरामें आया अमुकतिथि परविवाहहुआ और अमुकतिथि मुहूर्तमें मेरापु
त्रबद्रुद्दीन उत्पन्नहुआ शमसुद्दीनने जबउनतिथियोंकामिलान कियातो अपने और
अपने भ्राताकी तिथि मुहूर्त विवाह आदिकको एकही पाई और जन्मतिथि मुहूर्तप
रबद्रुद्दीन उत्पन्नहुवा उसपर मंत्रीके चमत्कारहुई इससे वह अत्यंत आश्चर्यमेंहुवाकि
क्योंकर यह संयोग ठीकमिल गया इनगुप्तबातोंके जाननेसे सबशोक और दुःखभूलके
प्रसन्नहुवा और वह पत्रऔर पगड़ी बादशाहके सन्मुखले गयावहभीदेख अत्यंत ह
र्षित और अचंभेमेंहुवा और आज्ञाकी कि यहवृत्तांतहमारे इतिहासकी पुस्तकोंमें लि
खा जावे और शमसुद्दीन एक सप्ताह पर्यंत अपने भतीजेके आनेकीबाटदेखता रहा ज
ब वह इससमयांतरमेंन आयातब उसने संपूर्णकैरनगरमें उसकी ढूंढकी कहीं उ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

से न पाया इससे अत्यंत शोचित हुवा और विचारने लगा कि वह कहां गया और उसे का हुवा
जो नहीं मिलता फिर उसने विवाह के मकान को सब विवाह की वस्तु सहित बंद किया।
और बंद करने के वस्त्र और रथ गाड़ी को गठड़ियों में रक्षापूर्वक बांधकर एक मकान में रखवा
और उकुफुल लगाया और कई दिवस के पश्चात् मंत्री की स्त्रीने अपने को गर्भयुक्त पाया और
नौ मास के पश्चात् पुत्र उत्पन्न हुवा उस पुत्र के निमित्त पालन पोषणार्थ बहुत से मनुष्य नियत
न किये और नानाने उसका नाम अजब रक्खा जब अजब सात वर्ष का हुवा मंत्रीने उस।
लड़के का पढ़ाना घर में उचित न जान उसे पाठशाला में जिसका गुरु अत्यंत गुणवान औ
र बुद्धिमान था सौंपा और दो अनुचर सेवा के निमित्त नियत किये जो प्रतिसमय पाठशा
ला में उसकी सेवा के निमित्त उपस्थित रहते बहुधा अजब पढ़ लिख कर अपने सपाठियों से
खेला करता जो विद्यार्थी अजब से पढ़ती में न्यून थे सो वह सब अपने गुरु की आज्ञानुसा
र उसकी अत्यंत प्रतिष्ठा और सत्कार करते इस कारण अजब को अत्यंत गर्व भया और बाल
कों को दुर्वाच्य कहा करता बहुधा मारता इससे वह सब उसकी संगत से दीन हो गये औ
र इस बात को अपने गुरु से कहा गुरुने उन्हें समझाया कि तुम इसके दुर्वाच्य का बिल।
गन मानो तुम क्षमा किया करो मैं उसे समझाऊंगा और अजब को एकांत में ले जाय बहुत ब
न

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नोपरांत उसने प्रथिक उनकोडखेलना आरंभकिया तब गुरुने विद्यार्थियों सेकहा अजव
मेरे समझानेसे नहीं समझता दिन प्रतिदिन ढीठ होता जाताहै तमको अबमें एक
बात सिखाताहूं जिससे वहतमहैं फिर डाबन पहुंचावेगा औरशालामें आना छोड़देगा वह
यहहै कल जबतुम औरवह खेलनेको एकहै होतोतुम सब उसे घेरना एकतुममें सेय
वे जोनबनावेतो हमउसे जानेंगे किवह वर्णशंकरहै हमारे साथ खेलने योग्यनहीं निदा
न जबवह सब विद्यार्थी खेलनेको एकहेऊये उन्होंने अपने गुरुके उपदेशानुसार वहीखे
ल खेलना आरंभकिया और अजबके चारों ओरहोय एकने कहा आओ हम सब अपनी
पारी २ सेपिता कानाम बताते जावें औरजोन बतासके उससे हमनोखेला करेंगे उनसब
बालकोंने कहाबहुत उत्तम हमसब इस खेलमें प्रसन्नहैं फिरएक २ ने प्रत्येक विद्यार्थी
से नामपूछना आरंभकिया और तुरंतउत्तर पमासभोंनेठीक २ अपने माता पिताका नाम
बताया जबयही प्रश्न अजबसे किया उसने कहामेरानाम अजबहै और मेरी माताका नाम
हसना और पिताकानाम शमसुद्दीन हसनजो बादशाहका मंत्रीहै उसके वचनको सु
नसब बालकबोल उठे अजबतूका कहताहै यह तेरे पिताका नामनहीं किंतुतेरे नाना

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

का नामाहै अजबनेउन्हे उचायदेकहा का शमसुद्दीन हसनमेरा पिता नहीं उन सभोंने
ठठामारकहा वह तेरापितानहीं नामाहै जोतुफे अपने पिताका नाम विदित नहींऔर तुन
वतासका तुफे उचितहै आजसेतूहमारे साथनखेलाकर यह कह वह सबवहांसे उठ
खडेहुए औरउससे ठठोली करने और हंसनेलगे अजबअंमतलजित होरोनेलगा गुरुजो
वहां समीपही यह सबबातें सुनताथातुरंत अजबके निकट चला आया और कहा अ
जबक्या यह सत्यहै शमसुद्दीन मुहम्मदतो तेरापितानहीं तेरा मातामह अर्थात् तेरीमा
ताका पिताहै और तेरे पिताकानामहमेंभी विदित नहीं हमनाजानतामुं बादशाहने वारा
थातेरी माता का विवाह एककुबडे अश्वपालक सेकरे परंतु किसीपिशाचने उसे निकाल
दिया और आपतेरी माताके साथभोग किया अबतुविद्यार्थियों कोडरवनदिया कर अज
ब इसवचनकोसुन तुरंत पछताहुवा अपनी माताके समीप गया औरमांसे कहा परमेश्व
रकेवास्ते मुफे बता किमेरा पिताकोनहै उसकी माताने उत्तरदियाहै मेरेप्रिय पुत्रतेरा
पिताशमसुद्दीनहै जोतुफे निमष्यार किया करताहै अजबने कहातुमुफसे असत्य कहते
हो वहमेरा पितानहीं किंतु तेरा पिताहै मेरे पिताकानाम बतामैं किसकापुत्रहूं उसकी माता
प्रथम संगकी रात्रि और अपने पतिके खोजानेको स्मरणकररुदन करनेलगी यह दोनोंमावे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्र
१८३

183

रो रहेथे इतनेमें मंत्री शमसुद्दीन आया और उनसे रोनेका कारण पूछा अजब की माताने
विद्यार्थियों से लज्जित होनेका हाल विस्तारपूर्वक कहा मंत्रीभी उनके साथ रोनेलगा और
अत्यंत शोच युक्त हो अपने मनमें कहा बड़ापश्चात्ताप है कि मेरी पुत्रीके लज्जाका हाल संपूर्ण
नगरमें ख्यात है और सब छोटे बड़े जानते हैं इसीभांति रोता हुवा बादशाहके सन्मुख ग
या और उसके चरणों पर गिर विनय कर कहा कि थोड़े दिनोंकी मुझे छुट्टी मिले तो मैं अप
ने भतीजे बदरुद्दीन हसनको मुल्क २ नगरों और विशेष बांसरोंमें जाय ढूंढूं क्योंकि इससे
वको इस कुवाच्य सुननेसे पीछे नहीं है कि नगरके वासी कहते हैं कि मेरी पुत्रीने पिशाच
से पुत्र उत्पन्न किया बादशाहभी बहुत पछताया और उसकी इच्छा स्वीकार की और स्था
न २ पर राहदारीके पत्र अपने सूबों और बादशाहोंके नाम इस विषयमें लिखवा कर उस
के साथ किये कि जिस नगर वा देशमें बदरुद्दीन नामक मेरे मंत्रीका भतीजा हो उचित है
कि उसे इसकी भेंट करोदे और उसको यथावस्थित सहायता करे जो मेरी यह आज्ञा पा
लन करेगा मैं उससे अति प्रसन्न हूंगा शमसुद्दीन सुहमात् अपने स्वामीकी इस दयालुतापर
कृतज्ञ हुवा और फिर उसके चरणोंको चूमविदा हुवा और अपनी पुत्री और नवासेको सा
थ लेवहांसे निकला और बीस दिवसके समयांतरमें दमिश्कमें पहुंचा और नदीके तटप

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रजो उस नगर के नीचे बहती थी डेरे किये और अपने सेवकों को आज्ञा दी कि इस न-
गर में जावो और जो कुछ चाहो बेचो और मोल लो बहुत से मनुष्य जो मिसर से वस्त्र लाये थे
उन्होंने बेचा और बहुतों को उत्तम २ वस्त्र मोल लिये और मंत्री बदरुद्दीन को ढूंढने लगा एक दि-
वस अजब भी अपने कई सेवकों के साथ दमिश्क नगर में गया उस नगर के मनुष्य उसके दि-
व्य स्वरूप को देख अत्यन्त प्रसन्न हुये और उसके वाहन के चारों ओर इकठे हुए अकस्मात् फिर-
ते २ बदरुद्दीन की दुकान पर गये और उस दुकान पर उन्होंने विश्राम किया क्योंकि मनु-
ष्यों के एकत्र होने से घबरा गये थे और वह हलवाई जिसने कि बदरुद्दीन को गोद लेगया
था मरगया था और अपना धन बदरुद्दीन को देगया था और बदरुद्दीन की हलवाइयों में
बड़ी प्रतिष्ठा थी क्योंकि वह मिठाई बनाने में बहुत प्रवीण था बदरुद्दीन ने अपनी दुकान
पर भीड़ देखी और उस समूह में उसकी दृष्टि अजब पर पड़ी देखते ही प्रीति उत्पन्न हुई औ-
र बेबश हो उसे देखने लगा परंतु प्रीति का कारण न जानता था यद्यपि नगर के बासी भीड़ से
प्रीति की दृष्टि से देखते परंतु बदरुद्दीन को अपने रुधिर से उत्पन्न होने के कारण अधिक मो-
ह उपजा यहां तक कि बदरुद्दीन अपनी दुकान के कार्य्य को भूल गया और अजब के निक-
ट जाय नम्रता और विनय पूर्वक कहा आप मेरी दुकान पर आकर कुछ भोजन कीजिये कि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

१
सप्त्र
१८४
१८५

मैंतुमको भलीभांति देखलूं यह कह उसकेनेत्रोंसे अश्रुकी धाराबहनिकली अजबके मन
मेंभी बदरुद्दीनके देखने और उसके साथबातोंकरने से प्रीति उत्पन्नहुई औरबिवशहोय
चाहाकि उसकी दुकान परबैठ उससे बातोंकरे परंतु इसके सेवकोंने कहातुम मेरी सुनहो
तुम्हें उचित नहीं किहलवाईकी दुकानपरबैठ कुछ भोजनकरो बदरुद्दीन ने अजबसे
कहा आप इस अपनेविशील सेवकका कहनान मानिये औरइसकीबातकोन सुनिये
औरउसनेसेवककोंभी बहुतसीविनती की और ऐसा रागगायाकि वह सुनहर्षितहुवा औ
रउसकीबातको मानगया उसरागका अर्थ यह है यद्यपि तुम बाहरसे श्यामहोपरंतु भीत
रसे अतिउज्ज्वलहो औरकहामैंकविहूं तुम्हारी प्रशंसा ऐसीकरूंगा कि तुम संसार
मेंविख्यातहोगे औरबहुतसे गीतउसने हबशियोंकीप्रशंसा मेंकहेजिन्हें वह हबशी
सुन अत्यंत खुशभया और अजबको उसकी दुकान परलेजाकर बैठाया बदरुद्दीन
हसन उसे अपनी दुकानपरबैठा देखहर्षितहुवा औरकहामैं मलाईअच्छी जमाताहूं
मेरी माताके सिवाय जिसनेमुझे सिखायाहै संसारमें मेरे समान कोईनहीं जमासका वि
श्वासहै कितुमउसे खाकरप्रसन्नहोगे मुझसेबहुत दूर२ सेमनुष्यमंगवातेहैं यहकह
उसने कढाईसे मलाई निकाल अनारका अरक और शकरडाल अजबके सन्मुख र

184
&
185

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

खावो अजबउसखाकर वज्ञतप्रसन्नऊवा फिरउससेवककोखिलाई उसनेभी उसभोजनकर
प्रशंसाकी और प्रसन्नऊवा फिरजब वहदोनों भलाईखा चुकेबदरुद्दीन हसनकोबेर बेर
देखता औरमनमें बिचारताकदाचित उसरूपवान्छबियाम कोमतेलागो स्त्रोसजिस्से शोकहो
वियोगऊवा उसे पसास्वेदर पुत्रउत्पन्नहोतायह शोचरोता फिरबदरुद्दीन हसनने अजबसे
संख्यातुम्हारा आना इसनगर दमिश्कमेंकोंकरऊवा अभीऊछ अजबने उत्तरनदियाथा कि
उस सेवक नेकहा बड़ी देरऊई शीघ्रचलो यहसुन अजब उठचला बदरुद्दीन हसनजि
सका अजबके देखने से मननभराथा अपनीदूकान बंदकर उनके पीछे होलिया यहांत
ककि उनके साथ दोड़ताऊवानगरद्वार पर्यंत पऊंचा सेवक उसे साथआतेदेख अत्यन्त
विस्मितऊवा औरक्रोधकर पूछ्यातुकों हमारे साथलगाचला आताहै बदरुद्दीनने ब
हाना करकहा मेरा ऊछ काममैहे इसनिमित्त इधरसेहो कर वहांजाताहूं इसवचनसे उ
ससेवकको बोधनऊवा औरअजबसेकहा इसीवास्ते मैंने तुमको हलवाईकी दूकान परनहीं
बैठने दियाथा अबपश्चात्तापकरताहूं कों मैंनेतुमको बैठनकी आज्ञादीकोंकि मुंह लगा
या हलवाई हमारे पीछे चला आताहै अजबने उसे उत्तरदिया वह अपने कार्यकोजा
ताहै मार्गमें सभीचलतेहैं हमकिसीकोबर्जनहीं सके फिरपीछेन देखकरतुरंतडेरोंको

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सत्र
१८८

और वलेजब निज स्थान पर पहुंचे अजबने फिरके देखा कि हलवाई पीछे उसके लगा
ला आता है डरा ऐसा न हो कि कहीं मेरे नामको विदित हो कि अजबने उसकी दुकान पर
मलाई खाई है तो यह बात उसकी अप्रसन्नता का कारण होगी इसवास्ते उसने एक बड़ासा
पत्थर उठा बदरुद्दीन हसनके माथे पर मारा कि उसका माथा लहूलुहान होगया और फि
रत्वरित अपने सेवक सहित डेरेमें घुसगया सेवकने बदरुद्दीनको समझाबुझाकर फेरा
वह उसी दशामें नगरको लौट आया और अपनेको धिक्कार देने लगा कि मैं अपनी दुकान
छोड़ ऐसोंके पीछे गया था यदि मुझसे ऐसा काम न होता तो कदापि मुझे इस निर्दयता
से न मारता निदान वह अपने गृहमें आया और घावको पट्टी बांधी फिर दुकान पर गया
उसका चचा अर्थात् मंत्री शम्सुद्दीनने तीन दिवस ठहर और २ नगरोंमें अर्थात् हलब
मारदीन मवसल सावेर आदिमें गया और एक नगरमें अपने भतीजेको ढूंढता हु
वा बसरामें पहुंचा और वहांके बादशाहसे भेंटकी बादशाहने उसपर बहुत कृपाक
र आगमनका कारण पूछा शम्सुद्दीन मुहम्मदने विनयकी मैं नूरुद्दीन अपने भ्राता
के पुत्र बदरुद्दीनको ढूंढने आया हूं यदि कुछ आपको उसका वृत्तान्त विदित होतो
मुझे बतलाइये बादशाहने कहा बहुत दिन हुए नूरुद्दीन कालवश हुआ और उसका पु

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

बदरुद्दीन अपने पिताके मरनेकेदो मासपश्चात् यहांसे कहींचला गया उसका अबभी
वृत्तांत मुझे ज्ञात नहीं बहुत ढूंढनेपरभी उसका मुझे अब पता नहीं मिला परन्तु उसकी
माता हमारे मंत्रीकी स्त्री अबतक जीती है शमसुद्दीन मुहम्मदने अपनी भावजसे भेंट क
रने और उसे अपने साथ मिसरमें ले जानेकी आज्ञा ली और इसके दिवस उसका वासस्था
न पूछकर अपनी पुत्री और रनवासे सहित गया वह उस एक बहुत उत्तम गृहमें रहती थी
शमसुद्दीन मुहम्मदने प्रथम उस गृहके द्वार पर जाकर बदरुद्दीन का नाम जो एक पट पर।
स्वर्णहले वर्णोंमें लिखाथा चूमा फिर उसने उन मनुष्योंसे जो उस गृहमें रहते थे अपनी भाव
जको पूछा कि वह कहां है उन्होंने कहा कि वह बहुधा अपनी पतिकी कबर पर रह
ती है और अपने पुत्रके चित्रको कि बहुत दिनसे गुम हो जानेके कारण प्रतिदिन रातो औ
र नाना प्रकारके कष्ट सहती है निदान शमसुद्दीन मुहम्मदने गृहके भीतर प्रवेश करके स
सर्ण वृत्तांत विवाहादिका अपनी भावजसे कहा और अपनी पुत्री और रनवासको दिखाया
वह स्त्री कि बदरुद्दीनके मिलनेसे निराश थी इस वृत्तांत और अपने बहूबेटेके देखनेसे हु
र्षित हुई उससमय उसे बिश्वास हुआ कि मेरा पुत्र जीता है फिर उस अपनी बहू और अजब
को कंठसे लगायाथा और प्यार किया और अजबके रूप और स्वरूपको अपने पुत्रके समान।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
१८०
187

देख अमेत प्रसन्नहुई फिर उसे अपने ह्रिदयसे लगा बदरुद्दीन हसनको स्मर्णकर रुदन करने लगी शमसुद्दीन मुहम्मदने कहाहै सुंदरी यह रोनेका समय नहीं किंतु हर्षकाहै अब तुम इसशोकको अपने मनसे परित्याग कर मेरे साथ मिसरको चलो मैने बादशाह से तुम्हें अपने साथले जानेकी आज्ञा लेलीहै और मुझे परमेश्वरसे परिपूर्ण आशाहै कि बदरुद्दीन हसन तुम्हारा पुत्र अवश्य हमको मिलेगा और मेरी पुत्रीके विवाहका अद्भुत चरित्र इतिहासकी पुस्तकोंमें लिखने के योग्य है उसकी भावज इस वृत्तांतको विस्तार पूर्वक सुनकर प्रसन्न हुई और तुरंत यात्राकी तय्यारी को चलने समय शमसुद्दीन मुहम्मद फिर वहांके बादशाहके पाससे बिदा होने गया बासराके बादशाहने मिसरके नरेश को प्रसन्नताके लिये दिव्य सौगातें और उत्तम २ वस्त्र और परितोषकादि दे उसे बिदा किया शमसुद्दीन मुहम्मद फिर अपने कुटुम्बसहित दमिश्ककी ओर चला और उस नगरमें पहुंच कर नगरके बाहर डेरा किया और बादशाहसे भेंट करनेको वहांकी बहुत अच्छी २ वस्तु लेनेको तीनदिवस ठहरा और बहुमूल्य और उत्तम २ वस्त्र आदिके देखने मेंजो व्यापारी वहांके लातेथे पहलहुआ अजबने अपने नानाको उसकार्य्यमें लगा देख अपने रक्षक सेवकोंसे कहा मुझे नगरमेंले चलो किमैं भलीभांति देखूं और उस हलवाई को जिसे पत्थरसे मा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गया उसका हाल मालूम करूं क्योंकि उस बेर मुझे इतना सावकाश न मिला था कि अच्छे प्रकार देखता वह सेवक स्वीकार कर उसकी माता की आज्ञा लेने उपरांत नगर की ओर गया और फिर दोमशी नामक नगर के दरवाजे से होकर चौक में जहां बजन कौ उत्तम वस्त्र बिकती थी लाया और धीरे २ देखते भालते मध्याह्न समय बदरुद्दीन हसन की दुकान पर पहुंचा और अजब ने बदरुद्दीन हसन को अपने काम में बहुत दाब प्रणाम किया और कहा तुम मुझे पहिचानते हो और क्या तुमको स्मरण है प्रथम भी तुमने मुझे देखा था बदरुद्दीन हसन को अजब के इस वचन सुनने और उस की ओर देखने ही अति प्रीति उमगी और सर्वस सो उसकी दशा हो गई और अजब के कहने सुनने बिना विकल होय (खड़ा) रह गया थोड़ी बेर के पश्चात् नम्रता और बिनय पूर्वक कहा स्वामी अपने सेवक सहित एक बेर फिर मेरी दुकान पर ठहरो और थोड़ी सी मलाई खाओ पश्चात् आप है कि मैंने आपको नहीं देखा न होता मैं आपको अवश्य ठहराता अजब ने कहा यदि तुम पहली बेर की भांति हमारा पीछा न करो तो हम तुम्हारी दुकान पर बैठते हैं और हम कल भी तुम्हारी दुकान पर आवेंगे कि तू जब तक मेरा नाना यहां ठहरा है हम प्रतिदिवस एक बेर तुम्हारे निकट आया करेंगे बदरुद्दीन ने कहा जैसा आप कहते हैं वैसा ही करेंगा तुम्हारी आज्ञा।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

१८८

कोकदापि उल्लंघन नकरेंगा फिरजब अजब अपने सेवकों सहितबैठगया बदरुद्दीनने
मलाईके प्याले उनकेसन्मुख रखवे अजबने बदरुद्दीनकोभी अपनेसाथ बैठायाउन्हों
ने परस्परभली भांति मलाई भोजनकी औरभोजनके उपरांत अजबने प्रीतियुक्त वार्ता
करताकोदकर कहा अपनी प्रीति कदापि प्रगटनकरना औरहमारे यो पीछे जानेकी इच्छा
नकरना बदरुद्दीनने कहामैं आपके कहनेके विपरीतन करूंगा बदरुद्दीनने मलाईन
खाई किंतु अपने अतिउज्ज्वल वस्त्रहाथ पोंछनेके लियेले आया फिर उसने चीनीके पा
त्रमें शरबत बनाई औरकंदके ओले डाल अजबकोदिया औरकहा गुलाबकी शर्बत अ
त्यंतमिष्ट औरस्वादिष्ट है केवल इसनगरमें एकही मेरी दुकानपर बनती है अजब उसेपान
कर अत्यंत हर्षितहुवा फिर बदरुद्दीनने उसके रक्षककोभीदी वहउसे एकही बेरपीगा
या फिर अजब और उसका सेवक बदरुद्दीनकी कृतज्ञताकर अपनेडेरे की ओर चले
और शामसदीनकेडेरेमें पहुंचे अजब और उसका रक्षक अपनीदादीके डेरेमेंगए दा
दीके डेरेमें गएदादीउसे अपने कंठसेलगा रोई औरकहा परमेश्वरमुझे वहदिनदि
खाये किमैं तुम्हारे पिताकोदेखूं औरउसभी अपनेहृदयसेलगाऊं फिरउसकी दा
दी रात्रिके भोजनके हेतु मेजपरबैठी और अजबकोभी अपने साथ बैठाया औरउसे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्थर उदरको बोतें सब्ही और अजब नगरके सेरनमाशे आदिका हतांतजो निजरत्तक
सहित देख आयाथा उससे कहने लगाफिर उसकी दादीने उसखानेको कहा अजबने
नखाया और कहाइस समय मुके जब रुकानहीं फिर उसने एकड्कड़ा मलाईका उसे
और उसके रत्तक कोदिया यद्यपि यह मलाई उसने आपही जमाईथी परंतुवह मेटमें
रखा आयेथे सेवक और अजबने उसकी ओरदृष्टि भीनकी परंतु दादीके कहनेसे उसे
अपने सन्मुख रखलिया उसकी दादीने उसके नखानेसे अपने आश्चर्य किया और क
हा इसउत्तम मलाईको जोमैनेनिजहाथसेबनाई हेक्यों नंहीखाते इसभांति कोमलाई
केवलमैं औरमेरा पुत्र बदरुद्दीनजोतुम्हारा पिताहे और मैनेही उसेबनाना सिखा
याहै संसारभर भरमें कोई नंहीबनासक्ता अजबनेकहा यदिमेरा अपराध क्षमाहोतो
विनयकरूं इसनगरमें एकहलवाई है मैंने उसकी दुकानपरबैठमलाईखाईहै उससे
तुम्हारी मलाई उत्तमनहोगी यहबचनसुन उसकीदादीउस रत्तकसे अपने अप्रसन्नहो
ई और कहाकैसे रेशावानतू मेरेबच्चेको कैसी रक्षाकरताहे उसने हलवाईकी दुकानप
रबैठ भित्तकोंकी भांति भोजन किया शाबानने उत्तर दियाहमकेवल उसकी दुकान प
रखलाने कोबैठेथे हमने जबखाया पिया नंही अजबने उसके विपरीत कहा हम उ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
८९

सको दूकान पर गये थे और मलाई भी खाई यह सुन वह अधिक शावान पर क्रोधित भई
और उसी कोप में शमसुद्दीन मुहम्मद के डेरे में जाकर उसने इस वृत्तान्त को कहा शमसु
द्दीन मुहम्मद अपनी भावज के डेरे में आया और शावान पर अति कोपित हुवा और कहा
का यह सत्य है शावान ने इन्कार किया परंतु अजब ने अपने नाना से कहा हम दोनों ने उस
की दूकान पर बहुत सी मलाई खाई इससे हमें इस समय भोजन करने की इच्छा अपनी दा
दी के साथ न हुई इसके विशेष उस हलवाई ने हमें शरबत भी पिलाई थी शमसुद्दीन मु
हम्मद ने शावान से कहा क्योंरे तू मुझसे असत्य कहता है उसकी दूकान पर नहीं गया न
वहां बैठ कुछ खाया शावान ने फिर भी मंत्री के भय से इन्कार किया और झूठी सौगंद
खाई कि हमने उसकी दूकान पर कुछ नहीं खाया शमसुद्दीन मुहम्मद ने कोपित हो
उसे भली भांति दंड दिया यहां तक दीन शावान मान गया और कहा उस हलवाई की म
लाई अजब की दादी से अधिक स्वादिष्ट थी अजब की दादी ने अप्रसन्न होय कहा तू अस
स कहता है कभी उसकी मलाई मेरी से उत्तम न होगी फिर उसने शावान से कहा मेरे वा
स्ते वही मलाई ला सो वह बदरुद्दीन की दूकान पर गया और उसे कुछ द्रव्य दे कहा
मुझे मलाई दे मेरी स्वामिनी ने मंगवाई है बदरुद्दीन ने उसे एक पात्र में मलाई दे कहा य

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

है मलाई बनाने उत्तम बनी है इसको केवल मैं और मेरी माता बना सके हैं शावानने उसे ला
कर अजबकी दादीको दी वह खाते ही मूर्छित हो गई शमसुद्दीन मुहम्मद इस दशाको
देख अत्यन्त डरित हुवा और उसके मुखपर गुलाब नीर छिड़का जब वह चैतन्य हुई क
हने लगी यह मलाई अवश्य मेरे पुत्र बदरुद्दीनकी बनाई हुई है शमसुद्दीनको जब भ
लीभांति विदित हुआ इसका बनानेवाला बदरुद्दीन हसन है अत्यन्त हर्षित और प्रसन्न हु
वा परन्तु प्रगटमें अपनी भावजसे कहा कि और कोई ऐसा संसार में तुम्हारे पुत्रके सिवाय
नहीं बना सकता उसकी भावजने कहा निस्संदेह इस मलाई को सिवाय बदरुद्दीनके और
किसीने नहीं बनाया मन्त्रीने कहा तनक ठहरो मैं उसे बुलवाता हूं तुम और तुम्हारी वधू
जिन्होंने उसे देखा है पहिचान लेना यदि वही है तो हम उसे तुरन्त अपने साथ लेकर डे
रेमें चलें यह कह शमसुद्दीन मुहम्मद वहांसे अपने डेरेमें आया और पचास सिपाहि
योंको आज्ञा दी तुम एक २ लाठी अपने हाथमें लो और शावानके साथ यहांके बासी हल
वाईकी दुकान पर जाओ जब वहां पहुंचो तो बलसे उसकी दुकान पर धावो उसे तोड़ डालो।
जो वह तुमसे उसका कारण पूछे तो कुछ न कहना किन्तु उससे पूछना तैनेही यह मलाई
बनाई है जो शावान ले गया है और तुरन्त उसे बांधके बाहिर निकाल ले आना परन्तु उसे न मा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सभ्र
१९०

रना और न किसी भांति का दुःख देना अंततः जो आदेश न करो कह यथावत सिपाही मंत्री की आज्ञा
नुसार शाबान के साथ बदरुद्दीन की दुकान पर गए और सम्पूर्ण भाजन जो इसकी दुकान
पर रक्खे थे तोड़फोड़ चूर्ण कर दिये और मिठाई आदि फेंक फांक दी बदरुद्दीन इस दशा
को देख अत्यंत उद्विग्न हुआ और नम्रता पूर्वक उनसे पूछा भाइयो मैंने कौनसा तुम्हारा अ
पराध किया जिससे मुझे दंड देते हो उन्होंने कहा वह मलाई जो तुमने शाबान के हाथ बे
ची थी तुम्हीं ने बनाई है वा नहीं बदरुद्दीन ने कहा हां मैंने उसे अपने हाथ बनाई थी और मैं
प्रतिज्ञा करता हूं इस नगर में सिवाय मेरे और कोई वैसी नहीं बना सकता इस वचन के सुनते
उन्होंने चारों ओर से उसे घेर लिया और उसकी पगड़ी से उसके हाथ पांव बांध लिये बाजा
रके मनुष्य यह दशा देख इकट्ठे हुए और चाहा कि शमसुद्दीन मुहम्मद के सेवकों से ब
दरुद्दीन को छीन लें परंतु अशक्य थे निदान मंत्री के डेरे में ले गए शमसुद्दीन उस समय द
मिश्क के बादशाह के सन्मुख गया था कि उसे विदित करे जिसकी ढूंढ में मैं निकला था
उसे मैंने पाया परंतु थानेदारों को आज्ञा हो कि मेरे काम में कोई बाधक न हो किंतु यथोचि
त मेरी सहायता करें जब शमसुद्दीन अपने डेरे में आया सिपाहियों ने बदरुद्दीन को मंत्री
के सन्मुख ला खड़ा किया बदरुद्दीन ने रो के मंत्री से पूछा स्वामी मैंने आपका कौनसा अ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पराधकिया जिससे मेरी दुकान आपने लूटगई औरतुफे इस अपराधमें और दुर्गनसे पकड़वु
लगवा मंत्रीने उत्तरदिया तूवहीहै जिसने अपने हाथसे मलाईबना करमेरे सेवकके हाथ
बेची बदरुद्दीन हसनने कहानिसंदेहमें वही तेरा अपराधहै इसवास्ते मैनेतुफेपकड़वाय
भूलगया अभीतुफेउचितदंडनहीमिला इससे अधिक तुफे दंडदूंगाकितूतेरे प्राणलूंगा तूने
ऐसीबुरी मलाई मेरेवास्तेभेजी बदरुद्दीननेकहाजोकोईबुरी मलाईजमावे वह अपराधीहो
ताहै मंत्रीनेकहानिसंदेहसो इसपरयही वार्ताहो रहीथी उसकीमाता औरस्त्री अपनेडेरा
मेंसे उसेदेखपहिचानकरमूर्छितहोगई जबसावधानहुईतब उन्होंने दौड़कर बदरुद्दी
नसेलिपटनाचाहा परंतु प्रथमसे शमसुद्दीनने उनसे यह प्रणकियाथा जबतकमैंनक
हूं तुम उसकेनिकलनेजाना नउसको अपना दर्शनदेना निदानवहस्त्रियां संतोषकरबैठ
रही मंत्री उसीदिन तैयारी करभोरकोवहांसे मिसरकी ओरचला और बदरुद्दीनको
संदूकमें बंदकरऊंटपरलाद अपनेहाथले चलासंध्याको उसेनिकालने औरफिरउसेब
दकररखने इसीभांति मंत्री नगरकेनिकटपहुंच एकस्थानपर उतरा औरउसे अपनेसन्मु
खनिकलवाकर बैठाया औरउसके सन्मुख एकबढ़ईको आज्ञादी एकलकड़ी सलीकी
तैयारकरे बदरुद्दीनने मंत्रीसे पूछा यह किसकेनिमित्त सलीबनतीहै मंत्रीने उत्तरदे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स॰ प्रे॰
१९१

या कलरात्रिको नगरमेंप्रवेश करूंगा और तबके इसकाहपरबैठाय संपूर्ण नगरमें फि
राऊंगा औरतेरे आगे एकमनुष्य यहहैजो पीटताजावेगाकि यह उसमनुष्यकादंडहै
जोमलाईमें कालीमिरचन डाले बदरुद्दीनयह वचनसुन रोनेलगा औरकहा हमें का
ल इस उद्देशासेमलाईमें काली मिरचके नडालनेके कारण माराजाऊंगा इतनाकहम
लकाशाहरजादने शहरयारसे कहा खलीफाहारूं रशीद यद्यपि गंभीरथा मंत्रीजाफ
रसे यह वृत्तांतसुन ठट्टामारहंसा बदरुद्दीन हसनने कहाहेपरमेश्वरकहीं ऐसाभी होता
है औरकिसीनेसुनाहै कोई मनुष्य इतने अपराधकेकारण लूटलिया जावे औरपकड़
करसूली दियाजावे इतना अन्यायकेवल इतनेही अपराधसे किमलाई मेंकाली मिरच
को नडाली मुसल्मानोंकेन्यायके विरुद्धहै इसीभांतिकी बातेंकर रुदनकरता औरक
हता ऐसीमलाई बनाने परधिक्कारहै इससे मैं संसारमें उत्पन्ननहोता इसी समयपरमे
श्वर ऐसाकरे किमें मरजाऊं किऐसी अप्रतिष्ठाके मरनेसे छूटूं यह विचारकर बदरु
धीमरोताथा इतनेमें लकड़ीबनके मंत्रीके सन्मुख लाईगई औरउसके शिरपरलाहेकी
सलाखखड़ीकीगई जिसेदेख बदरुद्दीन हसनबहुत घबराया औरकहने लगा नतोमैंने
किसीकी चोरीकीन किसीको मारा औरनकुछ अपने धर्मसे विपरीतनाकी केवल इत

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नीहो वातकेवास्ते किमैंने मलाईमें कालीमिरचनअली मुझे डालीदेंगे फिरजबसंध्याहु
ई मंत्री शमसुद्दीनने आज्ञाकी किइसे उसीसंदूकमें बंदकरो औरउसको और दाविकहान्
आज राजिको इसीमें रहेगा कलमें तुझेनगरमें लेजाय कथकरूंगा सोउसे संदूकमेंबंद
किया औरउसोऊंट परचढाया औरमंत्री अपने बाहन परचढा और आज्ञादीकि इसऊंट
को मेरे आगेले. चलोसोवह बड़ी धूम धामसे केहमें पहुंचा और अपने शहरमेंप्रवेश क
र आज्ञादी इस संदूकको उतारो परंतुनखोलना जब सब असबाब उतारागया मंत्रीने अ
पनी पुत्रिको एकांतमेंले जायकहा परमेश्वरका धन्यवादहै तुम्हारापतिमिला आजतु
मउसीभांति अपने शयनकामकानअलंकृत करोजैसा किविवाहकेदिन सजाहुवा
था और प्रमकवस्तुको उसीमकानमें उसीभांति रक्खोजिसप्रकार उसरात्रिकोरक्खी
गईथी जोकुछ तुम्हें भूला होगामैं तुम्हें स्मरण कराऊंगा निदान उस मंत्रीकी पुत्रीने अ
पने पिताकी आज्ञा पालनकी औरप्रमेक वस्तुको उसी स्थानपर रक्खा उसीभांति सिं
हासन बिछाया गया और मोमकीबत्तियां प्रज्वलित कीगई जब वह मकानसर्व की
भांति अलंकृतहुवा शमसुद्दीन मुहम्मदने आपवहां जाय बदरुद्दीनके वस्त्रजिसे व
ह विवाहकी रैनको पहिनेथा उसी द्रव्यकी थैली सहित रक्खाजैसा किबदरुद्दीन रख

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कर अपनीस्त्रीके साथ सोयाथा तदनंतर मंत्रीने अपनी पुत्रीसे कहाकि रात्रिके चौथेपहि
र और उसीदिनके समान पाठ्यास्य रह जब बदरुद्दीन हसन इसमकानमें आवे और त
फे जगावेतउसके आनेका आश्चर्य नकरना किन्तु अपने समीप उसे सुलाना और भोरको
जो कुछ परस्पर वार्ता हो अपनी सास और मुझसे कहना इतनेमें भोरहुआ मलकाशह
रजाद इसकथाको यहीतक छोड़ चुपहोरही फिरजब रात्रिहुई बादशाहको इस क
थाकी लालसासे रात्रिभर निद्रा न आई और नियमित समयपिछिले पहर आयमलका
को जगाया और कहा उसचरित्रकी समाप्तिमें काहुवा मलकाने इसभांति वर्णन किया मं
त्री शमसुद्दीनने आज्ञादी कि केवल इसमकानमें दो वा तीन बांदियां रहें जब रातहुई और
अनुमान प्रहररात्रिके व्यतीतहुई मंत्रीने बदरुद्दीन हसनको संदूक सहित उस मका
नके समीप भिजवाया और संदूकसे निकाल सिरजई आदिक वस्त्र पहिनाये और मका
नके भीतर छोड़ बाहरसे बंदकरनेकी आज्ञादी बदरुद्दीन हसन शोकके कारण ऐसा
अचेत सोयाथा कि मंत्रीके सेवकोंने उसे संदूकसे निकाल नग्नकिया और उसमकानमें
ले गये तदनंतर जब वह मकानमें पहुंचकर जगा उसने अपनेको एकांत उसकोठेमें
पाया और अपने चारों ओर विवाहकी सामग्री देख अपने विवाहको रैनस्मरणकर औरप

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ठिकाना यह वही मकान उसी स्त्रीका है जिसमें मैंने बादशाहके उत्तम अश्वपालकको
देखाथा अत्यंत आश्चर्यमें हुआ और उसके भीतर अपने बसन देखेकि उसीभांति रक्खे
हैं ऐसेवह अधिक विस्मित हुवा कहने लगा है परमेश्वर यह क्या बातहै क्या मैं स्वप्न
अवस्थामें देखताहूं वा जाग्रतमें इतनेमें उसकी स्त्रीने मसहरीसे शिर निकाल और मु
ख बदरुद्दीन हसन की ओरकर बड़े प्यारसे कहा है मेरे प्रिय पीतम तुम किवाड़ पर
खड़े क्या करतेहो शय्यापर आय आनंद करो जब मैंने जगकर तुम्हें शय्यापर न पाया
अत्यंत आश्चर्यमें हुई और चिरकाल पर्यंत जागती औ तुम्हारे आगमनकी बाट देख
तीरही बदरुद्दीन इस बचनको सुन अत्यंत हर्षित हुवा वह शोक और भयजो उसके म
नमें आन हुवाथा भूल गया और उसके मुखका वर्ण बदल गया और उस स्त्रीको वैसा
ही रूपवान मनहरण पाया जैसा कि विवाह की रात्रिको देखाथा फिर मकानके भीतर
गया और मनमें शोचने लगा कैसा कर दशवर्षकी अवधि एक रात्रिमें बीती तदनंतर उसी
स्थानपर गया जहां उसके वसन और रुपयोंकी थैली रक्खीथी उसे वहीं और उसीभांति रक्खा भा
वा हुवा पाया कि तनक अंतर नहीं बड़े शाहसे कहने लगा हे परमेश्वर यह क्या बातहै
जिसमें तो मैं कुछ समझ सका और न बिचार सकाहूं उसके सुंदरीने दूसरीबेर कहा है प

सप्र
१९२
193

नि शय्यापर आके शयनकरो देरका शोचतेहो इसवचनकोसुन शय्याके समीपखे
ड़ाहुवा औरकहा सुंदरी सत्यकहो मुझेतुमसे बिछुड़े कितना समयांतरहुवा होगा उ
सनेकहा मुझेतुम्हारे इस प्रश्नसे अत्यंत आश्चर्य हुवा अभीतो तुमसोते हुए शय्याप
से उठेबदरुद्दीन हसनने कहा तुमक्या कहतीहो हां यह सच है कि एकनिशामें तुम्हारे
साथसोया परंतु इसेदशवर्षका समयांतरहुवा औरतबसे मैंदमिश्कमेंथा हुकुमनहोगे
ना जानायहवही रैनहै जिसको मेरा विवाह तुम्हारे साथहुवानहीं जोवंही रातहै तो द
शवर्ष पर्यंत मैंक्यों तुमसेबिछुड़ा रहा अबतुममुझेबतावो मैंकौनसी बातकोसत्य जानूं
बादसवर्षके वियोगकोस्वप्न समझूं वा इसबातको उसकी पत्नीने उत्तर दियाक्यातुमवा
विक्षिप्तहोगए होकितुम यह कहतेहो किमैंदमिश्कमेंथा बदरुद्दीन इसवचनको
सुन हंसा औरकहा यह बड़ी हंसी कीबातहै क्योंकिदमिश्कके द्वारपरयही वसन पहि
नपड़ाथा औरवहांके वासी मुझेदेख हंसते और ठट्ठामारते यहांतक किमैं वहांसेभा
गा औरएकहलवाईकी दुकानपरजाछिपा उसने मुझेगोदबेठाया और अपनाजाति
कार्य सिखाया और अंतसमय मुझे अपनाधन सौंपा सोमैं उसी दुकानपर बैठ दश वर्ष
पर्यंतकालक्षेपकरतारहा एक मंत्रीकहींसे उसनगरमेंआया उसका पुत्र अत्यंत सुं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दर स्वरूपवानथा जिसके देखनेसमुझकेप्रीति उसमेंहुई एकदिन वह अपने सेवकसहि
त मेरी दूकानपर आया और मलाईलिवेंही बैठखाई जबवह अपने पिताके डेरेमेंगया
तब उसमेंजोनेवालकके रक्तकेसेथोड़ीसी मलाईमेरी दूकानसे मंगवाई फिरमुझे एक
रुवा मंगाया औरकालीमिरचकेनडलने सेमेरी दूकान लुटगई और मुझे संदूकमेंबं
दकिया औरदमिश्कसे ऊंटपररखके अपने शहरमेंलायातदनंतर मुझसे कहा तुकलफां
सीदिया जावेगा यहवचनसुन शोकयुक्त होय संदूकमें बेसुधसोगया जबजगा अप
नेको तुम्हारे निकटपाया यहसुन उसकी स्त्रीनेकहा जानपड़ताहै तुमने कोई बड़ा
अपराधकिया होगा जिससेतुमपर यह आपत्ति पड़ी और यहकठिन दंडबिचारा गयाब
दरुद्दीनने कहा सुंदरी मैंने कोईऐसा अपराधनहीं किया यह दंडकेवल इतनेहीके
लिये मेरेवास्ते बिचारा गयाथा कि मैंने कालीमिरच बिनाकी मलाई जमाई और बेवी
वहसुंदरी इसबातको सुनकर हंसी औरकहने लगी नहीं तुमने कोई औरबड़ा अ
पराधकियाहोगा बदरुद्दीननेकहा औरतो कोईभीनहींकेवल इसीसे मेरीदूकानको स
बवस्तु नष्टकी औरमुझको बांधकरके संदूकमेंबंदकिया जिसमें मैं दिनरात रहताथाक
लमुझे बाहर निकाल मेरेसमाचार बज़ीर को आज्ञादीकि सूलीकीलकड़ी बनाओर उ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
१९४

196

सफरलोहेकी सहायतलगाकर शीघ्रलायरंउ परमेश्वर कायमबादहे वह सबबातें सम
र्थी बादशाह शहरयार इसकथाकोसुन बहुतहँसा औरकहा यहइमांन अत्यंत अद्भु
तहै औरमुझे बिस्वासहैकि शमसद्दीन मुहम्मद और उसकी भ्रातपत्नीकल्के दिन
बदरुद्दीनकी यहवार्ता सुन अत्यंत हर्षितहोंगे दूसरे दिनमहाका शहरजादने रात्रिके
अन्तमें बादशाह शहरयारसे कहा स्वामीउसरात्रिको बदरुद्दीन इसी भ्रममें रहा मैं सम
मे अपनीस्त्रीके समीपहूंवा जाग्रत अवस्थामें कभी शय्यासेउठ मकानकेचारों ओर घूम
ता औरसबवस्तुको पहिचान कहता यह मकानवहीहै जिसमें मेराविवाहहुवाथा औ
रयहवही स्त्रीहै जिससे बादशाहने उसकुरूप कुबड़ेके साथविवाह किया
राया अबमैं उसकेसाथ सोताहूं वहइसी विचारमेंथा भोरहोनेही मंत्री शमसुद्दीन
ने आकर तालीबजाई औरभीतर जाय प्रणामकिया बदरुद्दीन हसनने मंत्रीको पहि
चान्कहा आपहीने मेरेवास्ते स्लीबनानेकी आज्ञादी जिसके भयसेमैं अबतककां
पताहूं औरकेवल इतनेही अपराधकेलियेकि मैंने मलाईमें कालीमिरच नहीं डा
ली वह दंड मेरेनिमित नियत किया मंत्रीने मुसकराय उत्तर दिया मैंनेहीतेरा विवा
ह अपनी पुत्रीके साथ जिसका विवाह बादशाहने एककुबड़ेके साथ विचाराथा कि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तू मेरा भतीजा है नदनंतर उसपत्रको जो नूरुद्दीनके हाथसे लिखाया उसको दिखाया
कि केवल नेरे हूढनेको मैंके इसे बास्मा और दमिश्क को गया मसीन बदरुद्दीनको ह्य
टयसे लगाय प्यारकिया औरकहा यहसबबातें जो मैने तुमसे कीहैं क्षमाकरो इनबातो
से मेरायह प्रयोजनथा तुमको इस उपायसे कुशल पूर्वक अपने घरमें लाकरतुम्हारेप
रिवारसे मिलाऊंजो यह उपायनकरता तोसंभवथा इसदुखमें तुम्हारे शरीरमें किसी भांतिका
डाखपहुंचेवा आनंद ममहोजावे इसीहेतुतुम्हे इसभयमें मैंनेरक्खा अबतुम अपने वस्त्र
पहिनो किमैं तुम्हारी माताको कि तुमसे बिछुड़ने केकारणडाखित और अधीरहोर
हीहै भेटकराऊं औरतुम्हारे पुत्रको जिसे तुमने दमिश्कमें अपनी दुकानपरबड़ी प्रीतिसे
मलाई खिलाईथी लाऊं औरजो बदरुद्दीन और उसकी मातासे भेट करने मेंहर्षउपजाथा
सो अलिखितहै निदान उसकी माताउसकेकंठ लगबहुत रोईजो कुछ आपति औरकष्ट
उसके बिछुड़नेमें उसपरपड़ीथी अपनेपुत्रबदरुद्दीन से कह सुनाये औरएक औरा
से उसका पुत्रउसकी छातीसे लिपटगाया और बदरुद्दीन हसनने उसे पहिचान कहाय
ह वहबालकहै जिसे मैने दमिश्कमें देखाथा और इसकीसूरत के अमत प्रीति उपजी थी
फिरकंठ सेलगा बहुत प्यारकिया और शमसुद्दीन मंत्रीउन्हें वहीं छोड़ बादशाह के

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स॰च्र सन्मुख गया और अपनी यात्राका वृत्तांत विस्तार पूर्वक वर्णन किया बादशाह इसवृत्तांत
१९५ 795 को सुनकर हर्षित हुवा और आज्ञाकी कियह सब कथा हमारी पुस्तकों में लिखी जा
वै तदनंतर मंत्रीने बादशाहसे बिदाहोई हर्ष पूर्वक सकुटुंब नानाप्रकारके व्यंजन और
पाक भोजन कियेवह दिवसतो बड़ी प्रसन्नतामें कटा जाफर मंत्रीने इस कथाको समाप्तक
र बादशाह हारूंरशीदसे बिनयकी आप हवशीरेहोकाभी अपराध क्षमाकीजिये बादशा
ह उसका अपराध क्षमाकर उसमनुष्यको जिसनेधोखेसे अपनी स्त्रीको माराथा थोथेदे प
क अपनेबांदोके साथ विवाहकर दिया औरबहुत साधन पारितोषकादि देकर उसका मा
सिक नियत कियाथा वहउस बादशाह दीन पोषक पालनपालकीदयासे जन्मभर आ
नंद मेंरहा मलकाशहरजादने बादशाहसे बिनयकी स्वामी दिन निकल आया यदि
प्राणदान होंगेतो मैं इससे उत्तम कथा कलकी रात्रिको कहूंगी बादशाह सुलतानका
ऊब्ब उत्तरनदेशथ्यासे उठ अपनी सभामें जाय राज्यके प्रबंधादि कार्य्यमें लगा पर
न्तु मनमें शोचा उसने मुझसे प्रण किया है किकल इससे उत्तम वृत्तांत सुनाऊंगी इ
ससे उसेबध न किया चाहिये और उस कथा को भी सुनना चाहिये ॥ इति श्रीका
श्मीरि पंडितधारेलाल भाषाकृते सहस्र रजनीचरित्रे प्रथमोभागः समाप्तः ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दोहा श्रीईश्वरकी कृपाते प्रथमभाग अभिरामसहस्र रजनिवर चरित यह उल्थाकियो
सुनाम सहस्र रजनि वर चरित यह ३ सबकेप्यारेमननकी प्यारी करन बिचारि प्यारे
लाल सुभाग यह भाषाकियो सुधारि अति बिचित्र मनहरणयह पढे सुनै जाकोयल
है मुदित आनंद अति बुद्धि वनवरहोय स्क २ पदसानंदमयशशि प्रकाशसुत सोय
वर प्रवीणता देन अति पढिहैं सुनिहैं जोय ॥ संवत्सर १९ ४५ लेखिते पण्डित
लेखारे रुसमे चंद्रकोल ज्यो॰ ॥ शुभम् शुभम् ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

[illegible]

१९८

198

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
१

ॐश्रीगणेशायनमः सहस्त्ररजनीचरित्रद्वितीयभागप्रारंभः सोरठा नमोनमोगणदेव
लंबोदरदुखबिथमवरनहि सिद्धिकोदेवममइच्छापूरणकियो श्रीईश्वरकीकृपा
नेहजोभागप्रदंदकरतसुपारेलालहैंवेदिगोविंदकाशगरीस्तचीकार औरबाद
शाहकेसवकऊबड़ेकाचरित्र दूसरेदिनरानीशाहरजादनेबादशाहशाहरयारसे रात्रि
के अंतमें आज्ञालेकरअपनीछोटीवहिनडनियाज्मादकीइच्छानुसार इसकथाकोइस
भांतिकहना आरंभकिया सर्वकालमेंएककाशगरकास्तचीकारजोनानादेशोकेसा
मोपहे अपनीदुकानपरबैठकरवस्त्रसियाकरताथा एकदिनसंध्याकोसीरहाथादेव
योगसेएककुबड़ाजतवलालिये आया औरदुकानकेनीचेवैठकरमीटेस्वरोंसेगान
करनेलगावहस्तचीकार उसकागानासुनप्रसन्नहुवा जबउसकेघरजानेकासमय
आया उसनेकुबड़ेसेकहाजोतुम्हारामनचाहेतोमेराघरजोयहांसे अतिसमीपहै
चलकरगाओबजाओ वहप्रसन्नहोकरउसकेसाथउसकेघरगया जबस्तचीकारसु
खहाथधोबैठा अपनीस्त्रीसेजोअत्यंतरूपवतीथी औरउसेबहुतप्यारकियाकरताथा
कहनेलगा आजमैंतुम्हेंगानासुनानेकेलियेइस मनुष्यकोलायाहूं भोजनजोबना
होतोलाउसकीपत्नीनेनानाप्रकारकेस्वादिष्टभोजनलाआगे रक्खे औरवहस्त्रीपुरु

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

छपरखारबैठरखानेलगे औरउसऊबड़ेकोभीसाथबैठाया उसदिनस्त्रीकारकेघरमछ
लीबनीथीसोमछलीऊबड़ेकोखानेकेलियेदी ऊबड़ाकांटेनिकालनेबिनाखागया
एककांटाउसकेकंठमेंऐसाचुभाजिससेवह अमनदुःखितऊआ औरउसकास्वासरुक
गयाउसस्त्रीकार औरउसकीस्त्रीनेवऊतसेउपायकियेपरंतुउपयोगीनऊए इससे
वहस्त्रीकार अंतभयभीतऊआ औरघबरायाजो इसनगरकेकोतवालकोविदित
होगातोइसहिंसाकेबदले आपत्तिमेंपडूंगा अवश्यहै किप्रथमहीसे इसकाउपायक
रेयहसोचउसऊबड़ेकोयरूदी वैद्यकेसमीपलेगयावैद्यकाद्वारभिड़ाथाऊबड़ेको
लिटासीढ़ीकेऊपरचढ़गया औरकिवाड़परतालीबजाई वैद्यकी अनुचरीयहसुन
निकलीस्त्रीकारनेपांचरुपयेउसेदेकहातुरंत अपनेस्वामीसेकहरोगीकोचाक देखे
औउसकाउपायकरे जबवादीवैद्यकोजोवालाखानेपररहताथाकहनेगईस्त्रीकारऊ
बड़ेको मृतकसमऊपरलेगया औरकिवाड़केसहारेखड़ाकर आपचुपकेचलदिया
वैद्ययहवांदीसेसुनविरागबिनालोभसे किवाड़कीओरदोड़ाऊंडी खोलवाहताथाकि
नीचेउतरेऔररोगीकोदेखेकिवाड़खोलतेही वहऊबड़ासीढ़ीसेलुढ़कनाऊआनीचेआ
पड़ावैद्य अंधेरेमेंयाहसुन विस्मितऊआकि यहक्यावस्तुथीजोकिवाड़सेनीचेगिरप

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्वि

ऊं फिर जब विराग भगवानी चे उतरा ऊबडे को पुत्र वा देख रुदन करने लगा यह समफ कर कि
२ यह पुत्र जिसे मैं परमेश्वर को समर्पण कर अपराध क्षमा कराने लगा तदनंतर यह शोचा जो कोई
वाट चलनेवाला इस गली में से चले और इस लोथ को मेरे हम पर देखि तो वह बादशाह से जा
य कहेगा और मैं बडे दुःख में पडूंगा इससे उत्तम यह है कि इस लोथ को शीघ्र यहां से उठाऊं
निदान वह वैश्य उसे घर के भीतर ले गया और स्त्री पुरुष परस्पर संमत कर अपना पीछा छुडा
नेके लिये उस लोथ के हाथ पावों को रस्सी से कस एक मुसल्मान के शहर में जो पिछवाड़े र
हता था डाल दिया वह यमन बादशाह का मोदी था अपने शहर में बहुत साहन अन्न आदि सं
चित रक्खा करता और रहे चारों ओर से उसके शहर में एक छेद होय उसकी वस्तु खोजाते अक
स्मात् वह मोदी अर्धरात्रि को जब अपने शहर में आया लालटेन के प्रकाश से ऊबडे को ब
खारी में खड़ा देख चोर समझा और कहने लगा तूही मेरी वस्तु चुराया करता है मैं अब त
क धोखे में था कि तू है खोजा था करते हैं और उसे मारने लगा दो वार लाठी के पड़ने से व
ह लोथ पृथ्वी पर गिर पडी मोदी ने निकट जाय उसे मृतक देखा इससे वह लज्जा को प्राप्त
हुवा और मन में कहने लगा तैंने बडा अनर्थ किया कि चोर को बध किया भोर को तू अव
श्य इसके पलटे मारा जावेगा कदाचित मेरी संपूर्ण वस्तु नष्ट होजाती तो ऐसा बडा भारी पाप

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नकरताइसीसोचविचारमेंमूर्छितहोगयाजबउकुसुधिहुई अपनीस्त्रीकेदेहान्तउसे अ
पनेकंधेपररखबाजारमेंगया और अंधियारेमेंएकहकानसेलगाकरखड़ाकिया और
अपनेशहरमेंआयसोरहाकुछकालकेपश्चात्एकसौदागर फरंगीबादशाहकेहारोंका
दारोगाकिसीव्यभिचारिणीस्त्रीके शहरसेनिकलनहानेकोस्नानागारमेंजानेलगाबाजा
रमेंउसीहकानकेसमीपजिसमेंवहलोथखड़ीथी पहुंच अंधियारेमेंऐसापासहोक
रचला उसकोपीठिसेऊबड़ेकाधमीरलगगया फरंगीउसेचोरसमझकरलातमुक्कीमार चोर २
करपुकारारौंदकेसिपाहीचोरकाशब्दसुनदौड़े आये उन्होंने यहदेखकरकिएकफ
रंगीमुसल्मानकोमारताहै उसेकहातूकोंमारताहै फरंगीनेउत्तरदिया यहचोरहै
चाहताथाकिमेरागलादबावे निदानएकसिपाहीनेफरंगीकाहाथएकऊबड़ेसेअ
लगकिया औरचाहाकिउसकोपृथ्वीसे उठावेहाथलगातेहीउसेमुवापायारौंदके सि
पाही उसफिरंगीकोएकउनगरकेकोतवालकेनिकटलेगयेओरकोकोतवाल फरं
गीकोलोथसमेतन्यायाधीशकेनिकटलेगयान्यायाधीशउनसे वृत्तान्तसमझ अपराधी
कोअमनक साहितबादशाहकेसन्मुखलेजायविनयकी इसफरंगीने इसचोरसमझ
करनामाराकिवहमरगयाबादशाहने आज्ञाकीहमारेधर्मशास्त्रकीआज्ञाकेअनु

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
२

कुलत्वयथोचितदंडठहरायमायाधीशने आज्ञादी इसेचोराहेपरलेजायफांसीदोयह आ
ज्ञापातेहीफांसीकीलकडी चोराहेमेंखडीकीगई औरसंपूर्णनगरमेंढिंढोरापिटा कि
एकऊबडेकेबदलेफरंगीफांसीदियाजाताहै जिसेदेखनाहोसोआयदेखे जबअपराधी
कोवधिकनेचाहाकिउसकेगलेमें रस्सीडालखिंचे इतनेमेंबादशाहकामोदी इसहतांत
कोसुनदौडा औरभीडकोहटाउसस्थानपरपहुंचा औरबडेशाहसे कहाहेबधिकउस
ऊबडेकाहिंसकमैंहूं यहमनुष्यनहींजिसेतुममाराचाहताहै इसनेकछुअपराधना
हीं किया औरमैंनहींचाहताकिदूसरा अपराधमुक्तपरहोयहएकअपराधकाथोडा
है औरसंपूर्णहतांतमायाधीशकेसन्मुखकहसुनाया मायाधीशनेबधिकसे कहा
इसकोछोडकरइसमोदीकोफांसीदेबधिकनेउसेछोडमोदीकेगलेमेंरस्सीबांधचाह
ताथाकिखेंचे अकस्मात यहूदीवैद्यकाशब्दसुनपडाकिकहताहै हेबधिकठहर इ
सेबधनकरमैंनेउसऊबडेकोमाराहै फिरउसवैद्यनेभीरात्रिकासंपूर्णचरित्रमायाधी
शकेसन्मुखवर्णनकियाकिइसऊबडेको औषधिके अर्थलायेथेवहवाहरकी औरकि
वाडकेलगाबैठाथाज्योंही मैंनेकिवाडखोलासोंहीवहसीढीसेलुढककरनीचेगि
रा औरमरगयाइसकामारनेवालामैंहूंमोदीनहीं मायाधीशनेबधिकसेकहामोदी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कोमनुइसवैद्यकोफांसीदेवधिकनेरस्सीउसकेगलेसेबांधी औरखेंचनेकीइच्छाकी इतनेमें
सूचीकारनेवहांपहुंचवधिकसेकहाइसकुबड़ेकाहिंसकमैंहूंवैद्यनिर्दोषहै यहकुबड़ा
गानेबजानेकेलियेमेरेघरआयामैंनेउसेमछलीखानेकोदीएककांटाउसकेकण्ठमेंचुभ
गयामैंउसे औषधिकेनिमित्तइसवैद्यकेटहलेगयापरन्तुमें उसेमुआपायाकुबड़ादावउसे
उसकेकिवाड़सेखोजकरछोड आयावास्तवमें इसेमैंनेहीमाराहै यहवैद्यनिष्कपटनि
र्दोषहैन्यायाधीशऔरराजामोदी औरवैद्यऔरसूचीकारकावचनसुन अचंभित आश्च
र्यमेंहुये निदानन्यायाधीशनेकुबड़ेकोवधिकसेकहाउसकेबदले इससूचीकारको
जोअपनेमुखसेहिंसककहरहाहैफांसीदेएकमनुष्यकोउसहिंसाकेबदले वधकर
नाअवश्यहैवधिकचाहतायाकिसूचीकारकोफांसीदे इतनेमेंबादशाहकापहि
गवहां आया औरन्यायाधीशकोसाथ औरसूचीकार आदिसहितबादशाहकेनिक
टलेगया इसकाकारणयहथा किवहकुबड़ामुख्यबादशाहकामसखराथाप्रति
दिवसबादशाहकेनिकटजायकर अपनेहास्यसेबादशाहकोप्रसन्नकरताउसदिनबा
दशाहने उसेनपाकरपूछाकाकारणहै अभीतकवहकुबड़ानहीआयाउसकेसेव
कोंनेविनयकीमहाराजकलसायंकालकोमदिरापानकरनगरकीओरगयाभोरको

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्दि
४

उसकोलोथदेखीमायाथीशनेउसकेहिंसककोकिकोईफरंगीथा फांसीकीआज्ञादीबध
करनेकेसमयदूसरेमनुष्यने अपनेकोअपराधीठहराया इसीभांतितीसराचौथामनुष्यआ
याओरउसकेमारनेका झगराकियाअबअन्यमायाथीशनेचौथेमनुष्यकेफांसीदेनेकी
आज्ञाकीहै अबवहवधकियाजाताहैबादशाहनेइसअद्भुतवृत्तांतकोसुनआज्ञाकीतु
रंतजावोओरमायाथीशकोकहोउनचारोंमनुष्योंकोलोथसहितलावेकिउसदीनकुबेउ
को अंतसमयदेखलेंनिदानमायाथीशनेउनसबकोलाकरबादशाहकेसन्मुखकिया
ओरचारोंकेवृत्तांतभीविस्तारपूर्वकप्रगटकियेबादशाहनेइसवृत्तांतकोलिखवाकरउ
नचारोंमनुष्योंसेकहातुमनेइसवृत्तांतसेअधिकउत्तमकथासुनीहोवादेखीहोतोमेरेस
न्मुखप्रगटकरोयदिइससेअद्भुतनहोगीतो तुम्हेंमैंछोडदूंगानहींतोतुमचारोंकोवारदन
माडूंगासबसेप्रथमफरंगीनेप्रणामकरविनयकीमैंइससेउत्तमकथाजानताहूं य
दिप्राणदानहोतोवर्णनकरूंबादशाहनेस्वीकारकिया फरंगीकेमुखसेकाशागरके
बादशाहकेसन्मुखवर्णनकथा ब्योपारीनेउसवृत्तांतकेप्रथमविनयकीयहसेवक
मिसरदेशांतर्गतकैरेका वासीहैमेरापितादल्लालीकर्मकरताथा इसीजीविकामेंउस
नेबहुतधनसंचितकियाजबकालवशहुआबहुतसीवस्तुद्रव्यमुझेमिलीतदनंतरमैंने

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वही जीविकाकीएकदिन अन्नवेचनेवालोंकेवाजारमेंजहांवज़नसेव्योपारीएकहेहोकरव्य
वहारकरतेथेनायाथाएकमनुष्यप्रतिदिनउनमें २ वस्त्रपहिनेहुएउसमंडीमें आया और
मुझसेभेंटकरतिलकानमूनामुझे दिखायाओरएक्का ऐसेतिलकितनेमनविकतेहैंमैंउसमें
लीभांति देखबोला इसकामूल्यएकमनपांचमुद्राहैउसमनुष्यनेकहाजोकोई इसकामू
ल्यमैंनेबोलाहोउसोमेरे समीपएकमनहैदरवाजेकेनिकट अमुकसरायमेंलेआना इससत्य
परसबकासबविकवादेनामैं अपनेरहनेजायदेरेआनेकीवाटदेखनारहूंगायहकहकर वह
तोचलागयामैंनेवहतिलवज़नसेव्यापारियोंकोदिखायेवेसवएकसौदसरुपयेदेनेपरा
जीहुयेमैं अपनेमनमेंप्रसन्नहुआकिप्रतिएकमनपरदसरुपयेमुझेलाभहोंगेनिदानमैंउसा
केघरगया उसनेमुझेगोदाममेंलेजायतिलकाढेरदिखायामैंने उसेतुलवायाएकसौपचा
समननिकलेउनकोवाधोंपरलदवाय उसकामेलसौलहसहस्त्रपांचसौरुपयेहमनेउसेगि
नदियेउसनेएकहज़ारपांचसौ रुपयेमुझेदेकहा यहतुम्हारेहैंक्योंकिमैंनेअपनीदलालीको
एकमनएकसौपरवेचनेकाकरारकियाथा अवप्रतिमनदसरुपयेवचेउसनेतुमलोओ
रपंद्रहसहस्त्रमैं अपनेनिकटरक्खोजबमुझेआवश्यकताहोमीलेलूंगायहकहकरवहअ
पनेघरचलागयाएकमासपश्चात्उसमनुष्यनेमुझसे आयकहा हमारारुपयातुम्हारेनिक

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्दि ५

टहै मैंने कहा तय्यार है जो कहो तो लाऊं फिर मैंने उससे कहा आप अपने अच्छे से उत्तर करा
छ भोजन कीजिये तुम्हारे खाते खाते तुम्हारा धन भी आ जावेगा उसने उत्तर दिया मुझे एक
कार्य्य अवश्य है मैं ठहर नहीं सकता लोटते हुए गा तुम्हारे पास ये वा हर निकाल रखना मैं उसकी
वाट देखता रहा वह उस दिन तो न आया किन्तु एक मास पर्य्यन्त उसे मैंने न देखा तदनन्तर मे
ने उस धन को रक्षा पूर्वक रक्खा वा निदान तीन मास के पश्चात फिर वह एक दिन दृष्टि पड़ा मैं उ
स के निकट गया और कहा आप उतरें और अपना धन लें उसने कहा अभी विचार न करें
या और कहा मित्र इतनी शीघ्रता क्यों करते हो मुझे भरोसा है कि मेरा धन अच्छे स्थान पर रा
है मैं आप ले लूंगा यह कहकर चला गया मैं एक समय पर्य्यन्त उसकी वाट देखता रहा और
मन में शोचा यदि इतने समय अन्तर में कोई कार्य्य इस धन से करता तो बहुत सा लाभ उठा
ता निदान एक वर्ष व्यतीत हुआ तो वह व्यापारी उतरा २ वह एक दिन मेरे घर आया मैं
ने उसके कहा आप मेरे घर उतर विश्राम कीजिये उसने कहा बहुत अच्छा मैं चला ता
हूं परन्तु मेरे वास्ते कुछ भोजन करना मैंने कहा जिसमें आपकी प्रसन्नता होगी वही क
रूंगा वह उतर पड़ा और मेरे घर आया मैं तुरन्त भोजन लाया वह वांए हाथ से खाने लगा
मैं देख आश्चर्य में आया कि वह कोई कार्य्य दाहने हाथ से न करता था मैंने बिचारा कि यह

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मनुष्यशीलवानऔरप्रसन्नचितहैयदिमैंइससेकोईबातसहूंतोवहअप्रसन्नहोगाज
बभोजनकरचुकाऔरसेवकभोजनकेपात्रकोउठालेगया औरउसस्थानकोसाफ।
करनेलगातबमवहांसेउठकरमेरेदालानमेंजाबैठे औरमैंउसकापानइलायचीआदि।
सेसत्कारकरतारहावहबांयेंहाथसेलेतानिदानमैंनेउससेकहायदितमअप्रसन्नन
होतोमैंकुछबातमसेपूछूंउसनेकहाबहुत अच्छातबमैंनेपूछाकाकारणहै आ
पसबकामबांएहाथसेकरतेहैंदाहिनेकोनहींलगाते आपनेभोजनभीबांएहाथ
सेकियाउसनेयहसुनठण्डीसांसलींवी औरअपनीदाहिनीबाहजिसेवहसदैवब
स्त्रमेंछिपायेरखताथानिकालदिखायामैंनेदेखादाहिनाहाथउसकासबकटाहै
मैंनेपूछाहाथकोंकरकटा यहसुनतेही वहअधीरहोगयाकुछकालपीछे
अपनावृत्तांतकहनेलगाकिमैंबुगदादकावासीहूंमेरापिताबड़ाधनाठ्यवहांकारईस
थामैंव्यापारियोंसेमिसरकीप्रशंसासुनउसकेदेखनेकीइच्छाकोमुख्यकरके
हकेजोयहांकीराजधानीहैअधिकलालसाकीऔरकईबेरवहांजानेकीइच्छाकी
परंतुजबतककिमेरापिताजीतारहाउसनेमुझेजानेकीआज्ञानदीफिरजबवहका
लवशहुआ औरमैंस्वाधीनहुआमैंनेकेसंजानेकीइच्छाकी औरबहुतसीसोगातन।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि
८

और वस्त्र बुगदाद और मवस्सल की मोल ले इस ओर चला जब मैं कैरो में पहुँचा एक सरा
में जो मसरूर नाम से विख्यात थी उतरा तदनन्तर किराये पर एक घर और एक गोदाम व्योपार की
वस्तु रखने के लिये लेकर मैं उस शहर में गया और अपने सबकों से कहा बाजार से कुछ खाक
मोल लाओ सो उन्होंने तुरंत नाना प्रकार के भोजन ला मेरे सन्मुख रक्खे मैं अपनी इच्छानुसा
र भोजन कर मसजिद वा फआदि जो विख्यात और देखने योग्य थे गया और भली भांति उ
नको देख दूसरे दिवस मैंने उत्तम वस्त्र पहिने और अपनी गठड़ियों से दो तीन थान ले
चौक को चला कि विदित हो यह वस्त्र यहां कितने मोल पर बिकती हैं जब चौक में पहुँ
चा दल्लालों कि मेरा आगमन का समाचार सुन चुके थे उन्होंने आकर मुझे घेरा और मै
ने नमूने प्रत्येक वस्त्र के जो मेरे पास थे दिये उन्होंने चौक के बजाजों को दिखाकर बेच
ना आरंभ किया प्रतिदिवस मैं आता और मेरा थोड़ा २ असबाब बिकता परन्तु मेरा गृ
ह चौक से बहुत दूर था इस वास्ते मजदूरी और गाड़ीवालों को दुःख होता दल्लालों ने य
ह हाल देख मुझ से कहा यदि हमारे कहने पर तुम्हें विश्वास हो तो हम तुम्हें एक उपा।
य बतावैं कि मजदूरी देने से छूटो तुम अपनी वस्तु व्योपारियों को बेचने के लिये बांट
दो वह तुरंत तुमको बेंच देंगे और तुम प्रति सप्ताह में केवल एक बेर सोमबार वा बुद्ध।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्पनिवारको आयाकरो इस समयांतरमें जितना माल लखमहारायिके गाउसका मोल सम
झलियाकरना इसमें निस्संदेह तुमको लाभ होगा और किएषकी हानि सेवचोगे और।
यह व्योपारी भी ऊकलाभ उठावेंगे तुम भलीभांति इस नगर को श्याम नील नदी को देखना
और सैर करनामें यह बात स्त्री का रकार उनका अपने घर ले गया और संसर्ण वस्त्र पक।
ह्मी बेर ले जाकर चौक के हकानदारों को वेचने के लिये वांद दो उन्होंने माल को रसीद सा
लिखी सलिनलिखदी और मैंने भी लिखदिया कि एक मास पर्यंत तुमसे इसका मो
लनमांगूगा मैं यह प्रबंध कर अत्यंत निश्चिंत और हर्षित ऊवा मैंने अपने सम आयुसे
मित्रता की एक मास के व्यतीत होने के पश्चात उन व्योपारियों से तगादा करना आरंभ
किया मैं दो दिन चौक में जाकर अपनी वस्तु का दाम लेता ऊ उस समय मैं शुभै बगनद्
व्यग्राम ऊवा मैंने उसे अपने वासस्थान सराय मसरूर में रक्खा सर्वक संचित कर रक्खा वा ऊ।
या भोर को मित्रों के साथ सैर को जाता और नगर के वासियों को धोके में इकहे देखा और
उनको वार्ता सुन हर्षित होना एक दिन मैं बदरुद्दीन नामक व्योपारी की दुकान पर बैठा।
था एक स्त्री उत्तम२ वस्त्र आभूषण से अलंकृत करे अति रूपवती और सब केवांदियों के
साथ दुकान पर आकर मेरे समीप बैठ गई उसके आगमन से मैं अत्यंत प्रसन्न ऊवा और वा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सौद हाकिउसकेरूप अनूपकोवस्त्रउजागरदेखिउसनेमेरी इसअर्थोर्छनाऔरवेवशीकोसमभ
करजालीकावस्त्रइसतनमक औरभावसेउमायाकिमेंउसकेरूपअनूप औरमायादीनेउनको
देखिनीहीमोहितहुआथोड़ीदेरकेपीछेउसनेवदरुद्दीनहसनसेकुशलक्षेमपूछी और
जरीबाफकाथानमांगाबदरुद्दीननेएकथानजिसकामोल ९९... रु० थानिकालदि
खायाउसरूपवतीनेउसेपसंदकिया औरकहायदिरुहोतोमैंउसेआजअपनेघरलेजा
करमोलइसकाकलहमभिजवाऊंवदरुद्दीननेकहा आपइसेतुरंतलेजाइयेइसकामोल
जबचाहियेतबदीजिये परंतुयहथानइसमनुष्यकाहैजिसनेतमहकानपरखेदेखनीहो
आजकेदिनमैंनेप्रणकियाहैकिजोइससमाहमैंअसबाबबिकाहैउसकामोलहूंउससे
नेकहाएकदिनकासाबकाघाटाकलमेंइसकामोलअवश्यभेजूंगी ब्योपारीनेकहाहेसु
न्दरीआजहीइसकोचाहियेयहसुनतेही वहमृगनयनी अप्रसन्नहुई औरथानबदरुद्दीन
केसन्मुखफेंकदिया औरकहातुमसबब्योपारीबड़ेबेशीलहोसिवा अपनेकिसीकावि
श्वासनहींकरतेयहकहकेकोपितहोउठचलीजबमैंनेदेखावहसुन्दरीहरनिकलवाईतो
बड़ेशब्दसेपुकाराकिफिरआवोमैंनेएकउपायबिचाराहै जिसमेंसौदाबनेवहस्त्रीलौट
आई औरजानगईकिवहथानमेराहैमैंनेवहथानउसस्त्रीकोदेकरकहाआपइसेलेजाइ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ये इसकामोलदीजियेवानदीजिये आपकाहीयहधनहैवहस्त्रीयानलेहर्षितभईओर
आसीर्वाददियाकिपरमेश्वर तुम्हें अधिकद्रव्यदेओरजीतारकखे इसकेसुननेतेही मुझे
ऊत्तकहनेकीशक्तिभईतोमैंनेउसेकहा आपआपनारूपअनूपवालीकोलटकसुंद
रताकिचटकमुझेदिखातेजाओउसस्त्रीनेमेरीओरफिरअपनाकोमल मुखेषोभाय
मानपरसेजालीकावस्त्रउठायाउसकीसुंदरताकोदेखप्रथमसेअधिकमोहितभवा
ओरउसकेसुरूपमनहरकोटकटकीबांधअजीवचित्रकेसदृशदेखनेलगा ओरख
डारहवायायपंरतुउसचितचोरचोरनेतुरत्त अपनामुखछिपालियाकिकोईअन्यनदे
खेनदेनतरखवस्थानउवाओरमुझेउसीदशामेंतजअपनेरहकोचलीमेंबहीतउपतार
हाजवऊबमवधिसंभालीमैनेउसबोपारीसेपुछायहसुंदरीकोनहैउसनेकहायहक
यनपात्रकीपुत्रीहैउसकापितावऊनयनबोउमरगयातदनंतरमैंउसीविकलतामें
अपनेवासस्थानकोगयाओरविनाभोजनकियेसोगयाओरैनभरउसीकेशोचमेंरहाइ
सरेदिनभोरकोफिरउसकेदेखनेकी आशामेंबदकदोनकीहकानपरगया तोआगमा
लेनकहाथाकिवहीसुंदरीबांदियोंकेसमहमेंवहांपऊंचीओरमेरी ओरदेखकरहा
देवोमैंकैसी अपनेवचनपरदृढ़हूंआजकेवचनानुसारअपनावचनपालनकियामै

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि
८

8

नेकहाहेसुंदरीमुझे आपसे भरोसाथा आपनेकोंइतनाश्रमकिया उसनेकहा यहसब
सत्यहै परंतुथोड़ाहारमेंसमताअच्छीहोताहैयहकुछहजारकुःसोरुपयेकीथैलीमेरेसन्मु
खपलंगमेरेपासवैठगईमैंने अवकाशपाकरकुछ अपनीप्रीतिकाहालवार्तामेंवर्णनकि
याथयहसुनवहतुरंतउठचलीगई मैंनेजानामेरेइसवर्णनसेइसेकुछखेदहुवाहोगामैं
उसेदेखतारहाकि।वहमेरीदृष्टिसेगुमहोगईतवमैंउसबोपारीसेविदाहोयेएकओर
कोजिसदिशाकोमैंनजानताथाचलाकितनीदूरगयाथाएकस्त्रीनेपीछेसेआकेमेरी
एहूपरहाथरक्खामैनेपीछेफिरकेदेखा औरपहिचानाकिवहउसीस्त्रीकोएकअउ
परीहै जिसपरमैंमोहितहूंमैंउसेदेखहर्षितहुवाउसबांदीनेधीरेसे मेरेकानमेंकहा।
मेरीस्वामिनीतुमकोबुलातीहै कितुमसेकुछवार्त्ताकरेंमैंतुरंतउसकेसाथहोलिया
औरथोड़ीदूरपरगयाकिवहस्त्रीसरोफकीदुकानपरवैठीहुईमेरीबाटदेखतीथीउ
सनेमुझेदेखतेही अपनेसमीपवैठालिया औरकहाअधीरऔरदुःखितनहोमेरीभी।
तेरीप्रीतिमैंयहीदशाहैपरंतुवुद्धिकेविरुद्धथाकिमैंउसबोपारीकेसन्मुखतुमसेइ
सभांतिकीवार्त्ताकरतीनिदानमुझेबहुतभासमझाबुझाकरकहामेरेघरचलोवामैंतुम
हारेटहरचलूंमैंनेकहामैंइसनगरमेंपरदेसीहूं एकसरामेंउतराहूंवहस्थानआपके

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

योग्यनहींजोआपकेघरकोपताविदितहोतोवहांपहुंचसकतां। उसमहंदरीनेइसवातको
स्वीकारकिया औरकहाकलबुधवारहैतृतीयप्रहरमेराचाकरकि अमुकगलीमेंहूंआना
औरउसगलीमेंपूछना अमुकमनुष्यकागृहकहांहैउसीस्थानपरतुममुझेपाओगेमें
उसकेवासस्थानकापताभलीभांतिसमझविदाहुवावहदिवसकाटनामुझेकठिनहुवाज
बवहसमयादिनहुवामैंनेतुरंतउठउत्तम २ वस्त्रपहिनएकथैलीपचास असरफीकीजेबमें
रखलीएककिरायेकीसवारीपरसवारहुवाजबउसगलीमेंपहुंचाउसभलेमानसका।
घरपूछाएकनेटीक २ पताबतादियामैंनेअपनीसवारीसेउतरऔरकिरायादेवहांसेउसे
विदाकियाऔरकहदियादूसरेदिनभोरकोवाहनसहितआइयो औरमुझेमसहूरकोस
रायमेंलेजाइयोफिरमैंनेउसगृहकेद्वारपरजालीबजाईशब्दसुननेहीदोछोटे २ गुलामब
हुत सुन्दरवस्त्रपहिनेमानोमेरेआनेकीबाटदेखतेथे उन्होंनेआकरद्वारखोलाऔरकहाभी
तरआइयेहमभीस्वामिनीतुम्हारे आगमनकीबाटदेखतीहै औरबहुतसुथरेओरवे
वशाहैमैंभीतरगयावहांएकबारहदरीदेखीकिबहुतऊंचीजिसकीऊंचाईसातसीढी
कीथी औरउसकेचारोंओरजालीकाबनाहुवाथाऔरउसकेआगेएकपुष्पवाटिका।
थीइसकेविशेषबहुतमेसयनरहदोंमेंवरस्वच्छभवनसुशोभितथाजिनमेंसुपनआ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि ४

सखी ओरवहउनसेज्ञाविफलसेलदेऊयेथेजिनपरनानाप्रकारकेपक्षीअपनीमनोहर ओर
मिष्टवानीसेउनाप्रसन्नकरनेओरउनपक्षियोंकेपाहकेसाथबैठेऊंचे २ ऊंचेमेंअतिनिर्मल
नीरउसपुष्पवाटिकामेंपउनाजिससेआनंदहोतावहऊउ अत्यंतदेखनेमेंसुंदरओरचोकोण
थेओरउनकेचारोंओरअजदहकेमुखवनेऊये जिनमेंसेअत्यंतनिर्मल ओरउज्वलविल्लोरके
समाननीरवहतानिदानवहदोनोंगुलाममुझे अपनेसाथएकमकानमेंलेगयेजो अत्यंत
सुंदरओरनानाभांतिसे अलंकृततथावहांएकबालकदोउऊवामेरेआगमनकासंदेशाकह
नेकोगयाओरहमदोउसकोठेकोदिखानेलगाक्षणमात्रमेंवहसुंदरवनीधीरे २ हंसगतिसेच
लतीसिरसेपांवतकवहुमूल्यरत्नओरआभूषणोंसे अलंकृतमेरेसमीपे आईउससमयका
हर्षमैंकुछवर्णननहीं करसकतानिदानहमदोनोंपरस्परदेखिप्रसन्नऊए ओरएकदालान
मेंबैठकरवातेंकरनेलगेइतनेमेंभोजनवनगयाहमदोनोंखाकरफिरवातेंकरनेलगे
फिरउन्होंनेउत्तममदिराओरस्वादिष्टकललायेकुछवांदियांमिष्टस्वरसेगानकरनेलगी
ओरकुछसेवाकरनेलगी ओरवहसुंदरीभीमुझेअपनेकटाक्षओरगानेसेमुझेरिझातीनि
दानसंपूर्णरात्रिआनंदमंगलमेंव्यतीतऊईजबभोरऊआमैंनेचुपकेसेवहुअशर्फियोंकी
थैलीउसकेउपधानकेगिलाफमेंजोमेरेनिकटथारखदीओरउठकरउससेकहासुंदरी अ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वे मैं विदा होता हूं तब मैं ने परमेश्वर को सौंपा उस ने मुझ से कहा अब कब आवोगे मैं ने कहा फिर संध्या को
आऊंगा वह प्रसन्न होय मुझे विदा करने को पहुंचा गई और मुझे जाते समय सोंगठड़ी कि अपने ब
चन पर अवश्य आना मैं उस घर से बाहर निकल ऊंट पर जो उसी मनुष्य ने प्रथम से ला रक्खा था
चढ़म सहर सराय में आया और ऊंट वाले से कहा संध्या को फिर ऊंट लेकर आइयो और नाना।
प्रकार के पाक व्यंजन एक मनुष्य के हाथ उस सुंदरी के पास भेजे उसी नियमित समय पर ऊंट
वाला ऊंट लाया और मैं ने हर सभी थैली पचास अशरफियों की कमर में बांधी और वहां जा।
कर रात्रि भर रहा और उसी भांति वह थैली ताकिये में रख आया एक अवधि पर्यंत वहां जा।
ना और उस सुंदरी के पास रहना और विदा होते थैली पचास अशरफियों की वहां रख आना
रहा कि कुछ समय अंतर में संपूर्ण द्रव्य व सब जो कुछ कि मेरे पास था चुक गया जब कुछ न र
हा उस स्त्री के घर जाना छोड़ दिया एक दिवस भोर को बादशाही बाग के देखने को गया एक
स्थान पर बहुत से मनुष्यों का समूह देखा मैं उस भीड़ में घुस गया वहां क्या देखता हूं एक मनुष्य
मुश्कें चढ़ा एक अशरफियों की थैली उसके गले में लटकती है और उसका हरांऊवानी।
चेन कलटता है अकस्मात एक मनुष्य का हाथ का गहा लिये उस सवार के समीप से होकर वा
या सवार ने इस भय से कि लकड़ी का चोचा न लगे अपने घोड़े को भीड़ की तरफ से फेरा देव

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
१०

योगसेवहडेरायेथेंलोकोमेरहाथेमें आलगामैंनेउसेदेखीचकरथेली अपनीकमरमेंराखलि
सवारनेथैलीकोजीनमेंलटकोकरइनदेखानोमुझकोकिसमीपखड़ाथाबड़ेउसेवासख
झमारजिसेमेंगिरपड़ामनुष्यमुझेपड़ादेखउससवारकोउर्वचनकहनेलगाकित्तूनेइ
सकोनिर्दोषकोमारा औरउसपुरुषकेघोडेकीलगामपकड़चाहतेथेकिउसकोमा
रेंसवारनेकहातुमकोविदितनहींयहचोरहैइसनेमेरी अशरफियोंकीथैलीचुराईहैवा
हइसीवातोंमेंथेकिइतनेमेंमेरी अभाग्यतासेपुलिसकीरौंद आपहुंची औररौंदकेअधि
पनेइच्छायहकाहालहैसवारने अपनी असरफियोंकेजानेकोवृत्तान्तवर्णनकिया पुलि
सकेप्रधाननेइच्छातुमकोकिसपरसंदेहहै उसनेमुझेवतायापुलिसदारमुझसेइच्छा
मैंनेइन्कारकियापुलिसदारनेउससेकहावह चोरनहींहैसवारनेकहामुझे विश्वासहै
किइसीनेलियातबपुलिसदारने अपने आदमियोंको आज्ञादीइसमनुष्यकाफाउलोउन्हों
नेमेराफाउलियावहथैलीमेरीकमरसेनिकलीपुलिसदारनेप्रथमसवारसेइच्छाजोय
हतेरीथैलीहैतोनबताकिइसमेंकितनी अशरफीहैं औरकासिक्काहैउसनेकहा अमु
कसिक्केकीबीस अशरफियांहैं तबपुलिसदारनेखोलकेदेखा औरगिनातोबीसअश
रफियांउसीसिक्केकीपांईजैसाकिसवारनेकहाथापुलिसदारनेयहअशरफीसवारको

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

देमुझेन्यायाधीशकेनिकटपकड़लेगयान्यायाधीशने आज्ञादीकिदाहिनाहाथइसका
काटडालोनगरमेंराहाथकाटागयाफिरन्यायाधीशनेकहायहतोउसकीचोरीकादंड
है इसनेअसमकहाइसलियेएकचरणभीकाटोतबमेंवज्ञनचबगयाउसीसवारकोजो
वहींथा बिनतीकरप्रसन्नकियाउसनेमुझपरदयाकरन्यायाधीशसेकहइसकापावका
टनेसेबचायाथा औरउससवारनेउदारतासेवहथैलीमुझेदेकहामैंजानताहूंकितूचोरनहीं
कोईऐसेहीआपत्तिपड़ीकितूनेचोरकर्मकियायहकहसवारतोचलागयाओरजोमनु
ष्यकिवहांथेमुझपरदयाकरमुझेअपनेघरलेगयेऔरएकगिलासमदिराकामुझको
पिलायाऔरलहूथम्बंदकरनेकेलियेएकपट्टीमेरेघावपरबांधीजबमैंमशहूरसरा
यकोगयाकिसी अपनेसेवककोनपायाकिइसदशामेंमेरीसहायताकरनेअनंतरय
हसोचाउसीस्त्रीकेघरजाऊंफिरयहसोचाजोवहमेरेइसहालकोमालूमकरेगीतोव
हभीमुझसेग्लानिकरेगीपरन्तुमेंबड़नडुःखितथाऔरकिसीदूसरेको अपनासहायक
नपायानिरुपायहोवहींजानेकीइच्छाकीजबभीड़इच्छितकवाईमेंदूसरेमार्गसेउसकेघ
रनकपहुंचापीड़ाकेकारणअत्यंत अशक्तथाउसकेशुद्धजायपाप्यापरलेटगयाऔरदा
हिनाहाथ कटाऊआअपनेवसनमेंछिपालियाथोड़ीदेरमेंउससुंदरीकोमेरेआगमन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स० हि
११

कीखबरहुईवहसुननेसेहीदौडीआईमुझेव्याकुलऔरतडपतेदेखबोलीहेमेरेप्राणाहेमे
रेप्यारेतुम्हारीक्यादशाहै मैंनेमुखसेहूंनातप्रकटनकरकहामैंइससमयशिरपीडासेअचेत
व्याकुलऔरदुखितहूंयहसुनवहअतिशोकयुक्तहोशय्याकेनीचेबैठगईऔरकहनेल
गीवहानानकरोसचकहोतुमपरकौनसी आपदा औरदुखपडाअभीतोकलतुमभलेचंगे
थे आजयहतुम्हारीक्यादशाहुईकोईइसकाकारणहैजिसतुममुझसेछिपातेहोपरमे
श्वरकेवास्तेमुझेबताओमैंनेकुछउत्तरनदिया औरोनेलगानबउसनेकहाजोतुमअपना
हालनहींबतातेतोमैंजानतीहूंकितुम्हारीप्रीति औरप्यारमुझसेसबझूठाहैमैनेकहासु
दरीमैं अपनादुखतुमसेक्यावर्णनकरूं मुझसेकहानहींजाताजबसायंकालहुवा औ
रभोजनबनगयाउसनेमुझेखानेकोबुलायामैनेदेखादाहिनेहाथकेसिवायभोजनकर
नाकठिनहैमैनेकहाइससमयमुझेइच्छानहींउसनेकहापश्चातापहैतुमअपनावृत्तांतप्र
गटनहींकरतेतुमपीडासेअतिदुखितऔरक्षीणहोतबउसनेमदिराकाएकगिलासभरके
मुझेदियाकिइसेपियोइससेतुम्हेंशक्तिहोगीउसकोभीमैंबायेंहाथसेलेपीगयावहमुझ
कागिलासमैनेज्योंसेअमुकेहाथावहनिकलगया औरठंडीउसासेंलेनेलगाउसनेदूरीनेक
हामेरेप्रियस्वामीक्योंतुमऐसीठंडीउसासेंलेतेहो औरनैनोंमेंनीरभररुदनकरतेहोमैनेकहा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मुझे इस का कारण न सूझा कि मेरे दाहिने हाथ में शोथ है और बड़ी पीड़ा होती है उस ने कहा दि
खाओ मैं चुप हो रहा और जो पोष मदिरा उस गिलास में थी वह भी पी ली जो गिलास बड़ा न बड़ा
था और मदिरा भी उस में बहुत सी थी मुझे पीड़ा और थकने से बेसुधि सी हुई और उसी दशा में
सो गया जब उस स्त्री ने मुझे निद्रा में देख पाया या चाहा कि मालूम करे कि मेरे दाहिने हा
थ में क्या पीड़ा है वह हाथ मेरा वस्त्र हटा और मेरे हाथ को कटा देख आश्चर्य्यित हुई फिर उसी भांति उ
से वस्त्र से ढाक दिया और अत्यन्त शोक युक्त और विस्मित हुई जब मैं जागा तो उसे शोच युक्त दे
खा उस ने मुझ से कुछ दूर खने का हाल न कहा ऐसा न हो कि मैं कुछ विलग मानूं परन्तु अ
पने सेवकों को आज्ञा दी कि तुरन्त मुरग के बच्चे का गाढा शोरबा बनाओ सो उन्हों ने बनाय
मुझे पिलाया कि मुझे सामर्थ्य हो जब मैं पी चुका उस से बिदा हो चला उस ने मेरा वस्त्र पा
कड़ लिया और मेरे जाने की बाधक हुई और कहा मैं तुम को इस दशा में जाने न दूंगी जब
न क तुम मुझे अपनी पीड़ा का वृतान्त न कहोगे परन्तु मुझे विदित है कि इस तुम्हारे दुःख
का कारण मैं हो अभागी हूं और जानती हूं कि इस दुःख से मैं शीघ्र मर जाऊंगी यह बात जो मैं ने
विचारी है उस से अवश्य करना यह कह अपने सेवकों को आज्ञा दी कि इस महल के मुत्सदा
र और कई साक्षियों को बुलाओ जब यह आये उन के साम्हने अपने सब सामग्री द्रव्य और वस्त्र को

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि १२

मेरेनामलिखदियाओरउनकोऊच्छदेलेविदाकिया तदनंतरएकसंदूकखोलाजिसमें
मेरीथैलियांजिनकोपहिलेसअंतदिवसनकलेगयाथाउसीप्रकाररक्खीऊईथींकहा
यहथैलियांतुम्हारीलाईऊई इसमेंवर्तमानहैंमैनेइनकोहाथभीनहींलगायायहकह
संदूककोबंदकरउसकोऊंजोमुझेदीउसीदिनसेवहस्त्रीरोगीहोगईऊईऔरदोतीनसप्ताहके
पश्चातमरगईमैंउसकासोगकरसबअसबाबलेनिजवासस्थानबुगदादमें आयासोबद
तिलजोतुम्हारेहाराविकेवहउसीकेधनमेंसेथेउसबुगदादीने अपनेवृत्तांतकोसंपूर्णक
रमुझसेकहाअबतुमकोबायेंहाथसेखोनेकाहालविदितऊवामैंतुम्हाराकृतज्ञऊंतुम
नेअपनाइतनासमयमेंमेरेवृत्तांतकेसुननेमेंव्यतीतकियाओरतुम्हेंइतनाश्रमऊवातुम्हा
रीशीलताआमिलनसारीसेमुझेहर्षऊवाओरमेरेतिलकामालजोतुम्हारेपासकोमा
नहैमैनेतुमकोदियातुमउसेस्वीकारकरो ओरमुझेतुमसेएकआवश्यकताहैमैनेदे
शोंदेशमेंफिरनाइनदिनोंमेंछोड़दियाहैयदितुममेरीसहायताकरोतोफिरमैंव्यो
पारकरूंजोजोकुछकिवर्षमेंप्राप्तहोगाइसहिसाबकरअर्ध २ भागबांटलेंगेनसरानीव्योपारी
कहाहैकिमैनेउसमनुष्यसेकहाकिमैंतुम्हारीदेनेसे अत्यंतकृतज्ञऊवाकितुमनेसब
कासबधन अपनामुझेदेडालाइसकेविशेषतुममुझेअपनेसेमुक्तकरतेहोमैंनेउसमन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सेस्त्रीकाराकियाकिमैंइसविषयमेंइननी सहायताकरूंगा जैसाकिअपनेकार्यमेंकरा
ताहूंनिदानएकशुभवारयात्राकोनियतकोजबवहदिनआयाहमनेवुगदादकोकूच
कियासौरा औरमसूटमासमेंपहुंचे औरवहांसेफारसमेंगये इसीभांतिनगरोंदेशोंमेंफिर
ते २ आपकी राजधानीमेंपहुंचेकुछदिनोंमेंउसमनुष्यनेमुफसेकहामैंचाहताहूंकिफि
रफारसकोजाऊंऔरवहांवैठरहूंहमनेपरस्परवैठसबअपनासुखमथनऔरसफेकाहि
साबकरअर्ध २ बांटलियाऔरपरस्परप्रसन्नरहे वहमनुष्यफारसकोगयाऔरमैं आप
केदेशमेंरहनेलगायहकथाजोमैंनेआपके सन्मुखवर्णनकीक्याकुबडेकेवृत्तांतसे अ
द्भुतऔरउत्तमनहीं वादशाहकाशगरनेसरानीओंपारीपरबहुक्रोधितहुआ औरकहा
हेनिलज्जतूक्याकहताहैक्यातैनेकुबडेकेवृत्तांतकेसमान अपनाचरित्रसुनायातूअपनेम
नहीकोप्रसन्नकरताहैमांगराविनैतुमचारोंकोउसकुबडेकेपलटेवधकरूंगायहसुनमो
दीउसवादशाहकेचरणोंमेंगिराऔरविनयकीआपक्रोधनकीजियेमेरीकथासुनियेयदि
वहकथा इसकुबडेकेवृत्तांतसे अद्भुतऔरउत्तमहोतोमुफपरिश्रमणआशाहैकिहमचा
रोंका अपराधक्षमाहो वादशाहनेकहाजोतेरीकथा विचित्रहोगीतोमैंतुमचारोंका अ
पराधक्षमाहो वादशाहनेकहाजोतेरीकथाविचित्रहोगीतोमैंतुमचारोंका अपराधक्ष

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
१२

13

माकहेगा मोदीकेमुखसेवर्णितचरित्र मोदीनेकहास्वामीकलमैंएकधनपात्रमनुष्यके
पुत्रीकेविवाहमेंथा औरउसकीसभामेंबहुतसेभलेमानसनगरकेवासीइकठेथेजबस
बविवाहकीरीतेंहोचुकी औरनानाप्रकारकेपाक औरव्यंजनपरसेगये औरसबजनोंके
रबैठप्रेमकनेस्वच्छाभोजनकिया नानाप्रकारकेपाकथे एकथालमेंअनंतस्वादिष्ट औ
रसरुचिलहस्तनरकवेथअनेकमनुष्यउसमेंसेथोड़ा२ लेकररुचिपूर्वकभोजनकरताथाप
रन्तुहममेंसेएकमनुष्यजोउसथालकेसमीपबैठाथानखाताथाकिंतुदेखताभीनहींहोहमा
नेकहातुमक्योंनहींखाते उसनेकहाप्रथममैंनेएकबेरइसेखायापीछेडरसेमैंपड़ाकि
आजतकनहींभूलातबसबमनुष्योंनेउससेपूछातुमक्योंइसस्वादिष्टपाकसेग्लानि क
रतेहोउसनेकुछउत्तरनदियातबस्वामीनेकहामित्रयहपाकबहुत अच्छाबनताहै औ
रहमसबइसेरुचिसेखातेहैंतुमक्योंनहींखातेजैसाकितुमने अपने आगमनसेमुझे
कृतार्थकियाकृपाकरइसकोभीभोजनकीजिये उसपुरुषनेकिबगदादकावासीथा
उसनेकहायदिआपकीयहीइच्छाहैतोमुझेइनकारनहींपरंतुइसपाककेभोजनकेपश्चा
तुमेराहाथउस्तान अर्थात्एकप्रकारकीसुगंधिमयीघास औरचालीसबेरअस्तकुवास
सेबहुतबेरसाबुनसेधुलवाना इसकेविशेषमैंनेइसकेभोजनकीबड़ीसौगंदखाईहैजि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सेमैंभंगनहींकरसक्ताउसनेस्त्रीकारकियाऔरएकपात्रमैंलहूलनरावउसकेसन्मुखरख।
वा औरअपनेसेवकोंकोआज्ञादीकिकईपात्रोंमेंउसजलनत्थाररक्खेंवें औरअस्तुकथासके
रावेंऔरसाहूननत्थाररक्खेवेंकियहमनुष्यजितनीबेरचाहेहाथ अपनाधोवेयहकहउस
सेकहा अबकल्हउसमेंसेभोजनकीजिये नहींतोवस्तुहमारीनष्टजायगीउसब्योपारीनेला
रीसेउत्तरदे १ उसमेंसेग्रासउठाअत्यंतग्लानिसेमुखमेंरखखानेलगाहमको अत्यंतआश्चर्यहु
वा औरविशेषहमखानसेकिउसने अंगूठेकेसिवायचार उंगलियोंसेखाया यद्यपिप्रथम
भीउसनेइसीप्रकारभोजनकियाथा परंतुनवनककिसीनेनदेखाथाघरवालेनेउससेकहा
तुम्हारे अंगूठानहींउसपुरुषनेकहासत्यहैइससेवकपरएकऐसीआपत्तिपड़ीजिससेमेरेहा
थपांवोंकेचारोंअंगूठेकाटगयेजोतुमउसहृत्तान्तकोसुनोगेतोआश्चर्यितहोगे अबतुके
आज्ञाहोतोमैंअपनेहाथधोऊं यहकहउठाऔरएकसौचालीसबेरहाथधोयेफिरआवैठा
औरअपनाहृत्तान्तइसभांतिकहनेलगा। चारोंअंगूठेकटेहुएमनुष्यकीकथाहै मिश्रमे
रापिताबगदादकावासीथा औरखलीफाहारूंरशीदकेसल्तनतमेंमैंभीउत्पन्नहुवा
औरमेरापिताबड़ाधनपात्रथा औरबड़ेव्योपारियोंमेंगिनाजाताथापरंतुअत्यंतलम्पटथा इ
सनिमित्तव्योपारकेबहुतसेकार्योंमेंअप्रबंधरहतीउसकेमरनेकेपश्चात्बहुतसे म

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
५५

नुष्यों का आचरण रह गया मुझे उसके देने में बड़ा आनन्द होता था निदान धीरे २ मैंने अपने पिता का
सब धन लुटा दिया तदनन्तर परमेश्वर की कृपा से रतनों का व्यापार करता जिस्से मैं अच्छे
निश्चिंत हुआ और दुकान पर बैठ सादा कपड़ा बेचा करता एक दिन मैं भोर को अपनी दूका
न खोला बैठा था एकाएक एक सुंदरी खच्चर पर सवार एक सेवक आगे और दो बांदियां
पीछे मेरी दुकान पर आ खड़ी हुई सेवक ने उस सुंदरी का हाथ थाम बाहन से उतारा और
चहुं ओर देख कहा हे सुंदरी बड़े तड़के सबेरे आई अभी कोई दुकान नहीं खुली कहां तक
बाट देखोगी उस सुंदरी ने भी चारों ओर देख कहा बाजार में एक दुकान के सिवाय कोई
भी खुली नहीं तदनन्तर वह मेरी दुकान पर आई और प्रणाम किया मैंने उसका भली
भांति आगत स्वागत किया और कहा दया कर इस दुकान पर बैठ मुझे कृतार्थ कीजि
ये निदान वह सुंदरी मेरी दुकान पर आय बैठ गई और देखा कि चौक में केवल उसका
सेवक और मैं ही हूं सो हवा खाने के वास्ते अपने मुख से वस्त्र उतारा मैंने जो जन्मा
भर ऐसा रूप छबि अनूपम मनहरण प्रसन्नकरणा न देखा था तुरंत मोहित होगया और उ
सको देखा किया फिर उसने भली भांति वस्त्र उठाय मुख के अपनाई सुभाव दिखाया कि र
तने में सब दुकानदार वहां एकट्ठे होगए उस समय उसने लजाकर अपने मुख को छि

पाया और मुझसे कहा मुझे बहुमूल्य थान जरबाफ की आवश्यकता है जो तेरी दूकान पर
होतो दिखा मैंने कहा मेरी दूकान पर नहीं परंतु आपके वास्ते अमर दूकानदारों से जो मेरा
विश्वास करते हैं ला दूंगा और वह भी मेरे कारण अधिक मोल न लेंगे और आपको उस श्र
म वा तो आदि का दूकानदारों से न होगा वह सुंदरी इस बात पर प्रसन्न हुई इस विषय में उसकी
और मेरी वार्ता चिरकाल पर्यंत न होती रही निदान मैं उन थानों को ढूंढने कई दूकानों पर ग
या और ढूंढ कर ले आया उसने कई एक थान पसंद कर उनमें से पांच लिये और उनका मोल
पूछा मैंने कहा इनका मोल २४५० रुपये हैं उसने कहा बहुत अच्छा तदनंतर मैंने वह थान
वस्त्र में बांध उसके दास को दिये वह सुंदरी मुझसे विदा हो चली उसकी प्रीति में मैं ऐसा वेवश
था न तो उनका मोल उससे मांगा और न समझा कि वह सुंदरी कहां रहती है उसके चले जाने
के पीछे मुझे बड़ा शोच हुआ कि रत्नादि द्रव्य मैं कहां से उन वजाजों को दूंगा निदान मैं उनके
समीप गया और कहा कि मैं इस स्त्री को भली भांति जानता हूं उसको शङ्का का स्थान नहीं मैं
उनको पीछे दे दूंगा संध्या को अपने गृह आया रात्रिभर मुझे उसकी प्रीति और द्रव्य के देने के विचार
में निद्रा न आई भोर को प्रथम कई दूकानदार के गृह जाय कर समाद का करार कर आया उन्हों
ने भलमनसात और शीलता से अंगीकार किया आठवें दिन भोर को फिर मैंने उनको विन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सवि १५

ठाकर हुआ और महल तमांगी उन्होंने मांगना बंद किया इससे दिवस भोर को वह सुंदरी उसी
खिड़की पर उन्हीं सेवकों सहित मेरी दुकान पर आई और कहने लगी मैंने तुम्हारी बहुत बाट
देखी कि आकर रुपये ले जावोगे अब आप उनको ले आई उसे लेकर सराफ से परखवालो से
वक जिसके पास वह रुपये थे लियां थी मुके ले सराफ के निकट गया और परखवाया सब के स
ब अच्छे थे वहां से मैं अपने दुकान पर आया इतने में चौक को दुकानें खोली मैं उस सुंदरी से
वार्तालाप करता रहा उस सुंदरी ने इस चतुरता से वार्ता की कि जिस से विदित हुआ कि अ
मन बुद्धिवंत और प्रवीण है और वार्ता में वह अपने मुख से उजारा लिया फिर दुकान
दारों ने दुकानें खोली मैंने अनेक को माल दे दिया वह सब मेरे सच्चे ब्यवहार से बहुत प्रस
न्न हुए और प्रथम से अधिक विश्वासी समझा नदने न रउस सुंदरी ने और कई थान मांगे मैं
ने वह भी लाकर उसे दिये फिर भी मैंने न पूछा कि वह सुंदरी कौन है और कहां से आई उ
सके जाते ही सोच हुआ कि देखिये इसका क्या परिणाम होता है और अपने मन में सो
चा इस सुंदरी ने मेरी परीक्षा ली है उनका मोल अवश्य मिल जावेगा मेरे हानि का अप्रति
सा को इच्छा रखनी है क्योंकि दुकानदारों ने अपनी वस्तु मेरे ही विश्वास पर दी है परंतु ज
व उसको सुंदरता स्मरण होती बह सब बोझ भूल जाता जब एक मास व्यतीत हुआ और उस

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सुंदरीकाकुछपतानलगा ब्योपारी अपनेमालकेवास्ते अधीर्य्यहोनेलगे उनकेधीर्य्यकेवा
लेजोकुछकिमेरीदुकानपरथा सोअबबेचता औरकुछ २ उनकोपहुँचाता एकदिनभो
रकोवहीसुंदरीउसीवाहन औरउन्हींसेवकोंसहित आईमैंउसेदेखहर्षितहुवा जब
वहमेरीदुकानपर आकरबैठीउनथानोंकामोलदेकईथानमुझसेकियेउनमेंसेएककय
हथातुम्हाराविवाहहुवाहैवानहीं मैंनेउत्तरदियाअभीनहींफिरउससुंदरीने अपनेदासको
सैनकीवहमुझकोरायमुझेएकांतमेंलेगया औरमेरेकानमेंचुपकेसेकहामैंजानताहूं
तुमइसपरमोहितहोपरंतुआश्चर्यहै तुमनेइसबातकोगुप्तरक्खाकिसीबातकीइसेइच्छा
नहींकीऔरवहभीतुमपरमोहितहैयहनजानोकियहांकेवलथानोंकेवास्तेआतीहै
किंतुतुम्हारी प्रीतिउसेआकर्षणकरतीहैइसीलियेतुम्हारेविवाहकाहालपूछातोभी
तुमइससैनकोनसमझे औरकुछउससेचाहनानकी मैंनेउससेवहांमें इससुंदरीपरउसे
दिनसेकिपहिलेदेखाथामोहितहूंपरंतुमुझेकबआशाथीकिउनकोभीयहीइच्छाहै
यदिइसमेंतुममेरीसहायताकरोगेतोयहतुम्हाराउपकारमैंकभीनभूलूंगा वहवहां
सेउठउससुंदरीकेसमीपगया औरकहाभलीभांतिठीककर आयाफिरवहसुंदरी
दोनों अनुचरियोंकोकुछसैनकरउठखड़ीहुई औरमुझसेकहाकिमैंइसीसेवकको

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्दि
९

16

तेरे निकट भेजूंगी जो यह कहे सो तुम करना तदनंतर मैंने सब वृत्त पयायो परियों को बांट दि
या और उस अनुचर के आने की बाट देखना रहा कई दिन पीछे वह आया मैंने बड़ी प्रीति से
उस चंद्रमुखी की कुशल पूछी उसने उत्तर दिया तुम बड़े भाग्यवान हो तुम पर वह अति मोहि
त है यदि उसका वश होता तो अभी तुम्हारे निकट चली आती मैंने कहा वह सुंदरी बड़ी शी
लवान जान पड़ती है उसने कहा का तुम नहीं जानने वह खलीफा हारूं रशीद की बीबी
जेवदा की सहेली है और बीबी उसे बहुत प्यार करती है और बाल्यावस्था से उसने उस पा
लन किया है और महलों के सब कार्यों की वह अधिकारी है जेवदा ने कई बेर उसे विवाह
करने को कहा अब उसने उससे कहा है यदि आप की इच्छा हो तो एक व्यापारी है मैं उससे वि
वाह करलूं बीबी ने इसको स्वीकार किया और कहा एक बेर मैं उसे देखा चाहती हूं तब वि
वाह की आज्ञा दूंगी मैं तुम्हारे लेने को आया हूं तुम बादशाह के मकान में चलो इस में तु
म्हारी का इच्छा है मैंने कहा मैं चलने के वास्ते तय्यार हूं जिस समय चाहो मुझको ले चलो उ
सने कहा बहुत अच्छा परंतु तुम जानते हो कि कोई मनुष्य खलीफा के महल में नहीं
जा सकता किसी उपाय से मैं तुमको ले जाऊंगा आज संध्या समय उस मसजिद में जो प्रभु
क नदी के कूल पर बने मान है जाकर मेरे आगमन की बाट देखना मैंने कहा अति उत्तम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

निदान जब सायङ्काल हुआ मैं उस मसजिद में जाकर सेवक की बाट देखने लगा इतने में प
क छोटी नाव उस नदी से तट को आई और जब वह मसजिद के नीचे पहुंची सब उतर ग
ये और बहुत से संहूक उस पर लादे उसमें एक बड़ा लंबा चौड़ा संहूक जो लाये थे उसको
मसजिद में रख दिये परन्तु एक सेवक वहां रह गया इतने में वह सुंदरी भी वहां आई
मैं उसके निकट गया और कहा क्या आज्ञा है उसने कहा मुझे इस समय बात करने का अ
वकाश नहीं है तुरन्त एक संहूक खोला और मुझ से कहा तुम इसके भीतर जाकर लेट रहो
मैं उसमें लेट रहा उसने तुरन्त उस संहूक को बंद कर ताला लगाया तब उस सेवक ने कि
उसका विश्वास न और भेद जो था के बट को पहुंचाया और कहा इस संहूक को इस नाव प
र रक्खो वह संहूक जिसमें मैं था उठा नाव पर ले गये और चन्द्रमुखी भी उस पर सवार हुई
मैं इसका परिणाम विचार भयभीत हो अपने को धिकार देने लगा और इस कर्म से डरा व
न रुवा वह नाव बीका खलीफा हारूरशीद के द्वार पर जाय लगी सब संहूकों को नाव से
उतार द्वारपाल के प्रधान के निकट ले गये जिसके पास सब संहूकों की कुंजियां थी औ
र कोई वस्तु उस प्रधान के देखने भालने विना भीतर न जाती वह प्रधान उस समय सोता।
था जब उसे जगाया तो अत्यन्त कोपित हुवा इस हेतु उस सुंदरी से बहुत वादानुवाद हुवा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सां०दि
८

वहकहताकियहसंदूकमेरे देखेविनाभीतरनजानेपावे औरउससुंदरीनेआज्ञादीथीकि
इनसंदूकोंकोप्रधानकेदेखेनेबिनाउगाउठानवेंनमकानकेभीतरलेजाओऐसानहोकि
वहसंदूकोंकोखोलकरदेखे औरभेदखुलेपरंतुवहद्वारपालजोप्रधानके अधिकार
मेंथेनतलाशीकेलियेप्रधानकेनिकटलेगये प्रथमउसी संदूककोजिसमेंमैंथाउठाके
रसन्मुखरक्खामेंकियहवातोऔरतनकरारसुनताथा औरसबभयभीतहुयाकिइस
संदूककेखुलनेही अवश्यमाराजाऊंगा मेराकालआयपहुंचा परंतुसउसुंदरीनेनतो
उसकीकुंजीदी औरनउसेहाथलगानेदिया औरउससेकहातुमभलीभांतिजानतेहो
मैंकोईवस्तुजेवदाकी आज्ञाविनामंदिरमेंनहींलेजातीइससंदूकमेंबहुतसा ब
हुमूल्य असवावऔरपारियोंकारक्खाहुवाहैजो अभीइसनगरमेंपहुंचेहैं औरवा
कईबोतलजमजमकीजलकीहैंजोएकपीशाभीइसकेखोलनेमेंटूटजावेगा सं
सएवस्तुइसकीनछूहोजावेगी इसकीजवावदेहीतुमकोदेनीहोगी औरजेवदा
तुमकोइसफिकरईसेंदउठेगी प्रधानभयमानहुवा औरकुछनबोला औरसंदूकउठ
वादियेदासउठाकरभीतरलेगए परंतुबड़ीकठिनतासेउसउसकीतलाशीसेबचे
यहांआकरअधिकआपदाउसपरपड़ीअर्थात अकस्मातखलीफाआपउसमकानमें

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

आया और बज़न से संदूक़ों को देख पूछा कि मुझे इन संदूक़ों को खोल दिखा इसे।
क्या वास्ते है उस सुंदरी ने बज़न से बहाने किये परंतु कोई उपयोगी न हुआ निदान निरु
पाय हो एक एक संदूक खोल दिखाने लगी जब सब दिखा चुकी केवल वही जिस में मैं
अभागा था शेष रह गया खलीफा ने कहा इसको भी तो खोल दिया है मित्रो उस सम-
की मेरी दशा न पूछिये काटो तो रुधिर नहीं निदान उस चतुरा ने विनय की आप इस सं
दूक के खोलने में अधिक बाद न कीजिये और इसके देखने की इच्छा न कीजिये इसमें
वह असबाब है कि जे बदा बिना मैं इसे नहीं दिखा सकी खफ़ाली ने कहा अच्छा इसे न
दिखा वहां से खलीफा कहीं दूसरी ओर चला गया तदनंतर दासों को आज्ञा दी इन संदू
कों को तुरंत वहां से ले जावो सेवक उठा उनको उस सुंदरी के मकान में ले गये और ख्वा
हां से निकल आये जब उसके मकान में कोई न रहा उस सुंदरी ने उस संदूक को जिस में मैं
था खोल कर कहा शीघ्र निकल मैं निकल आया फिर मुझे एक सीढ़ी दिखा कर कहा इ
स पर तू चढ़ जा वहां एक मकान है तू जाकर बैठ रहियो मैं अभी आती हूं मैं जब ऊपर को
चढ़ा उसने तुरंत किवाड़ मूंद कर ताला लगा दिया एक क्षण न हुआ था कि खलीफा उ
स कोठे के अंदर फिर आया उसी संदूक में जिस में मैं पहिले बंद था बैठ गया और उस सुंदरी

सद्वि
१८

18

सेदेरतकनगरकावृत्तांतएकवाकियावहसुंदरीबहुकालपर्यंतखिलीफासे वार्ता
करतीरहीतदनंतरखिलीफावहांसेउठअपनेशयनागारमेंगयावहसुंदरीखिलीफा
सेविदाहोयउसीमकानमेंआईऔरमुझेकहाकियहदुखतुमकोमेरेकारणपहुंचे
परंतुमुझेतुमसेअधिकभयथा पकऊंआमकेमेंहोनाहै मुसल्मानउसकाजलगंगाजी
केतुल्यपवित्रजानतेहैं कछुतोतुम्हारा औरकछुअपनाअवधीछोरकरवोकिसीभांति
काडरनहींतदनंतरहमदोनोंनेमिलकेभोजनकिया औरबहुकालपर्यंतवार्ताकरते
रहेनिकोकिखिलीफायहांशयनकरतेहैंभेटनहींहोसकीमेंबड़ेआनंदमेंउसदिवसमा
कानमेंसोरहाऔरमेनमें अतिप्रसन्नताथीकिईश्वरनेमुझे अतिसुंदरीस्त्रीकृपाकीजो
रूपअनूपऔरचतुरताऔरप्रवीणतामें अद्वितीयहैअरुणोदयहोतेहीवहसुंदरीमु
झेजेबदाकेमेंटकोलेगई औरसबभांतिऊंचनीचमुझेसिखायेजोजेबदायहकहेतो
तुमयहउत्तरदेनाजोयहकहेतोतुमयहकहनानिदानवहमुझेजेबदाकेमकानमेंकि
वहुतबड़ाऔर बादशाहीसामानसे अलंकृतथालेजाकरएकस्थानपरखड़ाकियाऔ
रकहावहअपनेशयनस्थानसेउठयहांवैठगी औरआपचलीगईपहिलेवोसखियां
नवयौवनाअंगनारूपवानऔरउत्तमआभूषणऔरवस्त्रसेअलंकृतवहांआई औरतब

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

के सन्मुख जो जेबड़ा के बैठने को बिछाया था दो पंक्ति बांध खड़ी होगई तदनंतर और बीस
स्त्रियां वैसी ही सुंदर पहिले सम्मुख के समान वहां से निकली उनके मध्य में जेबदा बड़ीन
मक और हंस गति से निकली ऐसे रत्न पहिने थी निज पर दृष्टि न ठहरती और आभूषणा
दिक के भार से धीरे धीरे चलती जब वह रत्न जड़ित तख्त पर बैठी उसको बांदियां अपने
अपने उचित स्थान पर खड़ी रहीं और वह सुंदरी कि उसी की पोषित और मेरी प्यारी थी
आप उसके दाहिनी दिशि बड़ी नमक फमक से खड़ी हुई उस समय एक बांदी ने मुझे सैन
से कहा मैं तख्त के आगे जाकर प्रणाम करने को इतना झुका कि मेरा शिर कालीन पर
जहां उसके चरण थे लग गया और देर न कर इसी भांति झुका रहा यहां तक कि खुद जे
वदा ने निज मुख से मुझे शिर उठाने को कहा और मेरा नाम जाति पांति संछा मैंने उसका
यथोचित उत्तर दिया मुझे देख और मेरी बातें सुन हर्षित हुई और कहा मैं चाहती हूं।
कि अपनी पुत्री का तेरे साथ विवाह करूं और विवाह की सामग्री तयार करने को आ
ज्ञा देती हूं आज के दशवें दिवस तुम्हारा विवाह होजावेगा इस समयांतर में खलीफा
से भी आज्ञा ले लूंगी दस दिन पर्यंत तुम यहीं हो प्यारी से रहो निदान मैं दशो दिन त
क उसी दिव्य मंदिर में रहा वह सुंदरी एकांत में बहुधा मेरे निकट आती और फिर चा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
१९

19

लीजाती मैं वहां अत्यंत हर्षित और प्रतिष्ठापूर्वक रहा और जेबदाने इस कालांतर में खेले
फ्रासेभी आज्ञा लेली और बहुत साद्रव्य मेरी प्यारी को दिया वहां प्रतिदिवस गाना ना
वना आनंद मंगल होता जब नौ दिन व्यतीत हुए दसमें दिन विवाह की तय्यारी हुई उस दि
न हम दोनों दूल्हा और दुलहिन स्नान कर उत्तम उत्तम वस्त्र पहिने संध्या को मेरे वालेवो
दियों ने नाना प्रकार के पाक चुने उनमें से एक थाल में लहसुन का पुलाव था जिसे तुम भा
ईयों ने मुझे बरजोरी खिलाया मैंने उसमें स्वादिष्ट पा और यथा कौं की अपेक्षा रुचिपूर्वक खा
या परंतु अभ्यस न होने से किंचित भोग न था हाथ अच्छी तरह न धोए आलस्य से केवल रू
माल से हाथ पोंछ लिये फिर जब रात्रि भई वहां पर बहुत से दीपदान प्रज्वलित कर
वा दियों ने नृत्य गीत आदि आरंभ किया एक ओर गाना बजाना हो रहा था एक ओर न
कलें होतीं जब विवाह की रीतें हो चुकीं बादियों हमको नो संगमागार में ले गईं मैंने भा
ग की इच्छा की अकस्मात मुझसे मेरी स्त्री अत्यंत अप्रसन्न और क्रोधित हुई और बड़ा शो
र मचाया कि सब बांदियां इसका हाल मालूम करने के लिये दौड़ी आईं मैं यह दशा देख
अत्यंत विस्मित और चौकन्ना हुआ उसके भय से उसकी अप्रसन्नता का कारण पूछने सा
का निदान बांदियों ने दुलहिन से सबको सुंदरी अच्छी तो हो का डावतम को पड़ा कि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

इननेहीकालमेंतमपेसी अर्थीछेहोविलाईकब्बआसादोनोहमउसकाअपायकरेंउ
सखंदरीने अनिकोपितहोकरकहाइस अर्थोगएऔरमत्रविकोअभीमेरेसन्मुखसे हू
ठाओमैनेडुरनेहुरते कहाहैखंदरीमुफसेपेसाकौनसाअपराधहवाकिएकहीवेर मु
फसेपेसीकोपितहोगईउसनेअशमननासेकहातबजनठोटऔरउष्टहेतनेलहमसन
काफुलावत्वाया औरहाथनहींयोयान्नहींजाननाकिमुफोपेसमहामलिनमनुष्य
कोसंगतिसे अतिग्लानिहै अभीतकमेरामनगजउसवांथसेफटाजाताहैतदनंतरउस
नेबांदियोंसेकहाइसकोपृथ्वीपरलिटाओ औरचाबुकमुफेदोउन्होंनेतबरंतमुफेगिरा
याकरईएकोंनेमेरेहाथपकड़े औरकईएकोंनेपांवमेरीडलहिननेमुफेइसनिर्दयना
औरकठोरताईसेमाराकि थकितहोगईतदनंतरबांदियोंसेकहा इसकोपुलिसमेंले
जाओऔरपुलिसदारसेकहो इसकेहाथकोजिससेइसनेलहसनकाफुलावत्वायाहै
काटडालेमैंनेअपनेमनमेंकहाहैपरमेश्वरइसअंतलमअपरायपरमैं इननामागयाऔ
रसवहाथकटाजानाहैवहपाककरताजिसनेउसपकायाथा औरवहबांदीजाउसला
ईथीमरजातीनिदानप्रमेकबांदीकोमुफपरदयाउपजीयह आज्ञाहुनहाथबाथकेउ
ससेविनयकीहमारीमुक्कीबहिनहमारीमुक्कीवीवीबजनकोधिननहोयहसमहै

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्वि
२१

20

किइसकाबड़ाअपराधहै औरबड़ीसुविनाकीपरंतुयहतुम्हारीपदवी औरसवकुनाकोन
जाननाथा अबइसकाअपराधक्षमाकरोउसकोयथोचितदंडमिलचुकाउसनेकहाइ
ननेहीदंडसेमेराबोधनहीहुवामैंचाहतीहूंकिइसेसिखाऊंकिवहनिर्मलरहेजबतककि
मैंकठिनचिन्हउसकोनहूंगीकदापिस्मरणनरहेगाकिहाथनधोनसेक्याहोताहै तबउ
न्होनेफिरबिनतीकीउससमयतोवहचुपहोरही औरऊषवनकहानदनेनरउसमकान
मेउठचलीगईवहसबबांदियांभीउसकेपीछे २ होलीं औरसुफेदसीदशामेंअकेलाछो
डदियादसदिनतकमैंबंदीरहाउसकेभयसेकोईदासीबाबांदीमेरेनिकटनआईपरंतु
एकहद्दाकभी २ ऊछ्छ २ मेराखानेकोलातीएकदिनमैंनेउससेअपनीउलहिनकाहता
तपूछाकिवहक्याकरतीहैउसनेकहावहरोगीहैउसडरोगयसेजोतुम्हारेहाथउसकेम
गजमेंप्रवेशहुईथीभाईतुमनेलहसुनकापुलावभोजनकरभलीभांतिहाथकोंनहीं
धोयेमैंनेकहाअबतोमुझसेअपराधहुवाबाहरेइनस्त्रियोंकीकोमलताऔरक्रोधइ
तनाकिइतनेथोड़ेसे अपराधपरक्यानकियाइतनेकहे औरदंडपानेपरभीमैंअबतक
उसकोवैसाहीचाहताहूं औरउसतरुणपक्षबिअनंतएकीएकफलकेदोवविनाअंतविक
लऔरअधीरहूंएकदिनउसहहअनुचरीनेकहाअबतेरीस्त्रीआरामहोगईआजवहस्ना

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नकोस्नानागारमेंगईहै औरउसनेमुझेनेरानामलेकेकहाहैकिकलकेदिनमेंदेखने
आऊंगी अबतकभीथीछौरवववहस्हदरीजेबदाकीअंगनप्यारी औरउसकीसखीहै नि
दानद्वितीयादिवसवहमेरेदेखनेकोआईऔरकहामैंकेवलतुझेदेखनेआईहूंफिर
उसनेअपनेलौंडियोंसेमुझेबंधवायाघपड़वाया औरनिर्दयता औरकठोरमनसेउस्त
राहाथमेंपकड़ाचारोंहाथपांवके अंगूठेकाटडालेएकस्त्रीनेदौड़करकिसीहलकाम
लपीसमेरेघावोंपरलगादिया जिससेरुधिरबंदहोगयापरंतुपीड़ासेमुझेमूर्छाआग
ईजबसुधिभईउन्होंनेथोड़ीसीमदिरापिलाईजिससेमुझेकुछसामर्थ्यहोगईअपनी
स्त्रीसेमैंनेकहा आजमैंसौगंदखाताहूंकदापितफिरकभीऐसेकुलक्षणएलावका
भोजनकासंयोगहोगातो अपनेहाथोंकोएकसौबीससेवरअस्नानऔर अमुकघासकी
भस्मऔरसाबनसेधोऊंगायहसुनमेरीस्त्रीनेकहाकिवहकष्टजोमुझपरपड़ाहै मैंभी
सहलजाऊंगी औरतुझेअपनापतिजाननेसेसाथरहाकरूंगी उसबुगदादीनेफिरमैंने इ
ननाकहइसससभामेंकहाहैमित्रोइसलक्षणएलावकेभोजननकरनेकायहीकारणहै
निदानबांदियोंनेमुलसानकानेलखलीफाको औषधिआगारसेलाकरमेरेघावोंपर
लगायाकुछदिनमेंमैंअच्छाहोगयानदंनतरमैं औरमेरीस्त्रीपरस्परआनंदमंगलसेर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सटि हने सहने लगे मानो मैंने कभी भी पुलावन खोया था परंतु जो मैं मुख्य बादशाही मह
२१ ल में रहता था और बहुधा छिपाया और वेदक्रिया जानता था इस कारण उदासीन रहता प
रंतु अपनी स्त्री के भय से इस बात को न कह सका उसने मेरे अंतःकरण को बान समझ जेब
दासे हमसे रुष्ट हमें रहने की आज्ञा मांगी जेवदा जो मेरी स्त्री को बहुत प्यार करती थी स्त्री का
रकर चुप हो रही जब एक मास सम्पूर्ण व्यतीत हुवा मैंने अपनी स्त्री को दावा कि अपने मकान
की ओर चलो आती है और कई सेवक अशरफियों के तोड़े लिये हुये उसके पीछे २ आ
ने हैं जब वह तोड़े रख चले गये मेरी स्त्री ने मुझसे कहा तुम्हारे क्लेश के कारण जब दासे
मैंने अलग रहने की आज्ञा लेली और उसने पचास हजार अशरफी कृपा कीं कि हम सब
तिए इस नगर में वास करें और दस हजार अशरफी को मुझे दे कहा कि कोई उत्तम गृह अप
नी प्रतिष्ठा के अनुसार मोल लेलो मैंने तब एक गृह मोल ले लिया और उसे उत्तम वस्त्र
ओं से अलंकृत कर उसमें जा रहे और बहुत सी बांदियां और दासी दास मोल ले उत्तम २
वीर पहिने और आनंदपूर्वक विहार करने लगे परंतु पश्चाताप है कि थोड़े दिनों में मेरी
स्त्री रोगयुक्त होके कालवश हुई तदनंतर मैंने दूसरा विवाह किया अकस्मात वह भी
यमलोक को पधारी फिर तो सखी का संयोग हुवा सो वह भी इसी भांति मर गई मैंने उस स्त्री

21

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हकोअशकुनसमझकेचउठाला॥ औरवोपारकीवस्तुमोललेपारसकोगया॥ औरवहांसे
समरकंदकोफिरवहांसे यहांआरहनेलगाउसमोदीनेबादशाहकाशागरसे विनयकी
किहेस्वामीदीनपालकउदाहरणयहवहकथाहैजोबुगदादीव्यापारीनेउसीसभाकेस
न्मुखजिसमेंमैंकहथावर्णनकीबादशाहनेकहायहकथानिःसंदेहखूबअद्भुतहैप
रंतुहमारेकुबड़ेकेदुर्गतिकोंनहींपहुंचती इतनेमेंयहूदीवैद्यनेविनयकीहेस्वामी मेरीक
थाकोआपसुनकरप्रसन्नहोंगेबादशाहनेकहाजोतेराचरित्रकुबड़ेसेविचित्रहोगातो अ
पनेछूटनेकीआशामतरखियो बादशाहकाशागरकेसन्मुखयहूदीकेकवर्णनकथाय
हूदीवैद्यनेपृथ्वीचूमविनयकीहेस्वामीमैंदमिश्कनगरमेंवैद्यकीकिया करताथाअपनेसं
गुणकेकारणउसनगरमेंबड़ीप्रतिष्ठा॥ औरसत्कारयुतरहाएकदिनवहांकेहाकिम
नेमुझेबुलवाय आज्ञाकीकिएकरोगीकोओषधिकरो तदनंतरवहमुझेआपही प
कमकानमेंलेगयावहांपरएककिशोरअतिसुंदरमनुष्यलेटाहुआदेखाजोपीड़ासे
अतिव्याकुलथामैंनेप्रणामकिया उसनेउत्तरनदियापरंतुसैननसेकहाकिमैंतुम्हारे आ
गमनसेकृतज्ञहूंआनबमैंनेउससेकहा अपनाहाथमुझेदोकिमैंतुम्हारेआगमनसे
कृतज्ञहूंआनबमैंनेउससेकहाअपनाहाथमुझेदोकिमैंतुम्हारीनाड़ीदेखूंउसनेबा॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सत्र
२२

योंहाथदियामैंअमंतआश्चर्यछिन्नहुआ औरजानाकिवहइसरीतिकोनहींजानतानदवे
नरमैंनेनाड़ीदेखऔषधिलिखदीऔरविदाहुआउसकेदेखनेकेलियेमैं नौदिनपर्यंतनजा
ना औरवहवायांहाथदिखायाकरनोदसवेंदिनमैंनेउसनीरोगपायकहा आपअच्छेहो
गये अबमेरेआनेकीइच्छा आपअच्छेहोगये अबमेरेआनेकीइच्छा आवश्यकनान
ही अबआपस्नानकीजियेफिरदमिश्ककहाकिमनेमुझेपारितोषिकदेनिजऔषधि
आगमकोवैद्यनियतकियाऔरअपनेमहलकाइलाजभीमुझसेकराताऔरएकस्थान
मेरेभोजनकेनिमित्तनियतकियावहमनुष्यजोमेरी औषधिसेनीरोगहुआजबमुझेदे।
खताहर्षितहोताऔरबड़ीप्रीतिकरतासोवहअपनेसाथस्नानागारमैंलेगयावहांउता
रनेकेसमयमैंनेदाहिनाहाथउसकाकटादेखाइसीकारणवहरोगीभीहोगयाथा औ
रमुझसेउसमरावनताथाउसकेदेखनेसेमुझेबड़ापश्चात्तापहुआथाउसनेमुझेइसदशा
मैंदेखकहाकेवलमेरा दाहिनाहाथकटादेखआश्चर्यऔरपश्चात्तापनकरोमेराह
तोन अद्भुतहैस्नानकरजबमैंभोजनकरनेबैठूंगा तबवहकहूंगा तदनंतरमुझसेपू
छाजोबागकीसैरकरनामेरेवास्तेहानिकारकनहोतोमैंजाऊं मैनेकहा बागकीसैर
करनातुम्हारेवास्ते अतिलाभकारीहैऔरउसमनुष्यनेकहातुम्हारामनचाहताहोतो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तुम भी मेरे साथ चलो कि मार्ग में मैं निज वृत्तांत को तुम से कहूंगा मैं ने कहा बहुत अच्छा
मैं चला तारुनदंन नगर उसने अपने सेवकों से कहा भोजन बनाओ और हम दोनों बाग की सै
र को गये तो तीन बेर उस में फिरे फिर एक कालीन पर जो एक सघन वृक्ष के नीचे बिछा था बै
ठ गये उसने अपना वृत्तांत इस भांति वर्णन करने लगा कि मेरा उत्पत्तिस्थल मवसिल नगर
है और बड़े घराने का पुत्र हूं मेरे दादा के दश पुत्र थे मेरा पिता सब से बड़ा था केवल अपने पि
ता को मेरा ही एकलौता पुत्र था शेष मेरे चचा अपुत्र थे मेरे पिता ने मेरे पढ़ने लिखाने में बड़ा
श्रम किया और नाना भांति की विद्या और शिल्प विद्या जो मनुष्य को सम्पूर्ण आयु में उपयो
गी है सब मुझे सिखाये जब मैं बड़ा हुआ और एक सभा में बैठने उठने लगा तब एक शुक्रवार
को मेरा पिता और मेरे सब चचा मवसल की जामा मसजिद में गये जब निमाज़ी निमाज़ प
ढ़ चुके और अपने कार्य में लगे मेरा पिता और मेरे चचा नगरों की शोभा का बखान करने
लगे एक मेरे चचा ने कहा कोई देश मिसर जो नील नद पर है बराबरी नहीं कर सकता मुझे उ
नके साथ मिसर की प्रशंसा सुन ऐसी इच्छा हुई कदाचित मैं स्वाधीन होता जो उसी समय चचा
ला जाता यद्यपि मेरे सब चचा यही कहते थे कि बुगदाद और इस नदी के समान कोई नहीं
परंतु मेरे पिता ने मिसर की बहुत सी प्रशंसा कर कहा जिसने मिसर नहीं देखा कर संसार

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि
२२

काअद्भुतवस्तुऔरसेअनजानहैजिसकीधरतीस्वर्गकीसीहै औरवहऐसाउत्तमनिस्थलहै
किपुरवासीवहांकेधनाढ्यऔरसम्पन्नहैं औरस्त्रियांवहांकीअत्यन्तरूपवान औरचतुर
नीलनदबहुतअच्छाऔरजलउसकाअत्यन्तमिष्टऔरपाचन औररोगहरजिसकीसेलाबसे
वहउदिशाकेदेशाकेदेशसदेवहरेरहते औरउसदेशकीधरतीबहुतनरमऔरखेतीकेयो
ग्यहैजिसकेबोनेमेंकिंचित अमनहीहोनाविशेषकरकिसीकविनेउसकीप्रशंसामेंकहा
हैजिसका अर्थयहहै मिस्रवहांकेपुरवासियोंसे अबकीभाषामेंकहनाहैतुम्हारानद
वृथदऔरतुम्हारेलाभकेहेतुसदेवयात्राकरताहैपश्चातापहैकितुमइसनगरअन्यदेश
मेंजारहेहोइननाकहमेरेपितानेकहानीलनदकेदोनोंऔरखेतीबाड़ीऔरसफलहरेरहता
सदेवफूल अफलमेंरहतेहैंनानाप्रकारकेवृक्ष औरसबभांतिकेपशुपक्षीवहांउत्पन्न
होतेहैं औरनगरबहुतबसाऊथाहैऔरमिष्टजलकीनहरेंचलतीहैं औरमहाप्रवीण
मनुष्यवहांरहतेहैंइसीभांतिकी नानाप्रकारकीहजारोंसुंदर २ वस्तुमनहरणवहां
परहैंवहांकेजलऔरहरियालीकीउपमादेकामानोपन्नेकेटुकड़ेस्तेपकेपात्रमेंजड़ऊ
पहेतोउचितहै औरकेरोउसकीदाहलसलननतहैजोबहुतबड़ाऔरबसाऊवाजिस
में अतिसुंदरमंदिरवर्तमानहैंजिनमेंअनेकभांतिकेदिव्यरत्नजड़ेहैं मैंनेबहुतसेनगर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

और शहर आदिक देखि हैं जिसमें बड़े २ प्रतिष्ठित और मिलनसार मनुष्य रहते हैं और अ-
नेक भांति की अतिष्ठित कारक और आनंददायक दिव्य वस्तु उत्पन्न होती हैं मैंने बहुतसी
आयु ऐसे २ सुंदर नगरों में आदरपूर्वक बिताई है फिर उस मनुष्य ने कहा मेरे पिता के मुख
से यह वचन सुन वह चुप हो रहे और कुछ उत्तर न दिया किंतु उन्होंने भी कुछ उसकी प्रशं-
सा की तु फिर उस काल से मिसर देश के देखने की ऐसी लालसा हुई कि रात दिन अधीर रह-
ता परमेश्वर से यह मांगता कि कोई कारण ऐसा हो जाय कि जिस में मिसर को देखूं मेरे
चचाओं ने भी उस देश के देखने की लालसा की और मेरे पिता से कहा हम भी मिसर को च-
लें कि हम भी तुम्हारे साथ चलें मेरे पिता ने स्वीकार किया तदनंतर मेरे चचाओं ने कि वह
व्योपारी और धनाढ्य थे बहुत सी वस्तु व्योपार की मोल ली जब मैंने उसको न छाती
का हाल सुना अपने पिता के निकट रोता हुवा गया और कहा मुझे भी उनके साथ जाने-
की आज्ञा दीजिये कि मैं भी अपने वास्ते व्योपार की वस्तु मोल लूं पिता ने कहा अभी तुम
न्सन अवस्था हो इस यात्रा में तुम्हें डाव होगा तुम्हारा जाना मिसर में ठीक नहीं इस बात
से मेरे पिता से कहा निदान उनके कहने से मेरा पिता प्रसन्न हुवा कि यह दमिश्क पर्यंत हम-
मारे साथ चले वहां से जब हम मिसर नगर को और चलेंगे तो इसम वासिल के और वि-

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दाकर देंगे फिर पिताने कहा दमिश्क भी बहुत अच्छा नगर है और जलवायु भी बहुत उत्त
म है मैं राजी हुआ कि वहीं तक मुझे ले चलिये यद्यपि मैं मिसर के देखने की लालसा र
खता था परंतु पिता की प्रसन्नता भी अवश्य थी दमिश्क पर्यंत भी जाना अति उत्तम जाना।
निदान मवसल से अपने पिता और चचाओं के साथ मैं हलपा मार को चला और वहां से अ
पउलिशा को गया वहां से हलब में पहुंचा और थोड़े दिन रह हम सब दमिश्क में पहुंचे।
में उस नगर के देखते ही अत्यंत प्रसन्न हुआ हम सब एक सराय में उतरे उस नगर को बहुत
बड़ा पाया उसके वासी सब सज्जन और शीलवान थे कई दिन तक वहां के बाग जो अनेक
स्वर्गधाम के समान थे सैर की और उस नगर की शहरपनाह सुंदर और मनभावन थी
हमने इस उपमा को समझा ना कि दमिश्क की सुंदरता और लालिमता स्वर्गधाम के
मानो प्राण हैं मेरे पिता और चचाओं ने थोड़े दिन रहकर आगे जाने की इच्छा कर मेरा अस
बाब बहुत नफे से बेचा कि प्रत्येक थान पर मुझे ५) रु० नफा हुआ जिससे मैं बहुत धनाढ्
य होगया निदान मेरे गुरुजन मुझे दमिश्क में छोड़ आगे चले नदनेतर मैंने खर्च में बहु
त सी किफायत की अपेक्षा एक कौड़ी भी खर्च न करता मैंने एक हवेली अपने रहने के
लिये किराये पर ली वह हवेली अमन मसंगमरमर की बनी हुई थी और सभी नरवाहर।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सेजंगारसेचित्रविदेशयेउसमेंएकउत्तमपुष्पवाटिकाथीजिसमेंवहुतसेफवारेचलतेथे
नेउसगृहकोशीशेआदि अन्यसामग्रीमेंयथोचितथोड़ेदिवसमेंउसेसजायाउसगृहका
स्वामीप्रथमअन्यस्थलरहीमनामेदमिएककारईसथाअवउसकोईरत्नपारखीधनवान
मोललेकिरायेपरचलाताथामैंनेउससेदोअशरफीकिरायेपरलियाऔरमेरेदासदा
सीऔरअसवाववहुततथा अमीरोंकीतरहउसमेंरहनेलगाऔरकभी २ पुरवासियों
कोजिनसेकिमेरीजानपहिचान औरभेंटहोगईथीन्योतनाऔरआदरकरनाऔरकभे
वहुतुफेनिमन्त्रनकरयथोचितसत्कारकरनेइसीभांतिमैंअपनेचचाओंकेपीछे ८
मिएकनगरमेंआनंदमंगलऔरनानाप्रकारकेभोगभोगतारहा औरपुरवासीमेरेस
मीपआतेऔरमेराकामकियाकरतेएकदिनमैं अपनेद्वारपरभोजनकरकेवैठाथाकि
एकस्त्रीअतिसुंदरीउत्तम २ आभूषणऔरवस्त्रपहिनेमेरेसमीपआईऔरकहाकात
मकपड़ेवेचतेहोयहकहमंदिरकेभीतरचलीगईजबमैंनेदेखाकिवहअंदरमका
नकेजाचुकीमैंवहांसेउठाऔरभीतरजायकिवाड़मूंदलिये औरउसस्त्रीकोएकद
लानमेंलेगया औरवैठायकहाहेसुंदरीमेरेसमीपवहुतअच्छेथाननहैंपरंतुएकस्थाना
पहोकिइससमयमेरेपासवस्त्रमाननहींउसस्त्रीनेयहसुनअपनेभावसेवस्त्रउलटलि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्दि
२५

25

यामें उसका द्रपश्च नृपदेव बने हो वेवश ऊवा वह सुंदरी बोली मैं थानी को मोल लेने नहीं
आई मुझे तेरे साथ भोग करनी अंगीकार थी मुझे इच्छा है कि माय क्काल पर्यंत मैं यहां
रहूं यदि तम्हें विलगन लगे मैं इस समय कुछ भोजन किया चाहती हूं मैंने कहा बहुत
अच्छा तत्काल अपने सेवकों को आज्ञा दी कि तुरंत कुछ रुचि भोजन और उत्तम फला
दिक लाओ उन्होंने उसी समय ला दिये पि: रहम परस्पर बैठ बड़ी रुचि और स्वाद से खाया
किये और अहंरात्रि बड़े आनंद और विलास पूर्वक कटी अनंतर रसायन किया जब अरु॥
णोदय भया मैंने दस अशरफियां निकाल उस सुंदरी मृगनैनी के हाथ रख दीं उसने उन अ
शरफियों को न लिया और तुरंत फेर दीं और कहा क्या मैं अशरफियां लेने को तेरे पास आ
ई थी फिर जब मैंने बहुत तकरार की उसने कहा जो यही रीति रक्खोगे तो फिर मैं कभी न
म्हारे निकट न आऊंगी उलटी दश अशरफियां अपनी थैली से निकाल मेरे हाथ रख दीं।
मैंने लाचारी से ले लीं और कहने लगी फिर मैं तीन दिवस के पश्चात आऊंगी यह कह
बिदा भई मैंने उसके वियोग में यह समझा कि मेरे चित्त को चुरा के ले गई तदनंतर तीन दि
वस के पश्चात वह सुंदरी उसी समय मेरे गृह आई मैंने प्रीति से आगवानी की और रात्रमैं
ले गया संपूर्ण रैन उसी आनंद मंगल में उसी दिन के समान व्यतीत भई दूसरे दिन बिदा हो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ते समय मुझ से प्रतिज्ञा की कि तीसरे दिन फिर आऊंगी और दश अशरफियां मुझे देक
र चली गई निदान तीसरी भेंट मैं जब मंदिरा का नशा उसे अच्छी तरह चढ़ा मुझ से कह
ने लगी है मेरे परम प्रीतम तुम मुझे कैसा जानते हो मैं सुंदर रूपवान हूं मैं ने कहा यह तु
म्हारा अनुग्रह अर्थ है मेरी प्रीति को तुम ने भली भांति परखा मैं प्राण से तुम पर मोहित हूं तुम
मेरे बीबी हो इस के पूछने से क्या अर्थ है उस ने कहा अब तो तुम यह कहते हो परंतु हमा
री स्त्री को जो मुझ से जान पहिचान रखती है देखोगे तो मुझे भूल जाओगे वह मुझ से अ
वस्था में न्यून है और अत्यंत सुंदर कोमलांगी है मैं उसे अपने साथ लाऊंगी वह मुझ से बहु
त प्रीति रखती और उस से तुम्हारे देखने को अति लालसा है तुम्हारी आज्ञा बिना मैं उसे नहीं
ला सकी मैं ने कहा है सुंदरी जब चाहो उसे ले आओ परंतु मुझे हमारी स्त्री के देखने से क्या
प्रयोजन है मैं तो तुम पर मोहित हूं ऐसा नहीं हो सकता कि किसी भांति की इस में न्यूनाधि
क्य होउ स्त्री ने कहा इसी प्रण पर स्थिर रहना मैं तुम्हारी परीक्षा लेती हूं जब यह बात ता
हो चुकी वह सुंदरी मुझ से विदा भई और उस दिन पचास अशरफियां मुझे दीं और मुझे
भी लेनी पड़ीं जाते समय कहने लगी दो दिन के पश्चात एक नवीन अतिथि तुम्हारे घर।
आवेगा उस के निमित्त भोजन आदि तैयार रखना और मैं भी अपने नियम पर आऊंगी मे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नेजिसदिनउसके आनेकाहुनाथाउसशहरकोकुड़वाकरविछौनाविछवारक्खाओ
रनानाप्रकारकेपाकओरफलन्यारेरक्खेनिदानसंध्याकोवहदोनोंस्त्रियांआई ओर
भीतरजायदोनोंनेअपने २ मुखसेवस्त्रउतारलियावालवमेंदूसरीदशभागपहिलीसे
प्रसेकविषयमेंअधिकथीजोएकदृष्टिपहिलीपरपड़तीतोकईबेरदूसरीपरक्योंकिव
विउसकीऐसीअनूपमनहरणदुखविदारणआनंदकरणथीकिआपसेआपचित्तकोआ
कर्षणकरतीओरजबउसकोकामकीदृष्टिसेरूपपरपड़तीतोमैंअधीरहोजाता।निदान
मैंनेदोनोंकीकृतज्ञताकीदूसरीस्त्रीनेकहामुझेउचितहैतुम्हारीकृतज्ञहूंकितुमने
मुझेअपनेघरमेंआनेकीआज्ञादीतदनंतरमैंनेउनदोनोंस्त्रियोंकोभोजनपरबैठाय
आपने आतिथ्यअर्थात्दूसरीस्त्रीकेसन्मुखजाबैठा ओरवहपहिलीस्त्रीकेभया
सेमेरी ओरदृष्टिओरहंसनसकीपरंतुउसनेहावभावकटाक्षोंसेमेरेमनकोमोहले
या जबउसनेजानाकिमैंप्राणसेमोहितहूंतबउसनेमेरेसेप्यारकीबातेंकीपहिली
स्त्रीयहसबजानगईप्रथममुसकरायकहनेलगीमेरेप्रीतमइसस्त्रीपरक्योंदृष्टिकरा
तेहोअपनेसौगंधओरप्रणकोविसर्जनकरगयेमैंनेभीउसीतिरस्कारकरकहातुममुझे
व्यर्थदोषलगातीहोमुझेक्याउचितहैकितुम्हारीआज्ञाकेविपरीतइसकोकिबड़ीद

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

यासेमेरेस्थानपरलाईहो आविडगदेखिइसबातमेंउमटोगेंकेनिकटमेरीलजाहेजबह
मवझनसो मदिरायीमटोथझयेनवीनथोओरमैंचोरी २ परस्परदेखिने ओरपरस्परक
टाक्षकरतेपहिलीस्त्रीकोपसीआहओरवैरझवाकि अनंतकोधितहोययहकस्खवड़ी
झईकिमैंअभी आतीहूंकुछकालमेंदूसरीस्त्रीकिमेरेसमीपबैठीथीउसकेसुखका
वर्णओरकाओरहोगयाओरअंतसमयकीसीदशाहोगईमैंने गर्दनमेंहाथडालउससे
भालाकिऊपरसीपरसेगिरनपड़इसनेमेंवहकालवशझईमैनेचववाकेअपनेसबकों।
कोवुकाराकिइसेथांमेओरबाहरनिकलकेसबोंसेकहाकियहपहिलीस्त्रीकिथरगईमेरेस
वकोंनेकहाकिद्वारसेबाहरनिकल अमुकगलीमेंहोचलीगईइसमुकेविदितझ।
वाकियहडसीकीडहनाहेपिछिले गिलासमेंबियमिलाउसेपिलागईइसअकस्मात्
उपाधिसेमेंअत्यंतविस्मितओरघोचितओरभयभीतझवादेखिये इसकेपलटकोन
आपदासुझपरपड़तीहेफिरयहसोचा आगेजोकुछहोसोहोअबइसकोलोथ्यतरे
नगाड़दियाचाहियेतदनंतरमैंनेसबकोंसेकहाकिसंगमरमरकेफरशकोजोउसघ
रभरमेंबिछाहेथोरे२खोदोउन्होंनेतत्कालखोदडालातबमैंनेउसीमृतककोउसमें
गाड़दियाफिरमैंनेकुछयत्नअपनेसाथलेशेषवस्त्रकोमकानमेंबंदकरझफल।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सर्दि
२०

गाया औरउसपरअपनीमुहरकर द्वारपरतालालगाया औरउसरत्नपारखीकेनिकट
जायएककवर्षकाकिरायापेशगीदेकहा यहकुंजीउसहवेलीकीहैअपनेपासरखिओक
नामुझेकुछआवश्यकताहैमैंकेईमेंअपनेचचाओंकेनिकटथोड़ेदिनकेलियेजाता
हूंयहकहविदाभयाऔरअश्वपरआरूढहोयनिषधंककेदेकेओरचलाकुनदिनमेंकै
हपकेचअपनेचचाओंसेभेंटकीवहमुझेदेखआश्चर्यितहुएऔरकहनेलगेतुमकोंकर
यहांआयेमैंनेकहातुम्हारे आगमनकीबाटदेखतारहाजबतुमने आयेऔरनकुछखबत
म्हारीक्षेमकुशलइसअवधिमेंपाईघबराकेचलाआयाउन्होंनेमुझपरबड़ीदयाकीऔ
रप्रणकियाहमसबतुम्हारेपितासेतुम्हारीसिपारसकरेंगेक्योंकिवहतुम्हारेयहां
आनेसेअतिअप्रसन्नहोगाकितुममेरीआज्ञाविनाक्योंचलेआएतदनन्तरउसीसमय
मेंजहांवहसबडेरेथेमैंभीरहाऔरवहांकेजोअद्भुतनमासेथेभलीभांतिदेखेजब
मेरपिताऔरचचाओंनेसबव्योपारकीवस्तुबेचसबवस्तलनगरमेंजानेकीतयारी
कीमेंअभीकेनअच्छीतरहनदेखचुकाथाकिसीओरहरस्थानपरविख्यपकेजारहाज
बनकवहवहांसेजगए अपनेस्थानसेनहिलाउन्होंनेमुझेबहुतढूंढापरंतुमैंन
मिलासबनेयहीसमझाकिवहइसीलज्जासेकिविनाआज्ञाअपनेपिताकेयहांआ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

याआफिरदमिश्ककोचलागयावहांपऊंचहमउसेअपनेसाथलेजाविंगेयहविचारवहांसे
चलेगएमैंयहांनगरकेबीचमेंतीनवर्षपर्यंतरहाऔरदमिश्कमेंरत्नपारखीकेनिकटवार्षि
ककिरायामेंचदेतारहा औरलिखिभजनाथाकिमेराअसबाबरत्नासर्वकरखिनामेंशी।
घ्रहीवहांपऊंचनाहूंपरंतुजोआपदामुझपरदमिश्कनगरमेंपड़ीउसेसुननेसेआश्चर्यि
तहोगेनिदानजबमैंवहांसेदमिश्कमें आयाप्रथमउसजौहरीकेनिकटगयावहमुझे
देखहर्षितहुआऔरमेरेसाथउसमंदिरतकआयामैंनेउसकुफलऔरमोहरकोवैसाही
पायाजबवहरत्नपारखीचलागयासेवककेसाफकरतेहुवएंकीमालाजोजौहरके आ।
कारजिसमेंदससदानेदिख्यमानियोंकेपिरोयेहुएथेपड़ाहुआपायावहउसेमेरेनिकट।
ले आयामैंनेउसमालाकोपहिचानाकियहवहीमालाहैजिसकोउसमृतकस्त्रीके।
गलेमेंदेखाथाऔरखबरहुईमुझेउसकीऊकब्रखुलिनथीनिदानवहमालादेख
उससुंदरीकोस्मरणकरकेहुतरोयाऔरकपड़ेमेंलपेट गलेमेंडाललिया तदनंतरमैं
उसनगरमेंरहनेलगायहांतककिसंपूर्णधनजोमेरेनिकटथासबखर्चहोगया औ
रबेचनेलगा प्रथममैंनेमालाबेचनेकीइच्छाकीपरंतुमुझेमोतीकेमूल्यकीसंख्या
काज्ञाननथाइसलियेमैंपेसेडरमेंपड़ाजिसेसुनकरतुमकोपश्चातापहोगामैंउ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्त
२८

से चौकमेंलेगयाऔरकहाउसेएकदलालकेहाथदेकहाइसकोबेचनाहै उसदलालने
कहाऐसेमोतीमैंनेकभीनहींदेखेऐसावहमहालमोती अलभ्यहैफिरवहदलालउसकोअ
रत्नपारखीकीदुकानपरजिसकेघरमेंमैंरहताथाबैठागयाऔरकहाआपयहाँठहरो
इसकोमैंबाजारमेंदिखाऔरइसकेमाललेनेवालेकोढूंढताहूंजोकछइसकामोलठ
हरेसोभीआपसेआकरकहताहूंक्षणमात्रमेंउसदलालनेचुपकेसेआकेकहा इसकामो
लदोसहस्त्रअशरफीहैपरंतुअबकोईपचासअशरफीसे अधिकनहींदेतामैंनेकहाजिस
मोलपरबिकेसबफेलादेवहदलालउसीबोपारीकेनिकटजोपचासअशरफीदेताथा
गयाऔरकहाइसकापन्नीइसनेमोलपरराजीहैवहबोपारीयहसुनतेहीउसदलाल
कोएकड़कोतवालकेनिकटलेगयाऔरउसमालाकोदिखाएकहावहमालाचो
रीगईथीअबचोरअपनेकोबोपारीठहराकेबेचने आया औरवहचौकमेंवर्तमानहै
दोहजारअशरफीकीमालाकोपचास अशरफीपरदेनास्वीकारकियाहैइससेसहीवि
तेहैकियहचोरहैकोतवालनेचरकंदाजोंको आज्ञादीकिउसेबांधकेबजनमारोको
इतनासस्ताबेचताहैकोतवालनेमुझेएकड़केबुलवामंगायायहमालातेरीहै मैंनेका
हाहायहमेरीहैनिदानकेतवाल अन्याईनेमुझे इतनामाराकिजिसकेभयसेमैंनेबो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रीकाकरकियाज्योंही यहरत्नाभोंहीमेरादाहिनाहाथकाटडाला ओरमालामुझसे
छीनलीमेंउसीघरमेंजिसमेंमेंरहताथापीछेसेनइफताहुवा आयामेरेसेवकमुझे।
कोनवालकेभयसेछोड़करचलेगयेचौथेदिनक्यादेखताहूंकिबकुनसेपुलिसदार
मेरेघरघुसआये उनकेसाथथरवालाओरवहपापीजिसनेमुझपरचोरीलगाई
थी आयाउन्होंनेआके मुझेरस्सीसेबांधाओरबकुनसेउर्वचनकहनेलगेयहमालाया।
होकेहाकिमकीहैतोनबंधकुयेकियहखोयागयाथा ओरउसीसमयसेउसहाकिम
कीपुत्रीभीगुमहैयहसुननेमेंहाथकटनेकीपीड़ाभूलगयाओरतरहतरहकेसोचोंमेंपड़गय
ह आपत्तिपहिलेसे अधिकथीतदनंतरथोड़ेदिनोंकिजोकुछहोसोहोहाकिमयातो
मेराअपराधक्षमाकरदेगावाबधकरेगाइसमेंभीमैंअसमर्थहूंकिइसडावसेतोमेंछूहूंगा
उन्होंनेमुझेहाकिमकेसन्मुखकियाहाकिमनेमुझेदयाकीदृष्टिसेदेखछुड़ादिया।
औरअपनेसेवकोंसेपूछायहवहीमनुष्यहै जिसनेमालाबेचनेकोभेजाथासबनेकहा
यहवहीहैहाकिमनेकहायहचोरनहीं इसपरव्यर्थअपराधलगायागयाओरआज्ञादीजिसका
पापीनेइसमनुष्य परचोरीलगाईहैउसेबधकरोवहतत्कालहीमारागयातदनंतरहा
किमने सभाकोबिदाकरएकांतमेंमुझसेकहाहेपुत्रमुझसेमत अभयहोकरकहोकिय

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
२९

हमालातेरेहाथक्योंकरलगीइसकेवर्णनमेंमुझसेकोईबातउठानराखेनामैनेउनदोनों
स्त्रियोंकावृत्तांतऔरपहिलीकेउद्वहकाकारणदूसरीस्त्रीकाविषसेमरनाविस्तारसेवे
कवर्णनकियाहाकिमैनेसुनआज्ञादीकिपरमेश्वरकीइच्छामेंकिसीकाकुछउपा।
यनहींमैंउसीईश्वरकीइच्छापरपरमसन्तुष्टहूंऔरकृतज्ञहूंनदेननरमुझसेकहाहेपुत्रतफ
परजोयहआपदापड़ीमुझेबड़ाशोकहुवा अबमैंअपनावृत्तांतवर्णनकरताहूंकिवह।
दोनोंस्त्रियांमेरीपुत्रीथींप्रथमजोतुम्हारेघरगईवहबड़ीबेटीऔरदूसरीछोटीमैंनेबड़ीबे
टीकाविवाहकेह्रमें अपनेभ्राताकेपुत्रकेसाथकियाअकस्मातउसकापतिकालवशहु।
आऔरवहकईवर्षपर्यन्तमिसरमेंरही औरवहांससेंकउंऊकम्पसीदेकरमेरेघरआई
औरदूसरीस्त्रीजोउससेछोटीथी औरतुम्हारेथाथींजिसकेप्राणनिकलेवहबहुतबु
द्धिमानऔरसुकर्मिणीथीकभीमुझेउससेदुःखनहुवाबड़ीबहिनउससेभीऊमांगकरअ
पनेसाथवाहरलेजातीउसकेमरनेकोएकदिनव्यतीतहुवाथाकिमैनेभोजनकेसमयउ
ससेपूछावहकहांहेकलसेमैनेउसेनहींदेखाउसकीबहिनयहसुनरोनेलगीमैं स
मझगयाकिउसपरकुछआपदावाउपद्रवपड़ातबमैनेउससेपूछाजोकुछवृत्तकेउसकावृ
त्तांतविदितहोकहउसनेठंढीसांसभरकहामैंइसकेसिवायकुछनहींजानतीकलवे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दिनमेरीबहिनउत्तम २ वस्त्रऔरमोतियोंकीमालापहिरकरहीबाहरगईथीनवसेदेखन
हीऔपडुतीयहस्त्रनमैनेउसिनगरमेंबहुतढूंढवायापरंतुकहूंभीउसअभागीकापतानला।
नमालूमहुवाकुछसमयकेपश्चात्उसकीबड़ीबहिनउसअपने अकर्मसेलज्जितहुई
औररात्रिदिवसकेवास्तेरुदनकरतीऔरखानापीनाछोड़दियायहांतककिरोगीहो
गईकईएकदिनमेंकालवशहुईअबनेनरहाकिमैनेकहाहेपुत्रयहमतसमझोदोनोंअभागेहैं अ
बअपनाशोकचित्तसेभुलादेतेराविवाह अपनीतोसरीकन्यासेकरदेंगावहदोनोंसेछो
टीऔरबड़ीरूपवानहैतुमउससेदोखबहुतप्रसन्नहोगेऔरसदैवउससेराजीरहोगेमेरे य
रकोअपनाघरसमझोमेरेपीछेतुममेरेवारिसहोगेमैनेकहामैंसबभांतिसे आपका
आज्ञापालकहूंतुम्हारीकृपाकामैंकृतज्ञहीहोंसुलताउसनेकहाअबदेरनकरोफिर
साक्षियोंकोबुलगयप्रगटरीतोंकेविनाअपनीपुत्रीकोमेरेसाथब्याहदियाऔरअपना
सम्पूर्णधनऔरराज्यमुझकोलिखिदियातुमनेभीहाकिमसेभेंटकरतीसमयमुझकोपरदया।
करनेदोखोहोगाकलएकमनुष्यमेरेचचाओंकामुझकोढूंढतेमेरेनिकटआयाऔरउस।
कापत्रमुझकोदियाजिसमेंमेरेपिताकामरना औरमेराबुलानालिखायाकि अपनेपिताकी
थानीकोआकेलेपरंतुअबमेराविवाहहाकिमकीपुत्रीकेसाथहुवाहैऔरमवस्ता।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सरि को जाना कठिन था इस कारण मैंने अपने बच्चों को लिख भेजा है कि मेरा आना किसी भांति।
१० वहां नहीं हो सका मैं यहां आपके आशीर्वाद से प्रसन्न हूं मैंने अपने पिता का द्रव्य अपनी ओर से
तुमको दिया उस पुरुष ने अपना वृत्तान्त सम्पूर्ण कहा अब मुझे विश्वास है कि तुम्हें मेरे दाहिने
हाथ के न देने का वृत्तान्त भली भांति विदित हो गया होगा जब वह चरित्र समाप्त भया उस यहूदी
वैद्य ने काशगर के बादशाह के सन्मुख कहा यह कथा मवस्सल के व्योपारी की है मैं उस स
मय दमिश्क में था ओर उस बादशाह के जीवन पर्यन्त दमिश्क में उसके निकट रहा जब वह का
लवश हुआ वहां से उदास होय पारस देश में गया ओर खारस के देशों में सैर कर हिंदुस्तान में ओ
र वहां से आपकी राजधानी में पहुंचा अपने पुराने वैद्य कर्म को करता रहा काशगर के बाद।
शाह ने कहा यह कथा जो तूने कही अद्भुत है परंतु इस कुबड़े के वृत्तान्त के समान नहीं तुम।
योंछ न थरो कि इसी के कारण तुम छुटकारा पावोगे याद रक्खो मैं तुम चारों को इस कुबड़े की
हिंसा के बदले बध करूंगा न दर्जी ने तब यह स्वीकार कर उठ बादशाह के सन्मुख आ गया ओर उसके
चरणों पर गिर कहा एक वृत्तान्त विनय करता हूं मुझे परिपूर्ण विश्वास है आप उसके श्रवण
से प्रसन्न होंगे बादशाह काशगर के सन्मुख स्वीकार के मुख से वर्णित कथा स्वीकार ने
प्रणाम कर बादशाह काशगर के सन्मुख इस कथा को इस भांति वर्णन किया एक व्योपारी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ने इस नगर में अपने मित्रों को निमंत्रण कर नाना भांति के पाक खिलाये और उसके भी सो ना
परसों प्रातःकाल को उसके निमंत्रण अनुसार मैं उसके घर गया बीस मनुष्य वहां मैंने बैठे दे
खि परंतु मालिक वहां न था हम सब उसके आगमन की बाट देख रहे थे इतने में क्या देखते हैं
कि वह एक सुंदर लंगड़े मनुष्य को अपने साथ लिये चला आता है हम सब उसे देख उठ
खड़े हुये वह उस लंगड़े मनुष्य को जहां हम थे लाय बैठाने लगा वह मनुष्य वहां बैठने ल
गा कि इतने एक नापित अर्थात और बाल बनाने वाला उसे दृष्टि पड़ा उसे वहां बैठे देख पाछे
ले पाओं फिरा और उस सभा से निकल चले जाने की इच्छा की मालिक इस बात से आश्चर्यित
हुआ और कहा हे मित्र तुम कहां जाते हो मैंने तुमको इस निमित्त आमंत्रण दिया था कि मेरे घर आ
कर कुछ भोजन करोगे सो भोजन तय्यार है उसे बैठ के सब मित्रों सहित भोजन करो
बिना भोजन किये तुम्हें न जाने देवो उस परदेसी ने कहा मैं तुम्हारे घर मरने के लिये नहीं
आया ईश्वर के वास्ते मुझे जाने दो मैं इस दुष्ट कुलक्षण नापित का स्वरूप जो यहां वर्तमान
है नहीं देख सक्ता सबों का रने कहा हम सब उससे यह वचन सुन अचंभित विस्मित हुये इ
तना कि इस नापित से अप्रसन्न है सो उसका वृत्तांत सुनने को उसके चारों ओर बैठ गये और
उससे कहा हम को इस नापित के वृत्तांत सुनने की लालसा है उसने कहा हे मित्रो मेरे लंगड़े

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स॰हि होनेकाकारणयही नापितहुआहै औरइसीकेकारणबहुतसी आपत्तिऔरदुःखमेंपड़ाइ
३१ सनिमित्तमैंनेप्रणकियाहैकिजहांकहींयहनाईहोगावहांमैं नरहूंगाकिंतुउसनगरको
परित्यागकरूंगाहैमित्रोंमैंनेनगरबुगदादनिजवासस्थानको इसीकेवास्तेत्यागदियाऔ
31 रनिजनगरकाबासतजयात्राकरइसनगरमेंपहुंचा परंतुबड़ापश्चात्तापहैयहांभी व
हीवैरीवर्तमानहै इसनिमित्तमें यहांठहरनहींसक्तामुझेक्षमाकरोमैंचलजाय अन्य
देशकोचलाजाऊंगाकिइसकुपात्रलंगड़ेसेरहितरहूं यहकहकर हमसबसेबिदाहुवा
औरमालिककी आज्ञाबिनाचलाजानेलगापरंतुउसनेदौड़केउसेठहराया औरइसे
मकानमेंलेजाकेबड़ेसत्कारऔर आदरपूर्वकभोजनकराया औरअनंतरपानदेकहामैंतुम
हाराकृतज्ञरहूंगाजोतुमइसके अपकारकावृत्तांतजोउसनेतुमसेकियाहै प्रगटकरो
गेहमनेभीइसीभांतिउससेउसचरित्रकेसुननेकीइच्छाकीवहनाईभीवहींवार्तासुनता
औरचुपकाशिरझुकाधरतीकीओरदेखताजाताथानिदानवहमनुष्यउसकीओर
पीठकरबैठाऔरइसभांतिअपनावृत्तांतकहनेलगा पंगुलकाचरित्र मेरापिताबुगदा
दनगरमेंरहताथा औरप्रतिष्ठापूर्वक आनंदसेनिर्वाहकरता औरमैंउसकाएकलौता
पुत्रथाजबबहुकालबशाहुवामैंलिखपढ़निपुणहोयब्योपारकाकार्यभीजाननगया

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जबवहगीताथाउसनेसंपूर्णद्रव्यऔरवस्त्रमेरेनामलिखदीथीमैंसमझकहकथनखेवेकर
तामेरेउनमाचरणसेवहांकेवासीमुझेमित्रऔरप्याराजानने यद्यपिमैंजवानथातथापि
मैंस्त्रियोंकीप्रीतिऔरभोगविलाससेनिपटअज्ञानथाऔरमुझेअंमनलज्जाथीकदापि
स्त्रियोंकीसभामेंनजाताऔरउनसेविलगरहताअकस्मातएकदिनमैंएकदिशाकोजा
था किइसरीऔरसेबड़नसीस्त्रियांआईमैंउनसेबचनेकेलियेएकसत्दमवालीमेंजायए
कनखेतपरजोएकद्वारकेसमीपबिछाथाबैठगया औरयहविचाराकिजबस्त्रियांचली
जावेंगीतोमैंवहांसेअपनेघरचलाजाऊंगा अकस्मातमेरीदृष्टिकेसन्मुखएककीखिड़की।
थी औरउसखिड़कीकेनीचेबड़नसेवृक्षोंकेहरलगेथेमैंवहवृक्षोंखिलेहुयेबैठाहुवा
देखरहाथाइतनेमेंवहांखिड़कीखोलीएकस्त्रीअतियौवनवतीषोडशवर्षकीडाहिपड़ी
जिसयरमैंमोहितहोगयावहमुझेदेखमुस्कराई औरनेनमुझसेलड़ाकरकेवृक्ष वाटि
कामेंचलीगई औरहकोंकोसींवानदनेतरउपसेलोटमुझसेहावभावकटाक्षकरउस
खिड़कीमेंचलीगई औरउसेबंदकरलियाहेमित्रोजिननास्त्रियोंसेअलगरहताउननाक्षे
मैंउसपरमोहितहुवाऔरमूर्छितहोनखेतपरगिरपड़ाजबकुछकसुधिहुईदेखाकिनग
रकाआयाथीशाबअपमथामेसआयाऔरउसीघरमेंचलागयामेनेसमझाकियहउसीकी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्वि
३२

32

कापिताहैअपनेघरमेंऐसीदशामेंआयाऔरविरहकीअग्निमेंजलविछौनेपरऐसागिरा
किचैतन्यताजातीरहीमेरेघरकेलोगयहदशादेखअमंतचिंतितऔरशोकयुक्तहुए औ
रनातेदारजोप्यारकरतेथेयहदशासुनमुझेदेखनेआये औरअमंतचिंताकरएवकहने
लगेतुम्हारीक्यादशाहैऔरतुम्हेंअकालक्याहोगयामैनेचतुरतासे अपनाभेदकि
सीसेनकहाऔरचुपहोगयावह अधिकशोकवानहुयेऔरवैद्यजोकुछऔषधिपि
लातेउपयोगीनहोतेऔरसबउपायनिष्फलजातेकुछदिनमेंसामर्छामेरीजातीरही
मानोहुईरोगहोगयाएकदिनएकहकीमजोमेरेघरकेलोगोंसेजानपहिचानरखतीथी
इसवृत्तांतकोसुनमुझेदेखनेआईऔरबडेविचारसेमुझेऊपरसेनीचेतकदेखातो
प्रगटमेंकोईभीरोगमुझमेंनपायातबमेरेघरकेलोगोंसेकहातुमइसकेसमीपसेदू
रजाओमैंएकांतमेंफिरइसेदेखूंगी जबवहसबचलेगयेतबउसहकीमनेफिरमुझेभ
लीभांतिदेखमेरेकानमेंकहातुम्हारेरोगकोमैनेभलीभांतिपहिचानाप्रगटमेंकोईरोग
तुम्हारेशरीरमेंनहींपरंतुतुमकिसीसुंदरस्त्रीपरमोहितहुयेहोलज्जासेप्रगटनहींकर
तेयदिमुझेतुम्हारीप्यारीकापताठिकानामालूमहोतोयथोचिततुम्हारेप्रयोजनके
अर्थसहायताकरूंगीयहकहमुझसेउत्तरचाहाऔरबहुतसामुझेनेतंगकियाकिमैं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

उससेकुछकहूंपरंतुमैंचाहताथाकिउसेलज्जाकेकारणआपनाहालतोनप्रगटनकरेइस
सनिमित्तमैंनेउसकीओरदेखएकठंढीसांसलीओरकुछनकहाउसनेकहामेरेप्रियइतना
नीभीलज्जानचाहियेमैंतोकहतीहूंकितुम्हारेकाममेंश्रमकरूंगीफिरक्योंमुझसेआप
नामनोर्थनकहो कहतेथेयौवनअवस्थामेंवहरूथाऐसाजवाकरताहैनिदानइनमित्रोंकेउपा
यसेउनकेमनोर्थप्राप्तहोतेहैंउसहहानेइसभांतिकीबहुतसीबातेंकीमैंउसेखुला ओ
रअपनेरोगकाकारणवर्णनकिया ओरउसेयहीमनोर्थचाहाकितुम्हारेहापपकेब
रउसकादर्शनहो ओरमेरीप्रीतिओरमोहकाहालतोतउसकोमालूमहोतोनिसंदेहजीव
नसुफलहैउसहहानेकहाहेपुत्रवहरूपश्रीजिसकातुमनेवर्णनकियानगरकेहाकिमा
केन्यायाधीशकीकन्याहै आश्चर्यनहींकितुमउसपरमोहितहुएवहमहासुंदरी
रूपवतीकोमललागीमनहरणीडावदरणीचंद्रमुखीबुगदादकीस्त्रियोंमेंसेहैपरंतुब
हुओरउसकापिताजिसकोतुमनेदेखाथादोनोंअहंकारी ओरकटुभाषीहै ओरकटु
भाषीहैओरवहन्यायाधीशअपनीलड़कियोंकोकभीघरसेबाहरनहींनिकलनेदेता
ओरउनकोआज्ञादीहैजबतुमकिसी आवश्यकतापरबाहरनिकलोतोकभीकिसी
पुरुषकीओरनदेखनाजबवहबाहरनिकलतीहैंउनकेनेत्रोंपरकपड़ेकीपट्टीबांधो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
३३

33

जातीहै औरग्रंथोकेसमानवांदियांहाथपकड़वालीकुचोंमेंलेजातीहैं यहउसका औ
रउसकेपिताकाहालहैजोमैंनेकहाकदाचितत्वमकिसीदूसरीस्त्रीपरमोहितहोनेनिदान
उसस्त्रीनेवहांनपृथ्वी आकाशादिलायकहायहसबबातेंजोमैंनेकहींसबमर्महैं औरयह
विचारजोमैंकरतीहूं अथवाशोकोकेतोरसेहैपरंतुशमथीछेरकवोदाबोतोईश्वरकाकार
ताहैअबतोमैंजानतीहूं यहकहवहबुद्धियाचलीगईदोतीनदिनकेपीछेफिरआई और
मुझसेकहनेलगीहेपुत्रमैंप्रथमहीकहतीथीवहस्त्रीजिसपरत्वममरनेहोबड़ीनकचढ़े
हैमैंनेउससेबहुतकुछकहापरंतुकुछउसकाविचारनकियाजबमैंनेतुम्हारीबीमारी
काहालकहायहसुनवहचुपकीहोरहनाकीफिरजबमैंभेंटकावर्णनकिया अनंतअवस
रसोभृकुटीटेढ़ीकरमेरीओरदेखाऔरकहातुमनेबड़ीढिठाईकीकिऐसीबातमुझसे
कहीजोफिरमैंकभीऐसीबातसुनूंगी तोतेरामुखनदेखूंगीनदेखनरयहकहउसहठा
नेमुझेबहुतथोड़ादियाकितुममेरासारकवोनिराशमतहोजबतकतुम्हारामनोर्थसिद्ध
नहोगासुफेचैननपड़ेगाउसकेथोड़ेदेनेपरभीमैंनिराशहोमरणतुल्यहोगयाऔरय
हिलेस अधिकमेरीबुरीदशाहोगई परंतुजबकभीवहहाथआतीतोउसेअपनाभेदी
समफकिंचितथोड़ाहोतापकदिनवहआई औरमेरेसमीपबहुतसीस्त्रियोंकोबैठा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

देवि मेरे कान में नृप के स कहा अब तुम्हारे वास्ते शुभ समाचार लाई हूं यह सुनते ही सुफ में
शक्ति और बल आ गया तुरंत उठ बैठा तब दने तर उस हर्षा ने कहा कल सोमवार को मैं उस सुंद
री के निकट गई थी उस समय मैने उसे प्रसन्न पाया अपने को चिन्ता युक्त बनाया और रोने ल
गी उस स्त्री ने मेरी यह दशा देख पूछा मेरी अच्छी माता कुशल तो है आज को शोकवान
हो मैने कहा क्या कहूं बड़ा पश्चाताप है कि अभी मैं उसी मनुष्य के पास से आती हूं उसकी अ
ब आशा नहीं अब तन वह ओर रहा है तुम्हारी प्रीति में उसकी यह दशा हुई अब वह इस्या
योग्य है और तुम बड़ी कठोर और निर्दय हो उस कोमलांगी ने उत्तर दिया मैं तो उस पुरुष
को नहीं जानती कि कौन है और कहां रहता है तुम उसके मरने का अर्थ दोष मुझ पर ल
गानी हो मैने कहा है चन्द्रमुखी गजगामिनी तुम भूल गई मैने तो तुम से उसी दिन कहा था कि
यह वह पुरुष है जो तुम्हारे हार के सन्मुख बैठा था और तुम भी खिड़की बाल पुष्प के हदों का
सींचने के निमित बाहर आई थी उसी समय वह तुम पर मोहित हो गया था और उसी क्ष
ण से तुम्हारे विरह की अग्नि से निशि दिवस जला किया अब उसमें कुछ हाल नहीं उस स
मय जो तुम से मैने कहा था तुम सुन कर अप्रसन्न हुई सो मैने वही सब हाल उससे कहा उ
सत्वाण से और भी उसकी इंगित न हो गई अब जो तुम्हारी उस पर कृपादृष्टि हो तो वह बच जा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
३४

34

नहींतोवहमराचाहताहै जबमैंउसेयहहालतानकहसकी औरअपनाखतप्रथमसेअ
धिकचिंताउसकाबनायाऔरनेत्रोंमेंअश्रुभरलाईतबउसप्यारीनेकहाहेहृदहातुमसमकह
नीहोमेरीहीचाहऔरप्रीतिसेउसकी यहदशाहोगईतदनंतरवहबोलीयदिकेवल
मुझसेवार्ताकरनेवादेखनेहीसे उसकाजीवनहोतोकुछहानिनहींतबमैंनेकहार
ननीहीदयाउसपरबहुतहै उसनेएककंठीसांसभरकेकहाअच्छातुमउससेजाकेकहो
यदिउसकीइसीमेंप्रसन्नताहैतोवहमुझेफिरदेखसकाहै परंतुवार्ताकेसिवायहस
री आशाखफसेनरक्खेजबतककिमैंउससेविवाहीनजाऊं औरमेरापितराजीना
होमैंनेउसस्त्रीकोबहुतसीप्रशंसाकरकहावाहक्यादयावानहो परमेश्वरतुम्हें
जीतारक्खे अबमैंउसकेसमीपजायययहीशुभसमाचारउसेसुनातीहूंतदनंतरउस
सुंदरीनेकहाशुक्रवारकोमेरापिता जामामसजिदमेंनिमाजपढनेजाताहै वहमनु
ष्यउससमयअकेलाआवेमैंउससेभीतरबुलालूंगीऔरअपनेपिताकेआगमनकेए
कमुहूर्तआगेउसेविदाकरूंगीइससमयांतरमेंवहमुझेभलीभांतिदेखे औरवार्ता
लापकरेनिदानजबउसहदानेआययहहालवर्णनकियामैंउससमयकीप्रसन्न
ताकावर्णननहींकरसकताकिकितनीमुझेप्राप्तहुईऔरतदनंतरमुझमेंबलऔरश

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कि आगई मैंने उस ब्राह्मण की बहुत सी स्तुति करी और प्रशंसा कर हजार अशरफी का एक
तोड़ा उसे दिया और बिदा किया और सूरज को अरुणोदय पर उस मेरी यही इच्छा हुई की
तोर कर उत्तम २ वस्त्र और अतर मल उस महामायाधीश के मंदिर में जाऊं और उस प्यारी से
दरीस में भेंट और विवाह की वार्ता करूं और उस राजी पा विवाह का नेग महामायाधीश को
कहला भेजूं यह शोच मैंने एक दास को कहा तू तुरंत एक चतुर नापित को बुलाला कि मे
रा तौर करे दैवयोग से वह दास इसी उस नाई को जो यहां बैठा है बुलालाया उसने आते ही
प्रणाम कर कहा आपके रूपावाता से जान पड़ता है कि आपके वैरी रोगी थे मैंने कहा
निसंदेह मैंने बड़ा कष्ट भोगा है और अभी अच्छा हुआ हूं इसने कहा परमेश्वर आपको सम्पूर्ण
रोगों और कष्टों से रक्षित रक्खे और उत्तम पद दया और अनुग्रह रक्खे मैंने कहा मैं उसी की अनु
कम्पा की आशा रखता हूं तदनंतर इसने कहा आप आज्ञा दीजिये तो मैं आपका तौर करूं।
हू वा फसद खोलूं मैंने कहा क्या तूने नहीं सुना कि अभी मैं आरोग्य हुआ हूं फसद से क्या॥
प्रयोजन है तू शीघ्र ही मेरा तौर कर बहुत बातों से विलंब न कर मुझे ठीक मध्याह्न को
कहीं जाना है यह नाई फिर भी कुछ काल पर्यंत बकबक किया न तो अपने हथियार खो।
ले और उसने तराभी तीन्हाए और इस्तन किया कि उसने एक बहुत उत्तम उस्तरा निकाला

सद्वि
२५

औरदालानसेउठसदनमेंगया औरयंत्रलगाकरग्रहगोचरविचारकरनेलगाप्रसन्नहूजि
ये आजसुक्रवारकोबृहस्पतिऔरमंगलकासंयोगहैइससेकोईउत्तममुहूर्तनहेऔरकेते
मितननहींहैसरायहसंवतयथायथमकेविपरीत अमंतकुलछनणऔरअशकुनहै औरयहो।
सखुकोविदितहुवाकिआजकेदिनआपकेवैरियोंपरबहुतकष्टहोगापरंतआपबचा।
जावेगइतनादुखहोगाकिजीवनपर्यंतआपपररहेगापरंतमुझेअपनेसाध्यराविधे
विस्वासहैकिउनकष्टांतरोंमेंमैंतम्हारेकामआऊंगातदनंतरउसपुरुषनेइतनाकहकेकहा
मित्रोउससमयकेमेरेकहेऔरव्यथाकोविचारोकिइसउद्दनापितनेऐसीव्यथ्यवानोसेमु
झेऐसेआसक्तकोऐसीसुंदरीकोभेंटदेसजहोपत्नीपरनमारसकाथाहटारकवामेंय
हस्तन अमंतकोपितहुआनबथीछेरावउससेमैंनेकहामैंनेतुम्हेंकुछसम्मतकरनेऔ
रसुरूनेदावनेकोनहींबुलायातमुझेक्षौरकेनिमितबुलायाहै अपनाकार्यकरनहींतो
चलताबनमेंदूसरानाईबुलालूंगा वहमुखमेंकफभरकेबोला आपइतनाकोपितः
क्योंहोतेहोतमननहींजानतेमुझेयसाउणवाननाईआपकोकदाचितनमिलेगामुझमें।
बहुतसेगुणऔरविद्याहैंजिनमेंसेमैंआपकेसन्मुखकुछविनयकरताहूं वैद्यकज्योति
षव्याकरणकाविनामाथवेदांत औरसम्पूर्णप्रकारकीगणितविद्या औरयहपरीक्षा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

इनसबविद्याओंमेंमैंनिपुणहूं इसकेविशेषभूतकालकेबादशाहोंकेइतिहासकिंतु
संसारभरकेइतिहासमुझेभलीभांतिविदितहैं कोईऐसीपुस्तकसंसारमेंनहींजिसमें
भलीभांतिनहींजानताआपकेस्वर्गवासीपिताजिनकोमैंशायस्मरणकरकेरुदनकरता।
हूंमेरेगुणकोभलेप्रकारजानतेऔरबड़ीप्रतिष्ठाकरतेऔरकदापिमुझेअपनेसेभि
न्ननकरतेइनकेहितकोस्मरणकरकेइच्छारखताहूंकिआपकीयथोचितसेवाकरूं
औरइनकार्योंमेंजोतुमपरपड़ेहैंतुम्हारासहायकहूंकिसीभांतिकोतुमपरउपद्रव
वाआपदानआनेदूंऐसे२निरर्थकवचनसुनकरक्रोधहोनेपरभीमैंहंसपड़ाऔरकहाकब
तकतूबकबक२करेगाऔरकबदौरबनावेगाउसनेउत्तरदियाबाह आपनेश्रमलोगोंके
विचारकेविपरीतकिवह मुझेअल्पभाषीकहतेहैं अधिकभाषीकाउपनामदियाहै
मेरेछःभ्राताहैंउनकेनामसुनियेबड़ेकानामबकबकदूसरेकानामबकवारतीसरे
कानामहूबकचतुर्थकानामअलहूपंचमकानामअलनसचरषष्ठकानामशाहूं।
ऊवकयहसबमानिस्संदेहवकोहैं औरमैंइनसबसेछोटाऔरअल्पभाषीहूं सु
चीकारनेकहाइतनाकहउसमनुष्यनेसभासेवहाहैमित्रोंमायकरोइसनिरर्थकव
कनेपरभीअपनेकोचुपकाऔरअल्पभाषीसमझताहैतबमैंनेद्वितीयसेवकसेजोय

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्वि
३९

36

रकाविचेउठाताथाकहातीनअशरफी इसेदेविदाकरआजमैंतोरनकराऊंगा इसनापि
तनेयहसुनकहास्वामीआपक्याकहतेहोमैंआपसेयहदाननहीं आयाआपकेबुलानेसे
यहांआयाहूंऔरमुझेसोगदहैजोमैंआपकेतोरकियेबिनाजाऊंगाजोनममेरीगुणग्रा
हकतानहींकहतेतोइसमेंमेराकुछअपराधनहींतुम्हारापितामेरेगुणऔरयोग्यता
कोभलीभांतिजानतामानताथा वहस्वर्गवासीजबकभीमुझेबुलातेतोअपनीगोदमें
मुझेबैठातेऔरऔरअपनेसाथमुझेभोजनखिलातेऔरमेरीचतुरताऔरहर्षयुक्त अ
मृततुल्यवचनसुनअत्यन्तप्रसन्नहोते औरयथाशक्तिसत्कारकरतेऔरकहतेतूसंसार
भरमेंअद्वितीयहैनवेमैंबिनयकरतायहसेवकतोइसयोग्यनहीं परंतुआपगुणतया
लकताऔरगुणग्राहकतासेकहतेहैंएकदिनवहमेरेअमृततुल्यवचनोंसेआनंदित
होयएकसोअशरफी औरभारीखिलअतमुझेकृपाकियाएकसमयकेउनकेफसद
खोलनेसेमैंधनाढ्यहोगयासोमुझेअबतकबड़ीसुधिबनीहैइतनीकथाकहकसमे
वहनापितचुपनहुआतोरतदूसरीकथा आरंभकी औरबका यहांतकएकमुहूर्त
व्यतीतहुआऔरउसकेनिरर्थकवचनसुनते २ मैंदीनहोगयाऔरअत्यंतविस्मितहोशो
चाइसडहुऔरनरहनाईसक्रोधसेकामननिकलेगानम्रताकरनीचाहियेनवबिनय

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सर्वकेमैनेकहा अपनीवचनचातुरीकोसमाप्तकीजियेऔरमेरान्तरंतद्दौरबनाइयेमुझके
ऊबकेआवश्यकताहैजैसाकिकईबेरमैंतुमसेकहचुकाहूंवहदृढहृदयहस्तनहंसाऔर
कहामुझेविदितहुआआपकोकोईबड़ीआवश्यकताहैपरंतुउसेमुझेभीबताइये औ
रमुझे अपनेसाथरखियेकिंतुतुम्हेंउचितहैकिमुझसेआपसम्मतकरउसकार्य्यको
कीजियेजैसेकितुम्हारापिता औरदादामुझसेप्रत्येककार्य्यमेंसहलाहलेतेऔरफि
रकरतेमुझेअपनादासऔरआज्ञापालकसमझियेऔरनिश्शंकमुझसेमनकीबा
तकहियेमैनेकहातबकते २ मेरामगजचाटगईऔरअपनेनिरर्थकबचनसुनाय
इससेमेरीबड़ीहानिहुईयहकहमैंउठखड़ाहुआऔररिसमेंअपनापकचरणउठाव
ड़ेवेगसेपृथ्वीमेंमारायहनिर्लज्जनापितमुझेक्रोधितऔरमेरेलाललनेत्रदेखकहने
लगाआपअप्रसन्नहोमैंतुरंततुम्हाराद्दौरबनायेदेताहूंनदनेनरउसनेमराशिरभि
गोमूंडनाप्रारम्भकियाऔरथोड़ासामूंडठहरगयाऔरकहाइसअवसमविचारोंकोजोतु
म्हारेमनमेंफिरतेहैंदूरकरोऔरमेरीबुढाई औरसर्वगुणनिधानताकाबिचारनकी
जियेमैनेइसकेकहाचलअपनाकार्य्यकरअधिकनबकनदनेनरइसनेकहाक्याकोई।
बड़ीही आवश्यकताहैजिससेइतनीघवराहटहैमैनेकहाप्रथममैंमैंतुमसेकहचुका

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
३०

37

हूंबेर२कौंसखुजनाहैतेराकामतौरखनानाहै ओरकगउंसेतकेकाप्रयोजनफिरइसञ्ज
लत्तणनेकहास्वामीइतनागर्मनहूजियेमुझेयहभयहैकि आपजोसमकेहूकेविन्नाका
थ्यंकरें ओरहानिपहुंचेक्योंकिवुधजनोंनेकहाहैजोमनुष्यबिचारेबिनाकामकरताहै
अंतकोलजाउठाताहैइसनिमितआपसेबिनयकरताहूंवहकौनसाकार्यहैमुझेभाव।
तादीजियेकिउसकेवास्तेआपशीघ्रताकरतेहैं अभीतोनघड़ीमध्यान्हमेंशेषहैं इतनी
क्याशीघ्रताहैमैंनेकहाजोप्रणपालकहलातेहैंवहउसनियमकालकेप्रथमअपनेको
पहुंचातेहैंतकछुइसबातकाबिचारनकरतौरतुरंतनबनादेववउसनेमेरेथोछेकेहत
उसतरहतौलक्षणकरमेराआथाशिरमूंडउठखिड़ाहुआ ओरस्तर्छकीओरदेखकरका।
हा अभीतोनघड़ीमृत्रिशेषहैंमैंनेकहामुझेज्योतिषकानिश्चयनहींमेरेबिचारमेंसबञ
समहैं ओरजलमुनउसेवक्रनसेउर्बचनकहेतबउसनेकहाहेस्वामीइतनेनमुफलाइ
येमेंअभीतौरबनायेदेताहूं अपनेकोसंभालियेइसक्रोधसेडरताहूंयेसानहोकि।
फिरतम्हैंरोगउमन्नहोजायपकलक्षणमात्रमेंमैंतम्हारातौरबनायेदेताहूंफिरउसने
उस्तरापथरीपररगड़ओरकमरसेचमड़ानिकालउस्तरेकोतीक्षणकियाओरशिर
मूंडनेलगातोभीवहअभागातुपनथायादिपकबालमूंडतातोदसवातेंकहतानिदा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कहनेलगाजोमुझेअपनेसाथयात्राविषे औरनिजआवश्यताकोप्रगटकरैंतो उससेमैंभीकु
छआपकोउपदेशवासम्मतदूंगा मैंनेइसअभागेनापितकोथोरवादेनेकेलियेकहाकि
मेरेइष्टमित्रोंनेमेरेनिरोगहोनेसेप्रसन्नहोकरमुझेन्योतादहै औरवहमेरे आगमनकीबा
टदेखतेहोंगेयहसुनीचनापितकानामसुनउछलपड़ा औरकहनेलगापरमेश्वरआपका
जीवनसफलकरेआपनेमुझेइससमयभलीसुधिदिलाई मैंनेकलपांचचारमनुष्योंको।
न्योताथा औरआजमैंउसेभूलगया अभीकुछभीतयारीनहींकी मैंनेकहाकुछहानि।
नहींयद्यपिमुझेमित्रोंनेन्योतादिहैतथापिनानाप्रकारकेव्यंजनपकवान आदिबनेरक्खे
हैंवससबमैंतुझेदिलवादूंगापरंतुमेराक्षौरतुरंतबनादेऔरमदिराभीतुझेउत्तममिलेगी
औरजिसभांतिपितानेतेरेप्रियवचनसुननेरापारितोषिकआदिसेसंमानकियाथाविश्वा
सरखमैंभीतेरेऊपरइससेतुझेअधिकसत्कारकरूंगायहसुनवहअत्यन्तहर्षयुक्तहुवा।
औरकहाईश्वर आपकोजीतारक्खेवहउसपककोमैंदेखलूंवहमेरेमित्रोंकोप्यारेहोंगेवान
होंमैंनेकहाबहुतसाउत्तम पक्वमांसहै औरबहु:स्वर्गअनेकप्रवहसबपाकअस्सीमनु
ष्योंकोबहुतहैतदनंतरमैंने अपनेदाससेकहाकिवहसबपाकऔरमद्यकेचारशीशेइस
नापितकोदीजियेउसनेकहाबहुतअच्छातदनंतरइसनाईनेकहाकुछफलऔरमत्रा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्वि
३८

भीकृपाकरीमैनेउसकोभीआज्ञादेदी यहदेउह औरउसभागानाईसेमेरेमनमेंएकवस्तुकोदेख
नेलगानिदानइसदेहनेइसीवहानेसेऔरभीअर्धघटीपर्यन्तमतीनकोऔरद्वारकीओरदेखा
भीनहींफिरमैरेरिसकरनेसेद्वारवनानेलगाइतनामात्रमैंउसलरेकोरावकहनेलगापश्चा
तापहैजोआपकेपितास्वर्गवासीजीतेहोनेतोमैंकदापिनिर्धननहोतापरंतुपरमेश्वरका
धन्यवादहैकिआपनेभी मेरासत्कारकियामैनेतुम्हारेऔरतुम्हारेपिताकेसिवायआजत
ककिसीसेकुछनलिया औरमेरीदशाजेटोटकेसमानहैजोनाइयोंकीदलालीकियाक
रतावासावलकेसदिसजोसुनेचनेगलियोंमेंबेचतावासौवरकेजोवाकलाबेचतावाशाता।
याबेचनेवालेकेसमानथा अबूवकटकेसदिसकिमार्गोंमैनोराक्तिइकताकिभरनउटेवा
कासिमकेसमानजोखलीफ़ाकारक्तकथा यहसर्वदाभलीभांतिआनंदभोगतेरहेबुग
दादकेपुरवासीउनकोनिमंत्रणकरसत्कारकरतेउनसबमैंएकगुणयहथाकिइससे
वककेसमानअल्पभाषीथेअबमैंएककवितऔरनृपजेटोटकागातानहूं आपउसस्वनि
येअनंतरइसअयोग्यनाईनेजेंटोटकेसमाननाचनागानाआरंभकियासेनेउसेकोधितहो।
यवजोकिअपनामसखेरापनमतदिखावपरंतुकवहननाथायहानककिवहनकलउ
सनेमुरीकोतदनंतरकहनेलगाअबउनमित्रोंकोजिनकामैनेवर्णनकियाजायभोजन।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

खिनोलोहूं जो मेरा उपदेश तो मानिये अपने मित्रों को छोड़ मेरे मोते में स पुत्र रहूं जिये नहीं
तो आपके मित्र वक २ करते हैं वह न उठावेंगे और आपके वैरी फिर रोगी हो जावेंगे मैंने
रिस होने पर भी उसको उठ खड़ाये पर हँस दिया और कहा मुझे तुम्हारा निमंत्रण स्वीकार है कि
सो दिन अवकाश पाने राम सखेरा प न देखूंगा और सुनो गाय परंतु आज किसी प्रकार वहां
नहीं जा सकता तो भी उमेराहो रहता कर और अपने घर जाते रे मित्र वहां आय मेरी बाट देखते
खिन्न होंगे तदनंतर उसने नम्रता पूर्वक विनय किया कि जो मैंने आप से कहा है उस से स्वीका
रण कीजिये और अवश्य चालिये मेरे घर की सभा देख आप प्रसन्न और आनंद को प्राप्त होंगे।
गे और विश्वास है ऐसा आनंद उस सभा में प्राप्त होगा कि आप अपने मित्रों को भूल जावेंगे
मैंने उससे कहा इतना निरर्थक क्यों वकता है मैं तेरे शहर आज किसी प्रकार नहीं जा सकता अंनत
र उसने कहा जो आप मेरे घर नहीं चलते तो मुझे ही अपने साथ ले चलिये अवश्य कृपा कर जो
आपने कृपा किये हैं मैं अपमेव रलेजाता हूं और अपने मित्रों को खिला पिला तेरे रत लोट
आता हूं मैं ऐसा अशील नहीं कि आप को अकेला जाने दूं इस में आप प्रसन्न हो वा अप्रसन्न
इस बात को सुन मैं अमंतड़ा विनकवा और कहा है ईश्वर मैं इस नाई के हाथ से किस आप
दा में पड़ा सम्पूर्ण दिवस मेरा इसी बक २ में कटा फिर इस अम्माई से कहा परमेश्वर के वास्ते

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि
३९
39

मेरी हजामत सुरीक स्त्री और अपने चार मित्रों के समीप जा वहां खोपी और उनको खिलापिला सु
के छोड़ मैं अकेला जाऊंगा मैं नहीं चाहता कि मैं अपने साथ किसी को ले जाऊं जहां मेरे जाने
की इच्छा है अन्य का वहां प्रवेश नहीं वहां तो मेरा ही जाना कठिन होगा उस नापित ने कहा वा
ह आप मुझ से हास्य करते हैं स्वामी जब आपके मित्रों ने आपको निमन्त्रण किया है मेरे जा
ने के लिये कौन वर्जेगा वह मुझ ऐसे बुद्धिमान को देख आप से बहुत प्रसन्न होंगे क्योंकि मैं
सभा चतुर हूं और मेरी वाचालता से वह बहुत प्रसन्न होंगे अपने जो चाहिये सो कहिये मैं अव
श्य आपके साथ जाऊंगा उस मनुष्य ने सभा से कहा हे मित्रो मैं उसकी बातों से घबराया देखि
ये कौंकर यह उह नापित से छुटकारा होगा तदनंतर शोचा था कि न सुनता बिना इससे छुटका
रा नहीं इतने में शुक्रवार की प्रथम बंदना जिसे अजां कहते हैं हुई मैं चुप होके बैठा उसके
निरर्थक वचन का कुछ भी उत्तर न दिया यहां तक कि इसन हने हजामत सुरी को अंतर
मैने बड़ी नम्रता से कहा मेरे सब को सेया कले अपने घर जा और उसे खोपी तैरता फिर आ मैं ते
री वाट देखूंगा यह नापित जब अपने घर गया मैं अवकाश पा तुरंत स्नान कर वस्त्र पहिना
दूसरी बंदना वा अजां के सुनने की वाट देख रहा दूसरी अजां के होते ही मैंने चाहा कि च
लूं पर तब यह उह नापित मेरे चलि को विचार लिये रहा था इतने में वह निश्चिंत हो आगे की

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लीमेंकिमेरेघरमेंमिलीहुईथीकुछपरन्हाथामैंउनम२ वसन्तपहिनअपनीप्यारीकेघरकेओ
रचलावहउत्तपकेसेमेरेपीछेहोलियाजबमैंमायाधीशकेघरमेंपहुंचाफिरकेकादेखताहूं
किवहअभागाभीचलाआताहैउसकोदेखमैंराम २ सुमिरणकरनेलगाओरअन्तनकोथि
तहुवापरंतउसस्थानपरकुछकहनेकावकाशनपायामायाधीशकेरहकाद्वारा आ
थाखुलाहुवाथाजबदरबाजेपरपहुंचावहकहाकिमेरेआगमनकीवाटदेखतेथेमुफेदे
खिदोड़ीआईओरमुफेउसचितचोरकेसमीपलेगईहमदोनोंबड़ीलालसासेआनन्दप्रकाशी
तकीवार्ताकरतेथेकिअकस्मातहमनेमनुष्योंकाशब्दसुनावहसुन्दरीओरमैंउठखिड़की।
सेदेखनेलगेप्रथममायाधीशकोदेखाकिसुकुवारकीबेदनाकरअपनेमहलमेंआयात
दनंतरउसनापितकोदेखाकिउसखिड़कीकेसन्मुखउसीतखतपरजिसपरमैंनेपहिलेबै
ठउसकोमलांगीकोदेखाथाबैठाहैतबमुफेदोप्रकारकाभयशामहुवाएकमायाधीशकेप
हुंचनेकादूसरेनापितकानिदानउसप्यारीनेमुफेभयभीतदेखधीर्यदियाओरअश्रुशोची।
सेएकस्थानसोचरहुवाकि आवश्यकतापरकामआवेइसकेविशेषइसभाग्यहीनदुष्
नाईकेकारणऐसीआपदामुफपरपड़ीकिवर्णननहींकासक्ताजिससमयमायाधीश
अपनेगृहमेंपहुंचाटैवयोगसेउसकेएकदासनेनिजदासकोकिसीअपराधपरबहुतमारा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्वि
५०

वहसेवकऐसाचिल्लाया औररोयाकिगलीनकउसकाशहरफूंका औरउसकुबुद्धिनाईनेस।
मफाकिमायाधीशकोमेरेजानेकाहालनविदितहुवा औरवहशहरमेराहीहै यहसमझ
करनचिल्लाकेरोया औरनिजवस्त्रफाड़शिरपरमट्टीडाली औरमहल्लेकेलोगोंको आप
नेसहायताकेलियेबुलायावहसवएकट्ठेहोनेलगेकुशलतोहैउसनेरुदनकरउत्तरदियामे
रेस्वामीकोमारतेहैंकेवलइतनाकहमेरेघरदौड़गया औरइसीभांतिवहांभीकहामेरेना
तेदार औरदासचाकरयहवचनसुनसबकेसबलाठियांलेमायाधीशकेघरदौड़ेआपऔ
बड़ेक्रोधसेमायाधीशकाघरतोड़नेलगेमायाधीशनेवहशब्दसुनएकअपनेदासको
आज्ञादीकिवाहिरजाकेदेखकियहकौनलोगहैं औरक्योंचिल्लातेहैंवहदासउनको।
देखभयभीतहुवा औरभीतरआयमायाधीशसेकहा अनुमानदशहजारआदमीकेआ
पकेद्वारपरखड़ेअसंतक्रोधसेदरवाजातोड़नेकीइच्छाकरतेहैंमायाधीशनेआपद्वारपर
आयउनसेपूछाकिइसघोरऔरचढाईकाकाकारणहैमेरेआदमीजो असंतक्रोधित
थेउन्होंउसकीप्रतिष्ठाकाबिचारनकरबोलेहेदुष्टहत्यारेकमीनेतूनेहमारेस्वामीको।
क्योंमारडालाउसनेतेराक्याकियाथामायाधीशनेकहामैंनेतुम्हारेस्वामीकीसूरतभी
नदेखीकबमारा औरउसनेमेराक्याअपराधकियामैंद्वारखोलताहूंतुमउसेढूंढलोऔर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दुहनाईनेनिर्दोषमायाधीशकोबऊनसेदुर्वचनदेकहातेरीपुत्रीमेरेस्वामीपरमोहितहै उ
सनेभेंटकेवास्तेउसेमध्यान्हमेंबुलायाहै यहतूनेजानकरउसेबऊनमारायदिअपना
भलाचाहताहैतोमेरेस्वामीकोछोड़देनहींतोहमसबतेरेघरजायउसेनिकाललावेंगे
औरहमसभेंतेरीवड़ी अप्रतिष्ठाहोगीमायाधीशनेकहाजानतेसच्चाहैतो अपनेस्वामीको
मेरेघरमेंसेढूंढकेनिकाललाइतनाकहतेहीमेरेनातेदारऔरयहीनाईघरमेंबड़ेक्रो
धसेढुंसगएऔरप्रत्येककोणेमेंढूंढनेलगेमैं अप्रतिष्ठा औरमायाधीशकेभयसे ए
कसंदूकमेंजोवहांखालीरखाथाजाछिपाऔरकुंडीबंदकरलीयह अभागाढूंढ
ते२ मकानमेंजिसमेंवहसंदूकथा आयाऔरसंदूककोथोड़ासाखोलमालूमनाकि
याकिमैंउसमेंछिपाहूंतबतोउसेअपनेशिरपरउठालिया औरउसकूंचेमकानसेसोंपी
सेउनरसहनेमें आयावहांसेवाहरकेद्वारकीओरजोगलीकेतरफथाचलाअकस्मात्।
संदूककीकुंडीखुलगईमैंउसमेंसेनिकाल औरदावअपनाछिपागलीकीओरभागा
उसघबराहटमेंकिमनुष्योंकीभीड़इसलियेयहनापितदौड़ा आताथाएकनालेकेफांदने
सेमैंऐसागिराकिमेरापांवटूटगयाउसपरभीउनमनुष्योंसेकिमेरेपीछेहंसते औ
रठट्ठामारतेथेभागाजाताथाजबदेखाकिबऊनसमीपपहुंचगयातबदोनोंहीरुपये

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि ५१

और ऐसे सोंकी उनकी ओर फेंकता वह उसको तुंने में लग जाता। आगे को निकल जाता जब वह दौ
ड़के मेरे निकट पहुंचते तो मैं फिर ऐसे फेंकता इसी उपाय से मैं बचता और उनको अपने समी
प पहुंचने न देता जब मैं शहर निकल गया मनुष्यों ने यद्यपि कि न होय मेरा पीछा न किया परंतु यह
उहूना पिन छाया के सदृश मेरे पीछे लगा चला आता था और प्रकार के कहता दौड़ो न रहो।
देखो मैं तुम्हारा कैसा हितैषी और यदि स्मरो कि किस भांति मैंने आपको न्यायाधीश से छु
ड़ाया प्रथम तो मैंने विनय किया था जो आप मुझे अपने साथ न ले जावेंगे तो आपके बैरी ब
ड़े आपत्ति में पड़ेंगे यह सब जगह है साई और अप्रतिष्ठा तुम्हारी होनी निर्बुद्धिता के कारण हुई
अब भी मुझसे न भागिये निदान यह अंसमानो नाई इसी भांति संपूर्ण मार्गों और गलियों में
बकता और मेरे पीछे लगा चला आता था और मेरी अप्रतिष्ठा करता यहां तक कि संपूर्ण।
पुरवासी मेरे कर्म को जान गये इस उद्योग पर मुझे ऐसा क्रोध आता था कि ठहर जाऊं और पा।
कड़के इसका गला दबाऊं परंतु उसमें भी अपनी अप्रतिष्ठा समझता इस वास्ते मैं वह मा
गत जहर सही और दौड़ा तो भी इसने मेरा पीछा न छोड़ा और बकता चला आता था मनुष्य उस
की बातें सुन मेरा तमाशा देखते अनादर करने में निदान ऐसे उपद्रव और अप्रतिष्ठा में पड़ा कि जि
सका मैं वर्णन नहीं कर सकता अंत को निरुपाय हो मैं एक विशाल शहर में कि उसका स्वामी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हारपर खिड़ा हुवा था ओर मुझसे जान पहिचान रखता था उसके निकट चला गया ओर कहा।
हे मित्र परमेश्वर के वास्ते मुझे इस विपत्ति से कि मेरे पीछे लगा आता है बचाओ तब उसने इ
स नापित को ललकारा ओर बहुत से दुर्वचन ओर धिक्कार देके झिड़का ओर हटाया तब मैंने इस
नाई से छुटकारा पाया जब कुछ सावधान हुवा तदनंतर उस मित्र ने मुझसे पूछा कि तुम्हारी क्या द
शा है मैंने कहा मुझे अमल लेने दो कि मैं किंचित् चेतन्य होऊं तब मैं आपना हत्तांत विस्तारपूर्व
क कहूंगा उसने मुझे बुरी दशा में देख कहा कि तुम अपने घर में सावधान होगे उतम है कि अ
पने घर पधारो मैंने कहा यह सच है परंतु यह दुष्ट नाई वहां पर भी मुझे न छोड़ेगा ओर उसके उ
खिदने से मेरे प्राण न बचेंगे इसके विशेष इस उजलत्राणी के हाथ में मैं ऐसा व्याकुल हुवा ओ
र मेरी ऐसी प्रतिष्ठा भंग हुई कि फिर यहां के वासियों को मुख दिखाने योग्य न रहा निदान थो
ड़े दिन मैं वहीं रहा जब मैं कुछ सावधान हुवा मैं बहुत सा द्रव्य ले बुगदाद को छोड़ इस नगर
में आया मुझे विश्वास था कि इस अभागे से इस नगर में जो बुगदाद से बहुत दूर है भेंट न हो।
गी परंतु प्रारब्ध से यहां भी इसका अशकुन रूप दृष्टि पड़ा हे मित्रो तुम उन सब आपत्तियों को जो
इसके हाथ से मुझ पर पड़ीं भली भांति विचारो यह दुष्ट अभागे के कारण वह चंद्रमुखी कि
मुझसे विवाह करने पर राजी थी इस प्रकार छूट गई ओर लंगड़ा हुवा इसके विशेष संपूर्णोना

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्वि
५२

नेदारश्हमित्रछुटेयहकहवहपंगुलचलागयाहमसबनेउसका। औरनाईकाहतांतसुन आ
श्चर्यकियातदनंतरनाईकीओरहोयउसकाहायदियहमसबहतांतजोउसमनुष्यनेकहासम
हेतोतूबड़ादुष्टऔरदुर्बुद्धिहे औरदंडयोग्यहे वहतोउससमयपंछेतमल्लकनीचेकियेथा।
शिरउठायकहनेलगाजोइसमनुष्यनेकहासबसत्यहेइसमेंबालभरभीअंतरनहीअबतुम
कोन्याईठहरातेहोदेखो। औरविचारोयदिमेंउसकोसहायतानकरतातोऐसेभयानकस
थानसेक्योंकरछूटताइतनाहीकहाथाकियहलंगड़ाहोगयाऔरआपसेनभागाग।
याजिससमयमैंनेउसकेरोनेऔरचिल्लानेकाशब्दसुनातोउसकेछुटकारेकेलिये यहपरि।
श्रमकियाउसकेविपरीतमुझेदोषलगाताहे औरअधिकयहकिमुझेबक्कीनिश्चितकिया
यहदोषमेरेवास्तेअसंतनिंद्यहेमैंतोसातभाइयोंमेंअल्पभाषीविख्यातहूंअभीतुम्हारेसा।
न्मुखअपनीऔ अपनेछःभाइयोंकीकथावर्णन करताहूंजिससेतुमकोमेरेवचनकी
सत्यताविदितहोगी स्वीकारऔरसभाकेसन्मुखविनापितकीकथा बादशाहहारूर।
शीदकेराज्यमेंजोअनंतदानीथादशठगहुबगदादनगरकेचौक औरकेमार्गलूटतेपुरवा
सीउनकेदुःखऔरक्लेशदेनेसेअतिव्याकुलभयेखलीफायहसुनअत्यंतकोपितहुवा औरा।
कोतवालकोआज्ञादीकितुरंतउनदसोंठगोंकोईदकेदिनकिउसदिनभेंटहोतीहे ५

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कहलाइयोयदिउसदिनउनकोपकड़नलावेगातोतुझेवधकरूंगाकोतवालकिअभीतक
नतोऔरबुद्धिमानथातबतंरनचपरासियोंकोपकड़नेकेलियेभेजाकिउसनियततिथिप
रउनकोपकड़लावेंअकस्मातउसीतिथिकोडाकुओंकोपकड़नावपरचढगया औरउसीदि
नमैंभीप्रातःकालउनडाकुओंकोभलेमानससमझमैंभी इसीआशापरकियहसबमुझे
अपनेसाथलेजावेंगेकुछकहेसुनेविनाउसनावपरसवारहोगयाउसीनावकोखिका।
रखलीफाकेमहलकीओरलेचलेउससमयमुझेविदितहुवाकियहसबडाकूहैंमारने
केलियेपकड़ेजातेहैंजबहमउसनावसेनदपरउतरेसिपाहियोंनेहमसबकोचहुंओर
सेघेरलियाऔरएक२कोमुशकेंबांधखलीफाकेसन्मुखलेगयेमैंभीडाकुओंकेसहट।
शावांधागयाऔरजिसकाभीनहिंलाईकिमैंडाकूनहींमुझेक्योंलियेजातेहोनिदानउन
सिपाहियोंकीनिर्बुद्धितासेमैंइसआपदाऔरदुःखमेंपड़ाजबहमखलीफाकेसन्मुखहु
येउसनेवधिककोआज्ञादीइनदसोंडाकुओंकीगर्दनमारउसनेहमसबकोपंक्तिबांध।
बैठायाकिउसेमारनासुगमहोमेरेअच्छेप्रारब्धसेवधिकनेमुझेसबसेपीछेबैठायात
दनेनरमारनाप्रारंभकियाजबदशमस्तककाटचुकामेरेसमीपआयाऔरठहरगया
खलीफाउसेठहरादेखिक्रोधितहुवाकितूनेक्योंएककोछोड़ावधिकनेविनयकीकि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्वि
४२

मैने आपकी आज्ञानुसार दशडाकुओंको बधकिया अब दशशिर और दसधड़ोंको आप गिनलें खलीफाने दश मृतकोंको देख मेरी ओर विचारपूर्वक दृष्टिकी और कहा हे हन्तनो अहून नहीं कोइन अभागोंके साथ होकर बधस्थानमें आया मैने विनयकी हे स्वामि मैं ठगोंको मल्लाह मान समझकर उनके साथ नावमें बैठगया खलीफा मेरा वृत्तांत सुन बहुत हंसा और मेरे चुप रहनेसे आश्चर्य किया तब मैने कहा इस सेवकने छः भाइयोंके विपरीत अल्पभाषणता स्वीकार की है जिससे मैं सप्रतिष्ठ रहता हूं खलीफा मेरी गंभीरता पर बहुत प्रसन्न हुवा और कहने लगा तुम्हारे भाई इस गुणमें तुम्हारे सदृश हैं वा नहीं मैने कहा उनमें इस गुणका लेशभी नहीं है वह सब बहुभाषी हैं और भेषमेंभी अन्तर है एकतो कुबड़ा है दूसरा पोपला तीसरा काना चौथा अंधा पांचवां बहरा अर्थात् दोनों कान उसके कटे हुये हैं छठवां खरगोशकी भांति कनकटा है उनके हालात और चरित्र जो आप सुनेंगे तो उनकी पदवियां विदित होंगी आशा रखता हूं कि मुझे आज्ञा हो तो मैं उन सबकी कथा वर्णन करूं मैने इस बातको विचारा कदाचित् बादशाह कहनेकी आज्ञा दे वा न दे इस वास्ते मैने वर्णन करना प्रारंभ किया नापितके बड़े भाई बकबककी कथा हे स्वामी मेरा बड़ा भाई जिसका नाम बकबक था कुबड़ा था और सुई धागेका काम करता और स्त्रीकारका कार्य

सो रहता था जब वह इस कार्य में निपुण हुवा तब उसने एक दुकान किराये की ली दैवयोग
से वह दुकान एक पनचक्की वाले के सन्मुख थी अभी उसका काम भली भांति न चलता था औ
र बड़ी कठिनता से काल क्षेप करता और पनचक्की वाला इसके विपरीत बड़ा धनवान था
उसकी स्त्री अति सुंदरी रूपवती थी एक दिन मेरा भाई दुकान पर बैठा हुवा कार्य कर रहा था
कि सपणचक्की वाले की स्त्री पर जो खिड़की पर बैठी हुई थी दृष्टि पड़ी वह उस पर मोहित हुआ
वा वह स्त्री जो पतिव्रता थी पर पुरुष को देख खिड़की बंद कर लेती वकबक निज कार्य को
न जा उसकी इच्छा में मग्न हुवा इस आशा पर कि उसे फिर देखे और खिड़की के और सुख के
र बैठ रहा उस दिन तो वह स्त्री उसे दृष्टि न पड़ी परंतु दूसरे दिवस प्रातः काल नियमानुसा
र वह खिड़की खोल इधर उधर देखने लगी और स्त्रीकार को और देख समझ गई कि व
ह मुझे कुदृष्टि देखता है मन में अमित अप्रसन्न हुई परंतु प्रकट में उसे देख मुस्कराई स्त्री
कार भी उसे देख हंसा और कुदृष्टि से सैन की वह लज्जित हो खिड़की से उठ चली गई वह
स्त्रीकार इस हाव भाव से समझा कि यह स्त्री मुझको चाहती है यह समझ बड़ा प्र
सन्न भया उस स्त्री ने चाहा कि उसे दंड दे इस प्रयोजन से उसने कई गज बहुमूल्य कपड़ा बां
दी के हाथ उसके समीप भेज के कहला भेजा कि उत्तम वसन मेरे वास्ते तुरंत सी कर तय्यार

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि
५५

करदे मेरा भाई इस मकाका कि वह स्त्री भी उसके चाहती है कि इसी हेतु मेरे पास सीने को भेजा निदा
न उसने बड़े श्रम से संध्या पर्यंत सीके तय्यार किया है सो दिवस जब बांदी वस्त्र लेने आई उसने
वह देकर उससे कहा कि अपनी स्वामिनी से कहिये कि अपना सब कपड़ा मुझसे सिलवाया
करें मैं बहुत पोख्त और उत्तम सी दिया करूंगा वह बांदी उस वसन को ले आपने घर चली थो
ड़ी दूर जाय वह हती लौटि आई और कहा यह संदेश देना मैं भूल गई मेरी स्वामिनी ने तुम
से कहा है कि रैने तुम्हारी कौं करयती नजर मैं तो ने रमो हूं मैं सब निशि अर्थात छैर रहो और
निद्रा न आई वह सुतथा इस वचन के सुनते ही अनंत हर्षित हुवा और इस पर ण विस्वास हुवा
कि वह भी मुझ पर मोहित है और उस बांदी के हाथ कहला भेजा मैं भी तुम्हारी प्रीति में
चार दिन से नहीं सोया वह उससे विदा हो क्षण मात्र में फिर संदेश लाई मेरी स्वामिनी उस
वस्त्र को देख अनंत प्रसन्न हुई और उसे पहिन के देखा उसके बदन में ठीक आया अब उ
सने एक टुकड़ा साटन का दिया है कि उसका न्तरंत मेरे वारने एक वस्त्र सीके भेजदे कि मैं
इस वस्त्र के साथ इसे भी पहिनूं मेरा मूर्ख भाई उसे भी ले के सीने लगा उसी समय वह मृग
नैनी चंद्रवदनी भी खिड़की में आई और अपनी छबि अनूप बालों को लटाया बन को छुटा
दिखाई कि जिससे वह अधिक प्रसन्न होकर पोग्रही वस्त्र सीकर तय्यार कर दिया वह अउ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

चरी आकेउसेभीलेगई औरकुछभीमजूरीउसेनदीउसमहात्माविप्रमोकोनिर्धनताकेका
रणउसदिनभीकुछभोजनप्राप्तनहुवासंध्याकोदुःखथासे अंतमेंव्याकुलहुवानिदानकुछ।
फलएलेभोजनकाउपायकियादूसरेदिनअरुणोदयकोवहबांदीउसकेसमीपआईऔर।
कहाकिमेरास्वामीतुझेबुलाताहैक्योंकिउसकीस्त्रीनेतेरेकामकोउसेदिखातेरीबहुतसीप्र।
शंसाकीसोवहभीचाहताहैकिअपनेवसनतुझसेसिलवाये औरउसकीस्त्रीचाहतीहैकि
इसीबहानेसेतेराआवागमनहमारेघरमेंहोजावे औरतुमदोनोंमेंजानपहिचानहोऔर।
तुम्हारामनोरथभीसिद्धहोमेराभ्राताइसबातकोसुनबांदीकेसाथपनचक्कीवालेकेघरगया
उसनेउसकाआदरसत्कारकरएकथानकपड़ेकादिया औरकहाकितुझेइसमेंसे १० वस्त्र।
सीकरदेजोकुछइसमेंसेबचरहैतोउसेतुझेफेरदीजियोमेरेभाईनेपांचसातदिनकेका।
लांतरमेंसबसीदियेतदनंतरउसनेएकथानऔरदियाकिकईऔरवस्त्रसीदेवहउनको
भीसीकरलेगयापनचक्कीवालाउसकीचतुरतासेअतिहर्षितहुवा औरकहाभाईइससब
कीसिलाईकाजुईहिसाबकरकुछद्रव्यउसेदेनेलगावहबांदीकिउसस्थानपरवर्तमान।
थीमेरेभाईकोसैनसेनिषेधकियाजोतूउसकीमजूरीलेगातोतेराप्रयोजनसिद्धनहोगा
मेरेमूर्खभाईनेउसकीसैनसमझकरआवश्यकताहोनेपरभीकुछनलियाकिंतुहनकाभी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्वि
४५

मोलनलियाऔरउससेविदाहोमेरेसमीपआया औरकहालोगोंनेमुझेसिलाईअबनकुछ
नहींदीनतुमुझेकुछकरणदेमैनेकईपैसेउसेदियेउसनेउनपैसोंकीकईदिननकखायाकेव
लरूखीरोटीखातायकदिनमेराभाईउससुंदरीकेघरगया उसकापतिचक्कीचलानेमेंरहता।
थाउसेदेखजनाकिअपनीमजूहरीलेने आयाउसनेजेबमेंहाथडालकुछद्रव्यनिकालाकि
उसेमजूहरीदेपरंतुउससंवादीनेमेरेभाईकोसेनसेवर्जीकिकभीनलीजियोमेरेभाईनेपनचक्की
गलेसेकहामैंइसप्रयोजनसेनहींआयाकेवलकुशलक्षेमपूछनीअंगीकरथीपनचक्कीवा
लेनेअपमानकरएकऔरखड़ीसीनेकोदियावहउसेभीसीकेलेगयानटनेनपनचक्कीवा
लेनेचाहाकिउसकोमोलदेपरंतुउसउहहनीबादीकीसेनसेकिअहर्निशवर्तमानरहा।
नीथीमेरेभाईनेकुछनलियाऔरकहाहेपडौसीइननीकाशीघ्रनाहेऔरसमयसमक्षा
जावेगायहकहवहदीनकिप्रीतिकेडरऔरनिर्धनतामेंव्याकुलथा औरस्तुथाकेकार
णआएनिकलनेथेडकानपरफिरगया औरपनचक्कीवालेकीस्त्रीजोपतिव्रता औरखरा
थीमेरेभ्राताकोमजूहरीनदेनेकेविशेषउससेअधिकदुःखदेनास्वीकारकवाओरचाहाकिर
सकुरबाकासादउसेचाखावेएकदिनअपनेभर्तारकोमेरेभाईकीबुरीइच्छासेविदितकि
यावहसुननेहीक्रोधितहुवा औरमेरेभ्रातासेबदलालेनेकेविचारमेंहुवासोउसनेयकदि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नसायंकालकोमेरेभ्राताकोनिमंत्रणकियाजबवहदोनोंभोजनकरकेबैठचुकेपनचक्की
वालेनेउससेकहाभाईरात्रिबहुतव्यतीतहुई अबकहांजाओगेयहींशयनकरोयहकहके
सेएकस्थानबनादियाकियहांपरसोजाओआपजायकरअपनीस्त्रीकेसमीप जायसोरहा।त
दनंतरआधीरात्रिकेसमयमेरेभाईकोसोनेसेउठायाओरकहाहेपरममित्रआजमेराएव
ज्वररोगीहोगयाहै औरमुझेआटापीसनेकीआवश्यकताहैजोतुमकृपाकरइसचक्की।
कोथोड़ीदेरतकचलाओतोउत्तमहो मैनेकहामैंइससेवाकेवास्तेनम्रहूं परंतुमुझेचक्की
चलानेकीरीतिबताओमैंइसमेंनहींजानतापनचक्कीवालेनेचक्कीकीरस्सीमेरेभाईकीकम
रमेंरखकरकेसहजथीऔरकहाअबतुमचक्काकरकेगिर्ददौड़ोकितुम्हारेदौड़नेसेचक्की।
चलेगी औरकोड़ाउसकीपीठपरमारातबवहचिल्लायाकिमारनेकोहोचक्कीवालेनेक
हा इससेतुमसावधानहोहमोगेआलस्यनकरोगेक्योंकिजबएकचक्करस्त्रीकरतीहैतोमैं
इसीभांतिउसचाबुकमारताहूंतोवहचालाकहोकेखींचतीहैबकबक यहदशादेख
अतिविस्मितहुवा औरपांचसातचक्कानशीघ्रकिये निदानथकितहोयबैठगयातबदेने
तरउसनेबड़ेवेगसेवारहकोड़ेमारेऔरकहाजल्दीहमोहमेरेपड़ेसोबैठानहींजोथीरे २
औरठहरउरकेहमोगेतोमेराआटानहहोजावेगानिदानउसपनचक्कीवालेनेरातभ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्वि
४९

96

रउसकेसाथयहीकर्मकियाजब अरुणोदयहुवातोवहउसेइसीदशामेंबंधाहुवाछो
ड़अपनीस्त्रीकेनिकटगयाकिवहइसीदशासेउसकेदिख इतनेमेंवहीबांदीआई औरउ
सेखोलकहादेखोमैं औरमेरीस्वामिनीदोनोंकैसेदयावानहैंतुम्हेंइसदशामेंदेखनस
कीहमदोनोंअपने स्वामीकेकर्ममेंसंयुक्तनहींबकबकनेइसकाकुछभीउत्तरनदिया
क्योंकिउसेबहुतकष्टपहुंचाथाकुछसमयमेंजबकुछसावधानहुवावहांसेउठअपने
घरमेंआयाखलीफानेमेरेभाईकीकथासुनकहाइसकापारितोषिकलेअपनेघरजा।
मैंनेविनयकीजबतकमैंअपनेसम्पूर्णभाइयोंकाहालनोवर्णनकरलूंगापारितोषिकन
लूंगा औरनविदाहूंगाखलीफाचुपहोरहामैंनेअपनेदूसरेभाईकीकथाकहनीआरंभ
की बकवासहनामकनाईकेद्वितीयभ्राताकावृत्तान्त ॥ नापितनेखलीफाकेसन्मुखवि
नयकीहेस्वामीमेरादूसराभाईपोपलाबकवारानामकएकदिनभ्रमताहुवानगरकी
किसीगलीमेंजापहुंचाएकवृद्धस्त्रीनेउसकारूपदेखअत्यन्तप्रणामकियाअनन्तरउ
ससेकहामैंतेरेलाभकेअर्थएकबातकहतीहूंजोतूउसेसुने औरउसपरचलेमेरेभाईने
प्रसन्नहोकरकहापरमेश्वरतुमकोजीतारक्खेवहक्याबातहैमैंउसेशिरआंखोंसेकरूंगा
उसवृद्धानेकहातूमेरेसाथएकदिव्यमंदिरमेंचलउसकीस्वामिनीएकस्त्रीअत्यन्तरूपा।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वती और हंसमुख है वह तेरे साथ बड़ा उपकार करेगी जिससे तुम्हें धन प्राप्त होजावेगा परन्तु वह।
नोवाला है सो तू और विलद्ज्ञी है वह तफसे हंसेगी और उसकी सहेलियां तेरे साथ खेले
हूं देंगी तू उनको विलगन मानियो और न अप्रसन्न हूजियो एकवार इसे स्वीकार करहहाके
साथ उवा और उसीके साथ एक बड़े भारी बिशाल गृहके भीतर गया रत्नक और हारपालों
नेहहाके कहनेसे नवजो जब कई वर्षोलों चीफिर हहदाने उसी वानको हगया कि वहहा।
दरी मृगनैनी चम्पकवरनी वाजगामिनी अंमनशीलवान और हंसोड़ है शीघ्र कोथी उसे
प्रसन्न नहीं चेतन मरहु उसकी सहेलियोंके हाससे अप्रसन्न न होना और विलगन मानना व
हतये निहाल कर देगी एकबाराने उसका बड़ा यश माना और कहा बहुत अच्छा कि
याकि पहिले समुझे जनादिया देखो मैं उन्हेंके सा प्रसन्न रखना हूं फिर वह हहा उसभीत
रले गई मेरे भ्राताने उसको सजावट बनावट देख बड़ा आश्चर्य किया उस महलके आग
पुष्पवाटिका अति उत्तम थी निदान उसहहाने उसे एक दालानमें ले जाय कहा तू यहां बैठ
तेरे आगमनका संदेशा उसे जाय देती हूं मेरे भाईने कि कभी ऐसा सुंदर गृह स्वप्नमें भी न।
देखा था प्रत्येक वस्तुको देख प्रसन्न होता इतनेमें उसने बांदियोंका सुना कि उसको ओर
चली आती हैं जब उसके समीप पहुंची तो उसके स्वरूपको देख सब खिलखिलाके हंसने लगी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्वि
४७
47

औरउनबांदियोंकेसन्मुखमेंएककैनोयोवनाअतिसुंदरी मृगनैनीमनहरणीबादशाहज़ादी
वस्त्रआभूषणबहुमूल्यरत्नपहिनेहुएथीउसकीसजधजऐसेउससेविदितहुआकियहीका
मिनीहैऔरवहउनसौसुंदरबांदियों औरदासियांउसकेचहुंओरदेखविकलहुआथाजबव
हसुंदरीदालानकेनिकटपहुंचीमेरे भाईने झुककेउसकी अगवानीकोउसस्त्रीनेउसेबैठ
नेको आज्ञादी औरमुस्कराकेकहाहमतुम्हेंदेखबहुतप्रसन्नहुएऔरजोकुछतुम्हेंइच्छा
हो कहोहमतुमकोदेवेंबनवारानेविनयकीमैं केवलआपकीसेवाकरनीचाहताहूं
औरकुछनहीं चाहताउससुंदरीनेकहामैंभीयहीचाहतीहूंदोचारघड़ीपरस्परहंसैंबो
लेंयहकहउसनेआज्ञादीकिभोजनलाओबांदियोंनेतुरंतनानाप्रकारकेपकवानलायेउस
केसन्मुखरक्खेउसनेमेरेभाईकोभीबैठनेकीआज्ञादी दासियोंनेउसकोउसीसुंदरीकेस
न्मुखबैठायाजबउसनेखानेकेलियेमुखखोलातोउससुंदरीनेदाबापकदांतउसकेमु
खमेंनहोउसनेअपनीसहेलियोंकोसैनकीवहसबदेखहंसी औरबकवाचढ़े२नि
जमलककउठाउससुंदरीकोऔरदेखहंसनाऔरसमझनाकिमेरीसंगतिसेयहप्रसन्न
होयहंसतीहैंअमंतहर्षितहोतानदेनेतरउससुंदरीनेछूहहोजानेकेलियेदासियोंसे
सैनकीकिहटजाओकियहमनुष्यभलीभांतिभोजनकरेऔरसुखसेवार्तालापकरे औ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

र अनंत कृपापूर्वक उत्तम उत्तम व्यंजन और नानाप्रकार के फल अपने हाथों से उठा उसे दि
ये और हँस हँस के उससे बातें करने लगी जब भोजन कर निश्चिंत हुए गानेवालियां साज
को लेके गाने बजाने लगीं और कोई कोई नाचने मेरा भ्राता भी मगन होय उन सबके साथ
नाचने लगा केवल वही सुंदरी बैठी हुई सबका तमाशा देखती थी जब वह भली भांति
नाच गाय चुका और विश्राम किया तब उस सुंदरी ने प्रथम एक गिलास मद्य का भर आप
पिया और एक गिलास मदिरा का मेरे भाई को दिया मेरे भ्राता ने गिलास ले उसके हाथ चू
मे और उसको पी लिया और कृतज्ञता के निमित्त कि उसने अपने हाथ से गिलास उसे कृपा
किया था सन्मुख खड़ा हुआ तब उस सुंदरी ने उसे अपने समीप बैठने की आज्ञा दी वह प्रणाम कर
बैठ गया वह सुंदरी गलबहियां डाल धीरे २ तमाचे मारने लगी मेरे भाई ऐसे सुंदर हावभा
व उसके देख हर्ष से फूला न समाता और समझता कि जगत में मुझसे कोई अधिक भाग्यशा
ली नहीं मदमत होय चाहता था कि उसकी मलोगी से विहार करे परंतु बांदियों के भय
से कि प्रतिक्षण उसे दृष्टि में रखतीं न कर सका फिर वह सुंदरी बड़े वेग से तमाचे तमाचे
मारने लगी न तब वह अप्रसन्न हो वहां से उठा और रूठ के दूर जा बैठा वह हब्शी जो मेरे भाई
को वहां ले गई थी उसे सैन से बतलाया तू अनुचित करता है उस मेरे उपदेश को भूल गया ब

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हमहाराजउससेनकाअभिप्रायसमझकरउसीसुंदरीकेसमीपआयाऔरयहबहाना।
कियाकिवहअप्रसन्नहोयहांसेनहींउठतीथीतबउसमृगनैनीनेभावनाके अपनाहा
थबढ़ाउसकोअपनीओरखींचाऔरअपनेसमीपबैठायप्रगटमेंउसपरबड़ीकृपाकी
बांदियोंनेउसकेप्रसन्नकरनेकेलियेनानाभांतिकाविलासकियानिदानउससमानेमे
रेभाताकीसभाकानकलकरनेवालाबनाकोईनोउसकीनामपकड़खींचतीओरको
इउसनमाचेमारतीनबमेरेभाईनेहहासेकहातमसमकहतीथींकिनयेसीसुंदरीपा।
वेगाकिकदाचित्ऐसीकमीखममममोनदेखीहोगीऔरतदेवमैंउसकेप्रसन्नार्थकैसे२
डाबसहताहूंहहानेकहाअभीक्याऊबा आगेयहसुंदरीतुझकोबहुतआनंददेगी
नटनेंतरउसनैयोवनानेकहातृणीअकेलाथी औरअप्रसन्नचितविदितहोताहै देव
नोथाइसेहास्यकेलियेमैंकिननीटयातमपरकरतीहूंपरंतुविसर्जनकरतेरंत
अप्रसन्नहोजाताहैजिससेहमेंग्लानिहोतीहैतबमेरेभाईनेकहाहेसुंदरीमेंवर्तमान
हूंजिसमेंआपकीप्रसन्नताहैवहकीजिये आपकीआज्ञाकाउल्लंघननहोगातबा।
उसनैयोवनानेयहसमझाकियहसर्वथानिकटमेरेकहनेमेंआगयाऔरकिसीअनु
चितकोअसप्रसन्नमानेगागलेमेंहाथडालकहाजोहमारीप्रसन्नताचाहताहैतोहम।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रेसदृशहोजायहकह अपनीबांदियोंसेकहातुरंतअनरगुलावनीस्नागेदोबांदियांदे।
ड़ोगई एकअनरकोशीशीलाई औरहसरीगुलावकोउसचंद्रबदनीनेनिजकरसरोजसे अ
नरलेमेरेभ्राताकोबहुतसालगायाऔरगुलावनीरउसकेमुखपरछिड़कामेराभाईयहआ
नंदमंगलदेखप्रसन्नहोयप्रफुल्लितहोयआधेमेंनसमातानंदनेनरउसगजगामिनीने अ
पनीबांदियोंकोगानेवगानेकीआज्ञादीवहगानकरनेलगींऔरएकदासीकोबुलाकेकहा
किइसलेजाओरजिसभांतितुम्हेंविदितहैइसेबनासंवारकेमेरेसमीपलायहसुनबक।
वाहतुरंतउठखड़ीहुईऔरउसहहासेकिवहभीउसीदासीकेसाथथीसुखाउससुंदरीने
मेरेवास्तेक्याआज्ञादीहै उसनेमेरेभाईकेकानमेंकहावसुंदरीचाहतीहैतुम्हेंस्त्री स्वरू
पवनाकरउसस्वरूपमेंभीतुम्हेंदेखेअबयहबांदीतेरीभवोंपरचित्रावीचेगी औरतेरीमूछे
मूड़तकेस्त्रियोंकेबसनपहिनायेगीमेरेभाईनेकहाकिमेरीमूछपरजितनाचाहोचित्रावी
चोमैंउसेजलसेधुलवाडालूंगापरंतुमूछमूड़नेमेंहानिहैक्योंकिमैंकुरूपहोजाऊंगा
उसहहानेकहाइसमेंनकरारनकीजियोवहइसजोतुम्हेंशोभदेनेवालाहै अशामेंहोगा
यहसुंदरीतुम्हारेरूपपरमोहितहैउसकेमनमेंअबयहीहैकितुम्हेंधनपात्रकरेतुझनयोड़ेसेमू
छोंकेबालमूड़नेकेलियेनकरारनकीजियोवहकोमललोगींकितेरीप्यारीहइतनीसीवात

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
४९

49

मैंअप्रसन्नहोजावेगी निदानवककवाराराजीहुआ औरकहाजोचाहोसोकरोनववहुदासीउ
सेएकमकानमेंलेगई औरउसकीभंवलालकरउसपरचित्रखींचेंनदनेनउसकीमूंछेमूं
उडाली औरदाढीमूड़नेकीइच्छाकीमेरेभाईनेइसमेंनकारकीकिदाढीमेरीनमूड़ोउसने
कहाजोनकियहीस्वीकारथातोमूंछेंकोमुड़गई औरस्त्रियोंकेबसनदाढीकेसाथको
करशोभादेंगे औरऐसीसुंदरीकोप्रसन्नताकेअर्थकिबुगदादनगरमेंअद्वितीयहैदाढ़ी
मुड़वानाकितनाबड़ाकामहैउसहद्दानेभीमेरेभाईकोबहुतसमझाबुझाकेराजीकिया
नवउसदासीनेदाढीमूड़स्त्रियोंकेचीरउसेपहिनाकरउसीसुंदरीकेसन्मुखलेगईवहमेरे
भाईकोस्त्रीरूपमेंदेखतेहीहंसते २ लोटगईनदनेनउसमनुष्यनेजोनेकहातूनेमेरीइच्छाके
अनुसारयहसबबातेंस्वीकारकीं अबएकबात औररहेतोउसकेकरनेसेमेरीप्रसन्नताहो
गीअर्थातमेरेसन्मुखनृत्यकरवहहाथउठा औरनाकपरअंगुलीरखनाचनेलगा उसके
नाचनेसेवहसुंदरी औरसबबांदियांमिलकेउसकेसाथनाचनेलगीं औरहंसते २ बाव
लीहोगईजबवहनृत्यकरचुकीसबोंनेउसदीनकेहाथपांवबांधभलीभांतिमारा औरए
ककोहंसीपरधकेलनेलगीउसहद्दानेइसकर्मसेउनकोवर्जा औरप्रकटमेंउसकी और
सेउनसबकोझिड़कमेरेभ्राताकोउनकीअकर्मसेअप्रसन्ननहोनेदिया औरथोड़ेसेउसको

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कानमेंकहाजोकुछहोनाथासोहुआथीर्थरावअभीतकेपारितोषिकमिलेगाएकबातके
वलरहगईहै अर्थात्यहसुंदरीजिसदिनमदिरापानकरतीहैउसकेनशेमेंकिसीकोअ
पनेसमीपनहीआनेदेतीजोउसेनग्नहोकेवलएकवस्त्रपहिनकेउसकेनिकटजावे औरउ
सकेएककहनेकोरक्खाकरैपरंतुवहआतोर भागतीहैकभीएकदालानमेंऔरकभीएकम
कानसेदूसरेमकानमेंयहांतककियहसुंदरीथकितहोयखड़ीहोजातीहैऔरवहपुरुष
उसेपकड़लेताहै अबवहमेरेआगेसेहोकेभागगीतोनग्नहोउसकेपीछेदोड़केपकड़
लीजियोयहसुनमेरेभाईनेबुद्धियासेयहबातसुनवस्त्रउतारडालेकेवलएकवस्त्रशरी
रपररहनेदियाऔरदोड़नेपरतत्परहुआतबसुंदरीभीदोड़नेकोउद्यतहुईऔरउससेपाखाद
अनुमानबीसपगकेउसकेआगेहोदोड़ीमेराभाईभीउसकेपीछेदोड़ाऔरसबवादियाभी
उसकेसाथतालीबजातीहुईदोड़ीवहसुंदरीदोतीनबड़ेदालानकेचारोंओरघूमएकछते
मेंजिसमेंबहुतअंधियाराथाचलीगईमेराभाईभीउसीभांतिउसकेपीछेदोड़करउसीअंधे
रेमकानमेंगयावहसुंदरीतोउसकोठेसेअन्यमार्गसेहोनिजगृहमेंआईपरंतुमेराभाईउस
मार्गकोनजानताथाउसअंधेरेकोठेमेंदोड़ताऔरभटकतारहाऔरकुछउसेवहांनसरा।
फताकिमैंकिधरजाताहूंऔरवहसुंदरीकहांहैनिदानएकओरकुछप्रकाशदेखदोड़ा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि
५०

औरउसमकानकेद्वारसेबाहरनिकलगयानिकलतेहीवहद्वारभिड़गयामेरेभाईनेअपने।
कोचमारोंकीगलीमें पायाचचाउसेनग्नऔरदाढ़ीमुड़ीहुईऔरसबदेहपरचित्रविचित्रखिंचेदेखवि।
स्मितऔरआश्चर्यमेंहोकरतालियांबजानेलगे औरकइयोंनेपीछेदौड़उसेमारनाआरंभ।
कियानदंतरकहांसेगधापकड़उसपरउसेसवारकरनगरकीओरलेगयेउसकोअमात्यता
सेवहसबनाटकरतेहुयेएकगलीमेंकिजिसकेसमीपकाज़ीकाघरथाउससेलेकेनिकलेका
जीनेशब्दसुनअपनेसेवकोंसेसबकोमेरेभाई समेतपकड़वाबुलवाया औरहमातनसेपूछाव
म्नकाओंनेकहास्वामीहमनेइसमनुष्यकोइसीदशासेअमुकगलीमेंजोवजीरकाहवेलीकेद्वा।
रस संबंधितहैपायागयाहवहवहांसेचलाआताथाकाज़ीनेयहसुन आवेशमें आज्ञादीकिइस
केपांवोंपरसौकोड़ेमारकरदेशनिकालादोफिरकभीइसनगरमेंनआनेपावे इतनाकहक
सनाईनेखलीफ़ासेकहायहकथाजिसमेंने आपकेसन्मुखवर्णनकीमेरेदूसरेभाईको।
थीफिरवहहज्जामअपनेछठेयभ्राताकाहवालानकहनेलगा ॥ नापितनकेअथेहूबकना।
मकन्नीयभ्राताकीकथाहेस्वामीमेरानीसराभाईबकबकनामसेप्रसिद्धऔरनिपटअंधा
थाबड़ाअभागाथा मनुष्योंकेद्वारोंपरभिक्षामांगताऔरनियमयहरकवाथाकिगलि
योंमेनिसअकेलाफिरनाऔरअपनेसाथमार्गदिखानेकेलियेकिसीकोनलेनाऔरकिवा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

उखड़खेटाकिभूपकाखेड़ारहताऔरकुछमतवसेनबोलताइतनेमेंधनीउसेद्वारखोलताभी।
लादेतासयोगवशएकदिनएकद्वारपरजाखटखटायाघरकेधनीनेजोघरमें अकेलाथा
पूछाकिकौनहै मेरभ्रातानेउत्तरनदियादूसरीबेरफिरकिवाड़खटखटायाधनीनेफिर
पूछाकौनहै फिरभीवहनबोलातबघरवालेनेद्वारखोलमेरेभाईसेकहातूक्या मांगता
है उसनेकहामैंनिर्धनदीनयाचकपरमेश्वरकेनामपरकुछभिक्षादो उसनेकहातुझे
आंखोंसेअंधाजानपड़ताहै मेरभ्रातानेकहासत्यहै तदनन्तरउसनेकहाहाथफैलामेरा
भाईसमझाकिकुछदेवेगाहाथआगेबढ़ायावहहाथउसकाबड़ेवेगसेपकड़सीढ़ीके
मार्गसेऊपरलेगयातबकनसमझाकियहभोजनखिलावेगापरंतुउसनेमेरेभाईकोऊ
परलेजायहाथछोड़दियाऔरनिजस्थानपरबैठउससेपूछातूक्यामांगताहैउसने आ
शीर्वाददेकहामैंभिक्षुकदीनऔरनिर्धनभिक्षामांगताहूंउसनेकहामैंभीतुझे आ।
शीर्वाददेताहूंकिईश्वरतेरेनेत्रोंमेंप्रकाशदेमेरेभाईनेकहाइतनीबातपहिलेहीक।
हदेतेमैंसीढ़ीपरचढ़नेकाकष्टनउठातातबउसनेकहामैंनेदोबेरतुझसेपूछाथातूकौन
हैऔरक्यामांगताहैतूकुछनबोला तूनेमुझेउतरनेकाकष्टदियातबउसनेकहामुझे
कुछभीतोदोउसनेकहामेरेपासकुछनहींतबमेरेभाईनेकहामुझेनीचेउतारदोउसने।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि
५१

कहा सोठौनेरत्नाम्बरने देह तू आपउन रजामेराभाईलाचारहोकरनीचेउतरनेलगा बीचमें
सेउसकाचरणफिसलानीचेगिरउसकेमस्तकश्रोरपीठमेंबड़ीचोटलगी जिससे अचेतवा
स्थितभयावहांसेचरवालेकोऊवाच्य श्रोरधिकारदेनाऊवाश्रोगचलासंयोगवशमार्गमें
अमश्रद्धेजोमेरेभाईकेमित्रथे मिलेउसकाशरीरपहिचानलिवेऊप श्रोरउससेपूछा आजत
केमित्रामेंक्यामिलामेरेभाईने उनसेसवेहनानअपनेगिरनेश्रोरचोटलगने श्रोरचरवाले
की अशीलताकावर्णनकरकहा आजमुफकोदिनभरऊछनमिलातदनंतरमेरेभाईने
उनसेकहातुमचरचलोश्रोरऊछइन्मजेवसेनिकालउन्हेंदियाकिमेरेनिमित्तऊछभोज
नमोललाश्रोअगठहोजोमनुष्यहबककोऊपरलेगयाथापकचोरथाबड़ाछलीश्रो
रईस्त्रीहबककोबांधनेस्वनचेउतरा श्रोर पीछेउसकेहोलिया श्रोरश्रद्धेकी अज्ञानता
मेंउनकेसाथलगाऊवाउसस्थलमेंजहांमेराभाईरहताथा गया सबकेनवरमेंबेट अ
पनेसाथियोंसेकहा अच्छीतरह देखभालद्वारबंदकरोकिकोई अन्यमनुष्ययहांनर
हे चोर यहवचनसुनबहुतसिटपिटाया श्रोरचंऊ श्रोरदेखयकमोटीरस्सीजोछतमें
बंधीथीदोनोंहाथोंसेदृढपकड़लटकरहा वहलीनों अंधेद्वारबंदकर अपनीलाटियां
सेकोणोंमेंभलीभांतिटटोल श्रोरदेखभालपकस्थानपरबैठगयवहचोररस्सीछो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ड़े मेरे भाईकेसमीपपहुंचा आवेगमेराभाईजबसमझाकियहांपरअमनुष्यनहीं न
बस्त्रमवानेकहनेलगाकितुमदोनोंनेमुझकोविश्वासितसमझ अपनाद्रव्यमेरे निकट र
क्खा मैनेतुम्हारीवस्तुयथोचितप्रबंधसेइससमयपर्यंतरक्खी अबनहींरखसक्ता
मउसेगिनकेलेलो हबक उसगुदड़ीको जिसमेंबयालीसहजाररुपये रक्खेथेउगला
या औरउनकेसन्मुखरखदिये उन्होंनेकहाहमेंतुम्हारीसमतापरविश्वासहैतौलने
औरगिननेकीकुछआवश्यकतानहीं तबवहथैलियोंकोटटोलफिरउसीभांतिधरदी
मेंरखजिसस्थानपरकिपहिलेथीरख आघातदनंतरमेरेभ्रातानेकहामुझेफेंदथालगीहै
कुछखानेकोमेरेनिमित्तबाजारसेमोलला आपकथेनेकहा उसकोकुछआवश्यक
तानहींक्योंकि प्रथमकथनवानेनेमुझेफेपाकभेजाथा उसमेंसेकुछखर्चहुआ औरबहुतसा
शेषहैवहभोजनतीनोंकोबहुतहै इतनाकहउसने अपनीझोलीसेकुछरोटियांपनीरसमे
तनिकालकरएकवीतदनंतरमेवेनिकाले औरऔरउनतीनोंनेपरस्परभोजनआरंभकिया
वहचोरजोमेरेभाईकेदाहिने औरबैठाथाआगेबढ़उसने २वस्तुऔरपाकभोजनकरनेल
गापरंतुउसचोरकीरक्षाकरनेपरभीहबकचबानेकाशब्दसुनचौंका औरमनमेंकहनेला
गा हमसबमारेपड़ेंगेक्योंकियहांकोईअमनुष्यजानपड़ताहैयहकहकहनेहीतुरंतचोरकाहाथ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
५२

52

पकड़लिया औरउसपरचढ़पुकारा किचोर चोर औरबहुतसीमुक्कीउसेलगाई औरउ
नदोनोंभाइयोंनेभीउसेमारबहुतनादकियाचोरभी अपनी सामर्थ्यभरउनसेबचता औरउ
नतीनोंकोपारीपारी सेमारता औरचिल्लानाकिलोगो दौड़ो चोरमुझेमारेडालतेहैं पड़ो
सीशहरकेनचारों औरसे दौड़ आये औरद्वारतोड़भीतरघुसपड़े औरसबकाकहाहै मेरा
भाईनेकहाभाइयोंजिसेमैं पकड़ेहूं चोरहै हमारेरुपयोंके आनेकेलियेजोहमने भीख
मागसंग्रहकियेहैंचुरानेआयाहै चोरनेसबकोदेखदोनोंनेत्रबंदकरछलसे अपने
कोअंधाबनालियाऔरकहा भाइयोयह अंधा असमर्थकहताहै परमेश्वरकीसौगंदहै
मैंभीइनकेसाथियोंमेंसेहूं मेराभागमुझेनहींदेते औरइनतीनोंनेमुझेचोरठहराया
औरबहुतसामारा परमेश्वरकेवास्तेमेरा न्यायचुकादो मनुष्यइसबातकान्यायकठि
नसमझचारोंकोकोतवालकेसमीपलेगये जबवहचारों कोतवालकेसन्मुखखड़े
कियेगये चोरनेकि अपनेकोभीछलसे अंधाबनायाथाउसकेप्रश्नकरनेके प्रथम
बोलाहेस्वामी मेरी बिनयसुनियेकिहमचारोंसम अपराधीहैं यदिहमचारोंबचनबध
करकेभीसच्चेजावेंगेतोकोईहममेंसे सत्यसत्य नकहेगाजोआपचाहतेहैं हमचारों
का अपराधस्वचितहोतोएकएक कोभिन्नभिन्न दंडदेनेकी आज्ञादीजियेतो अनेक

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

निजमुखसे अपने अपने अपराधकावर्णनकरेगा प्रथममुझसेआरंभ कीजिये मेरेभा
ईनेचाहाकिकुछबोलूंलोगोंने उसेकुछकहनेनदिया और चोरपरमारपड़नेलगीजब
अनुमानबीसवातीसकोड़ेउसपरपड़े तबतः उपनेलगा प्रथमएक औरबोलोफिरह
सरीबोलकोतवालसेबिनयकीहेस्वामी छुट्टादीजिये मरजाऊंगाकोतवाल उसकेवु
लेनेचदेख आश्चर्यमेंभया औरकहाहेदुष्ट अकर्मीयहतूनेक्याखेल कियाथाउसनेक
हाजोमुझेमारसेछुड़ाइये औरमेरा अपराधक्षमाकीजियेतोमैंइसभेदको आपकेस
न्मुखवर्णनकरूंकोतवालनेनिजसेवकोंकोआज्ञादी अबनमारोमैनेइसका अपराधक्ष
माकियातबचोरनेकहाहेस्वामीसमझोतो यहहै किमैंऔरतीनोंमनुष्यजिनकोआप अ
थाजानतेहैं सनेत्र औरज्योतिषुतहैं हमचारोंनेअपनेको ग्रंथाबनायाहैकि अभयहो
घजिसकेचरचाहनेहैं चुमजातेहैं मेंसमसम आपकेसन्मुखकहताहूंकिहमचारोंने इ
सीवहाने आजनकबयालीसहजाररुपया संचितकियाहै आजमेंइनकेसमीप अपना
चतुर्थभागलेने आयाथाउन्होंनेइस भयसेकियहहमाराभेदप्रगटनकरेउसेनादियाज
बमेंने अपनेभागलेनेमेंइनूसनकारकीतबइनतीनोंनेमिलकेमुझेभलीभांति मारा इ
सकेसाक्षीसबमनुष्यहैंमुझेयविस्मरण आशाहैकिमायसेमेराभागइनसेदिलादीजिये

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्दि
५३
53

यदि आप चाहते हैं मेरे साथी भी आपके सन्मुख समर्पक हैं तो इन्हें भी मारने की आज्ञा दी-
जिये फिर देखिये यह सब मार के कारण नेत्र खोल सम सम कहते हैं वा नहीं मेरे भाई
और उन दोनों ने भी चाहा कि कोतवाल से उसका छल प्रगट करें पर काजी ने कुछ न सु-
ना और कहा तुम बड़े दुष्ट हो अनेता से अथ बने हो कि पुरवासी तुम्हें अंधा जान बहुत
सी भिक्षा दें मेरे भाई ने कहा स्वामी जो इस चोर ने हमारे विषय में कहा कि हम सब ने भेस
बदले हैं हम तीनों परमेश्वर की सौगंध खा के कहते हैं कि हम में दोष नहीं निदान बहु-
त कुछ मेरे भाई ने कहा सुना परंतु कुछ लाभ का रोन हुआ और कोतवाल ने आज्ञा की
किसी किसी कोड़े इनको मारो तीनों पर मार पड़ने लगी काजी ने देखा कि इन पर इ-
तनी मार पड़ी और उन्हों ने आंख न खोली जान पड़ता है कि यह बड़े दुष्ट हैं और चोर
ने भी और सरणाय कहा मेरे प्रिय मित्रों को अपने प्राण देने हो यदि नेत्र खोल दो तो नि-
संदेह बचोगे और तुम्हारा अपराध क्षमा हो जावेगा निदान उनतर उसने कोतवाल से वि-
नय की है स्वामी यह तीनों बड़े आज्ञा भंग कर्ता और कठोरचित हैं जो आप मारते मा-
रते इनको मार भी डालेंगे तो कदाचित् अपने नेत्र न खोलेंगे अब यह अपने अपराध से
अधिक दंड पा चुके उत्तम है कि इनका अपराध क्षमा हो आप एक मनुष्य को मेरे साथ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कीजिये वह जो उन्होंने द्रव्य संचय किया है आपके सन्मुख लाऊं का जो इस व्यवस्था के
मूल को न पऊंचा और चोर के कहने के अनुसार एक सेवक को उसके साथ कर दिया व
ह जाय उस धन को उठा लाया था जीने उसका चतुर्थ भाग गिनवा के चोर को दिया और शे
ष आप लिया और उन तीनों अंधों को मार पीट देशनिकाला दिया नाई ने खलीफा के
सन्मुख विनय की स्वामी जब मैंने यह सुना तो ढूंढता ऊआ सेवक के समीप गया औ
र उसको फिर श्रम करके नगर में लाया और कोतवाल के सन्मुख साक्षियों के द्वारा नि
दोषता प्रतीत कराई तदनंतर कोतवाल ने चोर को भली भांति दंड दिया परंतु इश्वन फेरा
इस भय से ऐसा न हो कि इस चोर के दंभ छल से मुझ पर किसी भांति का उपद्रव हो नापित
ने इस कथा को समाप्त कर खलीफा से कहा यह मेरे तृतीय भ्राता का हतांत था खलीफा
इस कथा को सुन बऊत हंसा और इच्छा की कि मुझे कुछ पारितोषिक आदि दे बिदा
करे परंतु मैंने अपने चतुर्थ भ्राता की प्रारंभ की ॥ नाई के चतुर्थ काणे अल्कूज नामक
भ्राता की कथा स्वामी मेरे चौथे भाई का नाम अल्कूज था वह एक काना था जिस भांति उ
सने अपनी आंख खोई थी वह हतांत यह सेवक आपके सन्मुख वर्णन करता है वह मेरा
भाई पशुहिंसा अर्थात कसाई का कार्य करता था उसे भेड़ बकरी की पहिचान अच्छी थी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्वि
५४

54

औरमेरेफोकोभलीभांतिसुहृद सिखोता इसकारणलोकोंमेंबहुतप्रसिद्धथा प्रायःधनपा
त्र औरभलेभले मनुष्यमेरेफोकेसुहृदकाचरित्रदेखिने उसकेचरणोंने औरवहउत्तम उत्त
म स्त्रिपुत्रपुत्रहृदयोग्यदिव्यमेंठपालता इसकेविशेषनिजदूकानपरबहुतउत्तममांसबे
चताएकदिनवहअपनीदूकानपरबैठाथाकिएकहृष्टवहांआया औरअनुमानदुःस
सके मांसमोललिया औरउसकामूल्यदेचलागयामेरेभाईने वहरुपयेजोखेनऔरसुं
दरऔरनवीनप्रकारकेथेदेखकरकिसीभिन्नसंदूकमेंराखदियेवहहर्षपांचमासपर्यं
नउनकाहीमांसउसकीदूकानसेलेताऔरइसीभांतिकेरुपयेदेनारहावहउन्हेंएककही
स्थानपररखताजातारहापांचमहीनेकेउपरांतमेरेभाईने उसीद्रव्यकीभेंडमालनेकी
चाहीजबउसनेसंदूकेखोलातोवहांखेतनकागजकोटिकलिया पाईजिन्हेंदेखवह
अनंतविस्मितहुवाऔर अपनामस्तकपीटने औररुदनकरनेलगातदनंतरअपने प
डोसियोंकोबुला यहवृत्तांतकहा औरकागजकोटिकलियांदिखाईं वहदेख अधि
कआश्चर्यमेंहुये मेराभाईसमय रोरो करयहमांगताकिपरमेश्वरकरे इसीकालवह
छलीहृष्ट आजावे यहकहरहाथाकिवहहृष्टहृष्टसरेहहियपड़ामेरेभाईनेउसेदेखनेही
दौड़केपकड़ाऔरमनुष्योंकेसमूहमेंउसेखींचलाया औरदुहाईकरकर कहनेलगा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हे भाइयो देखो इस निर्लज्ज और बुड्ढे ने कैसा छल किया तदनंतर बहुजनसे दुकानदार औ
र पड़ोसियोंसे वहां बड़ी भीड़ होगई मेरे भाईने उसका वृत्तांत वर्णन किया है इनने यह सुन
मेरे भाईसे कहा यही उत्तम है कि मुझे छोड़ और उसका छल न कहे किंतु इस अनादर और अ
वाच्य जो तूने किया और कहे मुझसे क्षमा करा नहीं तो मैं तेरी इससे अधिक अप्रतिष्ठा
और निरादर करूंगा मैं नहीं चाहता कि ऐसे अभक्ष्य वस्तुको अपने माथे पर लाऊं मेरे भ्रा
ताने कहा तू क्या बकता है मैं कबू अपनी वस्तुमें छल नहीं करता तुझसे मैं नहीं डरता
बुड्ढेने कहा तू नहीं मानता यही चाहता है कि मैं तेरे कपटको प्रगट करूं यह कह उस बु
ड्ढेने कहा है भाइयो सुनो यह बकरी और भेड़का मांस नहीं बेचता किंतु मनुष्यका मां
स अपनी दुकानमें रख बेचता है मेरे भाईने कहा हे नीच इस अवस्थामें तू असमझ कहनेसे
भय नहीं करता उसने कहा मैं मिथ्या नहीं कहता तेरी दुकानपर एक मनुष्यका बालक
टका वा भेड़के सदृश नहीं लटकता जिसका मन चाहे दुकानपर जाके देखले उसमें मेरा भ्रा
उसमें मालूम हो जावेगा मेरे भाईने एक भेड़ मारकर लटकाई थी अल्हजन इस वचनको
सुन कोपित हुआ और बुड्ढेसे कहा तू झूठा है तुझे मेरे दोष लगानेसे क्या लाभ होगा
निदान वह सब मनुष्य बुड्ढेको पकड़े हुये मेरे भाईकी दुकानपर लेगए यदि वह झूठा हो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
५५
55

तोउसेउग्रणदंडदेवहां आयदेखातोवास्तवमेंएकमनुष्यकागलाकटाहुआलटकताहै
वहहहमायावीथा उसनेसबकीदृष्टिबांधदीथीजैसा उसनेकागज़कीटिकुलियांरुपये
दिखाए उसीभांतिमेरेकोमनुष्यदिखाया परंतुकिसीकोयहगुप्तबातविचारमेंनआई
तदनंतर उससमूहमेंसे एकमनुष्यनेमेरेभाईकोबहुतमारकरकहाउहहठकर्म्मीतुम
कोनरमांसखिलायाकरताहै उससमूहनेभीमेरेभाईकोमारायहांतककिएकनेतोउसका
स्रूटगयातोभीउनकोधैर्य्यनहुआउसेकाजीकेसमीपपकड़लेगए औरकटेहुएमनुष्य
कोभीजोउससमूहकीमायाकेकारणदिखाई देताथाउसीकेसाथकाजीकेनिकटलेजाय
दिखायाकाजीउसेदेखअत्यंतक्रोधितहुआ औरआज्ञादीकिपांचसौकोड़ेअल्लूज़ को
मारकरऊंटपरचढ़ाओ औरनगरमेंप्रसिद्धकरदेशनिकालादोउसदीनने उससमूहकेछलकी
हनानकहाकिरुपयोंकेबदलेकागज़कीटिकुलियां देताथापरंतुकाजीनेक्रोधवश
कुछनसुना जिससमययहकष्टमेरेभाईपरपड़ाथामैंबगदादमेंनथावहांकिसी नि
र्जनस्थानमेंगुप्तरहनेलगाकुछदिनमेंउसकीपीठकेघावजोमारकेकारणएहुएथे
अच्छेहोगए औरकुछचलनेफिरनेकीशक्तिहुईतबउसनेकिसी दूसरीबस्तीमेंजानेकी
इच्छाकीरात्रिकोअप्रकटमार्गोंसेचलताजब एकनगरमेंजहांउसेकोईनजानताथाए

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हुंचावहांकई दिनबड़ीकठिनदशासेकाटेएकदिनउसनगरमेंचलाजाताथाकिउसनेघो
ड़ेकेचलनेकाशब्दसुना पीछेफिरकेदेखातोबहुतसे सवारउसकेपीछेचले आतेहैं उ
नकोदेखिभयभीतहुवाकिमेरेहीपकड़नेकोतो इन्हेंइच्छानहींहैवहउठनेएकफाटक
तकपहुंचा औरसवारोंकेभयसेभीतरजायद्वारबंदकरलिया औरवहांसेएकविशालम
कानमेंजानेलगा इतनेमेंदोमनुष्योंने आकेउसेपकड़ा औरकहापरमेश्वरकाधन्यवादहै
कितुमहीनेहमकोहमतीनदिनसेतुम्हेंढूंढतेथे औरदौड़ते २ हमनेतीनरात्रिदिन
व्यतीतहुयेमेराभाई यहवचनसुन अत्यंतविस्मितहुवा औरउनसेकहातुम्हाराक्याप्रयो
जनहै औरमुझसेक्याचाहतेहोतुमनेमुझे किसीदूसरेकेभ्रमसेपकड़ातबउन्होंने क
हाहमतुझेभलीभांति जानतेहैंतूऔरतेरे साथीसबके सबचोरऔरडाकूहैंतूनेहमारे
स्वामीकीवस्तुऔररत्नचोरायउसे निर्धनकियातोभीतेरा बोधनहुवाअबतूउसकेप्राण
लेनेकेलिये आयाहैदेखें तेरेपासछुरीहैवा नहींकलरात्रिकोजोतेरेपीछे दौड़ेथेतेरे
हाथमेंहमनेछुरीदेखीथीयहकहउसकेवस्त्रमेंछुरी ढूंढनेलगेदैवयोगसेमेरेभाई
केपासएकछुरीथीवहउन्होंनेछीनली औरकहनेलगे औरकहनेलगे अबहमें अ
धिकनिश्चयहुवातूचोरहै मेरेभाईनेउनसेकहाक्यायहहासकाहै जिसमनुष्यकेसमीप

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्धि॰
५८

छुरीहै औरवहचोरहैजोमेरी आपदाकाहंतातूहैतोविश्वासहैकितुममुझपरदया
करोगेमेरेभ्राताकाहंतातून वहदोनोंलिपटगए औरवह्सांखंड खंड करदिये औरउसके
कंधोंपरघावदेखकरकहनेलगेतू अपनेकोभलामानुषकहताहै तेरेएभीऊपरमारकेचिन्ह।
हैंतू अवश्यचोरहै तदनंतर उन्होंनेउसेबहुतमारातबमेरेभाईनेकहाहै परमेश्वर मैंनेतेरा
कौनसापापकियाजिसकेपलटेमें एकबेरअथमनिर्दोषमारागया अबहमसोविप्रियोंव
थेमाराजानाहुआदोनोंनेमेरेभाईके कहनेपरकुछभीविचारनकिया औरउसेएकड़का
जीकेसमीपलेगएकाजीने उसेचोरसमझकहाहैइसे आयोग्य अभागेतूमनुष्योंकेचोरी
मेंसेंधदेताहै औरउन्होंकेबधकरनेकेलियेछुरी हाथमेंलेताहै अर्जुनने कहा स्वामी
मेरे सदृशसंसारभरमेंकोई निर्दोष औरनिष्पापनहोगामैंने कोईकुकर्मनहीं किया।
जोमेराहंतातूनियेतोमालूमहोगामुझसाकोईदयायोग्यनहीं तबएकनेउनमेंसेकहा
आपइसकीबातेंक्यासुनियेगाजोलोगोंके घरोंमेंद्वारतोड़उनकीधरीवस्तुचुरालेजाता
है औरखुरगसी इसकेहाथसेमारजातेहैं जोहमारेबचनपर आपकोविश्वासनहोतो इसके
बधेआपदेखियेकि कितनेचिन्हमारकेहैं उन्होंनेमेरेभाईकी पीठखोलकाजीकोदिखाई
तबकाजीने आज्ञादीकिबड़ेवेगसेसोचाबुकमारझटपरचढ़ा संसारनगरमेंफेरो औरए

56

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कमनुष्यइसके आगेगुरुकारे यहदंडउसकादंडहै जोकोई मनुष्योंके घरोंमेंघुसकेचोरी करेतो
दानउसेमारपीटप्रसिद्धकरदेशनिकाला दिया औरआज्ञादीफिरइसनगरमेंनआनेपा
वेकोई मनुष्योंनेकिउसे दूसरी वेरआपदामेंदेखाथा गुरुसे आयकहामैंसुननेतेही व
हां गयाऔरउसेसहूठयमबुगदादमेंलाया औरअपनीसामर्थ्यभरमैंने उसकापालन
कियाखलीफायह सुनबहुतहँसा औरअल्कृतको अभागपनापर अतिदया आईत
दनंतरचाहाउसकेपारितोषिक आदिदेविदाकरेपरंतुमैंने औसरनदियाविनयकीस्वा
मीजहोआपनेस्वामिभावसे इतनाश्रमकियामेरे औरदोभाइयोंकावृत्तांतभी सुनलीजिये
विश्वासहै आप उनअद्भुतवृत्तांतोंको सुनआनंदितहोंगे औरहमसातोंभाइयोंकीकथा
परिपूर्णहोजावेगी॥ नापितकेअलनसचरनामकपंचमभ्राताकावृत्तांतमेरे पांचवेंभाई
कानाम अलनसचरथावहपिताकेसाथरहाकरताथापरंतुमहा आलसीऔरनिकम्मा
या औरबड़ीनिर्लज्जतासेसभ्योंकोकुछभिक्षा मंगाना औरउसेभोजनकरकालक्षेपकर
ना औरमेरापिताकिवृद्धतासेशिथिलहोगयाथा कालवशहुवातोनहजारएकसौ प
चासरुपयेजोउसनेछोड़ेथेहमसातोंभाइयोंनेपरस्परबांटलिये अलनसचरनेभी अप
नाभागपायाथाउसने अपनीबेसमरमेंभीइननाइक्यनपायाथाशठ शोचविचारमेंपड़ाकिर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्वि
५२

समेंकोंकरव्योपारकरूंपहिले कौनसीवस्तुनिदान विचारने २ उसनेसाढ़ेचारसो रुप
येकेशीशेकेपात्रगिलास आदिकमोललिये औरएकबड़े टोकरेमेंभरएकदूकानप
ररख आपभीदीवारसेलग बैठा औरएकसहचीकारकोजोउसकीदूकानकेनिकट
अपनाकामकरताथा उसकेसाम्हने होकर अपनेमनविचारकेकहनेलगा किमें
इसवस्तुकोनौसोरुपयेपरवेचकरउससेफिरशीशेमोललेएकहजार आठसोकोबे
चूंगा इसीभांतिमोललेनेबेचनेतीस हजाररुपयेहो जावेंगे तदनन्तरमें उत्तम उत्तम ब
हुमूल्य मणिमाणिक रत्नमोती मोललेव्यापारकरूंगा जबबहुतधनमेरेमनोर्थानुसार
मुझेप्राप्तहोगातबमें एकबड़ाउत्तमविशालघर औरकईसेवकऔर अश्वमोललेबड़े
धन्य पात्रोंकेसदृशरहाकरूंगा धीरेधीरे मेरेउच्चपदऔरबढ़तीकाहालसम्पूर्णनगर।
मेंप्रसिद्धहोगाऔरउत्तमस्त्री पुरुषगानेबजानेवालेजोइसनगरमेंप्रसिद्धहैं मेरेघरआ
याकरेंगेजबमेराव्योपारबढ़ता बढ़ता पांचलक्षसहस्रपर्य्यन्त पहुँचेगातबमेंबहुत
सेद्रव्य औरवस्तुसे अपनेकोबादशाहकेसमान समझकवज़ीरकोउसकी कन्याकेसा
थ अपनेविवाहकानेगभेजूंगाकिमैंनेसुनाहैकितेरीकन्या अत्यन्तरूपवतीकोमलां
गीप्रियबचनीचतुरा औरसुंदरगुणयुक्तहै उसकाविवाहमेरेसाथकरदेयादिवज़ीर।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ने स्वीकार किया तो उत्तम नहीं तो उसकी कन्या को नौ संगम रात्रि के लिये एक हज़ार अशर
फी दूंगा यदि उसने इन्कार किया तो मैं उसके घर पर चढ़ उसके सन्मुख उसकी पुत्री को ब
रजोरी निकाल लाऊंगा निदान जब मेरा विवाह बजीर की कन्या के साथ हो जावेगा तो मैं
दस सेवक मोल लूंगा और उत्तम वस्त्र शाहज़ादों के सदृश पहिनूंगा और जड़ाऊ साजवा
ले अश्व की घोड़े पर चढ़ बड़ी सजधज से कुछ कदम आगे पीछे वजीर के घर को आ रजाऊंगा
जब मैं उसके मंदिर में पहुंचूंगा सम्पूर्ण छोटे बड़े मनुष्य मेरी और उठ हर्ष से दौड़ेंगे और बड़े
आदर भाव से मेरी अगवानी कर मंदिर के भीतर ले जावेंगे जब मैं अपने घोड़े से उतर रूपस्ना
ने की इच्छा करूंगा मेरे सेवक दास और प्रधान आदि द्वारों में और पंक्ति बांध खड़े होंगे वज़ीर
मुझे अपना दामाद जान निजस्थान पर बैठावेगा और आप मेरे सन्मुख हो बैठेगा तब मैं
सेवकों को आज्ञा दूंगा दो तोड़े हज़ार हज़ार अशरफी के लाओ वह तुरंत लावेंगे मैं एक
तोड़ा वज़ीर को दे कहूंगा कि यह भौरी के समय का नियत तथ नहीं है तदनंतर दूसरा तोड़ा
अशरफ़ियों का दे कहूंगा यह केवल अपनी उदारता से मैं तुम्हें देता हूं मेरी दानवसेपा
सहस्र के सब मनुष्य परस्पर चर्चा करेंगे तदनंतर मैं निज वाहन घोड़े पर चढ़ उसी सजध
ज और ठाठ से अपने घर आऊंगा अनंतर मेरी स्त्री यह गुण मान कर कि मैं उसकी पिता की

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मेंढकोगयाथा एकस्थानकोभेजेगीमें उसेवहुमूल्यवस्त्रऔरबहुतसापारितोषिक आ
दिदेविदाकरूंगा यदिमेरीस्त्रीकुछमेरेनिमित्त सौगातभेजेगीतोमें उसे अंगीकारन
करूंगा औरबेरबेर नवीननवीन बसनबदलबेठूंगाजब अपनीस्त्रीकेसाथविहारकी
इच्छाहोगीतोबडेठाट औरसगर्वबैठदाहिनेबायें दृष्टिनकरूंगा जबमेरीस्त्रीसोर
हसृंगारबारहो आभूषणकरपूर्णमासीकेचंद्रमाकेसदृशमेरेसन्मुख आवेगीमें उ
सकोओरआंख उठाकेभीनदेखूंगा नवउसकोसखीसहेलियांउसके आगेपीछेकी
आकरमुझसेकहेंगीहेस्वामी अपनीस्त्रीकीओरकिवहतुम्हारी किकरीतुम्हारेसन्मु
खखडीहै बैठनेकीआज्ञादो औरकुछउसकी औरकृपाकरोमेंउनकीबातकाकुछ
भीउत्तरनदूंगावहसबमेरीग्लानि औरअनइच्छासेअमेतविस्मितहोगी औरबहु
कालपर्यंततखड़ी खड़ी मुझसेविनयकरेगी तदनंतरमेंशिरउठायकिंचित् कृपा
दृष्टिपूर्वक उसकी औरदेखफिरउसीभांति चुपकारहूंगा वहदासियांसमझेंगी
किमेरीस्वामिनी उत्तमवस्त्रनहीं पहिनेहै इसी निमित्तउसकी औरप्रसन्नतासेनहीं
देखतातोउसे वस्त्रबदलनेके अर्थएकमकानमेंलेजावेंगी औरमेंभी अपनेमकान
मेंजायभारीउत्तमबसनपरिरवहो आवेंहूंगाजबउलहिनकोस्वलानेकेलियेलावें

गीमैं ननकउसकी ओरनदेखूंगा किंतुपीठ फेरसोरहूंगा औरउससेबाततभीनकहूंगा अरुणोदय
होनेपरवहउठ अपनीमातासेजो वजीरकीस्त्रीहैजायमेरेगर्व औरअरूपाकीनिजव्यथा क
हसुनावेगी उसकीमातामेरेदेखनेको आवेगी औरमेरेहाथहमके कहेगी इतनी अपील
तामेरीपुत्रीसेनकरोयहसदैवतुम्हारी आज्ञापालनकरेगी औरमनकर्मवचनसे तुम्हेंप्यार
करेगीनिदानमेरीसासभी मुकसेबहुतनऊछकहेगी पंरन्तुउससभीमैंगर्वयुक्तचुपकाहोबैठा
रहूंगाफिरमेरेचरणोंकोहमकरकहेगी तुमकोउचित नहीकिइननामेरीपुत्रीसेहूररहो
मैंनेउसेनिजनेत्रोंसेकदाचितभीमनकिया औरतुम्हींनेउसकाम्हावदेखाहै उसीइस्पसान
होतुम्हारी इससअहकपासेउसकेचितपरऊछखेदहोतुम्हेंउचितहैकिउसकीओरदेखो औ
रउससेवार्ताकरोवह अंतनतुहिचनराहैतुम्हें सर्वदाप्रसन्नरक्खेगीजबयहविनयमेरेमना
मेंऊछफलनकरेगी तबमेरीसासमयकाएकगिलासभरमेरीस्त्रीकोदेकहेगीयहगिलास
अपनेपतिकोदेविश्वासहै किवहकठोरनामागदेगा औरइसतेरेकोमलहस्तकमलोंसेले
करपीजावेगामेरी स्त्रीवहगिलासमेरेसन्मुखलायमेरेभयसेबहुकाल पर्यंतकांपाऔर
थरीयाकरेगीनिदानवहकहेगीमेरेप्यारेस्वावदेनपतितुम्हेंउसीईश्वरकी सौगंदहै जिा
सनेतुम्हेंएेसाउच्चपददियाहै इसगिलासकोइसतुच्छदासीकेहाथसेलो औरपानकरोमें

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सादि
५९

59

किंचितउसकेवचनकाविचारनकरूंगा औरनउससेबोलूंगानबवहप्रथमसेअधिकरोतीहुईआ
गेबढ़कगिलासमेरेमुखकेपासलाय बहुतबिनयकरनेलगीकिमैंपिऊंउसकी इसप्रकारढिठाईसेमैंअप
सन्नहोकरएकतमाचाउसकेमुखपरऔरएकचरणकोठोकरऐसेमारूंगा किदालानसेनीचे
जायपड़ेगीमेराभाईइसीशोचबिचारमेंऐसा मग्नथाकिवहसबबातेंसचजान औरउलटदि
नकोलिखीजानघरीशोकेपात्रोंमेंऐसेबेगसेठोकरमारीकिवहटोकड़ाउलटरहकानेकेनीचे
आरहाऔरसंपूर्णपात्रटूटफूटचूर्णहोगयेसत्यकारजो उसकेनिरर्थकवचनबैठासुनता
थाउसकेपात्रटूटे औरटोकड़ेकोउलटादेखबहुतहंसा औरमेरेभाईकोकहाहेउत्तमभाग्यर
हितयहउसीकोदंडहैजोतूनेऐसीरूपवतीस्त्रीकेसाथऐसाअक्रमकिया जोमैंतेराससुरा
वज़ीरकेबदलेहोतातोएकसौचाबुकतरेफेलगाता औरनगरमेंप्रसिद्धकर अनादरकरता
मेराभाईभीटोकड़ेकोउलटादेखचेतनहुआ औरसमझायहसबमेरे अहंकारकेकारणहु
निरुईनदनेतरखाकुलहोयवस्त्रफाड़ने औररोनेलगायहांतककिउसकेचिल्लानेसेमहल्ले
केमनुष्यजोएकत्रहोनिमाजपढ़नेजातेथेउसकीदशादेखव्याकुलहोगये औरसबकहनेलगे
किइसकुलाहलकाक्याकारणहैयदिसुक्रवारथा औरदिनोंसेअधिकभीड़होगई उसकी
मूर्खविना परसबहसनेसंयोगवशएकयनपात्रयुवती अतिसुंदरवाहनपरसवारहोकरच

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हांपहुंचेवहांठहरसम्बहसेसबनेलगीकौनरोरहाहै उसपरकौनसीआपदापड़ीउन्हों।
नेवातनबनाकेविनयकीयहनिर्धनीदीनबहुतथोड़ाद्रव्यरखताथाएकटोकड़ाशीशेकेपा
त्रोंकामोललियहांबेचनेकेलिये आयादेवयोगसेवहटोकड़ातत्कालनकेनीचेगिरपड़ा औ
रसंपूर्णपात्रचूर्णहोगयेउसस्त्रीनेफिरकेएक अपनेसेवककी आज्ञादीवहथैलीजोतेरेपा
सहै इसदीनकोदेउससेवकनेवहथैलीजिसमें पांचसौअशरफियांथीं मेरेभाईकोदीउसने
लेली अलनसचरनेप्रसन्नहोय असंख्यआशीर्वादउसस्त्रीकोदिये औरदुकानबंदकर
अपनेघरगया अपनीभाग्यपरबहुतप्रसन्नहुवा इतनेमेंकिसीनेउसकेद्वारपरहाकदी
अपनेदरवाजाखोलदेखा एकबुद्धाकहतीहै वेटावंदनाकासमयबीताजाताहै एकलोटा
जलकादेतोमैंहाथपांवधोकरवंदनाकरूं मेरेभाईनेउसेदेखाकिवहहासएंग आवुकोपङ्ग
चगईयद्यपिउसेनजाननाथापरंतुउसेपानीदिया औरकहायहांपरबैठकरवंदनाकर
लेजबवहनियमितवंदनासेनिश्चिंतहुईतबमेरेभ्राताकेचरणोंपरयसीफुकीकिए।
थ्वीसेभाललगवायाजैसाकोईईश्वरकीवंदना करताहैतदनंतरपीछेउठाउसबहुतसे
आशीर्वाददियेपरंतुवहबसन असंतमलिनफटेपुराने पहिरेहुयेथीमेराभाईउसके
दीनतायरदयाकरसमझाकिऊबयहयाचनाकरतीहै दोअशरफियांनिकाल उ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सादि
९

60

सेंदी उसनेफेरदींमेराभाईउससे अनंतअप्रसन्नहुवातवउसवृद्धानेकहातुमनेमुझेकंगाल
समझातुमअपनीदोअशरफियां अपनेपासरक्खोमुझेकुछ अवश्यकतानहीं एकमहा
तरुण अनंतरूपवती और अनंतदानी स्त्रीमुझेबहुतकुछदेतीलेतीहै जिसमेंनिर्धन न
हींमेरासर्वविश्रामाउसछलकोनसमझाकिउसनेक्योंदोअशरफियां फेरदींवृद्धासेकहा
हमउसतरुणीकोकिसीभांतिदेखसक्तेहैं उसनेकहानिस्संदेहकिंतुउसेतुमविवाहक
रसक्तेहोभाई अशरफियांरक्खो औरमेरेसंगचलो एकहीबेरअनंतसुंदरी यौवनाऔ
र असंख्यधनतुम्हेंमिलेगा उसनेहमयानीकमरमेंबांधली औरउसवृद्धाकेसाथहोलि
याआगेवहपीछेमेराभाईचले चलतेचलते एकबड़ेघरकेद्वारपरपहुंचेवृद्धानेदोंका
दीतुरंतएकग्रीकदेशकीदासीनेआयद्वारकोखोलदिया वृद्धानेप्रथममेरेभाईकोभीतर
जानेकेलियेकहातदनंतर आपभीभीतरजायउसेएकबड़ेविशालमकानमेंलेगईवहमका
ननानाप्रकारकीसामग्रीसेअलंकृतथा अनंतरवृद्धामेरे आगमनकासंदेशउस
स्त्रीकोदेनेगईमेराभाईगरमीकेकारण अपनेमस्तकसेपगड़ी उतारसावधानहोबैठाच
णमात्रमेंवह सुंदरीभीमेरेभ्राताकेनिकटआईवहउसकेरूप अनूपमनहरणउसकेदा
ण वेषभाव दैनभाव औरवस्त्राभूषणकोदेखमोहितहोगया औरउसकेमुखकरआगण

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मकियाउसस्त्रीनेउसेवहांरहनेदिया औरआपउसकेनिकटआवैगी औरउसेदेखि हर्षित
हुई औरकहनेलगीयहस्थानहमारेबैठनेयोग्यनहीं तदनंतरमेरेभाईकाहाथपकड़ ह
सेरेमकानमेंलेगई औरबहुतकालपर्यंतप्रीतियुक्तबातेंकरतीरही तदनंतरउसने यहकहा
किमैं अभीआतीहूं औरमकानमेंगईवहउसके आगमनकीबाटदेखतारहा अकस्मात्ए
कबड़ाबलवानहबशीहाथमेंखड्गलियेहुयेआया औरभृकुटीचढ़ाकरमेरेभाईकोकहा
तेरायहांक्याकामहै अलनसचरउसेदेखभयभीतहुवा औरमुखसेकुछभीउत्तरननिक
लाउसहबशीनेहमयानी उसकेकमरसेखोलकरहाथखड्गकेमारशरीरउसकाखंड
खंड करदियावहदीन अभागाघायलहोएपृथ्वीपरगिरपड़ा यद्यपिउसकीबुरीदशाहो
गईथी परंतुप्राणमात्ररहगयेथेजबवहसमझाकिमैंइससेबधकरचुकालवणमंगवाया
वहांसीकदेशकीदासी पात्रमेंचूर्णलवणकालेके आईउनदोनोंने उसकेघावोंपरभली
भांतिनोनछिड़का यद्यपिनोनछिड़कनेसेबहुतकष्टहोताथा परंतुकुछभीनहिलामृ
तकोंकेसमानपड़ारहाउसहबशी औरदासीकेचले जानेकेपश्चात्वहटहाजोमेरेभ्राताको
छलसेलाईथीघसीटएकचबच्चेमेंडालआईजहांबहुतसीलोथेंथींयद्यपिवहमृतक
समानहोगयाथापरंतुकुछदेरमेंकिंचित्स्वस्थहुई औरअप्रगटमेंघावोंपरनमककमलनेसे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्दि
८१

61

पीड़ा होती थी परंतु वही कारण उसके जीवन का हुवा और इतनी सामर्थ्य हुई कि उठ बैठ गई दो दि
न के पश्चात् वह रात्रि को उसी मकान का द्वार खोल बाहर निकला और एक मकान में छिप र
हा जब उसने प्रातःकाल को देखा कि वह हब्शा उस शिकार छूटने को गई वह भी वहां से भा
ग मेरे निकट आया और उन्हीं आपत्तियों का वृत्तांत जो थोड़ी सी अवधि में उस पर पड़ी थी वर्ण
न किया एक मास के पश्चात् सब घाव उसके और औषधि आदि के सेवन से अच्छे हो गये तब उ
सने उस हब्शी से अपना बदला लेने की इच्छा की इसलिये उसने बड़ी तलाश की तो जिस में पा
चसौ अशरफियां समा वे बन गई और अशरफियों की जगह उसमें शीशे के टुकड़े भर अप
नी कमर में बांधे और बुड्ढिया का भेष बनाय एक खड्ग अपने वस्त्रों में छिपाय प्रातःकाल उसके
ढूंढने के लिये निकला अकस्मात् एक गली में वही कपटी बुड्ढिया जो मनुष्यों को छल
ने और भुलावा देने के लिये फिरती थी उससे मिली उसने अपना शह हब्शियों के सदृश
बदल प्रथम प्रणाम किया तदनंतर कहा बहिन एक क्षणमात्र के वास्ते कहीं से तुला रुप
ये तोलने के लिये मांग की ला दो क्योंकि मैं पारस देश की रहने वाली हूं अभी इस नगर में आई
हूं पांच सौ अशरफियां मेरे समीप हैं चाहती हूं उसने तोल और जो वल्लभरी है वा कुछ कम
है उसने उत्तर दिया बहिन तुम सुफ़सा इस नगर में कोई विश्वासित न पाओगी मेरे साथ चली

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

आओ मैं अपने पुत्रके घर जो सर्राफीका कार्य्य करता है तुम्हें ले चलूंगी वह भलीभांति तु
म्हारी अशरफियां तोल देगा तुम्हें कुछभी श्रम न होगा शीघ्र चलो ऐसा न हो वह अपनी
दूकानपर चला जावे उहां मेरे भाईको उसी विशाल गृहमें लेगई जिसमें पहिले लेगई थी
और उसी ठीकदेशकी दासीने द्वार खोला तदनंतर भीतर लेजाय एक स्वच्छ स्थानपर बैठा
य कहा ठहरो मैं अपने पुत्रको जाय बुलालाती हूं क्षणमात्रमें उसका कपटपुत्र अर्थात्
वही दुष्टकर्म्मी हबशी पहुंचा और पुकारा है हा मेरे संग चलो निदान वह हबशी
मेरे भ्राताको उसी ओर जहां उसे खड्गसे मारा था ले चला अलग्न सघर वहांसे उठ उसी हबशी
के पीछे चला मार्गमें हबशीको अकेला और अचेत पाय अपने वस्त्रसे खड्ग निकाल ये
सो उसीकी गर्दनपर मारी कि शिर उसका कट नीचे आपड़ा तब उसने एक हाथसे उसका
शिर और दूसरे हाथसे धड़ खींच उसी चबच्चेमें फेंक दिया इतनेमें वही दासी पिसा हुआ ल
वण ले आई और उसे नंगी तलवार लिये कूप और मुखसे वस्त्र उतारे रूप जिससे वह अपना
पुरुषत्व छिपाये था देख नमकका पात्र फेंक भागी मेरे भाईने दौड़ उसका शिर धड़से काट।
डाला तदनंतर वह वृद्धा आहट सुन दौड़ी आई देखें क्या होरहा है यह चरित्र देख भागने ल
गी इतनेमें मेरे भाईने पकड़के कहा है दुष्ट तू मुझे नहीं पहिचानती मैं कौन हूं उसने कंपित

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि
८२

62

होकहा मैंने मैं नहीं पहिचानती तुमको न हो और कभी तुम्हें आगे नहीं देखा मेरे भ्राता ने
कहा मैं वही हूं तूने जिसके घर में जाय अमुक दिवस हाथ पांव धोने के लिये जल मांगा था
उसे भूल गई वह कहा गिड़गिड़ाय उसके चरणों पर अपराध क्षमा कराने के लिये गिरी मेरे
भाई ने उसके भी बार बिड़ किये अब उस घर में केवल न हो सुंदरो मृगनैनी रह गई मेरा
भाई उसे ढूंढने लगा तो उसे एक दूसरे मकान में पाया वह नौयौवना उसे देख भयभीत हु
ई और मूर्छित होने लगी मेरे भाई ने उसको कड़वे वचन न कहा और उससे पीछे से पूछा है सुं
दरी तू कैसे आकर इन अन्याइयों के फंदे में जिनको मैंने अभी का किया फंसी और रहती थी
उसने कहा मैं एक बड़े धनपात्र व्यापारी की स्त्री थी यह कहा जिसमें न जानथी कभी
मेरे घर आती एक दिन उसने मुझसे कहा है प्यारी मेरे घर विवाह है यदि आप मेरे घर
आवें तो मैं तुम्हारा बड़ा यश मानूंगी इस विषय में उसने मुझसे बहुत विनय की सो मैं
उसके घर जाने के लिये प्रसन्न हुई और बहुत उत्तम आभरण और वस्त्र पहिर के और सो
अशरफी अपने साथ ले उस बुढ़िया के साथ चली वह मुझे इसी घर में लाई मैंने यहां इस
हबशी को देखा उसने मुझे बरजोरी अपने पास रक्खा और घर न जाने दिया इसको ने
न वर्ष हुये तब से मैं इस मंदिर में रहती हूं और इस हबशी के कर्म से अमंत अप्रसन्न रहा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

करतीथीमेरेभाईने सच्चायहांकितनाद्रव्यहै उसनेकहावहां इतनाधनहैकिकभीन निर्धा
ननहोगा तबवहउसेबड़ेदालानमेंलेगई औरबक्रनसेसंदूककेवलरुपयोंकेभरेहुये
उसेदिखायेवह देखआश्चर्यितहुआतदनंतर उससुंदरीनेकहाजा औरबक्रनसेमनुष्यइनसं
दूकोंकोउठानेकेलियेलाऔरइनसबवस्त्रोंकोउठायहांसेलेचल यहसुनमेराभाईबा
हरकाद्वारबंदकरदौड़गया औरबक्रनढूंढकेबक्रनसेमजदूरलेकेवहां आयाप्रथमद्वा
रखुलादेखआश्चर्य कियातदनंतरभीतरजायदेखानतोवह संदूकहैंनवहस्त्रीमेरा
भाईशोचाकिक्योंकरयह सुंदरीसंदूकोंसमेतगुमहोगईतदनंतर विचाराखाली हाथ
जानाउचितनहीं मजदूरोंसेवहसब असबाब अनुमानपांचसौ अशरफीकेउठवाले
चलासंयोगवशमेरेभाईने भीतरघुसते समयउसघरके आवागच्छकाद्वारबाहरकोऔ
रसेबंदनकिया औरनताला दियाइसलिये वहांके पड़ोसीउसघरकोअसबाब औरमनु
ष्योंसेखाली औरमजदूरोंकेशिरपरवस्त्रलेजानेदेखकाज़ीसे जायपुकारेदोन अतन
सवरएकरातको अपनेघरआनंदमें सोयाऔरप्रातःकालको उठचाहताथाकिबाहर
निकले अकस्मात्थानेके बीससिपाहीआये औरउसेपकड़लिया उसनेकितनाही वि
नयकीकिद्वाणामरठहरोकितुझकोविशावनभी देनेलगाकिउसेछोड़ेंपरंतुउन्होंनेउस

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
९६

63

केकहनेसुननेपरकुछभीविचारनकियाऔरबरजोरीउसेवांधकाजीकेसमीपलेगए का
जीनेउससेएकबारसुझेवताइसबस्तुकोतूनेकहांसेपाया उसनेकहामैंअभीसमस्त हत्तांत
को आपकेसन्मुखवर्णनकरताहूंपरंतुयहएकप्रतिज्ञाकीजियेकिकिसीभांतिकादंड
मुझेनदेनाकाजीनेकहाऐसाहीहोगातबमेरेभाईने आदिसेअंतपर्यंतसबऐसेहत्तांतवर्णे
नकिया औरकोईबातनहींछोड़ीकाजीने अपनेमनुष्योंकोउसकेघरभेजसबवस्तुउठ
वामंगवाई औरअपनेघरमेंभिजवायकुछभीउसेनदियाकिंतुआज्ञादीअलनसुघरको।
देशनिकालादोतीनवर्षपर्यंतइसनगरमेंनआवेपावेक्योंकिओसरपायकाजीके अन्या
यकाखलीफासेनकहनेपावे अलनसुघरनेकाजीकी आज्ञानुकूलउसनगरकोपरित्या
गपरअन्यनगरमेंजानेकीइच्छाकीमार्गमेंडाकुओंने उसकासबधनलूटामैंयहहत्तांतसु
नकुछवस्त्रसंगलेउसकेढूंढनेकेलियेचलानिदानउसेढूंढनिकाला औरअपनीसा
मर्थ्यभररूपये औरवस्त्रदे अवकटइसनगरमेंगुप्तकरकेलाया औरसदैवउसकाभा
ईयोंकेसमानप्रतिपालनकरतारहा ॥ नाईकेशाहकबकनामकछठेभाईकीकथाजिसके
ओंठखरगोशकेसमानथे यहकथामेरेछठेभाईकीहै अबकेवलउसीकाहत्तांतशेष
रहगयाहैउसकानामशाहकबकथाउसके ओंठखरगोशकेसदृशऊपरकोचढ़ेहुए

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

येथे और खरगोश के समान चलता प्रथम उसने उसी ४५ ह० अपनी पिता की थाती से बहु
तद्रव्य कमाया निदान उस भाग्यता से निर्जयन और नफा जो कुछ उससे प्राप्त हुवा था खो बैठा किंतु
भोजन भी न मिलता न तदनंतर वह यह काम करता कि द्वारपालों और सेवकों को द्रव्य देय नया
त्रों के चरों में याचने जाता और यह कुछ उसको और से कहने सुनने जिस्से वह भाग्यवान मनु
ष्य उसपर दया कर बहुत सी भिक्षा देता दैवयोग से एक दिन वह एक बड़े विशाल गृह की ओर।
गया जहां बहुत से दास चाकर बने मान थे वह एक सेवक के समीप गया और पूछा यह कि
सका मकान है उसने उत्तर दिया मालूम होता है कि तू परदेशी है और ने रान गर यहां से बहुत
दूर होगा कि यह मंदिर और खसम की का नाम सूर्थ्य से अधिक विख्यात है तब उसने उन
सेवकों से याचना की उन्होंने कहा भीतर जाय हमारे स्वामी से मांग लो और वह तुरंत फ थनपा
त्रे और निहाल करेगा और तुझे कोई नहीं पकेगा मेरा भाई उस मकान के भीतर गया और
देखता मकी के समीप जाय पहुंचा वह मंदिर भीतर से बहुत विशाल और स्वच्छ और भां
ति भांति की वस्तुओं से अलंकृत था और उसके निकट एक पुष्पवाटिका थी जिसमें
नाना प्रकार के रंग की शिला का फर्श था और चारों ओर उसके बरामदे व दालान ये देखि नाना
प्रकार के रंग के परदे लटकते जिस्से सूरज की धूप भीतर न आने पाती एक दिशा को ऊंच

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि
८५

परदेखेथेजहांसे मंदमंद ठंडीठंडी हवाचलतीमेराभाई ऐसेविशालगृह औरसामग्रीको
देखकरखिन्नहुआऔरविस्मितहुआयहतो अवश्य मनोरथानुसारलाभहोगातदनंतरवहांएक
दालानदेखाकिबहुतउत्तमरत्न औरमणि माणिकरत्नआदिसेसजाथा औरउसकेभीतर
एकसुंदरपुरुषरत्नजड़ितपलंगपरबैठेदेखाउसकेरूपसेमालूमहुआकिइसविशालगृ
हकायहीधनीहैवास्तवमेंवहीमकानथाउसनेदेखतेही मेरेभ्रातासेकुशलपूछा और
कहातुमक्याचाहतेहोमेरेभाईनेप्रणामकर विनयकीहेप्रणतपालमेंनिर्धनदीनमनुष्य
हूंतुमऐसेधनाढ्यवानभाग्यवानसेकुछयाचनेआयाहूंबरमकीनेमेरेभाईकेउत्तरसेप्रसन्न
होतेहीहाथ अपनीछातीपररखकेउसकाऐसाहालदेख औरउसपरदयाऔरकृपा
करकहाभाईआश्चर्यहै हमारेबगदादमेंनिवासकरनेपरभीतुम्हारी ऐसीकुदशाहैमेराभा
ईइसबातसेसमझायहमुझेबहुतकुछदेगा तदनंतरउसनेबरमकीको आशीर्वाददीबर
मकीनेमेरेभाईकोथोड़ीदेरकहाहमऐसाउपकार तेरेसाथकरेंगेकिजन्मभरनभूलेगातदन
तर मेरेभाईनेकहा आपकेसत्यवचनसेविनयकरताहूं आजमैंने अबतककुछ
नहींखायाबरमकीनेकहाक्यासत्यकहतेहोतुमने अभीतककुछभीभोजननकियाहो
विदितहैयहदीनमनुष्यक्षुधासेव्याकुलहै तदनंतरबड़ेशाहसेकहाअरेलड़केतुरंतकुछ

64

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जलका लोटा लाओ और हमारे हाथ धुलवा अभी कोई न आया न लोटा आया परंतु बरमकी अ
पने हाथों को मलथो ने लगा जैसे कोई उस पर जल डालता है और मेरे भाई से कहा तुम भी आ
गे आओ और हमारे साथ अपने हाथ धो मेरा भाई शोचा यह हम सुखदे है रसो वह भी आगे ब
ढ़ कर उसने हाथ धोने लगा तदनंतर उसने कहा थोड़ी थरो भोजन अभी आता है यह कह फि
र हाथ पठाया और अपने मुखमें हाथ लगा मुंह चलाने लगा जैसा कोई मुंह में ग्रास डाल चबा
वता है और मेरे भाई से कहा है मेरे अतिथि तुम भी खाओ ऊब लज्जा न कर यह दृष्टान्त प्रसिद्ध
है अहार व्यवहारे लज्जा न कारे यह अपना ही घर समझ कर तू बहुत न वचाना पिन जान पड़ता है मे
रे भाई ने मुख से मुफ़ला यकहा महाराज मुझ पर दया कीजिये इस कुठौर बातों से मरी न्हीं मा
नं हीं होता तो बरमकी ने कहा क्या तुम्हें यह शीरमाल स्वादिष्ट नहीं लगती उसने कहा में न तो
ऊब बणी रमाल देखा नाकू और स्नमा समनिदा न वरमकी के कहने से अत्तु कएं भोजन करने
लगा थोड़ी काल के पश्चात् वरमकी ने कहा क्यो करे हम री थाली लाओ और मेरे भ्राता से कहा
इसन वी न थाली के पाक भोजन करो और इसका स्वाद उठाव अफ़ सकल है तुम ने ऐसा स्वादु वि
बटेर और वकोर का मांस कदा वित न खाया होगा तदनंतर उसने वनसका अनामांस मंगा
वाया और उसको भांति मान सी विचार से भोजन करने लगा तदनंतर मेरे भाई से कहा देखो।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि ९५

काप्रष्टऔररुचिकारीपत्नीकामांसबनाहैपकवान्नऔररानइसकीउत्तमलो औरधीरे २ भो।
जनकरो अभीभांति भांतिकेपाकआनेवालेहैंइसीभांतिमकोअनेकप्रकारकेपाकमंगवाय
ष्ठभोजनकरनाफिरएकबकरीकेबच्चेकाअन्नःपरिपक्वमांसमंगवायउसकेस्वादिष्टताकोब
ढ़नसीप्रशंसाको औरअन्नभोजनोंकेरसटशाडसेभीखाया तदनंतरकहाएकप्रकारकाण
कपेसास्वच्छऔरस्वादयुक्तहैकितुमयहांकेसिवाय अन्यस्थानपरनपावोगेयहकहकरउठ।
थोड़ासाउसमेंसे अपनेहाथमेंलेमेरेभाईकेमुखमेंगला औरकहाभाईइसकेभोजनकरने।
सेतुम्हेंइसकास्वादमालूमहोगामेराभाईआगेबढ़ा औरमुखमेंबोलउसग्रासकोबरमकीकेहा
थसेलेचबायउसकीबढ़नसी प्रशंसाकोबरमकीनेकहाकोमैंनकहताथाखावोगेतोजा
नोगेशाहकबकनेकहावास्तवमेंऐसास्वादिष्टभोजनजन्मभरमेंनहींखाया तदनंतरऔ
रविधिकापक्वमांसलायागयाबरमकीनेकहायहभीऊंचेस्वादमेंउससेन्यूननहींमेरेभा
ईनेकहावाहयहपाकभीस्वच्छऔरसरुचिहै इसमेंसे अंबरलवंगजावित्रीजायफल
सोंठकीसुगंधआतीहैयहसबयत्नसेइसमेंमिलायेगएहैंकिएककीसुगंधदूसरेकोन
होंदबातीबरमकीनेकहाइसकास्वादतुमनेपायाइससेभलीभांतिभोजनकरोतदनंतर
आस्ताकीपात्रसमेतफललाओसेवकोंनेझटपटभोजनकेपात्रउठाअनेकवर्णफलोंकेपा

65

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

त्र लगा कहने लगे फल वर्तमान है बरमकी ने मेरे भाई से कहा यह बादाम नवीन तोड़े गये हैं
नदनंतर वह दोनों फूटमूंड उनको तोड़ छिलके फेंक बादाम का शब्दा खाने लगे नदनंतर क
हा यह सब नवीन फल हैं भोजन करो मेरे भाई ने कहा स्वामी का अच्छे और रुचिकारी अंज
न खाये जिनके खाते खाते कंठ डाबने लगा और तीन मिनट ऊई बरमकी ने मुस्कराय अंत्रु कर्णम
य का पात्र मेरे भाई के हाथ में दिया उसने प्रथम तो न लिया और कहा हमारे कुल में यह अभ
क्ष्य है मैंने इसको कदापि पान नहीं कि पानि दान बरमकी के तकरार करने से वह पीकर कहा र
का तो इसके पीने से मुझे ऊब भी प्रसन्नता न ऊई बरमकी ने कहा मेरे मद्यालय में एक प्रका
र की मदिरा है उसके पान करने से तुम बहुत प्रसन्न होगे अनंतर उसने मानसी विचार से उ
सी भांति की मदिरा मंगवाय प्रथम एक गिलास आप पिया और एक गिलास मेरे भाई को
दिया उसने भी अपने को उन्मत्त बनाया और मतवालों के सदृश एक दो वेर हाथ उठा बरम
की को मारा तो सरा विरियां बरमकी ने बचाने के निमित्त उसका हाथ पकड़ लिया और
कहा क्या तू विक्षिप्त हो गया है निदान मेरा भाई चैतन्य हो कहने लगा स्वामी आपने अ
पने घर में बुलाकर नाना प्रकार के व्यंजनों से वंचनी खिलाये और बरजोरी मुझे मद्य पिलाई
उसके नशे में आय से बड़ी ढिठाई को इसी निमित्त यह सेवक उसने अपनी ताया ऐसा न हो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
५९

66

किउसकेनशेमेंकोईढिठाईबनिआवेआशारखताहूंकिमेराअपराधक्षमाहोवरमकी
क्रोधकेबदलेहंसपड़ाऔरकहाकिमैंबहुतकालसेतुझसामनुष्यकोढूंढ़ताथा परंतुमैंस
नेरअबरायकोत्तमानकहूंगापरंतुएकप्रतिज्ञासेकितूमेराचरनजअनन्नजा औरमैंइसी
समयसेतुझसेप्यारकियाकरूंगा अबतुमभोजनसचमचकाभगवानतेहैं यहकहकरहांक
दीनंरतमबसेवककोदेदेआपउसने आज्ञादीशीघ्रभोजनलाओ उसकीआज्ञापानेहीवही
पाकजोकेवलउसनेअपनेहृदयकेविचारसेहीभोजनकियेथेलायामेरेभाईनेवहसब
पाकरुचिपूर्वकतृप्तहोभोजनकिये अनंतरजबवहपात्रउठालेगयाआई औरकईस्वरूपया
वानस्वरूपबसनपहिरेजर्दबांदियांगानेबजानेकीसमग्रीसहित आईऔरबहुभीठस्व
रोंसेगाईमेराभाईवरमकीकीहास्यप्रकृति औरउदारतासेबहुतप्रसन्नभया औरउसकी
बहुतसीस्तुतिऔरप्रशंसाकरआशीर्वाददिये वरमकीनेनिजवस्त्रालयसेवस्त्रमंग
वायमेरेभ्राताकोदियेउसनेअपनेमलिनवस्त्रउतारउसेपहिने वरमकीनेप्रादकवक
को प्रेमकेविषयमेंबुद्धिमान औरवचनरचनासेसुनिनिजघरकेकाजउसकोसौंपे वहबीस
वर्षपर्यंतप्रसन्नऔरनिश्चिंततासे वरमकीकीसेवामेंतत्पररहाप्रेमकेविषयसेउसे प्रस
न्नऔरहर्षयुक्तरखवानिदानवरमको अतिवृद्धहोकरकालवशहुवायदिकोईउसका

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पुत्र न था सब रुपया और वस्त्र उसको खलीफा ने हर लिया उसके साथ जो कुछ मेरे भाई को
प्राप्त हुआ था वह भी छीन लिया मेरा भ्राता एवं की भांति निर्धन होय एक यात्रियों के समूह
के साथ मक्के की यात्रा को गया मार्ग में लुटेरों ने उसे लूट लिया वस्त्र धन आदि उन सब का लू
ट उन्हें अपना गुलाम बना लिया सो मेरा भ्राता भी एक बनवासी का दास भया वह जंगली
सर्वदा उससे द्रव्य मांगता था और कहता कि इतने रुपये मुझे दे तो मैं तुझे छोड़ूंगा जब उससे
कुछ न पाता तो उसे मारता एक दिन मेरे भाई ने उससे कहा तुम मुझे वृथा मारते हो मेरे पा
स कुछ भी नहीं और किसी प्रकार द्रव्य दे नहीं सकता उस बनवासी ने निराश हो क्रोध से छुरी
निकाल मेरे भाई के दोनों होंठ चीर डाले तो भी उस कठिन परिश्रम लिया करता उस बन
वासी की स्त्री अति सुन्दरी थी जब वह कहीं लूटने को जाता तो मेरे भाई को घर में रखता के त
मिन्नर ख जाता वह स्त्री एकान्त स्थल में मेरे भाई को सम्मान करती और उससे बहुत धैर्य दे
ती सो मेरा भाई जान गया कि वह मुझे बहुत चाहती है और मुझसे कुकर्म की इच्छा रख
ती है वह उस बनवासी के भय से उससे भिन्न रहता और यथाशक्ति उससे बचता परन्तु जब व
स्त्री उसे देखती तो नैनों से अति तीक्ष्ण कटाक्ष करती परन्तु शाहकवक अपने नेत्र नीचे क
र लेता एक दिन उसी सुन्दरी ने भूल से अपने पति के सन्मुख कहीं हाव भाव शाहकवक के

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि
८२

67

साध्याकियेउसकापतिउससमयदेखकरचुपहोगया औरमननेमैंकहामेरेपीछेयहअवश
अनुचितकर्मकरतेहोंगेइसविचारसेवह अमेनतकोधितअग्यानिदानअत्यंतकठोरतासेशा
हकबककोछूटपरअपनेपीछेवठायकबहुतऊँचेनिर्जनपहाड़कीचोटीपरलेजायछो
ड़दियाऔरआपउतरआया औरयहशोचाकियहींभोजनजलविनादोनोंनदिनमें मरके
रहजावेगासंयोगवशउसपहाड़सेबुगदादनगरकारस्ताथाप्रायः यात्रीमेरेभाईकोवहाँ
अकेला औरदयातुषाभुक्तदेखभोजनदेनेऔरकईपरदेसियोंनेजोवहाँसेयहाँआपथेउ
फ़ेसउसकोदशावर्णनकीकिअमुकपहाड़ परतेराभाई अतिदुर्दशामेंपड़ाहैयहसुन
मैंतुरंतउधरचलाऔरउसपहाड़परजायथाशक्तिउसकीसहायताकीऔरउसेअप
नेनगरमेंलेगयाखलीफ़ाइसकथाकोसुनबहुतप्रसन्नहुआ औरबहुतद्रव्यपारितोषि
कआदिदेविदाकियाऔरमुझेगंभीरताकाउपनामदिया औरकहाफिरतूइसनगर
मेंन आइयोकुछदिनोंमैंने अन्यदेशोंमेंनिवासकियाजबमैंनेसुनाखलीफ़ाकालव
पाहुआफिरमैंइसबुगदादनगरमेंआयाउससमयतकमेरेसबभाईमरगयेथेकुछकाल
पश्चात्मैंउल्लूकीसेवाकीजैसातुमनेउसकेसबखेसमुनायरंतुबहुतखेदऔरपश्चातापहै
उसनेइसपरिश्रमऔरसेवाकेबदलेमेरीयह अप्रतिष्ठाकीइसकेविशेषमुझेबकवादी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

काकलेकलगायापरंतुउसपरभीसर्वदाउसकोदुःखरहताथा यहांतककि आजसुफे
मिलाउसहूकानप्रोनेजोकुछमेरेविषयमेंकहातुममीउसकेसाक्षीहो इतनाकहहस्तचीकर
नेखलीफाकेसन्मुखविवेककियाजबवहमनसबवृत्तिनाईकेभाईयोंकेसुनेहमेंपारितोषए
विश्यामृतवाजोउसपुरुषनेइसकेविषयमेंकहासबटीकहैतदनंतरमैंनेओरश्रम अ
निश्चियोंनेवहांपाकआनंदपूर्वकभोजनकियेइतनेमेंत्योपप्रहररहोगयामैंवहांसेवि
दाहोअपनीदूकानपरआया ओरसंध्यासमयदूकानबंदकर अपनेघरजानेलगा इत
नेमेंयहकुबड़ामद्यकेनशेमेंउन्मत्तहोमेरीदूकानकेसन्मुखवैठगनवलावजाने ओरगान
करनेलगामैंउसेअपनेघरमेंलेगया मेरीस्त्रीनेउसीदिनमछलीबनाईथीवहउथालीमें
रखमेरेसन्मुखलाई मैंनेथोड़ीसीमछलीलियाकुबड़ेकोदीकुबड़ाउसकेकांटेनिकालने
केविनाखागयाउसकेभोजनकरतेहीवहमरछाखायगिरपड़ामैंनेबहुतसयत्नकिये
परंतुसबनिष्फलहुये निदानलाचारओरआपकेभयसेइसअपनेकंधेपरउठायहूदी
वैद्यकेघरलेगयायहांसेआपने सस्तांहवानसबविसरहुनाहै इसवैद्यनेभीइसमोदी।
केचुबारेमेंफेंकदिया ओरमोदीनेजायउसेबाजारमेंदीवारसेलगाकेखड़ाकियाउसकेमा
पारीनेउसेचोरसमझकरदोचारथप्पड़लगाईकिवहपृथ्वीपरगिरपड़ाउसनेजा
© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि
९८

68

तायह मेरेहाथसेमरगयाखामीयहवहकथाहैजिसेमैनेआपकेसन्मुखअपनेप्राणछुड़ा
नेकेलियेकहीअब आपनीतिसेबिचारकरआज्ञादेंउसमेंमैंप्रसन्न औरवर्तमानहूंचाहे आ
पबधकीजिये अथवाप्राणदानदीजियेखलीफाकाशागरखचीकारसेयहसुनबहुतप्रस
न्नहुवाऔरकहाइसखचीकारकोसाथियोंसमेतछोड़दोयहसबनिर्दोषहैं औरमैंइस
पेगुलऔरनाईकेछहोंभाइयोंसमेतवृत्तांतसुनबहुतहर्षितहुवावास्तवमेंयहकथाइ
सकुबड़ेकेचरित्रकीअपेक्षाअत्यंतअद्भुतहैपरंतुमैंचाहताहूंकिइसलोथकेगाड़नेऔर
तमचारोंमनुष्योंकेबिदाहोनेकेप्रथमउसीनाईकोजिसकीकथाकेकारणसबछूटेदे
खूंअभीतोइसनगरमेंउसकामिलनाकुछकठिननहींतदनंतरउसखलीफानेनिजसेव
कोंकोआज्ञादीइसखचीकारकेसाथजायउसनाईकोतुरंतमेरेसन्मुखलाओवहदो।
नोंउसेढूंढते ढूंढतेवहुतकालमेंउसेपाकरखलीफाकेसन्मुखलायेउसकोअवस्थान
बेवर्षकीथी औरदाढ़ीभौंहेंउसकीहिमकेसदृशश्वेतऔरनासिकाबहुतलंबी औरक
र्णउसकेबहुअवस्थाकेकारणलटकतेखलीफाउसकेविचित्ररूपकोदेखविवशहंस
पड़ा औरकहामैंनेसुनाहैतुझेअतिविचित्रकथास्मरणहैंमुझेइच्छाहैकितेरेमुखसेउ
नमेंसेएककथासुनूंनाईनेप्रणामकरबिनयकीहेस्वामीप्रणतपालउदरभंजनजोकुछ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मुझे आज्ञा हो उसके पालने में मैं तत्पर हूं परंतु प्रथम एक मेरा प्रश्न है आशा रखता हूं कि उस
के वर्णन करने के लिये मुझे आज्ञा दीजिये खलीफा ने कहा वह क्या है नाई ने कहा इस यहूदी
वैद्य और रस्तचीकार और इस कुबड़े को जो लेटा है यहां एकत्र होने का क्या कारण है खलीफा
ने कहा तुझे इस प्रश्न से क्या प्रयोजन है उसने कहा जिस्से आपको मालूम हो कि मैं अल्पभा
षी हूं। खलीफा ने सुशीलता से कुबड़े और चारों मनुष्यों की संपूर्ण कथा जो कुबड़े की हिंसा
के अपराधी ठहरे थे सविस्तर यथातथ्य वर्णन की उस नाई ने उसे आदि से अंत पर्यंत सुनकर
सविधि से शिर हिलाया जिस्से सब कोई समझे उसने इस विषय में कोई बात न निकाली परंतु
उस प्रगट न होकर सका तदनंतर उसने कहा वास्तव में यह कथा अद्भुत और ललित है मैं
चाहता हूं उस कुबड़े के समीप जाय उसे भली भांति देखूं तदनंतर वह उस कुबड़े के निकट जाय ए
पृथ्वी पर बैठ गया और उसका शिर अपने दोनों रानों में रख शोच विचार ठहा मार हंसा इतना
हंसा कि पीछे को गिर पड़ा और कुछ खलीफा का भय न किया फिर उठ बहुत काल पर्यं
त हंसा किया और कहा यह कुबड़े की ऐसी कथा है कि मनुष्य इसे स्वर्ण के जल से लिखें
उस नाई की बातें सुन संपूर्ण मनुष्य आश्चर्यित हुए और परस्पर कहने लगे यह नाई या तो वि
क्षिप्त है अथवा वृद्धावस्था को प्राप्त होने से अल्पबुद्धि हो गया है काशगर के खलीफा ने।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सिंह
६९

भीविस्मितहोउससेपूछाहे अल्पभाषीबुद्धिमानमहापुरुषतेरेइसविषयके हंसनेकाक्याकारण।
है उसनेउत्तरदिया आपकीशीलता ओरदयावानचित्तकीशपथखाकेकहताहूंयहऊबड़ान
हींमराअभीइसमेंप्राणहैयदिमेंइसबचनकोसत्यनदिखाऊंतोमैंउद्धेहिओविनित्तिमरूं यह।
कहउसनेओषधियोंकासंदूकचाजिसेवहसर्वदा अपनेनिकटरखताथाखोलाउसमेंसेकि
सीवस्तुकेतेलकोशीशीनिकालबहुतकालपर्यन्तऊबड़ेकेकंठमेंमर्दनकरतारहा अनंतरकि
सीयंत्रसेऊबड़ेकाजबड़ाखोलउसकेकंठमेंमोचनालेगया ओरउसस्थपकड़केमच्छीकाकांटा
उसऊबड़ेकीनालसेनिकालसबकोदिखाया तत्क्षणमात्रमेंउसऊबड़ेनेअपनेहाथपांवफै-
लाये ओरनेत्रखोलेइसकेविपरीतकितनेहीचिन्हउसकीसजीवनताकेजानपड़ेकाशगरकाख
लीफा ओरसंपूर्णमनुष्यऊबड़ेकेजोउठनेसेजोपकवानदिनजमीनमेंपड़ारहाथा अत्यंत
आश्चर्यित ओरआनंदकोप्राप्तहुयेतदनंतरखलीफानेआज्ञादीकियहसबऊबड़े ओर
नाईकीकथालिखीजावे ओरमेरेकोशमेंरक्खीजावे इसकेविशेषआज्ञादीस्त्रीकार
वैद्य मोदी ओरफरंगीकोपारितोषिककिउन्होंनेऊबड़ेकेविषयमेंबहुतदुःख ओरक्लेशपायाथाबहु
मूल्यपारितोषिकदेविदाकरो ओरनाईकाऊबड़ेमासिकनियतकर आज्ञादीमेरासभामें
उपस्थितरहाकरवजीरकीबड़ीबेटीऊबड़ेकीकथासमाप्तकरचुपहोरही तबदुनियाज़ादउ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सकी छोटी बहिनने उससे कहा हे रानी तुमने का अब्बे कथा ऊबड़े की कही मैंने तो जाना था
बहुदीन ऊबड़ा बालब में मारा गया था परंतु उसना ईका थम है जिसने अपनी बुद्धिमत्ता और
यत्न से उसे फिर जिलाया हिंदुस्थान के बादशाह श्याहरयारने कहा मैंभी नाईके मारे गये ओ
र पैंडलकी कथा सुन अमंत प्रसन्न हुआ बादशाह जादने अपनी बहिन डुनियाजाद से कहा य
दि बादशाह सुलेमान दान देगा तो मैं वकाके पुत्र अबुलहसन और बादशाह हारूं रशीद।
दकीप्यारी शामसु निहार नामकी कथा कि वह ऊबड़के चरित्रसे लालित तो में सुन नहीं
कहेगी उस बादशाहने उस कथा के सुनने के लिये मलका को उस दिन भी न मारा और नि।
यमानुसार बादशाह सभा में जाय निज राज काज करने लगा तदनेनंतर हरसरीरेनि प्रातः।
काल के एक मुहूर्त पहिले उस नियमित समय पर डुनियाजादने अपनी बहिन से कहा उ
सकथा को वर्णन करो सो वह इस भांति कहने लगी ॥ अबुलहसन नामक शाहजादा और
बादशाह हारूं रशीद की प्यारी शामसु निहार का चरित्र खलीफा हारूं रशीद के सुल्तान
तेमें बगदाद नगर में एक पंसारी था पड़ा धनवान और सुंदर और उसका अंतःकरण उसके
रूप अनूप से भी उज्वल वहां के प्रतिष्ठित और राजसभा के अधिष्ठाना उसका अति सत्कार।
करने यहां तक की उसका विश्वास हारूं रशीद खलीफा पर्यंत भी विदित था बादशाही

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सिद्ध

८.

70

महलाकेछूटें २ बांदियां अनेक विषयमें उससे व्यवहार रखतीं और वह भी उनको याचित
वस्तुओं को तुरंत देता सो उन स्त्रियों के सब वसन आभूषण और रत्न आदि उसी के द्वारा मोल
लिये जाते उसकी सुशीलता और खलीफा के मेहरबानी के कारण सब पुर के अधिष्ठाताओं
के पुत्रों को आवागवन उसकी दूकान पर रहती और अनेक उस पंसारी से प्यार मित्रता रखता
था उनमें से एक बड़ा कालड्का अबुलहसन नामक जो फारस के बादशाह के घराने में से
था उससे बहुत प्यार और मित्रता रखता और दिन को आठ पहर उसके निकट बैठा रहता वह पं
सारी भी औरों से अधिक उसका आदर करता था वह शाहजादा अमन सुंदर रूपवान था जो कोई
स्त्री पुरुष उसे देखता मोहित हो जाता इसके विशेष बड़ा गुणवान गान विद्या कविता आदि
में अति निपुण था यदि वह कभी बाजा बजाता वा गान करता उसके सुनने के निमित्त बहुत से
मनुष्य एकत्र हो उसकी प्रिय वाणी से आनंदित हो मग्न हो जाते एक दिन वह शाहजादा उसी
की दूकान पर बैठा था कि कादाचित कि एक सुंदरी चितकबरे खच्चर पर सवार और दश दासि
यां उसके आगे पीछे चली आती हैं और सबके सब वस्त्र से ढके हैं और उस स्त्री कि कमर
में स्वच्छ पटका बंधा था जिसके गिर्द चार अंगुल के प्रमाण चौड़े लैस टंकी हुई और उसके
वस्त्रों में नाना प्रकार के बड़े बड़े हीरे मोती जड़े उस सुंदरी का रूप देखना विचारना चाहिये

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जिसकोबांदिया औरसखीसहेलियांपूर्णमासीकेचंद्रमाकोलज्जादेनीथींनिदानवहसुंद
री चंद्रमुखीमजगामिनीउसीहकानपरकिसी आवश्यकताकेनिमित आईवहपंसारीउसे
देखनेहीदौड़ाऔरअगवानीकरनिजहकानपरबैठाया औरपारसकेशाहजादेने औरसरणा
कमखावकेमटीहुईनिपाईलेजायउसकेचरणकमलोंकेनीचेरक्खी औरनम्रतापूर्वकप्र
णामकरउसकालीन्कोहमाजोउससुंदरीकेचरणोंकेनीचेथा तदनंतरजबउससुंदरीने
वहांपरअपनाथरसमफ अपनेमुखसेवस्त्रउतारातबचंद्रमुखीकोमनहरणछविकोदेख
नेहोकामने औरसरपायशाहजादेकेहृदयमेंपैसेबाणमारेकिजिससेवहअतिविकलहो॥
गया वहसुंदरीभीशाहजादेकोदेखमोहरूपीअग्निसेजलनेलगीनिदानवहदोनोंप्रेमी
परस्परप्रेमजालमेंफसविरहसागरमेंमग्नहुयेउससुंदरीनेशाहजादेकाखिजरहना अ
नुचितसमफबैठनेकेलियेकहाशाहजादाउसकी आज्ञानुसारउसीकेसमीपबैठगयापरंतु
चित्रसमानअपनीप्यारीकोटकटकीबांधदेखरहाथावहसुंदरीउसकी अधीरताकोस
मफत्वरंतउठखड़ीहुई औरपंसारीकेकानमेंप्रथमतो अपनेआनेकाकारणकहातदनंत
रउसनक्षणकेनिवासस्थानकापताचिन्हसबपंसारीनेकहाहेगजगामिनी यहतोकिशो
रबकाकापुत्र अबुलहसननामकपारसकेबादशाहके घरानेमेंसेहैइसीकापिता औरदा।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि
७२

दोवहांकाअन्तिमबादशाहथाअथःवहांकीशाहजादियांख़लीफ़ाकेघरानेमेंब्याहीगईहैं
वहसुंदरीउसकेउच्चजातिकाहालसुनअंतहर्षितहुई औरपसारीसेकहातुमफेरइसनौकिशा
रसेभेंटकी अतिलालसाहैसोतुमसर्वदाकरादियाकरनामेंनिजमंदिरकोसिधारतीहूंअ
शुकदासकोबुलानेकेलियेतुम्हारेनिकटभेजूंगीतुमइसकोअवश्य अपनेसंगलानामें
चाहतीहूंयहमेरीपुष्पवाटिकाऔरभवनकोसैरकरेतोइसकाचित्तप्रसन्नरहेचलनेसा
मयफिरशाहज़ादेकेलेआनेकोताकीदकी औरबचनबंधकरचलीगईपसारीजोसबुद्धि
औरचतुरथाउसम्हुगनेगीकामनोर्थसमझकहामें अवश्यइसेलाऊंगातदनंतरवह चंद्रमु
खीचम्पकवरणीविदाहोचलीशाहजादाउसेबड़ीविकलतासेदेखाकियाजबवहदृष्टिसे
गुप्तहुईउसकोविदितमकीनोंईनकतारहापसारीनेउसेबहुतसमझायाकिमित्रकृपालतो
हेमतब्यमतमेंहोइसकदशामेंदेखहसेगेइसचिंताकोतजऔरअपनेचितकोहरसरो औरल
गाउसनेकहाजोमेरे अंतःकरणकेकष्टकोजानोतोविख्यातहेसुफेनवजोगोमें उससुंद
रीवहसुखीकीप्रीतिमेंबेबशहूंपरमेसरकेवास्तेबतावोयहकौनहै औरइसकामंदिरक
हांहैपसारीनेकहामेरेप्यारेयहसुंदरीप्रणामसुनिहारनामकख़लीफ़ाकीप्यारीहै शाहजा
देनेकहाप्रणामसुनिहार इसकानामरखनाबहुतउचितहुवाक्योंकिवहसूरजकेसदृशहैपं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सारीनेकहाखलीफाइसपरअत्यंतप्रीतिसेरखतीहै औरसबकेआतीहै जोजो वस्तुयहमांगेतत्क्षणउसे
लादीजियो औरप्रेमकविषयमेंइसीकोप्रसन्नतासुखजानियेतदनंतरयहसारीने उसेखजानसेनी
चहुंचदोवाकेचाहाकिइसेउसकीप्रीतिसेहटावेंपरन्तुवहउसीकेप्रेमरूपी अग्निमेंऐसाविकल
थाकिउसेकिसीकाउपदेशफलदायकनहोता निदानवेइसीबातोंमेंथेकिशमसुन्निहारनेनि
जमंदिरमेंपञ्चपकदासीकोउसकेबुलानेकेनिमित्तभेजाउसदासीनेपनसारीकेकानमेंका
हाशीघ्रचलोहमारीस्वामिनीनेतुम्हें औरशाहजादेकोबुलायाहै येसुनतेही उसकेसाथ
हुयेवहदासीउनकोखलीफाकेमहलमेंलेगईउसमंदिरकेयकओरकोशमसुन्निहारकेतु
ल्यरहनेकोजगहथीउसनेदोनोंकोयकतत्समहासेलेजायएकस्थानपरबैठायातत्क्षणमात्र
मेंयकसेवकने आयस्वर्णरूपेकेथालबिछायभांतिभांतिकेव्यंजनउनपरधरेसेजिनकी सु
गंधिसेचित्तप्रसन्नहवावहीदासीउन्हेंभोजनस्थानमेंलेगईजबवेभोजनसेनिश्चिंतहुए ए
कदासीमद्यलाईऔरप्यारीप्यारीसेउनदोनोंकोपिलाईतदनंतरस्वर्णकालोटालाय उनकेहा
थधुलवाये औरनानाभांतिकी अतरकीशीशियां आईउन्होंने भलीभांति अपनेवस्त्रोंपरअ
तरमलाफिरवहीविश्वासितदासीआई औरउन्हेंवहांसेउठाउत्तमउत्तम रत्नखचितबारहदरी
मेंलेगईवहबारहदरीगुंबदकेसदृशथीजिसकेयकओरस्वच्छसंगमरमरकेदोखंभथेऔर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि
७२

उनखंभोंकेनीचे पशुपक्षीकेचित्रविचित्रबनेथेउसबारहदरीकेफर्शमेंअतिविचित्रफूल
रंगबरंगकेरूपऔरउनदोखंभोंमेंनीचेकी औरअतिसुंदरसत्द्रुमअमानिधियांबनीथीं जि
नमेंचीनीविल्लौरमसीपत्थरआदिकेअतिस्वच्छऔरशोभायमानपात्ररक्खेथे औरउनस
बपात्रोंपरसर्वांगसे अतिउत्तमचित्रविचित्रऔरबेलाबेलीलिखेथे औरऊपरकी औरकेखंभोंमें
किवाड़उनपरसुंदरसबरामदेथेउनदरवाजोंमेंसेबहुतऔरबागदेखपड़ताऔरउसबागकोयर
तोपरंगीनपत्थरकाफर्शथा औरबारहदरीकेदोनों औरदोदिव्यसरोवरथेजिनमेंसेएक।
ऊंफवारेछूटतेउसबागमेंसफलवृक्षोंपरहजारोंपक्षीबुलबुलहजारदास्तानकेसदृश अप
नीमनोहरवाणीसेचहकरहेथेवहऐसारी औरयाहजनादाअसमनोहर औरस्वच्छमंदिर।
कोबैठेदेखतेथेइतनेमेंबहुतसीस्त्रियोंकासमूह औरवांदियां अतिसुंदरीस्वच्छवस्त्राभ
रणपहिनेआयबारहदरीकोसजनहलीचौकियोंपरजोवहांबिछीथींबैठगईवेस्त्रियांमा
जनिकाललनथ्यारकरआज्ञाकोबाटदेखतीरहींतदनंतरवहदोनोंभोपकबरामदेकेनी
चेजहांसेवहसबउनकोदेखसकेंबैठगई औरअपनीदाहिनीऔररत्नजटितसिंहासनदे
खापसारोंनेबिचारापूर्वकमात्लमकरकेपाहजादेसेकहायहस्थानशमसुन्निहारके
बैठनेकाहैयद्यपियहमंदिरखलीफाकेभवनोंसेसंबंधितहैपरंतुउसकाखलीफानेशमसु।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

निहार हो के अर्थ बनाया है खलीफा को औरखों दियों से अधिक इस से प्रीति है उस में आसक्त।
है स्वाधीन हो जहां चाहै एक छिन बिना चले जाय खलीफा भी संदेश पाय कै चोप बिना उस के
कटन हो आता तम कछु चिंता न करो विश्वास है षाम सु निहार षी भ आनी होगी और ख
म्हें अपनी दासियों से राग रंग न वा बजत प्रसन्न करेगी पंसारी य हो वां ता शाहजादे से।
करता था यक बांदी ने आय उन स्त्रियों के पथ को गाने बजाने के लिये कहा वे सब अपने
अपने साजों को उठाय बजाने लगीं कोई केवल साज बजाती और कोई स्वर मिलाय गाती
शाहजादा उन का गाना और सरस मोह के गीत सुन मूर्छित हुवा इतने में षाम सु निहार।
के आने की खबर हुई और शाहजादा भी चेतन्य हुआ प्रथम वही दासी दस कहारियां अ
पने साथ लाई उन्हों ने उस रत्नजड़ित सिंहासन को उठाय पसारी और शाहजादे के समीप ला
कर बिछाया तदनंतर और बहुत सी हबशिनें आय पंक्ति बांधि खड़ी हुई और बीस गाने
वालियां सिंहासन के सन्मुख खड़ी हो गाने बजाने लगीं और दश बांदियां अति रूपवान सम
आयु उसी ढब पर जहां से दश हबशिनें कहारियां निकली थीं जाय उसी सुंदरी की बाट दे
खती रहीं इतने में वही चंद्रमुखी गजगामिनी उसी समय में हो के धीरे धीरे चकोर गति से इ
धर को आने लगी यद्यपि वह सब समस्त रूप धनी थीं परंतु उस को मनोरंगी का स्वरूप अत्यंत रूप से बांधा पति

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्वि
७३
73

थावहनिजहस्तकमलोंकोदासियोंकेकंधोंपरकेवसिरसेचरणपर्य्यंतरत्नपहिरेथी
रेथीरेउसीरत्नजटितसिंहासनपरसुशोभितहुई औरसैनसेउनदोनोंकोप्रणामकिया उ
नदोनोंनेभीप्रणामकियातदनंतरउसचम्पकवरणीनेउनस्त्रियोंकोजोगातीवजातीथी
आज्ञादीआगेआओवहसब अपनेअपने स्थानसेउठचलींइतनेमेंहवशिनियोंनेउनके।
बैठनेकीचौकियांवहांसेउठाबरामदेकेनिकटजहांयहदोनोंपैसारी औरशाहजादा बै
ठेथेबिछादींवे सबयथोचितपंक्तिबांधबैठगई तदनंतरशामसुन्निहारनेउनमेंसेएक
कोमोहकेरागगानेकीआज्ञादीसोउसनेउसीविषयकासरसरागगायाशामसुन्निहारने
उसकोअपनेऔरशाहजादेकीदशाकेसदृशसमझाशाहजादा अधीरहोउठखड़ा।
हुवाऔरआगेबढ़उसीस्त्रीसेबांसलीलेशीघ्रऔरमोहकेअथाहुकरागबांसलीको
धुनिकेसाथबड़ाकालपर्य्यंतगायाकियाजबवहगाचुकाशामसुन्निहार भीउसीभांतिबां
सलीकोधुनिपरगाईजिससेमोहरूपीअग्निशाहजादेकेचित्तमेंएकसेसौगुण अधिक
प्रवेशहुईशाहजादेनेइससरीबेरागना औरभीकियाइससेवरञ्चप्रथमसेअधिकप्रियस्वरोंसेगा
यानिदानमोहरूपीअग्निऐसीउनकेमनमेंभड़कीकिवेदोनोंबेवशहोगयेशामसुन्निहा
रनिजसिंहासनसेउठबारहदरीकेओरचलीऔरशाहजादाभीउसकेसंगवहींपहुंचा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

और वह दोनों अति विकल होने में परस्पर कंठ से लग गए और ऐसी आनंद में मूर्छित हो पृथ्वी
पर गिर पड़े पर उन बांदियों ने दौड़ कर दोनों को संभाला और बाहर दरी में दोनों को ले जाय उ
न पर बेद मुश्क एक कानी रख्खि उ का शमसुन्निहार ने चेत में होते ही पन्सारी को संबोधा कि वह क
हां है पन्सारी अकेला बैठा उस आश्चर्य दशा को देख मन में चिंता कर और विस्मित था दोविषयर
स का परिणाम क्या होना है यदि खलीफा खबर पावे तो हम तीनों को वध कर डालेगा शाहजा
दे ने कहा शमसुन्निहार तुम्हें स्मरण करती है तब रंन वहां आया शमसुन्निहार ने कहा मैं ते
रा अति गुण मानती हूं उसने दोनों को अथीर्थ देख कहा तुम्हें बड़ा आश्चर्य है भेंट होने पर
भी तुम मन अथीर हो शमसुन्निहार ने कहा प्रीति का पन्थ निराला है न तो प्यारों को भेंट में
आनंद और न वियोग में सुख वे उनमें न तो भेंट की शांति है और न वियोग को शमसुन्निहार ने
एक दासी को सैन की उसने तुरंत नाना प्रकार के व्यंजन लाये और शमसुन्निहार ने शाहजा
दा और पन्सारी समेत सरुचि भोजन किया फिर शमसुन्निहार उस का पात्र ले भली भांति गा
न कर फिर पी गई और सुहृत राग पात्र शाहजादे को दिया उसने भी उसी प्रकार राग के पान किया
इसी आनंद मंगल में एक बांदी ने शमसुन्निहार को धीरे से कहा स्वामिनी सवकों का प्रधान
मसरूर खलीफा का संदेशा पहुंचाने के लिये आया है पन्सारी और शाहजादा दोनों यह खब

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि
७४

रसूननेहीकोपनेलगा औरउनकेमुखपरहवाइयांउडनेलगीं शामसुन्दिहारेनेउनकोधीर्य
देउसबांदीसेवहात्तजायथमसरूरकीबातोंमेंलगाजबनकोंमें शाहजादेकोनदेषा।
तूफिरउसेबुलाऊंगीवहनोउधरकोचलीगई शामसुन्दिहारेनेआज्ञादीसबहारवारा
हदरीकेबंदकरो औरपरदेजोबागकीओरहैंसबछोडदो शाहजादे औरपन्नारीको
एकऔरबारहदरीकेबैठायकहायहांतुमआनंदपूर्वकसावधाननासेबैठो औरउसऔ
रकेहारकोबंदकरदियाकिबाहरसेमालूमनहो अनंतर आज्ञाकीकिवहसबगानेवा
लीस्त्रियांपूर्वबतगावैंबजावैं यहप्रबंधकरआपसिंहासनपरविराजमानहुईं औरउस
बांदीसेकहाअबमसरूरकोअपनेसाथले आवउंतमसरूरवोसबकोसाहिनजिनकेय
लेमें अतिसुन्दरत्नजडितभूषनहेलकेवेउत्थेआयेऔरप्रणामकिया उससमयवह
निजसिंहासनसेउतरमसरूरको औरआई औरसम्मानेसोआगमनकोंकरहुवा उ
सनेकहाखलीफाकोओरसेयहसंदेशलायाहूंकिखलीफा आज्ञादेतेहैंमैंतुम्हा
रीभेंटबिनानहीरहसक्ता तुम्हारेमंदिरमेंआनेकीइच्छापवनाहू शामसुन्दिहारयहसुन
हर्षितहुई औरकहामेरीओरसेखलीफाकोकहियोमैं वर्तमानहूंजबआपकामनचा
हे आइये यहकहनिजदासियोंकोआज्ञादीतुरंतफर्शआदिजेसोकिखलीफाकेआ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गमनपरतय्यारीहोतीहैकरोओरमसहरसेकहाक्षणमात्रमेंबयारीऊईजातीहै ऊखका
लमेंखलीफाआवेऐसानहोकिघीवनामेंकोईबातनभूलजाऊंयहकहमसहरकोउसके
साथियोंसहितबिदाकिया ओरआपआलहमरशाहजादेकेढिगगईपन्तारीउसे रुदनक
रनेदेखबऊतडराऐसानहोकिभेदखुलगयाहो जिससेयहरोतीहै उधरशाहजादा
आनंदमेंयहविचित्रदेखव्याकुलभयाओरउसेचिन्तितदेखरोनेलगाइतनेमेंएकविश्वास
नदासीनेआयकहाबैठीक्याहोसबकोकामथचला आताहैक्षणमात्रमेंखलीफाभी
आवेहैंशामसुनिहारनेऊंघहोआंखोंमींचकहाहे विधातातूकैसाकठोरओरनिर्दयीहै
किकैसोघीघतुनेपरस्परवियोगकियाउसदासीसेकहाइनदोनोंकोउसमकानमें
जोबागकेकोणसेमिलाहुआटेकरसनदीकेतटपरलेजायबैठा ओरबाहरसेतालाल
गादेअवसरपायदूसरेद्वारसेउनकोग्रमनिकालिया अनंतरशाहजादेकोकंठसेलगाय
विदाकियाओरआपखलीफाकीअगवानीकेलियेखड़ीऊईवहदासीउनदोनोंकोउसी
मकानमेंलेजायछोड़आईओरउन्हेंबऊतसाथीथैदियाकितुम्हें यहांकिसीभांतिकाभय
नहोरात्रिकोअवकाशपातेहीवहांसेबाहरलेजाऊंगी यहकहवहतोचलीगईवहउ
ठकेचढ़ओरभ्रमतेकिकहींसेनिकलनेकामार्गपायेंपरंतुकिसीओरसेबाहरनिकल

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्वि
७५

नेका मार्ग न मिला अकस्मात् सवार और पैदल लोकों जो खलीफा के अग्र चले आते थे अति व्याकुल हुए पश्च नेत्र खुलन सा प्रकाश देखा कि एक ओर से बाग में चला आता है घबराकर उस प्रकाश को देखने लगे तब हां समाय सेवक सोम के दीपदान हाथों में लिये हुए हैं उनके पीछे सो से अधिक अप्सचर शास्त्र सहित पंक्ति बांधे हुए खलीफा की रक्षार्थ हैं उनका यह नियम था जब खलीफा किसी स्त्री के घर स्थान को जाता तो बहु उसके साथ रहते फिर कहा देखा उन सबके पश्चात् खलीफा उसके दाहिने और सेवकों का प्रधान मसरूर चला आता है शमसुन्निहार खलीफा की अगवानी को जाय खड़ी भई और बीस अति सुंदर और स्वच्छ सखियां सोरहों सिंगार और बारहों अभरण धारण कर शमसुन्निहार के पीछे खड़ी बाजे आने बजा बड़े मीठे मीठे स्वरों से गान करहीं जब देखा कि खलीफा समीप पहुंचा शमसुन्निहार ने अपना शिर खलीफा के चरणों पर रख दिया खलीफा शमसुन्निहार को देख हर्षित हुआ और कहा हे परम प्यारी अपना शिर उठा और मेरे निकट आ मैं तुम्हारे देखने को अति लालसा रखता हूं शमसुन्निहार शिर उठाय खलीफा के सन्मुख बैठी और एक गाने वाली को गाने के वास्ते नेत्र से आज्ञा दी उसने दो भांति के राग गाये जिससे अंसत प्रीति की तपन और विरहव्यथा खलीफा समझा कि इसने शमसुन्निहार की आज्ञानुसार इस प्रकार का राग गाया और यह सब तपन मेरे ही वास्ते है और वास्तव में वह

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रागशाहज़ादेकीविरहकाथानिदानशामसुन्दिहारउसीरागकेअनुरागमेंथोर्थनयरसकोगिरने
शाहज़ादेकीऊदषादेखीवहभीहकीबायगिरपड़ाउसनेउसभीसंभालाइतनेमेंवहीवांदीउ
सकेनिकटफिरआई औरकहनेलगी अबतुम्हीरायहोयरहना उनमनहीमेंसभाकारगह
गअच्छानहीयानोयसारीनेकहादेखशाहज़ादेकीयहदशाहै क्योंकरहमयहांसेजासकेंहैं
वहबांदीशाहज़ादेकोमूर्छितदेख दौड़ीगई औरजललायउसपरछिड़काजबउसनेसुधिसं
हालीयसारीनेकहाहमदोनोंएकउंजावेंगेअबयहांसेनिकलजानाउत्तमहैसोवहदासीऔ
रयसारीशाहज़ादेकोएकइबाहरद्वारपर्यंतलेगये औरनहरकेतटपरकिनदीसेलगती
थीयकऊंचेवहांउसबांदीने धीरसेहांकदीएकमनुष्यनावखेनाऊवाउनकेसमीपलायावह
दोनोंउसमेंसवारहुये औरबांदीकूलपरखड़ीरहगई औरकेवटनावकोवहांसेशीघ्रखेके
नदीमेंलेगयायसारीशाहज़ादेकोधीर्यदेता औरकहताहमकोबऊतदूरजानाहैतुमआप।
नेकासंभालोपेसानहोकिरौंदकेलोगमार्गमेंमिलकेहमेंपकडेंइतनेमेंवहसल्लपरपऊंचना।
वहांउतरेयसारीनेशाहज़ादेकोअत्यंतमलीनरूपपायाऔरउसमेंचलनेकीशक्तिनदेखबऊ
तघबराया औरचिंताकरनेलगा अबक्याकीजियेइतनेमेंउससेसुधिभईहांमेरायहांएकमित्र
रहताहैउसकेघरपर्यंतजिसभांतिहोसकेपऊंचावाहियेनिदानशाहज़ादेकोखींचखांचव

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
७९

होंनकलेगयाउसकामित्रउसेदेखतेही दौड़ाओरअपनेमंदिरमेंलेजायउन्हेंबैठाया ओरसबका
इससमयतुमकहांजातेहोपंसारीनेकहाएकमनुष्यजिसे मुझेरुपयेदेनेथेभागाचाहताथा
मैंयहसुनउसकेढूंढनेकोजिसेतबमेंमेरेसाथदेखतेहोमार्गमेंभेंटहुई परस्परवार्ताकरमा
ल्लमअवाकियहउसमनुष्यकोभलीभांतिजानताओरबतादेगा अमैंतहपासिमेरेसाथहुआबा
यद्यपिइसकेपरिश्रममेंसंदेहनहींपरंतुवहमेरेहाथनलगानिदानहमवहांसेलौटकेच
लेआतेहैंदैवयोगसेयहमार्गमेंरोगीहोगयासोनिरुपायहोतुम्हारेमंदिरमेंआये ओरा
चाहतेहैंकिप्रातःकालपर्यंतयहींरहेंउसकेमित्रनेयहकहतेहीसुनओरउसकीऊदशादे
खअतिचिंताकीओरउसकीआरोग्यताकेलियेयत्नकरनेलगापंसारीनेकहा ओषधिकीऊ
बहुआवश्यकतानहींयहरोगप्रायःइनकोहोजायाकरताहै ओरआपसेआपअच्छेहोजाते
हैंकेवलइनकोसोनेकीइच्छाहैउसकेमित्रनेएकबड़ेविशालहवादारमकानमेंलेजायउ
न्हेंसुलायाथाकुछदिनसोनेहीस्वप्नमेंक्यादेखाकिपासपुत्रनिद्रावलीफक्केसन्मुखविम्
खिनतेहैंयहस्वप्नदेखचौंका ओरअत्यंतव्याकुलहुवा ओरपंसारीइनशब्दोंमेंथाकहीराग
त्रिशीघ्रवतीनहोतोभीरहोतेहीकुशलपूर्वकअपनेघरोंमेंपहुंचेघरकेलोगचिंताकरते
होंगेक्योंकिपंसारीकदाचितकहीरात्रिकोनरहतानिदानपंसारीभोरहोतेहीनिजमित्रसेवि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

द्रा हो शाहजादे को लिये हुये अपने मंदिर में पहुंचा और सावधान हो निज कुटुंब से वह सब वृ
त्तान्त कहा और उसे सभय कर स्थान से बचाने के लिये ईश्वर का धन्यवाद किया दो तीन दिन शाह
जादा पसारी के गृह में रहा तिस पीछे उसके नातेदार उसे उठा के वहां से ले गये शाहजादे ने विदा
होते समय पसारी से कहा मेरी ओर से तुम बेखबर न रहना धाम स्तुति स्मरण का वृत्तांत मुझे अ
वश्य कहना लाभ जनाते बसे में ने उसे सब में मन्त्रों वश दोबा है तन बसे में अमंत व्याकुल हूं उस
ने कहा भाई यद्यपि अब नहीं विश्वास है वह दासी अभी आय वहां का वृत्तान्त वर्णन करेगी।
पसारी दो दिन के पश्चात् शाहजादे के देखने को गया उसको उसी भांति व्याकुल उठी स्वांस
लेते और रोते देखा उसके मित्र चकित और खेदित हैं और वैद्य यत्न कर रहे हैं उस समय यद्यपि त
से किसी का उपाय लाभकारी न हुवा इसी प्रकार वह अचेत न सा पड़ा है परन्तु पसारी का शहर
न उसने ने अवबोले और उसे देख सम कहा था वह दी प्रकार से हंसा पर यह कि उसे देख ब
ह प्रसन्न हुवा है सर वैद्यों के उपाय पर कि वह रोग के जानने बिना अपना काल व्यर्थ नष्ट करते
हैं फिर संपूर्ण मित्रों और वैद्यों को बिदा किया केवल पसारी को अपने निकट बुलाय कहा।
प्रीति दिन प्रतिदिन बढ़ती जाती है और उस मृगनैनी चम्पकवरणी का वियोग दारुण अति।
दाणाप हृदय में सालता है सब कुटुंब मेरी यह दशा देख रोते हैं मित्रों के एकत्र होने से अधि।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स०हि
७७
77

कब्याकुलरहताहूंलज्जासेकिसीकोदुख्खनंहीकहसकाकेवलतेरेदेखनेसेसुखपे थोडाऊ
वापरंतुतमसुफसेकोईवातगुप्तनरखनाक्याशमसुन्निहारकाकुछसमाचारलायेहोकों
करउसकीदासीकोतमनेपायाओरउसनेतुमसेक्याकहापैसारीनेउत्तरदिया अबतकव
हनंहीआईओरकुछहालवहांकानंहीं जानतायहसुनशाहजादारोनेलगापैसारीने
कहाहेशाहजादेपरमेश्वरकेवास्तेरुदनमतकरऐसानहोकिवेर वेर केरोनेसेयहभेदखु
लजावेतोमहाकष्टहोगाशाहजादेनेकहामैंने अपनेचितकोबहुतथांभापरंतुआंसुओं
सेवशनहींवहसर्वदागिरतेरहतेहैं पैसारीनेउसकोबहुतसाथीर्थदेकेकहाशमसुन्निहा
रकुशलसेहैकहतमओरकुछनविचारोउसनेकिसीकोभेजनेकाअवसरनंहीं पाया
होगाविश्वासहैकिसायंकालकोकोईनकोईवहांसे अवश्यआवेगानिदानपैसारीउ
सेइसीभांतिथीर्थदेबिदाभयाजबवह अपनेमंदिरमेंपहुंचाउसनेशमसुन्निहारकीदा
सीकोअपनेघरबैठादेखपरस्परप्रणामकेपश्चात्उसनेशमसुन्निहारकीक्षेमकुशल
पूछीबांदीनेकहाप्रथमतुमअपनाहालवर्णनकरोकेंकिबिदाहोनेसमययहमनेशा
हजादेकोकुदशामेंदेखाथापैसारीनेसंपूर्णवृत्तान्तमार्गका औरशाहजादेकोव्याकु
लताकाउसमेंप्रगटकियादासीनेशाहजादेकीदशासुनकहायहीउनकाभीहालहै ज

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वेमैंतुम्हेंविदाकरमंदिरमेंगई मैंनेउसेमूर्छितपायाकिसीउपायसेचेतननहुई औरख
लीफ़ाभीउसकेनिकटबैठाहुवाविस्मितथा। औरउनमेंएकदासीविशेषमुझसेपूछताथा। तु
म्हेंइसकेमूर्छाकाकारणमालूमहै हमनेभेदकोगुप्तरखकहाहमकुछनहींजानते अ
नेकतरहहमसबरोतेधोतेरहेनिदानअर्धरात्रिकोवहचेतनहुई उससमयखलीफ़ानेश
मसुन्निहारसेपूछाऐसीदशाक्योंहोगईथी उसनेकहास्वामीआपनेइसदासीकोइससमय
आयकृतार्थकियापरंतुमैं ऐसी अभागीहूंकिमेरीयहदशाहोगईकुछआपकीसेवानक
रसकीकिंतुमेरीयहदशादेखआपकोचिंताउपजी खलीफ़ानेकहामुझकोतेरे अंतःकरण
कीप्रीतिभलीभांतिविदितहै चेतनरहफिरकोईऐसीबातनहोजिससेतेरीयहदशाहो जा
वेइसरात्रिकोतुमइसीस्थानपररहियोअन्यमंदिरमेंजानेकीइच्छानकीजियोऐसानहोजो।
चलनेसेतुझेकुछकष्टहो निदानजबखलीफ़ावहांसेचलागया शमसुन्निहारनेसैनसेमु
झेनिकटबुलायतुम्हारावृत्तांतपूछा मैंनेउससेयोंभेदकहाकिवे आनंदपूर्वकयहांसेगये
औरजादेकीमूर्छाकाहालउससेनकहातोभीउसनेरोकेकहाहेशाहजादेमुझसेतेराहा
लमालूमनहींकितुझपरक्याबीततीहै इतनाकहफिरमूर्छावशहोयमेरीगोदमेंलेट
गईदासियोंनेजोवहांवर्तमानथींदौड़केउसपरबेदमुश्ककानीरछिड़कातोतनकसचेत

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि ७८

78

हुई मैंने कहा है सुंदरी कोमलांगी क्या तुम अपने प्राण दोगी और हम सबको अपने साथ मारोगी
तुम्हें उसी शाहजादे की सौगंद है जिसकी प्रीति में तुम्हारी यह दशा हुई किंचित् अपने प्राण पर
दया करो और हमारे कार्थ में अपना मन बहलाओ तब उसने आंख खोल मुझसे कहा मैं तेरी से
वा और उत्तम उपदेश का अति गुण मानती हूं परंतु क्या कहूं मैं अपने वश में नहीं फिर उसने स
मीगवादियों को विदा किया केवल मुझे ही अपने निकट रहने के लिये आज्ञा दी और रात्रि भ
र शाहजादे का नाम ले रोया की और भोर को मैं उसे गोद में उठा उसके मुख्य वासस्थान में ले गई
वहां खलीफा के हुकम से वैद्य उसके देखने के निमित्त वर्तमान थे क्षण मात्र में आप भी खली
फा वहीं आया औषधि यत्न आदि आरंभ हुवा परंतु सब व्यर्थ हुए क्योंकि तु रोग अधिक बढ़ गया
रात्रि को कुछ काल निद्रा आई अरुणोदय पर मुझे आज्ञा दी तुम्हारे निकट पहुंच शाहजा
दे का समाचार लाऊं पेसारी ने कहा तपी ब्रजा के कहे शाहजादा बेगम लाहे परंतु तुम्हारी
व्याकुलता का हाल सुन बहुत बहुत अधीर और व्यथित हुवा और उसे समझाना कि ऐसा ना
हो जो खलीफा के सन्मुख बेवशी में कोई बात निकल जावे जिससे हम सब पर आपदा पड़े य
ह कहे उसे बिदा कर शाहजादे के निकट गया और उसने कहा शमसुन्निहार ने तुम्हारी कु
शल पूछने के लिये एक दासी को भेजा था जो कुछ दासी के मुख से सुना था सविस्तर शा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हजादेसेवर्णनकियाइतनेमेंसंध्याभई शाहजादेनेपंसारीकोरातभरवहींरक्खाप्रातःकालपं
सारी अपनेघर आया थोड़ीदेरनहुईथीकिवही दासीउसकेढिग आईप्रणामकरकहाउससुं
दरीने यहपत्रशाहजादेकोलिखाहै पंसारीनेउसीबांदी औरपत्रको शाहजादेकेनिकटले
जायकहाशमसुन्निहारनेहमकोपत्रभेजाहै औरबांदीकोतुम्हारीकुशल पूछनेकोभेजा
है शाहजादायहसुनउठबैठा औरबांदीकोसन्मुखबुलाया पत्रउससेले आंखोंमेंलगाया औ
रचूमा औरखोलउसेपढ़ाउसमें मोह औरवियोगकाकष्टलिखाथा शाहजादेनेदूसरीबेर
उसेपढ़ा औरउसकाउत्तरलिखबांदीकोदेविदाकिया पंसारीभीउसकेपाससेउठनिजमंदिर
मेंआया औरचिंताकरनेलगा दिनदिन इनदोनोंकी मोहमेंऊदपणाहोताजाताहैप्रतिदिवस
दासीका आना औरसमाचारलाना औरमेराशाहजादेकेनिकट जानामेरेवास्ते उचितनहीं
वहदोनोंप्रीतिमें अपनेअपने प्राणपरखेलतेहैं यदियहभेदखुलेऔरखलीफासुनपावें
तो तत्कालमेंमाराजाऊंगा औरमेरेकुटुंबपरनजानियेक्या आपदा औरउपद्रवपड़े औरमेरीप्र
तिष्ठा मट्टीमेंमिलजावेगी इससेउत्तमयहहैतोइसनगरकोतज अन्यत्रजारहूं एकदिनवह इ
सीसोचविचारसे अपनीदूकानपरबैठाथा एकरत्नपारखीजोउसकामित्रथा उससेभेंटकरने
कोआयावहजौहरीप्रायःशमसुन्निहारकीबांदीकोउसकेढिग आनेऔरउसेशाहजादे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्धि ७९

केचरजानेदेखचकितहुवाकि इसकाक्याकारणहै श्रोरपंसारीकोउससमयश्रत्यंत चिंतितपाय
समझाकिइसपरकोई श्रापत्तिपड़ीहै जिससेयहऐसाशोचितहै निदानउसरत्नपारिखीने उससे
पूछाशमसुनिहारकीबांदीकोतुम्हारे निकटश्रायाजायाकरतीहै पंसारीउसकेप्रश्नसेभयभीत
हुवा श्रोरकहाकुछलेदेनकेलियश्रातीहैजोहरीनेकहावह ऐसेहीनहीं श्रातीकिंतुकोई
श्रतिशयकार्यहै पंसारीनेजानाइससे उसउत्तरसेबाधनहींहुवाइससे इसमेंमुख्यवृत्तांतसुनाना
चाहियेसो पंसारीने वचनलेउससे कहाशमसुनिहार श्रोरपारसकोशाहजादा एकदूसरेपर
मोहितहैं श्रोरउनकासमाचार मेरेद्वारापहुंचताहै यदियहवृत्तांतखलीफाकोपहुंचेतोईश्वरजा
नेमेरीक्यादशाहो श्रवमैं श्रपनेव्यवहारियोंकेलेनदेनकाहिसाबकरबांसराकोजायाचाहता
हूंकि इसडखसेरक्षितरहूंजोहरीनेयहसुनश्राश्चर्यकिया श्रोरउससेविदाहोचलागयादोदि
नपीछेवह पंसारीकीदूकानकेश्रोरगया उसनेउसकीदूकानकोबंददेख जानावहबांसराको
चलागयाहोगा रत्नपारखीकोउसकेचलेजानेसेशाहजादेपरश्रतिदया उपजी श्रोरमनमेंकहा
इसनगरमेंकेवल उसकाएकहीमित्रथा वहतोयहांसेचलागया उसकेनहोनेसेशाहजादेपर
श्रतिकष्टहुवाउत्तमहै किश्रवतुउसकोसहायताकरयहशोचजोहरीने शाहजादेसेभेंटकीउसने
रत्नपारखीकोपहिचाना श्रोरउसकासन्मानकरउठबैठा श्रोरकुशलप्रश्नकी श्रोरकहातुमसेकुछ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कहनेको आयेहोवाकुछमुझसेकामहै जौहरीनेकहाहै शाहजादे यद्यपिमेरी आयसेजान प·
हिचानकमहै परंतुमैंचाहताहूं आपकीसेवामेंउद्यतरहूं इससमयमें एकबातकहाचाहताहूं
शादेनेकहा अच्छाकहो तबपंरतपारषीनेकहामुझे अपनानिजदाससमझो औरकिसीभांतिका
मेरी ओरसेचिंतानकरो मुझेपंसारीसे अधिकहितैषी औरविश्वासीपाओगे जोसेवापंसारी कि
याकरताथा उसीपरमैंभीउद्यतरहूंगा उसकीदूकानबंददेख मैंनेजानावहषासराकोचलागयायदि
आपकोउसकेचलेजानेकाकारणमालूमहोतो बताइयेवहक्योंयहांसेचलागयाशाहजादेजौहरी
काबचनसुनपीलाहोगया औरउसनेकहाकात सेवककहताहै किवहयहांसेचलागयाकेवलउसीके
कारणमुझेधीर्यहोताथा उसनेमेरेवास्तेयहनसेकडुउठाये निदानशाहजादा उसकेचलेजानेसे
अमनकहुकोशामजवानदनेनगर अपनेसेवककोकहापंसारीकेघरपरउसके सेवकोंसेपूछके
आओकिपंसारी कहांचलागयावहजायसब आयाकिपंसारीदोदिनसेबासरानगरकोगया औ
रयहभीउससेवकनेशाहजादेसेकानमें कहाकिसीकीदासीआपसे कुछकहनेकेलिये आया
चाहतीहै मैंउसेबैठायआयाहूं शाहजादेनेकहातुरंतउसेलेआओ औरमनमेंविचाराकिवहनिस्से
देहशमसुन्निहारकीबांदीहै निदानवहशाहजादेकेसन्मुखआई औरवहजौहरीउसेदेखउठ
गयावहदासी शाहजादेसेवार्तालापकरीविदाभई उसनेशाहजादेकोपहिलेसेअच्छापायाजब

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि
८.

वहदासीजाचुकीवह रत्नपारषीशाहजादेके निकटआय अपनेस्थानपरबैठगया औरमुस्करायके
कहनेलगाहेशाहजादे तुम्हेंराजद्वारसेबडाव्यवहारहै वहकुंकलायबोलातेनेकोकरइसबातको
जाना औररत्नकाजानताहैकियहकिसकीदासीहै जौहरीनेकहामैंभलीभांतिजानताहूंवहबादशा
हकीपरमप्रियाशमसुन्निहारकीदासीहै औरमैं उसेऔरइसकिस्वामिनीकोभलीभांति जानता
हूं वहबहुधारत्नमोललेनेकेलियेमेरीहूकानपरआयाकरतीहै यहदासीउनकीभेजीहै औरआ
यउसे मैंनेपसारीकिनिकट आनेजानेदेखाहै यहसुनतेही शाहजादेकोविश्वासहुआ जौहरीभीइस
भेदकोजानताहै अत्यंतभयभीतहुआपरंतुचुपरहा अनंतरउसरत्नपारषीसेकहाजोकछुतुमइस
भेदकोजानतेहोसबमुझसेकहो कोईबातमुझसेगुप्तनराखनारत्न पारषीनेअवसरपाय आदिसेअं
तपर्यंतसंपूर्णवृत्तांतसविस्तारसमझायबुझायकहसुनाया औरकहामेरे आगमनकायही का
रणहै औरमुझे आपपरबहुतदयाआई औरइच्छाकीकि आपकासेवकसमानबन आपकी से
वा औरसहायताजैसीकिपसारीनेकीहैकरूं औरतुम्हारेकार्यमें अपनीसबप्रतिष्ठाकिंतुप्राण
भीदेनेमेंसंदेहनकरूंगा मुझसेकदाचितभेदनाखुलेगा आपनिश्चयमानियेकि मुझपेमाहिनेसे
आपकेपहिलेमिलनेकेवदलेमिला निदानशाहजादेकोउसकेहितकेवचनोंसेकछुधैर्यहुआ
औरउसेखुलाऔर अपनेअंतःकरणकीबातेंउससेकहनेलगापरंतुयहभीकहाशमसुन्निहार

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कीदासीतुम्हैं यहांबैठेदेखकहतीथी इसीपुरुषनेपंसारीकोबुगदादके जानेकासम्मत दियाहै
औरतुमसेवहदासी बहुतशंकारखतीहै इसहेतुक्योंकरभेदका संबंधतुमसेरक्खा जावै।
क्योंकिउसनेयहीहालउसीसुंदरीसेकहउसकेमनमेंभी संदेहउत्पन्नहोगा जोहरीनेकहा यह
बातइसतरहसेहै जबपंसारीनेमुझसेबसरेजानेकासम्मतलिया तबमैंनेनिस्संदेहउसनवजो
औरमैंनेजानाकियहपुरुषबुद्धिवान औरचतुरहै अपनीप्रतिज्ञाकेवचनोंकेअर्थ अपनापुरा
मागजाताहै तबशाहजादेनेकहा उसनेईर्षाकेकारणतुम्हैं इसबातमेंदोषीबनायाहै मेरेमनमें
तुम्हारेओरसेकुछमलनहीं परंतुतुम्हैंउचितहै जैसातुमनेमुझे अपनीओरसेविश्वासदिला
याहै वैसाही उसदासीकोभी अपनेसाथमिलालो औरउसकाभीबोधकरोजिससेंवहतुमसेप्रसन्न
रहै औरतुम्हारागिलानकरै इसीभांतिबहुतकालपर्यंतवहदोनोंपरस्परसम्मानकरतेरहेकोईय
त्नऐसाभीहैकिजिससेफिरप्यारोंकोभेंटहो फिरवहरत्नपारखी शाहजादेसेंविदाहो निजमंदिर
मेंगयाशाहजादेनेबांदीकोविदाकरतेकहाथा अबकीबारकोईपत्रमेरीप्यारीसेलिखवाकेमे
रेहाथलाइयो दासीनेमंदिरमेंपहुंच इससुंदरीसेपंसारीकेचलेजाने औरशाहजादेकेहसरेनिज
हस्ताक्षरपत्रकेमांगनेकेवृत्तांतवर्णनकियाशमसुन्निहारनेतुरंतएकपत्रजिससेभेंटकीचाह
औरवियोगकादुःखऔरविरहकोअधिकता औरपंसारीकेचलेजानेकापश्चातापयथालिखवा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि ८१

81

दीकोदेकर कहा तूने जाकर यह पत्र शाहजादे को पहुंचा वह बांदी पत्र ले शाहजादे के मंदिर
की ओर दौड़ी जाती थी दैवयोग से वह पत्र उसके हाथ से मार्ग में गिर पड़ा और रत्नपारखी ने उ
से पड़ा पाया इसी बात पर जौहरी और लौंडी में ईर्षा उत्पन्न हुई अर्थात वह बांदी पत्र ढूंढती हुई उ
स स्थान पर आई जहां वह रत्नपारखी उठाय उसे पढ़ता था लौंडी ने जौहरी के हाथ में पत्र देख।
कहा यह पत्र मेरे हाथ से यहां गिर पड़ा था तुमने इसे पाया यह पत्र मेरा है मुझे दो उस जौहरी ने
उसके कहने पर कुछ भी ध्यान न किया और चुपका अपने घर चला गया वह दासी भी उसके पी
छे लगी हुई चली गई और घर में जाय फिर उससे कहा यह पत्र तुम्हारे किसी काम का नहीं उसके
देदेने में तुम्हारी क्या हानि है और तुम यह भी नहीं जानते इसे किसने लिखा और किसको पहुं
चैगा जौहरी ने पहिले बैठने की सैन की तदनन्तर कहा मैं जानता हूं यह पत्र शमसुन्निहार ने अ
बुकशाहजादे के लिये लिख दिया है दासी यह सुन भयभीत हुई रत्नपारखी ने कहा मार्ग में
मैंने तुम्हें यह पत्र दे देना परंतु तुमसे मुझे कुछ सन्देह है सत्य कह तूने शाहजादे से क्या कहा
का मैंने पंसारी को बगदाद से चले जाने का सम्मत दिया है मैं तो चाहता हूं पंसारी के बदले इस
विषय में शाहजादे की यथाशक्ति सहायता करूं तू इसके विरुद्ध समझती है यह निःसंदेह है कि
मैंने ही प्रथम पंसारी के जाने का संदेश शाहजादे से कह दिया था वह भी पहिले मुझे अविश्वा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सीसमभऊसकाभेदनकहताथा निदानमुझेहितैषीऔरसहायतामेंउद्यत समझकरअपनासमस्त
वृतांतमुझसेकहा औरइसपर प्रसन्नहुवाकिमैंउससेसंमतहूं औरमैंतुझसेभी चाहताहूं कि
तूभीमेरीइससेवाको अंगीकारकर पंसारीकेबदलेमुझे समझइसीबातपरशमस्तुन्निहारको
भीराज़ीकरनाकिवहभीमुझेविश्वासी औरभेदियाजानेयदिमेरेप्राणभीशाहज़ादे औरशम
स्तुन्निहारकेकाम आवेंतोशंकानकरूंगा प्रतिज्ञातोकरावस्तहै उसबांदीने जौहरीकेबचनसु
नकहा शमस्तुन्निहार औरशाहज़ादोंवारावमेंबड़ीप्रतापी औरभाग्यमानहैं किंपंसारीकि
पीछेतुमसाउनकाऐसाहितैषी औरभेदियामिलातुम्हारी प्रशंसाशमस्तुन्निहारसेकरप्रसन्न
करूंगी तबजौहरीने पत्रनिकालउसेदिया औरकहायहजायशाहज़ादेकोदोजोउत्तरवह
इसकाउत्तरलिखिमुझेभीदिखानाजाइयोजोउक्तहमारे तुम्हारेपरस्परप्राणहुवाहै वहसब
शाहज़ादेसेकहनातदनंतरवहदासीपत्रलेशाहज़ादेकेसमीपगईउसने उसेपढ़तुरंतउत्त
रलिखदासीकोदियावहलौंडीप्रथमतोरत्नपारखीकेनिकटगईउसने पत्रउसेदेदिया
फिरउससेभीविदाहोशमस्तुन्निहारकेनिकटगई औरउसकेपत्रकाउत्तरदिया औररत्नपा
रखीकी अतिप्रशंसाकी दूसरेदिनप्रातःकालकोवहफिरजौहरीकेनिकटआई औरकहा
मैंने तुम्हारीशमस्तुन्निहारसे अतिप्रशंसाकीयहसुनवहतुमसे अत्यंतप्रसन्न औरहर्षितं।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
८२
82

हुई कितुम पंसारी केबदले इनकर्म्म करोगे कलमेरी स्वामिनी मेरे आगमनकी बाटदेखतीथी
कि मैंनेजायशाहजादे का पत्रदिया उसेपढ़वह बहुतरोई मैंनेअवसरपाकरकहाहेसुंदरी सत्यहे
कितुम्हें पंसारीके चले जानेसेबड़ीचिंताहुईपरंतु मैंने औरएकपुरुषइसकार्यकेहेतुउद्यत
कियाहे वह अत्यंतविश्वासयोग्यहे पंसारीसे अधिकयोग्यवानबुद्धिमानहे यहकह मैंने तु
म्हारा नामलिया औरशाहजादे औरतुमसेव्यवहारथा यहभी कहसुनाया यहसुनकर वह अधि
कहर्षितहुई औरकहामें चाहतीहूं किउसकोदेखूं औरउसीके मुखसेजोबातेंतूने कहीहे
सुनूं ऐसेअप्रमत्तजोजानेहुएकेबिनामनुष्योंकेकार्यमेंप्रवृत्तहोतेहें संसारमेंन्यूनहें और
उसकीबुद्धिऔर चातुरताकीभीपरीक्षालेलूंकि इसकार्यकेयोग्यहैवानहीं तुमप्रातःका
लअवसरपायजायउसेले आइएगाकहउसबांदीनेकहायदि चाहतेहोतो मेरेसाथचलो म
हलकोचलोउसलौंडीकीबातसुनजौहरी शठचिंताकरनेलगाऔरकहाशमसुन्निहार बि
चारविनासुनेकेइबनताहिरअर्थातपंसारीसमझवहांबुलातीहें यहनसमझोकि इबनता
हरकोकेवल बादशाहजादीनजानतेथे किंतुशाहीदर्वाजेकेसब छोटेबड़ेभी पहिचानतेथे
कोईउसेमंदिरके आवागमनमेंनिषेधनकरता औरनएककानामसुनेतोकोईनहीं जानताको
करमंदिरमेंजानेकीइच्छाकरतेतफिरउसलौंडीने जौंहरीकोबहुतसमझाया औरधीर्यदिया।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कि भाईजो तुमने कहा सो सत्य है परंतु शामसुन्दर निहार अंतचतुर है कुछ तो समझ के तुम्हें बुलवा
या होगा तुम कुछ चिंता न करो निःशंक मेरे साथ चलो तुम्हें किसी भांति का भय न होगा इस बा
त कौ मैं जिम्मा करती हूं कि तुम्हें कुशल पूर्वक तुम्हारे घर में पहुंचाऊंगी निदान कितना ही लौंडी
ने उसे धीर्य दिया परंतु उसने स्वीकार न किया फिर वह वांदी शामसुन्दर निहार के निकट गई और जौं
हरी के घुरने का कारण उससे कहा शामसुन्दर निहार ने कुछ शोच के कहा वह सत्य कहती है मैं आप
ही गुप्त उसके मंदिर में जाय उसे देखूंगी तुम मेरे आगमन का समाचार उसे दे वह वांदी जौंहरी के स
मीप आई और शामसुन्दर निहार की इच्छा को प्रगट किया और कहा अब तुम अपने घर से कहीं न जा
नो मैं अभी उनको लिये आती हूं निदान क्षण भर में शामसुन्दर निहार उसी बांदी समेत आप ही रत्न
पारषी के घर गई जौंहरी प्रणाम कर बड़े आदर सन्मान पूर्वक घर के भीतर एकांत स्थल में ले गया
शामसुन्दर निहार ने वहां बैठ अपने मुख से वस्त्र उतारा जौंहरी उसके रूप छबि अनूप मनहरण स
कल दुखदरण चंद्रमुख को देख चकित हुवा और मन में कहा कौन राजपुत्र ऐसे मनोहर स्वरू
प पर जिसको देख अप्सरा मोहित होती हैं मोहित न हो फिर वह चम्पक वरणी सब भांति के ऊंच
नीच समझाय बुझाय बोली तुम्हारा परमेश्वर रक्षक है अब जानती हूं और तुम मेरे और शाहज़ा
दे के मध्यस्थ हो रखवनता हूं कि संकट में हमारे भी सहायक रहना मैं तुम्हें देख प्रसन्न हुई परमेश्वर॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि
८३
83

काथमवादहै किउसने इवननाहरके पीछेभीहमदोनोंप्रिया औतमके मध्यमेंधीर्यदेनेकेलि
येतमपेसे सुशीलचतुरप्रेमपुरुषकोदिया यहकहचलीगई औरजोंहरी शाहजादेकेनिक
टगयाशाहजादेनेउससहरसेदेखतेही कहामेंतुम्हारी वाटदेखताथाउसदिनजोवहलौंडी उसी
मृगनैनीकेपासपत्रलाईथी उससेमुझेधीर्यनहुवायदिशमसुन्निहार अपनीपरिपूर्णकृपा
सेकोईभेटकायत्ननिकालेगेनिसंदेहमुझेधीर्यहोयप्रयातापहै जो अबतक इवननाहर
होतातोकोईन कोई अवश्यउपायठहराता अबउसकेनहोनेसेनिपटनिरासहूं रत्नपारखीने
यहवचनसुनउससेकहाजोमैने आपकेहितकेहेत उपायबिचाराहै दूसरेमनुष्यकोसामर्थ्य
नहींहैजोउससेनियेगालो तुमकोअवश्यधीर्यहोगाजौंहरीने सबवात अर्थात्लौंडीको
प्रसन्नकरनाओर उसकेघरमेंशामसुन्निहारका आनाशाहजादेसेसविस्तरकहा औरकहा
चवराओनहींएकदोदिनमेंतुम्हारीउसकीभेंटहोजावेगी परंतु तुम्हारा औरमेरा उसके मह
लमेंजानाउचितनहीं उसकोयही बुलवाऊंगा औरकोईबड़ा महल ठहराकेतुमदोनोंकावहीं
मिलापहोगा शाहजादेजौंहरीकाबचनसुनहर्षितहुवा औरमुझेविश्वासहैकितुम्हारीकृपा
सेमेरामनोरथसिद्धहोगाजोकुछमुझेकहोगेमैंकरूंगा रत्नपारखीशाहजादेसेविदाहो अपनेमं
दिरमें आया दूसरे दिवसवहवांदीउसकेघरआईजौंहरीनेउसे देखकहा अच्छाहुवाजोतुम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri.

आई मैं तेरी बाट देखता था। उसने कहा कैं। कुशल तो है जौंहरी ने कहा कि शाहज़ादा शमसुन्नि-
हार के हेत अत्यंत व्याकुल और व्यथित है जिस प्रकार हो सके उसको मलांगी को ला दासी ने क-
हा बहुत अच्छा जिस समय कहो उसी काल उन्हें ले आऊं क्योंकि वह भी शाहज़ादे की विरहानल
में जैसे कि गरम बालू में मछली ओले से तड़फती है उसी तरह तड़फ रही है परंतु यह घर बहुत
तुच्छ है उन दोनों के निवास के योग्य नहीं जौंहरी ने कहा एक और मेरा घर अत्यंत बिशाल बड़े आ-
दमियों के रहने के योग्य है तब उसे देख और पसंद कर उस दासी ने कहा बहुत अच्छा तदनंतर व-
ह दोनों उस महल में गए उसे देख बांदी ने पसंद किया और कहा मैं अब उस सुंदरी के निकट जाय
यह सर्व वृत्तांत कहती हूं जो वह आने पर राज़ी होती है तो मैं तुरंत तुम से आय कहती हूं दूसरे पह-
रे में वह लौंडी जौंहरी के ठिग फिर आई और कहने लगी कि मेरी स्वामिनी संध्या के समय अवश्य
आवेंगी यह कह एक थैली अशरफियों की जौंहरी को दी और कहा उस सुंदरी ने आज्ञा दी है कि
उसका यथोचित तुच्छ भोजन और खेला आदि तय्यार कर रखना इतना कह वह बांदी जौंहरी से
विदा भई तदनंतर उस रत्न पारखी ने अपने इष्ट मित्रों से कुछ सुनहले रूपहले पात्र और अति दिव्य
मसनद उपधान आदि सामग्री जितनी कि अवश्यकता थी मांग की मंगवाय उस महल को भली भां-
ति अलंकृत किया जब वह अपने मनोरथानुसार उसे सजा चुका और सर्व प्रकार की खाने पीने की व-

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ग्रहि
८४

84

रंतलाय वर्तमानकीनवशाहजादेकेसमीपगया वहदिव्यवस्त्रपहिर अकेलाउसकेसाथहुवा जौं
हरी उसेऐसी गलियोंमेंसेकि कोईनदेखे उसघरमेंलेगया शाहज़ादा वहांबैठ्याशामस्तुन्निहार
कीबाटमेंजौंहरीसे वार्तालापकररहाथाकि शामस्तुन्निहारभी सायंकालकोइसी लौंडीऔर
दो औरबांदियोंसमेतवहां पहुंचीवहदोनोंप्रियाप्रीतमपरस्परदेखकेऐसे प्रसन्नहुये किजिस
कावर्णन नहींहोसक्ता प्रथमतोवह विकलतासेएकदूसरेकोदेखाकियेतदनंतरउनदोनों
नेपरस्परवियोगकीव्यथा वर्णनकीजिसेवहजौंहरी औरतीनों दासियांउसकोसुनरोनेलगे नि
दानजौंहरीनेउनके उनदोनोंके आगे पीछे औरभोजनपरबैठाया वहदोनोंकुछथोड़ा २ भो
जनकरउठखड़ेहुये तदनंतरउसीस्थानपरजहांपहिले बैठेथे आनंदपूर्वकविलासकरने
लगे शामस्तुन्निहारने जौंहरीसेकहा यहांकोईबजानेकीबांसुरीहै जौंहरीनेतो प्रथमसेसब
भांतिकीवस्तुतारकवीणाएकवांसुरीशामस्तुन्निहारकोलादी वहउसकीध्वनिमेंबहुकाल
पर्यंतमोह और भांतिके ललित रागरागिनीगाई तदनंतरशाहज़ादेने शामस्तुन्निहारको प्र
सन्नकरनेकेलिये उसीसमयकेसुरचित अतिमनोहर रागसुनायेऐसी आनंद मंगलमेंबड़ाशब्द
सुना उसकेसाथही जौंहरीकाएकदासजोबाहरथा महलकेभीतरचला आया औरकहाबहु
नसे मनुष्यद्वारपरएकत्रहैं औरचाहतेहैं किकिवाड़तोड़करचले आवें मैंनेउनसे संख्यातमको

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नहो उन्होंने मुझे मारना शुरू किया इस हेतु मैं भीतर भाग आया जौहरी यह वृत्तांत सुन अनंत
चिंतित हुवा और कहा आप बाहर जाय हाल मालूम करे जब वह बाहर निकला तो देखता है
कि सौ सवार हाथों में खड्ग लिये उस महल के द्वार खड़े हैं फिर तो उसे वहां ठहरने की सामर्थ्य न हु
ई और न भीतर आने की निदान एक पड़ोसी के घर की दीवार पर चढ़ उसके मकान में कूद पड़ा
और कहा भाई यह दशा है मुझे बचाओ निदान वह जौहरी पड़ोसी के महल में जाय छिपा अर्ध
रात्रि पर्यंत वह वहां से शब्द सुनता किया जब देखा अब सुनाई नहीं देता तब अपने पड़ोसी का ध
हले अपने महल में गया उसमें न तो मनुष्य देखे और न असबाब परंतु एक मनुष्य का शब्द सु
ना वह कहता है क्यों न है उसने अपने दास का शब्द सुन पहचाना इन मनुष्यों से कैसे कर बचो उ
स दास ने कहा मैं इस घर के कोने में छिपा था जब वह सब चले गये तब मैं निकल आया स्वामी य
ह पहिचानता कि ठग हुथे कितने दिन बीते कि इन्होंने अमुक महल को लूटा था और कित
ने हो घरों को लूट ले गये उस जौहरी ने विचारा कि इसकी बात की परीक्षा लेनी चाहिये यदि व
ह ठग न होंगे वा इस घर की सब सामिग्री और वस्त्र लूट ले गये होंगे जब दालान के भीतर गया
तो उसे सून पाया न तो शाहजादा न शमशुन्निहार तब बहुत रुदन किया और शिर पीटा कि अ
पने पड़ोसियों को वस्त्र जाने सका कहूंगा न जानिये उन दोनों पर कौन सी विपत्ति पड़ी होगा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि
८५
85

सनेउसेथोड़ादिया औरकहाशमसुन्निहारको शाहज़ादे सहितबड़ीडाकूलेगयेहैं यहवहां
सेअपनेमकानमेंगईहोगी औरकदाचित शाहज़ादा भी अपनेघरमें पहुंचाहोगाजिनमि
त्रोंकीमंगनीवस्तुतुमलायेहो यहहालसुनवहतुम्हेंउलहनाकहेंगे कोंकि इनडाकूओंका
हालसबपुरवासियोंकोविदितहै बहुधाधनपात्रोंकेघरोंमेंघुसलूटलेगयेफिरउसजौंह
रीने अपनेमनमेंकहा इबनताहरनेबड़ी चातुरताकीइसबातकेपरिणामकोसमझयहहां
सेचलागया मैंनेअपनेही हाथोंसे अपनेकोफंसाया देखिये अबइसकाक्याफलहोताहै उ
नदोनोंकेकारणसबलुटगयादेखिये प्राणबचतेहैंवानहीं इतनेमेंप्रातःकालभया औरउसडा
केकासमाचारनगरभरमें फैलगया जौंहरीके पड़ोसी औरइष्टमित्रइकट्ठेभये औरउस अ
कस्मातहानिपरपश्चातापकरनेलगे औरसंसारकीरीत्यानुसार उसेबहुतसमझाय बु
झायथोड़ादियाउसेकिंचितमित्रोंको औरसे भयप्राप्तथापरंतु उनदोनोंकेहेतुचिंताकरताथ
हाकिवह अपने अपने घरोंमेंपहुंचेवानहीं जबवहजौंहरी अकेलाहुवातोदासउसकेसं
मुख भोजनलायापरंतुउससेकुछखायानगया मध्यान्हसमय उसकेदासने आयकहा
एकमनुष्य आपकोबाहरखड़ाबुलाताहै जौंहरीनेबाहरनिकलउससेपूछातूकौनहै औ
रकैसे आयाउसनेकहायद्यपितुमसुझेनहींजानतेहोपरंतुमैंतुमकोभलीभांतिजानताहूं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मेराबड़ाकार्य्य तुमसे संबंधितहै रत्नपारखीने उसे अपनेघरमेंलेजाकरहालसबकहना चाहाउ
सने कहातुम अपने हृदयमें उसकोभलीभांतिजानताहूं तुममेरेसंगचले आओ किसी
प्रकारकासंदेह नकरो मैंकुछ तुमसे कहाचाहताहूं जिससेतुम्हें अति प्रसन्नताहोगी रत्नपा
रखीयहबातसुनउसके साथहुवा औरवहउसे ऐसेमार्गमेंलेगयाकिजिसे कोईनजानताथा
औरकहा इसीमार्गसे मेरेघरचोर लूटने आयेथेवहांठहर उसेकहा आगेचलो निदान वहदो
नोंवहांसे आगे चले इतनीदूरगयेकिजाते जाते संध्याहोगईऔर रत्नपारखी बहुतथकितभ
या सायंकालहोनेसे बहुतडरा चलते चलते टेकरसनदीकेतटपरपहुंचे वहांसेनावपरस
वारहो नदीके उसपारगये वहजौहरीकोवड़ी लंबी गलीमें जिसे उसने कभीनदेखाथाले
गया औरइसीभांतिकई गली औरबजारोंको लांघ एकद्वारपर खड़ाभया जबवह किवा
ड़ खुलातोउसने रत्नपारखीसे कहाकिभीतरचल जबवहदोनोंउसमहलमेंगयेतबवह किवा
ड़ भीतरसेबंदकरलियागया औरएकभारी कुफल उसमेंलगातदनंतरवहमनुष्य जौहरीको
एकमकानमें लेगयाजिसमें औरदशमनुष्यबैठेथे उन्होंने जौहरी का आदर औरसत्कार य
था उचितकिया औरअपने निकट बैठायाजौहरी लाचारीसेवहां बैठगया इतनेमें उनकाप्र
यान आयाऔरभोजन मंगवाया औरउनसभोंने हाथधोयेजब सबभोजनकरनिश्चिंतहुयेतो उ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्दि न्होंने रत्नपारखीसेसंख्याकभी तैनेप्रथमभी हमकोदेखाथा उसनेकहामैंने तुमकोनहींदेखानइस
८९ और आया औरनयहगतियांदेखींतबउन्होंनेकहाहमसे रात्रिकाहत्तांतजोतुमपर बीताहै सब
86 कहजौंहरीने यहसुन आश्चर्यकिया औरकहाभाइयो तुमने किसीसेयहबातसुनी होगी उ
न्होंनेकहानिस्संदेहहमसेउस मनुष्य औरस्त्रीनेजोकल सायंकालको तुम्हारेघरमेंथे कहा
परन्तुहमचाहतेहैं कितेरे मुखसेसुनें जौंहरीकोउस समयविश्वासहुवावास्तवमें यहीडाकू
औचोरहैं जिन्होंने मेराघरलूटा तबउसनेकहाभाइयोजोकुछहुआसोहुआ परन्तुमें उसपुरुष
औरउसी सुंदरीकेहेतचिंतितहूं यदितुम्हें कुछउनकाहत्तांत विदितहोतोकहो उन्होंने कहा
तउनदोनोंकी चिंतानकरवहदोनोंकुशलपूर्वकनिर्भयस्थानपरहैं यहकह उन्होंने दोमका
न उसबहिरसेदिखाय कहा इनमें वहदोनोंभिन्न भिन्न हैं औरइन्हींदोनोंसे तुम्हारा हुता।
नभीविदितहुवाकितुमउन्हें भलीभांति जाननेहो औरउनकेविश्वासीहो यहसुननेही ह
मनेउनदोनोंकोसन्मानपूर्वकरखुवाकिसी भांतिसे उनकोदुःखनदिया किंतु अपनीरीति
केविपरीत हमनेउनदोनोंकीसेवाकी औरकोईहममेंसेउनकादुःखदायकनहुवा औरत
मभीहमसे अभयरहो किसीभांतिका कष्टतुम्हेंनपहुंचेगा यहसुनकेजौंहरीकोधीर्यहुवा
औरउनसबचोरोंकाबहुतगुणमाना तदनंतरउसनेसंपूर्णहत्तांतशाहज़ादे औरशमसुन्नि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हारका आदिसे अंतपर्यंत वर्णन किया यह चरित्र सुन वह आश्चर्यित हुये और कहा तुम सत्य कहते
हो यह पुरुष वक्का का पुत्र अबुलहसन नाम पारस का शाहज़ादा है और यह चंद्रमुखी खलीफा की
परमप्रिया है जौहरी ने कहा जो कुछ मैंने वर्णन किया इसमें बाल भर भी मिथ्या नहीं अनंतर उन्हें
विश्वास हुआ कि जो कुछ जौहरी कहता है वह सत्य है फिर वह सब चोर पारी पारी से जाय शाहज़ा
दे और शमसुन्निहार के चरणों पर गिर अपना अपना अपराध क्षमा कराने लगे और वह कहने ल
गे जो हम इसे प्रथम से जानते तो कदाचित् यह कुत्सित कार्य न करते निपट अज्ञानता में हम से यह अ
पराध हुआ फिर जौहरी से कहने लगे हम को इस कर्म के बस अत्यंत लज्जा हुई परंतु हम सब सर्वस्व जो
तुम्हारे घर से लाये हैं फेर नहीं सक्ते क्योंकि उसमें से हमारे साथी पत्रिको अधियारे में लग गये हैं प
रंतु सुनहली रुपहली वस्तु एक स्थान पर एकत्र कर उसे दी अनंतर चोरों ने उन तीनों से वचन बंध
किया कि हमारा भेद किसी से न कहें निदान वह चोर वस्तु सहित उन तीनों को लिये हुये टेकर स
नदी के तट पर आये और नाव पर सवार हो नदी के उस पार पहुंचे यह तीनों जब धरती पर उतरे उ
न्हों ने रौंद के सवारों और घोड़ों का शब्द सुना कि इस ओर चली आती है उन्होंने इन तीनों को पकड़
लिया और उधर चोर अपनी नाव बड़े बेग से खेके इधर निकल गये रौंद के अधिपति ने उनसे पूछा
तुम कौन हो और कहां से चले आते हो प्रथम तो वह तीनों भय से कुछ न कह सके निदान जौह

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि
८०

रीने कहा स्वामी हम तीनों इस पुर के वासी भले मानस हैं यह मनुष्य जो नाव में सवार कये जाते हैं य
ह सब डाकू हैं सो कल हमारे घर डाका डाल सब असबाब लूट कर हम को भी पकड़ ले गये थे अब
हम बड़ी कठिनता से उनसे छूट अपने घर को जाते थे सो वे हमें इस घाट पर पकड़ा गये जो वस्त्र ह
मारी लूट ले गये थे वह सब हम को फेर दी और वह सब गठड़ियें उस प्रधान को दिखाईं उसने व
न पारखी को सच्चा जान कुछ न कहा और छोड़ दिया फिर शाहज़ादे और शमशुन्निहार से प
छने लगा कि तुम कौन हो और इस सुंदरी चम्पक वरणी चंद्रमुखी को कौन लाया है और इस न
गर के कौन से महल्ले में रहते हो शाहज़ादा तो कुछ उत्तर न दे सका परंतु शमशुन्निहार ने उस प्र
धान को एकांत में एक ओर ले जाय कुछ कहा वह सुनते ही अपने घोड़े से उतर पड़ा और प्रणा
म किया तुरंत दो नाव मंगवाई एक पर शमशुन्निहार और दूसरी पर जौहरी और शाहज़ादे को
बैठा और अपने दो मनुष्य समेत बैठाय आज्ञा की इनको भली भांति इनके घर में पहुंचा दो वह दो
नों नाव दोनों ओर चलीं मार्ग में शाहज़ादे ने उन दोनों प्यादों से कहा तुम हम दोनों को जौहरी
के महल्ले में कि अमुक महल्ले में रहता है पहुंचा दो परंतु वह थादे उसी कुछ प्रसन्न न थे उन्हों
ने जान बूझ के उस नाव को बंदी खाने की ओर पहुंचाया इस इच्छा से कि रात भर इनको बंदी खा
ने में रक्खें और प्रातःकाल खलीफ़ा के सन्मुख ले जावें यह हंता न तो जौहरी और शाहज़ादा।

87

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जानकर अत्यंत चिंतित हुये निदान जब उन्हें उतार बंदीखानेमें लेगये बंदीखानेके अधिपति
ने उनसे वृत्तांत पूछा तो जौंहरीने संपूर्णवृत्तांत कहा कि रौंदके अधिपतिने तो छोड़ दि
याथा और आज्ञादीथी कि इन्हें घर पहुंचा दो परंतु प्यादे कि जिनको हमने हुक्म दिया
हमको दुख देनेकेलिये यहांलाये उसने जौंहरीकीबात समझ अपने प्यादों को
साथकर दिया और आज्ञादी इनदोनोंको पीनस चढ़ा इनके घर पहुंचा आगे जाकि वहांसे शा
हजादेका महल जौंहरीके घरके समीप था इसलिये प्यादोंने उन्हें पहुंचादिया और व
हदोनों विशेषकरके शाहजादा ऐसे थकित और अशक्त होगये थे कि उनमें हिलनेकीभी
सामर्थ्य न थी परंतु शाहजादेकेसेवक उनदोनोंको वस्त्र सहित उतारलेगये शाहजादेने
निजदासोंको आज्ञादी जौंहरीका असबाब उठाके उसके घर पहुंचादो जौंहरी वहांसे उ
ठ अपने घरमें आया उसके कुटुंबके मनुष्य रो रहेथे उसे कुशल पूर्वक देख हर्षित हुये
जौंहरी दो दिवस पर्यंत निर्बलताके कारण अपने घरसेबाहर न निकला तीसरे दिन मन
बहलानेके लिये एकमित्रकी दुकानपर गया वहांसे लौटता था इतनेमें एकस्त्रीको देखा कि
वह सैनसे बुलाती है निदान ध्यानसे उसे देख जाना कि यह वही शमसुन्निहारकी बांदी।
है मार्गभरमें इस भयसे कि कोई देख न ले बात न की चुपका चला और वह दासीभी उसकेपी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
८८

88

बंधे लगी हुई चली गई चलते चलते वह एक निरंजन मसजिद में गये उस लौंडी ने प्रणाम के पश्चा
त जौंहरी से सच्चा कहा तुम चोरों से कैसा कर बचे उस ने कहा प्रथम तुम अपना और दोनों बांदियों का
कुशल कहो फिर मैं भी अपना वृत्तांत कहूंगा उस लौंडी ने कहा जिस समय चोर तुम्हारे घर में घुस
गये तो मैंने जाना खलीफा ने शमसुन्निहार का यह वृत्तांत सुनके अपने नौकर उस के बध करने
को भेजे हैं मैं प्राण के भय से मकान पर चढ़ गई वह दोनों लौंडियां भी मुझे देख छत पर चढ़ आ
ई इसी भांति हम तीनों कोठे कोठे चलते चलते एक गृह में पहुंचे कि उस मकान का धनी बड़ा
शीलवान और समस्त रूप था हमें भयभीत और कांपते देख अपने महल में निवास के हेतु स्थान
दिया रात भर हम वहीं रहे भोर को हम वहां से अपने घर में पहुंची बादशाही महल की लौंडि
यां अपनी स्वामिनी को न देख अत्यंत चिंता करने लगी और हम से पूछने लगी हमारी स्वामि
नी कहां है तो हम ने उन को धीरज देने के हेत कहा कि अपनी सखी के घर रात्रि को रह गई और ह
म को बिदा कर दिया है और यह कहा है कि दूसरे दिवस यहां आना यह सुन वह चुप हो रहीं
शेष रैन हम भी बड़ी चिंता से कटी और सब दिवस भी बड़े शोच विचार में बीता कि इस सुंदरी के
वैरियों पर क्या आपदा पड़ी कि अभी तक उस का कहीं पता नहीं जब संध्या हुई मैंने नदी की
ओर का द्वार खबरा को खोल दिया और केवट से कि जिस की नाव वहीं लगी हुई थी कहा तू आ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पनी नाव उस पार ले जाय एक स्त्री को ढूंढ जो तुझे मिले तो उसे चुपके तुरंत यहां ले आ के वट
तुरंत वहां से किश्ती खोल उस पार ले गया अर्द्ध रात्रि को कोई आहट उस द्वार में खटके सुन पड़ा मैंने
दौड़ के उस किवाड़ को खोला तो क्या देखती हूं उस नाव पर दो मनुष्य और एक स्त्री सवार हैं जब स
मीप आ गई तो मैंने अपनी स्वामिनी को पहिचाना परंतु बहुत मुरझाई हुई थी उसमें इतनी श
क्ति न थी कि नाव से उतरे तब मैं और दो दासियों ने उस नाव से उतार महल में लाई और उसे शय्या
पर सुला दिया जब वह कुछ सावधान भई तब मुझे सैन से अपने निकट बुलाय कान में क
हा तुरंत हजार अशरफी की थैली उन दोनों प्यादों को दे विदा कर मैंने उसकी आज्ञा पालन की
अब परमेश्वर की कृपा से अच्छी हैं और अपना संपूर्ण वृत्तांत जब से चोर उनको और शाहज़ा
दे को तुम्हारे घर से पकड़ ले गये थे अपने महल प्रवेश पर्यंत सविस्तर समझाय बुझाय व
र्णन किया रत्नपारखी ने भी अपना और शाहज़ादे का वृत्तांत जो कुछ कि बीता था कहा वह
उस दासी से सब चरित्र सुन जौंहरी को दो थैलियां अशरफ़ी की देके कहा उस परम रूपवती
को तुम्हारी वस्तु की हानि से और तुम्हें कष्ट पहुंचने से असंमत पश्चात्ताप हुवा इसी हेतु दोनों।
ऊ तुमको भेज दिये हैं और बहुत सा तुम्हें थोड़ं दिया है जौंहरी ने वह तोड़े ले शाम सुनि हार
और उस बांदी का बड़ा गुण माना और उसे विदा कर अपने घर में आया दूसरे दिन सब वस्तु जो अ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि पने मित्रोंसे मंगनी लायाया सबकोपकड़वादी औरजोउससेनमिलासो बनवाके पकड़वायाजो द्रव्यशेष
८९ रहा उससे एकबड़ा विशाल महलहर्ष पूर्वक बनवानाआरंभकिया औरसायंकालको शाहजा
देके भेंटकेलियेगया उसके सेवकोंसे उसकाहालपूछा उन्होंनेकहाजबसे तुमउसे यहां ला
89 येहोतबसे उसनेकुछभी नखाया औरनकिसीसे बातकी औरनकिसीके प्रश्नकाउत्तरदेते
हैं तुमचलकेउनकोदेखोफिरजोहरीको शाहजादेके निकटलेगये उसने शाहजादेको
देखाकि अपनीशय्यापरचुपचापनेत्रमूंदेपड़ाहै उसको इसउदशामें देख उसको अपनेहा
थसे उठाकरउन बैठादिया औरकहामित्र तुमको अपनेप्राणदेतेहो शाहजादेने उसकाशब्द
सुनकरजानाकि जौंहरीहै अपनेनेत्रखोले औरजोहरी काहाथपकड़प्रीतिपूर्वकदबाया
औरधीरेसे कहामैंतुम्हाराबड़ाउपकारमानताहूं कितुमने केवल हमारेहीलिये इतनाकष्ट उ
ठाया जौंहरीनेकहातुम मुझपरबड़ीकृपारखतेहो इससेमें अपनेकोबड़ा भाग्यवान जानता
हूं अबकेवलमैंआपकी आरोग्यता चाहताहूं आपकुछखाते पीतेनहींहो इससेदुर्बलता
काचिन्हतुम्हारे मुखसेप्रतीतिहोताहै परमेश्वरकेवास्तेथोड़ासा मेरेसन्मुखभोजनकीजिये
तत्पश्चात् जौंहरीने पाक मंगाकर शाहजादेको खिलवाया शाहजादेने भोजनकरलियाथा
ये औरएकांतमें शमसुन्निहारकावृत्तांतसबकहनेलगा जौंहरीनेजोकुछउसलौंडीसेसुनाथा य

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

यातथ्य वर्णन कर कहा अब वह अच्छी है कल उसने अपनी लौंडी को तुम्हारे कुशल प्रश्नार्थ
भेजा था इस समयांतर में कई बेर जौंहरी ने विदा हो कर अपने घर जाने की इच्छा की परंतु शाहज़ा
दे ने उसे न जाने दिया इतने में अर्द्ध रात्रि व्यतीत हुई उस समय वह उससे विदा हो घर गया और फिर
प्रातःकाल शाहज़ादे के देखने को आया शाहज़ादे को उसकी भेंट से धीर्य होता था उसे देख
टेवेश क्षणमात्र में उसकी हानि के बदले कुछ द्रव्य देने लगा परंतु उसने न लिया और कहा श
मसुन्निहार ने मुझे कुछ भेज दिया है जिससे मैंने अपने सब मित्रों को बस्त दे दी है शाहज़ादा
लाचार हो चुप हो रहा जब मध्याह्न भया जौंहरी ने कहा मैं विदा होता हूं शाहज़ादे ने निरुपाय
हो उसे विदा किया जौंहरी विदा हो अपने घर पहुंचा एक क्षण न बीता था वही बांदी रोती हुई
उसके समीप आई जौंहरी ने उसके अश्रुपात और उसे कंपित देख पूछा कुशल तो है आनेको
रुदन करती हो उसने कहा कृपाल क्या है हम तुम शाहज़ादे सब के सब मारे परे जो तुम्हें और
शाहज़ादे को प्राण प्रिय हैं तो तुरंत यहां से अन्य देश में चले जाओ जौंहरी ने पूछा क्या हुआ क्यों
तू इतना भय देती है तब उस लौंडी ने कहा कल जब मैं तुम से विदा हो कर घर पहुंची तो शमसुन्नि
हार ने उन्हीं दो लौंडियों में से एक को जो उस रात को तुम्हारे घर आई थी किसी अपराध पर अप्रस
न होय उसे दंड देने की आज्ञा की सो वह बहुत सी मार खा अपने प्राण के भय से उस महल से भा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
४०
96

गई और सेवकों के प्रधान के निकट जाकर बैठी जो उस महल के रक्षार्थ खलीफ़ा की ओर से नि
यत हैं और सम्पूर्ण रात्रि का वृत्तान्त उससे कह दिया दूसरे दिन दूसरी दासी उसी खुदरी के भय से भाग
खलीफ़ा के मुख्य महल में गई ईश्वर जाने वह खलीफ़ा से क्या कहा तो उसने बीस दासों से भेज शमसुन्निहा
को पकड़वा बुलाया न जानिये अब उससे मार डाला वा क्या किया मैं इस दशा को देख वह हाल कहने
के लिये तुम्हारे समीप आई हूं यह वचन सुनते ही रत्नपारखी की सुधबुध जाती रही और रोता पी
टता शाहज़ादे के निकट गया तो शाहज़ादा उसे इस दशा में देख बहुत घबड़ाया और उसे अपने नि
कट बुलवाय एकान्त उसने जो कुछ उस बांदी के मुख से सुना था शाहज़ादे से कह सुनाया शाहज़ादा
प्रथम तो मूर्छावान हुआ जब चैतन्य हुआ तो जौहरी से पूछा अब क्या किया चाहिये उसने कहा इसके
विशेष और कोई उपाय नहीं कि आप भी सवार हो रवाना हूजिये और चलो नहीं तो एक क्षण में ख
लीफ़ा के चपरासी मुझे व तुम्हें पकड़ ले जावेंगे और खलीफ़ा हम दोनों को अत्यन्त निरादर करके व
ध करेगा शाहज़ादे ने तुरन्त कई तीव्रगामी घोड़े तय्यार कर मंगवाये और कई सेवक सिपाही आ
दि और निज कोष से अशरफ़ियां और आभूषण जौहरी की कमर में बंधवा अपनी माता से विदा
हुवा और जौहरी समेत रवाना हुआ और चला और रात्रि दिन वह दोनों चले गये दूसरे दिन विश्रा
म के लिये पहर दिन चढ़े सेवकों और घोड़ों के थकने के कारण घोड़ों से उतर उपवन द्रुमों की शीतल

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

छायामेंठहरगये क्षणमात्रनबीताथाकि राक्षसोंने आकेउन्हेंलूटा औरशाहज़ादेकेसेवकोंने
उसनेसामहनाकिया परंतुसबमारेगये शाहज़ादा औरजौहरीजो अलगरहेथेउनसेबचगये औ
रसंपूर्णद्रव्यवस्त्र औरघोड़े औरउनकेशरीरसे वस्त्रउतार करभागगयेजबवे हटचलेगये
शाहज़ादेने जौहरीसे कहाऐसा अभागाकोई संसारभरमेंनहोगाप्रतिदिन नवीन नवीन
आपत्ति पड़तीहै यदिहमारेधर्ममें अपनेकोवधकरडालना निषेधनहोतातो अपनेकोमारडा
लता जौहरीनेकहाहरिकीइच्छापर प्रसन्नहोयसंतोष रखनाचाहिये इसीमेंकुछलाभहो।
गामनुष्यकीक्या शक्तिहैजोपरमेश्वरकी इच्छाकोमेटसकेयहांवहरनाउचितनहीं किसीप्रका
रसे अन्यस्थानपरजायठहरना चाहियेजहांकिचित्तसावधानहो जावे शाहज़ादेनेकहा अबमैं
तोयहांसेनहीं उठता शामस्तुतिहमकेध्यानमें इसीस्थानपर मरके रहजाऊंगा उसकेबिनाजन्म
अकार्थहै जौहरीनेउसे बहुतसमझायबुझाय वहांसेउठाया और आगेलेचलाकईयोजनपर्यंत
नेकेपश्चात् उन्हें एकमसजिदमिली उसकोखुलापाकेभीतरगयेशेषरात्रिवहींबिताई प्रभात
होतेही एकसत्पुरुषवहां आयाउसने मसजिदमेंवंदना करनेकेपश्चात् शाहज़ादे औरजौ
हरीको मसजिदकेकोनेमें बैठेहुएदेखावहउनकेसमीपगयाप्रणामकरकहा स्रफेतम पर।
देशीजानपड़तेहो जौहरीनेकहाहमहैं कलरात्रिकोबगदादसे आतेथे मार्गमेंडाकूसर्वधनबा।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सं०हि
९१

91

वस्त्र लूट ले गए सो तुम हमें दो वस्त्र दो उस पुरुष ने कहा जो तुम मेरे धर्म रखो तो मैं सर्व भांति से तुम्हा
री सहायता करूं वह यह समझे ऐसा न हो कि वे लो फाने हमारे पकड़ने के लिये असिह्रपत्रीद
या हो और यह पुरुष हमें पहिचान इसी बहाने से अपने घर ले जावे इसी भांति विचारने लगे उस
ने कहा आवने का का कारण है मेरे साथ कौन हो चलने जौंहरी ने कहा हम दोनों नग्न हैं वस्त्र वि
ना लज्जा आती है दिन में मनुष्यों के बीच में नंगे कैसे कर जावें सो उस सत्पुरुष ने दो चादरें लाके
उन दोनों को दी और उन्हें स्थापित जान अपनी दासी के हाथ भोजन भेज दिया उन्होंने कुछ भी
भोजन न किया विशेष शाहजादा जो कि अनंत निर्बल था कुछ न खा सका उसी दुर्गति में पड़ा रहा
जौंहरी शाहजादे के मुख का वर्ण पलटा देख भयभीत हो उसके जीवन से निवस हुवा वह सत्पु
रुष दो तीन बिरियां उनकी आकर देख जाता अंत समय जौंहरी ने सत्पुरुष से कहा मेरा साथी
बहुत रोगी हो गया है तुम इसकी आकर सुधि लेना यदि इसका हाल और तरह का हो जावे तो
मेरी सहायता अवश्य करना है जब वह पुरुष वहां से चला गया तब शाहजादे ने जौंहरी से
कहा मेरा यह अंत समय है और तुम मेरे साथ के साक्षी हो कि मैं उसकी प्रीति में अवनकट
फल जो कुछ मुझ पे उसके मोह में बीता उससे मैंने अनंत हर्ष समझा मुझे अब कुछ पश्चाताप
नहीं केवल यही कि मैं अपनी प्रिय दयावान माता के निकट न गया अनंत उपदेश यह है जब

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मेरेनेत्र मूंदजावें औरमैं स्वर्गकोसिधारहूंतो मेरी लोथको इसी सम्मुखके घरमें छोड़ मे
री माताके निकट जाना औरउसेसमाचार कहना कितेरापुत्र अमुकस्थानपरकाल वशहुआ
था औरउसने यह अंतोपदेशकियाहै किमेरीमाता यहां आय बुगदादको मेरी लोथले
जावे औरअपने सन्मुख स्नानकरा मेरेशरीरको अपने निकटगाड़े इतनाकह उसने देह
मागही जौंहरी बहुतशिरपीट रोयाहूसरे दिन उसके उपदेशानुसार उसकी लोथसम्मुख
के घरमें रख बटोहियोंके साथ बुगदादमें पहुंचापहिले अपने महलमेंजाय वस्त्र बदले
अनंतरस्वर्गवासी शाहज़ादे केघरगया और चोरवथाओर उसके मरने औरअंतोपदेश
का समाचार उसकी मातासे जाय कहा उसकी माताबहुतरोपीटशोककरशाहज़ा
देकी लोथलानेकोचली हूसरेदिन जौंहरी किशाहज़ादेके शोकमेंबहुतरोया करताथा
अपने द्वारपरटहलरहाथा किकाले वस्त्रपहिरेएकस्त्री उसकेनिकट पहुंचीजौंहरीने उसे
पहिचाना कियह वही दासीहै जोशमसुन्निहारकी औरसे आया जाया करतीथी उसस्त्र
पने घरमेंलेगया औरउसे शमसुन्निहारके मोहमें शाहज़ादेकादेहांत और उसकेसंग वा
सीके उपदेशानुसार उसकी माताकोलोथ लेनेको जानावर्णन किया औरहाहाखारीनेल
गावहदासीभीबहुत रोईफिरउसलौंडीने कहाशमसुन्निहारकाभी शाहज़ादेकेमोहमेंदे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि ९२

92

हांतहुआफिर बहुतदोनोंमित्रोंकेलिये रोनेलगे जौंहरीनेसब्का कि खेलीफ़ाने उनदोनोंबांदियों
सेवहसमाचारसुन शमसुन्निहारकीका गतिकीदासीनेकहाका अद्भुत संयोगहुआ जबखे
लीफ़ाने २ दासभेजउसे पकड़वाबुलवाया उसरोते और तड़पतेदेख उसका क्रोध शांतहोगा।
या कि तउसे अपने कंठसे लगाबहुतप्यारकर धीर्य्यदिया और उसे पारितोषिकदे आदरस
न्मान सर्वक विदाकिया उसरंगवासीने अपनेमहलमें आयसुफसे कहामें तेरेहितसेबहु
तप्रसन्नहुई अबमेंघड़ीपलकीहोरहीहूंमें उसकीदशा और वचनसुन बहुतरोई और यो।
र्य्यधउसेकहा ऐसावचनमुखसेननिकालो परमेश्वरतबहै जीतारकेवेहम सबतमस्पर वा
रीहोके मरजावें उसीदिन संध्याकोगानेवालियोंका समूहलेके खेलीफ़ाशमसुन्निहार
के महलमें आया और खेलीफ़ाके हुक्मके अनुसारगानाबजाना आरंभहुवा खेलीफ़ा।
शामसुन्निहारको अपनी बगलमेंले बारहदरीमेंजाबेगवह मोहकेरोगोंसे मूर्छाको
प्राप्तभई कईक्षणपीछे प्राणत्याग दियेखेलीफ़ासमझायह अभी मूर्छाबसहै उसने
औरहमसबने बहुतसे यत्न किये परउसनेफिरसांसनलीजब खेलीफ़ाको विश्वासहु
वा कि यह मरगईतब बहुतरोया और आज्ञादी कि सबगानेबजानेकेसाज तोड़डालो इता
नी आयसुपातेही वहआनंदधाम क्षणमात्रमेंशोकागाररहो गया और स्वामी ओरसे गी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नोंके स्वरोंके स्वरोंके बदले रोना पीटना होने लगा खलीफा शोकसागर में मग्न होय वहां अधिक
नटहर सका उठके अपने महल में चला गया मैं रातभर उसी मृतक के निकट बैठी रही फिर मैंने
नटहर सका उठके अपने महलमें चलागया मैं रातभर उसी मृतक के निकट बैठी रही फिर मैंने
अपने हाथों उसे नहलाया धुलाया जब प्रातःकाल खलीफा ने आज्ञा दी कि शमसुन्निहार को
उसी बड़े मकबरे में जो पहिले उसने खलीफा से अपने हेत मांग लिया था गाड़ो सो उसी वहां गा
ड़ दिया अब मेरा यह मत है जिसकाल शाहजादे की लोथ उसमें पहुंचे शमसुन्निहार के ही सा
थ गाड़ी जावे क्योंकि यदि उनको जीवन में यथेष्ट भोग प्राप्त न हुई तो मरके तो एक स्थान पर रहें
जौहरीने कहा कि किसकी शक्ति है जो खलीफा की आज्ञा बिना उसको उस मकबरे में गाड़ उस
के दासी ने कहा यह कुछ कठिन नहीं क्योंकि खलीफा ने शमसुन्निहार की सब चेरियों का मा
सिक नियत कर सुके उस मकबरे की रक्षार्थ नियत किया और आज्ञा दी है कि जैसे तुम उस
के जीने पर उसके सन्मुख रहा थीं वैसेही रहना होगी उसी भांति अब भी उस पतर की ओर सुके
वहां का परिपूर्ण अधिकार दिया है इसके विशेष खलीफा को भी इन दोनों के मोह का हाल
मालूम है उन दोनों बांदियों ने यह वृत्तान्त सुन के पर भी उससे कुछ न कहा कि न उसके साथ अ
धिक प्रीति और मोह करने लगा निदान जब लोथ शाहजादे की बगदाद में पहुंची जौहरी ने
यह हाल बांदी से कहा वह उसे उस मकबरे में ले गई और वहां जा रोरस्त्री पुरुष उसकी लोथ के

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
५२
93

साथहोगये उसवांदीने शाहज़ादेकी मातासे आज्ञाले उसेशमसुन्निहारकेपहलूमें रावउसे गाड़
दिया तबसे संसारभरकेदूर समीपके मनुष्यउन दोनोंको सच्ची प्रीतिका हत्तांत सुनउसी मक़ब
रेपर आते और आशीर्वाददेते और अपनी अपनी कामनाके लिये पूजतेहैं जबशाहरजादने
यहकथा पूराणकी उनियाजादने बहुत प्रशंसाकरकहाबहिनकथा अच्छी चीरिवन्नेने कहा
अबकोई औरनवीनकथाकहो उसने कहायदि खलीफा प्राणदानदेतो मैंकल कमरुज़्ज़मां
शाहज़ादेकी कथा कहूंगी वहइससेंभी अद्भुतऔरललितहै खलीफा शहरयारने उसीक
थाकोलालसासे उसकाबधनकियाकिउस मनोहरकथाकोभीसुननलेनाचाहिये कमरुज़्ज़
मां औरबदौरा काहत्तांत ॥ फारसनदीसेबीसदिनकेरस्तेपरएक द्वीप चीलडुनखालदान ना
मकथा तथाउसठापूमें कईदेश औरनगर अति सुंदरवसेहुयेथे पूर्वकालमें वहांका शाह
जमा नामक अति प्रतापवान तेजवान बादशाहथा उसकोचारब्याहताश्त्रियां औरसात
बांदियांथी परमेश्वरनेउसे बहुतद्रव्य और नानाप्रकारके ऐश्वर्य्यदियेथे औरउसेकिसीप्रक
रकी चिंतानथी परंतुपुत्रनथाजो उसकेराज्यकावारिस होता बादशाह सर्वदा इसीचिंता औरा
शोचमें रहता औरकहाकरताकिबड़ा खेदहै मेरेपीछेकोईमेरासंतान नहीं जोमेरेपीछेसिंहासन
परबैठे एकदिनउसबादशाहने अपने मंत्रीसे कहामेरी आयुवर्ष बीती जातीहै अभीतक

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कोई पुत्र नहीं जो मेरे पीछे सिंहासन पर बैठे मंत्रीने विनयकी मनुष्यको उचित् नहीं कि किसी
अवस्थामें परमेस्वरकी देनसे निरास होवे आप एकाग्रचित होय ध्यानपूर्वक परमेस्वरसे इसवि
षयमें प्रार्थना कीजिये और नगरके तपस्वियों और योगियोंकी अति सेवा कीजिये याचकों
को यथाशक्ति दान दो उनके आशीर्वादसे परमेस्वर तुमपर कृपा करेगा बादशाहने मंत्रीके उप
देशानुसार दान देना आरंभ किया और अपने संपूर्ण देशके तपसियों और योगियोंको बुलाग
य उनसे इस कार्य्यमें सहायता मांगी निदान उनके आशीर्वादसे एक स्त्रीके गर्भ रहा नौ महीने
बीते पुत्र उत्पन्न हुआ बादशाहने बड़े हर्षसे असंख्य अशरफियां भिक्षुकोंको दीं और अपने से
वसेकोंको बहुतसा पारितोषिक कृपा किये इतना पुण्य किया कि उसकी दानवसे देशभरमें को
ई याचक न रहा सबको धनाढ्य कर दिया वह पुत्र अनंतस्वरूपवान उत्पन्न हुआ था इसवास्ते उ
सका नाम कमरुज्जमा रक्खा जब वह लिखने पढ़ने योग्य हुआ उसके हेत बड़े बड़े विद्वान औ
र गुणी नियत किये थोड़े ही कालमें वह शाहजादा सर्वप्रकारकी विद्या और गुणोंमें निपुण हु
वा जब वह पन्द्रह वर्षका हुवा बादशाहने उसका विवाह करना चाहा सो एक दिन कमरुज्जमा
को अपने निकट बुलाय कहा मैं चाहता हूं कि तुम्हारा विवाह करूं तुम्हारी क्या इच्छा है शाह
जादेने विवाहका नाम सुन मनमें बहुत अप्रसन्न हुवा और बहुत काल पर्यंत चुपका खड़ा रहा।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि ४ध

99

बादशाहने कहा बेटा तैने मेरे प्रश्नका उत्तर न दिया उसने विनय कीकि पिता आपकी आज्ञा
के विरुद्ध कोई बात कहनी निपट ढिठाई है मुझको विवाहकी इच्छा नहीं क्योंकि मैंने पुस्तकोंमें
स्त्रियोंके छलगई चरित्र बहुत पढ़े हैं बादशाह शाहज़ादेके इस उत्तरसे बहुत अप्रसन्न हुवा
और कहा एक वर्षका सावकाश तुम्हें दिया जाता है इस अवसरमें समझबूझकर मेरे प्रश्नका
उत्तर दीजियो सो एक वर्षके पश्चात बादशाहने शाहज़ादेसे वही प्रश्न किया शाहज़ादेने फे
र भी अंगीकार न किया और स्त्रियोंकी बहुतसी बुराइयां वर्णन कीं बादशाह अप्रसन्न होय
शाहज़ादेको कुछ दंड देना चाहा परंतु मंत्रीके विनय करनेसे एक वर्षकी और अवधि दी
कि इस अवधिमें शाहज़ादेने फिर भी न माना निदान बादशाहने अपने महलमें जाय उसकी
मातासे यह हाल वर्णनकर कहा तुम शाहज़ादेको समझाओ और उसे विवाह करने पर
राजी करो नहीं तो मैं उसे इस आज्ञा भङ्ग करनेमें दंड दूंगा शाहज़ादेकी फातिमा नामक
माताने कमरुज़मांको बुलवाय ऊंच नीच समझाय विवाहका उपदेश दिया और कहा
बेटा तुम्हें पिताकी आज्ञा भंग करनी किसी अवस्थामें उचित नहीं उनकी प्रसन्नता प्रत्येक वि
षयमें आवश्यक है और वह कौनसा ऐसा कार्य है कि तुम विवाह नहीं करते यह रीति तो हमारे
पुरुषाओं और जाति पांतिमें सदासे चली आती है किसी मनुष्यको इस रीतिका उल्लंघन करना

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

उचित नहीं कमरुज्जमाने वही बातजोपितासेकहीथी मातासेभी कही औरस्त्रियोंकीबुराईव
र्णनकी फ़ातिमानेकहा सबस्त्रियांकुचालनहीं होतीं बहुधा करकेपतिव्रताभी होतीहैं जोतु
मनेस्त्रियोंकेचरित्र पुस्तकोंमें पढ़ेहैं मैंनेभीउन्हीं पुस्तकोंमें कुचालपुरुषोंकेवृत्तान्तपढ़ेहैं इ
से यहप्रतीतनहींकि सबपुरुष अकर्मीहों इसीहेतु सम्पूर्णस्त्रियोंकोभीकुकर्मीजानना उचि
तनहीं निदान बहुतकाल पर्य्यन्तमाताने उसे समझायापरंतु उसनेस्वीकारनकिया इसीभांति
कईवर्ष व्यतीतहुये शाहज़ादेने विवाह अंगीकारनकिया बादशाहनेखिन्नहोय आज्ञादीइ
से अमुकमकानमेंजो असंगतस्वच्छ औरसुहावना औरउसमेंबहुत अंधियाराहै ले जायकेकैदक
रो पुनः वस्त्रोंकेदोचार जोड़े औरकई पुस्तकें भेजदो औरदासीकोउसकी सेवार्थ नियत क
रकहाकीशाहज़ादेकेसमीप कोई जानेनपावे रात्रिदिन उसीनिर्जन स्थानमेंकैदरहे और
उसका द्वारबंद रहे जबकमरुज्जमा उसीमकानमें कैदहुवा सायंकाल पर्य्यन्तरहा सेवक पु
स्तकें देखाकिया और रात्रिको शय्यापरजाय आनंद पूर्वकशयनकिया दैवयोगसे उसमका
नमें एककुआंथा उसमें राक्षसोंकेबादशाह दिमरट शाहकीबेटीमैमून् नामकअप्सरा रहतीथी
आधीरात्रिकोमैमूना अप्सरा उसअपने नियमके अनुसार कुएंसेबाहर निकली औरसंसारके
अद्भुत चरित्र देखनेकेलिये उड़नेलगी तोवहां प्रकाशदेख आश्चर्य्यमेंहुई औरउसी किवाड़

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि
९५
95

कोजिसदासने वाहरकी ओरसे मूंदाथा ओरआप अलगसोरहाथा वह अपसरा अपनी मायाच
लसेकोठेके भीतरगईवहां रुनहली शय्या ओरउसपर सखकविछौना विछादेख अधिक
आश्चर्यकियाविशेष जबउसकीदृष्टि कमरुज्जमां परपड़ी उसकेरूप स्वरूपकोदेख मोहि
तहुईकमरुज्जमांका आधामुख ओरकछ शरीरउपरेसे छिपाथा उसनेवहवस्त्र उठाउसे
शिरसेचरण पर्यन्तदेखा ओरधीरेसे उसके मुख ओरमालकोचूमाफिरउसका मुखउसी
भांतिढांकवाहरनिकल आई ओर आकाशकी ओरवायुमंडलमें उड़ी उसने किसी राक्षसके
परोंकाशब्दसुनवहीं ठहरपुकारी कौनजाताहै इधर आशाहमरशाहकोबेटादहशनाम
ककिसी ओरउड़ा जाताथा मैमूनकी आवाजसुनतुरत आया अपसराने उससेकहा सचकह
तूइससमय किधरसे आताहै ओरकहां जाताहै ओर इससैरेनमेंतूने संसारिकचरित्रक्या
देख उसनेकहाहैशाहजादीमें इस समयचीन देशसेकिवहांसे हरसमीपके सम्पूर्णद्वी
पदिखाईदेतेहैं उस आताहूं चीनकेबादशाहकानामगोरहै उसकीबेटीजिसकानाम ब
दौराहै ऐसी सुन्दरी ओररूपवतीहै कि उसके सदृश इस समयमें हमारी जाति ओरमनुष
वर्णोंमें कोई नहींहै ओरनहोगी उसकी अलकें चंद्रमुखपरघटाके सदृशलटकतीहैं ओ
रकेशोंमें अतिसुंदरदामिनी सदृश शोभायमान दिखाईदेताहै भाल अतिउज्वल दर्पण।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

के सदृश नैनअति निरीक्षे और मदमरे और सुककीसी नासिका और स्तत्त्व सुख और विं
वाफलके समानरक्त ओष्ठ और दंतमानोमोतियों कीरोलड़ी वाणी अतिप्रिय और मिष्टमनह
रण अतिकोमल और मनोहरवचन उसकीछाती उज्वल और बड़ीहै सखस्वमनहरणी
प्रियवेनी स्वावदेनीहै बादशाहने उसकेहेतसातदरजे कामहलबनगायाहै कंडोड़ों रु
पये उसकेबनवानेमें व्ययकिये पहिलाखंड बिल्लौरका दूसराताँबका तीसरा पोलाद
का चौथापीतलका पांचवांकसौटीके पत्थरका छटाडूपेका सातवांसुर्णका उसमहलके
चारों ओर पुष्प वाटिकाहैं हरप्रकारके सुगंधित पुष्प और नानाप्रकारके सफलवृक्ष औ
रस्थान स्थान परफवारे और सरोवरकमलयुक्त और उनके तटपर सघनवृक्ष अतिसुंद
र जिनसे सूर्यप्रवेश नहीं करती और उनकेनीचे मंदमंद शीतल सुगंधितवायु बहती
है वहस्थान अतिरमणीक और शोभायमानहै देशदेश केशाहजादे और बादशाह
उसचंद्रमुखी गजगामिनी चम्पक वरणीके सौंदर्यकोसुनविवाहकानेग देनेहैं परउस्की
माताने उसेइसविषयमें स्वाधीन कियाहै परंतु शाहजादीको विवा
हकरनेकीरीतिहै किउसके पिताने उसे बहुत समझाया परंतु वहकिसीकाकहनानहीं मा
नती और कहतीहैजोतुमइस विषयमें तकरारकरोगेतो खंजरमारमरजाऊंगी इसीहेतबाद

सधि शाहने उसे एक मकानमें बंद कर रक्खा है और दश बृद्धा स्त्रियां उसकी सेवा करती हैं औ
९८ र उन सब पर शाहजादी की दाई जिसने उसे दूध पिलाया था प्रधान है अब न तो वह कहीं
निकल सकती है न कोई उसके निकट जा सकता है और बादशाहने अपनी पुत्री की विदि
96 त समझ निज देशमें यह प्रसिद्ध कर दिया है कि जो वैद्य वा ज्योतिषी वा मंत्रज्ञ इसे अच्छा
करेंगे उसीके साथ उसका विवाह करेंगे पुनः उस राक्षसने मैमूना अप्सरासे कहा मुझे
उस शाहजादी के बंद होनेसे बड़ा खेद है ऐसी रूपवान होनेपर भी ऐसे कष्टको प्राप्त हो
मैमूनेने शाहजादी के रूपकी प्रशंसा सुन राक्षससे कहा है उह अयोग्य तूने एक तुच्छ ल
ड़की की इतनी प्रशंसा की यदि तू शाहजादेको कि जिसको मैंने देखा है और उसे प्या
र करती हूं देखता तो जानता कि रूप और सौंदर्य्य उसीको कहते हैं और विश्वास है कि तू
भी उसे देख चीनकी शाहजादी को भूल जावेगा राक्षसने कहा हे सुंदरी वह शाहजा
दा कहां है अप्सराने उत्तर दिया वह यहांसे अति समीप है और उसने भी विवाहके सं
बंद है राक्षसने कहा यदि मैं उस शाहजादेको देखूं तो विदित हो कि वह दोनों सुंदरतामें
तुल्य हैं वा न्यूनाधिक हैं परंतु मुझे विश्वास है कि चीनकी शाहजादी कहीं अधिक रूप

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वान होगी अप्सराने कहा क्यों बकमारता है वह शाहज़ादी मेरे शाहज़ादे के पासंग को भी
नहीं पहुंचती निदान उस राक्षस और अप्सरा में बहुत काल पर्यन्त तकरार रही अन्त को राक्ष
सने कहा है सुन्दरी तुम्हें क्योंकर विश्वास हो कि मैं सच्चा हूं वा झूठा जो कहो तो मैं उसे लाके
दिखाऊं कि तुम्हें मेरे कहने का विश्वास हो और फिर मैं तुम्हारे शाहज़ादे को देखूं और
उन दोनों का अन्तर विचारूं अप्सराने कहा बहुत अच्छा तब उसे मेरे शाहज़ादे के पहलू
में लिटाके देख उन दोनों में कौन अधिक सुन्दर है राक्षस वहां से उड़ा और चीन देश को शा
हज़ादी को जो निद्रा में थी उठा लाया और उन दोनों ने उसे शाहज़ादे के पास लिटाया पु
नः उन दोनों में बहुत काल तक तकरार रही दोनों अपनी अपनी बात को दृढ़ और स्थापित
करते निदान अप्सराने कहा तेरी शाहज़ादी तो परम सुन्दरी है परन्तु मेरे शाहज़ादे के रूप
को नहीं पहुंचती उन दोनों ने कहा कि किसी तीसरे मनुष्य को जो रूप की पहिचान रखता हो
हम उसे न्यायी बदें सो अप्सराने एक ठोकर पृथ्वी पर मारी और पृथ्वी फट गई उसमें से एक पि
शाच कुबड़ा लगड़ा काना जिसके शिर पर छः सींग थे और उसके हाथ पांव बड़े और ना
म उसका कसकस वहां से बाहर निकला उस राक्षस ने प्रणाम कर एक घुटने के बल खड़े
होके अप्सरा से विनय की इस सेवक को क्यों बुलाया अप्सराने कहा सुन और नहश में ऊब

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सर्वि
९०
97

नकरसकै उसकाल निर्णयकरदेतं इनदोनोंकोजो शय्यापरअचेतसोतेहैं ध्यानपरदेख किइ
नमेंकौनसा अधिकसुंदरहै कस कसने उनदोनोंको बड़े सोच विचारसेदेखा औरशिर
से पांव पर्यंतदोनोंकोबहुतकालतकदेखा कियापरंतुदोनों स्वरूप औरछबि अनूपमें तु
ल्यथे किसीको अधिकनकहसकानिदान बहुतसोचके उपरांतसेकहाजो यहदोनों पा
री पारी से जागके परस्परप्रीति औरमोह प्रगट करैंतो निस्संदेह उनके रूपमें प्रगटहो।
क्योंकि कोई एकविषयमें उत्तम दिखाईदेताहै औरदूसरा वैसानहीं अपसरा औरराक्षस
ने कसकसकी इसबातको पसन्दकिया पहिले मैमूनेपिस्सूबनकर कमरुज्जमांकेगले में
इस वेगसे काटा किवहजाग जाग पड़ा और अपनाहाथ गरदन परपिस्सूके पकड़नेके
लिये मारा परंतुउसेन पकड़सकाफिरवह पिस्सू अपने सर्वस्वरूपमें आ कमरुज्जमां
कीदृष्टिसे गुमहोगया वहतीनों अर्थात् मैमून अपसरा दनहश व कसकस राक्षसवादु
चारी एकस्थान पर एकत्र खड़ेहो उनदोनोंको देखनेलगेकमरुज्जमांने आंखखोलची
नको शाहजादीको अपने निकट सोतेहुये देखतेही मनमें उसपरमोहितहोगयाहां स्त्रियों
से ग्लानिकरनेपरभी अकस्मातचीनकी शाहजादीको प्रीतिमेंऐसामग्नहोवेवशीकीद
शामें आनहोकभीतोउसकामुखकभीभाल औरकभीहोठचूमता औरशाहजादी नशाहै

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

केमाया वससे अचेतसोतीथी उसेकुछभी यह समाचार विदितनथा शाहजादेनेसमकाकि
यह वही सुंदरीहै जिसके साथ मेरे मातापिताने विवाह विचाराथाजो मुझे ऐसे पहिलेसेदि
खा देतेतो मैं अवश्य स्वीकारकरता अपने मनमें माता पिताकी आज्ञाभंग करनेसेलज्जितहुवा
प्रीतिसे उसेजगानचाहा परन्तुवहराक्षसके मंत्रकीशक्तिसेनजगीफिरउसने अपनी प्यारीकोनी
लमणिकी अंगूठी उतार अपनीहीरेकी अंगूठी उसेपहिनाई और उसकीआप पहिनली और
अपनेस्थानपरलेटरहा और अप्सराकेमंत्रसेतुरंत निद्रावशहो अचेतहोगया पुनःराक्षसने
मच्छड़ बनचीनकी शाहजादीके होंठमें काटाजिसकी व्यथासेवह जागउठी और अपने सा।
थ एकसुंदर तरुणपुरुषको सोते देख आश्चर्यितहुई और विवाह अंगीकारनकरने पर।
भीमोहितहोगई और मनमें समका कि मेरे पिताने इसीमनुष्यके साथ विवाहठहरायाथा
परंतु मैंनेबड़ाअनुचितकियाजो समझेबूझे बिनाइन्कारकर उन्हें अप्रसन्नकिया और एकबान
है कि इतना अचेतसोताहै मुझसेबातचीत और विहारनहीं करता कुछसमयमेंजबव
ह प्रीतिको रोकनसकी और एकमरतबा उसकी बाजू पकड़ बहुत हिलाया कि वहजगे परंतु व
ह राक्षसके मंत्र केबलसेनजगाशाहजादी निरुपायहो परम प्रीति और मोहसे उसके हाथ
चूमनेलगी और देखा कि मेरी अंगूठी उसकी उंगलीमेंहै और उसकीमैंपहिनेहूं इससे उ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
५८
98

से विश्वास हुवा मेरा विवाह इसी रूपवान पुरुषके साथ हुवा है फिर कंठसे लगा बहुत प्या
र किया और अपने स्थान परसो रही मैंने अपसरा ने राक्षससे कहा तूने देखा मेरा शाहजा
दा इस शाहजादीसे सौंदर्य्यमें श्रेष्ठ है अवश्य तैंने शाहजादीको जहांसे लाया था वहीं
पहुंचा दे और कसकस पिशाचको विदा कर आप कुंवेमें जाय आनंद पूर्वक सो रही जब
कमरुज्जमां प्रभातको जगा और अपनी प्यारीको न देख विस्मित होकर और देखने लगा नि
दान समझा कि मेरे पिताने उसे बुला लिया अर्थात् वही उसी दासको पुकारा वह आय शाह
ज़ादेकी सेवा करने लगा शाहज़ादेने अपनी नियमित क्रियाके पश्चात् दाससे पूछा सत्य
कह वह स्त्री जो मेरे समीप रात्रिको सोती थी यहां कैसे आई और अब कहां है दासने
विनयकी स्वामी मैंने उस सुंदरीको नहीं देखा वह कैसे कर इस कोठेके भीतर जिसका
किवाड़ बाहरकी ओरसे बंद कर कुफल लगाया था आसक्ती है आपने स्वप्न देखा हो
गा कमरुज्जमांने क्रोधित होय उसे बहुत मारा और कहा तू मुझे उस स्त्रीके समाचारसे
विदित नहीं करता तू बड़ा दुष्ट है जबतक मैं तुझे भली भांति दंड न दूंगा न बतावेगा कुछ
भी वर्णन करेगा निदान दासको रस्सीसे बांध कुवेंमें लटका दिया दासने सोचा यह शाह
ज़ादा कुछ विक्षिप्त और मस्त है मुझे कहीं मार न डाले अब किसी यत्नसे बचो दासने पुका

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

के कहाजोमुझे आज्ञादानहोतो उससुंदरीका वृत्तांतबनाहूं कमरुजमांने उसे ऊंचेसे नि
काल छोड़दिया औरएककहानीतुरंतबना उसने कहामैं सावधानहोलूं जोबनसाऊं लखूं शी
काके वहांनेसे कोटके वाहरनिकलगी औरउसकाहार मूंद वहांसे भागबादशाहके नि
कट आया औरसारासमाचार शाहज़ादे औरअपने मारखाने और कूपमेंलटकायेजा
नेकाबादशाहसे प्रगटकरकहास्वामी आपविचारिये वह मकानबाहर सेबंध और
यहसेवक किवाड़मेंलगाके सोयाथा वहस्त्रीजिसे शाहज़ादा मुझसे पूछताहै कियर
सेगई आपशीघ्र जाय शाहज़ादेको देखें बादशाहने दाससे यहबातसुन विस्मितहुवा
औरमंत्रीको आज्ञादीततुंरतजा और शाहज़ादेका वृत्तांत सात्मकर मुझसे प्रगटकर
वह मंत्री तुरंत शाहज़ादेके सन्मुखगया दंडवतकर उसके निकट बैठकहा आपकेपि
तादाससे आपकावृत्तांतसुन अत्यंत चिंतितहुये औरमुझे उसीस्त्रीके समाचारविदित
करनेको जिसे तुमनेस्वप्नमें देखाथा भेजाहै शाहज़ादेनेकहा वह दास बड़ा दुष्टहै मु
फे उसस्त्रीकाहालजोरात्रिको मेरेसमीप सोतीथी नहीं बताया परमेश्वरकेवास्ते तुम
कहो वहसुंदरी मृगनैनी जिसे मेरे पितानेरात्रिको मेरेनिकटभेजाथा औरउसीके सा
थमेरा विवाह विचाराथा कहांहै मैंउसके देखेविनानिपटबेचैन औरअधीरहूं जोबा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि
५५
99

दशाह सर्वसे सुफे उस वृक्षविश्रामको दिखाने तोमैं काहेको ऐसी सुंदर स्त्रीसे विवाहस्त्रीकास्न
करताओर उनकेकोपमेंपड़ता मंत्रीने यह सुन शाहज़ादेसे कहा महाराज आपका कहते
हैं आपकेमकानमेंजोबाहरसेबंदथा कौंकर स्त्रीगई आपने उसे स्वप्नावस्थामें देखाहोगा
शाहज़ादेने अप्रसन्नहोयमंत्रीकीदाढ़ीको पकड़ली औरभलाभांति ताड़नाकी मंत्रीने अप
ने प्राणबचानेकेलिये कहा इससेवकको छिदिन नहींबादशाहने किसीस्त्रीको आपके
निकटभेजाहोगा अबमुझे आज्ञाहोतोमैं बादशाहसे विनतीकर उसपरमरूपवतीको
आपके समीपभिजवाऊं शाहज़ादेने मंत्रीसे कहा अबतुमयहांपरआया शीघ्रजाओरमेरी प्या
री अतिसुंदरी कोमलांगीकोभिजवादे मंत्री बाहरनिकलआया औरबादशाहके सन्मु
खजाय कहा स्वामीजो दासने आपसे विनयकीथी वह सबसत्यहै शाहज़ादेने सुफे
भी माराओरकहताहै शीघ्र उसीसुंदरीकोजोरातको मेरे समीप सोतीथीला बादशा
ह इसवचनकोसुनअत्यंत चिंतित औरचकितहुआ औरआपही शाहज़ादेके निक
टगया जबवहां पहुंचा शाहज़ादेको भलाचंगा औरसावधान देख प्रसन्नहुवा औरउसे
अपने कंठसेलगाय कहाबेटा वह कौनस्त्रीथी जोरातको तुम्हारेसमीपआय सोईमैं कुछ
नहीं जानता ओर अत्यंतविस्मितहूं यहमकानतोबंदथा किसमार्गसेस्त्री यहां आई अग

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तमें स्त्रीका आना किसीविधिसे नहीं हो सक्ता तुमने उस स्वप्नमें देखा होगा शाहज़ादेने विनय
की मैंने उस स्त्रीको स्वप्न में नहीं देखा किंतु जाग्रत अवस्थामें देखा है इसकी साक्षी यह अंगूठी है
फिर शाहज़ादेने चीनके शाहज़ादीकी अंगूठी उतार दिखाई कि मैंने अपनी अंगूठी उसको अंगुली
में पहिनाई और उसकी आप पहिन ली आप भले प्रकार सोचिये यदि वह युवती मेरे पास स्वप्नमें
आती तो अंगूठी क्योंकर बदलती न तो मैं मंदबुद्धि हूं और न विक्षिप्त मैं तो सावधान हूं परमेश्वरके
वास्ते उस परमप्रियाको मंगाओ को मेरे पास भिजवादीजिये उसके देखे बिना मुझे आनंद नहीं जो
आप प्रथमसे उस सुंदरी चंद्रमुखीको एक बेर दिखाते तो मैं विवाह आप अंगीकार करता मैं न जा
नता था कि आपने मेरा ऐसी सुंदरीसे विवाह ठहराया है बादशाह अंगूठी देखके सोचने लगा कि
यह अंगूठी शाहज़ादेकी नहीं किसी औरकी है हमारे राजभरमें इस बनावटकी अंगूठी नहीं ब
नती इसके विशेष इसका नग बहुमूल्य है इससे प्रतीत होता है कि शाहज़ादेका वचन मिथ्या न
हीं परंतु सोच यह है कि प्रमदवनमें ऐसी सुंदरी तरुण स्त्री बंदकोठेमें इसके समीप क्योंकर आ
ई यह बड़ा अचम्भा बात है कि समझमें नहीं आती अनंतर कमरुज़्ज़माँको वहांसे ले जाय निज मं
दिरमें रक्खा और प्रगटमें उसका बहुत समाधान किया कि उस स्त्रीको हम ढूंढ तुम्हारा विवाह
उसीके साथ किये देते हैं तुम निश्चिंत रहो और आप रातदिन अपने बेटेके निकट रहने लगा म

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
१००
100

जीने विनयकी मेरेविचारसे उचितहै आपसर्वेवत राज्यके प्रबंधमेंप्रवृत्तरहैं किसी प्रकारकी
हानि राज्यमेंनहो और शाहज़ादेको खिरदटापके कोटमेंजो नदीके कूलपरहै भेजदीजिये
वहां चारोंओरसे जहाज़ आतेजातेहैं और देश देश कासमाचारविदित होताहै शाहज़ादे
काचित वहां वहलेगा वयगरह बहुत दूरनहीं बादशाहने मंत्रीके मनसे प्रसन्नहो कमरुज़
मांको उसी कोटमें भेजदिया और आपभी प्रायः उसमें जाया करतायहहोतो कमरुज़मांकी यह
दशा थी जो ऊपर वर्णन किया गया अब उधरका समाचार सुनो जब उसराक्षसने चीनकी शाह
ज़ादी को उसके निजस्थान पर स्थापित किया भोर होतेही जागकर अपने दाहिने गये कमरु
ज़मांको ढूंढने लगी उसने धाके हहाकोजो उसकी रक्षकथी बुलाकरपुकारा और कहा।
वह अति सुंदर पुरुषजो रैनमें मेरेसाथ सोताथा कहांहै उसके देखे विनामें अत्यंत व्याकुल
हूं तुरंत उसे मेरे समीपला हहा यह वचन सुन विस्मितहुई और विनती की कि हे मेरीप्या
री शाहज़ादी कुशल तोहै क्या कहतीहो जिस महलमें तुमने शयन कियाहै मनुष्य की
तो क्या गति है वहां पक्षीभी पर मार नहीं सके तुमने कोई स्वप्न देखा जिसका विचार अब
तक तुम्हें बनाहै परमेश्वरके वास्ते ऐसी बातें नकरो बादशाह यह वचन सुनतुम्हें मारे मारेगा।
शाहज़ादीकि अपने प्रीतमके मोहमें पगिके विकलथी भकलाय दाईके शिरके केश प

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कर उसेबऊत मारा दाई अपनेकी छिटकाके भागी ओरबादशाह ओरमल्कासे अपने मारखाने
ओर शाहज़ादीकि विन्तिमताकासमाचारजायसुनाया वहदोनो अतिदुखितहोयशाहज़ा
दीके समीपगये ओरउससेकहाहै बेटीतूनेरात्रिको क्या स्वमदेखाजिससेतुमव्याकुल ओरदु
खितहोवेबेटीने लज्जितहोयनेत्र नीचे करके अपने मातापितासे कहा तुममेरा विवाह करतेथे
ओरमैंस्वीकारन करती रातको मैने एकनौकिशोर मनुष्यको अपने पास सोतेदेखा उसपरमैं
मोहितऊईतुरंतमेरा उसके साथव्याहकरो नहीं तोमैं खाऊ मारमरजाऊंगी जोतुम मुझे
स्वप्नमें उसपुरुषकोदिखातेतो मैं अवश्यउसे आपस्वीकारकरतीयदितुम्हें मेरे कहने की
प्रतीतिनहोतो देखो उससुंदरपुरुषनेमुझे अपनी अंगूठी पहिनादीहै ओरमेरी आप पहि
नलीहै उसके मातापिताने अंगूठी देख जाना यह अंगूठी बऊमूल्य किसी अन्यपुरुष की
है शाहज़ादीकी नहीं पुनः उनदोनोंने बऊत बिचारकियाकि यह अंगूठी क्योंकरबदलोग
ई ओरवह पुरुषइस बन्दीखानेमें किस प्रकार आया ओरबेटीके पाससोया परंतुसुख स
माचारके मूलकोन पऊंचे निदान शाहज़ादीको विन्तिमें ओरउस परमोहितजानसुनहलीब
डिया उसकेपांवमेंडाली ओर आज्ञादीकि इसकी दाईके सिवायकोईभीनिवासस्थानमें नजाने
पावे ओरउस महलके चऊ ओरकई पहरेबेठा दिये ओरवहांसे अंतस मुरझाय ओरदुखि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि तहीय अपने महलमें आये दूसरे दिन उसने अपने संपूर्ण सभासदों और पुरके अधिष्ठाताओंको
९१ बुलाय कहा जो कोई मेरी बेटी को अच्छा करै और वह सावधान और चैतन्य हो जावे तो मैं इसे
उसीके साथ ब्याह दूंगा और मेरे पीछे वही सिंहासन पर बैठ राज्य करेगा और इसी समाचार को
101 राज्य भरमें प्रसिद्ध किया और आज्ञा दी जो कोई यत्न करे पर भी मेरी बेटी को अच्छा न कर स
केगा उसे बंध करूंगा तथापि विवाह के लोभसे बहुत से मनुष्योंने अनेक प्रकार के उपाय कि
ये परंतु कुछ भी लाभकारी न हुए बादशाहने उनके शिर कटवाय शहर पनाह के द्वार पर लट
कवा दिये कई वर्षमें वैद्य और ज्योतिषी और मायावी गुणवानोंके अनुमान है कि सौ शिर केजि
न्होंने अपनी अपनी हिकमत की और निष्फल हुए प्राणसे मारे गये उसी दाई का जो शाहज़ादी
की रक्षक थी एक पुत्र था उसका नाम मरजवां था यह बाल्यावस्था से शाहज़ादी के साथ री
ति रहता जब वह दोनों सयाने हुये और उन दोनोंमें वियोग हुवा मरजवांकी बालपनसे ज्यो
तिष और समस्त विद्याके सीखनेकी अभिलाषा हुई बहुत काल तक चीन देशमें इन विद्याओंको
सीखा तिस पीछे अन्य देशोंमें और विद्याओंके सीखनेको फिरा जब वह बहुत बरसों बीते
सब विद्याओंमें निपुण हो लौटा तो अपने नगरमें आय शहरपनाह के द्वार पर मनुष्योंके म
स्तक लटके देख विस्मित हो घरमें पहुंचा शाहज़ादीका समाचार पूछा उसके घरवालोंने

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कहावहतो बहुकालसेविदितमहोगईहै बादशाहने उसेएकबंदीखानेमेंबजियाजाल क़ैद
करएकखाहै केवल तुम्हारी माताउसके पास आया जायाकरतीहै औरबादशाहने यह
डोंडीपिटगईहै जोकोई शाहज़ादीको सचेत करेगा उसीकेसाथ उसका विवाह करहूं
गा यदिउसे अच्छा न करसकेगातोउसकी गरदन मारूंगा यहसमाचारपाय नानाभांति
केगुणज्ञ अनुमानउन्हसोंके आये औरउन्होंने अपनी अपनी विद्यासे उसका उपाय किया
जबउनकायत्नवृथाहुवा तबउनसबको मारकर उनके शिरशाहर पनाहकेद्वारपरलट
काये गये शेषवृत्तांततुम्हें तुम्हारी मातासे सविस्तर विदितहोगा निदानजब दाईने अ
पने बेटेके आगमनका समाचारसुना विदाहो घरमें आई अपने बेटेकोबहुतदिनोंके
पीछेदेख प्रसन्नहुई थोड़ीदेर पीछे शाहज़ादीकावृत्तांतकहा मरज़बांने कहा किसे
विधिउससे मेरीभेंटहोसकीहै जिससेमैं उसके रोगकी परीक्षा लूं उसकीमाता
ने उत्तरदियामें इसबातको सोचके तुमसे कहूंगी यहकह शाहज़ादीके निकटगई
दूसरे दिन पहिरेके अधिपसे कहाभाईतुम्हें विदितहोगा मेरी एकबेटीहै जिसकोमैं
ने शाहज़ादीके साथदूध पिलायाथा कईबर्षबीते मैंने उसकाविवाहकर दियाथा अ
ब वहसुसरालसे मेरेघर आईहै शाहज़ादी उसके आगमनकासमाचारसुन उसके दे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

खिनेकीलालसा रखती है यदितुम्हारी इच्छा होतोआजरात्रिको वह आयभेंटकरजावे परंतुव
ह किसीकेसाम्हने नहीं आसी प्रधानने कहाबहुत अच्छा प्रहररात्रिबीतेबादशाह शयन
करनेकेलिये महलमें प्रवेशकरतेहैं तबउस समय उसेले आइयोमैं द्वारखुलारक्खूंगा मुझे
शाहजादीका मनरखनाहै दाई यह आज्ञापाय मरजवांकी स्त्रीकेवसनपहिराय शाहजादी
के महलमेंलेगईदाईनेपहिलेजायउसके आगमनकासमाचार औरभेंटकी इच्छावर्णना
कीशाहजादी मरजवांकासमाचारसुन प्रसन्नहुई औरकहाशीघ्रउसेला जबमरजवांगयातो
पहिलेदंडवतकरबहुतभया शाहजादीने कहामरजवां भाईआगे आओ किमैंतुझेभलीभांति
देखूंऔरअपनेहाथसेवस्त्रउतारकहा भाईवहिन मेंक्यापरदाहै मरजवांने आगेजायफि
रदंडवत कीशाहजादीने कहा इससमयमें तुझेदेखबहुतहर्षितहर्षितहुई तेरेभेटको
मेराजीबहुतचाहताथा मरजवांने विनयकीइससेवकको आपनेकृतार्थकिया मुझेस
दा आपकीसुधिबनी रहतीथी औरआशीर्वाददिया करताथा मेराभाग्य उदयहुवा
किफिर आपकेचरणकमलोंकेदर्शनहुये यहकह अपनीज्योतिषऔररमलकी पुस्त
कनिकालउसकेरोगकीपरीक्षाकरनेलगा शाहजादीनेपुस्तक औरसामग्रीकोदेख म
रजवांसेकहा भाईतुमुझेविद्वान समझताहैमें चंगी भलीसावधानहूंलोगमिरेहनात।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

को नहीं जानते इस हेतु मुझे बावली समझ रहा है तो आज तक मेरा वृत्तांत किसी ने जाना।
और न किसी ने उसका उपाय किया फिर उसने सारा वृत्तांत सविस्तर वर्णन किया और कहा
उसी जो किशोर के वियोग में यह दशा भई जब उसकी भेंट होगी तो मैं अच्छी हो जाऊँगी को
ई मुझे व्याधि न देख विक्षिप्त कहता है और कोई प्रेतबाधा बताता है परंतु साक्षात न तो मैं सौ
दा रखती और न विक्षिप्त न किसी भूत प्रेत का दोष है मरजवां यह वृत्तांत बहुकाल पर्यंत वि
स्मित हो चुप का खड़ा रहना किया तदनंतर विनय की है शाहज़ादी मुझे तुम्हारे कहने
की परतीत हुई और तुम्हारा वृत्तांत मुझे विदित हुआ तुम भरोसा रखो वो कुछ दिन और रह
दो मैं उस पुरुष के ढूंढने के लिये जाता हूँ यदि परमेश्वर की इच्छा है तो मैं शीघ्र उसे तुम्हारे
समीप लाता हूँ नहीं होगे अपना मुख न दिखाऊँगा जब मेरे आगमन का संदेशा इस नगर में
सुनना तो विश्वास मानना तुम्हारा मनोर्थ सिद्ध हो गया है यह कह शाहज़ादी से विदा भ
या और यात्रा की तय्यारी कर सिधारा नगर नगर गांव गांव द्वीप द्वीप जाता और बंदोरा।
के रूप की प्रशंसा और विक्षिप्तता का हाल सुनता निदान मरजवां यात्रा करता हुआ चारमही
ने पीछे एक पुर में जो बहुत बसा हुआ एक नदी के कूल पर था पहुंचा और कमरुज़मां का
नाम चीन की शाहज़ादी के सदृश बीमार होने का सुन मन में हर्षित होय पुरवासियों से पूछा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सही किकिसदेशमें यहशाहजादारहताहै उन्होंने कहाकमरुजमांकोद्वीपमेंजानेकेदोमार्गहैं प
९२ कतोखुश्की काओरदूसरानदीके द्वाराजलकामार्गखुश्कीसे अति समीपहै मरजवां जलके
मार्गसेजानास्वीकारकरएकव्यौपारीकेसाथजोउस ओरको जाताथाजहाज परसवारहुवा वा
103 युअनुकूलहोनेसेजहाजके द्वाराशीघ्रकमरुजमांके राज्यमें पहुंचा परंतुजबकोटकेनिकट।
जहाज आया ईश्वरकीइच्छासे पहाड़सेटकराटूटगया और सम्पूर्ण मनुष्यजलमेंडूबगये प
रंतु मरजवांकि पैराकीमेंभीनिपुणथा एकपाटके सहारे पैरताहुवाउसीकोटकेनीचे जहां
कमरुजमांकोउसके पितानेरक्खाथा पहुंचादैवयोगसे उसकालशाहजमांभी नदीकीओरदेख
ताथा मरजवांकोडूबते औरपैरतेदेख मंत्रीको आज्ञादी इसमनुष्यकोतुरंतजलसे निकल
वाओ ऐसानहो जोयहडूबजायकेवट यह आज्ञापाय मरजवांकोहाथोंहाथ नदीसे निका।
लबादशाहके सन्मुखलेगये बादशाह उसेदेखतेही समझायह मनुष्यबुद्धिमानहै उसे शा
हजादेकासमाचारबतायकहा इसकाउपायकियाचाहियेपुनःबादशाह साराहाल क
मरुजमांका मरजवांसे कहिके उसकोशाहजादेकेनिकटलेगया मरजवांकोउसकीदशादे
खिने और आकृतीके बदलनेसेसंचितहुवा यहवही शाहजादाहै जिसपरचीनकी शाहजादी
मोहितहै उसीके वियोगमें उसकी यहदशाहोगई यहसबबातें समझकरएकबादशाहसे विन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

एकीहै दीनदयालमैं चाहताहूं आपके पुत्रसे एकघड़ी एकांतमें कुछ वार्ताकहै बादशाह म
रजवांको अपने पुत्रके समीप छोड़ आपदूसरी जगह जाय बैठा कमरुजमांने एकांत मेंउसे
सब्का तुमकौनहो और तुम्हारा आगमन किधरसेहुवा मरजवांने उत्तर दियामैं चीनकावासी
हूंउसीस्त्रीकाजोतुम्हारे निकटसोईथी और जिसकी अंगुठी तुमने बदलीहै भलीभांति
जानताहूं वहबड़े प्रतापवान धीमान गोरनामकचीनके बादशाहकी कन्याहै औरतुम्हा
री प्रियाका नाम बदौरा वहभी तुम्हारे मोहरूपी सागरमें मग्न और विरहरूपी अग्निमें जलती
औतुम्हारे वियोगमें बहुतबेचैन रहतीहै सो उसी शाहजादीनेकि उसकामैं विश्वासीहूं
उसी रात्रिका समाचार जिसमें वहतुम्हारे समीप सोईथी मुझसेसविस्तर वर्णनकिया उ
सके पिताने उसेभीविक्षिप्त समझ उसेकैद कररक्खाहै और अपने राजभरमें यहप्रसि
द्ध यत्नदियाहैजोमनुष्य मेरीबेटी को अच्छा करेगामैं उसीकेसाथ उसेब्याहदूंगा औरवही मे
रे पीछे सिंहासन परबैठ राज्यकरेगा औरजिसका उपाय उपयोगीनहोगा उसकोबध करूं
गासो उससमयसे अबतक अनुमान ३५ सौमनुष्यके किउन्होंने उसका उपायकिया औरनि
ष्फलहुवा प्राणसे मारेगये औरइनके मस्तक नगरके द्वारपर लटकाये गये तुमनिस्संदेह
अपनी प्यारी कोकिउसेकेवल तुम्हारे वियोगकारोगहै अच्छाकरोगे और अपनीः प्रतिज्ञाउ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
१४
104

सार उसका पिता तुम्हारे साथ उसका विवाह करेगा अब तुम्हें उचित है पहिले तुम बलकारी भोजन करसाबधान हो मरजवां के इन कोमल बचनों से कमरुज्जमां को ऐसा हर्ष हुआ कि उसी समय अपनी प्यारी को भेंट की आशा से सबल होय खड़ा होगया और स्नान कर बस्त्र मंगवाय पहिने आपने पिता के साथ हर्ष पूर्वक भोजन किया और हृदय के से हंसने बोलने लगा बादशाह अपने पुत्र को प्रसन्नचित पाय अत्यन्त प्रसन्न हुआ और उसे कंठ से लगाय प्यार कर उसी कोट से अपने महल में ले गया और पुरवासियों और सभासदों को बड़े हर्ष से निमंत्रण कर यथाविधि सत्कार कर बड़ा उत्सव किया और अपने भृत्यगणों को यथोचित सन्मान कर पारितोषक आदि देके निहाल किया और याचकमंगनों को असंख्य दान दे धनाढ्य किया बांदियों को जोड़े तोड़े और अनगिनत द्रव्य दे छोड़ दिया निदान वहां के वासी जितने कि शाहजादे के रोग से व्यथित थे उतने ही उसके चेतन्य होने से हर्षित हुये कमरुज्जमां जो चीन की शाहजादी के वियोग में बहुकाल से खाना पीना और सोना भूल गया था अब स्नान कर और वस्त्र बदल आनंद पूर्वक सोया फिर जागके भली भांति भोजन किया कुछ दिनों में स्वादिष्ट और बलदाई पाकों के भोजन से उसे शक्ति हुई और रूप रङ्ग उसका अच्छा निकला जब उसे ज्ञात हुआ कि चीन की यात्रा करसकूं मरजवां से कहा अब मुझे चीन में ले चलो इससे अधिक तु

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

झमें वियोग केदुःख सहनेकी शक्ति नहीं परंतु मेरा पिता मुझे बहुत प्यारकरता है उसे यकाए
एका वियोग मेरा असह्य है कौंकर मुझे बिदाकरेगा यह कह कमरुज़मां रोने लगा मरजवां
ने विनयकी आपसत्य कहते हैं परंतु एक यत्न यहांसे निकलने का है आपदो तीन दिनके
लिये बादशाहसे अहेरखेलने की आज्ञा लीजिये विश्वासहै किवह अवश्य आज्ञा देंगे तब
आपमुझे और कईएक मनुष्यों कोसाथले अमुकदिशाकोचलना दो घोड़े अतितीव्रगामी
अपनेसाथ रखिये हमदोतीन मंजिलतक अहेरके बहाने जावेंगे उपरांत इनघोड़ों पर
सवार हो चीनके ओर चलेंगे शाहज़ादे कोमरज़वां कासम्मत पसंदहुवा दूसरेदिन कमरु
ज़माने ओसरण बादशाहसे अहेरकी आज्ञाली ओरमरजवां कोसाथलेचलाकई योज
नचलके संध्यासमय एक मुसाफिरखानेमें उतरे भोजनसे स्वस्थचित्तहो आनंदपूर्वक सोये ज
ब अर्द्धरात्रि बीती मरज़वांने शाहज़ादेको जगायकहा अबतुम अपनेबादशाही वस्त्र उ
तार अश्वपालकके सदृश बसन पहिरो शाहज़ादेने तुरंत वस्त्र बदले ओर वहदोनों उ
न्हीं शीघ्रगामी घोड़ें पर चढ़ ओरतीसरा घोड़ा कोतलकेवास्ते अपनेसाथले ओरसमस्त।
सेवकोंको निद्रावश अचेत छोड़ निकल चले प्रातःकालहोतेही वहबनमेंदोराह पर प
हुंचे मरज़वांवहां घोड़ेसेउतरा ओरतीसरे घोड़ेको मारउसके रुधिरसे शाहज़ादेके वस्त्र

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि
१५
105

फाड़के रेंगे औरउसी दोराहे परफेंकदिये शाहज़ादेने मरज़बांसे सेच्छायह तुमनेक्या किया म
रज़बांने कहा जिनको तुम सरायमें सोते छोड़ आयेहोहमको यथानपरनपाकरढूंढेंगे जब
ढूंढ़ते २ यहांपहुंचेंगे आपके वस्त्र लोहू भरेदेखजांयेंगे किकोई बनपशु आपके वैरियोंको
मारके खागयाहै औरसमझेंगे किबादशाहके भयसेवह किसी औरभागगया निदा
नानिरुपायहो यहांसे लौटजावेंगे औरहमारापीछानकरेंगे इसउपायसेहमउनसे बचकर
निशंकःहोययात्रा करेंगे औरजबतककिसवलोगबादशाहसे यह समाचार कहेंगे तबत
कहम बहुत दूरनिकलजावेंगे निदानवहदोनो बहुतसी अशरफ़ी और रत्नादि द्रव्यलिये
कुपकभीतो पृथ्वीके मार्गसे औरकभी जलकेराहसे चलते चलते कुशल पूर्वक चीन
राजधानीमें पहुंचे औरयकसरायमें उतरतीनदिन विश्राम कियामरज़बांने इस समयान
रमें वेष्ठोंकेसदृश शाहज़ादेके बितानुसारवस्त्र बनवाये उपरांत स्नानागारमेंजायदोंनो।
नेस्नान किया मरज़बांने वैद्योंके सदृश शाहज़ादे कोवस्त्र पहिराय कहा अबतुमउस ठ
हमेंजहां वैद्य आदिशाहज़ादीको अच्छा करनेकेलिये जातेहैंजाओ औरमें सबबेदोरा
कोतुम्हारे आनेकाशुभसमाचारकहने जाताहूं यहकहकरवह अपनेघर आया अपनी मातासे
भेटकरकहातू इसीसमय शाहज़ादीको मेरे आगमनका समाचारकहदे किवह प्रसन्नहो।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जाय पुकारने लगाकिमैं बऊत हर्षसेचीनके
कमरुज्जमांउसी भेषसे बादशाही महलके नीचे
शाहज़ादीको इस आशापर अच्छा करने आयाहूंजोवह मेरे यत्नसे अच्छीहोतो बादशाह अ
पने वचनके अनुसार शाहज़ादीका विवाह मेरे साथ करदेजोमैं अच्छानकरसकूंतो बाद
शाह मेरे मारडालनेकी आज्ञादेबादशाहके सेवकोंनेकमरुज्जमांको किशोर अवस्था औ
रसौंदर्य्यदेख अतिचिंताकी औरकहाहेभाई अपनी अवस्थापरदयाकर इसीलोभसे बऊ
तसे मनुष्य मारेगये औरउनके मस्तक नगर द्वार परलटकाये गयेशाहज़ादीका आज त
ककोई आरोग्य नकरसकातूउसे अच्छानकरसकेगानेरेप्राण व्यर्थजावेंगे कमरुज्जमां उ
नकेवर्जनेसे नरुका पुनःवहीवचनकहानिदान वह निरुपायहो उसे राजमंत्रीके निकट ले
गयेवह उसेबादशाहकेसाम्हनेलेगया कमरुज्जमां जातेही बादशाहकेनिकटबैठ गया
बादशाह उसकी ढिठाईसे अप्रसन्न नऊवा किंतुउसकी जवानी परपछताया बिचारनेलगा
कि यहभी औरोंकी भांति माराजावेगाफिर बादशाहनेवही प्रतिज्ञा उससे लिखवाली औ
रउसे शाहज़ादीके मकानमें भिजवाया प्रधान कमरुज्जमांकोद्वार परबैठाय शाहज़ादीके
निकट संदेशा पऊंचानेगया और निनयकी एकमनुष्यतुम्हें अच्छाकरनेकेलिये आयाहै
याटे आज्ञा होतोलाऊं शाहज़ादीने आज्ञादी तुरंत उसेलाप्रधानने कमरुज्जमां केनिकट

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

आयकहातुम शाहज़ादीके समीपचलो औरकिसी यत्नसे उसे अच्छाकरो कमरुज़मांने उ
त्तरदियामें यहींसे उस अच्छाकरहूंगा उसके निकट जानेकीकुछ आवश्यकतानहीं यहक
ह शाहज़ादेनेविलनी औरदावात निकाल उसी रात्रिका संसर्गहत्तांत जिसमें शाहज़ादी उ
सके पास सोईथी एकपत्रमें लिख अंगूठी उसमेंरखबंद किया और प्रधानके हाथदेकहा
हे मित्रयह पत्रलेजायशाहज़ादीकोदे ज्योंही प्रधानने वह पत्र उसे दिया सोंही उसेपढ औ
र अंगूठी पहिचान अपनेहाथ पांवसे बेडीतोड़ किवाड़की ओर दौड़ी औरकमरुज़्ज़मा को
देखतेही पहिचानलिया कमरुज़्ज़मानेभीउसे पहिचानाकि यहवही सुंदरीहै जोमेरे पास
सोईथी औरमैं इसीकीप्रीति औरवियोगमें विक्षिप्तहुआथाफिर वहदोनों दौड़ परस्पर मि
लेउपरान्तदाईने वहांसेउनको उठाकर महलमें बिठाया शाहज़ादी बंदीराने अपनी अं
गूठी फिर कमरुज़्ज़माकोदेके कहा तुम इस अंगूठीको अपनेसमीपरखो औरतुम्हारी
अंगूठीमें अपने प्राणके समानरक्खूंगी यह दशादेख प्रधान बादशाहके पास दौड़ावाया
औरविनतीकीस्वामी जितनेवैद्य औरज्योतिषी आये सब निर्बुद्धिथे इसने शाहज़ादी को नि
रीक्षणके विनाही अच्छा किया अब वह परमेश्वरकी सरण कृपासे सावधानहै बादशाह
यह शुभ समाचारसुन उसके महलमेंगया उसे प्रसन्नदेख अपने हृदयमें लगाया उपरान्त

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कमरुज्जमां सेभेंट कर अपनी बेटीका हाथ उसके हाथमें पकड़ादिया ओरकहा जोमैंने प्रति
ज्ञाकीथी अबउसे पूरीकी अब बताओ कि तुमकौनहो ओरकिस देशसेयहां आये कमरु
ज्जमांने दंडवत् करविनयकी मैनतो वैद्यहूंनमंत्रज्ञ केवल अपने मनोर्थ सिद्धकरनेके लि
ये यह भेषरचामें बड़े प्रतापवान बादशाह कापुत्रहूं मेरा नाम कमरुज्जमां ओर मेरेपि
ताका नाम शाहजमांवह बड़े विशाल खालदन नामकद्वीपोंका बादशाहहै उपरांत सं
पूर्णहतांत अपनी प्रीतिका सविस्तारवर्णनकिया इसअद्भुतकथाको सुन बादशाह वि
स्मितहुआ ओरकहायह अपूर्वचरित्र स्वर्णसे लिखवाके कोशमें रखने योग्यहै फिर से
वकोंको आज्ञादी तुरंत विवाहकी तयारी होऊकुछकालमें विवाहकी संपूर्ण सामग्रीसं
ग्रह हुई चीनके बादशाहने बड़ी धूमधामसेउनका विवाह किया ओर उनदोनो वियोगियों
कामनोर्थ सिद्धहुआ तदनंतर बादशाहने कमरुज्जमांको वजीरकी पदवीदिया सोवह अ
तिप्रसन्नतासे निवास करनेलगा इसी हर्षमें कमरुज्जमांने रात्रिको यह स्वप्नदेखा किउ
सकापिता अंतसमयमें कहताहै हाविदहै किमेरा पुत्र कमरुज्जमां मुझसे बिछुड़ा औ
रउसके वियोगहीसे मेरी मृत्युहुई शाहजादा यहदुःस्वप्नदेखकेचौंक पड़ा अति निकल
होय रुदनकरनेलगा उसकारोनासुन उसकीप्रियाजगी औरघबराके पूछनेलगी स्वामी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्दि
१८
107

कुशलतोहै ऐसे दुखित होयकेरोतेहो कमरुज्जमानेयहसुनकर सुनाया शाहजादीने अ
पनीबुद्धिबल से जाना इसको इच्छापिताके समीप जाने कीहै उसबेरतो उसधीर्घ दिया औ
रदूसरे दिन औसरपाय अपने पितासे यह सबहाल कहा और एक वर्षकी विदामांगी उस
ने अति चिंताकर उसे अंगीकार किया और घोड़े हाथी आदि सामग्री और धनरत्न असंख्य
देकहा एकवर्षवीते तुम अवश्य इस देशमें आना इतना कह उन्हें विदा किया और आप
भीथोड़ी दूर तक उनके साथगया अबयहां सेउन आपदाओंका वृत्तांत जोकमरुज्जमांप
पड़ी वर्णन किया जाताहै जबउनको प्रवासमें एकमासबीता तोउन्हें अति विशाल बनमि
ला उसदिन कमरुजमांने अपनेमें चलनेकी शक्तिनपाकर अपनीप्रिय स्त्रीसे कहा कहोतो
आज इसी स्थानपरसघन वृक्षोंकी शीतलछाया के नीचे रहैं क्योंकिसेना बराबर चलते
आनेसेथकितहोगईहै बदौराने उत्तरदिया मैंभी चाहतीहूं कि आज यहीं रहनेतोउत्तम
था वहभीड़जो पीछेरह गईहै पहुंच जावे और आजके दिनविश्रामकरें कमरुज्जमां
ने प्रधानोंको आज्ञादीकि आज इसबनमें उतरो फरीशोंने यह आज्ञापायस्थान स्थान प
रडेरे खड़े किये औरसेनाभी उचित उचित स्थान परउतर पड़ी बदौरा उष्णतासे अतिव्या
कुलथी अपनेडेरे में जो घने वृक्षोंकी छायामें खड़ाथा शय्यापरजायसोरही कुछ का

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तयीछे उसी डेरेमें शाहज़ादाभी आया अपनी स्त्रीको निद्रावश देख आपभी एकओ
रको लेट रहा लेटनेही उसकी दृष्टि बदौराके बहुमूल्य रत्न और हीरे जटित पटके प
र को लेट रहा लेटनेही उसकी दृष्टि बदौराके बहुमूल्य रत्न औरहीरे जटित पटकेप
रपड़ी और शाहज़ादेने मोतीबिर उसे अपनी कमरसे खोल वहीं रखदियाथा औरउ
स पटकेके साथसूतनहली विनावटकावड़वा बंधाहुवाथा शाहज़ादेने उसेटटोल
स पटकेके साथ सूत न हली विनावटका बड़वा बंधाहुवाथा शाहज़ादेने उसेटटोल
माल्म किया ऐसे कई कगेरमी वस्तुहै जबउसे खोला एक मणिपर उत्तम यंत्र खिचा
था कमरुज़मा समझा यह वस्तु बहुमूल्य होगी शाहज़ादीने उतारके परगई से उ
से डालदिया नतो रक्खा सर्वक किसी सदूकमें रक्खा और नकिसी बांदीको सौंपा सम
वृत्तांत उसयंत्रका तो यह है कि वह यंत्र उसकी माताने यत्न करके बदौराको दियाथा
कमरुज़मां अवलोकनकी इच्छासे उसे डेरेके बाहरले जाय प्रकाशमें उसके अक्षरदे
खनेलगा अकस्मात कोई पक्षी उस यंत्रको मांसका टुकड़ा समझ झपट्टामार कमरु
ज़मांके हाथसे ले गया शाहज़ादा अत्यंत उदास हुवा और मनमें चिंता करनेलगा पे
सी श्रेष्ठ वस्तु मेरी प्राणप्यारीकी इस विषयसे जाती रही किसी प्रकारसे इसपक्षीसे लेनी
चाहिये वह पक्षी उसयंत्रको लिये कुछ दूर एकबनमें जाबैठा कमरुज़माने उ
सका पीछा किया जबवह उसके समीप जाता वह पक्षी उड़ दूर चला जाता इसी भांति

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
१०८

108

वह उसके पीछे लगा हुवा चला जाता फिर वह पत्ती उसे खा गया और बहुत दूर उड़के जा
बैठा फिरभी कमरुज़मां उसके पीछे चला गया जाते जाते वह अपनी सेनासे बहुत दूर नि
कल गया संध्या समय उसी पत्ती को एक काण्टक बनमें चैर पकड़ने की इच्छा को जब व
ह उसके निकट पहुंचा वह उड़के एक बड़े ऊंचे वृक्षकी फुनग पर जा बैठा उस समय कम
रुज़मां निरास हो शोचने लगा पर पत्ती किसी भांति न मिलेगा लाचार हो अपने डेरे में आने
की इच्छा को लौटते ही यह बिचारा उस यंत्रके बिना अपनी प्यारी को अपना स्वाव का दि
खाऊं इसी चिंतामें शोवा प्यासा उसी बनमें वृक्षके नीचे जिसपर पत्ती था सो रहा भोर को व
ह पत्ती वहां से किसी ओर को उड़ा शाहज़ादा भी उसी के पीछे चला वह दिनभी अंथ उ
सके पीछे दौड़ता बीता सायंकाल को वृथासे व्याकुल होय बनके फल खाये दस दिन
इसी भांति से पत्ती का पीछा करता रहा संध्याको वह पत्ती किसी ऊंचे वृक्ष पर बैठता औ
र कमरुज़मां उसके नीचे सो रहता निदान ग्यारहवें दिन वह दोनों एक नगरमें पहुंचे व
ह पत्ती एक बड़े विशाल गृहकी आड़में दृष्टिसे लोप हो गया शाहज़ादा उसी यंत्रके शोच
में व्याकुल होय यह चाहता था कि कोई ऐसा मिले जो मेरी इस दुर्दशामें सहायता क
रे इस हेतु उसी नगरमें कि वह समुद्रके कूलपर था बहुकाल पर्यटन गलियों और बा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नारोंमें फिरापरन्तु किसी मनुष्यने उसकी सहायता न की निदान वहांसे निकल समुद्रके कूलपर फिरनेलगा इतनेमें एक बाग देखा उसका द्वारभी खुलाथा उसमें वह चला गया उसके रक्षकने कमरुजमांको विदेशी मुसल्मान जानके शीघ्र किवाड़ मूंद लिये कमरुज्जमांने अचम्भाकरके उसमालीसे पूछा तूने दरबाज़ाकों मूंदा उसने कहा मैंने तुम्हें परदेशी मुसल्मान समझ किवाड़ मूंदे क्योंकि यहांके पुरवासी शिला पूजक हैं मुसल्मानोंसे निपट बैर राखतेहैं जो किसी मुसल्मानको देखतेहैं उनकी जातिमें उसका दुख देना उत्तम धर्म है और आश्चर्य है तुम इस नगरमें बहुत न फिरे परन्तु किसीने तुम्हें कुछ दुःख न दिया परमेश्वरका धन्यबाद है जो तुम उन दुष्टोंसे बचे स कमरुज्जमांने उस वृद्धका अति गुण माना इसके उपरान्त मालीने कहा तुम। थकेहो कुछ खावो पीवो शयन करो सो उसने उसे अपने झोपड़े में ले जाय भोजन कराया कमरुज्जमांने सावधान हो अपना समग्र वृत्तान्त उसे प्रगट किया और रोके कहा अब क्या करूं उस अपनी प्रियासें भेंट होगी और उसे लेके अपने पिताके राज्यमें पहुंचूंगा कुछ जाना नहीं जाता कि वह अबतक उसी बनमें है वा वहांसे आगे गई व ग्यारह दिन पीछे उसे छोड़े हुये माली। ने उत्तर दिया यहांसे एक वर्षकी राहपर मुसल्मानोंके देश हैं उन देशोंके बादशाहभी मुस। ल्मान हैं परन्तु सब देशोंसे अबौनी नगर सबसे पास है और समुद्रके तटपर है वहांके वासी आने

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
१०९

द सर्वक अति शीघ्र चीलद्दन द्वीपों में पहुंचजाते हैं प्रत्येक वर्षएक ब्योपारी अवेनी नगर से
इस नगर में आता है यहां से माल असबाव मोल ले अवेनी में जाता है पुनः तुम्हारे द्वीप में जाय
व्यवहार करता है यदि तुम कुछ दिन पहिले आजेतो उस ब्योपारी के जहाज़ में मैं तुम्हें सवार
करा देता तुम भली भांति अपने देश में पहुंचजाते अब एक वर्ष के उपरांत वह जहाज़ आवेगा
तब तक तुम मेरे झोपड़े को अपना घर समझ कर रहो कमरुज़्ज़मां उस परदेश में कि किसी को न
जानता था इस को भी परमेश्वर की देन समझ उसके पास रहकर जहाज़ आने की बाट देखने
रहा दिन को वह माली के साथ वाग का काम करता और एकांत में अपनी प्रिया की सुधि कर
रोया करता अब हम शाहज़ादी बीन का समाचार लिखते हैं जो डेरे में सो गई थी जब वह ज
लती है और वह यंत्र उसमें नहीं बदौरा ने विचारा कि मेरा प्राणपति उसकी परीक्षा के लिये क
हीं उसे ले गया होगा रात्रि पर्य्यंत उसके आगमन की बाट देखा की जब वह न आया तो अंत
बेचैन हुई और यंत्र के बनाने वाले को बहुत से दुर्वचन दिये यदि अपने भर्त्तार के खोजाने से व
हुत दुखित हुई परन्तु बुद्धिजो प्रत्येक दशा में मनुष्य की सहायता करती है उसने न खोई और बड़ी
साहस रक्खी और शाहज़ादे के खो जाने का वृत्तांत थोड़ी बांदियों के सिवाय किसी को ज्ञात न र्थी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गरमीसे अपने अपने डेरोंमें अचेतसे रहेथे ब
योंकि वह सब मार्गके कष्टों और सूर्यकी
दौराने समझा जो सेना इस समाचार को सुनेगी तो ऐसा न हो किसी भांतिका दुःख दे अथवा भा
ग जावे इस हेतु अपने मनको हठकर और पीछे राख सब बांदियोंको आज्ञा दी तुममेंसे को
ई मेरे पतिके खोजानेका हाल किसी सेनाके मनुष्य वा किसी सेवक से न कहना और कोई ऐसी
बात करना जिस्से यह वृत्तान्त प्रकट हो यह कह आप पुरुषोंके वस्त्र अपने पतिके सदृश प
हिन अपने पतिके समान ऐसा भेष बनाया कि कोई उसे पहिचान न सका और आज्ञा दी प्रा
तःकाल असबाब लादके तरनयहांसे आगे बढ़ो जब सब कुछ तयारी होगई उसने एक बां
दीको आज्ञादी कि पालकीमें मेरी जगह तू सवार हो और आप घोड़े पर चढ़ उस कुल लश्
करसे आगे चली कई मास पृथ्वी और जलकी यात्राकर अपने पतिके देशके ओर जा
नी थी कि मार्गमें उसे अबोनीका होमा मिला उसके सेवक जहाजसे उतर विश्रामके निमित्त स्
थान ढूंढनेके लिये उस नगरमें गये उन्हीं मनुष्योंके मुखसे अबोनीके अजमसनाम कबा
दशाह को विदित हुवा कि कमरुज़मांके जहाज़ने यहां पहुंच लंगर किया वह बहुत गर्व
से यात्रा किये आता है और शीघ्र ही यहांसे चला जावेगा आज बे सब बाहर ठहरे हैं किकि सी
स्थान पर यहां रहें अबोनी का बादशाह इस समाचारके सुनतेही शाहज़ादेसे भेंट करनेके

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्दि लिये समुद्रकी ओरगया मार्गमेंवही शाहज़ादी जिसने अपने पतिकाभेषधारण कियाथा
१९ टिकनेकोजातीथी उससेभेंटहुई अगेनीके बादशाहने उसे अपने किसी बड़े मित्रबादशाह
काशमक उसकाबड़ासन्मानकिया और अपनेमहल मेंलेजायतीनदिन उसकी कारवारि
110 यों समेत बड़ीक्षमथामसेजेवनारकीफिर शाहज़ादीने विदा होने कीइच्छाकी अगेनीके
बादशाहने जोउसकेरूप अनूप औरबुद्धिपरमोहितथा उसे अपने निकट रखनाचाहा इस
भेदकोशमरावप्रकटमें उससकहामित्र अबमें हृद्धऔरशिथिल हुआ औरमेराकोईभी पुत्रन
हींजो मेरा राज्यकरेकेवल एकही बेटीहै वह अंगमनसुंदर औरचतुराहै मैंचाहताहूं किजोउ
सकेसदृशरूपवानबुद्धिमानहो उसव्याहदूं सोतुममें यहसबगुणहैं उसकाविवाह तुम्हारे
साथकरतुमको गद्दीपरबैठाय परमेश्वरका भजनकरूंगा तुमनजाओ औरमेरी बेटीसेवि
वाहकर राजसुख भोगो वह राजो बड़ीबुद्धिवंतथी अपने मनमेंसोची जोमैंपुरुष होतीतो
कुछ्हानिनथी विवाह करलेती परंतु इस दशामेंकिमें स्त्रीहूं और आवश्यकतापरयहभे
ष धारणकियाहै उसके साथकैसेकर विवाहकरूं एकहिनोहोरात्रिमें यह भेद प्रकटहो जा
वेगा जिससे मेराभेद खुल जावेगा औरजाने अनजानोंमें मेरीबड़ी अप्रतिष्ठा होगीजोमें न
हीं मानतीतो बादशाह अप्रसन्न होयन जानियेक्याअपकार करेयाप्राणसेंमारेवा सदैवकारा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गृहमें देखि अबतक मेरे पतिका वृत्तांत विदित नहीं निदान भलीभांति चिंतनाकर बिवाहक
रने परराजी हुई और कहा एकदिन कासुके सावकाश मिले तोमें अपने सभासदों और मि
त्रोंसे इसविषयमें सम्मत लेलूं बादशाहने कहा बहुत अच्छा दूसरे दिन उसने बड़े बड़े प्र
धानोंसे यह समाचार वर्णन कर कहा मैंभी इसविषयमें प्रसन्न हूं तुम इस विषयमें क्या
कहते हो सभोंने विनय की जिसमें आपकी मरजी हो हमभी प्रसन्न हैं अवैनीका बादशा।
ह उस शाहजादी और उसके नौकरोंको राजी पा हर्षित हुवा और बड़ी धूम धामसे उसका
विवाह अपनी कन्याके साथ करदिया और सब विवाहकी रीतें कर बादशाहने अप
नो गद्दीसे उतर दामादको बेगाय अभिषिकित किया और मंत्रियों और नगरके प्रतिष्ठि
तपुरुषोंसे भेंट दिलवाई और इस संपूर्ण राज्यके अधिकार दिये यह सब समाचार उस।
देशभरमें प्रसिद्ध हुवा जब रात्रि हुई बंदीराको दुलहिनके शयनस्थानमें लेगये बंदीरा अ
द्धरात्रि पर्यंत ईस्वरकी बंदना करती रही जब दुलहिन सोगई तो आपभी चुपकेसे एक
ओर सो रही प्रातःकाल बंदीरा स्नानकर वस्त्र बदल नरहपर शोभित हो शाही कामकरने
लगी और बादशाह दुलहिनके निकट रात्रिका हाल पूछनेके लिये आया दुलहिनने ल
जाकर अपना सिर नीचे कर कुछ उतर न दिया बादशाहने अपने बुद्धिबलसे जाना कि अभी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
।।।

इसकी इच्छारूपी कली नहीं खिली उसने उसे बहुधैर्य देके कहा आजकी रात यात्राके श्रमके।
कारण उसने संभोगकी इच्छा नकी कुछ शोच मत करह सवी रातभी एवंबन बीती जब बादशा।
हने जाय देखा कि उसकी बेटी उसीभांति चिंतामें है इससे ज्ञात हुवा आजकी रात्रिभी विहार।
के विना बीती इससे बादशाह अत्यंत अप्रसन्न हुवा और अबोनीके शाहजादेसे कहा आज
तीसरी रात होगी कदाचित आजभी ऐसेही बीतेगी तो मैं उसे बध करूंगा तुम उसे समझादीजि
यो निदान तीसरी रातको जब बदौरा अपनी नियमित बंदनासे निश्चिंत हो उसी शय्यापर।
सोने लगी तब वह दुलहिन उठ बैठी और बदौरासे कहा आज तीसरी रात है तुमने मुझसे बि
हार न किया किंतु बातचीत न की इसका क्या कारण है मैं तो तुम्हें मनसे प्यार करती हूं नहीं
चाहती कि तुम्हें मेरे कारण किसी प्रकारका कष्ट हो कल मेरा पिता तुमसे अप्रसन्न होय ऐ
सा २ कहता था बदौरा दुलहिनकी यह बातें सुन अत्यंत व्याकुल हो चुप रही और मनमें
शोचो यदि अपना भेद प्रकट करती हूं बादशाह अबीनी मुझे मार डालेगा जो नहीं कहती
तोभी उसकी कोपाग्निसे नहीं छूट सकती हरतरहसे मृत्यु और अप्रतिष्ठाका सामना है दुलहि
नने कहा हे प्राणप्यारे तुमने मेरे प्रश्नका कुछ उत्तर न दिया और तुम्हारी मुखकी कांति कौं
बदली और विकल कौं हो गये यह कह दुलहिन बदौरासे लिपट गई और कहा स्वामी तुम अ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पने मनकी चिंताकों नंहींकहते मुझेकिसी प्रकारसे तुमको दुखदेना स्वीकार नहीं बदौराकी
व्याकुलतासे आंसुकी धारा बहचली और मूर्छा आनेलगी परंतु उसने परमेश्वरको स्मर्णकर
अपनेकोसंभाला और आंसुपोंछ कहाहेकामलांगी मेरीप्यारी मुझसे अपराधहुवामें दंड
योग्यहूं तथापितुमसे क्षमाकी आशारखताहूं अबमेरी प्रतिष्ठा औरप्राण तुम्हारे हाथहैं नि
रुपायहोंमें अपनाहत्तांत तुमसे प्रगटकरताहूं उसेसुनचाहो तुमक्षमाकरोवा मारोफिरउसने
अपनी छाती खोलके उसेदिखाई किमैंभी तुम्हारेसदृशचीनके बादशाहकीबेटीहूं औरअ
पनासंपूर्णहत्तांतकह हाथजोड बिनतीकी जबतकमेरापतिन पहुंचेतबतकमेरा भेदनाखु
ले और परमेश्वरसे परिपूर्ण आशाहै किवह आताहोगा तुमबी उसीकीस्त्रीहोना औरमैं तु
मदोनोंप्रीतिपूर्वकउसकीसेवा करेंगी इतनासुनदुलहिनने कहाअबतुमकिसी भांतिकी
चिंतानकरो हर्षपूर्वक गद्दीपरबैठदेशकाप्रबंधकरोमें बातबनाके अपने मातापिता और
कुटुम्बको समझाहूंगी बहांकी यद्यपीतिथी किनैसंगम कासमाचारसुनबड़ाखुशी
करता औरकईरीतें होतीनिदान उसबिरियांतो वह दोनों परस्परलिपटीरही और अबो
नीकी शाहजादीने अपनी बांदियोंके स्नानकरनेकेलिये वही शृङ्गादिककिये जैसेकिदुल
हिनें प्रथमसमागममें करतीहैं दुलहिनने प्रातःकालहोतेही अपने मातापिताको सेनसेरा।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
११२
112

त्रिकाहाल बनादिया ओर बदोरा स्नानकर वस्त्र पहिन आनंदपूर्वक बादशाही काममें।
लगी ओर इसीविधि रातदिन अपने प्राणपतिके भेटकी आशामें काल बिताने लगी उधरक
मरुजमा शिला प्रजकोंके नगरमें मालीके घर रह मालीका कार्य्यकर आपनिकाल बि
ताना एकदिन भोरको मालीने उससे कहा आज शिला प्रजकोंका बड़ा उत्सव है जोवह आ
पकार्य्यमें प्रवृत्त होतेहैं ओर न किसीको करनेदेतेहैं ओर हर एक मिलकर मेल कीतरह
स्थान २ पर एकत्र होते ओर नाना प्रकारके तमाशे देखतेहैं आजकेदिन मुसल्मानो सेभी।
ग्लानि नहीं करते इससे तु आज तुमको छुट्टीहै यदि तुम्हारा मनचाहे तो नगरमें जाय मे
ला देखो तुमको कोई न रोकेगा ओर मैंने सुनाहै कि अबौला का जहाज़भी यहांपहुंचग
याहै अबमैं अपने मित्रोंकी भेटको जाताहूं ओर उनसे मालूम करना आऊंगा कि कब।
तक यह जहाज़ उधरको जावेगा किमैंतेरे निमित्त पत्र ओर कुछ फल उसपर रखदूं यहक
हकर वह माली समुद्रकोचला ओर कमरुज़मा नगरके चरित्रकू देखनेके बदले अपनी।
प्रियाकी सुधि करने लगा थोड़ेकालमें दो पक्षी उसके समीपके वृक्षपर बैठ लड़ने लगे
इतनेमें सेएक मरकर नीचे आपड़ा ओर दूसरा उड़ वहांसे लोप होगया एकक्षणपीछेदोब
ड़े पक्षी दोदिशासे आयबैठे ओरएकतोउसपक्षी मृतककेपासरकी ओर ओर दूसरा पांवकी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

औरबैठशिरहिलाने लगेमानो वहदोनों उसकी दुर्दशाको देखपछताते हैं अनंतर उनदोनों
ने अपनीचोंच औरपंजोंसे गढ़ाखोद उसके शरीरको गाड़दिया और वहांसे उड़गये एक घ
ड़ी पीछे वहांदोनों उसीपक्षीको जिसने उसे माराथा पकड़लाये और उसके पंखनोच जोड़टु
कड़े २ करचलेगये कमरुज्जमां इसचरित्रको देख विस्मितहुवा और उसके निकटजाय
भलीभांति देखनेलगा दैवयोगसे एकलालवस्तु उसकी अंतड़ियोंमें देखपड़ी जबउसेखो
के देखातो वही यंत्रथा यद्यपिउसीसे उसे इतनाकष्टहुवाथा तथापि उसे पाय अमनप्रस
न्नहुवा औरसमझा अबमेरी प्राणप्यारी मुझे शीघ्र मिलजावेगी दूसरेदिन मालीने उससे क
हा अमुकवृक्ष सूखगयाहै उसेमूलसे काटडाल कमरुज्जमांने उसे ऊपरसे काटा निखा
पीछे उसकी जड़खोद निकालने लगा अकस्मात् उसकी कुल्हाड़ी पत्थरकेचट्टानपर पड़ी उ
सने वहांकी मट्टी सरका उसशिलाकोउठाया उसके नीचेसीढ़ीदसथापकीपाई वहनीचेउ
तरगया वहां उसनेएकबड़ास्वच्छऔर सुंदरटहर चौदह पर्गके अंतरमेंदेखा औरउसमें प
चास देगें नांदकी ढकनेसमेतपाईं जिनमें स्वर्ण भस्म भरीथी कमरुज्जमां इतने द्रव्यकोदे
ख अति प्रसन्नहुआ औरमालीसेजाय यह समाचारकहा मालीने कहाभाई यहधन तु
मलो यहमेरेभागकानहीं क्योंकि ८० वर्षसेमैं इसबागकाकामकरताहूं औरसर्वसे मेरा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि पिताओरदादा यही इसीकामकोकरतेन यहद्रव्यउन्हें मिलाओरनमुझे भाईतीनदिनमें यहां
११२ से जहाज अवैनीकोजावेगा तुमशीघ्र अपनीतय्यारी करो ओरहम असंख्य धनको उसपर
चढ़ाय अवैनीकोजाओ परंतुएक कामकरोकि आधी २ देगोंको खोलीकरउनके ऊपरजै
113 तून जोमेरे पासबहुतहै भरोलोगयह समझेंगे इसमेंकेवल जैतूनहीहै इसयत्नसेद्रव्य
रक्षापूर्वक पहुंचेगा कमरुजमांने मालीसबहुत विनयकरकहा जोतुम यहसब द्रव्य न
हीलेते तो आधाहीलेलोओर अर्द्धभाग मुझेदो मालीनेकहा अच्छातेरी इच्छासेयह मु
झे स्वीकारहै कमरुजमांने हरएकपात्रकीभस्मआधीरहनेदी ओरआधी मालीके घरमें
ठेवकरदिया फिरयहशोचा ऐसानहोफिर यहयंत्रमेरे पाससे जातारहे एकदेगमें उसे
रक्षा पूर्वक रखदेना चाहिये सोएकभाजन खोलीकर उसयंत्रको उसकी तहमें रखदि
या ओरउसपरस्वर्णकी भस्मडालदी ओर उसपरचिह्नकरदिया जिससेपीछे पहिचा
नीजावे जबवह यह निर्बंधकर निश्चिंत हुवा संयोगसेवहमालीरोगीहुवा ओरतीस
रेदिन उसकी अंतकालकीसीदशाहोगई उसीदिन प्रातको जहाजकाकप्तान अपने
खलासियों समेत बागमें पहुंचा ओरकमरुजमांसे पूछा वहकौनहैजोहमारे जहाज
परसवारहोगा कमरुजमांने कहा मेंहूं मेरेही वास्ते मालीनेतुमसे कहाथा मेरी ब

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ले और पचासभाजन जैतून १ केजो मेरे निजका माल है ले जाय जहाज़में चढाओ पीछे
से मैंभी आताहूं खलासियोंने कमरुज़माँका असबाब पचासभाजनों सहित लेजाय ज
हाज़परलादा कप्तानने जानेके समय कमरुज़माँसे कहा जहाज़पर शीघ्र आना विलंबन
करना क्योंकि वायु अनुकूल है केवल तुम्हारे पहुंचनेकी बाट देखेंगे निदान कप्तानके
जानेके पीछे कमरुज़माँ मालीसे विदाहोनेको गया माली उसे अनेकोपदेशकर कालवश
हुवा शाहज़ादा लाचार होकर उसके स्नानकराने और गाड़नेमें प्रवृत्त हुवा फिर बागमें
ताला लगा हुजी उसबागकी धनीकोदे तुरंत समुद्रकी ओर चला वहां जायदेखाकि जहा
ज खुलगया मनमें अत्यन्त चिन्ताकरनेलगा कि एकवर्ष और मुझे यहां ठहरना पड़ा उपरांत
समुद्रसे उसी बागमें आया और मालीके भागकी स्वर्णकी भस्म पचास पात्रोंमें भर ऊपरसे
जैतून भर मुह मूंद लिया इसविचारसे कि इनको अपनेसाथ लेजाऊंगा और उसी बागमें
कार्य करता और जहाज़के आनेकी बाट देखता रहा और वह जहाज़ वायु अनुकूल पाक
र थोड़ेही कालमें निर्विघ्न अबोनी द्वीपमें पहुंचा बदौरा जहाज़के पहुंचनेका समाचार
सुन इस विचारसे कि कदाचित् उसकापति वहां पहुंचाहो आप समुद्रकेतीर आई औ
र प्रगटमें यह मनुष्योंसे कहा मुझे कुछ वस्तु मोल लेनी है इस हेतु ब्योपारियोंके असबा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
११४

114

ब उतारनेके पहिलेजाताहूं निदान समुद्रके कूलपरपहुंच कप्तानसे पूछा तुम्हारा आगमन।
किधरसे हुवा और इसपर सवार है उसने उत्तर दिया इस जहाज़में उन्हीं व्यापारियोंके सिवा जो स-
देव व्यवहार १ जैतून एक दरख्तकी लकड़ी अतिशुद्ध होती है निमित्त इस द्वीपमें आतेजाते हैं
और कोई सवार नहीं और वह सब अनेक देशोंकी वस्तु सादा कपड़ा और छींटदार रत्न सुगंधि-
त वस्तु काश्मीरकेशार जयत्न आदि औषधि लाये हैं बंदोरा जैतूनको बहुत चाहती थी उसका
नाम सुनतेही कप्तानसे कहनेलगी जितना कि जैतून इसपर लदा है मैं उन सबको मोल लू-
गा तुरंत उसे जहाज़से उतारो और व्यापारियोंसे कहदो सिवाय जैतूनके पहिले सब असबा-
ब मेरे समीप लावें कप्तानने कहा पचास पात्रोंमें जो वही भरा है वह एक व्यापारीका है व-
ह पीछे रहगया है हमने उसको बहुत कालपर्यंत बाट देखी परन्तु वह न आया और वायु
अनुकूल होनेसे हम अधिक उस देशमें न रहसके बंदोराने कहा भला तुम उन पात्रों को
नीचे उतारो जो कुछ उनका मोल होगा हम तुम्हें दे देंगे तुम इसके धनीको दे दीजियो जब व-
ह पचासों जैतूनके पात्र उसके सन्मुख लेगये बंदोराने पूछा इस सब वस्तुका का मोल हो-
गा कप्तानने कहा वह बहुत छोटा व्योपारी है आप साढ़े चारहजार रुपया दीजिये वह।
प्रसन्न होउसे लेलेगा बंदोराने कहा यहां परयह वस्तु नहीं मिलती इसका बहुत मोल हो-

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गामैं नौहज़ाररुपया हूंगामेरी यह इच्छानहीं किकिसी गरीबकीहानिहोतुमइस द्रव्यको अ
पने पासरखिना उसब्योपारीके मिलनेही उसेद्रव्य देदेनाउसीसमय शाहज़ादी रुपयादे औ
रपचासौं पात्रोंको उठवा अपने महलमेंलेगई एकभाजनकोनिकलवाथोड़ीसी वस्तु किसी।
पात्रमें निकलगई किउसे भलीभांति देख उसमें सोनेकी राखमिली उसने अत्यन्तअचम्भा
किया जबदूसरा तीसरा पात्रखुलवाय देखासबमेंरत्ननहली भसमदेखी आज्ञाकीकि यह सब
भाजन खोलोहोवेसबमें ऊपरजोवह रत्न और नीचेसोनेकी राखभरी हुई पाई और एकपा
त्रके तहमे वही यंत्रजिसे कमरुज़्ज़मांने रखवाथा देखमूर्छितहो गिरपड़ी अबोनीकोशा
हज़ादी औरउसकी दासियोंने दौड़के उसेसंभाला औरगुलाब औरबेदमुश्ककानीर उस
परछिड़काजिससेवह सचेतहुई बदौराने चेतनहो उसयंत्रको चूमनेत्रोंसेलगाया औरउन्हीं
बांदियोंके सन्मुखजो इसभेदकोनजानतीथी कुछकहना उचितनसमझचुपहो रही ए
कांतख्यालमें अबोनीकी शाहज़ादीसेकहा सर्वजोतुमने मुझसे यंत्रकाहत्तांत सुनाथाव ह
यहीहै जिसमें देख अचेतहोगई औरइसी यंत्रसे मेरे प्राणप्यारेका मुझसे वियोगहुआअ
ब विश्वासहै किशीघ्रउससे मेरी भेंटहोगी दूसरे दिन बदौराने अपने महलसे निकल जहाज़
के कमानकोबुला भेजा जबवह आयाउससेकहा उसीब्योपारी का हत्तांतजिसके पचासभा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि ११५

115

जनजैतलनेकहै औरतउसे शिलाहजकोंके देशमेंछोड़ आयाहै समझायकह किवह कहांरह
ताहै औरकौनसा कार्यकरताहैकमानने कहा वहकिसीके बागमेंरहताहै औरएक हह मा
लीके द्वारामैंने उसका असबाब औरपचासवर्तनोंको जहाजपरलादाथा औरउसीबागमें मैंनेउ
से छोड़ामें आय बागमें उसके निकटगयाथा उसने अपनीबस्तुकोभेजमुझसेकहा किजम
मेरा असबाबले जहाज़ परचलोमैंभी मालीसेजोदो तीनदिनसे रोगीहोगयाहै विदाहोपी
छे आताहूं परंतुनजानिये ऐसाक्याकारणहुआकिवहजहाज़ परनआसका मैंनेलाचार
हो जहाजखोलदिया बंदीराने यहहलांत सुनकेब्योपारियों औरकमानकीसबर्णवस्तु औरद्र
व्यहरली औरकमानसे कहावहब्योपारी जिसे शिलासजकोंके नगरमेंछोड़ आयाहै मेरा
ऋणीहै तबतेंनजाकरउसेला जबतकतूउसेनलावेगा मैं यहतेरी औरव्यापारियोंकी ब
स्तुनछोडूंगा इसके सिवायतुझे दंडदूंगीकमान जहाज़लेशिलासजकोंके नगरकी ओ
रचला और भांतिभांतिवहांपहुंच जहाज़ने लंगरकिया औरएक नावपरसवारहो नगरमें
प्रवेश किया और उसबागके द्वारपरजायहांकदी कमरुजमां अकेले रहजाने औरअप
नी प्रियाके वियोगसे कईदिननसोयाथा औरउसयंत्रीको जिसयंत्री उसयंत्रकीनिकालके
देखाथा हजारों धिक्कारदेता उस समय वह उतारसोनेकेलिये जाताथा इतनेमेंशाह ख

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ना और उसी दशासे किवाड़ खोलने गया ज्योंही किवाड़ खोला त्योंही कमान और खलासी
उसे पकड़ नाव पर ले गये और नाव को शीघ्र खेकर जहाज़ पर चढ़ गया और उसी समय से ज
हाज़ को लंगर उठा अबोनी टापू को चले कमरुज़्ज़मां इस दशा को देख विस्मित हुवा और क
हा तुम मुझे वाग से पकड़ कै़द किये क्यों लिये जाते हो कमान ने कहा तू अबोनी
मान से एछा तुम मुझे बाग से पकड़ कै़द किये क्यों लिये जाते हो कमान ने कहा तू अबोनी
के बादशाह का अपराधी है उसीकी आज्ञा से तुझे पकड़े लिये जाते हैं कमरुज़्ज़मां ने कहा मैं
ने उसकी सूरत भी नहीं देखी और न कभी उसके देश में गया हूं कमान ने कहा इस वृत्तान्त को
तुम उससे कहना तुम कुछ चिंता मत करो वह बादशाह अत्यन्त मायी और शीलवान् है त
मको छोड़ देगा निदान वह जहाज़ जैसा शीघ्र गया था वैसा ही जल्द अबोनी देश में पहुं
चा कमान अपने छुटकारे के लिये उसी क्षण कमरुज़्ज़मां को जहाज़ से उतार आबोनी के बा
दशाह के समीप ले गया उस समय बदौवासाने के लिये जाती थी जहाज़ कप्तान और कमरु
ज़्ज़मां समेत लौट आने का समाचार सुनते ही महल से बाहर निकल आई और अपने प्राण
पति को जिसके वास्ते रोया करती थी मलीन वस्त्रमें कि किसी खलासी ने उसे दिये थे देख क
र पहिचाना और दौड़कर उसके कंठ से लगाना चाहा परंतु कुछ सोचके ठहर गई और विचार
ने लगी यहां के प्रवासी जो मेरे और इसके वृत्तान्त को नहीं जानते हैं सेग यह शोच उसे पकड़ मंत्र या

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्दि न कोसौंप ओरआज्ञादीकिइसेस्नान करावस्त्रपहिराभोरके समयमेरे समीपलाना प्रातसमय ज
११८ बवह प्रधान कमरुज्जमाकोस्नानकरायस्वच्छ वस्त्रपहिराय बँदोराके निकटलेगयातो उसीसमय
116 बँदोराने कमान ओरसबव्यापारियोंका असबाबछोड़दिया विशेषढाई हजाररुपया ओर खि
लअतआदि पारितोषिकदेविदाकिया अनंतर कमरुज्जमांकोबड़ापददेप्रतिसमय अपने सा
थ राखनेलगे यकदिन रातको कमरुज्जमांकोएकांतमें वहयंत्रदिया ओरकहाबऊत दिन
बीते यकज्योतिषीनेमुझे यहयंत्रदियाथा तुमसर्वज्ञहो इसे भलेप्रकारदेखइसके गुणऔ
गुणकहो कमरुज्जमाने उससमयपर्यंतबँदोरा अपनीप्रियाकोजो पुरुषके भेषमेंथी अवो
नीका बादशाह समझाथा वह पहिलेतो कईदिनतक कमरुज्जमां अपनेपति केनामसेविख्या
तरही ओरअवैतीकी शाहजादीके विवाहकेपश्चात अपनेश्वसुरके नाम असमंजससे प्र
सिद्धरही निदान कमरुज्जमाने उसयंत्रकोदेखपहिचाना ओर अत्यंतविस्मितहो कहास्वा
मी इसमें बऊतबुरे अवगुणहैं जिससे मैं आपदामें पड़मरणान्तसहोगया ओरइसीके का
रण अपनी परमप्रियासे मेरा वियोगऊआ यह यंत्रमेरी स्त्रीकाहै जिसके वियोगमें नतोमैं
जीता ओरनमराऊवाहूं जो इसकी कथा आपमुझसे श्रवणकरेंगेतो निस्संदेह मेरीदुर्दशा
पर आपको दया उपजेगी बँदोराने कहामैं इसकहानीको दूसरे समय सुनूंगा तुमऊच्छका

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ल यहांगदहरी वहवहांसे उठपककोनेमें गई औरपुरुषोंके वस्त्रउतारस्त्रियोंकेवस्त्रपहिन व
ही पकका जिसे वियोगके दिनकाटेमें बांधाथा बांधकर कमरुजमांके समीप आई कमरु
जमां अपनीप्रियाको तुरंत पहिचाना दौडा औरउसे लिपटगया औरकहा येसे बादशाह का
गुणमाननाहूं जिसके कारणमें अपनी प्यारीसे मिला बंदौराने कहा अबतुमउस बादशाह
कौन देखोगे वह बादशाह मैंहीथी उपरांतबंदौराने अपना वृत्तांत आरंभसे अंत पर्यंत
कमरुजमांसे प्रगट किया औरकमरुज़मांनेभी अपनाहाल कहा फिर परस्परवृत्तांत स
न अपनीशय्यापरजायसुखशयनकिया तदनंतर बंदौराने निजवस्त्र पहिरअसमंजस बाद
शाहको अपनेमहलमेंबुलवाभेजा उसबादशाहने महलमें पकरूपवती सुंदर स्त्रीकोदेख
आश्चर्यकरपूछायहकौनस्त्रीहै औरकहांसे आई औरमेरादामाद कहांहै बंदौराने मुस्कु
राके उत्तरदिया कलदिनतक मैं अबौनी देशका बादशाहथा आजमैं चीनदेशकी शाहजा
दी शाहजमानामकचौलहन द्वीपके बादशाहकेबेटेकी स्त्रीहूं यदिआपकिंचित् ध्यानय
रहमदोनोंकावृत्तांत सुनेंगेतो आश्चर्यकरेंगे सोउसने अपनाऔर अपने भर्ताका वृत्तांत सवि
स्तारकहसुनाया औरकहा हमारे धर्ममेंचारस्त्रियोंकेसाथ एकबा विवाह करना उचितहै प
रंतुपहिली स्त्रीकोदूसरी स्त्रीके साथविवाहकरनेसे असंतर्ईर्षा औरडाहउपजतीहै मैं इस्की

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सही
११०

117

पहिली स्त्रीहूंमैं मनसेकहतीहूं कितुम्हारीबेटीकाविवाहमेरेपति सेहो बादशाहने य
ह अपूर्व वृत्तांतसुन आश्चर्यकिया औरकमरुज्जमांसे कहाहै बेटा आजतकहमसबदोरा
को पुत्र जानतेथे परंतुयहजाननथाकि यहचीनकी शाहजादी औरतुम्हारी स्त्रीहै अबमैंतु
केदामादजानताहूं जोतुम्हारी इच्छाहोतोमैं अपनी बेटीहयातुलनफसकातुम्हारेसाथ वि
वाह करूं तुम्हारी स्त्रीभी इसबातमें राजीहै औरतुममेरे दामादहोकर इसदेशकी बादशा
हत आनंद सहितकरो कमरुज्जमांने कहामुझे अपनेदेशमेंजानेकी इच्छाथीनिदान कम
रुज्जमांउसदिनसे सिंहासनपरबैठ वहांकाराज्यकरनेलगा औरहयातुलनफसके साथउ
सका विवाहबड़ी धूमधामसेहुवा वहदोनो स्त्रियां आनंदपूर्वकप्रीतिसे रहने लगीं और
कमरुज्जमां उनदोनोंके साथबराबरप्रीतिकरता औरप्यारतुल्यरखता और पारी २ सेउन
दोनोके महलमेंजाय आनंदसे विहारकरताईश्वरकी इच्छासे एकही वर्षमें उनदोनो स्त्रि
योंसेदोबेटे अतिसुंदर उत्पन्नहुये कमरुज्जमांने उनके उत्पन्नहोनेकाबड़ा उत्सव किया औ
र लाखों रुपये याचकमंगन औरसेवकादिकोंकोदिये जोबेटा बदौरासेउत्पन्नहुवाउस
कानाम अमजदऔरजो हयातीसे थाउसकानाम असदरक्खा वहदोनोभाईएकही जग
हरहनेलगे जब वहबड़े और विद्यासीखनेके योगहुए उनके बालसर्वगुणसम्पन्नबड़े १

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नियत किये उनदोनोंमें अमंतप्रीतिथी जिनने २ वहवडे जातेउ
पतरविद्या निधान अध्यापक नियत किये उनदोनोंमें अमंतप्रीतिथी
वतरविद्या निधान अध्यापक नियतकिये उनदोनोंमें
तनो होउनमें प्रीतिभी बढ़ती गई जब वहदोनों बडेरूप और खुरा भला समझने लगे कमरु
जमाने दोनोंके वास्ते भिन्न २ महल और सेवक नियत करादिये परंतु उन दोनोंने कहा हमदो
नों भाई एकही महलमें साथही रहा करेंगे हममें एक दूसरेका वियोग एक घड़ी मात्रका अ
च्छा नहीं लगता कमरुजमांने कहा है बेटों जा तुम्हारी इच्छा हो सो वह दोनों एकके ही गृह
में आनंदपूर्वक रहने लगे जबवह दोनों उन्नीस २ वर्षकेहोकर बादशाही प्रबंध और शस्त्र
विद्यामें बड़े निपुणरूप कमरुजमाने विचारा जबमें शिकार खेलने जाऊंगा तोमेरे पीछे पण
री २ से यह गद्दीपर बैठा करेंगे सो वे अपने पिताकी आज्ञानुसार गद्दीपर बैठा करने यदिवे दो
नों सुंदरता और बुद्धिमें तुल्य थे परउनकी दोनों माता अपने बेटेसे दूसरेको अधिक प्यार करतीं
मी नामर्थी बदौरा असदको बहुत चाहती और उसकी सौत बदौराके बेटेको और वह दोनों
सब विषयोंमें अपनी २ सौतेली मातासे संबंध रखते और यही प्रीति सौतेली माताओंके अप
ईर्षा और डाहका कारण हुई उनदोनोंने यही चाहा कि हम अपने २ पुत्रका मन सौतेली मातासे
फेरें प्रगटमें उनकी परस्पर प्रीति देखकर हसंती ईर्षहेतु उन्होंने चाहा इसहृतांतको अपने २
बेटोंसे प्रगट करें सो एक दिन अमजदशाहजादा बदौराका पुत्र समाप्तेउठ अपने घर आताथा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰हि
११८
118

किमार्गमें सेवकने अलगलेजाय उसकोहसवी माताकापत्रउसेदिया उसनेपत्रपढ़नेही को
पाग्निमें उससेवक कोऐसा खड्ग माराकि दोखंडहो गिर पड़ा औरउसी दशामें अपनी माता
बदौराकेसमीप जायउस पत्रकोदिखाया वहभी उसेपढ़ अमंतक्रोधित भई और कहा
बेटाजो उसनेमेरे विषयमें लिखाकेवलझूठ दोषलगायाहै अनंतर उसने अपने महलें
जायसबहतांत अपनेभाई असदसे कहा औरउसपत्रको दिखाया वहभी उसेपढ़ अमंत
कोपितहुवाहसरे दिन असदसभामें जाय तब शाहीपरस्थितहुवा और सभाको विदाकर
अपनेघरजाना थाकि मार्गमेंयकतहदाने बदौरा कापत्र उसेदिया असदभी उसेपढ़ ऐसाकोपि
तहुवा किउसहहाकोमार डाला और अपनी माताकेनिकट जायपत्र दिखायावहपत्रको
पढ़तेही असदसेकोपितहुई औरकहा तभी अमजदकी सदृश विक्षिप्तहोगयाहै तूने
व्यर्थ उसकोमारडाला मेरे साम्हनेसे चलाजाफिर कभीमेरे साम्हनेन आइयो असद अपने
माताके कोपितवचन सुनकोपाग्निमें काष्ठवत जल अपने महलमें आया औरवहपत्र
अमजदको दिखाया निदानवह दोनो शाहजादेइस बातसे अमंतडाखी औरशोपित हुये
और उनदोनोंकी माता ओंने अपने २ बेटोंसे अति प्रसन्नहोकरउनके बधकरनेकी इच्छा
की तीसरे दिन कमरुजमां अहेरसेलौट अपने महलमें आया दोनोंस्त्रियोंको एकहीशो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

व पुत्र और रानीको देख विस्मित हुवा और पूछा कुशल तो हैं कौ ऐसी मलीन रूप हो रही हो बेटो
रानीने कहा तुम्हारे दोनों पुत्रोंने हमको इतना दुख दिया कि कुछ हम कह नहीं सकती इससे अधि
क हम तुमसे और कुछ नहीं कह सकी कमरुज्जमां कुलपुरुष बैन बेटो राके सुनको पितहोचा
हाथा कि दोनों बेटोंको बुलवा अपने हाथों बध करे परंतु सरदारके समझानेसे आपन मारा
और जिंदर नामक एक अपने प्रधानको बुलाके कहा इसी समय इन दोनों छोरोंको नगरसे बा
हर लेजाय किसी बनमें बधकर और उनके मरनेका कोई चिन्ह लाकर मुझे दिखा जिन्दर उ
न दोंनो निर्दोष प्राणियोंको रातों रात पुरसे बाहर ले गया और भोर होतेही घोड़ेसे उतर उनदो
नोंसे बादशाहकी आज्ञा प्रगकी उन्होंने कहा हम निर्दोष हैं यदि बादशाहकी यही इच्छा
है तो बहुत अच्छा हमें मार असजदने कहा पहिले मुझे मार कि अपने असद भ्राताकी मारे
जाने न देखूं असदने भी यही कहा तब प्रधानने उन्हें मिलाके चादरसे बांधा और खड्ग नि
काल मारना चाहा इतनेमें उसका बहुमूल्य घोड़ा जिसका साज सुनहला था खड्गकी चम
करी भड़का और भागता बनकी ओर दौड़ा जिन्दर सोचा इनका मारना तो सुगम है पहि
ले घोड़ेको पकड़ लाऊं ऐसा न हो जो वह दूर निकल जावे निदान खड्ग वहीं छोड़ आप घोड़े
के पीछे दौड़ा घोड़ेको बनमें शीतल वायु लगी वह और अधिक भागने लगा उसके हिन हि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नानेंसियक सिंहबनसे सोताहुवा जागबाहिर निकला ओरजिन्दरकापीछाकिया अबउनदोनोंभाइ
योंकाहालसुनोवह दोनोंविचारे चादरसेबंधेहुए उसके आगमनकी बाटदेखतेथे थोड़ेकालके
पश्चात् असदने अमजदसेकहाभाई विलंबहुवा जिंदरघोड़ालेउदरसेनहींलोटा ऐसानहो कि
कोईउसपरडाखपड़ाहो उसकी सहायता अवश्यकरनी चाहिये यह कहउनदोनोंने चादर खो
ली अमजदउसकापिछाले संयोगसेउसीवनकी ओरजहांसिंहने उसेगंगासाथा देखा ओरयह
दशादेख सिंहकोबड़ी वीरता ओरअकस्मातसेतलवारका सिंह जिंदर कोछोड़ अमजदकीओ।
रदौड़ापटाउससाहसीनेतलवारकीऐसा खेंचमारीकि सिंहदोखंडहोगिरपड़ानिसपीछे अमजदनेख
ड्गकोराखजिंदरकोकिभयसे मूर्छितहोय गिरपड़ाथापृथ्वीसे उठाउसके शरीर ओरवस्त्रोंसे
धूरपोंछी ओर असद उसके घोड़ेकोपकड़लाया तदनंतर अमजदनेखड्ग पोंछ जिंदरको
देकहा अबतुमहमारे पिताकी आज्ञाप्रतिपालनकरो जिन्दरने देखा सिंहदोटुकड़े हुये प
ड़ेहै अमजदकी सामर्थ्य ओर बलपरधन्य २ किया ओरअसदका बडागुणमानाफिरअमजद
केचरणोंमें विनयकीहे शाहज़ादो तुमनेमेरेप्राणऐसे बलीवैरीसे बचाये ओरमेरे घोड़ेको
पकड़लाये यदिहजारबर्ष पर्यंत अंसाबजिकासे तुम्हारेउपकारकाबदलानकरसक्तानोथोड़ा
है अबमैंकोनकरूंतुमको मांहूं किंतु प्राणरखताहूं कि इतनी ढिठाई तुममेरीक्षमाकरोगे।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

बादशाह मुझे तुम्हारे बदले कुटंबसहित बधकरेंगेतोभी मुझेस्वीकारहै निदान अमजद औ
र असदको अपनेकंठसे लगाकहा मुझे एक एक वस्त्रऊपरका दोसो दोनोंके वस्त्र सिंहके र
क्तमेंडुबोये और जितने अशरफी रुपयेउसकेपासथे उन्हेंदे कहातुमदोनों किसीदूसरे दे
शमें चलेजाओ औरआपवहींसे नगरमें आया और बादशाहके सन्मुखजायदोनोंके रु
धिरसे डूबेहुये वस्त्र उसके साम्हने डालदिये देखतेही कमरुजमा काक्रोधशान्तहोगयो
औरबेटोंकेशोकसे अतिव्याकुलहुवा उनकेवस्त्रोंकेजेबोंमेंसे उनकीदोउमाताओंकेहाथ
केलिखे लिखे हुयेदोपत्र पाये उनकोपढ़उसे परतीतहुई कियह निर्दोषथे इससेवह अं
तशोकयुक्तहो हाहा खायरोकर कहनेलगा मेरेसदृश कोई अन्यायी पितासंसारभरमेंन
होगा जिसने अपने बेटोंकोनिर्दोषमारा वहदोनों अपनी माताओंकेछल बलसे मारेगयेत
दनंतर सौगंदखाई किफिरकभी अपनीदोनों स्त्रियोंकामुखनदेखूंगा और उनदोनोंको।
कारा गृहमें डालदिया औरदोनों अपनेपुत्रके मरवाडालनेसेशोक सागरमेंडूबाऔर इधर
वहदोनों भ्राता बनबन भागते औरस्नान कोबल फलभोजन करकालक्षेप करतेचलेजा
ते रातकोबनमेंएकभाई सोता औरदूसरा जगबनपशुओंसे रक्षा करता इसीप्रकारएक मा
सएकवासकरते बहुतऊंचेकाले पहाड़केनीचे पहुंच उसपर चढ़नेलगे उद्यान निवानकेका

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्वी
१२०
120

रणाथकिनभये विशेष असद अधिक अथाक होगिरपड़ा अमजद कुछ साहसकरपहाड़
कीचोटीपर चढ़गयावहांनिर्मल मिष्टनीरका अतिउत्तम कुंड औरएक अनारका वृक्षथा।
जिसकीचने २ फलोंसेडालियांझुककेनीचेलगीथी अमजद असदको उठावहींले गया।
वह भूखेप्यासे निर्बल होगयेथे अनारतोड़ खाये तीनदिनवहां ठहरेचौथेदिन दूसरेप
हाड़की ओर जिसकामार्गसुथा औरबरावरथा चलेपांचदिन पीछे उसपहाड़केनीचेउ
तरेवहां एकविशालनगरदेख पड़ा वहउसेदेखतेही प्रसन्नहुये ॥ औरवहांजानेकी इच्छा
की असदनेकहा भाईहमदोनोंका एकदावहांजाना अच्छानहीं ऐसानहो जोकिसी प्रकार।
सेदुखमेंपड़े एकतोउसेवचारहै मैंनगरमेंजायशीघ्र भोजनमोललेकर आताहूं इसप्र।
सी स्थानपरठहरोनिदानवह नगरकी ओरचलाजबनगरकेभीतर पहुंचा प्रथम उसेह
ठएकपुरुषमिला असदनेउसकास्वरूपदेखदंडवत्करसन्मुख बाजारकिस ओरहै उसने
मुस्कराके उत्तरदियाहै युवक तुम मुझे विदेशी जान पड़तेहो असदने उत्तरदिया सचहैमैं
अभी इसदेशमें दूसरे आयाहूं वृद्धनेकहा वेटातुमको बाजार सूझने हो असदने कहा
वहांसेमैं भोजन अपने भाईके निमित्तमोललाऊंगा वृद्धनेकहा आजतुम मेरेघरपरचलो
वहांकई प्रकारकेभोजनबने धरेहैं तुमपेटभरकर खाना जितनालेजासको अपनेभाई

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

केलियेलेजाना निदानवहकुटिलबुद्ध असदको फासांदे अपने महलमेंलेगया असदने उसके
घरमें जायदेखाकिचालीसबुद्ध अग्निकेचहुं औरबैठे पूजाकरतेहैं यहहालदेखडरा और
जानगयाकि इसदुष्ट बुड्ढेने मुझसे छलकिया उपरांतउसबुड्ढेने उनचालीसोंसे कहा आ
जकादिन सुफलहै जोऐसा शिकारहाथलगा यह कह गजवानकानामलेपुकाराकि त्व
रंतआ औरइसे तैखानेमेंलेजापुकारतेही एककुरूप हबशी आयाऔरअसदकोपकड़इस
शकेंवोथी उस बुड्ढेनेकहा इसेतैखानेमेंलेजामेरोबोलना औरकेवानालड़कियोंकोसौं प
काहियोइसेरक्षापूर्वक रखियें औरप्रतिदिवस इसेबहुतमारें औरप्रातसंध्याको नियमसे
रोटीकाटुकड़ा खानेको औरएकजलकालोटा पीनेकोदें जिससे यह नमरे जब जहाज़को
कहत आवेहम इसमुसल्मानको ज्वालामुखी पर्वत पर भेजेंगे किइसमें अग्निकी भेंटदी जा
वेगी गजवान उसे पकड़ वहींलेगया औरएकभारीबेड़ी उसके पांवमेंडाल दोकेवाना और
बोलना प्रतिदिन वहांजाय असदकोमग्न कर अतिनिर्दयतासे मारतीजिससे वहमूर्छा खा
यगिरपड़ता तबवही उठाखिया रोटीकाटुकड़ा औरजलदे औरउसी दुर्दशामें उसे छोड़
चलीजाती असदसचेतहो अपनीदुर्दशा औरदीनतापर बहुतरोता उपरांत यह समझता
किमेरा भाई असजदइनसबदुःखोंसेतो बचाहै इससे अपने मनकोधीर्घदेता असजद से

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

यानक अपने भाई की बाट देखा किया जब रात्रि भई तब उसके आने से निरास होकर वह अ
सम्पूर्ण रात्रि अमन व्याकुलता से काटी भोर को उठ नगर की ओर गया उसमें मुसल्मानों को क
म देखि आश्चर्य किया एक मनुष्य से पूछा इस नगर का क्या नाम है उसने कहा इस वासी को
अग्नि पूजकों का नगर कहते हैं क्योंकि इसमें सब के सब अग्निपूजक रहते हैं मुसल्मा
न यहां नहीं रहते अमजद ने पूछा यहां से अबोनी द्वीप कितनी दूर है उसने कहा यहां से व
ह द्वीप समुद्र मार्ग से चार महीने की राह पर और पृथ्वी की से दो महीने पर है अमजद जो चार
समाह में अबोनी से आया था यह सुन अचंभा किया फिर शोचा कि हम बड़े २ भयानक मा
र्गों से आये हैं तथापि इससे निस्संदेह हर्ष होगा उपरांत फिरते २ एक सूचीकार की दूका
न पर खड़ा होगया उस सूचीकार ने उसके स्वरूप और भेष से जाना कि यह मुसल्मान है अम
जद उससे अपने अनुकूल पाकर प्रणाम कर कुशल पूछ बैठ गया और उससे दयाः वान या
अपनी आपदा और अपने भाई के लोप होजाने का वृत्तांत प्रकट किया सूचीकार ने कहा
जो तुम्हारा भाई किसी अग्नि पूजक के हाथ लगा तो उसका मिलना कठिन है परंतु अब अ
पनी रक्षा करो यदि तुम मेरे समीप रहोगे तो मैं तुम्हारी रक्षा और सहायता करूंगा अमद
ज इस वृत्तांत को सुन अपने भाई के मिलने से निरास हुवा और उसका उपदेश मान एक मास

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पर्यंतसत्वीकारकेबिना बाहरन निकलाएकदिनवह अकेला उस नगरमें निकला तौदैवयोग
से किसी कूचेमें जानिकलावहांएक अतिरूपवती तरुणस्त्रीने अपनेचंद्रमुखसे वस्त्रउठाय उस
सेसुंदरकटाक्षकिया औरकहाहे प्राणप्यारे कहांजातेहो औरकहांकेरहनेवालेहो ठहरजाओ
अमजदने उसकेरूपछबि अनूपपरमोहितहोउत्तरदियामें अपने महलकोजाताथा परंतुअ
वतुमजहांलेचलोवहांचलें उसमृगनैनीने कहाखूबक्यायेसी सम्प्रतिहीस्त्रियां अपनेप्यारोंको अ
पनेघरनहींलेजातीं किंतुपुरुषउनको अपनेघरलेजाया करतेहैं अमजदशोचा मेरातोकोई
घरनहीं औरजो सत्वीकारकेघरमेंलेजाऊं तोबड़ीलज्जाहै इसकेविशेषमें इसनगरमें कि
सीकोनहींजानतातू इसविचारकोछोड़सीधासत्वीकारकेघरचलाजासो अमजदचुपका
होवहांसेचला वहसुंदरी उसकेपीछेहोली अमजदनेयह इच्छाकीकिवहस्त्रीमेरा पी
छा छोड़ चलीजावे औरमैं किसीप्रकारसत्वीकारके गृहमेंपहुंचूं परंतुवहदोनों ऐसेथ
कगयेकि किसी गलीमें एकहवेलीकेद्वारपरजिसके दोनोंओर चौकी औरकौच विछेथे
एकओर अमजददूसरी औरवहस्त्रीबैठगयेथोड़ीदेरपीछे उसस्त्रीने अमजदसे सखाकान्त
म्हारामहलयहीहै अमजदचुपकाहोरहा अंतमेंउसने कहाश्रीमान भीतरकोनहींचलतेकि
सकीबाट दावतेहो अमजदने उसस्त्रीके धोखादेनेके लियेकहाइसघरकी कुंजीमेरेसवक

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
१२२
122

पासहै उसीसेनेभोजन मोललेनेकेलिये बाजारमेंभेजाहै अमजदके इसकहनेसे यह अयो
नयाकिवहस्त्रीउकताकेचलीजावे परंतुयहनजानताथाकिवह छायाकेसमान पीछा
नछोड़ेगी थोड़ीदेर पीछेउसस्त्रीनेकहा तुम्हारासेवकवड़ा दुष्ट औरचतुरहै जो अबतक
नहीं आयाजबवह आवेतोउसे भलेप्रकार दराडदेना फिरकहने लगीमुझे शोभानहीं
देताजोमैं परपुरुषके साथ मार्गमें बैठूं यहकहकाइका तालाजोउसमहलमें लगाथा।
तोड़नेलगी अमजदनेकहाताला भत तोड़ कुछकालठहरउसने कहाक्यातुम्हारा यह
घरनहींकाइकातालाफिरबनजायेगा निदान वहसुंदरीतालातोड़ महलमेंगई अमजद
मैं मनमेंकहा इसकोतोस्त्रीजानकोई कुछन कहेगामुझीसे इसके मध्येतकरार होगी
इससे यह उत्तमहैकितुरतयहांसे चलदेयह इच्छाकर उठा इतनेमें स्त्रीने बाहर आकहाहे
प्राणपतितुमक्यों अपने महलमें नहीं चलते अमजदने कहा अभीमेरा सेवकबाजार
सेनहीं आयामैंउसके आगमनकीबाटदेखताहूं वह आवे तोमैंचलूंउसनेकहा भी।
तर बैठकरसेवकके आगमनकीबाट देखनानिदानवह निरुपायहोमहलमेंगया मह
ल अतिसुंदर अनंत स्वच्छऔर विशालदेखासहन बहुत चौड़ा और रमणीय फिर दो।
नों सीढ़ीसेचढ़ बैठनेके स्थानमें गयेउसे अनंत सुंदर २ दालानदरदालान अतिविचित्र व

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

त्नसे अलंकृत पाया और एक स्थान पर अनेक पात्र नाना प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजनों से भरे हु
ये रक्खे थे और दूसरी जगह पर चीनी के पात्रों में अति स्वच्छ स्वादु और गीले फल रक्खे
थे एक ओर मद्य के पात्र और प्याले रक्खे अमजद उस महल अति सुंदर को देख सम
झा कि यह अवश्य किसी धनाढ्य का स्थान है अभी उसके सेवक आय हमें मारेंगे यह
सोच अति चिंता करने लगा वह स्त्री सब सामग्री देख अति प्रसन्न हुई और कहने लगी है
प्यारे नैनों के तारे तुम तो कहते थे अभी कुछ तय्यार नहीं यहां तो सब कुछ वर्तमान है देख तु
म्हारा दास भोजन और फलादि रख कहीं दूसरे कार्य को चला गया होगा तुम्हारे मलीन
मुखसे ज्ञात होता है कि यह सब सामग्री और किसी स्त्री के निमित्त है जिसके लिये तु
म उदासीन बैठे हो हे प्यारे तुम कुछ चिंता मत करो उस सुंदरी को आनंदों में उसे कुछ न
कहूंगो अमजद ने हंस दिया और कहा है आप प्यारी तुम नहीं जानती यह पाक जो वर्त
मान है मेरे भोजन करने के योग्य नहीं मेरा सेवक अति स्वच्छ और नवीन नाना प्रकार
के भोजन लाता होगा इसी हेतु अभी तक मैंने भोजन नहीं किया वह स्त्री उसे बरजोरी
भोजन पर बैठाय खाने लगी और दो तीन ग्रास खा एक पात्र मद्य पी दूसरा अमज़द को दि
या उसने वह भी लाचारी से पिया अमजद ने मन में कहा उत्तम हो कि कोई सेवक उस म

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्दि
१२६

123

नके धनीका न आवे और हम यहांसे खापी अपने २ घरोंको चलेजावें यदि ईश्वर न करे कोई
आगया तो अति अशान्तिता होगी यह तो यही चिंता करताथा परंतु वह स्त्री बड़े हर्षसे भो
जन करती थी जब वह दोनों भोजन कर मद्यपी निश्चिंत भए इतनेमें उस घरका बहादुर नाम
कधनी आपहुंचा वह बादशाहके अश्वशालाका रक्षक था इस भवनके सिवाय उसके वह
का एक और भी घर था इस घरमें कभी अपने मित्रोंको निमंत्रण कर ज्येवनार करता इसी
लिये वह उसदिन अमजदके आनेके दोचार घड़ी पहिले अपने इष्टमित्रोंके हेत भोजन
और फलादि उस जगह रखवा गयाथा पहिले उसने कुफल हटा और द्वार खुला देख आश्च
र्य किया जब भीतर जाय मनुष्योंके बोलने और खानेका शब्द सुना तो अधिक विस्मित हु
वा सो वह एक दीवारकी आडमें खड़ाहो उनका चरित्र देखने लगा कि यह कौन हैं उसने
वहांका देखा कि यह दोनों निश्शंक होय भोजन करते और मदिरा पान करते हैं उसस्त्री
की पीठ द्वारकी ओर थी उसको बहादुरके आनेका हाल मालूम न हुआ परंतु अमज
दका मुख द्वारकी ओर था उसको आते देखा और अतिव्याकुलता से बहादुरकी ओर दे
खने लगा बहादुरने सैन से उसे थोड़े अपने निकट बुलाया कि उसका हाल मालूम करे
अमद लघुशंकाका बहाना कर बहादुरके समीप गया बहादुरने अमजदसे एकान्त में हु

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

फुलनाउकोंइसस्त्रीकोयहां लाये अमजदने कहा भाईतुमसेमैंबहुतलज्जितहूं यदि तुम मेरे आ
गमनकी अवस्थासुनोगे तोविस्वासहैकिमुझे क्षमा करोगे यहकह उसनेसंक्षेपमें अपनी स
र्ण अवस्था औरवहांके आनेका कारणवर्णनकिया बहादुरने कहाहै शाहज़ादे मुझे तु
म्हारीनिर्दोषता विदितहुई अबतुम भयनकरो आनंदपूर्वकउस स्त्रीकेसाथ खाओपीओयह घर औ
रसामग्रीमेरीहै मेरानाम बहादुरमैं बादशाहके अश्वालयकारक्षकहूं इसके विशेष रहने
कामेराहसराघरभीहै इसघरमें कभीकभी अपनेमित्रोंकेसाथ आयपहरछः बड़ी हंसताबोल
ताहूं फिरइसघरकोमूंदके चला जाताहूं अबमैं सेवकोंकेसमानवस्त्र पहिरतुम्हारे समीपआ
ऊंगा तुम निश्शंक मुझपरकोपकरना औरदुर्वचन कहना औरकहनाकिबिलंबकोंहुवा कि
तदेउदेना इसमेंमेरीप्रसन्नताहै औरमैंतुम्हारी सेवा करूंगा तुमरातभरइस सुंदरीकेसाथ आ
नंदसे विहारकरना औरभोरको इसेकुछदेकर बिदाकरनामेरे भाग्यउदयहुयेकि तुमयेसे शा
हज़ादेने यहां आयमेराघरपवित्रकिया इतनादिलासादेकहा अबतुम बेगही जायपूर्ववत उस
केसाथ भोजनकरोयहसुनथोड़ेपरउसस्त्रीकेनिकट जायबैठा औरउनोंकी आज्ञापायबड़ी
हविस खाने पीने लगाबहादुरने अपनास्वरूपबदलकर अमजदकेसंमुखजानेकीइच्छा को
इतनेमेंउसकेमित्रजिनको उसनेनिमंत्रण कियाथा आयेबहादुरनेकहा भाइयो आनंदयाकरो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सटि १२४ 124

इसके बदलेमें हमरेदिनतुमको मैमारूंगा निदान उनको विदाकरसेवकोंकेवस्त्र पहिर अमजदके
सन्मुखगया औरउसके चरणोंपरगिर गिड़गिड़ाय कहनेलगा मेरा अपराधक्षमा कीजिये
शाहजादेने क्रोधमें कोपितहोय कहाहे निर्लज्जबहादुर अयोग्यहै भोरका गया अब
आया बहादुरने विनयकी स्वामी आज मुझसे बड़ा अपराधहुवा मैंन जानताथा कि आपआ
ज सवेरे आवेंगे अमजदने कहा इस अपराधकादंडदेना तुझे अवश्यहै किफिरतूऐसान करे
यहकह उठा औरदोचारलकड़िया धीरेसे उसे लगाई औरलकड़ी फेंक फिरभोजनकरनेलगा
उसस्त्रीको इसदंडदेनेसेबोधनहुवा उठके उसलकड़ीसे बहादुरकोऐसा माराकिवह दोन बा
लबेमें पीड़ासेरोनेलगा अमजदकोयहबातबहुतबुरी लगी उठकर उसकेहाथसे लकड़ी
छीनी और कहाहेप्राणप्रियाकोई ऐसाभी मनुष्यको मारताहै औरउसस्त्रीकाहाथ पकड़
केलेगया औरभोजन परबैठाया बहादुर आंसू पोंछ हाथबांध खड़ाहोगया औरपात्रभर २
उनकोमद्यपिलानेलगा जबउसने देखा किवह भलीभांतिभोजनकरचुके तोपात्रहटा उस
जगहको साफकरसंपूर्ण बस्तुओंको अल्मारीमेंरखदिया इतनेमेंसंध्याभई बहादुरनेहर
एकस्थान परदीपदान प्रज्वलित किये औरशय्याकार अग्निउज्वलकर रकखी अमजदऔ
रवहस्त्री शयनकरने शय्यापरगयेबहादुरछुट्टीपाकर हमरे स्थानमेंजाय सोरहाउसस्त्री

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ने उसके खुर्राटोंका शब्द सुने अमजदसे कहा जो तुम इस खड्गसे जो पाथ्याके पास धरा है लेजा
य उस सेवकका शीश काटोगे तो मैं जानूं कि तुम मुझे प्यार करते हो अमजदको उसका कह
ना बुरा मालूम हुवा और समझा कि मदिरासे उन्मत्त हो ऐसे वचन कहती है यह समझ उ
स स्त्रीसे कहा हे प्यारी सेवकने कोई ऐसा अपराध नहीं किया जिसके बदले बध करूं तुम्हा
रा इतना मारना ही मुझे बुरा मालूम हुआ उस घमाई हुई स्त्रीने कहा मेरी प्रसन्नता इसीमें है
कि यह तू इस सेवकको मारा जावे जो तुम नहीं मारते तो मैं हो उसे मारती हूं यह कहकर उठी औ
र खड्ग नग्न कर बहादुरकी ओर चली अमजदको विश्वास हुआ कि यह दुष्टा अवश्य उस
निर्दोषको जाय मारेगी उसको बचाकर इस अभागीको मारना चाहिये यो खवादे उ
से कहा यदि तुम्हारी प्रसन्नता इसीमें है तो खड्ग मुझे दो तो मैं अपने सेवकको अपने हाथ
से मारूं और तुम मेरे पीछे चुपकी चली आओ ऐसा न हो जो पांवकी आहटसे वह जाग
उठे निदान जब वह दोनों उसी स्थानपर जहां बहादुर सोता था गये अमजदने औसर पा
य उस स्त्रीको ऐसा खड्ग मारा कि मस्तक उसका कटके बीच गिर पड़ा बहादुरने जागकर कादे
खा कि अमजद रुधिर भरा हुवा खड्ग हाथमें लिये खड़ा है और उस स्त्रीका सिर कटकर उस
की छातीपर पड़ा है घबराके पूछा तुमने क्यों इस स्त्रीको मारा अमजदने संपूर्ण अवस्था वर्णे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्वि करकहातुम्हारी स्त्रीकेलिये इसडस्को मैंनेमारा क्योंकि सिवाय इसकेतुम्हारेवचनेका को
१२५ ईउपायनस्तफाबहादुरने कहातथमहै किमुझ निर्दोषको इसवेश्यासेबचाया इससेमैंतुम्हारा
बड़ाऋणमानताहूं इतनाकहफिरबहादुरने कहाइसी अंधारीरात्रिकोइसको लोथउठाल आनी
125 चाहिये यदिसूर्य्यकेउदयहोनेके प्रथममैं इसेफेंक आयातोकुशलहै नहींतो जानताकि
मैंपकड़ागया इसदेतमें पहिलेहीसे यह महल और सम्पूर्णवस्त्र इसकीनेरनामलिखदेना।
है यह कह उसने तुरंतउसकेनामपत्रपरअपना महल लिख अमजदकोदिया और उस
स्त्रीकाशिर औरधड़चादरमेंबांध नदीकी ओरलेचलामार्गोनरमें उसेथानेकीरौंद मिली औ
रउसगठड़ीकोखुलगय उसमेंमरीहुईस्त्रीदेख उसेपकड़थानेदारकेनिकटलेगये था
नेदारनेदासके भेषमेंभीबहादुरकोपहिचानकरविचारा बादशाहकी आज्ञाविनाइसे ब
धकरना उचितनहींरातभरबहादुरको अपनेघरमेंलेजाय रक्खा औरप्रातउठ उसे लोथस
मेतबादशाहकेसन्मुखलेगया बादशाह बहादुरकोउदेवचनदेकहनेलगाहे दुष्टतूमेरा
प्रजाकोमारउनकाधनवस्त्रलूटलेताहै अभी इसे वधस्थानमेंले जाय मारो कोतवालनेचौ
राहेमें स्तूली खड़ीकी औरयहडौंडीपिटगाई किअमुकमनुष्यनेएकस्त्रीको माराहै आजव
ह उसकेबदलेस्तूली दिया जावेगा अमजद बहादुरकेनलौटनेसे अत्यंत चिंतासेव्याकुलथा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अकस्मात् डौंडीकाशब्दसुनउसे विश्वासहुवाकि बहादुर अवश्यपकड़ागया और माराजावे
गा अबयहउचितनहीं किमैं अपनेकोबचाऊं औरमेरा मित्रमाराजावेतबमैंउसघरसे निकलकर
वधस्थानमेंगया औरकोतवालकोजोबहादुरकोजोमारनेकेलिये लायाथाकहायहदीन निष्क
पटनिर्दोषहै उसस्त्रीको मैंनेमाराहै जबइसस्त्रीने बहादुरके मारनेकी इच्छाकी मैंनेउसे वधा
स्त्रीको मारा और संपूर्ण अवस्था अपनी औरउसस्त्रीकी कहसुनाईकोतवाल यहसुन उनदो
नोंको बादशाहके सन्मुखलेगया बादशाहने अमजदसेकहाकि अपने मुखसे सबवृत्तांत
कहो अमजदने अपना आजन्मसे अंतपर्यंत संपूर्ण वृत्तांतवर्णनकिया बादशाहने यहवृ
त्तांतसुन आज्ञादी मैंनेइसदुष्टाके मारनेका अपराधक्षमा किया औरबहादुरको भीकिइ
पटनिर्दोषहै छोड़दिया और अमजदको वजीरकियाकि अपनेपिताकी अनीतिसे औ
रमार्गकी वध्याकोभूले इसकृपाके विशेषहर प्रकारसे उसकासन्मान कियासो अमजद
उस अग्निपूजक बादशाहकी सेवा करनेलगा और अपनेभाई असदकोभी बहुतढूंढता
अनंतर डौंडी पिटगईजो उसके असदनामक भ्राताको ढूंढलावेगा वाउसका समाचार दे
गामें उसेबहुतसा पारितोषिक दूंगा इसके विशेषउसने बहुतसेजासूसप्रगट औरगोपअ
सदकोढूंढनेकेलिये नियतकिये पर्यंतकहींउसका पता न आया बहादुरदीन उसीनेखोनेमेंके

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्दि दया उसहदकीवोसलना ओरकेवानालड़कियांऊसे मारने ओररोटीका टुकड़ा ओरजलउ
१२९ सके सन्मुख रखचली जाती इतनेमें अग्निपूजकोंके भेटकादिन निकटपहुंचा वह जहाज़
जो ज्वालामुखी पहाड़को वर्षमेंएकबेरजायाकरताथा वहरामनामकएक मानसमेतवहां
126 पहुंचा उसहदनेज्वालामुखी पहाड़कीभेटकेहेत बहरामकोउसेसौंपकरकहा इसमुस
ल्मानकोरक्तापूर्वकलेजाना जब जहाजवहांसे चलनेलगा बहरामने असदकोएकसंदू
कमेंबंदकिया ओर असबाब इसयुक्तिसे जहाज़ परखगयाकि असदछिपगया अमजा
दने जहाजछूटनेकेपहिले सुनाकि अग्निपूजकोंकी भेटकेलियेएकजहाज इसनगरमें
आया करताहै ओरकमानउसका एकनएकमुसल्मानको आतशीनूपकेनमेंडालनेके
लिये इसनगरसे लेजाताहै उसने विचाराकिहो इसीकार्यकेहेत असदको एकइसमजहा
ज़परन चढ़ायाहो सो आपही जहाज़परगया ओर आज्ञादीकिखलासी ओरव्योपारी
इसजहाज़से अलगहों ओर अपनेसेवकोंको आज्ञादी तुम इसजहाज़में असदकोढूंढो
उन्होंने ऊपरनीचे जहाज़केबहुतढूंढा कहीं उसेनपाया निदान अमजदने उसेछोड़ दि
याजबवह जहाज़ उसबंदरसे निकलकिसी समुद्रमेंगया तोबहरामने असदकोसंदूक
सेनिकाल पांवमें बेड़ीडालीकि कहीं अपने मरनेका हाल सुनके समुद्रमेंनगिरपड़े कई

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दिन पीछे जहाज़को विपरीत वायु लगी और चारों ओरसे जल उमड़ा उस जहाज़को किसी इ
सी ओर ले गया मार्गान्तरमें कमानको पृथ्वी दृष्टि पड़ी उसने पहिचाना यह मरजीना नाम:
मालकाकी दारुलसल्तनत है वह राम अमेन भए भी न हुवा वचो कि वह अग्निपूजकोंसे वैरर
खतीथी किसी अग्निपूजकको अपने नगरमें न रहने देती और न कोई उनका जहाज़ उस
के राज्यमें जाने पाता जब वह जहाज बंदरमें पहुंचा कमानने जहाजके निवासियोंसे कहा य
दि मरजीना के लोग इस जहाज़पर आय इस मनुष्यको ले जाते देखेंगे तो मरजीना जहाज़को
लूट सबके बधकी आज्ञा देगी इससे यह उत्तम है कि असदकी बेड़ी काट इस सबको केस
रशाव वस्त्र पहिनाये जावें समय पर यह कहा जावे कि यह हमारा दास है और इसके हाथ
मे उत्तम २ वस्त्र और तले जाय रानीको भेट दई है कि वह मुफेडः खनद और असदको भी दि
लासा है कि यह हमारा भेद न खोले उस उपायसे यहां बच कर जब वायु अनुकूल हो।
गी तब जहाज़ खोलेंगे सब लोगोंने यह मत बहुराम का पसंद किया असदके हाथ पाँव
की बेड़ी हथकड़ी कटवाकर दासोंके सदृश सफ़ेद कपड़े पहिनाये और उत्तम २ अंज
न उससे खिलाअगाटमें उसे अपनेमें मिलाके होके इस बंदरसे निकल हम तेरे देश
को पहुंचा देंगे तथा पीछे राजा बनेरे साथ बड़ा उपकार किया जावेगा परन्तु चेतन्य रहे कोई

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
१२७

127

वात उसबुड्ढेके अपकारकी किसीसेन कहना औरजो कहेगातो प्राणसेमारा जावेगा निदान ब
हरामने असदको भली विधिसमझाय बुझाय औरविनतीकर प्रसन्नकिया असदने भी उसदुर्द
शासे छूट दासवत् वस्त्रपहिन लिये और वहरामसे कहनेलगाकिमैं किसीसेयह वृत्तान्त क
हूंगा तुमहर प्रकारसे धैर्यधरको निदान जबउसजहाज़ने मरजीनाके बंदरमें लङ्गरकिया म
रजीनाने अपनेबागमेंसेजो समुद्रसे अतिसमीपथा नवीनजहाज़देखउसके कप्तानको बुलवा
भेजाऔर आपभी उसकाहवाल मालूमकरनेके लिये बंदर परगई बहराम असदको साथ
लेमरजीनाके निकटगया औरदंडवत्करकहा मैंने प्रचंडवायुके चलने औरतूफानके
आनेसे जहाज़की रक्षाकेलिये आपकेबंदरमेंलंगरकिया हमब्योपारीहैं दासोंकेलेन दे
नकाब्योहार करतेहैं हमारेसबदास विकगये केवलयहदासहमने हिसाब किताब लि
खनेकोरखलियाहै यहकह उत्तम२वस्त्रकिश्तियोंमेंलगा भेंटदेनेकोलेगया मरजीना
ने असदकेरूप अनूपकोदेखमोहितहो बहरामसे कहामैंतेरी भेंटन लूंगीयहसेवक मु
झे देजो कुछइसकामोलकहेगामैंदूंगी उपरान्त असदकोलियेहुयेबागमें फिरनेलगी
औरफिरते पूछा तेराक्यानामहै असदने रुदनकरउत्तरदिया हेमलकामेराकौनसानामपूं
छतीहो मेरेदोनामहैं पहिलानाम मेराशाहज़ादा असदहै औरअबमेरानामऊवीनी आ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तथ यसजहाज़केलोगोंनेरक्खाहै अबआप सजकसके भेटदेनेकोलिये जातेथे मरजीना य
हहतोनसुन असदकोउर्दशापर पछतानेलगी ओरबहरामकोबुलवाबहुतसे दुर्वचनदेक
हाहै उसहतशाहज़ादेको भेटकेनिमित लियेजाताहै ओर मुझेछलसेदासबनाया तेरेलिये
यहीउतमहै कि अभी तुजहाज़ खोल यहांसेलेजा नहीतोतेरा जहाज़ लूटजला दूंगीमेरे सा
म्हेने सहरहेहो बहराम वहांसेघबरायाहुवा ओररोताहुवा जहाज़ परआया ओरतूफानकेबंद
नहोनेपरभीलाचारीसे अपने जहाज़कालंगर.उठानेलगा ओरमरजीना मलका असदकाहा
थ पकड़ महल मेंलेगई ओरउसकाहतांत प्रथमसे अंतपर्यंत सुनउसेबहुतधीर्यदिया ओर
कहा कलमें तुम्हेंस्नान कराय स्वच्छबसन पहराय अपना बज़ीरबनाऊंगी यह कह भोजनमं
गवाया ओर असदको अपनेसाथ बेठाय खिलाया असदकई मयके.पात्रपी उन्मतहोगयाज
बखापीनिश्चिंतहुये तब असद बागमें जाय सैरकरनेलगा ओरबहुतकाल पर्यंत वहांपरटह
ला कियाफिर बाग़के ऊं उपरबेठ सुखियोया ओरसहरियाली परलेट रहाएकघड़ी पीछे अ
चेतहोसोगया बहराम कि मरजीनाके भयसेलंगर उठानेमें लगाथा वायु अनुकूल पाकरख
लासियोंसे कहा अबरातहोगई मोसमजलजो जहाज़ यहांनहीं रहा हमतुमचल किसीऊंचेस्थ
यवा ऊंउसेसंभालोवे ओरभोरको बहुत सवेरेमें जहाज़कोयहांसे खोलेंगा खलासी यह सुना

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जल ढूंढने चले मार्ग में उन्हें सुधि हुई कि मलका के बाग में एक मिष्ट जल का कूंआं है वंहीं से जल
लाना चाहिये यह विचार पानी लेउसी कूंए पर गये वहां एक मनुष्य को सोभा से ख पहिचाना कि
यह असद है देखकर बहुत प्रसन्न हुये पहिले जल कूंए से भरने का परले गये और असद को।
धीरे से उठाय नाव पर सवार कराय बड़ी बेग से जहाज़ पर ले गये बहराम ने असद को पाबज़ा ह
धाकिया और दो चूईन उके जहाज खोल आतशीन पहाड़ की ओर चला भोर को मलका असदा
को न पाकर समझी कि वह दिशा गया होगा जब बहु काल बीता और वह न आया तब व्याकुल
हो साखी और दासियों को चंहु ओर ढूंढने के लिये भेजा उन्होंने कितना ही ढूंढा परंतु कहीं उ
सका पता न मिला इतने में रात होगई मरजीना असद के वियोग में महा दुखित हो मशालों के
प्रकाश में शाहज़ादे को ढूंढने लगी बाग का द्वार खुला देख बांदियों के साथ बाग में गई एक
बांदी ने असद को न देखा पहिचाना दूसरी ने कहा कूंए में जल था न जाने पड़ गया है मलका सम
झ गई कि बहराम के सेवक आय शाहज़ादे को ले गये होंगे और कूंए से भी उन्होंने जल लिया
होगा फिर उसने एक मनुष्य को यह हाल जानने के मालूम होने के लिये समुद्र के तीर भेजा कि देख ब
हराम का जहाज़ खुल गया वा नहीं उस मनुष्य को मांझियों से विदित हुआ कि बहराम जहाज़
को यहां से ले गया परंतु प्रहर रात्रि बीते एक नाव जल के निमित्त बाग की ओर भेजी थी मला

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

का मरजीना यह सुन समझी कि वहरामके मनुष्य अवश्य असदको लेगये उसने अपने जमीजहा।
जोंकोकि अनेक समय तय्यार रहतेथे आज्ञादी कि तुरंत दश जहाज लंगरसे खोलें आजकाल।
आप सवार हूंगी यह आज्ञा पातेही कमानदश जहाज लेके लंगरमें गया और संपूर्ण सिपाही अ
थान और खलासी आदि यात्राकी सामिग्री समेत सवार हो मलकाकी वाट देखने लगे सो ब
हमीभोरको आयचढ़ी और आज्ञा दी कि तुरंत जाय वहरामके जहाजको पकड़लो सो वहस
ब वहरामके पीछा करने चले तीसरे दिन उस जहाजको चारों ओरसे घेरलिया वहरामस
मकगया कि असदके लिये मरजीनाके जहाजोंने आफेघेरा अपने प्राण धनादिसे निरास।
हो असद शाहज़ादेको बहुत मारा कि इसी दुष्टके कारण हमने तूफानका दुख देखा इ
सके विशेष हमारा जहाज़ इस मलकाने पकड़लिया इसको जहाज़ परसे बिना उचितन
हीं तब उसने उसकी बेड़ी हथकेड़ी काट उसे समुद्रमें डालदिया शाहजादा पैराकी में
अतिकुशलथा पैरने लगा पैरते २ कूलपर पहुंचा परमेस्वरका धन्यवाद किया क्योंकि प
रमेस्वरनेही ऐसे गहरे जलसे उसके प्राण बचाये और अग्निसजकोंसे उसे छुटाया पृथ्वीपर।
जाय अपने वस्त्र सुखाये तिस पीछे वस्त्र पहिन ईस्वरका भरोसा रखकर एक पथको चला ब
नके फल खाता दशवें दिन एक गांवमें पहुंचा उसे निर्जन पाया फिर उसने उसगांवसे एक

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि
१२९

129

नगर हस्से देखा जब उसके निकट पहुंचा तो पहिचाना कि यह वही मूजकों का नगर है कि
समें उसने बहुकाल पर्यंत दुःख उठाया था यदि वह नगर को देख प्रगट में प्रसन्न हुआ परंतु
यह सोच भयमान हुआ कि ऐसा न हो जो फिर कहीं अग्निमूजकों के हाथों में पड़ूं इसहेतु उ
से समयमें नगरमें प्रवेश किया कि सबहकोनें बंद होगई थी और पुरवासी अपने २ था
में में चले गये थे फिर नगरसे बाहर जाय मुसल्मानों के स्मशान में सोरहा अब वहरामका
हाल सुनिये जब उसने खिसियाना हो कोपसे असदशाहज़ादे को समुद्र में डाला था उस
काल पीछे मरजीना के जहाज उससे मिलगये मरजीना आपही उसके जहाज़पर चढ़ग
ई और वहराम से पूछा वह दास कहां है जिसे मेरे बागसे निकाल के ले गया है वहरा
मने विनयकी हे मलका वह मेरे जहाज़में नहीं यदि वह यहां होतो अपराधी हूं मरजीना
ने पहिने असदको उसमें ढूंढा जब उसमें न पाया क्रोधित होय आज्ञा की कि जहाज़ को
वस्त्र लूटलो और वहराम को उसके सेवक समेत पृथ्वी पर ले जाय कैद करो मैं सबको
वध करूंगी जब वहराम और उसके सेवकों को पकड़के पृथ्वी पर लेगये तो वहराम उ
तरतेही तटपरसे भागा अग्निमूजकों के नगरकी ओर गया और रात्रि को पुरके बाहर पहुं
चा उस समय नगरका द्वार बंद होगया था उसने निरुपाय हो किसी श्मशान में सोनेको इ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

थाकी संयोगवशाउसी श्मशानमेंजहां असद अचेत सोताथागया औरवहां एक मनुष्यको
सोता देखा असद पादशाहजादा मनुष्यकाशब्द सुनजागपड़ा औरआंखफेर देखने लगाकि
कोनहै बहरामने उसेपहिचानकहा आपही हमारी आपदाके कारणहुए यदिइस वर्षमें
भेंटसेबचेतोदूसरे वर्ष कदाचित् नहींबचेसके वह कह असदको फिरबांधा औरप्रातः
काल उसीवृक्षके घरजाय सम्पूर्णवृत्तांत अपना और असदका वर्णनकियाउसकुटिलने
असदके पांवमें बेड़ीडाल उसीनेरखानेमें भिजवाय अपनीपुत्रियोंसेउसी प्रकार दुखदेनेके
आज्ञादीजब उसने बोस्तनाको अपनेपिताआगे देखातो असदमारे भयके रोने औरकांपने
लगा औरमनमें कहा एक वर्षपर्यंत यहीकष्टभोगना इससेमरना उत्तमहै परंतु परमेश्वर
की मायासे उसकेरोनेनेबोस्तना केमनकोऐसा पिघलायाकि वहभी उसके साथ रोनेलगी
औरकहा अब तुममेरी औरसे भरोसा रक्खो मैंतुमको कदापिदुःखनदूंगीमैं मुसल्मानहु
ईहूं मैंने अग्निपूजन औरपापोंको छोड़दिया औरपरमेश्वरसे यह मांगतीहूंकितुम्हारे छु
टनेका कोईउपायनिकलआवे निदान बोस्तनाकी बातोंसे उसे परिपूर्णआशाथीकिअवा परंतु केवा
नाकी औरसेउसे डरथासोउसने बोस्तनासेकहा परमेश्वरने तुम्हें मेरे ऊपरदया उपजाई प
रंतुकेवानासुके अवश्य मारेगी बोस्तनाने उत्तरदियातुमभयमानमतहोमैंही एकसमय

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि
१३१
130

आयाकरहूंगी उसदिनसे बोस्तना उसे दिव्य भोजन खिलाने लगी और प्रतिकाल उसे थोड़ा दि
या करती एकदिनबोस्तना अपने भवनके द्वारपर खड़ीथी कि उसने ढंढोरे का शब्द सुना
कि एक मनुष्य कहताहै वजीर अमजद आपही अपने भाईको ढूंढनेकेलिये यह प्रतिज्ञा क
रता हुआ निकलाहै किजो कोई असदको मेरे समीप लावेगा मैं उसको इतना कुछ दूंगा जिससे
कई पीढ़ीतक धनवान रहेगा और जो कोई उसे छुपाके अपने घरमें रक्खेगा वह कुटुंब समे
त प्राणसे मारा जावेगा और उसका घर खोद उसपर हल चलाया जावेगा बोस्तना यह ढंढोरे
सुन असदके समीप दौड़ी आई और उससे यह वृत्तान्त कह बेड़ी काट अपने साथ ले आई औ
र गलीमें पुकारके कहाकि असद यह है अमजद यह है अमजद उसका नाम सुन ने
ही उसीघरके द्वारपर गया और असदको पहिचान कंठसे लगाय घोड़े पर सवार कर बा
दशाहके निकट ले गया बोस्तनाभी अमजदके साथ चलीगई असदने अपनी सम्पूर्ण अ
वस्था कह सुनाई और अमजदने उसीसमय उस बुड्ढेका घर खुदवा दिया बादशाहने बह
राम आदि उसके नातेदारों को बुलवा सबके वधकरनेकी आज्ञादी उन्होंने बादशाहके
चरणोंपर गिर क्षमा मांगी बादशाहने कहा तुम्हारा अपराध कदाचित् क्षमा न होगा ज
बतक तुम इस अधर्मको तज मुसल्मानीधर्म अङ्गीकार न करोगे उनसबने स्वीकार किया।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

फिरमैंअमजदने बहराम आदिकको असंख्यधनदिया बहरामने अमजदकी उदारताकोदेख
विनयकी किमैंगतवर्षमें अवोनीद्वीपको गयाथा मैंनेतुम्हारेपिताकमरुजमांको तुम्हारेवि
योगमें अत्यंतव्याकुलपाया आश्चर्यनहींजो वहतुम्हारे शोकमेंतन त्यागदेउचितहै कितुमदो
नोंभाई अवोनीमेंजाय अपनेपिताको देखोमैं तुमको शीघ्रही आनंदपूर्वक पहुंचाऊंगाब
ह दोनों इसबातसे राजीहुये और वहांके बादशाहसे विदामांगी उसनेहर्षपूर्वक स्वीकारकि
या जबजहाजसामग्रीसमेततय्यारहुवा वह दोनों शाहजादे बादशाहसे विदाहोने कोग
ये बादशाहने उनदोनोंको अपने कंठसे लगाया औरबहुतसाद्रव्य रत्नादिदिव्यवस्तुदेउ
नकोसमुद्रतक पहुंचानेके लिये जानेलगा अकस्मात हरकारेने आयकहाकि अमुक दि
शासे एकसेना सवार और पैदलोंकी चली आतीहै बादशाहने विस्मितहो कहा ऐसा कौन
मेरा बैरीहैजो अकस्मातमेरे नगर परचढ़आया अमजदने बादशाहकोचिंतितदेख विन
तीकी आपकाहुक्मपोचनकोजियमें जाय उनकाहननतमाम करताहूं निदान अमजद च
तुरंगिणी सेनालेउसकटककी ओरचला औरहरकारोंकोभेज ज्ञातकियाकि किसीदे
शको मलकासेनाले इसनगरकी ओर आईहै अमजदनेजाय उससेभेंटकी औरपूछाकि
तुममित्रताकेमार्गसे आईहोवायुद्धकी इच्छाहैयदिहमसे वैरहैतोहमसे बैरकाकार्य

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि ।३। रणा है उसने कहा मैं संग्राम की इच्छा से नहीं आई मैं अपने असद नामक दास को ढूंढने आ
ई हूं वह राम रामक कमान इस पुर का निवासी मेरे नगर से उसे चुरा लाया है मैं तुम्हारे बादशा
ह से नीति चाहती हूं यदि असद तुम्हारे नगर में हो तो मुझे दो और मेरा नाम मरजीना है
131 असद्दकि सर्व वृत्तान्त सुन चुका था कहने लगा मैं तुम्हारे दास का भाई हूं मेरा नाम अम
जद है एक वर्ष पर्यन्त वह इस नगर में रहा तुम मेरे साथ चलो हमारे बादशाह से मे
टकरो वह तुम्हारी भेंट से अति प्रसन्न होंगे और असद को तुम्हें दे देवेंगे मरजीना मल
का सेना को बाहर छोड़ केवल थोड़ी सखियों समेत अमजद के साथ बादशाह की भेंट
को गई बादशाह ने बड़े आदर से उससे भेंट की और असद शाहज़ादा भी उससे आय मिला मर
जीना मलका उसे देख अत्यन्त प्रसन्न हुई और बादशाह से असद के हवाले जाने का हा
ल वर्णन कर रही थी कि इतने में दूसरे हरकारे ने आय कहा कि दूसरी ओर से एक औ
रकटक इस पुर की ओर चला आता है बादशाह डरसे उस चीनी सेना को देख घबराया
और अमजद से पूछा यह कौन वैरी चढ़ आया है जाके देखो अमजद अपनी सेना नग
र के बाहर खड़ी कर आप परसेना में घुस गया समीप पहुंचा किसी प्रधान से पूछा कि तु
म्हारे यहां आने का क्या कारण है मुझे अपने बादशाह के सन्मुख ले चलो अमजद उ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सप्रधानके साथ होके बादशाहके निकट गया और दंडवत करके कहा हमारे बादशाहसे
तुम्हारा का प्रयोजन नहीं है कि खबर दिये बिना इतनी सेना लेके पुरमें घुस आनेकी इच्छा रख
ते हो बादशाहने उत्तर दिया मेरा नाम गोर है और मैं चीनका बादशाह हूं अपनी बदोरा नाम
की बेटीका समाचार मालूम करनेके लिये यहां आया कई वर्ष बीते मैंने चीलइन द्वीपके शा
हज़ादे कमरुज्जमांसे उसका विवाह करदिया था वह शाहज़ादा केवल एक वर्षकी बिदा
ई मांग अपनी स्त्री समेत पिताके दर्शनको गया कई वर्षसे मुझे उसका समाचार ज्ञात नहीं
उन्होंको ढूंढ़ना अथवा यहांयऊचामुके इसबातके सिवाय कुछ संग्रामकी इच्छा नहीं अ
मजद जब यह समझा कि यह बादशाह उसका नाना है उसके चरण छूमे और कहा
आप धीरज रक्खें मैंही आपका नवासा कमरुज्जमांका बेटा हूं वह इस समय अबोनी टाप
का बादशाह है और माता मेरी बदोरा नामक चीनकी शाहज़ादी है जिसको ढूंढ़ने आ
प यहांतक आये दोनों कुशल पूर्वक आनंदसे हैं चीनके बादशाहने असदको अपने के
ठसे लगा बहुत प्यार किया और अमजद और असदके यात्रा और उनकी आपदा का हा
ल सुन बहुत पछताया और अमजदको धीरज दिया कि वहां चल तुम्हारे पितासे तुम दो
नों भाइयोंका मेल करा दूंगा निदान अमजदने अपने नानासे विदा हो अपने स्वामीके निक

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्वि
१३२
132

ठजायचीनके बादशाहके आनेका हाल कहा वहइससमाचार को सुनकेविस्मितहुवाकि
इतनाबड़ा बादशाह अपनेदेशकोतज अपनीबेटीके ढूंढनेकोनिकलमेरे राज्यपर्यंत
पहुंचासो अपनेसेवकों कोउसके अतिथ्यकी आज्ञादी औरइच्छाकीकि आपही उसके
भेंटकोजावेइस समयांतरमेंयह सुनाकि तीसरीदिशासेएकभारीसेनाचली आतीहै
बादशाहने चिंतामेंहोकर अमजदको आज्ञादीतुम जायउसकाहाल भीमालूमकरो
अमजद अपने असदभ्राता कोलेविदाभयाजबवह दोनोंभ्रातासेनाकेसमीप पहुंचे।
तोमालूमहुवाकि कमरुज्जमां अबौनीकाबादशाह अपनेबेटोंको ढूंढनेकेलिये नि
कलाहै क्योंकिजबवह अपने बेटोंकोजिन्हें अपनीस्त्रियोंकीकुटिलतासेकोपमें।
वधकी आज्ञादीथी औरउसे यहभीविश्वासथाकि वहदोनों प्राणसे मारेगयेशोकसमु
द्रमें मग्नहोयमृत्युकेनिकट पहुंचायह दशादेखजिंदरने उसे धीरजदे जीतिछोड़नेका
हालवर्णनकिया यहसुनकमरुज्जमांने परमेश्वरका धन्यबादकियाऔररत्नोंरुपये
औरजोड़े याचकमंगन आदिकोदानदेकर अपनेबेटोंके ढूंढनेकेलियेनिकलादेवयो
गसेफिरताहुवा इसनगरमेंभी आया निदान उसने अपनेबेटोंको देखपहिचाना और।
कंठसेलगाबहुकाल पर्यंतहर्षसे रुदनकरतारहा तिसपीछे अमजदने कमरुज्जा।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मांसेकहा आजहीचीनका बादशाहभी ढूंढताहुआआपहुंचा उसनेहर्षितहो उनदोनों शा
हज़ादोंकेसाथहोचीनके बादशाहसे भेंटकरनेकीइच्छाकीथीकि इतनेमें कास्तुना चो
थी ओरसेमहा कटकचला आताहै कमरुजमांने अपने बेटोंसेकहा प्रथमइस सेनाको
देखना चाहियेकि किसकीहै ओर किसबादशाहने इस ओरकी इच्छाकीहै फिरवहदू
नोंउसकटकको देखने गए अमजदने आगेबढ़के पूछा यहकिस बादशाहकीसेनाहै
ओर इस अग्निसजकदेशमेंकों आयावज़ीरने जोसबके पहिलेथा उत्तरदिया कियह
चीलदनका बादशाहजो बहुकालसे अपनेदेशसे अपनेबेटे कमरुजमांके ढूंढनेकेलि
येनिकलाहै यहांआयायदितुमकुछ उसकाहालजानतेहोतोहमें बताओ अमजदने ब
ज़ोरसे कहाकिमें अभी आय तुम्हारे प्रश्नका यथार्थ उत्तरदेताहूं तुमयहीं ठहरना
ओ यहकहउसने जाय कमरुजमांकोसमाचारकहा कमरुजमां अपनेपिताके आ
नेकाहाल सुनमूर्छितहुआजबकुछ सचेतभयातो अपने पिताकेचरणों परजायगि
रयहांदोनों बापबेटे परस्परकंठसेलग २ बहुकाल पर्यंत रोया किये फिरशाहज़मांनेक
हाहै बेटेतुम मेरेबतानेबिनामुझेकों अकेलाछोड़चलेगये इस अवधिमेंतुमने मुझे
कुशलका समाचारभीनभेजा कि जिससेमुझे धीरजहोता कमरुजमां अतिलज्जितहुआओ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सह्रि
१३२
132

रपितासेबहुतसी विनतीकी और अपने असद और अमजदवेदोंको उनके पितासेमिलगया
शाहज़मांने अपनेदोनों पोतोंको अपने कंठसेलगा बहुतप्यार कियानिदान वहतीनों बाद
शाह और मरजीना मलकातीन दिन वहांठहरे अग्निपूजकोंके बादशाहने चारोंकोबड़ी
धूमधामसेप्योता तदनंतरबहुतएक सौगात देविदा किया और अमजदके साथ बोलना।
को जिसने असदकी बड़ी सेवाकीथी ब्याहदिया और असदके साथ मलका मरजीनाजो
इसपरमोहितथी और अपनेदेशको नजकेवल उसीकेनिमित आईथी बड़ीधूमधामसे
ब्याहकियासो वहतीनों बादशाह औरमरजीना मलका अपनेपति असद समेत अपने२
देशकोसिधारे अग्निपूजकों काबादशाह अतिवृद्ध और शिथिलहोगयाथा और अम
जदसे बहुतप्रीति करताथा उसे अपनाराज्य सौंप आपईश्वरका आराधन करनेलगा
औरवहांके निवासी अग्निका पूजनछोड़ ईश्वरकी वंदनाकरने लगे मलका शाहरज़ाद
जबभोरहोनेयह संदर कथा कहचुकी उसकी छोटी बहिनदुनियाज़ादने कहाबहि
न्हारेसंदर मुखसे ऐसी२ अद्भुत कथाके सुननेसे अति आनंदहोताहै मलकाने उत्तर
नतुमने का अच्छा चरित्रकहा आशाहै कि अबकोई इससा वृत्तांत कहोगी क्योंकि त
दियायदिकल बादशाह मुझे प्राणदान देंगे तोमैंकल रात्रिके अंतमें नूरुद्दीन और।

पारसकीबांदी की अत्यन्तसुंदर कथाकहूंगी बादशाह शाहरयारने उसकथाकीलालसासे उ
सदिनभी अपनीस्त्रीकोनमारा औरसर्ववत् अपनीशय्यासे उठस्नानादिक कर्मकर अपनीस
भामें बैठा बांसरा नगरकेबादशाहकेवज़ीरखाकानकेपुत्र नूरुद्दीन औरपारसकीबांदीकी
कथा ॥ इससीरात्रिकोशहरज़ादने उसवृत्तांतको इसभांति कहनेलगी किपूर्वकालमें बा
सराकानगर अब्बासीबादशाहोंके आधीनथाऔरवहांके हाकिमज़ेबनी औरखलीफ़ा
हारूंरशीददोनों एकहीभाई कीसंतानथे औरवह दोनोंचचेरेभाईथे ज़ेबनीके दोवज़ीर
थे प्रथमकानाम खाकान द्वितीयकासूयखा कानवहांकी प्रजाखाकानके उदारताके
कारणबहुतप्यार औरसंतान करतीऔर उसकी प्रशंसा सर्वदा करती दूसरा वज़ीर जि
सकानामसूयथा अति अशील औरसूमथा इसहेतु कोईनगरवासीउससे प्रसन्ननरहता
और वज़ीरदोयमवज़ीर अव्वलसे अतिईर्षारखता औरसदा उसकी बुराई बादशाहसेक
रताएकदिन बादशाहने खाकान वज़ीरसे कहा मेरे वास्ते अतिसुंदर चतुर औरगानेब
जानेवाली बांदी मोललो सूयने कहाऐसी गुणयुक्त दासी दस हजार अशर्फ़ी सेकम
न आवेगी बादशाहने क्रोधकर उससेउत्तर दिया तेरेबिचारमें दसहज़ार अशरफ़ी ब
हुतहैं मैं उसे कुछनहींसमझता इसीसमय दसहज़ार अशरफ़ीखाकानको लौंडी मो।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

134

ले लेनेके लियेदीवानने घरपर आके दल्लालों को बुलवाभेजा और कहा कि एक रू
पवती गाने बजाने वाली लौंडी ढूंढो उस समयसे दल्लाल लौंडी ढूंढने लगे कई दिनके पी
छे एक दल्लालने वज़ीरसे कहा कल एक पारसका ब्योपारी एक बांदी आपके इच्छानु
सार लाया है वजीरने उस समय जो बादशाहके सन्मुख जाना था दल्लालसे कहा तू उ
स लौंडीको ब्योपारी समेत ले आना शाहीदर्बारसे लौटके मैं उसे देखूंगा दल्लाल लौंडी
को वज़ीरके द्वारपर लाया वजीर दर्बारसे आय लौंडीको सर्वगुण सम्पन्न देख हर्षित हु
वा कि यह बादशाहकी आज्ञासे अधिक गुण देखे सो उसके धनीसे उसका मोल पूछा उस
ने विनय की स्वामी इसका बज़न मोल है परन्तु मैं इसे आपके हाथ दस हज़ार अशरफ़ी
से कम न बेचूंगा मैंने बज़न ऊपर इसके सिखाने में व्यय किया है बाल्यावस्थासे इसे गा
ना बजाना सिखाया यह बांदी अनेक बाजेको भलीभांति बजाती और गाती लिखने और
कविताओं में बड़ी निपुण है और सम्पूर्ण पुस्तकें इतिहासादिकी भी इसने पढ़ी हैं मेरे विचा
र में यह इन गुणोंमें अद्वितीय है परीक्षा करनेसे यह सब गुण आपको प्रगट हो जावेंगे
वज़ीरने इन सबके परीक्षाके विना ही उसके रूपछबि अनूप को देखने ही दस हज़ार अ
शरफ़ी उसे गिनवादी विदा होते ब्योपारीने विनय की स्वामी यह बांदी बज़न हरसे यात्रा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

के कहभोग यहांपहुंची आपइसको एक समाहनक बादशाहके निकटनले जाइये इसे इ
स समयमेंदो वेर उष्णजलसे स्नान कराना उस समय उसकास्वरूप चौखणा होजावेगा कि
तुमभी उसे पहिचान सकोगे अभी उसकामुख किंचित श्यामहोरहाहै खोकाने कहा तुम
कहतीहै मैं इसेएक समाहके पीछे बादशाहके निकटले जाऊंगा यह कह उसने बां
दीको अपनेभवनमें लेजाय अपनी स्त्रीको सौंपदिया और कहा इसे खासे राजनीमने इ
सेबादशाहकी आज्ञासे मोललियाहै दो तीनबेर उष्ण जलसे स्नान कराइयो और मैंवस्त्र
आभूषण पहिरा यहांकी रीतिके अनुसार उसे बादशाहको दूंगा उसकानाम फ़त्तम
फ़रोज़था उसेभीकहा मैंने तुझे बादशाहके हेतुमोल लियाहै जबपांच सातदिना
मैं तू सबल हो जावेगी और बराबर स्नान करेगी तो तुझे बादशाहके सन्मुखले जा
ऊंगा तू यह बड़ी रखासेरहियो किसी पुरुषके सान्हने नजाइयो बादशाह तुझे देखने
ही तेरा बड़ा सन्मान करेगा मेरा एक तरुण बेटा अपनी माताके पास दिनमें बहुधा आ
ताहै उससे बचियो बांदीने बजीरसे विनयकी भलाहुआ कि आपने मुझे पहिले सब त
लादिया अब आपभरोसा रखिये मैं आपहीकी आज्ञाके अनुकूल बर्तूंगी यह कह व
ज़ीरतो चलागया कज़ीरका बेटा नूरुद्दीन अलंसखेदर और शोलवान विशेषहास र

मे सनिपुणथा मध्याह्नके समयभोजनके लिये अपनी माताके निकटआया वह इसनरूपणी
चम्पकवरणी मृगनैनी गजगामिनी चंद्रमुखी नमहारिणीके रूप अनूपको देखनेही उसपर।
मोहित हुआ यद्यपि यहभी उसेज्ञात हुवा कियह बांदी बादशाहके लिये मोल लीगईहै त
थापि उसे यह इच्छा हुई कियहसुंदरी मेरे निकटरहे विशेष इसकेबांदीभी नरूदीन को
देख उसपरमोहित हुई और परमेश्वरसे यह अभिलाषा करनेलगी किकोई ऐसाउपाय बनप
ड़े किमैं इसीनोकिशोरकेपास रहूं और बादशाहके निकटनजाऊं उसदिनसे नरुद्दीन आ
यः उसघरमें आता और माताकी दृष्टिबचायउसनेयोवनासेकटाक्षकेखेलनावह दो
नोपरस्पर देख प्रसन्न होते जबउसकी माताको यह ज्ञात हुवा कि नरुद्दीन बड़ा यहांआ
कर लौंडी कोहरताहै और वहभी दृष्टि बचाउससेसुंदरकटाक्ष करतीहै तोएकदिन उ
सने नरुद्दीनसे कहा और समझाया हेपुत्र अब तबपरमेश्वरके अनुग्रह से तरुण हुये त
म्हें उचित नहीं कि घरमें आके स्त्रियोंके निकटबैठो शीघ्र भोजनकर चलेजायाकरो ति
थान दोचारदिन पीछे वजीरकी स्त्रीने अपने हमामकेजलके गरमकरनेकी आज्ञादी
और बांदियोंके साथ लौंडीकोस्नान निमित्तभेजदिया औरउनसे कहा इसेभले प्रकारम
लदलनहलायवस्त्रपहिनाय मेरेसमीपले आओ इसे अपनेमध्यमेंलेजानाहुक्म अफेरो।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जैने स्नानकर अतिस्वच्छ और ललित पीतवस्त्र पहिर महलमें आय वजीरकी स्त्रीको दंड
वत् की उसने उसके रूपके अधिक होजानेसे उसे न पहिचाना और अचंभा कियाकि य
हकौनसी स्त्री है लौंडीने वजीरकी स्त्रीसे विनयकी मैं इन्हीं वस्त्रोंमें जो आपने दिये हैं कैसी
दिखाई देती हूं बांदियोंने नहला धुला और जोड़ा पहिनाके मुझे कठिनतासे पहिचा
ना और कहा आगेसे तुम कहीं अच्छी हो गई हो हम तुम्हें पहिचान न सकी इनसबने
खुशामदसे तो ऐसा नहीं कहा वजीरकी स्त्रीने कहा न तो मेरी बांदियों ने यह वचन खु
ऐसे कहे और न तकसे हंसीकी उन्होंने यथार्थ कहा मैंने भी बड़ी कठिनतासे तुम्हें प
हिचाना मानो सहस्त्रगुण रूपत् स्नानालयसे ले आई है यदि जल अभीतक उसमें हो तो
मैंभी जाय उसमें स्नान करूं मैंने बहुत दिनोंसे उसजलमें स्नान नहीं किया लौंडीने कहा
है सुंदरी जल अभीतक उसमें है यह सुन उसने दो लड़कियां लौंडीके मकान परबैठाय
उन्हें आज्ञादी जबतक मैं न आऊं तबतक तुम इसमकानके द्वारपर रहना यदि नूरुद्दीन
आवे और मेरे पीछे महलमें जाकर लौंडीके निकट जानेकी इच्छा करे तो तुम उसे जाने न
देना यह कह वह दोनों बांदियों समेत स्नानागारकी ओर गई संयोगवश नूरुद्दीन अपनीमा
नाके घरमें आया और महलकी खाली देख सीधा लौंडीके मकानमें जाने लगा लड़कियों

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सवि ने उसबक्तनवजीउसनेन माता ओरउनदोनोंको उगायउसमकानके बाहरछोड़ आयाओ
१२८ रहुस्नअफरोजकेसमीप जाय भीतरसेकिवाड़ मूंदलिये ओरहुस्न अफरोजकोदेखनेही
136 उसकामनलोटपोटहोगयावह दोनोंने जोऐसे अवसरकी इच्छाकरतेथे अति प्रसन्नहोय
सुखभोग कियावह दोनोंलज्जकियेपतीहुई स्नानागारमें गई ओरवजीरकी स्त्रीसेयह स
ब समाचारजायकहाउस वजीरकोस्त्रीने यहसुन स्नाननकिया ओरतुरंत अपने महल
को चलीअभीवह स्त्रीमहलमेंन पहुंचीथी किनूरुद्दीनवहांसे निकल चलागयाहुस्नअफ
रोजवजीरकी स्त्रीको याकुल ओररोते देख अपने विस्मित हुई ओरबढ़केपूछाहे सुंदरी
कुशलतोहै तुमस्नानकिये विनारुदन करती महल मेंक्यों आईउसने उत्तरदियाहे मुझसे
ही इसका हालपूछतीहै क्यातूनहीं जानतीकिनूरुद्दीन मेरेपीछे अकेला तेरेपास आ
याथा हुस्न अफरोजनेकहाहै माता इसमेंतो कोईभी तुम्हारे ओर उसकेवास्ते डरकी
बातनहुईयदिवह अकेलामेरे निकट आयातोक्याहुवाउसस्त्रीनेकहामेरेपतिनेतुझे स
वेसनबनायाथा कितुझेबादशाहके निमित्तमोललियाहै ओरकहाथाकिनूरुद्दीन
सेवचियोहुस्नअफरोजने कहामुझे उनकी आज्ञास्मरणहै परंतु उस बेरनूरुद्दीननेमु
झसेकहाकिमेरेपितानेतुझे मुझेदेडाला अब वहतुझेबादशाहकेसन्मुख नहींले

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जावेगा भत्तों में कोंकर तुम्हारे पुत्र से बचती इसके विशेष जबसे मैंने उसे देखा मेरा मन सहस्र
प्रकार से उसपर लोभायमान हो रहा है मैं बादशाह के समीप जाने की लालसा नहीं करती हूं
कि जन्म भर नूरुद्दीन अपने प्राण प्यारे का वियोग देखे वजीर की स्त्रीने कहा ईश्वर तेरा बचन
सफल करे और इस बात में मेरी भी प्रसन्नता है परंतु नूरुद्दीन को ऊटिलता में संदेह नहीं मुझे
यह भय है जिस समय वज़ीर इस बात को सुनेगा तुरन्त उसे बध करेगा इस हेतु मैं रोती हूं इ
तना कह वह फिर रोने लगी इतने में वज़ीर आया और अपनी स्त्री को रोता देख कारण
पूछा उसने निरुपाय हो कहा मैं अभागी स्नान करने गई थी मेरे पीछे नूरुद्दीन ने एकान्त में
आय ऊस्त्र अफरोज़ से भोग किया क्या तुमने ऊस्त अफरोज को उसे दे डाला या नहीं इसी हे
तु मैं रोती हूं कि इसका अंत क्या होगा वज़ीर यह सुन नाशिर और छाती पीटने लगा कि इस अ
भागे डुष्टने यह क्या अनर्थ किया बादशाह की धरोवस्तु को छूवा और मेरा निरादर करा
या बादशाह यह समाचार सुन मुझे और उसे प्राण से मार डालेगा उसकी स्त्रीने कहा स्वामि
इतनी शोक करने को होमेरा आभूषण बेच दस हज़ार अशरफी को एक बांदी मोल लो अ
बजो होना था सो हुवा वज़ीर ने कहा तुम समझती हो कि मैं हानि को फीकता हूं मैं अपनी अ
तिष्ठा को डरता और मरता हूं सत्य वज़ीर जो मेरा बैरी है यह समाचार सुन बादशाह से क

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
१३०
137

होगा कि सुंदर इस्तअफरोंने बादशाहके निमित मोललेअपनेबेटेकोदेडाली उसकी स्त्री
नेकहा मुझेसत्यके वेरकासमाचारभले प्रकार विदितहै परंतुकिसीके घरकाहाल कि
सीकोक्या मालूमयदि बादशाहबांदीके मोललेनेका हालभीसुनेतोकहना कि यहलौं
डी आपकेलिये मोललीथी परंतुपरीक्षासे सीलूमहुवा किवह हजूरके योग्यनहीं य
ह सुनबादशाहतुम्हारी बातका विश्वासकरेगा इसउपायसे हमारे वजीरकाकोई उपा
यनचलेगा उन्होंदल्लालोंको बुलवाय कहा कि हमरी बांदी ढूंढे निदान उस समयसे
चीके समझानेसेवजीरको धीर्यहुवाओरकोपउसका नूरुद्दीनकी ओरसेकमहोगया
उसदिनसेनूरुद्दीन अपनेपितासे छुपके महलमें आता ओररात्रिको धमसे रहता
ओर अपने पिताके जगनेके पहिले आहरचलाजातापरंतु उसकी माता को उसकी
ओरसे चिंता रहती येसानहोजोपिता उसकाउसे एकांतमें पायमारडाले इसहेतु उस
ने अपने पतिसे इसविषयमें बात चीतकी वजीरने कहामेंजबउसे पाऊंगा अवश्यमार
डालूंगा उसनेकहा स्वामीयकही तुम्हारा बेटाहै उसने अबतक तुम्हारे प्रतिकूलको
ईकार्यनहीं किया यहकर्मभी नरुणावस्थामेंवनपड़ाहै क्षमाकरोजोतुम्हें दंडदिये विना
धीर्यनहींतोभोरको कि वह मलहसेभयभीतहोकरनिकलजाया करताहै तुम उससम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

य पकड़के मारडालनेकी इच्छाकरतोमैं छुड़ालूंगी उसे दंडमिल जावेगा औरतुम्हारेभी म
नसे क्रोधजातारहेगा फ़ख़ अफ़रोज़को अबउसेदेडालो वज़ीरने इसबातको स्वीकारकि।
या भोरको जबनूरुद्दीनके निकलनेकासमयहुवाएक घड़ी पहिले वज़ीरकिवाड़को
आड़मेखड़ाहोरहा जबनूरुद्दीन निकलातोवज़ीरने पकड़पछाड़ा औरखड्गनिकाल
~~तोवज़ीरने पकड़पछाड़ा औरअब~~ वधकरनेलगा इतनेमें उसकीस्त्रीयह शब्दसुन दौड़ी
आई औरवज़ीरकाहाथपकड़लिया औरकहा ईश्वरकेलिये नूरुद्दीनको छोड़ वज़ीरने
कहा नहीं मैंइस कुकर्मीदुष्टको अवश्य मारूंगा तबउसकीमाताने कहा पहिले तुम।
मुझे मारो फिरइसे मारना तुम्हेंपिताहोके उचित नहीं कि अपने हाथसे अपने बे
टेको मारो नूरुद्दीननेभी औसरपाबहुतभी विनतीकर गिड़गिड़ाय कहातुम्हें पर
मेश्वरकी शपथहै जिसने तुम्हें उत्पन्नकिया औरप्रलयके दिनतुम उसके सन्मुख
अपराधोंकेक्षमाकेलिये खड़े होगे मुझे प्राणदानदो और मेरे अपराधकोक्षमाकरो
वज़ीरनेदयाकरखड्गहाथसे फेंकनूरुद्दीनको छोड़दिया नूरुद्दीन पृथ्वीसे उठ अपनाम
सूरां अपराधक्षमा करानेकेलिये पिताके चरणोंपर गिरा वज़ीरने अपने हाथसे उसका
शिर उठाय कहातू अपनी माताकेचरणोंपर जायगिर मैंनेतुझे उसीके कहनेसे क्षमा।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि १३८

138

किया और राजा मैंने हसन अफरोज़ को भी देखा ला परंतु उसे ब्याहता स्त्री की भांति रख कर इसके
बचने की इच्छा न कीजिये नूरुद्दीन इस बात से अति प्रसन्न हुवा और हाथ जोड़ प्रतिज्ञा की
कि मैं इसे कदाचित भिन्न न करूंगा तदनंतर अनंत प्रीति से वह दोनों रहने लगे वज़ीर भी
उनकी परस्पर लगन देख बहुत प्रसन्न था एक वर्ष के पीछे वज़ीर ने उष्ण नीर से स्नान
किया उस समय उसे ऐसी आवश्यकता पड़ी कि ठहरने और जल सुखाने बिना शीघ्र बा
हर निकल आया शीतल वायु के लगने से ज्वर और शिर पीड़ा ऐसी हुई कि कई दिन में
अंत रोगी हुआ अंत समय उसने अपने पुत्र नूरुद्दीन से कि प्रेम के समय उसकी औषधि
आदि के लिये उद्यत रहता था कहा मैंने तेरे हसन अफरोज़ के लिये पहले भी कहा था औ
र अब फिर अंतोपदेश करता हूं कि उससे बड़ी प्रीति से रखना और कदाचित उसके बेचने
की इच्छा न करना यह कह वज़ीर ने इस असार संसार को छोड़ दिया प्रजा उसके मृत्यु का
समाचार सुन रोने पीटने लगी नूरुद्दीन ने बड़े धूमधाम से अरथी निकाल अपने हाथों उसे
गाड़ा और उसको पिता के मरने से बड़ा शोक हुवा चालीस दिन तक रोता पीटता रहा कि
सी को उसी शोक में अपने घर में आने की आज्ञा न दी तिस पीछे एक उसके परम मित्र ने उ
ससे भेंट की और वह बहुत था उसको धीरज देने लगा यहां तक कि नूरुद्दीन उसकी संगत

से पिताके मरनेका शोक भूलगया इसकेउपरांत अपने पुराने मित्रोंकोभी बुलवाय उनका
सत्कार करनेलगा कुछदिनोंमें हरएकको अपनी उदारतासे धनाढ्यकर दिया और अप
नेपिताका संपूर्णद्रव्य लम्पटता औरमित्रोंको खिला पिला व्ययकरडाला किंतु जब अफ़रो
ज़का आभूषणभी बेंचके खर्चकरडाला एकदिनजब अफरोजने उसे समझायाहै प्राण
प्यारेजो कुछद्रव्य तुम्हारा पिताछोडगयाथासो सबतुमने अपस्वार्थी मित्रोंको देडाला अ
बभी समझोऔर खयाल पकड़ोजिस्सेतुम अपने पिताकी पदवीकोपहुंचो बहरुदीननेहंस
के उत्तरदिया मेरेपिताने जोकुछइकट्ठाकियाथाउसे वह अपने साथलेगया औरक्यामैंले
जाऊंगासोक्योंन अपनेमनोरथंकोपूराकरूं दोचारदिन पीछे उसका प्रधानआया औरउस
ने आयव्ययका हिसाबउसेदिखा कहादीखिये इसथोड़ी अवधिमें आपने कितना द्रव्य खर्चाकि
या औरआप अपव्ययतासे खर्च करतेहैं इसहेतुमैं आपका कार्यनहींकर सक्ता अपना
हिसाब किताबसमझके मुझे विदाकीजिये औरइसीप्रकार बहुतसे हितैषी सेवक आप:
को सेवा तजबैठ रहे इसीभांति प्रधानने उसेबहुत समझाया परंतु अचेतरूपी स्वप्नसे नज
गा उसके मित्र अवसरपा सबोंसे अधिक लूटनेलगे नित्यएक मनुष्य आता औरबहरुद्दीनसे
कहता आजमैं अमुकबाग औरमहलमें गया उसकी शोभादेखकर प्रसन्न भया वह मुझे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि बहुत अच्छा दिखाई दिया यदि आप उसे मुझे कृपा करें तो मैं उसमें जा रहूं नूरुद्दीन ने तुरंत पत्र।
१३९ लिख और हस्ताक्षर उस पर करदे दिया इसी विधि किसी ने सुंदर घोड़े और किसी ने हाथी आ
दिकी प्रशंसा की उसने तुरंत उसे दे दिया जब केवल अपने निवास के महल के सिवाय कुछ न
139 रहा वही स्वार्थी मित्र अलग हुये और घर बैठ रहे यदि किसी को उनमें से अपने मन बहलाने
को बुलाता तो बहुत आता कदाचित आता तो थोड़ी देर पीछे विदा हो चला जाता जो वह उसमि
त्र को ठहराता तो वह बहाना कर कहता मेरी स्त्री कल से रोगी हो गई है उसकी औषधि जाकर
करना इसी भांति वह सब बहाना कर के चले जाते और उसके पास न बैठते इस दशा को देख नू
रुद्दीन आश्चर्य में हुवा और हुस्न अफरोज से जाकर अपने मित्रों की अशीलता वर्णन की उ
सने कहा है प्राणनाथ यह सब बातें मैंने सर्वदा ही तुमसे कही थी पर तुमने मेरे कहने को
न माना निदान एक दिन तीसरे उपवास पर हुस्न अफरोज ने आंसू भर कहा है प्राणप्यारे अ
ब मैं तुम्हारी भलाई इसी में देखती हूं कि तुम मुझे बेचो और कुछ दिन कालक्षेप करो जब
तुम पर परमेश्वर कृपा करेगा तो फिर मुझे ले लेना नूरुद्दीन ने कहा यह तो तुझसे कदाचित।
न होगा कि तुझे बेचूं परंतु मुझे किसी २ मित्र से सहायता की आशा है विश्वास है कि वह
मुझसे आंख न छिपावेंगे हुस्न अफरोज ने कहा स्वामी यह केवल तुम्हारा विचार है को

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

है इष्टमित्र इस आपत्तिकालमें तुम्हारे काम न आवेगा समय पर सब निकल जावेंगे नूरुद्दी
नने कहा ऐसा मत कहो मैं तुमसे उनका हाल अधिक जानता हूं बालपनसे उनके साथ मे
री मित्रता है मैंने के उनके हजारों उपकार किये हैं कल भोरको मैं उनके समीप जाय ऋण मां
गूंगा आशा है कि वह मुझे अवश्य देंगे निदान दूसरे दिन प्रातसमय नूरुद्दीन उन दश मि
त्रोंके निकट गया जिसका उसे अनंत विश्वास था और वह सब एकही महल्लेमें रहते
थे पहिले एक मित्र जो औरोंसे अधिक धनपात्र था उसके द्वार पर जाकर खटकदी एकबां
दीने भीतरसे पूछा कौन है नूरुद्दीनने कहा मैं नूरुद्दीन वजीरका पुत्र हूं मेरे आगमनका स
माचार अपने स्वामीसे कहदो अफरोजने सुनतेही पीछे द्वार खोलदिया और उसे उत्तम
स्थानपर बैठाय अपने स्वामीसे यह समाचार कहा कि नूरुद्दीन तुम्हारे दर्शन करनेको
आये हैं उस मित्रने यह बात सुन कुपित होय बांदीसे कहा जाके कहदे कि स्वामी घरमें नहीं
और पूछा कि उन्हें को तुम बुलाते हो नूरुद्दीन बाहिरसे यह सब बातें सुनता था इतने
में बांदीने अपने स्वामीसे जो कुछ सुना था उससे कहा परंतु बांदी पहिले अपने स्वामी
के वर्तमान होनेका कह चुकी थी अब उसके विपरीत बड़ी लज्जासे अपने स्वामीके उपदे
शानुकूल कहा नूरुद्दीन यह सुनकर बड़े आश्चर्यमें हुवा और मनमें कहने लगा अभी य

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सा॰हि॰ १४॰

140

ह कलही मेरी विनती करताथा अजयह इसविधिकी अधीलताकरताहै निदान अतिविं
नाकरउस मित्रकेघरसे दूसरे मित्रकेघरजोपहिले सेकुछकम्नथा गया वहांभी यहीउत
रमिला इसीभांति दसोंमित्रोंकेघर पारी २ सेफिरा सबसे यहीउत्तरपाया नूरुदीन अपने
मित्रोंकी अधीलतासेबहुतघबराय पछतानेलगा औरसमझाकि वह निपट अपस्वार
थीथेलेनेके समयमुझे घेरेरहते औरमेरी स्तुतियांसीथी करतेथे अबमुझे निर्धन समझ
भेंटभी नहीं करना चाहते मेरानाम सुनतेही मुखछिपा लिया मेरी दशा फलदारवृक्ष
के समानहै जबतक वहफलसे लदारहा तबतकचारों ओरसेमनुष्यफलके लोभसे उ
सके पासआया किये जब फल उसमें नरहा कोई उसके समीप नगया निदानमित्रोंसे नि
रासहो अपने घर आया औरस्त्रीसे ओन्तभर यह समाचार कहा उसनेकहा अब उस
काहलोत मालूमहुआ में आगेसे जानतीथी और तुम्हें कईबेर समझाया अब मेरे विचा
रसे परमेश्वर परभरोसा रखो यहउत्तमहै कि तुम अपनी संपूर्णदास दासी औरघरके
पोषबस्त्रबेचो और उसेथोड़ा २ खर्चकरो विश्वासहैकि तुमपरफिर दीनदयालप्रभुकृ
पा करेंगे नूरुद्दीनने पहिले दासों को बेचकर कईदिन अपना निर्वाह किया जब व
हहोचुकातो बस्त्रघरकीपोषरहगईथी बेंचडालीजबकुछन रहातोउसनेकुछ अफ़

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रोज़से जो अत्यंतबुद्धिमान औरहित्तथी यहहालकहा वहइस महाविकट संकटकोदे
ख रोनेलगी औरकहाहै प्राणनाथ तुम्हें सुधिहोगी कितुम्हारेपिताने मुझेदशहज़ार अ
शरफ़ीको मोल लियाथा यद्यपि अबकोईभी मेरावह मोलनदेगा परंतु आधा मोल नि
स्संदेह देवेंगे तुममुझेनानबाँसोंमें जहां दासदासी बिकतेहैं लेजाय बेचो औरइस धनसे
तुमकालहो एकरोजजब परमेश्वर तुम्हें सामर्थ्य देतो मुझे मोलले लीजियो नूरुद्दीन ने
एकेकहा प्रथमतोतू मुझेप्राणसे अधिकप्रियहै दूसरे पिताने मुझे बचन बधकियाहै
कि तुझे कदापिनबेचूं मैंक्योंकर उससे विरुद्धकरसक्ताहूं उसने कहा यह तुमसत्य
कहते हो मैंभी तुम्हें प्राणसे अधिकप्यारकरतीहूं परंतुधर्मशास्त्रानुसार आपत्तिमें अ
नुचितभी उचितहै अबइस समयतुम परऐसी आपदा पड़ीहै किउसप्रतिज्ञाका वि
चार वृथाहै तुममुझे निश्शंकबेचो नूरुद्दीन लाचारीसेउस अफ़रोज़ कोबाज़ारमेंले
गया और एकदलालकोबुलाके कहातुम्हारे हामामेरेपिताने इस बांदीको दशहज़ार
अशरफ़ीदे मोललियाथा अबमैं उसे बेचताहूं तुम व्योपारियोंको उसे दिखा औ देखो
तो इसकाक्या मोललगातेहैं दलालनेकहा बहुत अच्छासो वह बांदीको एकमकानमें
बैठाय बाहरसेकुफ़लगाय व्यापारियोंके निकटगया उन्होंने नाना भांतिकी ग्रीक फ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
१४१
141

रंगी अफरीकी दासियां आदि बहुत मोल लीं थीं सो दलाल ने उनसे कहा भाइयो तुमने स
ब प्रकार की दासियां मोल ली हैं परंतु एक दासी पारस की बिकती है उसके रूप अनूप औ
र गुण को कब यहां चसके गी और तुमने नहीं सुना कि बुधजनों ने यह दृष्टांत कहा है हर गो
ल वस्तु सुपारी नहीं और अग्नि चपटी वस्तु अजीर नहीं और सब मांस तो लंगर नहीं और
सब ऐसे अच्छे नहीं होते अब तुम मेरे साथ चलकर देखो और उसका मोल बिचारो नि
दान वह सब व्योपारी उसी दलाल के साथ गये उसने किवाड़ खोल कर के अफरोज़ को दि
खाया वह सब उसके स्वरूप छबि अनूप को देख आश्चर्य में आये और कहने लगे सच २
जन्मभर हमने ऐसी लौंडी पाहर और मुल्क में नहीं देखी हम सब मिलके चार हज़ार
अशर्फी तक इसका मोल दे सकते हैं इससे अधिक हम देने की सामर्थ्य नहीं रखते
यह कह वह सब बाहर आये और दलाल ने उस मकान को जिसमें अफरोज़ थी बं
द कर दिया इतने में सोय नामक दूसरे वजीर की सवारी वहां से निकली उसने व्योपारि
यों का समूह देख पूछा कि यह मनुष्य यहां को इकट्ठे हैं दलाल ने कहा एक लौंडी मोल
लेने को यह सब आये हैं और चार हज़ार अशर्फी तक इसका मोल लगाया परंतु मालि
क इसको मन पर राज़ी नहीं सोय ने भी उसके देखने की इच्छा की और दलाल से कहा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मुफेभी उसे दिखा मैंही उसे ले लूंगा निदान दलालने उसेभी इस बर्दाफ़रोज़को दिखाया उ
सने उसे पसंदकर कहा चारहजार अशरफी मैंभी इसलौंड़ीकी देताहूं मुफे दिलवा दे दला
लने कहा मैं इसके मालिकसे जाके कहताहूं यदि वह राजी होतो आप निश्शंक उसे मो
ल लीजिये वजीरने सब व्योपारीयोंको सैनसे मनाकिया कि खबरदार इसमें आपक
मोल न बढ़ाना और तुम इस लौंडीके मोल लेनेका बिचार न करना मैंही इसले लूंगा ब
हसब सौदागर वजीरके कहनेसे चुपके होरहे और किसीने हम न मारा दलालने नू
रुद्दीनके समीप आय कहा हा सैद है कि तुम्हारी लौंड़ी कमकीमत परजाती है नूरु
द्दीनने पूछा क्योंकर उसने कहा व्यापारीयोंने पहिले आके उसे देखा और पसंदकर।
चारहजार अशरफी नकद देतेथे और मैं बाजारमें पुकारताथा कि चार हजार अशरफ़ी
को पारसकी लौंड़ी मुफ्त बिकती है इस आशासे कि कोई बढ़े पांच छः हजार अशरफ़ी
नकद देवे इतनेमें खुद वज़ीर उसमार्गसे चलाजाताथा व्योपारियोंको इकहा दाब और
मेरे पुकारनेका शाहू हुसन वहां खड़ा होगया और लौंड़ीको जाके देखा और उसे पसंदकर
मुफसे कहताहै कि चारहजार अशरफीमें इसकी देताहूं मुफे दिलवादे और सब व्या
पारियोंको सैनसे मनाकिया कि कोई इससे अधिककीमत न बढ़ावे कि तु उसके लेने

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि
१५२

काभी इरादानकोसी सब ब्योपारी उसके भयसे चुपरहे और कुछ नहीं बोलते नूरुद्दीनने
कहा सत्य हमारे घरानेका बैरीहै मुझे उसके हाथ किसी तरहसे बेचना मंजूर नहीं तब
दल्लालने कहा आपबलके ब्योपारीयों में खिड़होके बड़े शाहसे कहिये कि मैंने इस लौं
डीपर क्रोधकियाथा और उसको पीनरमें सौगंद खाईथी कि मैं तुझे बाजारमें लेजायके बे
चूंगा सो मैंने अपनी प्रतिज्ञा पूर्णकी मुझेवास्तवमें उसका बेचना अंगीकार नहीं केवल
अपनी प्रतिज्ञाके पूराकरनेकेलिये यह बहानाकियाथा सत्यभी इस बचनकोसुन चु
पहोरहेगा अबतुम मसूसोद होकर नप्यारवहो जिस समयमैं लौंडीका हाथ पकड़ सत्य
कोदेनेलगूं तुम उसवक्त उसेदो चार तमाचेमार औरउसे सत्यके हाथसे छीन अपनेघ
रलियेचलेजाना नूरुद्दीन दल्लालकी यह मत पसंद करनप्यारजवा फिरदल्लालने लौं ल
डीको मकानसे निकाल यहीमत समझाय बाजारमेंले जाकरदूसरे वजीरको उसका
हाथ पकड़ाय कहास्वामी यह लौंडी तुम्हारीहो चुकी वजीरने हाथ बढाय चाहाकि
इतनेमें नूरुद्दीनने लौंडीका दूसरा हाथ पकड़ अपनी ओरखींच लिया औरथोरेसे एक
तमाचा मारकहा तेरे कटुवचन और आज्ञाके उल्लंघन से मैंनेयह प्रतिज्ञाकी थी कि तुझे
बाजारमेंबेचने केलिये लेजाऊंगा अबमेरी सौगंद पूरीहो चुकी अपने घरचल आगेजो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ऊछ अपराध करेंगे तो समझा जावेगा यह कह उसे ले अपने घर की ओर चला वज़ीर ने अ
ति कोपित होके उसके पीछे घोड़ा दौड़ाया और हाथ बढ़ाकर कोड़ा मारना चाहा नूरुद्दी
न ने लोगों के हाथ छोड़ आगे बढ़ वज़ीर के घोड़े की लगाम पकड़ ऐसा झटका मारा कि
वह घोड़े से नीचे आ रहा फिर उन दोनों में बड़ा युद्ध भया यदि वज़ीर बूढ़ा और निर्बल था
और नूरुद्दीन तरुण था उसने उगर्द मारा और भली भांति पीसा और सौदागर और बाज़ा
र के आदमी कि स्वय वज़ीर से बदमिज़ाजी के आदमी कि स्वय वज़ीर से बदमिज़ाजी के
कारण दिल से बहुत नाराज़ थे उसके हारने से और नूरुद्दीन को जीतने से बहुत हो प्रसन्न हु
ये और कोई भी उन दोनों में बाधक न हुये पर जब वज़ीर के सेवकों ने अपने स्वामी का प
ता किया और नूरुद्दीन को मारना चाहा मनुष्यों ने कहा इसे तुम नहीं जानते और यह तु
म्हारा स्वामी है तो यह वज़ीर का बेटा है तुम उनमें बाधा न करो क्योंकि जब वह परस्पर
मिल जावेंगे तो तुम्हारे वास्ते अच्छा न होगा निदान नूरुद्दीन ने बाज़ार में वज़ीर को इत
ना मारा कि उसके शरीर से रक्त निकल वस्त्र लहूलुहान और कीचड़ और मट्टी से मै
ले हो गये निदान वह तो उसे मार पीट और बांदी का हाथ पकड़ अपने घर को चला व
ज़ीर के नौकर चाकर अपने स्वामी को उसी दुर्दशा में बादशाह ज़ेबनी के सामने ले गये

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

साद्द बादशाह उसेदेख अति आश्चर्य्यमें हुवा और कहा यह क्यातेरी गति भई किसीने तुझे मारा उ
१४३ सने विनय कीहै बादशाहमैं दरबारसे अपने घरको जाताथा चौकमें व्योपारियोंका समूह
143 ह देख खड़ाहोगया मालूम हुवा कि वे मनुष्य पारसकी लौंडी मोललेने आयेहैं मुझे भी
रसोईके लिये एकलौंड़ी जरूरतथी मैंने भी उसे देखा वह अमन सुंदरीहै मैंने चाहा इ
समालको मिलेतो लेकर आपको भेंट हूं क्योंकि वह आपकी सेवा योग्यहै वह व्योपारी
चारहजार अशरफी नकद देतेथे मैंने दलालसे कहा इतना द्रव्यमें भी हूंगा मुझे कोदिल
वादे सो उसने मुझे लाकेदी इतने में स्वर्गवासी खाकान वजीरकाबेटा नूरुद्दीन आया औ
र लौंड़ी मेरे हाथसे छीनकर लेगया और कहा मैं यह लौंडी बिना माल हूंगा परंतेर हा
थ नेबहूंगा मैंने उसे बहुत समझाया कि मैं उसे अपने लिये नहीं लेता बादशाहकी भें
ट करूंगा इसने उसकी मेरी न करार हुई परंतु उसदुष्ट अयोग्यने मेरी यह दशाकीये बा
दशाह आपको संतोष होगी कि पूर्व आपने दसहजार अशरफी खाकानको लौंडी मो
ललेनेके लिये निजकोषसे दीथी उसने उसी द्रव्यसे यह लौंडी मोलले अपने बेटेको।
दीनी चारवर्षसे वह उसीके पासहै और उसने अपने पिताके देहांतके पीछे जोकुछ द्र
व्य बचाथा व्यभिचारादिमें थोड़ेही कालमें व्यय किया अब अमन निर्धनहो उस लौं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

डीको बाजारमें बेचने को लाया बादशाह यह समाचार सुन अति क्रोधी हुवा और वज़ीर।
को विदा कर एक प्रधानको आज्ञा दी कि इसी समय चालीस सिपाही अपने साथ ले जाय
नूरुद्दीन और उसकी लौंडी को पकड़ लाओ और इनका मकान खोदकर पृथ्वी बराबर कर
दो अभी वह प्रधान सेना तयार कर रहा था इतनेमें नूरुद्दीनके पिताके उपकारों को स्म
णकर व्याकुल हुवा और किसी उपायसे दौड़ नूरुद्दीनके घर पर जाय हांकदी बेचारे नू
रुद्दीनने जो निर्धनतासे सेवक न रख सकता था आपही जाकर द्वार खोला प्रधानने दंडवत्।
कर संपूर्ण वृत्तान्त बादशाहकी सभाका वर्णन कर कहा हे कुंवर तुम इसी समय उस।
लौंडी समेत इस नगरसे निकल जाओ यदि कुछ भी ठहरोगे तो पकड़े जाओगे और नि
संदेह बादशाह तुम्हें बधकर डालेगा मैं इससे अधिक यहां नहीं ठहर सक्ता ऐसा न हो
जो बादशाहके नौकर मुझे देखलेवें निदान प्रधानने विदा होते समय चालीस अशर
फियां जेबसे निकाल नूरुद्दीनको दीं और कहा इस समय मेरे पास यही वर्तमान हैं य
दि कुछ भी सावकाश मिलता तो और भी तुम्हारी भेंट करता यह कह वह तो चला गया औ
र नूरुद्दीनने भीतर जाय हुस्नअफ़रोजसे यह समाचार कहा और उसे अपने साथ ले दीवा
रके पिछवाड़े फांद उसी समय नगरसे बाहर निकल सीधा नदीकी ओर चला दैवयोगसे प

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

144

क जहाज नष्यारणायशीघ्रही उसपरसवारहुवा कमान त्राणमात्रमें लंगरउसका उठाबुगदा
दकी ओरचला पवन अनुकूल होनेसे जहाजकी पकड़ी बेरसब पालें खोलदीं नूरुद्दी
न वांसरासे कुशल पूर्वक निकल अति हर्षित हुवा और इधरबादशाहके नौकर नूरु
द्दीनके पकड़नेकेहेत चले उसकेघरपहुंच प्रथमतो किवाड़ खटखटाया जब किसीनेउ
त्तरनदिया उसे तोड़ भीतरगये यहां किसीकोनपाके पड़ोसियों से पूछाकि नूरुद्दीन
कहांहे उनसबने किमनसे उसकेहितेषी थे उत्तरदियाहम नहींजानते निदान अथानने
वहांत ढूंढकर उसकाघर खुदवाय धरतीबराबर करदी औरबादशाहसे जाके विनयकी
कि नूरुद्दीननहींमिला मेरे पहुंचनेकेपहिलेन जानिये कहां निकल गया बादशाहने
आज्ञादीकि फिरजाके उसेढूंढो औरढोंढी फिरवाओजो कोई नूरुद्दीनको पकड़ बादशा
हके सामने लावेगा हजार अशरफी इनामपावेगाजो कोई उसे अपने घर छुपा रक्खेगा
वहभी उसीके साथप्राणसे माराजावेगा औरघरबार उसकाछीनलिया जावेगा अब नू
रुद्दीनकाहृत्तान्त सुनोजब वह जहाज बुगदादकेसमीप पहुंचातो कमानने लोगोंसे का
हा भाइयोयहनगर अति श्रेष्ठ और + अनेक प्रकारकी स्वच्छ वस्त्र औरनानाप्रकारकेफल
उत्पन्नहोते और थोड़ेही कारणसे यहां मनुष्य निर्धनसे धनवान औरसद्व्यसे निर्धन।

मनुष्यहैं इसमें देश २ केगुणवान और प्रतिविद्याके अभ्यासी वर्तमानहैं और + १९

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

होजाताहै विशेषकरतीन वासीवऊत समरफ़बुक़ इसनगरमेंरहते जबजहाजने वहां पऊंचलंग
रकिया वोपारी आदि जहाजपरसे उतरअपने टिकाने परगये नूरुद्दीन उनवासीसे अशरफ़ि
यों मेंसे पांच अशरफ़ीकिरायादेऊत्त अफ़रोज़कोलियेऊये उतराबुगदादमें तोवहकभीन आ
याथा औरयहांके बाजारोंसे निपट अज्ञानथा इससे बऊकालपर्यंत विश्राम केस्थानके
ढूंढनेके निमित्तफिरा फिरते २ एकबागकेद्वारपरजो नदीके कूलपरथा पऊंचेवहां सुंद
र ऊंचेकेतटपरबैठकर अपने हाथपांवधोये औरशीतलजलपी उसीबागकीसहनची में
वेठपरस्परवातो करतेऊये निद्रावशऊये प्रगटहोकिवहबाग खलीफ़ा हारूंरशीदकाथा म
ध्यमें उसके बारहदरीथी जिसमेंभीतरबाहर हरभांतिकी अतिशोभायमानचित्रकारियां
थी उसमें ८० किवाड़ बिल्लौरकें उनमें अति सुंदरमोमी दीपदानहर समय तय्याररहा कर
ते जबकभीखलीफ़ा हारूंरशीदरात्रिको उसबागमें जाता चारोंओरउसकेरोशनीकरते उ
सका प्रकाशबारहदरीकी ऊंचाईसे नगरभरमेंदिखाई देता उसबागकादारोगा शेखइब्रा
हीमथा उसकी आज्ञाबिनाकोई उसबागमें नजानेपाता औरनकोई बागके संबंधित महलों
में निवासकरसकता संयोगसे उसकाल वहदारोगा वहांनथा अनुमान सायंकालके जबदा
रोगा वहां पऊंचा बागके किनारेका देखताहै किदो मनुष्य सुखपरमहोनहुपडाउाले आनं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सफ़ि दसे शयन करतेहैं इससे वह अप्रसन्न हुवा और उन्हें दंड देनेकी इच्छाकीसो उनके समी
१४४ पजाय मारनेको लकड़ी उठाई फिर कुछ शोच अपना हाथ थामलिया और मनमें कहनेल
गाकिये वृत्तांत ज्ञात कियेबिना इनको मारना उचित नहीं मालूम होताहै कियह विदेशीय
हैंको रीतिनहीं जानते उत्तम यहहै पहिले उनका वृत्तांत पूछलूं निकटजाय उनके मुख
145 से डुपट्टा उठाया देखाकि एक अतिसुंदर पुरुष दूसरी स्त्री अतिरूपवती दोनों नींदमें अ
चेत सोतेहैं उसने नूरुद्दीनको पांवसे हिलाय जगाया नूरुद्दीनने जगकर श्वेतदाढ़ीवाला
वृद्धपुरुष देखा देखतेही उठके दारोगाके हाथ चूमकर आंखोंदी और कहने लगाहै पिताका
आज्ञाहै दारोगाने पूछाहै पुत्रतुम कौनहो और कहांसे आया नूरुद्दीनने कहामैं कभी इ
स शहरमें नहीं आया इच्छाहै कि मुझे आजकी रात्रि यहीं विश्रामकी आज्ञाहो भोर
होतेही यहांसे चलाजाऊंगा दारोगेका क्रोध उसके कोमल वचनोंसे बिलकुल जातार
हा और दोनोंके रूप मनहरणको देख अति नम्र होकहनेलगा पुत्र तुम्हें यहां रात्रिमें क
ष्टहोगा मेरे साथ चलो मैं स्वच्छ स्थान तुम्हारे निवासको दूंगा जहांसे तमाम बाग दिखा
ई देताहै नूरुद्दीनने कहा क्या यहबाग तुम्हाराहै दारोगाने मुस्कराय के उत्तर दियाकिमें
ने अपने पिताकी थातीसे इसे पायाथा उपरांत उसने दोनोंको बागके भीतर ले जाय बागके

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

द्वारकोभीतरसे मंदकुफल लगादिया और उनको येसी जगह परबैठाया जहांसे वह स
मग्रबागको देख फिर दारोगा उनको अपने साथ कईमकानोंके दिखानेकोले गया इत
नेमें नूरुद्दीनने जेबसेदो अशरफी निकाल दारोगाकोदी और कहा कुछभोजनहमारेलि
ये पकवाइये दारोगावह अशरफियालेप्रसन्नहो कर अपने जेबमें रख बिचारा अच्छाहुवा
जोमैंने येसे उदार मनुष्यसे कोई बुराई नकी इसमें बहुत अच्छे भजन पकसक्तेहैं किंतु कु
छ बचरहेगावह मेरेकाम आवेगासो उनदोनोंकोवहीं छोड़ आपभोजनके उपायमेंगया
उसके जानेके पीछे नूरुद्दीनहुस्न अफरोज़ सहित बारहदरीमें गया औरनीचेकी नक्कारी
औरसाज सामग्रीदेख ऊपर जानेकी इच्छाकी परंतु उसकेद्वारमें तालादियाहुवाथा जब
वह दारोगाभोजनलाया नूरुद्दीनने उसकी बहुत प्रशंसा और बिनती करकहा आपने
आतिथ्य भावसे हमें सारा बाग दिखाया परंतुवह बारहदरी हमने नंहीदेखी हमें इच्छा
है किहम उसेदेखें दारोगानेकहाबहुत अच्छा तिसपीछे कुंजीसे बारहदरी खोलउनको
उसीमें लेगया नूरुद्दीनने उस मकानकोदेख हर्षितहोय दारोगासे कहा यदि तुम्हारी
खुशीहोतो हमदोनों तुम्हारे साथ भोजनकर यहीं शयन करें दारोगाने विचारा किजोख
लीफाकी इच्छा आजइधर आनेकी होतीतो आगेसे कोई मनुष्यसंदेशा देने अवश्य आता

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि
१५८

146

यह विचारकरहर्ष पूर्वक उनको पहनेकी आज्ञा दीफिर दारोगाने वह सबभोजन रत्न ज
टित पात्रोंमें परसदिये नूरुद्दीनने अति रुचिसे दारोगा औरऊस्त अफरोज सहित भोजन
किया फिरहाथ धो नूरुद्दीनने एक बारहदरी का कि वाड़ खोल ऊस्त अफरोजसे कहा य
हां बैठ शीतल चांदनीकी सैर देखनेका आनंद है वह दोनों खिड़की में बैठ प्रसन्नहो
गये इतनेमें दारोगाने पात्र आदि उठाय उनदोनोंके निकट आय कहा अगरकिसी औ
रवस्तुकी तुम्हें इच्छा होतो उसेभी तुम्हारे सन्मुखलाऊं नूरुद्दीनने कहा कुछ थोड़ीसी
मदिरा मिलसक्तीहै दारोगा समझा किवह शर्बत मांगताहै तो कहा शर्बतमें लासक्ता
हूं परंतुभोजनके पीछे उसनहीं पीते नूरुद्दीनने कहा तुम समझेनहीं परंतु मैं शर्बत
नहीं मांगताकिंतु अंगूरी मदिरा चाहताहूं दारोगाने कहा हमारेधर्मशास्त्रमें उसका
पीना किंतुपास रखनानिषेधहै विशेष मैंने चारबेर मक्केकीयात्राकीहै मैंने मदिरा
कभीनहींदेखी औरन कभी उसे अपनेहाथोंसे स्पर्श किया नूरुद्दीनने कहाभलाउसेबु
वे बिनालासक्तेहो उसनेकहाऐसा कौनसा उपायहै नूरुद्दीनने कहाएक वाया बागकी
खोईमें बंधाहै मैंतुम्हारे निकटलाय अशरफ़ी हमालसे बांधउसपरकवेदताहूं तुमउ
सेहांकते २ मदिराके घरमें लेजाओ मदिरा बाचने वाला तुम्हारे सैने करनेहो अशरफ़ियें

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ढांलेकर मदिराके पात्रइस गयेपररखदेगा तुम इसगर्दभकोहांक करयहांले आनाफि
र यहां हम समझलेवेंगे तुम्हें तनक परिश्रमन होगा दारोगा इस वचनको सुन प्रसन्न
ऊवा और कहा यह यत्नबऊत अच्छाहै दारोगाने वैसाही किया महीसे मदिराले आ
या परंतु जलदीमें बागका द्वारमूंदनाभूल गया निदान जब गया बारहदरीके समीपप
ऊंचा नूरुद्दीन दोनों ठिलियों कोजो स्वच्छ मदिरासे भरी ऊईथीं उनके भीतरले जाकर
दारोगा काबड़ागुणमान कहा तुम्हें अतिपरिश्रम भया अबमेरा एक औरमनोरथहै दा
रोगाने पूछा वहक्या नूरुद्दीननेकहा कि एक गिलास औरकुछ फल चाहियें दारो
गाने एकस्वच्छवस्त्र बिछाय उसपररखदिया और नवीन चीनीके पात्रोंपरफल रख
कहा और जो कुछ तुम्हें आवश्यकताहो लादिया जावे नूरुद्दीनने कहा अबकुछ न
ही चाहिये इसके उपरांत दारोगा वहांसे हट किसी और मकानमें इसभयसेजा बैठाक
हीं मुझे मदिरानपिलावें नूरुद्दीन औरकुस्त अफरोज प्रसन्नहो २ मदिरा पीनेलगे ज
बदोनोंमद मत्तभये नूरुद्दीनने कुस्तअफरोजसे कहा हम इस संसारमें बड़े भाग्यीहैं
किउस आपत्तिके पश्चात परमेश्वरने हमें ऐसीजगह कृपाकी जहां सबतरहके आनंदके
सामग्री वर्तमानहैं जिसपीछे वह दोनों गानेलगे दारोगा उनकाराग सुन हर्षितऊवा औ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि
१५०

147

चोरीसे उनदोनोंकोदेखनेलगा इतनेमें नूरुद्दीननें उसेदेख कहाहै दारोगातुम बहुत अच्छे
हो मैंतुम्हारी प्रशंसा वर्णन नहींकरसक्ता उत्तमहो जोतुमभी इस आनंदमें संयुक्तहोदा
रोगानेहंसकेकहामैं योंही तुम दोनोंको देखप्रसन्नहोताहूं यहकह फिरलोपहोग
याकुछ अफरोजने अपनेस्वामीसे कहायदितुम्हारी इच्छाहोतोमैंइसदारोगाकोभी
मदिरा पिलाऊं उसनेकहा इससेक्या उत्तमहै कि वहभीहमारे संगतमे मिल आनंद उ
ठायेकुछ अफरोजनेकहा तुमउसे अपने निकट बुलाओ औरकुछ कालपश्चात मदिरा
का पात्रदोजो उसने पियातो अच्छा नहींतो तुम उसेभी शय्यापरझूठमूठसोजाना फिर दे
खनामैं उसे किसभांति पिलाताहूं नूरुद्दीनने कहा बहुत अच्छा यह कहदारोगाको
पुकारा अभीवह सीढ़ीपरथाकि इनको मदमत्तदेखलौटचाया नूरुद्दीननेकहाहम
तुम्हे मदिरान पिलावेंगे तुमक्षणमात्र हमारे निकट आयबैठो दारोगानूरुद्दीनके कह
ने से सीढ़ीके निकट बिछौने परबैठगया नूरुद्दीननेकहा यह अति अनुचितहै कित
महमारे बड़े होके हमारे नीचे बैठो वहांसे उठहमारे बराबरहस सुंदरीके निकट बैठो
वहतुम्हारे बैठनेसे अप्रसन्ननहोगी दारोगामनमें अति प्रसन्न हुवाकि ऐसी सुंदरीके
निकट किसको बैठना मिलताहै परंतु प्रगटमें नाकभौंहचढ़ाके कुछ अफरोजके सभी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

य बैठगया अनंतर नूरुद्दीनने ऊस्तअफरोज़को गानेकी सैनकी वह अति सुंदर हावभा
व कटाक्ष कर ऐसी मिष्टकोमल वाणीसे गाई किवह दारोग़ा मोहित होगया जबवहगा
चुकी नूरुद्दीननेमदिरासे गिलास भरदारोगाको देकहा हमदोनोंको प्रसन्नताके लियेइ
से पीवो दारोग़ानेकहा पूर्वही मैंनेइसकाकारण तुमसेवर्णन किया इसमें नूरुद्दीननेउ
सने आधिक तकरारकी जब उसनेन मानातो उसेआपही पीगयाऊस्त अफरोज़ने एकसे
व उठाय उसकेदो खंड किये औरएक खंडउसहाथको देकहाजोमदिरा नहीं पीतेतो भला।
सेवके खानेमेंतो कुछपापनहीं दारोग़ा उससुंदरी चंद्रमुखीकेहस्तकमलसे सेव लेनेमें इ
नकारनकरसका औरउसेरुचि पूर्वकभोजन किया फिरऊस्तअफरोज़ मीठस्वरोंसेगाने
लगीनूरुद्दीनकहीदालानमेंलेटकर वहानेसे सोनेलगाऊस्तअफरोज़ने अपनेपतिकोसै
नकर करहठसे कहादेखो साहब इनकी का टवेहै कदाचित एकवादो गिलास मदिराकेअ
थिक पीतेहैं तोमुझे अकेली छोड़ अलग जायसोरहतेहैं जबतकयह जागें तबतकतु
मकृपाकर मेरे समीपबैठे रहो थोड़ेकालमें ऊस्तअफरोज़ने अपने मायावी कोमलवचनों
से दारोग़ाको अपने अनुकूलकरके बिचारा किअब यह मदिरासे ग्लानिनकरेगा औरमे
रे रूप अनूप और गानकी चवलतासे पंछीके सदृशजालमें पड़गयाहै सो अतिसुंदर हा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

व भाव और मनहरण कटाक्षकरके हाथ बढ़ाय मदिराका गिलास उसे दिया और चित प्रे
रक मुस्कान दिखाय कहा इसके पीने का पाप मेरे शीश परन्तु मुझे मेरे शिरकी शपथ है
कि उसे पान कर देखो तो इसमें कैसा स्वाद है दारोगा कि सर्व से उसके भाव और ध्यान पर मोहि
त था प्रगट में कुछ बहाने करके हाथसे गिलास लेपी गया और आया सब जो शेष था ब
हुभी मत्तता कर गया फिर जुस्त अफरोज़ने दूसरा गिलास भी उसे दिया उसने उसे भी पी लि
या इसी विधि बराबर तीन चार गिलास उसके हाथसे पिये फिर नूरुद्दीन जो बहाने से निद्रा में
था उठ अपनी जगह पर आ बैठा और उस सहृदको नशे में हुसता देखकर कहा तुम तो कहते
थे कि मैं कदाचित् मदिराको स्पर्शन करूंगा अब तुमने क्यों पी उसने कहा मैंने कहा मैंने
इस सुंदरी के कहने से पी फिर वह हृदय आनंदित होय अपने हाथसे गिलास भर २ पीने ल
गा और राग बमस्ल जुबा इसी भांति वह तीनों मनुष्य अर्धरात्रि पर्यंत मद्य बैठे पिया किये
जुस्त अफरोज़ने कहा यहां अंधियारा बहुत है अगर कहो तो नूरुद्दीन पान प्रज्वलित करके
दारोगा जो नशे में चूर था बोला बहुत अच्छा बमहो जलाओ पर तु चार पांच से अधिक न
जलाना जुस्त अफरोज़ने उठकर संपूर्ण दीपदान जो अनुमान अस्सी के थे प्रकाशित कर
दिये तिसपीछे नूरुद्दीन ने हठसे कि जुस्त अफरोज़के सुंदर चरित्रों और कोमल बचनों

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

परलोभायमानथा सब्का कहा तोवह दीपदान भी जो दीवारमें दरवाजों पर लगे हैं जलाये
जावेंकि बाहर की ओरभी प्रकाशहो इसने उसकीभी आज्ञादे करकहा तीनचारसे अ
थिकनजलाना नूरुद्दीनने एक सिरेसे दूसरे सिरे पर्यंत सबके सब प्रज्वलित किये व
ह हद्दहज्रत अफरोज़के संदरबैनोंमें ऐसा लगाथा कि उसे भली बुरी बातका ज्ञान न रहा
बादशाह हारूंरशीद अमीन सोयाथा अपने महलमें जो नदीके तीरथा जागा उसने बेगम
की इच्छाकी कि अचानक उसकी दृष्टि उसरोशनीपर पड़ी जो बारहदरीमें दरोगाकी आज्ञा
से नूरुद्दीन बज़्रत अफरोज़ने कीथी इससे वह अत्यंत विस्मित हुआ और वज़ीर जाफ़रको
बुलाय सब्का यह कैसा प्रकाश है क्या किसीने बागमें प्रकाश तो नहीं किया वज़ीरजाफर
भी इस उजियालेको देख आश्चर्यमें हुआ परंतु उस समय बात बनाय बादशाहसे विनय के
इस बागके दारोगाने एक यह मानता मानीथी कि मनोरथके सिद्धहोने परबागमें रोशनी
कर इहु मित्रोंको न्योतूंगा उसीने वही प्रकाश किया होगा बादशाह उसकी बातका वि
श्वासनकर उसी बातके निश्चय करनेके लिये वस्त्र उतार पुरवासियोंके सदृश कपड़े प
हिन वज़ीर और मसरूरको अपने साथले उसबागकी ओर चला जब नगरकी गलियों।
लांघ बागके समीप पहुंचा बागका किवाड़ खुला पाय अधिक करके अचंभा करनेलगा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
१४९

149

निदान दारोगाकीगफलत समझ वज़ीरसे पूछा इससमय वागका द्वारकौन खोलाहै उ
सने भयभीतहो उत्तरदिया मुझे इसका कारण मालूम नहीं फिर वह अपने सेवकों।
को एक जगह बैठा आपही वागकेभीतरगया और धीरे २ बाहरदरी पर्यंत पहुंच सीढ़ी
परचढ़गया औरबाहरसे आड़मेंखड़े हो देखाकि एक सुंदरी औरएकरूपवान पुरुष
बैठ ऊंघेहैं और दारोगा मदिराकागिलास उसस्त्रीकोदेकहताहै हे मृगनयनी मैंने भली
भांति तुम्हारा प्रियगाना नहीं सुनाकुछ इस समयभी गा आवजाओ फिरमें तुम्हें अप
ना गानासुनाऊंगा यह कह वह हृद गाने लगा बादशाह यह दशा देख विस्मितहो
अपने मनमेंसोचा दारोगातो अमन आचारीथा इसकोक्याहुवाजो मदिरा पी उन्मत्त
होय गाय रहाहै बादशाहने वज़ीरको सैनसे बुलाय चुपकेसे पूछा देखतो यहको
नहै वज़ीरने डरते २ धीरेसे पांवआगेधरकादेखाकि वह हर्ष पूर्वक मदिरा पान
करतेहैं फिर वहांसे उत्तरबादशाहसे विनतीकीसेवकतो इनदोनों पुरुष औरस्त
रीको नहीं जानतातान जानिये इस आचारी हद्दकोक्याहोगया यह दास अमन आस्र
छिनहै कुछनहीं कह सका बादशाहने वज़ीरसे कहा यदि इससुंदरीने अच्छागा
याती मैं कुछन कहूंगा नहीं तोमैं इनतीनोंकोपसादउहंगाकि उनको सदा स्मरण रहे।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गा यह कहवज़ीरसे कहातभी मेरेसाथ सुन सोकिवाड़की ओटमें छिपवह दोनों सु
नने लगे हूहूने उस कोमलांग्रीसे कहाकि ऐसा गाओ जिससेमेरा मन प्रसन्नहो उसने
कहाजो कोई बाजा बांसुरी आदि होताजो तम निःसंदेह उसे सुन हर्षित होतेजोकहीं
मिलसकेतोलाओ दारोगाने कहा वांसुरी वजाना जानतीहो उसने कहा निःसंदेह उ
सको वजाना जानतीहूं हूहूने तुरंतएक कोठड़ी खोल बांसुरी निकाली उस अफ़रोज़
उसेले वजानेलगी खलीफ़ाने सुनतेही वज़ीरसे कहा यह स्त्रीका सुंदर बांसुरी ब
जानीहै मैनेइसका अपराध क्षमाकिया और इसीके कारण इस मनुष्यकाभी अपरा
धक्षमा किया परन्तु हूहूकी गफलत परतके अवश्य फांसी देगा वज़ीरने कहा आ
गर वहबुराबजानी बादशाहने कहा यह उससे कोमांगताहै उसने कहा अगरवह
बुराबजानीतो ज़रूरवह दोनों जानसे मारेजातेहो उनके साथमाराजाना अच्छाथा बा
दशाह इसकहनेसे बहुत खुशहुआउस्से अफ़रोज़ने अतिप्रसन्नतासे हूहूके सन्मुख
ऐसीबांसुरी बजाईकिखलीफ़ाने भीकहाकि यह इसगुणमें अति निपुणहै फिरवे
ह बांसुरी कोधुनिके साथगाने लगी यदिखलीफ़ा उसके बजाने परएक भाग विकल
होगयाथा उसकी प्रिय वाणीसेदो भागविकलहोगया औरवेवशदाह वाह करनेलगाओ

सादि
१५१
150

रवहांसे उत्तरबागके एककोनेमें जाय वज़ीरसे कहा नतीमेंने आजतक ऐसा गाना सु-
ना औरनऐसा बांसुरीका बजाना इसहेतु कि इसगुणमें विख्यातहै परइस स्त्रीके स
म्मुख अज्ञान बालकहै खलीफ़ा जोकि संगीत विद्यामें अति कुशल और रागको भली
भांति समझताथा वज़ीरसे कहने लगामें चाहताहूं किसीभांति भीतरजाय इसका गा
ना बजानासुनूं इस समय मेरा हृदय नहींठहरहाहै परंतु कोई यत्नविचारमेंनहीं आ।
ता वज़ीरने कहा साहब मेरे आगर आपभीतर जावेंगेतो दारोगा पहिचानके मरजावे
गा औरयह दोनों स्त्रीपुरुष आपकेभयसे गानाबजाना भूल जावेंगे फिर आपकेगा-
ना सुननेका स्वादजाता रहेगा खलीफ़ानेकहामें इनदोनो औरहदहारोगाको जिसने
मेरी जन्मभर सेवाकीउखदेनानहीं चाहता न्यहीं ममस्तके साथठहर औरमेरे आ।
गमनकीबाटदेख खलीफ़ा इसी विचार मेंथा दैवयोगसे एक धीमरने रात्रिको द्वार
खुलाया चारपांचबड़ी २ मत्स्यउस बागसे जोटे करसनदीके तीरथा पकड़ी खलीफ़ाने
उसके पास जाकरदोमछलियां बड़ी २ छीनकरलेली यद्यपि खलीफ़ा दूसरे भेष में
था धीमरपहिचानकांपने लगा औरपांव परगिरपड़ा खलीफ़ाने कहाडरमत और अ
पने कपड़े मुझे उतारदे और मेरे वस्त्र पहिर अपने घर चुपके चलाजा उसने यह सुननेही

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कपड़े उतार दिये और बादशाही कपड़े पहिर अपने घर चलागया खलीफ़ा उसके कप
ड़े पहिन और दो मछलियां हाथमें ले पहिले वज़ीर और मसरूर के निकट खड़ा भया
वज़ीरने उसे न पहिचाना और समझा कि कोई धीमर इनाम मांगने आया है यह सोच
उसे झिड़क कहा हरको यहां से चलाजा बादशाह खिल खिलाके हंस पड़ा और व
ज़ीर पहिचान डरगया और हाथ जोड़ विनय की कि इस सेवक का अपराध क्षमा की
जिये मैंने आपको नहीं पहिचाना कि आप धीमर के भेषमें आके खड़े भये हैं मैं ही नहीं
किंतु कोई आपको इस भेषमें नहीं पहिचान सकेगा अब निश्शंक बारहदरी में जाइये औ
र गाना सुनिये खलीफ़ा फिर उसी भांति मछलियां हाथमें लिये झट बारहदरी के पास
खड़ा भया और द्वार खड़खड़ाया नूरुद्दीन ने पहिले शब्द सुना और दारोगा से कहा दा
रोगाने पूछा कौन है खलीफ़ाने दरवाज़े का पट खोल एक पांव आगे किया कि पहि
चान न जावे और कहा मैं करीम नाम का मछली बेचने वाला हूं मैंने सुना था आजके
रातको तुमने अपने मित्रों को निमंत्रण कर उनकी जेवनार की है इस हेतु इसी समय अ
ति उत्तम दो मछलियों का नाम सुनते ही प्रसन्न हुये हुस्न अफ़रोज़ने उससे कहा इसे
भीतर बुला लाओ तो हम देखें कि कैसी और किस जाति की हैं वह दारोगा कि बहुत सी म

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
१५१

दिया पीजानेसे नशेमें मानथासुखे अपनाहारकी ओर फेरा औरखलीफाकोथीमर समझ
कहा मेरे इसरात्रिके चोरभीतर आवो तोमैं तुम्हें देखूं खलीफानिशंक मछलियां लि
ये हुये भीतरगया इस्त अफरोज़ने उन्हें देख कहा यह बहुत अच्छी मछलियां हैं इ
से मोललेपकवा औदारोगाने खलीफासे कहा अरे करीमइन मछलियोंकोशीघ्र हो
रसोईमेंलेजाकरभूनकरला थीरमने कहा बहुत अच्छा यह कह वह बारहदरीके नीचे
आया और वज़ीरसे कहा इसेसाफकरतरत तय्यारकर वज़ीरने कहाबहुत अच्छामैं इ
सकार्य्यमेंचतुरहूं बहुधामैंने अपनेहाथसे मछलीबनाईहैं फिरखलीफा औरवज़ीर
और मसहूरनेबावर्चीखानेमें जाय मसालोतेलजो कुछ आवश्यकथा लेके मछलि
यां पकाई और खलीफा एकपात्रमें उसरख बारहदरीमें लेजाय और उनके सन्मुख
रख एक नीबूभीसामने रखदिया जिसमें खटाईकास्वादहो उपरान्त उनतीनोंनेवहम
छलियां खाई और प्रसन्नभये नूरुद्दीन औरइस्त अफ़रोज़ने थीमरसे कहाहमनेऐसे।
स्वादकी मछलियां पकाई कि हमने ऐसे स्वादकी कभीनखाईथी सो उसने अशरफि
योंकीथैली निकाल जिसमेंकेवलचौबीसही अशरफियां शेषरहगईथी सबकीस
बखलीफ़ाकोदेडाली और कहा जो मेरे पासकुछ औरहोतातो तुमेदेसकता औ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

र कदाचित तुमसर्वमें आता तो इतना देता कि जन्मभर आनंद भोगता इस दशामें इस थोड़े द
वको बहुत जान ख़लीफ़ाने उस थैलीको नूरुद्दीनसे ले देखा तो चौबीस अशरफ़ियां
थीं अमित गुण मानकर कहा मैंने तुमसा दानी और उदार नहीं देखा परमेश्वर आपको
जीता रक्खे परंतु मेरी एक इच्छा है नूरुद्दीनने कहा वह क्या ख़लीफ़ाने कहा मैंने य
ह्यां एक बांसुरी रक्खी हुई देखी है इससे समझता हूं यह सुंदरी इसे बजाना जानती है
मुझे सुननेकी अति लालसा है जो आप आज्ञा दीजिये तो बांसुरीकी धुनि सुनतेंहैं आ
शीर्वाद दे चला जाऊं नूरुद्दीनने झट अफरोज़से कहा कि तू बांसुरी बजाकर इस अमीर
को सुना भला यह भी क्या याद रक्खेगा झट अफरोज़ मदिराके नशेमें और ऊपरसे म
छली भोजनकर अति आनंदसे बांसुरी उठा बजाने और स्वर मिला गाने लगी ऐसा गाई कि
दोनोंके स्वरमें कुछ भी अंतर न था ख़लीफ़ाने सुन धन्य २ किया फिर उसने केवल बांसुरी
बजाई वह सुन ख़लीफ़ा अति प्रसन्न होय कहने लगा वाह २ क्या सुर और क्या हाथ औ
का सुंदर कंठ और क्या गाने बजानेकी निपुणता और कोई ऐसा गाने बजाने वाला संसार
भरमें न होगा और न किसीने ऐसा गाना सुना होगा नूरुद्दीनका यह नियम था जो कोई उ
सकी वस्तुकी प्रशंसा करता तुरंत उसीको वह वस्तु दे देता कहा है योंमरमुफे विदित

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हुवा कि न तो गाना व जाना भली भांति समझता है मैने हुस्न अफरोज़ न के देखाली और वहांसे
उठ वस्त्र पहिर खलीफ़ासे बिदा भया और कहा इसे भली भांति राखियो और वहांसे चल
दिया हुस्न अफरोज़ उसकी उदारता को देख आश्चर्यमें हुई और बिचारने लगी जिस म
नुष्यने प्रशंसा मात्रमें ऐसी अपनी क्रियाको इस निर्धनतामें एक धीमर को देडालातो उसके
आगे कुबेर का धन क्या वस्तु है नैनोंमें आंसू भरकहा है प्राणनाथ कहां जावोगे बेठकेमे
रा अंतका गाना सुनो वह इसके कहनेसे बेठ गया सो हुस्न अफरोज़ बांसुरी हाथमेंले
और उसकी ओर सन्मुख कर उसी समयके रचित वियोगाके गीत गाने लगी और यह इच्छा
करने लगी कि उस धीमरको न दे जब गा चुकी तब बांसुरी फेंक रुमाल मुख और नेत्रो
पर राखली कि उसका रोना उसे विदित न हो नूरुद्दीन उसके रोने पर कुछभी बिचार न
कर चुपका बेठा रहा खलीफ़ा इस अवस्था को देख आश्चर्यमें हुवा और नूरुद्दीनसे
कहा मुझे विदित हुवा कि यह हुस्न अफरोज़ तुम्हारी लौंडी है तुम उसके स्वामी हो।
नूरुद्दीनने कहा है करीम जो कुछ तैने कहा सो सब सत्य है तू इतनेही बातको देख
अचंभा मत कर यदि तू मेरा संपूर्ण वृत्तांत जो इसके कारण मुझपर बीता सुनेतो और
कभी विस्मित न हो खलीफ़ाने कहा स्वामी मुझे वहभी सुनाइये नूरुद्दीनने संपूर्ण वृत्तांत।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

प्रथमसे अंतपर्यंतवर्णन कियाखलीफ़ाने सबचरित्र सुनउससे कहा अबतुम्हारी क
हां जानेकी इच्छाहै नूरुद्दीनने कहा जहांईश्वरलेजावे धीमरने कहा तुम कहीं नजाओ
बसराको चलेजा ओमें एक छोटा पत्रलिखदेताहूं तुम जबेनी खलीफ़ाको मेरी ओर
सेदेना वह इसपत्रको देखतेही तुमपर कृपाकरेगा फिरकिसी प्रकारसे तुम्हें दुःखनदे
गा और तख्तसे उतर तर्फ बैठाय अपना मुकुटउतार तेरेशीशपररखदेगा नूरुद्दीन धी
मरको उनबातों परबहुतहंसा ओरकहा कहां धीमर ओरकहां जबेनी बादशाह दृ
ष्टांत कहा राजा भोजकहांगंगातेली जोऊछूतनेकहा समझमें नहीं आता बादशाह
नेकहा प्रगटमें तोमुझे धीमर समझतेहो परंतु बालपनमें हम ओरवह एकही पाठ
शालामें पढतेथे उससमयसे आजतक उससे अति प्रीतिहै कईबेर उसने मुझेबुलवाभे
जा और कहा तुमहम मिलके बादशाहतकरें वालमेरा वज़ीर आज़महो मैंने इस स्वीका
रनकर आरव्यायपरस्थिर रहा परंतुकई मनुष्योंकोमैंने उसके निकटभेजा उसने उनके सा
थ मेरे लेखसे अधिक उपकारकिया नूरुद्दीन यह सुन धीमरसेपजी ऊवा अनंतरखली
फ़ाने दवात औरलेखनी आदिले पहिले महीन अक्षरों मेंपरमेश्वर कानामलिख इस
भांति पत्रलिखा ॥ पत्रकाविषय खलीफ़ाहारूंरशीद महदीकापुत्र इस पत्रकोजबेनी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि
१५३

अपने चचाके नाम भेजता है इस पत्रके देखतेही वजीर खाकानके पुत्रको जिसे मैंने पत्र दियाहै त
रंत पदपे बैठाना और आप उस पदसे उतरनाज चाहो उसके शिर पर धरना इस आज्ञाके प्रतिपा
लनमें बालभरभी अंतर न पड़े फिर खलीफाने उस पत्रको लपेट अपनी मुहर उसपर करदी
उसका मतलब नूरुद्दीनको न कहनाकर थैलीमें रख उसे दिया और कहा इसी समय ज
हाज़ जानेको तय्यार होगा सो उसपर चढ़ शीघ्र बासराको पहुंच नूरुद्दीन उस पत्रको ले बि
दाहो चला अनस्त अफ़रोज़ उसके पीछे रोती हुई दालानकगई और उसे बिदा कर ठठी उसा
से लगी अपने स्थान पर आय बैठी इब्नदारोगा चुपके २ नशेमें यह सब बातें सुनताथा
जब नूरुद्दीन वहांसे चला गया तब उसने खलीफाकी ओर जिसे धीमर समझताथा
देख कहा तू यहां दो मछलियोंसे अधिक नहीं लाया जिसका दोचार पैसेसे अधिक
नहीं पासका और उसके बदले अशरफियोंकी एक थैली और एक सुंदर लौंडी पाई
तू इन दोनोंको अपने घर लेजा नहीं सका आधी बांदी मेरी है और आधी तेरी और थैली
ला मुझे दे यदि उसमें रुपये हैं तो एक उसमें से तुझे दूंगा और सब ले लूंगा यदि अश
रफियां हैं तो उन सबको मैं लूंगा और कुछ पैसे तुझे दूंगा जब खलीफा मछलियां
लेनेको गयाथा तो उसने वजीरको आज्ञा दीथी कि शीघ्र महलमें जाय बादशाही का

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पड़े और चार पांच सेवक लाय यहां ठहर जिस समय मैं बारहदरी के किसी द्वार पर हाथ
मारूं तो शब्द सुनतेही मेरे कपड़े और मसरूर और सेवकों सहित आइयो सो वह वहां ले
आया अब यहांसे फिर दारोगाकी कथा कहते हैं खलीफाने हदको उत्तर दिया मुझे थै
लीका हाल मालूम नहीं कि उसमें अशरफीहैं वा रुपये जो कुछ उसमें होगा आधो आ
धपरस्पर बांट लेंगे परन्तु लौंडीको मैं न दूंगा और अपने घर ले जाऊंगा इसमें तुम प्रसन्न
वह हद धीमरको इस ढिठाई पर बहुत क्रोधित होगया और एक चीनीकी रिकाबी उठा
धीमरके शिरपर मारी खलीफाने अपना शीश हटालिया और वह पात्र दीवारसे लगके २
भया दारोगा पात्रके न लगनेसे अधिक अप्रसन्न भया और रोशनीको ले खलीफाको मारनेके
निमित्त लकड़ी ढूंढने निकला इतनेमें खलीफाने सीढ़ीके मार्गसे बारहदरीमें आय एक
किवाड़ पर हाथ मारा उसका शब्द सुनतेही जाफर मसरूर और चारों दास दौड़के बारहदरी
में आये खलीफा धीमरके वस्त्र उतार और बादशाही कपड़े पहिरके तख्त पर जो बारहदरीमें
पड़ा रहता था बैठगया दाहिनी ओर बजीर गई और मसरूर और नरनके पीछे वह चा
रों सेवक हाथ बांधे खड़े होगये इतनेमें वह दारोगा मोटीसी लाठी ढूंढ हाथमें लिये धी
मरके मारनेके हेतु बारहदरीमें आया और इधर उधर उसे ढूंढने लगा अकस्मात् उसकी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि
१५४

154

दृष्टिखलीफ़ापरपड़ी कि खलीफ़ा शाही कपड़े पहिने बैठाहै वज़ीरमसरूर औरसेवक
हाथबांधे दाहिने बांये खड़ेहैं आश्चर्यमें होकर विचारनेलगा किमैं स्वप्नावस्थामें हूंवाजा
ग्रतमें खलीफ़ाने उसेविकल देखकहाहै हसन किसे ढूंढताहै वहउनके पांवपर गि
रपड़ा औरगिड़गिड़ाय सुखदाई दृष्टी सेयों कहने लगाहै स्वामी मैंने बड़ा अपराध
किया उसेक्षमाकीजिये इतने में खलीफ़ाने तरवेस उनसेकहा मैंने तुझे क्षमा किया हसन
अफरोज़को इसदशाकेदेखनेसे धीरजहुवा और समझी कियह बाग और बारहदरी इ
सी बादशाहकीहै जिसने अपनाभेष धीमरका धारण कियाथा खलीफ़ाने हसनअफरो
ज़से कहा मेरेसाथचलनेतो तुझे जानगईहोगी किमैं कोनहूं मैंने किसीको नूरुद्दीन
के सदृश उदारनहीं पायाकि तुझसे सीपरमप्रिया को प्रसंसामात्र पर मुझे देडाला मैं
ने उसेबांसराका बादशाह करभेजाहै जिसपीछे भलेप्रकारप्रबंधहो जावेगा तुझे।
भी उसीकेपासभेजदूंगा जब तक मेरे महलमें ठहर हसन अफरोज़ यहबचन सुना।
हर्षितहुई औरउसे विश्वासहुवाकि अब नूरुद्दीन अवश्य बादशाहत करेगा फिर
खलीफ़ाने उसे अपने साथ महलमें लेजाय मलका जेबदा कोसौंप कहा इसेभले
प्रकाररखियो यह सुंदरी नूरुद्दीनकी स्त्रीहै अबयहांसे नूरुद्दीनकाहालतोसुनियेव

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ह्यूमरका पत्रकिवास्लव मेंवह खलीफ़ाहारूंरशीदकालिखाथा लेवांसराको सियाय।
वहां पहुंचनकिसी अपने मित्र औरनकिसीनातेदारको मिलासीधा बादशाही दर्बार में
चलागया उस समय ज़ुबेनी बादशाह अदालतघरमेंइन्साफ़कर रहाथा वहनिश्शंकभी
ड़में पैठ बादशाहके समीप पहुंचा और पत्र उसे दिया उसने प्रथम पत्रकोलेतीनबेर
चूमा और चाहाकि तरंतउस उत्तरपत्रकी आज्ञाको प्रतिपालन करे इतनेमें स्वयवज़ीर
जो नूरुद्दीनके प्राणका वैरीथा आया बादशाहने वह पत्रउसे दियावह उसपत्रके प
ढ़तेही अति विकल हुवाफिर कुटिलतासे उसपत्रको वहानेसे बाहर प्रकाशमें लेजाय
पढ़नेलगा और वहा उस पत्रमें जहांईश्वरकानाम और खलीफ़ाकी मुहरथी कतर
के खागया और फिरबादशाहको आय पत्र दिया और कहाकि हुजूरकी आज्ञाहै
बादशाहने कहा इस आज्ञाकोपालनकरना अवश्यहै वज़ीरने कहायह खलका प
त्रजान पड़ताहै यदिवास्लव मेंखलीफ़ाकेहाथकालिखा हुवाहोतो ऐसा जानपड़ता
है कि इसने मेरी और आपकी नालिश खलीफ़ासे कीहोगी खलीफ़ाने इसकी सिपार।
स लिखी होगी किइसे डावमनिदोनयह किजोकुछ इसमें लिखाहै वर्ताव कियाजा
वेजो कुछ मैने कहा इसे सममानिये औरकिसी भांतिकी चिंतानकीजियेजोपरमेश्वरन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सोद
१५५
155

चाहे आगे किसी प्रकारकी हानिहोगीतो उसकामैं जिम्मेदारहूं ज़बेनौनि वज़ीरके क
हनेको मानन् रुद्दीनको स्तयको दियास्तयकि उसके रुधिरका प्यासाथा अपने मह
लमेंले जाय उसे भली भांति मारनेलगा ऐसा माराकि वह रुद्दीन मृत्तुतल्य होय मूर्छित
भयानिस पीछे उसको अतिसत्म स्थानेमें कैदकर उस पर चौकी नियत कर आज्ञा
दीकि केवल एकही बेर इसकोरोटी और जल देना कुछकाल पीछे जब नरुद्दीन स्व
थिमें आया तोक्या देखताहै किमैं महा मलिन और दुर्गंधित स्थानमें पड़ाहूं वहऐ
सा सत्मस्थानथाकि स्वासा उसकीरुकने लगी अपने दुर्भाग्यतासे ग्लानि करकहने ल
गाकि उसथीमरने मेरेसाथभला उपकारकिया और मैंनेभी अपनी दुर्बुद्धितासे उस
की बातमानइस आपदामें पड़ानिदान छः दिनतक नूरुद्दीन उसी सत्म और महा
मलिनस्थानमें पड़ारहा सातवें दिन वज़ीरने उसके बधकी इच्छाकी परंत उसे अपने
घरमें मारनेका अधिकारनथा इसलिये एक बहाना उठाया अर्थात् कई सेवकों के
शिरपरस्वच्छवस्त्रकी किश्तियां धरबादशाह के सम्मुखले गया और कहा यह वस्त्र
नवीन बादशाहने आपके निमित्तरत्न औरंगाजको आज्ञासे भेजीहैं बादशाहने स्व
यसे कहा वह अभागा क्या अबतक जीताहै मैंजानताथा कि उसे तैंने अबतकमारा।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

डाला होगा उसने कहा मुझे अधिकार नहींजो किसीको अपने घर परमारै उसने कहाह
से अभीजाके वधकर उसने कहाहजूरमैं आपके इन्साफसे बहुत प्रसन्नहुवा परंतु मैंचा
हताहूं जिसप्रकार नूरुद्दीनने संपूर्ण मनुष्योंके साम्हने बाजारमें मुझे मारा उसीप्रकार
वहभी शाहीदरबारमें माराजावे बादशाहने स्वीकार किया नगरमेंडौंडी फिरी किक
ल अमुकसमय नूरुद्दीन जिसने वजीरसेढिठाई कीथी उसके बदले गरदन माराजावे
गा जिसे देखनाहो शाही दरबारमें आय देखो फिरमहा दुष्ट औरनिर्दयी वजीरबीस
दासों सहित चंडीगृहमें गया औरबड़ी अप्रतिष्ठासे नूरुद्दीनको अंधे बेजीनघोड़ेपरसवा
राकिया उसने अपनी यहदुर्दशा देखकहा मैंने प्राचीन पुस्तकों में पढ़ाहै जो कोई कि
सी निर्दोष मनुष्यको दुख देताहै उसका फलवेगही पाताहै वजीरयह वचनसुन अति
अप्रसन्न भया औरकहाहै अयोग्य दुष्ट तुझे ढंगवाका कहताहै मैंनेतेरी इस ढिठाई
को क्षमा कियाक्योंकि दारुण मात्रमें तूमारा जावेगा औरतेरे नाककान काट शहरभरमें फिरा
या जावेगा मैंनेभी किताबों में पढ़ाहै वह मनुष्य बड़ा भाग्यवानहै जो अपने बैरीको मरा
हुवा देखे उपरांत उसके सेवकोंने नूरुद्दीन को शाहीदरबारमें लेजाय एकबड़े बनमें जोशा
ही महलसे संबेपितथा वधकरनेके लिये बधिक कोदिया औरचारों ओरसे सबको औ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सि॰हि॰
१५९

156

रसिपाहियोंने उसेबीचमें करलिया और वधिकने आकर नूरुद्दीनसे कहा मेरा अपराध वि
च मैं न धरना मैं आपका आज्ञापालक हूं और इसकार्य्यसे मेरी जीविका है बादशाह ने
मुझे तुम्हारे मारने की आज्ञा दी है तुम्हें इस समय कुछ खाना पीना हो वा कहना सु
नना हो तो कह सुन लो और खा पी लो नूरुद्दीन इसभयानक समयमें किसीको अप
ना सहायक न देख अपने प्राणसे निरास हुवा फिर जल मांगा मनुष्योंने तुरंत दौड़ ए
क जलका पात्र भर उसे दिया वह पीनाही था कि तुरंत वज़ीर वधिकपर खफ़ा हुवा
कि इतनी देर उसके मारने में क्यों की जल्द उसे मार सब लोग वज़ीरको निर्मोही देख
उसको गालियां देने लगे जल्लाद वज़ीरके खफ़ा होनेसे खड्ग निकाल शिर काटना
चाहता था इतनेमें बादशाहने खिड़कीसे झांक वधिकसे कहा ठहर जावो कि उस
ने ऊंचेसे देखा कि एक बड़ा कटक चला आता है वज़ीरसे कहा देखतो यह सेना क
हांसे आती है वज़ीरने बादशाहको भुलानेके लिये कहा कुछ नहीं यह गर्द जो आ
प देखते हैं पुरवासियों की है बहुत्या सवार और प्यादे इस अयोग्यके तमाशा देख
नेको चले आते हैं सेना नहीं है वधिकको आज्ञा दीजिये इसकृतघ्नको बधकरे
बादशाहने कहा नहीं जबतक मुझे इन सवारों का वृत्तान्त ज्ञात न हो गा मैं उसके मार

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

की आज्ञा नहूंगा जानना चाहिये खलीफ़ा नूरुद्दीनके हालको भूलगया और उसके विचा
रसे वह प्रतिज्ञा जो उसने ऊस्त अफरोजसे सेना और रथन नूरुद्दीनके भेजनेको कीथी उत
रगई इसको कई दिनबीते एकदिन वह अपने महलमें जहां उसको सबवोदिया औ नूरु
द्दीन कोलौंडीथी गया वहांऊब गानेका शब्द सुना कि कोई स्त्री वियोगके गीत बड़े वि
कलनामें गारहीहै उसे ठहरके सुननेलगा औरसेवकोंके प्रधानसे जो उसके साथथा पू
छा यह कौनसी स्त्री गारहीहै उसने कहा यह नूरुद्दीन कीलौंडीहै जिसको हुजूरने
बादशाहकर जबेनीकी जगह भेजाहै खलीफ़ाको स्मरणभई और कहनेलगा हाः खेदहै
कि मुझे दीन नूरुद्दीनकी सुधि नरही जाफरवज़ीरको बुलाके कहा मैं सनद और आज्ञा
नूरुद्दीनके निमित बांसराको भेजाना भूलगया अब यहां ठहरना नचाहिये तुरंत कट
क साज बांसराको सिधार औरवहांजाके देख यदि नूरुद्दीनको मारडाला होतो तुरंत व
हाके वज़ीरको बंधकीजियो यदि उसे जीता पावेतो उसे जबेनी औरवजीर समेत शीघ्र मेरे
सन्मुख लाइयो वज़ीर तुरंत सेनासहित बांसराको पधारा जिस समय वीपक नूरुद्दीनको
मारनेलगा देव योगसे वह उसी समय पहुंचा लोगोंने उसेदेख दाहिने गयेंहो कर उसमा
गदिया वह अपने घोड़े औरसवारों कीसेना समेत जबेनीतक शाहीदरबारमें पहुंचा ज़

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सदि
१५७

157

वेनी वज़ीर आज़मकोदाव उसकी अगवानीको सीढ़ीतक आया और उससे भेंटकर अति
प्रीतिसे आदर सत्कार किया वज़ीरने पहिले नूरुद्दीनका वृत्तांत पूछा कि वह जीता है
वा नहीं यदि जीता है तो उसे तुरन्त लाओ सेवक बादशाहको आज्ञाके अनुकूल उसी द
शासे उस वज़ीरके संमुख लेगये वज़ीरने उसी काल उसके बंधन खुलवादिये और उसी
रस्सीसे सूय वज़ीरको बांधा उस दिनतो वहीं ठहरा रहा दूसरे दिन नूरुद्दीन जबतो बाद
शाह और सूय वज़ीरको अपने साथले बुगदादको सिधाए और वहां पहुंच उनतीनों
को खलीफ़ाके निकट लेगया और बादशाहसे सूयके वैरका समाचार वर्णन किया औ
र यह भी कहा जो एक क्षण पहुंचता तो नूरुद्दीन मारा जाता खलीफ़ाको नूरुद्दीन
पर बड़ी दया उपजी और कहा कि सूयको तू अपने हाथसे बधकर नूरुद्दीनने विनया
को स्वामी यद्यपि यह मेरा और मेरे पिताका शत्रु है तथापि मैं अपने हाथको उस दु
ष्टके रुधिरसे भरना नहीं चाहता खलीफ़ाने उसके साहसपर धन्य २ किया औ
कथिरसे वधिकको आज्ञा दी कि इसकी गरदन मारदो उसने तुरन्त अपने कुकर्मका द
ड पाया फिर खलीफ़ाने चाहा कि नूरुद्दीनको बांसराका बादशाह करके भेजे परंतु उ
सने विनयकी इस अप्रतिष्ठा पर इस सेवकने सौगंद खाई है कि फिर उस शहरमें अपने

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जन्मभरनजाऊंमैं चाहताहूंकि आपकी सेवामें तमररहूं वादशाहने उसे निजसभामें एक
सभासदनियतकर एक बड़ा मकानदिया और बड़ी जागीर उसकी नियतकी किवह अपने
उदारतासहित जन्म अफरोज़के साथजन्मभर बड़े आनंदमें रहे और जबेनो वादशाह आ।
ज्ञा नपालन करनेसेदंडको पहुंचा फिर वज़ीर आजमके कहने सुननेसे उसबोसराकोबि
दाकियाशाहज़ादेजबयह दृष्टान्तकथा कह चुको उनियाजादने दूसरी कथा कीइच्छा।
की नवशाहज़ाद इस भांति एक औरचरित्रकहनेलगी ईरानके बदर नामकवादशाह
और समदालदेशकी शाहज़ादी का चरित्रस्वामी ईरान देश अति विशाल नगर है सर्वे
मैं यहांके बादशाहों की चक्रवर्ती वादशाहकी सेनाथी और अन्यवादशाह उसके
आधीन और कर देतेथे उन सबमें एकवादशाह अतितेजस्वी महाप्रतापी बहुत से
ना औरकोष रखना बहुतदिनतक उसने बादशाहतका सुखभोगा उसको किसी बा
कारकी संसारिकविद्या अस्त्रज्ञानादिके विषयनथी उसकी सोबीबियांथीं औररह
रपकके निमित्त सैंकड़ों बांदियां सेवाके लिये नियतथी परंतु किसीसे बेटा नहीं हो।
नाथा इसके विशेष हर२ कौपारीमहास्वरूपवानस्त्रियां लाते वह बहुतसा द्रव्यदे उन
को मोलले उनके साथ भोगकरताकि उनहीसे संतान उत्पन्नहो औरइसीवाञ्छासे अप

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नी जानिके सिद्ध और बडोंसे सहायता चाहता कि उनके आशीर्वादसे हो मेरा मनोरथसि
द्ध हो और हजारों रुपये अशरफी निर्धनोंको दिया करता कि इसीमें ईश्वर की कृपा मुझ
पर हो और अपनी चिंता मिटानेको बुद्धिमानोंसे बहुतसी कथा सुनता एकदिन एक से
वकने बादशाह से कहा महाराज एक ब्योपारी बहुत दूरसे अति सुंदर दासी लाया है
और चाहता है कि उसे आपकी भेंट करे बादशाहने कहा अच्छा उस ब्योपारी से कहु कि
उस दासीको लावे दूसरे दिन वह ब्योपारी बांदीको लेके द्वार पर आया बादशाहको सला
मकी बादशाहने उससे पूछा तुम किस देशसे आये हो और वह बांदी कैसी है ब्योपारीने
विनयकी स्वामी मैं बहुत दूरसे बांदी लाया हूं कि वह अपने स्वरूपमें अद्वितीय है बा
दशाहने कहा वह कहां है उसने कहा मैंने उसे अमुकदासको सौंपा है आज्ञा हो तो ले
आऊं बादशाहने उसे बुलवाय देखा तो उसके अति सुंदर रूपको बहुत पसंद किे
या और उसके चन्द्रमुख पर काली घुंघरारी लटें अति शोभायमान मानों चनेमें दा
मिनी उस रूप अनूप मनहरण उरविदारणको देखतेही बादशाह मोहित हुवा और अ
पने केलि गृहमें इस ब्योपारी समेत उसे लेगया निदान पीछे जब उस बांदी के मुखपरसे
वस्त्र उठाया तो बादशाह उसको कामदेव की स्त्री रति सदृश और मैंने मृगवत् दे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

खे अचेतहुवा जबचेतनमहुवातोव्योपारीसे उसकामोल पूछा व्योपारीनेकहास्वामीमे
ने इसेयकहजार अशरफीको मोल लियाथा और इतनाहीतीनवर्ष इसे खिलाने पहि
नानेमें व्ययहुवा अब इसे आपके भेंट करताहूं बादशाहने अतिप्रसन्नहोय कहामेरीरी
तिनंहो किकिसीसे भेंट विनामोललूं किंतु उसगुणगुणमोलमें धनीको देताहूं नि
दान बादशाहने दस हजार अशरफी उसव्योपारीको दी वहव्योपारी उसीसमयदसतो
ड़े अशरफियाले विदाभया फिरबादशाहनेकईदासियां औरकई सेवक उसको रक्खा
आदकेहेत नियतका आज्ञादीकि इसे हम्माममेंलेजाय स्नान करायस्वच्छवस्त्र पहि
राओ उन्होंने भलीभांति मल नहला औरउत्तम वस्त्र और अतिसुंदरहीरे आदि जटित
आभूषण और मोतियोंकी अति मनोहरमाला पहिरायबुलबुलहिनके सदृश अलंकृत
किया वह सब उसकेरूप छबि अनूपकोदेखविस्मितहुये और उन्होंने बादशाहसे
विनयकीतीनचार दिन यह विश्रामकरे जिससे मार्गकाथकेंवा जातारहे और स्वस्थचि
नहो जावे औरबलकारीपाकभोजन करेफिर जब इसेदेखियेगातो विश्वासहै कि व
ह पहिचानी नजावेगी उसकारूप आजसे द्विगुणाहो जावेगासोबादशाहने तीनदिनत
क उससे भोगनकिया प्रगटहोकिईरानकीदारुल्सलतनत उससमयएकसमुद्रकेकूल

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
१५८

158

परथी और शाही महलखारी समुद्रके तीरथावह बांदी बहायाउस महलसे जोडसे निग
सकोमिलाथा समुद्रकी ओरदेखती औरउनसवतरंगोको जो महलकीदीवारसे लगा
केटकराखांतीतमाशादेखती निदान तीसरे दिनसमुद्रकी ओरकाद्वारखोल झरुखो पर
वैठीथीकि बादशाहको समाचारपहुंचा कि अबसे वहसावधान होगईहै वह वहां
गया बांदी समझी किमेरी कोई बांदी आईहै ऐसेविचारसे बादशाहको ओर देखा प
रंतुऊठकबादशाह कासन्मानन किया बादशाह उसके मनोहर स्वरूप कोदेख आश्चर्य
में हुवा और उसकेसत्कारनकरने से समझा अभीयह सिखाई नहीं गई जब बादशा
ह उसके समीप गया तोभी उसे वैसाहीचुपदेखा परंतु बादशाहके विहारादिके क
रनेसेनरोका निदान बादशाहने संगमांतरेमें उसके कहा मेरी प्राणप्यारीतू किसदे
शकी रहने वालीहै औरतेरे माता पिता कौनहैं औरउनकानाम काहै जिनसेतूरूप
सी अप्सरा उत्पन्नहुई यद्यपि मेरे घरमें सहस्रों बांदियां रूपवती वर्तमानहैं परंतुतेरे
समानकोई नहीं औरजितनी मुझे तेरी प्रीतिहै इतरोसेनहीं वह इन बातोंको चुप
को सुनाकीवरन जिह्वाभीन हिलाई बादशाहने थोडीदेर पीछे उसे कहाहे प्रियातू
ने मेरे ओर आंख उठाके देखाकि मेरे नेनठंडेहोते औरतू कौन शोकमें मुरझायरहीहै

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तुरंत बताकि इससेमें अति बिकलहूं यदि अपनेदेश वामाता पिताकोस्मृतिकर कुढती
होतो वहहोतोनहो आसके इसके विशेषसंसारकी सकल वस्तु विद्यमानहैं उसने किंत
नेहो इसभांतिके वचनकहे परंतुननो यह बोली औरन आंख उठाके उसको ओरदेखा
चुपकी एस्त्रीकी ओरदेखतीरही परंतुबादशाह कुछ अप्रसन्न नहुवा और मनमेंशो
चा आगे जबहिलमिल जावेगी नबबोलेगी फिरउसने हांकदी सुननेही दोवादियाऔ
र सेवक आये बादशाहने भोजन मांगा उन्होंने तुरंत नाना प्रकारके व्यंजनलादिये बा
दशाह लौंडीके साथ भोजन करने लगा और अपनेहाथसे उत्तम २ पाक उसके सम्मुख
रखता जाताथा वहसुंदरी उसी भांतिसे चुपकी भोजन करती रहीइस हेतु बादशाहने
उसके प्रसन्न करने को अनेक प्रकारके चरित्र दिखाये औररात्रिको उसके सम्मुख नृ
मको आज्ञादी कि मनउसका बहल कर हृदयका शोकजाता रहे तोभी वह मृगन
यनो उसीप्रकार चुप रही निदान बादशाहने उसके नियत सेवकोंसे पूछाकि इससुंद
री का तुमने हंसते बोलते देखाहै उन्होंने कहा हमने कभी इसको बोलते करतेभी न
ही सुना जबसे वह आई सदाचुपरहतीहै निदान बादशाहरात्रि भर उसके साथ र
हके विहारकर ऐसा प्रसन्नहुवा कि किसी स्त्रीसे ऐसासुखनहुवाथा और सबसे अ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
१५९

159

थिकउसे प्यारकरनेलगा ओरइच्छाकी किइसके सिवा कभी किसीसे बिलासनकरूंगा तदनं
तर अपनी संपूर्ण स्त्रियोंको बुलाया ओरउनको बहुत सीवस्त्र ओर द्रव्य आदिकदेकर
आज्ञादीकि जिसकाजिससे मनचाहे विवाहकरले परंतथोड़ी सीबांदियां लोंडीके लिये
रखलीं एकवर्ष पर्यंत बादशाह उसके ऊपररहनेसे अतिविकलरहा एकदिन उस सुं
दरीसे कहाहेमेरी प्राणप्यारी बड़ाखेदहै किमुझे तेराहुनोना विदितनहीं कितू मुझसे
प्रसन्न हेवा अप्रसन्न ओरमैंतो तेरासत्कार यथावस्थित करताहूं तेरीही प्रसन्नताके लिये
मैंने अपनी सबस्त्रियों कोपरित्याग कियायदिईश्वरचाहे तू गूंगीहैतो महाअनर्थहै कि
ऐसी सुंदरी रूपवती मेंइतनाबड़ा दोष यदिगूंगी नहींतो कुछ बोलक्यों कि मुझे ऊपर
रहने से अतिकष्टहै ओर एकवर्षमें मेंरात दिन परमेश्वरसे यह मांगताहूं किजो तेरे उद
रसे कोई पुत्र उत्पन्नहोतातो मेरे पीछे बादशाहत करताक्योंकि दिन २ मेरी आयु घटती
ओरनिर्बलता दबाती जातीहै परमेश्वरके वास्तेजो तूगूंगी नहींतो मुझसे कुछ बात
करनहींतोमैं प्राणदेताहूं मेरी हत्यातुझ परहोगीवहसुंदरी यह बचनसुन उसकीओ
रदेख मुसकराई बादशाहने उसके इस सुंदरभावसे आनंदितहोय जाना अबयह बो
लेगी प्रसन्नतासे उसकी ओरदेखनेलगावह मनहरणीथोड़ीदेरपीछे बोलीमें बहुतसी।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

बातें आपसे कहना चाहती हूं परंतु मैं नहीं जानती कि पहिली बात कौनसी कहूं इस कालांतर में
तुमने मुझ पर इतनी दया की जिससे मैं आपका धन्यवाद करती हूं वह ईश्वर सर्वोपरि तुमको
इसका बदला दे और १२० वर्ष पर्यंत तुम जीते रहो और तुम्हारे शत्रु प्रतापरूपी अग्नि से जल
के भस्म हों और आप नित्य प्रसन्न रहें आपको शुभ समाचार देती हूं मुझे तुमसे गर्भ रहा आशा
है कि पुत्र ही उत्पन्न होगा और जो ऊपर इस समय में दिठाई हुई क्षमा कीजिये न बोलने का य
ह कारण था अब तक मेरा मन तुमसे प्रसन्न न था परंतु इस समय में मैं तुम्हें मन बच से चा
हती हूं ईरान का बादशाह उसके यह कोमल मनोहर वचन सुन इतना प्रसन्न हुआ जिसका व
र्णन नहीं हो सकता और उससे लिपट गया और कहा मेरी आंखें अब रोशन हुई और गर्भ का
शुभ वृत्तांत सुन महा हर्षित हूं यह कह उठ खड़ा हुआ और कहा अब मैं जाके यह शुभ समा
चार सबसे प्रकट करता हूं फिर बाहर आके वजीर से कहा एक लाख अशरफ़ी याचक मंगतों को
अभी दो और जिसको जो आवश्यकता हो उसे चुका दो उपरांत महल में आ उस सुंदरी से कहा
मुझे क्षमा करना मैंने यह सब वृत्तांत तुमसे सुन अपने वज़ीर आदि दर्बारियों से कहा अब
तुमसे बहुत बातें सुनना चाहता हूं प्रथम यह कि एक वर्ष पर्यंत अप्रसन्न होकर चुप क्यों रहीं
उसने कहा मेरे उदासीन चित्त का यह कारण था कि परमेश्वर ने मुझे तुम्हारी दासी किया और आप

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्धि
१९०

160

नेदेशसे रतनाहारफेंकाकि वहांजानेकी फिर आशानहो इसके विशेष अपनेमाता पिताऔ
रभाईबंधुसे वियोगजब मनुष्यहमसेरेका आधीनहो उसकेलियेमहाउनमेंहै यह सब बातें
मेरेउदासरहनेकोथी बादशाहने कहाहै सुंदरीजो तुमने कहा सोसमहै परंतु जब कि
कोई अतिसुंदरहो और उसकी प्रीति बादशाहके हिदयमें पैठेतो चिंता कीजगहनहीं
उसने कहायह सब वचनजो आपनेमेरे धीर्यके लियेकहे उचितहैं परंतुबांदी बांदीहीहै
बादशाहने कहाहैमृगनयनी तुम्हारी वार्तासे प्रतीतहोताहै कितुमाकिसीबड़े घराने कोपु
त्रीहोसुके अपना और अपने माता पिताकानाम जिससेतुमसी चंद्रमुखीमृगनयनी उत्पन्नहु
ई हाल सुनाओ और उनका निवासकहोहै उसने कहा साहबमेरा नामगुल अनार आशीन
है मेरा पिता आशीन नामक नदका बड़ा बादशाहथा उसनेमहासमय मेरे सहोदर भ्राता
सालक औरमेरी माताको संपूर्णबादशाहतसौंप दीमेरी माताभीउसनदके किसी बादशा
हकी बेटीथी हमतीनों अपने राज्यमें आनंदमंगलसेरहतेथे अकस्मात् एकशत्रु मेरेपिता
का मरना सुनसकटकहमपर चढ़ाहमारीबादशाहत छीन ली मेरा भाईउसकासाम्हना
नकरसकालाचारहोसुके औरमेरीमाताकोउमवहांसे लेके निकल आया कई दिनपी
छे मेरे भाईने मुझकोएकांतमें लेजाय कहा हम तुमको आपत्तिमें पड़ेहैं यदिभाग्यसहा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

एकहोतोमेरी इच्छाहै कि किसी यत्नसेबैरीको अपनेदेशसेनिकालें औरबादशाहतकरेंदस
से पहिले तेरा बिवाहकरदूंपरंतुमेरी दृष्टिमें जलवासीको ईशाहज़ादानहीं जचता यही इ
च्छा रखताहूं तेराब्याह किसी पृथ्वीकेशाहज़ादि से करूंजहांतू आदरपूर्वकरहै जोकु
छ कितेरेदहेज आदिकी आवश्यहोगी अपनी सामर्थ्य भरतय्यार करदूंगामें अपने भाई
के मुखसे यहवचनसुन अति अप्रसन्न औरमहाकोपितहुई औरउससे कहा सुनोभाईमें औ
र तुम दोनोंएकहीजलनिवासी मातापिताके वीर्यसे उत्पन्नहुये और आजतककोई शाह
ज़ादी धरतीके शाहज़ादेसे ब्याहीनगई मुझे यहबातकब अंगीकारहै किमेरासंबंध उनसे
होमैं यही चाहतीहूं कितुम्हारीदशामें मैंभी रहूंयदि इससेभी डावपड़ेतोतुम्हारे साथ
प्राणदेनेकी तमरहूं मेरेभाईने कहा यह दूसरी बातहै परंतुहे प्यारीबहिन जोतुमपृथ्वी
के बादशाहीसेब्याह करना अंगीकारनहीं करती इसका क्याकारणहै क्या पृथ्वीके बा
दशाहसब कमीने औरअयोग्यहैं ऐसानहीं जोतुम समझतीहो किंतुबहुतसे उनमें भ
ले मानस उच्चजातिहैं निदान भाईने इसविषयमें मुझे बहुतसमझाया वह मुझे बहुत।
बुरामालूमहुवा औरमनमें अति कोपितहोकर उससमयतो चुपहोरही फिरजबमेरा भाई
मेरे पाससे उसके किसी औरकार्यमें प्रवृत्तहुवा मैंनदसे निकल पृथ्वीपर आई औरएक।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सही द्वीपमें पहुंच किसी ऐसे स्थान पर जहां किसी मनुष्यकी आवागमन न थी जायथककर अ
१९१ चेत होय सो रही मैंने अपनी बहुत रत्नाकी किकोई मनुष्य मुझको न पहुंचे परंतु कुछ लाभ
कारी न हुवा सो एक प्रतिष्ठित मनुष्य मुझे सोते देख अपने सेवकों सहित वहां आया और मुझे
161 उठवाकर अपने महलमें ले गया और मुझे बहुत प्रीति कर मुझसे चाहा मैं उसकी इच्छा
पूर्णकरूं परंतु मैंने उसको आरनेटावा जब उसे ज्ञान हुवा कि यह विनयसे न मानेगी तब
उसने बरजोरी भोग करना चाहा मैंने उसे इस ढिठाईका ऐसा दंड दिया जिससे वह लज्जाके
प्राप्त भया निदान उसने निरास हो मुझे इस व्योपारीके हाथ बेच डाला यह व्योपारी बड़ा भला
मानस और सुशील था कभी मुझे उससे कष्ट न मिला किंतु बात चीत भी न हुई इतना कह फि
रगुल अनार बोली यदि आप मुझसे इतनी प्रीति न करते तो मैं तुमसे कदाचित् प्रसन्न
न होती और यदि अनीति मांझी मुझसे करते तो मैं उस द्वारसे जो समुद्रकी ओर है
छूट अपने कुटुंबसे जा मिलती परंतु एक ही चिंता थी यदि मेरी माता और भाईको ज्ञा
न होता कि मैं अमुक बादशाहकी बांदी हुई तो लज्जासे मुझे तुरत मार डालते जो मेरे उदर
से पुत्र उत्पन्न होजावे तो निस्संदेह यहांसे नहींजा सक्तीहूं इस दशामें मुझे अपनी दासी जा
नता परंतु मेरा सन्मान अपनी स्त्रीके सदृश करना जब गुल अनारने अपना संपूर्ण वृत्तांत

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

बादशाहसे कह सुनायातो बादशाहनेकहातेरे सुंदरस्वभावसे अति विचित्रबातेंसुनीं।
जोभलीभांति समझमें नहीं आतीं मुझे इच्छाहै किउन सबको निश्चय कर अपने मन।
कोधीरजदूं परंतु प्रथममैं तुम्हारा गुणमानताहूं क्योंकिमेरी तुमसे अतीव प्रीति प्रतीत
हुई और सबसे अधिक मेरे चित्तको यहभयसाहुवाकितुमभी अपने देशकी शाहज़ा
दीहो आजसे तुमको मैंने मलकामुल्क ईरानकानाम दियाकलमैं अपनेराज्यभरमेंडौं
डी फिराऊंगा कितुम आगे सम्मुंदालकी शाहज़ादीथी और अब ईरान देशकी शा।
हज़ादी हुई औरतुम्हें नित आदरकर सर्वसे तुमसे अधिक प्रीति करूंगा औरतुमभीसि
वाय मेरे औरकिसीसे प्यारनराखना अबतुममुझेबताओ किक्योंकरतुमजलमेंरहस
कीहो औरइतनी नहीं सर्व मैंने सुनाथा कि मनुष्य जलमें रहतेहैं परंतुविश्वासनहु
वा अबतुझेभलीभांतिज्ञातहुवा कि वह सत्यहै यहांतककि तुमदरियायी परीहोपर
नआश्चर्यछितहूं कि मनुष्य जलमेंक्योंकररहतेहैं औरअपनाकामकाजकरतेहैं शाह
ज़ादीने कहा यदिपानी कितनाही बाहराहो परंतु हमारी दृष्टिवैसीही पहुंचतीहै ह
मजलमें बस्तुओंको दूरसे देखसकतेहैं समुद्रमें रात दिनसमानहै जैसाकिहम पृथ्वीमें
सबवस्तुओंको दूरहीं वानिकटदेखसकतेहैं तैसाही नीरमेंभीदेखतेहैं हमें चंद्रमास

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

साहि
१९२
162

वैदा जलमें अपना सुंदरप्रकाशदेताहै औरहमवहांसे अपरिमित तारागण औरग्रहोंको
देखसकेहैं जिसप्रकारधरती प्रदेश प्रदेश पुरग्रामादिहैं उसीभांति हरएक बादशाहके
भिन्न २ हैं किंतु धरतीसेतीनहिस्से वहांवस्तीहै और प्रतिदेशमें बहुतसी विशालवस्तियां
हैं जैसाकि यहां सबजातिभिन्न रहतीहैं यही दशावहां कीभीहै और वहांकेशाहो म
हल अति विशाल और सुंदर संगमर २ केरंगवरंगेनिर्माण किये जातेहैं और उन महलों
में सीपविलौर मूंगा और अनेकप्रकारकेरंगकी मणिजड़ी जातीहैं जलमें रत्नधरतीकी
अपेक्षा बहुतहैं औरमोतीतो असंख्य इतने बड़े २ होते जिनकोमें विचारनहीं करसकी औ
र वहां महलसब लोगबनालेतेहैं और आवा गमनके निमित गाड़ीवासवारी की आव
श्यकता नहीं क्योंकि वह दूर २ अग्निहगमनासे चलेजातेहैं बादशाह लोगदर्याई घोड़े
अपने घुड़शाल में अपनी शोभाके लियेरखतेहैं जबकभीतमाशादेखने कहींजातेहैं तो
उन्हें संगालेतेहैं वह घोड़े इसस्तुगमतासे जलमें चलतेहैं कि सवारहिल नाभीनहीं
सकतेहैं और गाड़ियांभी अतिहलकी औरउत्तम बनातेहैं उनपरबादशाह तमहयर सवारहोतेहैं केव
ल सैनसेही वहगाड़ी जिसओरचाहें बिजली औरवायुकीसदृशचली जातीहै थोड़ेही का
लमें दूसरे नगरको पहुंच उसपर सैरकरने फिरतेहैं वहांकीस्त्रियें अनंत सुंदर औरप्रतिसे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गमें चतुरहैं यदि आज्ञा दीजिये तो अपनेभाई औरमाताकोजोमेरे देखनेके बिनाअति शो
क प्रकरहैं यहां बुलाऊं कि परस्परदर्शन लाभ प्राप्तहो जबमैं उनसे यह कहूंगी कि मैंने
इतने बड़े ईरानके बादशाहके साथ विवाह कियाहै वह अनंत प्रसन्नहोंगे बादशाहने
कहाहे मृगनैनी तुममेरी प्राणप्यारीहो उनको अति प्रसन्नतासे बुलाओमें उनकायथायो
तसन्मान करूंगा परंतुबड़ा आश्चर्यहै किवह यह नहींजानते कि तुमकहां रहतीहो।
फिरक्योंकर बुला आवेगी गुलअनारने कहा स्वामी इसकीकछु शंकामतकरो क्षणमात्रमें
वह सबयहां पहुंचेंगे तुमइसमकानसे उठकरदूसरे मकानमें जावैठो औरकिवाड़ मूंद
फरोखेसे उनको आगमनकातमाशादेखो बादशाह वहांसे उठदूसरे मकानमेंगया औ
रद्वार मूंद फरोखेमें से देखने लगा गुल अनार मलकाने अपनीदासीसे अग्नि मंगवाई औ
रकहातू बाहरजाकिवाड़ मूंदले औरजब तकमैं नबुलाऊं मेरेपासन आइयो जबमलका
अकेलीहुई उसने छोटासा एक संदूकचा खोल एक चंदनकीलकड़ीकाढकर निका
ला औरउसे आगपररकखा जब उसमेंसे धुआं निकला औरऊंचाउठातबकोई मंत्र पढने
लगीवह शाहबादशाहन समझताथा औरउसहृदयमेंलालसारख उधरकोही देखनेलगाउ
समंत्रके स्मरणहोतेही नदबढ़ने औरउमड़नेलगा बढ़ते २ उसराजमहलके बराबरपहुंचा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
१९२
163

कुछकालमें नदका जलफटगया उसमें सेएक तरुणसुंदर पुरुष प्रगट हुवाजिसको मुखें
जलके सदृशलहरीथी फिरएक स्त्रीनिकली उनके पीछे पांच स्त्रियां योवनवतीनिकलीं
गुलअनारने आगेबढ़ उनकी अगवानीकी औरपरस्पर भेंट भई जबजलसेनिकलतटपरपहुंचा।
कस्य गुलअनारकेनिकट पहुंचेतो सुल्तानसालह और उसकी माता और संपूर्ण स्त्रि
योंने पारी २ सेगुल अनारमलकाको अपने २ कंठसे लगाय नेत्रोंसे आंसूबहाये उसनि
भीसबका यथोचित सत्कार करदेगया उसकी माताने कहा हेपुत्री तुम्हारे देखनेसेप्रस
न्नता प्राप्तहुई जोजोकष्ट किनुम्हारे वियोगमेंहुये वहवर्णननहीं करसकतेहैं औरमैंनेतु
म्हारे आनासे तुम्हारी अप्रसन्नता औरचलेजानेका कारणसुनाया इससेदुखहुवा अब।
वर्णन करोकितुम परवहां आकेक्याहुवा औरक्योंकर यहां पहुंची यह सुनतेही व
ह अपनी माताकेचरणोंपरगिरपड़ी और शिर उठाय कहा वास्तवमें मुझसे बड़ा अप
राधहुवाउसे दयाकरक्षमाकरोमैं बड़ी २ आपदें औरदुखोंको झेलयहांपहुंची जिससेमु
के विदितहुवाकि वास्तवमें पृथ्वीके बादशाहभी समुद्रके बादशाहके तुल्यहैं फिरउसके
भ्रातासालहने कहाप्यारी तुम अपनेदेशको फिरचलोवहां हम तुम सर्वदा प्रीतिसेरहेंगे
और उसकीमाताने भीयही कहा गुलअनारनेउन दोनोंको उत्तरदियामैं अब यहांसेक्योंक

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जासक्तीहूं प्रथमतो इस बादशाहने मुझे दशहजार अशरफी परमोल लिया फिरमेरे प्रसन्न
रजासक्तीहूं प्रथमतो इस बादशाहने मुझे दशहजार अशरफी परमोल लिया फिरमेरे प्रसन्न
नाके निमित्त अपनी संपूर्ण विवाहीहुई स्त्रियोंको परित्याग किया और मुझे अपनी मलका
बनाया इसके विशेष मुझे उससे चारमासका गर्भहै ईरानका बादशाह उनके निकट बैठा
हुवा यह सब वार्ता सुनता था गुलअनारकेले जानेका हाल सुनबहुत घबराया और मनमें
कहने लगा बड़ा अनर्थहै कि मेरी प्रिया अपनी माता और भाईके साथचली जावेगी तो मेरा
जीना कठिन होगा इतनेमें गुलअनार शाहजादीने दासियोंको बुलाय भोजन मांगा उन्होंने
तुरंत पात्रराखसुंदर भोजनपरस दिये इसके उपरांत गुलअनारने उनको बैठाय भोजनकेलि
ये कहा उन्होंने कहाका हमको उचितहै कि ईरानके बादशाहके बिना जिसकेघरहम
आयेहैं भोजनकरें इतनेमें एकही बेर उनके मुखका लाल वर्ण होगया और मुंह और नासि
काओंसे अग्निकी लाटें निकलने लगीं बादशाह यह चरित्र देखघबराया इतनेमें गुलअना
रउनदोनोंसे आज्ञापाय अपने पतिके समीप आई और कहा तुम्हारे बिनावे भोजननहीं क
रते उचितहै कि तुमभी वहां चलो और सबसे भेंटकर सुख पूर्वक बैठ भोजनकीजिये यद्य
पि मेरे माता और भाई सुफस कहतेहैं कि मैं उनके साथ फिर अपने देशको सिधारूं परंतु मैं
तुमसे ऐसी प्रसन्नहूं कि तुम्हें छोड़ वहां नहीं जासक्ती बादशाहने कहा हे मेरी प्राणप्यारी मैं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
१८४
169

तुम्हारे इन सुंदर वचनोंसे महाप्रसन्न हुवा अब मुझे तुम्हारी ओरसे धीर्य हुवा कि तुम्हें मे
री बडी प्रीति है और तुम मुझे छोड अपने देशको न जाओगी मैंभी तुम्हारी माता और भ्रा
ताके भेंटकी लालसा रखता हूं अब जाके उनके दर्शन करता हूं और उनके साथ भोज
न करूंगा परंतु उनके खाने ओर मांसिकासे लोटै निकलते देखि भयभीत हूं गुल अनारने
कहा इसबातकी आप चिंता न कीजिये यह आग इस हेतु निकलती देवह विना आप
के भोजन करनेमें प्रसन्नमें बादशाहको यह वचन सुन धीर्य हुवा ओर अपना मन ठह
कर उसके साथ उस मकानमें गया गुल अनारने बादशाहको सबसे मिलगया उनसबने
बादशाहके सन्मानके निमित्त अपने शिरोंको पृथ्वीसे लगाया बादशाहने तुरंत दोड़
उनके शिर उठाय पारी २ से सबसे भेटकी तिसपीछे सब मिलके बैठे सालहने बाद
शाह से कहा हम आपके सन्मुख अतिप्रसन्नता प्रगट करते हैं कि मेरी बहिन बहुत सुख
सह आपकी छायामे आई ओर तुमसे बहुत प्रसन्न है परमेस्वर आपका जन्म सुफल
करे बादशाहने भी उचित २ विनयपूर्वक कोमल बचन कहकर उनका आगत स्वागतक
र उन सबको भोजन कराया जब सब भोजन करि निश्चित भये तो वार्ता करने लगे इतनेमें रा
त्रि होगई तब बादशाहने उनके निमित्त सुंदर कोमल सेज बिछवाय सुलाय आप उनसे बि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दाहोय निजके लिगृहमें जाय आनंद पूर्वक सोरहा प्रात उठ अपने अतिथियों को मली।
भांति आदरकर माना और इसीप्रकार बड़त दिनोंतक उनसबको अपने देशमें रखप्रति
दिवस नवीन प्रकारसे मानकरतारहा इतनेमें गुलअनार सूरे दिनोंसे होकर पीड़ासे बेचैन
है उसके दूसरे दिनपुत्र उत्पन्नहुवा इसमें बड़ी प्रसन्नताहुई औरगुलअनार कीमाताने अपनी
रीतिके अनुसारबड़त भारीबहुमूल्यजोड़ा छठीके दिनउसदेश औरचलनके अनुसार न
ब्यारकरबादशाहको दिया वहशाहजादाकि अतिसुंदरचंद्रमाके सदृशउत्पन्नहुवाथा २
स लियेउसकानाम बदर रक्खागया और औरमहाउत्सव किया औरयाचक मंगनादिकोंको
असंख्य द्रव्य भूषण रत्न वस्त्रदे अयाचक किया औरअपने दर्बारवालों को अनेकप्रकार की
विचित्रवस्तुहयाकी औरसेवकसेनादिकोभीबहुमूल्य पारितोषिक आदि दिया औरनगरमें
आज्ञादी किसब अपने २ घरोंमें मंगलाचार मनावें औरनृत्यादि देखें कई दिन तकपुरवासि
योंको बड़ी धूम धामसे माना जबसोरकेदिनचुकेतो मलकाने स्नानकर बड़त उत्तम ची
र पहिरे ईरानका बादशाह औरउसकी माता औरभ्राताने उनपांचों शाहजादियों समेत
तबड़े हर्षसे बदरुकिदेखनेको गये उसेदेख अतिप्रसन्नहुये तदनंतरसुलह बच्चेकोदाईके
कोदाईके गोदसेले अपने कंठसेलगायबड़त प्यारकर उसीमकानमें रुधरउधरटहलनेल

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गाइतनेमें उसीद्वारसे निकल शाहज़ादे समेत नदमें क़ादयज़ाईरानका बादशाह यहहाल
देखयबड़ाय रोने पीटनेलगा श्रोर उसेविश्वासहुवाकि फिर अपने पुत्रकोनदेखूंगा मलका
नेहंसके बादशाहकोधीरजदिया कि आप भयनकोजिये यहजैसातुम्हारा पुत्रहै तैसाहो
उसनहो इसे मेराभाई जलके भीतर इसो लियेलगयाहै कि उसे जल श्रोरपृथ्वीपरफिरना
बराबरहो जैसाकिहमलोगों को अभ्यासहै उसी विधिउसकी माता आदि सम्बन्धियोंने भी
बादशाहको धीरजदियाकलकालपीछे नदकाजल हिलने लगा श्रोरसालह अथाह नी
रकी तरंगोंमें सेबदरकोलेबाहर निकला श्रोर वायुपरउड़उसीद्वारसे महलमें आया बाद
शाह अपनेबेटेको अपनेमामूंकीगोदमें आनंदसे सोतेदेख अत्यंत आश्चर्यमेंहुवासालह
नेबादशाहसे पूछाकि हुज़्ररजबमैं अपनेभानजेकोजलमेंलेगया आपकोतोकुछभयन
हुवाथा बादशाहने कहाकुछनपूछो मेरी बादशाहीभई अबतुझे उसेदेखनेसे सिरसे ज
नमभयासालहने कहाकुछशोचकी जगहनथीक्योंकि मैंने नदमें उतरनेके पहिले ह
जरतसुलेमानकी अंगूठीका इसम आज़मनामक मंत्र पढ़ लियाथा हमारी जाति में य
हरीतिहै जबकोई संतानहमारे वीर्यका पृथ्वीपरउत्पन्नहोताहै तोहम इसमआजम उस

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मंत्रकी शक्तिसे उस जलमें सरकानेको ले जाते हैं जैसाकि तुमने देखा यह कह उसने।
शाहज़ादेकी दाईको देदिया और एक छोटासा संदूकचा कि उस शीघ्रतामें नद के भीतर
से अपने साथ ले आया था खोला और उसमें से सो हीरके टुकड़ेकी एक एक कपोतके अं
डेके तुल्य और उतनेही बड़ी २ अतिविचित्र मणि और नील मणि एक एक दोनो ति
नमासेकी थी और नीलमणिकी तो समाला जिसमें दस २ लड़ी गुही हुई वह सब बादशाह
को भेंट कर कहा मुझे अपनी बहिनका वृत्तांत मालूम न था कि किस स्थान पर है और किस बे
मरथवान् बादशाहसे उसका विवाह हुआ इसीहेत खोजो हाथ हम आये और यह जो तुम्हारे
प्रताप और ऐश्वर्यको देख लज्जित हुये कि कौनसी ऐसी वस्तु तुम्हारी भेंट करें इस निमित्त थो
ड़ेसे रत्न यद्यपि वह तुम्हारे योग्य नहीं अपने देशसे ला आपको भेंट किये सो इस तुच्छ व
स्तु कोहमारी प्रसन्नताके लिये स्वीकार कीजिये ईरानका बादशाह उन विचित्र और अनेक
भांतिके सुंदर रत्नको देख अति आश्चर्यमें हुआ उनमें से दो रत्न भी इतने बड़े थे कि पृथ्वीम
रमें वैसे नहीं होंगे फिर उसे बड़े हर्षसे अंगीकार कर शिर नेत्रों से लगाय सालहका बड़ा।
गुणमाना और कहने लगा मैं तुम्हारी शीलता और विशेष इस संबंधसे अति हर्षित हूं तुमने
मुझे ऐसे बड़े बहुमूल्य रत्न दिये और उन्हें तुच्छ कहते हो भाई यह संदूकचा कईराज्यका।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सादि
१६९
166

मोलहोगयाफिर उसनेअपनी स्त्रीसे कहाकेमगनेनी तुम्हारेभाईने वहरत्नभेंट दियेथा हम
को किथोड़ेसे रत्न औरथोथलीटाहै यद्यपि वहबहुत बिनयकरतेहैं तथापि मेरी औरसेउन्हें अ
मझाओ गुलअनारने उत्तरदियाहै स्वामी यद्यपि पृथ्वीपर यहउत्तमवस्तुहै परंतु सत्य इ
मेंकि हरएकस्थानपररत्नोंकी खानहै उत्तमवस्तुनहीं इसबातका आपउत्तमसोचनकी
जिये औरलेलीजिये बादशाहयहसुनचुपहोरहाकई दिन पीछे सालहने बादशाहसे
कहाहम सब आपकेयहांइतने प्रसन्नरहे किइतना आनंद औरस्थानपरनमिलता परंतु
हमें यहां आयेबहुतदिन बीतेवहांकासमाचारकुछजानतेनहीं क्योंकि बहुधानगरमें बा
दशाहकेनहोनेसे प्रबंधमें उलटपलटहोजातेहैं इसहेतु आपसे विनती करतेहैं यदि
आपकी इच्छाहोतोहम सबतुमसे औरअपनीबहिनसे विदाहो अपनेदेशको सिधारें।
बादशाहने लाचारीसे अंगीकारकरकहा यद्यपिहमलाचारीसेतुम्हें विदाकरतेहैं प
रंतुगुलअनार औरबदरकोमति भूलना औरकभी उनके देखनेकेलिये आना औरतुमके
भी अपनादर्शनदेकृतार्थकरतेरहना सालहबादशाहसे विदाहो समंदालदेशको सिधा
ए औरज्यों २ बदरबढ़ताथा त्यों २ उसके मातापिता प्रसन्नहोतेकभी २ सालह औरउसकीमा
ता उसके देखनेको आतेजबबदरपढ़नेलिखनेयोग्यहुवाथोड़ेहीकालमें सम्पूर्णविद्याओ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रेमें गुणोंमें निपुणहुवा औरपन्द्रहवर्षकी आयुमें जब अतिकुशलबुद्धि हुवा तो उसकेपि
ताने उसे अपनाकायम मुकामकरके औरअवस्थादिकार्यउसे सौंपे उसने अपनी नीतिसे
प्रजाको बहुतप्रसन्नरक्खा अनेक विषयको भली भांति समझता और सुनता और उसका उ
त्तरयथार्थदेता और किसीसे अहंकारन करताजब बादशाहने अपने शाहजादेको अने
क विषयमें अतिकुशल देखा तो जबबादशाही अपनेशीशसेउतार उसके मस्तकपरधारण
किया फिरउसकेहाथचूमेक्योंकि यहरस्तचिनहै किसबबादशाही प्रबंध इन्हीहाथोंसे भु
गतेंगे औरबादशाहतख्तकेनीचे किवह आसनवजीर और अमीरोंकाथाबैठा फिरसबव
जीर औरसभाजोसेना औरदेशकेप्रबंधकर्थेनवीनबादशाहकोभेंट देनेलगे औरसर्ववृत्त
सकी आज्ञापालनेलगेजब इनसबकामोंसे निश्चिंतहुवा वजीरराज्यकेप्रबंध औरअवस्था उ
सके सम्मुखलाया उसनेभलीभांतिउन्हेंसुगताया जिससबदेखके आश्चर्यितहुये औरथोडे
ही कालमें शाहजादेने अपने सल्तनतकाऐसाप्रबंधकियाकिहरएककोपसंद आया औ
रउसकी नीतबुद्धिपरथम २ करनेलगे जबवह यह सबकार्यकरनिश्चिंतभयापिताके साथ
उसकी माताउसका शीश मुकटसे सुशोभितदेखदौड़ी औ
अपनी माताके निकट आया
र अपने कंठसेलगाय हर्षितहुई दोवर्षमें उसका पिताउसे सबप्रकारसे चतुरपाकर नगर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
१८७
167

वाहरजाय ईश्वरका आराधन करने लगा बदर प्रायः अहेर खिलता और देश २ ग्राम २ भ्रमता
अनेक विषयको निश्चयकर उसका उपाय करता निदान इसी प्रबंधमें बदरका पिता रोगी
हुआ और दिन २ उसका रोग बढ़ता गया निदान जब अपने जीवनसे निराश हुआ तो व
जीर और प्रधानोंको बुलाकर बादशाह बदरको औंके प्रतिज्ञा प्रतिपालनके लिये प्र
तिज्ञा लेली और इस संसार असारसे परमधामको सिधारा यह दशा देख बदर और गु
लअनार रोने पीटने लगे और बड़े ठाठसे अरथी निकाल उसे गाड़ा बदर एक सर्ग वर्ष अपने
पिताके शोकमें दिनरात रुदन करता रहा इतनेमें मालहू और गुलअनारकी माता वहां पहुं
चे और अनेक भांतिके गुणवाखान होने लगे जब निश्चिंत हुये तो मालहूने एकदिन अपने
बहिन गुलअनारसे कहा आश्चर्य है कि तुमको अबतक बदरके विवाहका शोच नहीं
यदि तुम्हारी इच्छा हो तो मैं एक शाहजादी अपने देशोंमेंसे जो रूप अनूपमें बदरके तुल्य
हो ढूंढ़ूं मलकाने उत्तर दिया अबतक मुझे इस बातका कुछ शोच न था क्योंकि मैंने अब
तक उसकी रुचि इस बिषयमें न पाई थी और मैं बजन खुश होंगी जो कोई समुद्रकी शा
हजादीसे संबंध हो यदि तुम्हारे बिचारमें कोई हो तो मुझे भी ज्ञान करना तुम्हारी कृपासे
आशा है कि तुमको ऐसी स्त्री उसके निमित्त ढूंढ़ोगे कि जिससे बदर देख मोहित होगा सा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लहने कहा मैं तुमसे एक शाहज़ादीका हत्तांत वर्णन करूंगा परंतु जिस समय बदर अपने
नसो जावेगा एल अनारने बदरको बड़कालसे उपदेखजाना कि वह सोता है और बदर शा
हज़ादीका हाल सुन अत्र कर्ण निद्रावश भया और अपना ध्यान उनको बातोंपर रक्खा ए
ल अनारने सालहसे कहा भाई तुम निश्चयाक उस शाहज़ादीका हाल वर्णन करो बदर अपने
नसोता है सालहने कहा इस विषयमें रत्ता अवश्य चाहिये ऐसा नहो कि बदर उसके रूप
की प्रशंसा सुन मोहित हो जावे और उसके वास्ते सर्वस्वत्याग विचरे उस शाहज़ादीके पि
नाका हत्तांत तुम्हें ज्ञात है वह अहंकारसे किसी बादशाह और शाहज़ादेको चाहोएसी
काहो वा जलवासी अपने बराबर नहीं समझता ईश्वर जाने मानेवा नमाने परंतु बदर उ
सके मोहमें अपने प्राण देगा केवल तुमसे उसका और उसके पिताका नाम वर्णन करा
ना हूं उस शाहज़ादीका नाम जवाहर है और उसके पिताका नाम सुलतान समदाल यल
अनारने कहा कच भाई अभीतक कहीं जवाहर शाहज़ादी आही नहीं गई मैंने उसे अपने
वहां आनेके पहिले देखाथा उस समय वह आठ महीनेकी थी वास्तवमें उस समय
में उसकी सुंदरता विख्यात थी जोकोई उसे देखता प्रसन्न होता अबतो तरुण अवस्था
में उसका औरही यौवन होगया होगा इस संसारमें वह अद्वितीय है वह निस्संदेह मे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि १९८

168

रे पुत्रवरदेवड़ीहै और मैं आश्चर्यितहूं कितुमैंहै उसके मांगानेमेंक्या परिश्रमहै सालहने
कहा समंदालयेसा अहंकारीहै किकिसी बादशाहको अपने समाननहीं समझता में
नहीं जानताव हइस संबंधको स्वीकारकरेगानहीं अबमैं अपने भानजेके निमित उस
सेप्रार्थनाकरूंगा परंतुवेतम रहजबतकमैं लड़कीके पिताको प्रसन्नकरलूं तबतक
इसरहस्यको बदरनसुननेपावे यसानहो जोबदर उसकाबखानसुनमोहित होकर अ
पने प्राणत्यागदे इसीभांति वहदोनो बहिनभाईबहुकाल पर्यंतबातें किया किये अंतमें
यहबातठहरी किसालह तुरंत अपने देशकोजावे और समंदाल बादशाह सेजाय वि
वाह करानेगदे सालहकोपरिपूर्णविश्वास थाकिबदर अचेतसोताहै वह दोनोंयहांबा
तोकरचले गये और बदरने चुपके २ वहांबातें सुनी और जवाहरशाहजादीकी मूर्ति
जोउन्होंने निकालकरदेखीथी देखउसपरमोहितहुआ उस रात्रिको उसी मूर्तिके स
र्णमें अधीरहो लोटा कियाऔरप्रातको भीउसीके विचारमें उठा और खाना पीना बोल
ना चलनातज दिया जब सालह अपनी बहिनसे विदाहोनेको आया तब बदरकी आ
कृति बदली देखकारण पूछाउसने अपने सत्य अभिप्रायको छुपाकरकहा मेराजी
यहां बहुत घबराताहै मुझेआप अपने साथलेलिये औरअपनेदेशजानेकी इच्छानकी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जिये मेरी इच्छाहै किदोतीन दिनकेलिये आपकेसाथ अहेर खिलनेजाऊं औरमनमेंय
ह विचाराकि इस बहानेसे अपनेमामूंकेसाथ अपनी प्रियाके ढूंढनेके लिये यहांसे नि
कलजाऊंगा इसबातको अपनीमातासेप्रगटकरवाक्योंकि वह कदाचित् मेरा वियोगनसहे
गो औरमुझेनजाने देगी प्रगटमें अपनीमातासे अहेरखिलनेकी आज्ञाली और अहेरकोसा
मग्रीलेसालहके साथएकओरकोचला यहांतककि एकदिनमृगके पीछे घोड़ा दौड़ा
नेविछुड़गये उससमय कोई सेवक उसके पासनथा वह थकितहोय अपने घोड़े से
उतरा और घोड़ेको किसीवृक्षसे बांधएकनदीके तीर सघनवृक्षोंकी शीतलछायामें ह
री २ घासपरबैठगया औरहाहाखाय अपनीप्यारीके ध्यानमें रोनेलगा बहुकालपर्यंत।
उसीदशामें बैठारहा उधर सालह उसेनदेखकरघबराया और सेनासे पूछा किवहकहां।
हैं कोईन कहसका किवह कहांगयासोवह आपही उसके ढूंढनेको निकलावहां
पहुंच हरसका देखताहै किवह अपनी प्रियाके विरहकी तपनमेंतपथाड़ मार २ रो
रहाहै तबउसे विश्वासहुवा निस्संदेह उसने जवाहर शाहज़ादीका हालसुना होगाओ
रउसीके वियोगमें विकलहै सो अपने घोड़ेसे उतरऔर उसवृक्षसे बांधपीरे २ उसको
झाड़में आयखड़ा होयसुननेलगा किवह इनबातोंको कहरहाथाहै मेरी प्राणप्रियासम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
१९६
169

न्दालकी पुत्री तुम्हारी मूर्तिको देखमेरी यहदुर्दशा भई मुझेविश्वासहै कितुमसंसारकी
सकल शाहजादियोंकितु चंद्रमासेभी अधिकसुंदरहो मैंने अपनामनतुम्हारे अर्पण
किया परंतु आश्चर्यमिनरूं कितुमहो कहांजाकेढूंढूं सालहको इससे अधिकसहनेकी
शक्तिनरही औरआगेजायउसके पासबैठकहामुझे निःसंदेह विदितहुआ तुमने इसदो
नोंबहिन भाईकी वार्तासुनी होगी हमारी रक्षाकुछकामनआई वरदनेकहाकिमामूंसा
हब मैंने आपकी सबबातेंसुनीजोहोनाथा सोहुआ यदि आपको मेरेप्राणप्यारे हैं तोतु
ममेरेविवाहकानेगउसकेपिताकोदेकर प्रसन्नकरोसालहने उसेथोड़ादियाकि तुम अब
नगरकोचलोमैं अबइसीकार्यकेसाधनेकेलिये समंदालदेशको जाताहूं वदरनेकहात
हे, मेरी प्रीतिहोतीतो तुम मुझे इसदशामें अकेला छोड़नजाते यदिमुझेहृदयसे प्यार
करतेहोतोमुझे अपनेसाथ उधरलेचलो उसने कहातुम्हारी माताकी आज्ञा विनामैं कों।
करतुम्हें लेजासकताहूं वदरनेकहातुम भली भांतिजानतेहो किमेरीमाताकाहेको प्रसन्न
तासे जानेकी आज्ञादेगी क्योंकिवहमुझे प्राणोंसे अधिकप्यारकरतीहै सालहने अपनी
अंगुलीसे एक अंगूठीजिसपर इस्म आजमनामक यंत्रलिखाथा उतारउसे देकरकहात
इसे अपनीअंगुलीमें पहिन और निःशंकजलमेंचलाजा इयो जबवदरने उसे पहिचाना

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तो सालहने उससकहा अबजो कुछमैं कहूं तूभी उसे निसंदेह कीजियो सो वह दोनोंवा
सु पर उठे और समुद्रके तीर पहुंच उसमें उतर जलमें चलने लगे कुछ कालमें वह दोनोंस
मुद्रकी वस्तीमें पहुंचे सालह बदरको अपनी माताके समीप लेगया बदरने अपनी माता
कोदेख हाथ चूमे और परस्पर दोउ हर्षित हुए फिर सालहकी माताने उसकी कुशल सब
उसे प्यार किया फिर उसने और स्त्रियोंसे बदरको मिलाया बदर उनसे वार्ता करनेलगा इत
नेमें सालहने सावकाश पाय अपनी मातासे एकान्तमें बदरके समन्दाल बादशाहकी शाह
ज़ादीपर मोहित होनेका वृत्तान्त कह सुनाया और कहा अबमैं समंदाल देशको जाता हूं औ
र वहां पहुंच बादशाहको बदरके विवाहके निमित्त नेग दूंगा यद्यपि सालह इस विषयमें
नियत निर्दोष था और उसने यथाशक्ति बहुत यत्नकी थी कि जवाहरका हाल बदरको विदि
तनहो परन्तु उसकी माताने उससे अति अप्रसन्न होकहा तूनें नहीं जानता था कि समन्दालम
हा अहंकारी है जो तूने उसकी पुत्रीका वर्णन किया और बदरको उसके मोहमें फंसाया सा
लहने कहा जो बदर जवाहर पर इतना मोहित रहा और किसी उपायसे भी जवाहरके सा
थ उसका विवाह न भया तो वह निसंदेह देहत्याग देगा और मैं यथाशक्ति इस विषयमें प
रिश्रम करूंगा मैं समंदालको जाय विवाहको नेग बादशाहको पहुंचाऊंगा परन्तु पहिले

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
स०
१७०
170

उसे बड़ामहलरत्न भेंटहूंगा मुझेतोविश्वासहै कि वहयेसेबड़े बादशाहको अवश्य अपनीपु
त्रीदेदेगामातानेकहा इसकोतो उत्तम परंतु उसके अहंकारकाभयहै समझाहूकके इसवि
षयमें वार्ताकरना औरवदरकोमेरेही निकटछोड़ जाओ यहकह उसने अपनेपाससेब
हुतसे रत्नहीरे मणि नीलमणि आदिकी अति उज्वल माला निकाली औरउनको दिव्य
सहकचेमें रखसालहसे कहाकि यह पहिले भेंटदेकर अपना मनोरथवर्णनकीजियो उ
सने वह सहकचा अपनेसाथलिया औरअपनीसेना समेतमाता औरमानजेसे विदाभया
औरत्वरतही समंदालदेशमें पहुंच बादशाहके समीपगया बादशाहने उसका बड़ासं
मानकिया औरतरंतसे उठसालहसे भेंटकी औरअपने निकट बैठनेको कहासालह दं
डवत् करउसके निकट बैठगया फिरसमंदालने उसकी कुशल सब कहा यदिकोई
कार्यतुम्हारा स्मरियासतसे संबोधितहोतो कहोमें उसे शिर आंखोंसे स्वीकारकरूंगासा
यभलीभांतिध्यानधर उसराने नोमें विनय करूं इतनाकह उसने अपने सेवकसे मा
लाओंका सहकचाले भेंट करकहा यहभेंट मित्रतासे स्वीकार कीजिये बादशाहस
मंदालनेमलिक सालहकी खातिरसे उसकबूल किया मलिकसालह समंदालको प्र

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सन्नतापूर्वक देवबऊनसीप्रशंसाकर अपना मनोर्थ इसभांति कहनेलगा किमैं आपकी।
कृपा और मित्रवत् दयाजोहमेशासेहमदोनों बादशाहों में प्राचीनसेचली आईहै समझ
और निश्शंकहोय अपने मनोर्थके प्रगटकरनेको आयाहूंकि आपके अतिउज्वल दर्पण
रूपी मनपर प्रगटहोकि मेरीबहिनगुलअनार नाम एकबड़े ईरानके बादशाहके साथवि
वाहीगईथी उसके उदरसे एकजवाहरुलमुल्कऊबाशाहजादा सौंदर्यमें अद्वितीय और विद्या।
रूपीभूषणसेभी ऐसा अलंकृतहै किइससमयकेबुधजनउसके साम्हने कुछ बोलनहीं उ
सके पितानेचौदह वर्षकी आयुमेंउसे तख्तपरबैठाय राजकाजसौंपा ईश्वरकी दयासेवह
विवाहनेयोग्यहुवाइसहेतु आपसेविनयहै किउसशाहज़ादेको अपनापुत्र बनाय जवाह
र अपनीकुवांरकाविवाह उसकेसाथ करदीजिये समंदानदेशकाबादशाह इसबातको।
सुनतेही महा अप्रसन्नहोकहनेलगाहै सालहआज तकमैंतुझे बड़ाबुद्धिमान औरचतुरस
मझताथा आज तुम्हारी चातुरताकहां जातीरही किऐसे अनुचितबचनकहनेलगे औरआ
मेरी पुत्रीकानाम निश्शंकमुखपरलियाक्या तुम मेरे ऐश्वर्यकोनहीं जानतेइनदोनोंराज्य
में बड़ा अंतरहै परंतुम्हारी मृत्यु यहां लाईसालह यहसुनबऊत पछतायाकि मैंने अपनेवा
ले शाहज़ादी जवाहरकानेगनोनहींदिया यहबादशाह यही समझाहोगासोउसने कहा आ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

य समय के होंगे कि मैंने अपने लिये कहा है, शाह मैंने अपने भानजे बदरनाम कई थान के बा
दशाह के हेतु नेग दिया बादशाह समंदाल ने अधिक अप्रसन्न होकर हा तुमने मुझे और गा
ली चढ़ाई फिर तो वह महा कोपित होय कहने लगा है दुष्ट तेने मेरी पुत्री को गुलअनार के
पुत्र वदर के बराबर समझा तेरा पिता कौन था तेरी बहिन का बल है और तेरा भानजा का
वस्तु है निदान उसने अपने सेवकों से कहा इसका शीश काट फेंक दो सेवकों ने सालह को
बध करना चाहा सालह अवकाश पा अपनी सेना से जो एक हजार के अनुमान शस्त्र सहित खे
ड़ी थी और भी उसको माता के भेजे हुये कटक में जो वहां पहुंचा था जा मिला उन्होंने उसे विक
ल देख कहा कुशल तो है हमें आप आज्ञा मात्र दीजिये फिर देखिये हम क्या करते हैं सा
लह को उस सेना के आजाने से सामर्थ्य हुई और उनको साथ ले चढ़ आया तहां महा संग्रा
म भया निदान समंदाल का बादशाह पराजय भया सो सालह ने समंदाल बादशाह को कैद
कर लिया और थोड़े से लोग वहीं छोड़ आप सेना समेत उसके महल में चढ़ गया इस इ
च्छा से कि उसकी पुत्री को पकड़ ले जावे जवाहिर उसके आगमन का समाचार सुन कई
बांदियों समेत समुद्र से निकल किसी द्वीप के ओर चली और वहां पहुंच किसी बन में जा
छिपी कई सेवकों ने बातों में समंदाल को कोपित देख सालह के मार डालने का समाचार

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सको मातासेजायकहा वहयहसुन अतिकष्टको प्राप्तभई औरबदरभी कि उस समयनानी
के समीपविद्यमानथा इसहालको सुन अपने मनमेंचिंता करनेलगा किवड़ा खेदहै जो मेरे
कारणसालह परयहकष्टहुआ नानीमेरा आनाकुलक्षण समझेगी अबमेरारहना यहां
किसीभांतिउचितनहीं यहविचार अकस्मात समुद्रसेनिकल ईरानकोसिधारा परंतुमार्ग।
नजानताथाभूलकरउसीटापूमें जहांजवाहरशाहजादीजाके छिपीथीपहुंचा औरथाकि
नहोयएकबड़े वृक्षकेनीचे जिसकेचहुं ओरबहुतसेदरख्तथे बैठगया इतनेमें मनुष्योंका
शब्दसुनाई दियाकानलगाके सुननेलगापरभलीभांतिनसुनसकानिदानचुपके उठदेखा
औ वहांगयाजहांसे शब्दसुनाईदेताथा वहांजवाहर शाहजादीको बैठहुये देखमोहित
हुआ औरजानाकिनिस्संदेह यहांवही स्त्रीहै जिस परमेंमोहितहूंसोबदरने उसकेसम्मुख
जायकहा परमेश्वरका धन्यवादहै जिसनेतुम्हारेदर्शनने मुझेकृतार्थ किया ऐसे समयमें
मुझे आज्ञाहोतोमैंतुम्हारे निकटरहहरभांतिसे आपकी सेवाकरूं दयाकरमुझे अपनाना
मबतलाइये उसने कहातुम सत्य कहतेहो अवश्यहै कि एकमनुष्यतुम्हारे सदृशमेरी स
हायता करेमेरानाम जवाहरहै औरमैं समंदालबादशाहकी पुत्रीहूं अपने महलमें आ।
नंदसेबैठीथी अकस्मात शोरसुना औरउसके साथही मनुष्योंनेआके कहाकिसालहबा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
१२१
172

दशाहने मेरे पिताको कैदकिया इसका कारणमैं नहींजानती मैंयहदशा देखयहां आय।
छिपगई बदरने शोचे विना अपनाहृत्तांत उससेवर्णन किया औरकहामेरा नाम बदरहै मैंई
रानके बादशाहका पुत्रहूं औरसालह बादशाह मेरा मामाहै उसनेउसे इसी बातकेलि
येकैदकियाकि तुम्हारा विवाह मेरे साथकरदेजब तेरे पिताने यहबातनमानके मेरे
मामाके वधकी आज्ञादीतो दैवयोगसे उसकी सेना वहां पहुंच गई और तेरे पिताको कै
दकरलिया अबतुम दोनोंएकवोमें परस्पर मिलापकरा दूंगा सालह बादशाहको केव
ल यही इच्छाहै कितेरा पिता मेरेसाथतेरा विवाहकरदे फिर वह किसीभांतिका तुम्हें।
कष्टनदेगा जवाहर उसके मधुरवैन औररूप अनूपको देख मोहित हुई परंतु जबउसे
विदितहुवा किइसीके कारणयह आपतिपड़ी तबउसे अपना शत्रुसमझ प्रगटमें उससे
प्रीति पूर्वककहाहै बदर मलका गुलअनारके पुत्रमें तुझे देख हर्षितभई वास्तवमें य
ही उचितहै कितेरेसाथ मेराविवाहहो परंतुमेरे पितानेन माना बड़ी भूलकी यदिवहतु
फेदेखपातो विश्वासथा किवहइस संबंधको अवश्य मानता औरबड़े हर्षसेतेरा विवाह
मेरेसाथ करदेता यहकहजवाहरने प्रीतिसे अपनाहाथ आगेबढ़ाया बदरने इसबातसे
महाप्रसन्नहो अपनाहाथबढ़ाके चाहाकिउसकाहाथ पकड़के इसमे जवाहरने तुरंत अ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पनाहाथ खींच लिया और रदके मुखपर थूकदिया कि मंत्रीके हेतु किसी प्रकारका जल।
पनाहाथ रवींच लिया और रदके मुखपर थूकदिया कि मंत्रीके हेतु किसी प्रकारका जल।
होना चाहिये और कहा रे दुष्टयह बोला छोड़लाल पीठ और चरणका पक्षी बनजा बदर
अपना शरीर छोड़ विचित्र पक्षी बनगया फिर जवाहरने एक बांदीसे कहा इस पक्षीको
निर्जल द्वीपमें लेजाकर छोड़दे वह टापकेवल एकपहाड़था जिसमें नीरका चिन्हभी न
था वह दासी उसपक्षीको पकड़के चलीमार्गमें उसबदर परदया उपजी और अपने मन
में चिंतनाथी कि यह शाहज़ादा बड़े लाडप्यारमें रहा उसद्वीपमें बिना अन्नजलके मरके
रहजावेगा और यह शाहज़ादी कि अतिदयावान है यद्यपि उसने कोपमें इसे पक्षी बना
या जब शांत होगी तो पछतावेगी उत्तम है कि इसे ऐसे स्थानपर छोड़ें जिससे इसको अकाल
मृत्यु न हो वह दासी तो उसे किसी अच्छी द्वीपमें छोड़ आई जहां नानाप्रकारके सफल वृक्ष
और स्थान २ पर स्वच्छ दरके झरने थे अब यहांसे सालहका वृत्तांत सुनो उसके प्रयानोंने जवा
हर राजपुत्रीकी बहुत ही ढूंढा पर तु जवाहरको न पाया निदान शाहज़ादी कि समंदरोल
कौ उससे बेटी गृहमें बड़ा कष्ट था एक मनुष्य उसके खबर लेनेको नियत कर आप अप
नी माताके समीप आया और संपूर्ण अवस्था कह सुनाई जब उसे विदित हुआ कि बदर
किसी औरको निकलगया चबराके उसका वृत्तांत पूछने लगा उसकी माताने कहा जब

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि मैने समंदालके कोपकाहालसुनातो यहांसे दूसरी सेना भेजीतभीसे बदरनजानियेकहां व
१७३ लागया उसका समाचारकुछभी विदितनंही तुम्हारे परास्त होनेको सुनघबड़ायाहोगा
और अपनेबचानेको किसी औरचला गयायह सुनसालह महा शोकयुक्त भया किमैंने
जिसकेप्रसन्नताके लियेयह सब उपाव उठायेवहीहमारे हाथसे जानारहा अपनीवहीन
कोका सुखदियाऊंगा फिरअपने प्रधानोंको बदरके ढूंढनेके लियेभेजा परंतुकहा उसक
ठिकानानलगातब सालह अति चिंतितहो अपने राज्यको अपनी माताको सौंप आपहीस
मंदालदेशकोबदरके ढूंढनेकोगया उसीदिन शलअनार अपने देश से अपनी माताके नि
कट आई उसकेआगमनकायह कारणथा जिसदिन बदर अहेरको गया और रानकोफि
रनआयातोसमझो किकिसी मृगका पीछाकरते दूरनिकल गयेहोंगे इसहेतु उन्हेंलौ
ट आनेमेंदेरीहुई परंतु जबवह कईदिनतकन आयेतो अतिचिंताकरउनलोगोंसे जोसा
लह और बदरके साथगयेथे उनदोनोंका हालपूछाउन्होनेकहा उनदोनोने यकमृग।
के पीछे ऐसाघोड़ा दौड़ाया किहमारी दृष्टिसेलुप्तहोगये हमने कई दिनतकबनबन
औरपहाड़ २ उन्हेंढूंढा कहीं उनकोनपाया परंतु उनदोनोंकी सवारीके घोड़े निसंदे
ह हमको मिलेवह हृदसे बंधेहुयेथे शल अनारने दीर्घश्वासमनमें कहाकिमामभानजे।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दोनों समुद्रमें पैठगयेहोंगे फिरउन्हें आज्ञादी अबतुम उसी स्थान परजायभलीभांति रहो
रहो और आप अपनी दासियोंकी अज्ञानतामें समुद्रमें कूदपड़ी और अपने इससंदेहके
मिटानेको किसालहउसे अपने साथसमुद्रमेंलेगया वानहीं थोड़ेहा कालमें अपने नेहर
में एकही प्रथम देहलीमें मातासे देवप्रसन्न भई फिर उससेकहातुम अपनेपुत्रकाहा।
लसबने यहां आईहोगी उसका समाचार तुमसेकाकहें प्रथमजब बदर अपने मामाके
साथ यहां आयातोमें उसे देखमहा प्रसन्न भई परंतुजबसालहने समंदाल बादशाह
के निकट जाय विवाहकानेगदिया सोउसबादशाह अप्रसन्नहोय सालहको वधकर
ना चाहा उसके आदमियोंने आके यहसब मुझसे कहामैंने तुरंत और बहुतसी सेना
उसके समीपभेजीसो सालहने उसेपरास्तकियापरंतु बदर अपने मामूको पराजयहुत
यहांसे किसी औरनिकलगया और सालह समंदालको कैदकरमेरे निकट आया जब
उसने अपने भानजेकेगुमहो जानेकोसुना फिरउसके ढूंढनेकोसमंदालदेशमेंचलाग
यारानी गुलअनार अपने पुत्रकेचले जानेकोसुनबहुत रोई और सालहकोबुराभला।
कहने लगी उसकी माताने कहावास्तवमें उसने बड़ा अपराधकियाकि जवाहरके व
ानमें उसने रक्षानकी परंतुमुझेविश्वासहै कितेरापुत्रतुझे शीघ्रही आनमिलेगाधीरज

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

साहि
१७४
174

रकवा और उसके देशकी रक्षा करो तुम्हारा वहां होना अवश्य है गुलअनार अपनी माताके आज्ञानुसार उससे विदा होय ईरान देश में गई और उन्हीं अपनों की जिन्हें बदरके ढूंढने के निमित्त फिर भेजा था बुलालिया और कहा मुझे मेरे पुत्रका हाल मालूम है वह य हां शीघ्र ही आया चाहता है फिर आज्ञा दी कि तुम इसी समाचारको राज्यभरमें विख्यात करो राजमंत्री और सभासद यह वृत्तान्त सुन अत्यन्त प्रसन्न भये और आनंद से वक अपने २ सबेंपितकार्य्यमें लगे अब यहां से फिर बादशाह बदरका हाल लिखा जाता है जब जबाहर की दासी बदरको पक्षी की योनिमें टापूमें ले जाय छोड़ आई तो वह अपने को पक्षी के श रीरमें देख महा विस्मित भया कुछ न जानता था कि मैं कहां हूं और ईरान देश किस ओर है और पंखोंमें इतनी सामर्थ्य न थी कि अपने राजमें पहुंचे परन्तु जो उससे और आपदा भोगनी थी सो वह बेचारा और पक्षियों के सहश उसी द्वीपके खेतों में बैठकर चुगता फिरता और रात्रिको ऊंचे वृक्षों पर जा बैठता कई दिन पीछे एक चिड़ी मार अपना जा ल लिये उसी खेतकी ओर चला जहां शाहज़ादा बदर पक्षियों के साथ बैठा उस खेतमें चुगता था उस पक्षी को नवीन प्रकारका देख आश्चर्य्य कर मनमें कहने लगा मेरा जन्म इसी कार्य्यमें बीता परंतु आजतक ऐसा सुन्दर पक्षी नहीं देखा सो जाल बिछाय उसे औ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

र पाखियोंकेसाथ पकड़ा ओरउसेदेख पिंजड़ेमें रखनगरकी ओरलेगया जबवह चौकमें
पहुंचाशहरवासीऐसा नवीन पक्षीदेख उस चिड़ीमारकेचहुं ओरएकत्रहुए भीड़मेंसे एकम
नुष्यने उसकामोलपूछाउसने उत्तरदियाभाई पंक्षीलेकरक्याकरोगे उसने कहाहमइसे भू
नकरखावेंगे चिड़ीमारनेकहाउत्तमइसका मोलकहांतकदोगेबहुत एकरुपया वापका अ
शरफीमें इतनेमोल परइसनबेचूंगा मैंने जन्मभरमें ऐसासुंदरपंक्षी नहींदेखामें इसेबाद
शाहकोभेंटदूंगाविश्वासहैकि वह उसेदेखप्रसन्नहोगा ओरमुझे पारितोषिककृपाकरे
गा यहकहकेवह बादशाहकी ड्योढ़ीपरगया आकस्मात् बादशाह झरोखेपरबैठाहुआबा
जारको सकलवस्तुदेखताथासंयोगसे उसकीदृष्टिउसीपक्षीपरपड़ी उसने ऐसा सुंद
रपक्षीनदेखाथा उसेदेख प्रसन्नभया ओरएकसेवक सेकहा किइस पक्षीकोमोललासे
वकने आय उसे उसकामोलपूछा उसने कहामैं इसेबादशाहकी भेंटदेनेकोबहु
तदूरसेलायाहूं सेवकने कहा मैंभी बादशाहकी आज्ञा से इसेलेने आयाहूं तबउस
चिड़ीमारनेपिंजड़ा पक्षीकाउसे दियावह सेवकपिंजड़ा बादशाहके निकटलेगयाबा
दशाहने प्रसन्नहोय दशअशरफियां उसे दिलवाविदा किया ओर आज्ञादीकिइस प
दोनोंकोस्वर्णकेपिंजड़ेमेंरखो ओर अन्न जलकीडलियां जवाहिरातकीबनाओ उसस

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

साहि
१७५
175

मयनोबादशाह सबारहोकहीं चलागया जबवहांसे लौट आयातो पिंजड़ा अपने सम्मु
खमंगवाया औरउस पंछीकोपिंजड़े सेनिकाल अपने हाथ परबैठाय सेवकसे कहा इस
ने कुछ अन्न जलखाया उसनेविनयकी अन्नजल सबवर्तमानहै इसने कुछभी इसमें से
नहीं खाया बादशाहने यहसुन अनेक प्रकारके भोजनलगवादिये औरउस पक्षीकोप्या
लियेंपरलेजाके बेठायावह पक्षीबादशाहके हाथसेकूद वहांजाबैठा औरवहां एकवि
काबीसेकूट २ खानेलगाबादशाह यहदेख अचंभितहुवा औरसेवक सेकहा मलकाह
कोबुलालाकिवह भी इसपक्षीका चरित्रदेखे उसने जाय मलकासे कहावहतत्क्षण बा
दशाहके सम्मुख आई और उसपक्षीको देखतेही अपना मुखढांपलिया बादशाह
ने अति आश्चर्यमान सकहाहे सुंदरीयहतो कौन परपुरुषहै जिससे तुमने अपनामुख
छिपाया यहतो केवल पक्षीहै वोमेंस्त्री वातुम्हारीदासियोंका एकसेवक मलकाने क
हा यह पक्षीवास्तवमें पक्षी नहीं यह बदरनामकयुवा अनारजो शाहजादी दरयाईद
ीको बिख्यातहै उसका पुत्र ईरान महादेशकाबादशाहहै औरयनफणणशी कानवा
साजो अनुकदीरयाकी शाहजादीहै औरइसे समंदाल देशकी शाहजादीने कोपसे प
क्षीबनाया फिरकहने लगी स्त्रियोंकोपरमेश्वरने परदा करनेकी आज्ञादीहै इस निमि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तमैने अपना हाथ इसमें छिपाया बादशाह बेचारे बंदरकी यह दुर्दशा सुन अतिखिन्न भया औ
र शाहजादीसे कहा किसी उपायसे यह बादशाह अपनी निजयोनि प्राप्त कर सकता है उसने क
हा यह कितनी बड़ी बात है आप दूसरे स्थान पर पंछी समेत जाइये मैं उसे क्षणभरमें उसके
सुजन्मस्वरूपमें ला देती हूं बादशाह उस पंछीको लिये दूसरे स्थानमें गया शाहजादीने एक ज
लका पात्र ले उसपर जबतक मंत्रके शब्द पढ़े इतनेमें वह जल खौलने लगा सो उसमें से थोड़ासा ज
ल ले बादशाहको दिया उसने उसके कहनेसे उस पंछी पर छिड़क दिया और यह कहा इ
सी मंत्रकी शक्ति और उस संसारके रचनेवालेकी आज्ञानुसार यह पंछीकी योनि छोड़ अ
पनी योनिमें आ इस शब्दके पूर्ण होतेही वह अपनी योनिको प्राप्त भया बादशाहभी अति
सुंदर पुरुषको जिसके माथेसे बादशाही चिन्ह प्रतीत होतेथे देख आश्चर्यमें हो य
महाप्रसन्न भया और बंदरभी अपनेको अपने स्वरूपमें देख उस बादशाहके चरणों पर
गिरपड़ा और ईश्वरका धन्यवाद किया फिर शिर उठाय उस बादशाहके हस्तकमल चूम ब
चनसे आशीर्वाद देने लगा परंतु मलका अपने महलको पधारी तदनन्तर बादशाहने
बंदरको अपने साथ भोजन कराया जब हर्षचित हुवा समंदालकी बेटीके जादूका हेतु पू
छा बंदरने अपना संपूर्ण वृत्तांत वर्णन किया बादशाहने यह समाचार सुन अति आश्चर्य

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्वि
१२८

176

तहोय कहाजोकुछहोनाथासोहुवा अबतुम्हारीकाइच्छाहै मुझसे वर्णनकरो बदरनेक
हा आपने मुझसे ऐसाउपकार किया जो जन्मभरभीतुम्हारीसेवा करूंतोभी उऋणन
हीहोसक्ता परंतु बहुत दिनसेमैं अपने देशसे निकलाहूं इसहेतुइच्छाहै कि अपने दे
शको जायवहांका प्रबंधकरूं और सिवाइसकेडरताहूं किऐसानहोजोउत्तल अनार मेरी
माता मेरेवियोगमें अपनी देहत्यागदेवहो जाय उसेथोथेहूं इस निमित्तदयाकर मुझे एक
जहाजकृपाकोजिये तोउसमें अपने देशको पहुंचूं बादशाहने अपनेसेवकोंको आज्ञादी
कितुरंतएक जहाजतोड़गामीतयारहो सोतुरंत एकजहाज तय्यारहोगया बदर बादशाह
से विदाहोय ईरानदेशकी ओरसधारा दसदिन तकवायु अनुकूलरही औरस्थानदसएवे
क यात्राकी गयारहवेंदिनवायु विपरीत चली और अगाधजल उमड़ आया इससे जहाज
ऊ मार्गहोगया प्रचंडवायुसे जहाजकीरस्सियां ओरमस्तूलटूटगया: औरजहाजटकर
खाचूर्णहोगयाबहुतसे मनुष्यडूबमरेकई मनुष्यएकेपाटके सहारे पैरने लगे उसमेंब
टरमीहूं टूटेहुएपाटपर समुद्रकी तरंगों औरधारोंमें बहता२ तटपरपहुंचा वहांसमीपही
एक नगरथा सोबदरएक्षीपरपहुंचा औरजलसे निकल किसी ओरजाने लगा अकस्मात् घो
ड़े गायें बैल खच्चरआदिपशु चहुंओरसे दौड़े घोरमचा उसेजलसेनिकलनेनदिया बद

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

र बड़े यत्नसे उन्हें हटाकर एक पहाड़की कंदरामें जा छुपा और विश्राम कर वहां अपने व
स्त्र रूपमें खाबोये जब वह तनक सावधान हुआ तब उसने नगरमें जानेकी इच्छा की नगर द्वा
रपर फिर पशुओंने उसे रोका वह पशु कहते थे यह नगर बहुत बुरा है इसमें जानेसे जन्मभ
र दुःखमें पड़ोगे बड़ी कठिनतासे बंदर नगरके भीतर गया उसे अति स्वच्छ और महा विशाल
और उज्वल देखा परंतु मनुष्य न होथे अत्यंत विस्मित हुवा और समझा कि पुरका मनुष्यों से
खाली होना और पशुओंका एक होकर विदेशीको रोकना किसी हेतु के न हो सा इस पर आ
गे गया तो उसने दुकानोंको दूकानदार बिना देखा इसी भांति संपूर्ण नगरमें फिरा किया कहीं
मनुष्य न देखा फिर आगे जाय एक वृद्ध पुरुष बैठा देखा जो अपनी दुकान पर फलोंको रखा
कर उज्वल करता जाताथा बंदरने उसे दंडवत की उसने शिर उठाय बंदरको देखा और उ
सका रूप देख आश्चर्यमें हुआ कि यह क्योंकर इस नगरमें आया फिर उसने प्रणामका उ
त्तर दे उससे पूछा कि तुम कौन हो और किधरसे आये बंदरने संक्षेपमें अपना वृत्तांत वर्णन
किया उस वृद्धने उससे पूछा तुमने किसी मनुष्यको इस नगरमें देखा बंदरने कहा सिवा तु
म्हारे अबतक मैंने किसीको नहीं देखा बड़ा आश्चर्य है कि ऐसा स्वच्छ नगर निर्जन हो वृ
द्धने कहा शीघ्र भीतर चलो आवाहन समतिखेड़ा रहूं ऐसा न हो जो किसी दुःखमें पड़ै मैं इसा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
१०७

177

नगर का हतांत तके सुनाऊंगा वदरउसके कहनेके अनुसारउसकी दूकानके भीतरजाय उस
के समीप बैठगया हुद्धने बदरको पहिले भूखा प्यासा देखभोजन कराया फिरबदरसे कहा
इसवस्तीकानाममाया वीनगर औरयहांकी अतिरूपवती शाहजादी मलकाहै औरमाया
विद्यामेंभी अद्वितीयहै वह सम्पूर्ण पशुजोतुम्हें समुद्रके तट औरनगरद्वार परमिले भीत
र आनेको वर्जतेथे वह सब तुम्हारेसदृश मनुष्यथे इसरानीने अपनीमंत्रविद्याकेवलसेउ
न्हें पशुबनारक्खाहै यदिकोई तरुणपुरुषरूपवानतुम्हारे सदृशभाग्यहीनतासे इसनगर
में आनिकलातो इसरानीके जासूसदौड़उसकोवरजोरी उसके समीपले जाते प्रथमवहउसकी
अतेतसत्कारकरतीहै किमानोउस मनुष्यके विवाहमेंवह उसपरमस्तीहै निदान अप्रसं
नहोयउसको श्रीनि मागपत्नीवा पशुबनाके छोड़देतीहै वहदीन अपनीजातिके साथ स
मुद्रकेतीरघासचरकालक्षेपकरताहै यदि कोई यात्री भेलेसवाकोई आपत्तिका मारातट
पर उतरनेवानगर प्रवेशकी इच्छा करताहै वह पशुउसपरदया कर उसे शोरकर रोकतेहैं
वह वेचारेतो बोलनेकी शक्तिनहीं रखते जिससे अपनासंपूर्णवृत्तान्तवर्णनकरें परंतु अपने
से उसकोकहतेहैं कि इसनगरमेंकदाचित् मतिजानहींतो तेरीहमारी सीदशाहोजावेगी प
रंतु वह प्रवासी उनके अभिप्रायकोनहीं समझता औरउसमलकाके फंदेमेंपड़ अंतकोप

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

षुहो जातामनुष्यना जाती रहतीहै वदरहद्दसे यहवृत्तांतसुन बहुतचकितभया औरकहनेल
गा एक जादूगरनीसे अभीछूटीनथाईथी कि दूसरीकेहाथमें पड़ामैं अत्यंत अभागाहूं फि
र अपना संसर्ग वृत्तांत उसवदरुद्दसेकह सुनाया उसे उसपरदयाउपजी औरउसे धीर्यदे कहा
यद्यपि यहांका औरयहांकी मलका कायही हालहैजैसा कि मैंने वर्णनकिया तथापि तेरे
प्रारब्धअच्छेथे कितूमेरे पासचला आया और किसी दूसरे सेन मिला अबतू इसीदुकानमें र
हाकर औरजोमैं कहूंवही कीजियो यहां किसीसे अपनाप्रयोजन मति रख मुझे यहां
के वासीसबछोटे बड़े जानतेहैंतू सबडःखोंसेबचारहेगा बादशाह बदरने उसको बड़ी
प्रशंसाकी और उसीदुकान परबैठारहा जोकोईउसेवहां बैठा देखतातो उसके रूपछवि
अनूपको देखपछताता औरमहाविस्मितहोताकियह क्योंकर उसरानीके फन्देसे बचा
मनुष्य उसेप्रायः हृदकादासजानते औरखदबुझता उनसे कहताभाइयो यह मेरा भती
जाहै दासनहीं है इसकेपिताका कालहोगया मेरेपुत्रनथा इससेमैंने बुलाकर अपना पुत्रब
नाया और अपनेदेश से इसेबुलाभेजाकि मेरे पासरहाकरेये यहसब वृत्तांतसुन प्रसन्न हो
ते फिर कहते जितनाकि हम इसबातसे प्रसन्नभये उतनाही हमें खेदहै जबहमबिचारतेहैं
कि मलका इसेदेखतेही अपने साथले जावेगी औरकई दिनउसे अपने समीपरखवहीं उड़ा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ना इसको भी करेगी जो औरोंके साथकी देनब हमें दुःख होताहै वह सह उनसे कहनाकि मु
के विश्वासहै जब रानी इसके आनिका सुनेगी तोमैं उससे विनय करूंगा कि यह मेराभानेजा
है मैंने इसे अपना पुत्रबनायाहै वह मेरे कारण इससे ऊछ्छन करदेगी निदानवदर एकमही।
नेतक उस हदके पास आनंदमें रहाकिसी भांतिका उसेविदन पहुंचा एकदिन वह उसी।
दुकान परबैठाहुवाथा कि अकस्मात् रानीकी सवारी हदकी दुकानसे जातीहुई देखी पहि
ले सेना आगे २जातीथी उसको दृष्टि पड़ी वह उठके दुकानके भीतरगया औरहदसे पूछा य
ह सवारी इस समययामसे किसको आतीहै उसने कहायह सवारी उसमलकाकी है जिसका
वृत्तांतमैंने सर्वमें कहाथा परंतु भयभीत न हो अपने स्थानपरजाय बैठो इसके उपरांत वदर
नेदेखाकि उसरानीके अरदलीके सिपाही हजार मनुष्य सर्व गुलाबी वस्त्रपहने और नग्न
खड्ग हाथोंमेंलिये जातेथे उनमेंसेकोईभीसेना पतिनथाजो हदको प्रणाम न करता उसके
पीछे वाजियोंके यूथका यूथभारी कमखाबके बसनपहिरे उनम २ वाहनोंपरसवारहोके
रानीकेले जब समीपहदी दुकानके आयेतो उनके अधिपतियोंनेभी हदको बड़ेनम्रतासे द
एडवत् कीफिरका देखा एक स्त्रियोंका समूह अनेकभांतिके स्वच्छ वस्त्र और जड़ाऊ आ
भूषण पहिने वरछियां हाथोंमें लिये पैदल धीरे २ चला आताहै उनके मध्यमें मलका

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मुश्की घोड़े परसवार जिसका साजसबरत्ननहली औरस्थान २ परबड़े २ टुकड़ेहीरेकेज
ड़ितथे बड़ी धमधाम औरसज धजसे चली आतीथी उन सबसुंदरियोंने झुक २ के हद
को प्रणामकिया जब मलकाकी सवारी सन्मुख आई वदरबादशाहको देखतेही उसपर
मोहितभई और घोड़े कीवागठहराई औरखड़ेहोके उसके उसहुदको पुकारा औरस
ब्दाकि यह सुंदर मनुष्यका तुम्हारा दासहै औरएकबेसतुम्हारे पास आयाहै इहने प्र
थम अपना मलक उसके चरणोंपर रखकेमानदंनतर उठहाथ जोड़ विनतीकीहै खु
दावंदयह मेराभतीजाहै बहुतदिनहुये किइसकापिता कालबशहुवा मैंने अपुत्र होने
के कारणइसे अपनापुत्रबनाय अपनेपास बुलाके रक्खा जिसे इसजन्ममें मुझेथोखेरहै
औरमैने पीछे मेरानामरहै मलका वदर कोदेख मोह गई औरइच्छा हुईकि किसी भा
ति इसे बुढ़ापेसे लोके आनंदभोगे यह बिचार कहामेरेपिता इससुंदर पुरुषको मुझेदेदो
मैं आग्नि औरप्रकाशकी शपथ खातीहूं किइसे बहुत अच्छेप्रकार रक्खूंगी और किसे
विधिसे इसे दुःखनदूंगी और मुझकेतेरी प्रीति सेविश्वासहै कितुइस विषयमें मुझसेनिश्चय
नकरेगा औरमैं सदैवतेरा गुणमानतीरहूंगी अहुलानेकहा आपने मुझे औरमेरे भतीजे
कोइस कृपासे अतिसप्रतिष्ठकिया परंतुयहराज व्यवहारसेनिपट अज्ञानहै इसहेतु आज

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
१७९
179

आपकेसमीपइसेनहींभेजसक्तामलकाने कहाइसबातका तुमकुछभी शोचनकरो एकह
दिनमें यहसब जानलेगा औरमुझे आनि और प्रकाशकी सौगंदहै किजबतकतू इस-
को मुझेनदेगा तबतकमें यहांसेनहिलूंगी और इसीकारणतुमेंदुःखहोगा औरमें प्र-
तिज्ञाकरतीहूंकितू इसपुरुषके देशमें कदाचितनपहुंचावेगा बहूने उसके कोपसे डर-
के कहाबहुत अच्छामैंराजीहूं परंतुकलवह आपके सन्मुख आवेगामलकाने यहमा-
नलिया और अपनीसेना औरसेवकों समेत वहांसेचलीगई फिर सुलताने बदरबाद-
शाहसेकहाइस मलकानेतुम्हारेभेजनेकेलिये बहुतकहा जैसातुमने दावा अबतुमा-
को किसी भांतिमेंनहींरख सक्ता यदिमैंनमानतातो ईश्वर जाने कोपमें तुमसे औरमु-
झसे क्याकर बैठती उसने अग्निकीजिसे अपनाप्रजक समझतीहै सौगंदखाईहै वि-
श्वासहै कितुम्हारे साथ किसी प्रकारकी बुराईन करेगी और अच्छीतरहहरकेवर्गमें
तुम्हारी निसाखबरलियाकरेगा उसकेसभासद सब मुझसे मिलनाचाहतेहैं वहभी अ-
पनी सामर्थ्य भरतुम्हारी सहायता करेंगे निदान ऐसे २ वचनों सेउससमयतो बदर धैर्य-
युक्त होकर कहनेलगा मेरे प्रारब्धमेंबुराईया भलाईजो कुछ कि लिखीहै अवश्य भो-
गनी पड़ेगी अथवा इसी मलकाकेहाथोंमेंरी मृत्युहै याइसीसे मेरामनोर्थसफलहोगा नि-

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दान अब उसीके समीप जाना चाहिये हहने कहा तुम कुछ चिंता न करो यदि यह रानी रा
ज्यबल और मायाशक्ति रखती है तथापि किसी भांति मेरी इच्छाके विपरीत न कर सकेगी
कदाचित् करेगी तो कुछ न चलेगा परंतु यह वचन मेरा स्मर्ण रखियो यह उद्यान तुमसे बुरा है
तो अवश्य करेगी उस समय तुम्हें चाहिये कि चेतन्य रहो और जो बात कि इसके नियम
के विरुद्ध देखो मुझसे तुरंत आकर कहना निदान दूसरे दिन वह रानी सो उसी हदकी दू
कानके समीप उसी तड़क भड़क और सजावटसे निकली और वहां खड़ी होके बुड्ढे से
कहा तुम्हारे भतीजेकी लालसासे जिसके देनेको तुमने मुझे वचन दिया था मुझे रात्रिभर
निद्रा न आई और इसी विचारमें रही कि किसी भांति सबेरा हो तो मैं उसे लाऊं मुझे विश्वा
स है कि तुम अपने वचनके सच्चे होगे कदाचित् असमान भी होगे और अपनी प्रतिज्ञाको
अवश्य पूर्ण करोगे हहने प्रथम तो सत्कारार्थ अपना शीश पृथ्वीसे लगाया फिर मलिका
के समीप गया कि कोई उनकी बात न सुने और उसके घोड़ेके शिरके पास खड़ा हो बड़ी न
म्रतासे विनय की कि कल दिनको जो कुछ मैंने आपके सन्मुख अपने भतीजेके हेतु विनय की
उसे न भूलियेगा मैं अब उसे आपको सौंपता हूं परंतु आशा है किसी प्रकारसे इसे दुःख न
दोगी इसे आप मेरा पुत्र समझ सर्वदा इसपर कृपा रखना यदि इसके विरुद्ध किसी विषयका उ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सह्रि
१८०
180

रखिदीजियेगाजाना बहुसुके पञ्चवारानीनेकहा इसविषयमें मैंनेकलबड़ी सौगंद खाईहै
कदाचित उसेडरखिनहैंगी तुमदोनों धीर्य्यरक्खो अबुल्लाने बदरकाहाथ पकड़ मलकाके
हाथमें दिया और कहने लगामैं दूसरीवेर इसकेलिये कहताहूं कि इसे कभी २ मेरे नि
कट आनेकीभी आज्ञादिया करना मलकाने इसे स्वीकारकर एक अशरफियोंकातोड़ा
जो अपनेसाथलाईथी हब्बकोदिया इसके उपरांत मलकाने आज्ञादी कि एक घोड़ा ब
हुत उत्तम सामग्रीसे सजाके तुरंतला ओसेवक एक अश्व अनेकप्रकारकीवस्तुसे अ
लंकृतलाये मलकानेबदरको आज्ञादी किइस घोड़े परसवारहो वह शीघ्रही सवारहोग
यामलकाने आज्ञा दीकि एकघोड़ा बहुत उत्तम सामग्रीसेसजाके तुरंत लाओसेवक ए
क अश्व अनेकप्रकारकीवस्तुसे अलंकृतलाये मलकानेबदरको आज्ञादी किइस घो
ड़े परसवारहोयह शीघ्रहीसवारहोगयामलकाने अबुल्लासे पूछा तुम्हारेभतीजेका
क्यानामहै उसनेकहा इसकानामबदरहै मलकानेकहाबड़ी भूलहुई इसेशामसअर्था
त् मध्यान्हकासूर्यकहना चाहियेथानिदान बदरघोड़े परसवारहो मलकाके पीछे
होलिया औरमलका उसे अपने बाईं ओरकरमहलकी ओर सिधारी मार्गान्तरमें पुरवासी
बदरकोदेखने औरहर्षितहोते औरमलकाको ग्लानिदृष्टिसे देखते औरउसके अभाय

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

औरउस प्रकृति की वार्ता करने कोई कहता इसने नया शिकार पायाहै इसके साथभी
वही उसकाकरेगी जो औरोंके साथकीहै ईश्वर इसमनुष्यपरदयाकरे औरइसदुष्टाकेफं
देसे छुड़ावे दूसरा कहतायदि यह पुरुष शालवी होतातो इसव्यभिचारिणीके चुंगल
मेंनपड़ताव हरको यहबातोसुनकर विस्वासहुवा किजोकुछ इसहुदनेइसका वृतांत
मुझसे कहा वह सबसत्यहै फिरमलका अपने महलमें जाय बदरकाहाथ पकड़ अ
पनी दासियों औरखोजियों समेत अपनेमहलमें गई जिसकोसर्व सामग्री सुवर्णको
औरउसमेंनाना प्रकारके अतिउज्वलहीरे आदिरत्न जड़ितथे वह उसे बागमेंसैरकरा
नेलेगई बदर बादशाह प्रति मंदिर औरवस्त्रकोदेख प्रशंसा करता उसकी बाचाल
ताकोसुन शाही मकानके सबमनुष्यजानते कियहदुष्टकामनीजानतीहो किनयरूपको र
रईसवाकहीं कापाहुआदोहै इतनेमेंभोजनकासमय पहुंचादासियोंने आयमलकासे
कहाभोजन तय्यारहै मलकाबदरसहित पाकशालामेंगई औरसोने चांदियोंके पात्र
मेंखाने लगेजबनिश्चिंतभये मलकाने एकसुवर्णमयकापात्रपिया औरबदरने भीपिया
इसीप्रकार मदिरा चलनेलगी गानेवालियां अपने२बाजोंकोउठायमीठे सुरोंसेगानेलगी
बहुत कालपर्यंतयही आनंदरहा जबपानबहुतबीती औरवहदोनों मदिरामेंउन्मत्तभये।

© Dharmartha Trust J&K: Digitized by eGangotri

मलकाकि आज्ञानुसार संपूर्ण दासियोंऔर सेवकवहांसे चलेगये फिरउनदोनोंने शय्यापर
जाकरसुखसे विहारकिया अनंतरदोनोंनेस्नानकिया और महासुंदर २ वस्त्रपहिरभो
जन किया इसके उपरांतबहुकालपर्यंतबागकी सेर औरपरस्परहास्यादिकका आनंदउ
ठाया किये इतनेमेंरात्रिभई औरपूर्ववत् भोजनसे निश्चिंतहोशय्यापरस्थितभये इसी प्रकार चा
लीसदिनतक उसमलकाने बड़ा आनंदउठाया अब उसकी प्रकृतिबदलगई सोएकय
नकोवहदोनोंछपरखटमें शयनकरतेथेकि अर्द्धरात्रिमें मलकाजगी बंदरकोसोताहुवा
समझकरचुपके उठीपरन्तुवहजगताथा वहशोचाकि यह अवश्यकोई नईबातकरेगी सोच
ह औरभीचुपकेहोकरपड़ारहा औरउसकी औरध्यानधरदेखनेलगा मलकानेसंदू
कखोला उसमेंसेएक छोटासापात्र पीलीमिट्टीसे भपझआ निकाला औरउसकेमका
नके एकओर अपनेमंत्रबलसेएकनिर्मलजलका कुंडप्रगटकिया बंदर ऐसादेखभयभी
तहो कांपनेलगा परन्तु वह चुपकाही पड़ारहाफिर उसने एकजलका पात्रउसकुंडमें
सेभरलिया औरएकपात्रमेंथोड़ा सा मैदारख औरउस जलको उसमेंडालथोड़ाबहुका
लपर्यंत अपनेहीहाथसे उसे मलती रही फिर कई एक औषधि छोटी २ डिबियोंसेनि
कालउसी मैदेमें मिलाई औरउसकीएकटिकियाकुलचेकेतौरपरबनाई औरअग्निसा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

यकोयलेसलगाये ओरउसे लोहेकीनवे पररकवपकाया जबवह पकड्डुको नव उसने उसन
वे ओरसब वस्त्रोंको जहांसे निकालाथा वंही रखदिया ओरयकमंत्र पढ़ा जिससेवह ऊं
उसलोपहोगया ओर उसडिबिया कोरक्षापूर्वक रख आप फिर आयबदरके साथसोरहो बद
रने यह सबदेखजानाकि इसमें कुछभेदहै ओर मुझेयहो चालीसदिनको अवधिव्यतीत
होगई है मेरेही निमित्त इसनेयह युक्ति अवश्यकीहै यहवृत्तांतइसेकहना चाहियेबि
हान जबभोरभया दोनोंनेस्नानकरवस्त्र पहिने बदरने मलकासेकहामें इन दिनों आपकेवे
चित्रबागोंकी सुंदरता ओर आपकी परिक्रमा अबयहकारवउगा अपने चचाको विस्मरण
करगयाजो आपमुझे आज्ञादेतोमें खिड़ २ उनका दर्शनकर आऊं मलकाने कहा सचहै
में नेभी बहुतदिनोंसे उनको भेंटनकी तुमजायतुरतदेख आओफिर उसने एकमुसकोघोड़ा
साज समेत सवारीके निमित्तदे विदाकिया जबवह अहल्याको दुकान परपहुंचावह उसेदे
खहर्षित भया ओर कृपालु एकह कहा तुमने उसड्डहाको कैसापाया बदरने उत्तर दिया अब
तकतो उसने मुझे अति प्रीतिसे रक्वा परंतु रात्रिके समयमें मुझे संदेहहै फिरउसने सं
पूर्ण वृत्तांत रात्रिकावर्णनकर कहा इसीलियेमें अबतकतुम्हारे उपदेशोंको भूलानथा
अबघबराय तुम्हारे समीप आया तुम कोई मुझे येसायत्नबताओ किमें उसकेछलसेबचूं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सकि
१८२

182

किसीकष्टकोशमन करूं अबुलीने मुसकराके कहावह तुम्हें पशुबनानाचाहतीहै परंतु अस्तु
तुमडरवा जोतुमने मुझे पहिलेसेचितायाअबतुम कछभीभयन करोमें उसका उपाय बनाता
हूं जिससे तुम्हें दुःखनहोगाफिर अबुलाने दो कुलचे उसे देकहा इनको अपने पासरक्खो ज
ब वह कुकर्म्मिणी अपने कुलचेकाटुकड़ा तुम्हें भोजनको देगीतो तुमउसे कदाचित्नलई
ना औरचतुरतासे उसेअपने आस्तीनमें छुपालेना औरवह कुलचेंजो तुझे मैंनेदियेहैं खा
इयो जबवह जानेगी कितुमनेवह कुलचाभोजनकरलियातो तुमको पशुबनानेकी इच्छा
करेगी परंतु तुम्हें कछफलनकरेगाफिरतुम उसीकुलचेको उसीखिलाना वह निस्संदेह
से भोजनकरेगी तुमथोड़ासाजल अपने हाथमें लेके उसकेमुखपर छिड़कके कहना
अपनीयोनिकोछोड़ दूसरे चोलेमेंहो उसी समयजिसपशुका तुम नामलोगे वहीहोजा
वेगी तब तुमउसे मेरे समीपले आइयोजो उचितहोगा किया जावेगा जोमैंतुमसे कहूं
गा सो करना बदर अबुल्लाके इसउपायसे अतिप्रसन्नहोमलकाके निकट गया मलकातो
उसके आगमनकीबाट बागमें बैठीहुईदेखतीथी उसेदेख कहनेलगीहे प्राण प्यारेतु
मेरबहुत बिलंब कियामैं तुम्हारेदर्शन बिना महा व्याकुलथी बदरने कहामैं तुमसेअ
धिक विकलथा यहीइच्छाथी किपोंअहीलौटूं औरतुमसेभेंटकरूंहे परंतुचर्चाकी वार्तामें

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

विलंबहोगयाउन्होंनेमेरे निमित्त बड़े प्रेमसेव्यंजनपकवाये परंतु जबमैंने देखाकिभोजन
करनेमेंयहां और विलंबहोगा केवल एकहीकुलचाभोजनकर और एक अपने साथलि
ये आयाहूं सोवही एककुलचाकिस्वेत वस्त्रमेंलपेटाहुवाथा दिखाके कहाहे मृगनयनी
तुमभीइसमेंसेथोड़ासा भोजनकरो मलकाने कहामैं इसेशिर नेत्रोंसे अंगीकार करूंगीतु
म्हारा चचामेराहितूहै उसकेघरकी वस्तुभोजन करनी अवश्यहै परंतुपहिले तुमयहां
मेरा कुलचाजोमैंने तेरे पीछेबनायाहै भोजनकरोबदरने कहा बहुत अच्छातबमैंनेजो अ
ति परिश्रमकरयहबनायाहै विश्वासहै किबहुत अच्छाहोगामैं तुम्हारे परिश्रम और
कृपासेउऋणनहींहूं मलकासे उसने वहतो अपने आसलीनेमेराखालिया वहकुलचा
जो अबलोंने दियाथा तोड़केखाया औरबड़ी प्रशंसाकी किहे चंद्रमुखीमैंने ऐसास्वादि
ष्टकुलचा जन्मभरनहींखाया जब उसने जानाकि बदरने मेराबनाया कुलचा भोजनकि
या तुरंत उसके मुख परजल छिड़ककेकहा आपतो चोलाछोड़ एककाने लंगड़ेकुरूप
घोड़ेका स्वरूप बनजा उसमंत्रनेकुछकामनकिया जैसाथा वैसाही बनारहा मलकाने
अचंभाकर विचारा इसमंत्रनेकुछभीबलन किया निदानबदरने कहाहे सुंदरीमैंने तुम्हा
रा कुलचाखायाबड़ा स्वादिष्टथा अबतुमहमारा कुलचाभोजनकरोसोवहीअर्थात् उसी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
१८६
183

को पकाया हुवा उसे जलवा दिया मलका को यह भली भांति निश्चय था कि यह वही जलवा है
कि जो अबुल्हा के पास से लाया है निश्शंक भोजन किया बदर ने तुरंत जल की अंजुली ले उ
सके मुख पर छिड़क कहा अपना स्वरूप त्याग घोड़ी हो जा इस बचन के कहते ही व
ह मलका घोड़ी बन गई और महा व्याकुल भई और रुदन करने और अपना मस्तक बदर के च
रणों पर बारंबार राख अपराध क्षमा कराने लगी पर उस बदर को इतनी सामर्थ्य न थी कि फिर उ
स घोड़ी को मलका बनाये निदान घोड़ी को खींच अश्वशाला में ले गया और अश्वपालक को
उसे दे कहा जीन लगाम दे के इसे तैयार ला वह जो लगाम उसके मुंह में देता था कोई ठीक न
होती बदर ने दो घोड़े तयार कराये एक पर आप सवार हुवा और दूसरे पर साईस को सवार
होने की आज्ञा दी और कहा इस घोड़ी को खींच अबुल्हा की दुकान पर ले आ जब वह दोनों
उसे लिये हुये अबुल्हा के घर पहुंचे अबुल्हा ने दूर से देख जाना कि बदर उस पर प्रबल होकर
उसको घोड़ी बनाय लाया है अमित हर्षित भया और कहा हे दुष्टा ईश्वर ने तेरे पापकर्म
का दंड दिया बदर घोड़े से उतर अबुल्हा की दुकान पर गया अबुल्हा ने उठ उसे कंठ से लगा
या और उसकी बहुत प्रशंसा की फिर बदर ने सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया और कहा इसके मु
ह में कोई भी लगाम नहीं लगती इतने अपने घोड़े में से एक लगाम निकाल दी वह उसके मु

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

त्वेमें ठीक आगई फिर अतुलाने बदरसे कहा अब तुम इस नगरमें न्हाण भर भी न ठहरो इसी।
परसवार होके अपने देशको सिधारो परंतु चेतन्य रहो कदाचित् इस लग्नमको इसके संहद
सेन निकालना बदर उससे विदा हो अपने देशको सिधारा कई मजलें चला तीन दिन पीछे
बड़े एक नगरमें पहुँच वहां एक हृद से भेंट भई प्रगटमें वह सत्पुरुष मालूम होता था और रथ
दले अपने घरकी ओर जाता था उसने बदरको प्रणाम किया और सत्कार तुम कि घरसे आ
ने हो बाद थाह बदर उसके उत्तर देनेको ठहर गया फिर उस हृदने उसे बातोंमें लगा लि।
या इतनेमें एक हृद्वा बदरको उस घोड़ी परसवार देख आवड़ी भई और महा विकल हो
य रुदन २ रोई जब बदर उस हृदसे बातें कर चुका उस हृद्वासे रोनेका कारण पूछा उस हृद्वा
ने कहा मेरे पुत्रकी घोड़ी मरगई वह ऐसी ही थी जिसपर तुम सवार हो यदि तुम इसे वे
चो तो मैं लेलूं जो तुम इसका मोल मांगोगे वो वही हूंगी बदरने कहा हे माता मैं इस घोड़ाको न
हीं बेच सक्ता और मेरी सामर्थ्य नहीं जो मैं तुम्हें इसे हृद्वाने कहा ईश्वरके वास्ते इसे मुझे
दे यदि तू न देगा तो इसके शोकमें मैं और मेरा पुत्र दोनो मरजावेंगे बदरने कहा इसका ब
ड़ा मोल है तुम उसे नहीं दे सकोगे बुढ़ियाने कहा मैं तुरन्त देहूंगी बदरने कहा इसका ब
ड़ा मो है तुम उसे नहीं दे सकोगे बुढ़ियाने कहा मैं तुरन्त देहूंगी बदर यह समझ का यह ब
ल

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्वि
१८४

184

हा अतिनिर्धन और आपत्ति कीमारी फटे फ़ुराने वस्त्र पहिरे है इसे तो थोड़ी द्रव्यके देने की।
भी सामर्थ्य न होगी बहुत धन कहां से देगी इतना बड़ा मोल कहना चाहिये कि निरास हो चली
जावे यह समझ उसने कहा इसका मोल यक हज़ार अशरफ़ी है यदि इतना द्रव्य मुझे देतो
यह घोड़ी तेरी है बुढ़ाने इतना सुनतेही अपनी कमरसे थैली खोल हज़ार अशरफ़ी बदर
को गिनदी और कहा यह अशरफियां गिनलो और घोड़ीसे उतरो कदाचित हज़ार अशर
फ़ीसे कम होंगी तो मेरा घर जो अति समीप है वहांसे लेआऊंगी बदर आश्चर्यितहुवा
और कहने लगा हे माता मुझे यह घोड़ी बेचनी किसी भांति स्वीकार नहीं मैंने जो तु।
झसे मोल किया तो केवल हंसी कीथी वह बुढ़ जो वहां खड़ा था और सब बातें सुनताथा
उससे कहने लगा भाई तुम यह घोड़ी बुढ़ाके हाथ बेच चुके अब तुम्हारी वकरारन च
लेगी तुम इस नगरकी क्या रीति नहीं जानते जो कोई व्यवहार में मिथ्या बोलता है वह
प्राणसे मारा जाता है अब तुम्हें उचित है कि हज़ार अशरफ़ी लेके थोड़ी इसे देडालो
क्योंकि इसने वही दिया जो तुमने अपने मुखसे मांगा अब तुम इस विषयमें व्यर्थ ना।
करार करते हो यदि यह वृत्तान्त बादशाह सुनैगा तो न जानिये तुम्हारी क्या गति करे
बदर बादशाह यह सुन अमेन विकल भया और उस घोड़ीसे उतर पड़ा बुढ़िया उसे शी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

चढ़ी उसकी लगाम पकड़ एक नहरके तटपर जो वहां बहती थी ले गई और जीन लगा
म उतार एक अंजली जलकी उस नहरमें से ले उस घोड़ी पर छिड़क कहा मेरी प्यारी घ
ड़ी इस योनिको जो तेरे योग्य नहीं छोड़ निज स्वरूपको प्राप्त हो इतना वचन कहते ही व
ह मलका बन गई वृद्ध भयके मारे मूर्छित हो पृथ्वी पर गिरने लगा इतने में उसी हढ
ने उसे थाम लिया और उस वृद्धा से जो मलकाकी माता थी और उसीने मलकाको सम
ए मायाका सिखाई थी अपने कंठसे लगाया और महा प्रसन्न भई इतने में पश्चिमकी ओर
से एक महा विकराल रूप राक्षस प्रकट हुआ एक हाथ से बंदरकी और दूसरे से उस
हढा और मलकाको उठा पलक मारतेमें उन तीनोंको मलकाके भवनमें पहुंचाया
मलकाने वहां पहुंच महा कोपसे दांत पीस २ बंदरसे कहा हे दुष्ट मेरी सेवाका फल यह था
जो तूने और तेरे चचाने मेरे साथ किया देख अब तुझे मैं कैसा दंड देती हूं यह कह थो
ड़ासा जल अंजलीमें ले उस पर छिड़क कहा अपना चोला छोड़ महा अशोभ उल्लू बन
जा बंदर उल्लू बन गया फिर मलकाने अपनी दासीको आज्ञा दी कि इस पक्षीको पिंजरेमें
बंदकर दे और उसे अन्न जल कुछ भी न दीजियो दासीने उसे पिंजड़ेमें बंद करदे और उसे
अन्न जल कुछ भी न दीजियो दासीने उसे पिंजड़ेमें रख लिया परंतु मलकासे छिपाके उ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्धि १८५

185

से अन्नजल दिया करती वह दासी हंस की मित्र थी उसने यह हाल उसको सुनाया कि य
ह रानी तुम्हें और तुम्हारे भतीजे को अवश्य मार डालेगी तुम अपनी रक्षा करो वह हंस यह
सुनतेही विचारा बात बड़ी गई अब तुम इसका और ही कुछ उपाय करो सो उसने बड़ा ना
द किया इतने में एक महा उग्र राक्षस बरक नामक जिसके चारों बाजू सफेद थे आया औ
र हंस से विनय की मेरी आपने को रुपि की हंस ने कहा है बरक पहिले तू बदर के प्राण
की रक्षा कर और उसको रत्नक बादी को ले ईरान देश में रानी गुल अनार के महल में पहुँ
चा कि बदर की माता उस बादी से यह वृत्तांत सुने राक्षस यह आज्ञा पाते ही तुरत जा हुमाय
नी के महल में पहुँचा और उस बादी को भी हंस की आज्ञा से जानकर उसका ले आकाश
को उड़ा और क्षणमात्र में ईरान देश में पहुँचा और रानी गुल अनार के स्थान पर खड़ा भया
उस दासीने सोटी के मार्ग से जाय गुल अनार और उसकी माता को कि परस्पर अपने दुख
की बातें करती थी प्रणाम किया और सब हाल वर्णन किया गुल अनार बदर का वृत्तांत
सुनतेही अति हर्षित भई और उठके उस दासी को कंठ से लगाय बड़ा गुण माना और अ
पने सेवकों को आज्ञा दी कि तुम डौंडी पिटवाओ कि महाराजा बदर शाह यहां पहुँचा
चाहता है फिर सुगंधि पन बस्त्र अग्नि पर रख मलिक सालह को समुद्र के राज्य से बुलाया।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जब वह पहुंचा तो मलका गुलअनार ने कहा भाई तुम्हारा भानजा बदर मायावी देश में वहां
की मलका से महाकष्ट पा रहा है अब वहां तुम्हारा मेरा काम है कि उसे उस महा आपत्ति
से छुड़ाओ सालह ने अपनी समुद्री सेना को आज्ञा दी तुम तुरंत जल मार्ग से मायावी देश
में पहुंचो मैं तुम्हारे पहुंचने से भी पहिले पहुंचूंगा इसके उपरान्त असंख्य राक्षसों कटक अ
पने साथ ले अपनी माता और बहिन सहित क्षणमात्र में मायाबी देश में पहुंचा और नि
र्णाक राजमहल में प्रवेश कर मलिक आदि अग्नि पूजकों को पकड़ो वैर विनाश करथ
लकर दिया तदनन्तर गुलअनार ने उसी दासी से सब का वह पिंजड़ा तुरंत ले जिसमें मेरा बद
र बादशाह है वह तुरंत उठा लाई उसने बदर को बाहर निकाला और उसपर नीर छिड़
क कर कहा इस योनि को तज अपने चोले में आ उसी समय वह बदर बादशाह बन गया
मलका ने उसे हृदय से लगा लिया और हर्षित भई उपरान्त बदर ने चैतन्य होय अपने मा
तुलादि से भेंट की तदनन्तर गुलअनार अबुलाकियान में गई और उससे भेंट कर अति नम्रता से
कहा तुमने बदर की बड़ी रक्षा और सेवा की अब जो सेवा हमारे योग्य हो कहो कि हम उ
ऋण हो जावें और प्रसन्नता से कहें अबुलाने कहा मेरे विचार से यह उचित है तुम इसी दासी
के साथ बदर का विवाह दो कि वह भी महा रूपवान है मलका गुलअनार ने उसे स्वीकार क

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सद्दि
१८६

186

र उसे राजसी उत्तम २ सुवर्णमई रत्नजटित सुंदर नावेसे शिखसेनक शृंगार कर बदरको या
ह दिया बदरने कहा मैंने आपकी और पिता समान हद्दकी आज्ञापालनकी परंतु मैं वा
स्तवमें जवाहरशाहजादीसे अपना विवाह करूंगा उसकी माताने मुस्कुराय कहा बहुत
अच्छा इसका यत्न कियाजावेगा इतना कह उसने सामुद्रीकटकको जो विद्यमान था आ
ज्ञादी कि तुम तुरंत जाय जल और पृथ्वीके नगरोंमें फैलो जो कोई शाहजादी सुंदरी मेरे पु
त्रके समान हो तो मुझे आकर कहो मैं बदरको मंगनी करदूं बदरने कहा यह सब व्यर्थ है
तुम जानती हो कि मैं शाहजादी समंदाल पर मोहित हूं उसके सदृश कोई भी स्त्री नहीं हो उ
सने मुझे केवल अपने पिताके भयसे कह दिया जो समंदालके बादशाहको बंदीगृह से
छुड़ाय मेरे हेत उससे कहोगे तो कदापि इन्कार न करेगा गुलअनारने कहा है मेरे प्यारे
पुत्र उसने तो तुम्हारे मातुलने कष्ट दे रक्खा है यदि वह उसे छुड़ाय यहां बुलावे तो नि
स्संदेह स्वीकार वा निषेधका हाल मालूम हो फिर बदरने यह संपूर्ण वृतान्त सालहसे क
हा कि मलिक समंदालको छुड़ाओ उसके मातुलने अग्निकी अंगीठी मंगवाय ऊद
बत्ती उसमें डाल मंत्र पढ़ा धुंवेंके उठने ही पृथ्वी कांपी और समंदाल चाकरों सहित आ
या और बदर उसके चरणोंपर गिरपड़ा फिर दोनों घुटनोंके बल उसके सम्मुख खड़े।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हो कहा जिस मनुष्यकेहेत सालहने मंगनीकोकहाथा वह मैंहीहूं मैंही पारसदेशकाम
हाराजाहूं मुझपर आपकृपा कीजिये आशाहै कि तुम मुझे अपनीपुत्रीके प्रीतिमेंन मारो
गे जो ऊपरहोनाथासो हुवा अबकृपाकर यह संबंधस्वीकारकीजिये समंदालने तुरंतब
दरको धरतीसे उठाय अपने कंठसे लगायकहा यदितुम्हारी उसकी प्रीतिमें यहदशाहै
कि मेरी पुत्रीके विवाहने विना मरजावोगे तोमें प्रसन्नहूं जवाहर कोमैंने तुम्हें खुशीसे दे
या वह अब तुम्हारीहै वहकदाचित मेरी आज्ञान तोड़ेगी वहमेरे कहनेको अवश्यमाने
गी समन्दालने सेवक को आज्ञादी कितुरंतजा औरजवाहरको जहां कहींहोढूंढकरा
ले आवय यह आज्ञापातेही जवाहिरको उसकीदासियो समेतढूंढलाये उसकेपिताने
उसेकंठसे लगाय कहाहै प्यारी पुत्रीमैंने तेराविवाह ईरानके महाराजाबदरनामकसेजो
सस्तुख देडाहै करदिया तेरा अपनी संपूर्ण स्त्रियोंसे अधिकसत्कार कियाकरेगा औरहू
म तुम दोनोंको प्रसन्नरक्खेगा शाहजादी जवाहरने अपनेपितासेकहाजोकुछ आपने
आज्ञादीमैंने उसेस्वीकारकिया परंतु वह अपराधजोमुझसे बदरके मध्य क्रोधमेंहुवा ब
दर उसेक्षमाकरे शाहने क्षमा कियाफिरविवाहकी रीतें बड़ेधूमधामसे उसीमायावी
नगरमेंहुई और जितने मनुष्य बेचारे आपत्तिके मारे उसीदुष्ट मलकाके मंत्रबलसेपत्थ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सहि
१८९

नेऊये भ्रमते फिरतेथे उसकेमारे जातेही सब अपने २ स्वरूपमें आये और आशीर्वाददे २
अपने देशोंकोसिधारे इसके उपरांत बादशाह समन्दाल अपनेदेशकोगया और ईरा
नका बादशाह परिवारसहित ईरानको सिधारामालह किननेयकदिन वहां रहा फिर अ
पनी मातादिसहित अपनेराज्यमेंपहुंचा ॥ इतिश्रीपंडितप्यारेलालउल्याकृते सहस्र
रजनीचरित्रे द्वितीयभागसमाप्तः ॥ सोरठा संवत्सर इकतीस मंगलवारे शुक्लपक्ष म
हिनी फाल्गुन प्रविष्टा ४ संवत् १९ ४५ ॥ लेखिपंडित चेदकोलज्यो ॥

187

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri